Dr. Preeti Sharma

PS-1

Hindi papaer 4

परिचय

कबीर

- **जीवन परिचय:** कबीरदास का नाम संत कवियों में सर्वोपरि है। इनके जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं। इनका जन्म 1398 ई में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ। कबीरदास ने स्वयं को काशी का जुलाहा कहा है। इनके विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ये स्वयं कहते हैं- "ससि कागद छुयो नहि कलम गहि नहि हाथ।"इन्होंने देशाटन और सत्संग से ज्ञान प्राप्त किया। किताबी ज्ञान के स्थान पर आँखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी-"में कहता हों आँखन देखी, तू कहता कागद की लखी।" इनका देहावसान 1518 ई में बस्ती के निकट मगहर में हुआ।
- **रचनाएँ:** कबीरदास के पदों का संग्रह बीजक नामक पुस्तक है, जिसमें साखी. सबद एवं रमैनी संकलित हैं।
- **साहित्यिक परिचय:** कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन पर नाथों. सिद्धों और सूफी संतों की बातों का प्रभाव है। वे कमकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे: कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे "बन पड़ तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।"

पाठ का सारांश

पहले पद में कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है, ज्योति रूप में स्वीकारा है तथा उसकी व्याप्ति चराचर संसार में दिखाई है। इसी व्याप्ति को अद्वैत सत्ता के रूप में देखते हुए विभिन्न उदाहरणों के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। कबीरदास ने आत्मा और परमात्मा को एक रूप में ही देखा है। संसार के लोग अज्ञानवश इन्हें अलग-अलग मानते हैं। कवि पानी, पवन, प्रकाश आदि के उदाहरण देकर उन्हें एक जैसा बताता है। बाढ़ी लकड़ी को काटता है, परंतु आग को कोई नहीं काट सकता। परमात्मा सभी के हृदय में विद्यमान है। माया के कारण इसमें अंतर दिखाई देता है।
दूसरे पद में कबीर ने बाहय आडंबरों पर चोट करते हुए कहा है कि अधिकतर लोग अपने भीतर की ताकत को न पहचानकर अनजाने में अवास्तविक संसार से रिश्ता बना बैठते हैं और वास्तविक संसार से बेखबर रहते हैं। कवि के अनुसार यह संसार पागल हो गया है। यहाँ सच कहने वाले का विरोध तथा झूठ पर विश्वास किया जाता है हिंदू और मुसलमान राम और रहीम के नाम पर लड़ रहे हैं, जबकि दोनों ही ईश्वर का मर्म नहीं जानते। दोनों बाहय आडंबरों में उलझे हुए हैं। नियम,

धर्म, टोपी, माला, छाप. तिलक, पीर, औलिया, पत्थर पूजने वाले और कुरान की व्याख्या करने वाले खोखले गुरु-शिष्यों को आडंबर बताकर, उनकी निंदा की गई है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

हम तौ एक करि जांनानं जांनां ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां।
जैसे बढ़ी काष्ट ही कार्ट अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोंहरा सांनां।
माया देखि के जगत लुभांनां कह रे नर गरबांनां
निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहैं कबीर दिवांनां। (पृष्ठ 131)

शब्दार्थ

एक-परमात्मा, एक। दोई-दो। तिनहीं-उनको। दोजग-नरक। नाहिंन-नहीं। एकै-एक। पवन-हवा। जोति-प्रकाश। समाना-व्याप्त। खाक-मिट्टी। गढ़े-रचे हुए। भांड़े-बर्तन। कोहरा-कुम्हार। सांनां-एक साथ मिलकर। बाढ़ी-बढ़ई। काष्ट-लकड़ी। अगिनि-आग। घटि-घड़ा, हृदय। अंतरि-भीतर, अंदर। व्यापक-विस्तृत। धरे-रखे। सरूपै-स्वरूप। सोई-वही। जगत-संसार। लुभाना-मोहित होना। नर-मनुष्य। गरबानां-गर्व करना। निरभै-निडरा भया-हुआ। दिवानां-बैरागी।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित निर्गुण परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर के पदों से उद्धृत है। इस पद में, कबीर ने एक ही परम तत्व की सत्ता को स्वीकार किया है, जिसकी पुष्टि वे कई उदाहरणों से करते हैं।

व्याख्या- कबीरदास कहते हैं कि हमने तो जान लिया है कि ईश्वर एक ही है। इस तरह से मैंने ईश्वर के अद्वैत रूप को पहचान लिया है। हालाँकि कुछ लोग ईश्वर को अलग-अलग बताते हैं; उनके लिए नरक की स्थिति है, क्योंकि वे वास्तविकता को नहीं पहचान पाते। वे आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग मानते हैं। कवि ईश्वर की अद्वैतता का प्रमाण देते हुए कहता है कि संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकाश सबमें समाया हुआ है। कुम्हार भी एक ही तरह की मिट्टी से सब बर्तन बनाता है, भले ही बर्तनों का आकार-प्रकार अलग-अलग हो। बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है, परंतु आग को नहीं काट सकता। इसी प्रकार शरीर नष्ट हो जाता है, परंतु उसमें व्याप्त आत्मा सदैव रहती है। परमात्मा हरेक के हृदय में समाया हुआ है भले ही उसने कोई भी रूप धारण किया हो। यह संसार माया के जाल में फैसा हुआ है। और वही संसार को लुभाता है। इसलिए मनुष्य को किसी भी बात को लेकर घमंड नहीं करना चाहिए। प्रस्तुत पद के अंत में कबीर दास कहते हैं कि जब मनुष्य निर्भय हो जाता है तो उसे कुछ नहीं सताता। कबीर भी अब निर्भय हो गया है तथा ईश्वर का दीवाना हो गया है।

विशेष-

1. कबीर ने आत्मा और परमात्मा को एक बताया है।

2. उन्होंने माया-मोह व गर्व की व्यर्थता पर प्रकाश डाला है।

3. 'एक-एक' में यमक अलंकार है।

4. 'खाक' और 'कोहरा' में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है।

5. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

6. सधुक्कड़ी भाषा है।

7. उदाहरण अलंकार है।

8. पद में गेयता व संगीतात्मकता है।

● अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कबीरदास परमात्मा के विषय में क्या कहते हैं?

2. भ्रमित लोगों पर कवि की क्या टिप्पणी है?

3. संसार नश्वर है, परंतु आत्मा अमर है-स्पष्ट कीजिए।

4. कबीर ने किन उदाहरणों दवारा सिदध किया है कि जग में एक सत्ता है?

उत्तर-

1. कबीरदास कहते हैं कि परमात्मा एक है। वह हर प्राणी के हृदय में समाया हुआ है भले ही उसने कोई भी स्वरूप धारण किया हो।

2. जो लोग आत्मा व परमात्मा को अलग-अलग मानते हैं, वे भ्रमित हैं। वे ईश्वर को पहचान नहीं पाए। उन्हें नरक की प्राप्ति होती है।

3. कबीर का कहना है कि जिस प्रकार लकड़ी को काटा जा सकता है, परंतु उसके अंदर की अग्नि को नहीं काटा जा सकता, उसी प्रकार शरीर नष्ट हो जाता है, परंतु आत्मा अमर है। उसे समाप्त नहीं किया जा सकता।

4. कबीर ने जना की सत्ता एक होने यानी ईश्वर एक है के समर्थन में कई उदाहरण दिए हैं। वे कहते हैं कि संसार में एक जैसी पवन, एक जैसा पानी बहता है। हर प्राणी में एक ही ज्योति समाई हुई है। सभी बर्तन एक ही मिट्टी से बनाए जाते हैं, भले ही उनका स्वरूप अलग-अलग होता है।

2.

सतों दखत जग बौराना।

साँच कहीं तो मारन धार्वे, झूठे जग पतियाना।

नमी देखा धरमी देखा, प्रात्र करें असनाना।

आतम मारि पखानहि पूजें, उनमें कछु नहि ज्ञाना।

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितब कुराना।

कै मुरीद तदबीर बतार्वे, उनमें उहैं जो ज्ञाना।

आसन मारि डिभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।

पीपर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना।
हिन्दू कहैं मोहि राम पियारा, तुर्क कहैं रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मम न काहू जाना।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु के सहित सिख्य सब बूड़े, अत काल पछिताना।
कहैं कबीर सुनो हो सती, ई सब भम भुलाना।
केतिक कहीं कहा नहि माने, सहजै सहज समाना। (पृष्ठ 131-132)

शब्दार्थ

जग-संसार। बौराना-पागल होना। साँच-सच। मारन-मारने। धावै-दौड़े। पतियाना-विश्वास करना। नेमी-नियमों का पालन करने वाला। धरमी-धर्म का पालन करने वाला। प्राप्त-सुबह। असनाना-स्नान करना। आतम-स्वयं। पखानहि-पत्थरों को, पत्थरों की मूर्तियों को। पीर औलिया-धर्म गुरु और संत ज्ञानी। कितेब-ग्रंथ। मुरीद-शिष्य। तदबीर-उपाय। डिंभ धरि-घमंड करके। गुमाना-घमंड। पाथर-पत्थर। पहिरे-पहने। छाप तिलक अनुमाना-माथे पर तिलक व छापा लगाया। साखी-दोहा, साक्षी। सब्दहि-वह मंत्र जो गुरु शिष्य को दीक्षा के अवसर पर देता है, पद। गावत-गाते। आतम खबरि-आत्मा का ज्ञान, आतम ज्ञान। मोहि-मुझे। तुर्क-मुसलमान। दोउ-दोनों। लरि-लड़ना। मुए-मरना। मर्म-रहस्य। काहू-किसी ने। मन्तर-गुप्त वाक्य बताना। महिमा-उच्चता। सिख्य-शिप्य। बूड़े-डूबे। अंतकाल-अंतिम समय। भर्म-संदेह। केतिक कहीं-कहाँ तक कहूँ। सहजै-सहज रूप से। समाना-लीन होना।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित निर्गुण परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि **कबीर** के पदों से उद्धृत है। इस पद में उन्होंने धर्म के नाम पर हो रहे बाहय आडंबरों पर तीखा प्रहार किया है।

व्याख्या-कबीरदास सज्जनों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि देखो, यह संसार पागल हो गया है। जो व्यक्ति सच बातें बताता है, उसे यह मारने के लिए दौड़ता है तथा जो झूठ बोलता है, उस पर यह विश्वास कर लेता है। कवि हिंदुओं के बारे में बताता है कि ऐसे लोग बहुत हैं जो नियमों का पालन करते हैं तथा धर्म के अनुसार अनुष्ठान आदि करते हैं। ये प्रातः उठकर स्नान करते हैं। ये अपनी आत्मा को मारकर पत्थरों को पूजते हैं। वे आत्मचिंतन नहीं करते। इन्हें अपने ज्ञान पर घमंड है, परंतु उन्होंने कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं किया है। मुसलमानों के विषय में कबीर बताते हैं कि उन्होंने ऐसे अनेक पीर, औलिया देखे हैं जो कुरान का नियमित पाठ करते हैं। वे अपने शिष्यों को तरह-तरह के उपाय बताते हैं जबकि ऐसे पाखंडी स्वयं खुदा के बारे में नहीं जानते हैं। वे ढोंगी योगियों पर भी चोट करते हैं जो आसन लगाकर अहंकार धारण किए बैठे हैं और उनके मन में बहुत घमंड भरा पड़ा है।

कबीरदास कहते हैं कि लोग पीपल, पत्थर को पूजने लगे हैं। वे तीर्थ-यात्रा आदि करके गर्व का अनुभव करते हैं। वे ईश्वर को भूल जाते हैं। कुछ लोग टोपी पहनते हैं, माला धारण करते हैं, माथे पर तिलक लगाते हैं तथा शरीर पर छापे बनाते हैं। वे साखी व शब्द को गाना भूल गए हैं तथा

अपनी आत्मा के रहस्य को नहीं जानते हैं। इन लोगों को सांसारिक जीवन पर घमंड है। हिंदू कहते हैं कि उन्हें राम प्यारा है तो तुर्क रहीम को अपना बताते हैं। दोनों समूह ईश्वर की श्रेष्ठता के चक्कर में लड़कर मार जाते हैं, परंतु किसी ने भी ईश्वर की सत्ता के रहस्य को नहीं जाना।

समाज में पाखंडी गुरु घर-घर जाकर लोगों को मंत्र देते फिरते हैं। उन्हें सांसारिक माया का बहुत अभिमान है। ऐसे गुरु व शिष्य सब अज्ञान में डूबे हुए हैं। इन सबको अंतकाल में पछताना पड़ेगा। कबीरदास कहते हैं कि हे संतों, वे सब माया को सब कुछ मानते हैं तथा ईश्वर-भक्ति को भूल बैठे हैं। इन्हें कितना ही समझाओ, ये नहीं मानते हैं। सच यही है कि ईश्वर तो सहज साधना से मिल जाते हैं।

विशेष-

1. कवि ने धार्मिक आडंबरों पर करारी चोट की है।
2. उन्होंने पाखंडी धर्मगुरुओं को लताड़ लगाई है।
3. सधुक्कड़ी भाषा है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।
5. चित्रात्मकता है।
7. कबीर का अक्खड़पन स्पष्ट है।
8. पद में गेयता व संगीतात्मकता है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. कबीर किसे संबोधित करते हैं तथा क्यों?
2. कवि संसार को पागल क्यों कहता है?
3. कवि ने हिंदुओं के किन आडंबरों पर चोट की है तथा मुसलमानों के किन पाखंडों पर व्यंग्य किया है?
4. अज्ञानी गुरुओं व शिष्यों की क्या गति होगी?

उत्तर-

1. कबीर दास जी संसार के विवेकी व सज्जन लोगों को संबोधित कर रहे हैं, क्योंकि वे संतों को धार्मिक पाखंडों के बारे में बताकर भक्ति के सहज मार्ग को बताना चाहते हैं।
2. कवि संसार को पागल कहता है। इसका कारण है कि संसार सच्ची बात कहने वाले को मारने के लिए दौड़ता है तथा झूठी बात कहने वाले पर विश्वास कर लेता है।
3. कबीर ने हिंदुओं के नित्य स्नान, धार्मिक अनुष्ठान, पीपल-पत्थर की पूजा, तिलक, छापे, तीर्थयात्रा आदि आडंबरों पर चोट की है। इसी तरह उन्होंने मुसलमानों के ईश्वर-प्राप्ति के उपाय, टोपी पहनना, पीर की पूजा, शब्द गाना आदि पाखंडों पर व्यंग्य किया है।
4. अज्ञानी गुरुओं व उनके शिष्यों को अंतकाल में पछताना पड़ता है, क्योंकि ज्ञान के अभाव में वे गलत मार्ग पर चलते हैं तथा अपना विनाश कर लेते हैं।

- **काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न**

हम तो एक एक करि जाना।
दोइ कहैं तिनहीं कों दोजग जिन नाहिन पहिचाना।

एकै पवन एक ही पानीं एके जोति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भाड़े एकै कांहरा सना।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरे सरूपैं सोई।
माया देखि के जगत लुभाना काहे रे नर गरबाना।
निरर्भ भया कछू नहि ब्याएँ कहैं कबीर दिवाना।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।

2. शिल्प-सौदर्य बताइए।

उत्तर-

1. इस पद में कवि ने ईश्वर की एक सत्ता को माना है। संसार के हर प्राणी के दिल में ईश्वर है, उसका रूप चाहे कोई भी हो। कवि माया-मोह को निरर्थक बताता है।

2.

- इस पद में कबीर की अक्खड़ता व निभीकता का पता चलता है।
- आम बोलचाल की सधुक्कड़ी भाषा है।
- 'जैसे बाढ़ी. काटै। कोई' में उदाहरण अलंकार है। बढ़ई, लकड़ी व आग का उदाहरण प्रभावी है।
- 'एक एक' में यमक अलंकार है-एक-परमात्मा, एक-एक।
- अनुप्रास अलंकार की छटा है-काटै। कोई, सरूप सोई, कहै कबीर।
- 'खाक' व 'कोहरा' में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है।
- पूरे पद में गेयता व संगीतात्मकता है।

2.

सतों दखत जग बौराना।

साँच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।।

नेमी देखा धरमी देखा, प्रात्त करें असनाना।

आतम मारि पखानहि पूजे, उनमें कछु नहि ज्ञाना।।

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितब कुराना।

कै मुरीद तदबीर बतार्वे, उनमें उहै जो ज्ञाना।।

आसन मारि डिभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।

पीपर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना।।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।

साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना।।

हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कह रहमाना।

आपस में दोउ लरि लरि मूए, मम न काहू जाना।।

घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।

गुरु के सहित सिख्य सब बूड़, अत काल पछिताना।।

कहैं कबीर सुनी हो सती, ई सब भम भुलाना।

केतिक कहीं कहा नहि माने, सहजै सहज समाना।।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।

2. शिल्प-सौंदर्य पर प्रकाश डालें।

उत्तर-

1. इस पद में कवि ने संसार की गलत प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। वे सांसारिक जीवन को सच मानते हैं। समाज में हिंदू-मुसलमान धर्म के नाम लड़ते हैं। वे तरह-तरह के आडंबर रचाकर स्वयं को श्रेष्ठ जताने की कोशिश करते हैं। कवि संसार को इन आडंबरों की निरर्थकता के बारे में बार-बार बताता है, परंतु उन पर कोई प्रभाव नहीं होता। कबीर सहज भक्ति मार्ग को सही मानता है।

2.

- कवि ने आत्मबल पर बल दिया है तथा बाहय आडंबरों को निरर्थक बताया है।
- अनुप्रास अलंकार की छटा है-

– पीपर पाथर पूजन

– कितेब कुराना

– भर्म भुलाना

– सहजै सहज समाना

– सहित शिष्य सब

– साखी सब्दहि

– केतिक कहौं कहा

- 'घर-घर', 'लरि-लरि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
- आम बोलचाल की सधुक्कड़ी भाषा है।
- भाषा में व्यंग्यात्मक है।
- पूरे पद में गेयता व संगीतात्मकता है।
- चित्रात्मकता है।
- शांत रस है।
- प्रसाद गुण विद्यमान है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पद के साथ

प्रश्न 1:

कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर-

कबीर ने एक ही ईश्वर के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं, जो निम्नलिखित हैं

1. संसार में सब जगह एक ही पवन व जल है।
2. सभी में एक ही ईश्वरीय ज्योति है।
3. एक ही मिट्टी से सभी बर्तनों का निर्माण होता है।
4. एक ही परमात्मा का अस्तित्व सभी प्राणों में है।
5. प्रत्येक कण में ईश्वर है।
6. दुनिया के हर जीव में ईश्वर व्याप्त है।

प्रश्न 2:

मानव शरीर का निर्माण किन पंच तत्वों से हुआ है?

उत्तर-

मानव शरीर का निर्माण निम्नलिखित पाँच तत्वों से हुआ है-

1. अग्नि
2. वायु
3. पानी
4. मिट्टी
5. आकाश

प्रश्न 3:

जैसे बाढ़ी काष्ट ही कार्ट अगिनि न कार्ट कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरे सरूपै सोई।

इसके आधार पर बताइए कि कबीर की वृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

उत्तर-

प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि बढ़ई काठ (लकड़ी) को काट सकता है, पर आग को नहीं काट सकता, इसी प्रकार ईश्वर घट-घट में व्याप्त है अर्थात् कबीर कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार आग को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता और न ही आरी से काटा जा सकता है, उसी प्रकार परमात्मा हम सभी के भीतर व्याप्त है। यहाँ कबीर का आध्यात्मिक पक्ष मुखर हो रहा है कि आत्मा (ईश्वर का रूप) अजर-अमर, सर्वव्यापक है। आत्मा को न मारा जा सकता है, न यह जन्म लेती है, इसे अग्नि जला नहीं सकती और पानी भिगो नहीं सकता। यह सर्वत्र व्याप्त है।

प्रश्न 4:

कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर-

यहाँ ‘दीवाना’ का अर्थ है-पागल। कबीरदास ने परमात्मा का सच्चा रूप पा लिया है। वे उसकी भक्ति में लीन हैं, जबकि संसार बाहय आडंबरों में उलझकर ईश्वर को खोज रहा है। अत: कबीर की भक्ति आम विचारधारा से अलग है इसलिए वह स्वयं को दीवाना कहता है।

प्रश्न 5:

कबीर ने ऐसा क्यों कहा है कि संसार बौरा गया है?

उत्तर-

कबीर संसार को सच्चाई (परम तत्व की सर्वव्यापकता) के विषय में बताते हैं तो संसारी लोग उन्हें

मारने के लिए भागते हैं और झूठी बातों पर विश्वास करते हैं। संसार का यह व्यवहार कबीर को बड़ा ही अजीब लगता है। इसलिए वे कहते हैं कि संसार बौरा गया है।

प्रश्न 6:

कबीर ने नियम और धर्म का पालन करने वाले लोगों की किन कमियों की ओर संकेत किया है?

उत्तर-

कबीर ने नियम और धर्म का पालन करने वाले लोगों की निम्नलिखित कमियों की ओर संकेत किया है-

1. प्रात:काल स्नान करने वाले, पत्थरों, वृक्षों की पूजा करने वाले अंधविश्वासी हैं। वे धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं पहचान पाते तथा आत्मज्ञान से वंचित रहते हैं।
2. मुसलमान भी पीर-औलिया की बातों का अनुसरण करते हैं। वे मंत्र आदि लेने में विश्वास रखते हैं। ईश्वर सबके हृदय में विद्यमान है, परंतु ये उसे पहचान नहीं पाते।

प्रश्न 7:

अज्ञानी गुरुओं की शरण में जाने पर शिष्यों की क्या गति होती है?

उत्तर-

अज्ञानी गुरु स्वयं सन्मार्ग पर नहीं है तो वह शिष्य को क्या मार्ग दिखाएगा? भ्रमित और बायाडंबरों से पूर्ण गुरु के साथ रहनेवाले शिष्यों को मंज़िल नहीं मिलती। वे अज्ञानी गुरु समेत डूब जाते हैं और अंतकाल में पश्चाताप करते हैं जबकि उस समय वे अपना जीवन व्यर्थ गँवा चुके होते हैं।

प्रश्न 8:

बाहय आडंबरों की अपेक्षा स्वयं (आत्म) को पहचानने की बात किन पंक्तियों में कही गई है? उन्हें अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर-

बाहय आडंबरों की अपेक्षा स्वयं को पहचानने की बात निम्नलिखित पंक्तियों में कही गई है-

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।

साखी सब्दहि गावत भूले, आत्म खबरि न जाना।

इसका अर्थ यह है कि हिंदू-मुसलमान-दोनों धर्म के बाहरी स्वरूप में उलझे रहते हैं। कोई टोपी पहनता है तो कोई माला पहनता है। माथे पर तिलक व शरीर पर छापे लगाकर अहकार दिखाते हैं। वे साखी-सबद आदि गाकर अपने आत्मस्वरूप को भूल जाते हैं।

पद के आस-पास

प्रश्न 1:

अन्य संत कवियों नानक, दादू और रैदास आदि के ईश्वर संबंधी विचारों का संग्रह करें और उन पर एक परिचर्चा करें।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2:

कबीर के पदों को शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनों में लयबद्ध भी किया गया है; जैसे- कुमारगंधर्व, भारती बंधु और प्रहलाद सिंह टिपाणिया आदि द्वारा गाए गए पद। इनके कैसेट्स

अपने पुस्तकालय के लिए मँगवाएँ और पादयपुस्तक के पदों को भी लयबदध करने का प्रयास करें।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

‘हम तो एक एक करि जामा’ – पद का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

उत्तर-

इस पद में कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है, ज्योति रूप में स्वीकारा है तथा उसकी व्याप्ति चराचर संसार में दिखाई है। इसी व्याप्ति को अद्वैत सत्ता के रूप में देखते हुए विभिन्न उदाहरणों के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। कबीरदास ने आत्मा और परमात्मा को एक रूप में ही देखा है। संसार के लोग अज्ञानवश इन्हें अलग-अलग मानते हैं। कवि पानी, पवन, प्रकाश आदि के उदाहरण देकर उन्हें एक जैसा बताता है। बाढ़ी लकड़ी को काटता है, परंतु आग को कोई नहीं काट सकता। परमात्मा सभी के हृदय में विद्यमान है। माया के कारण इसमें अंतर दिखाई देता है।

प्रश्न 2:

‘सतों देखो जग बौराना-पद का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

उत्तर-

इस पद में कबीर ने बाहय आडंबरों पर चोट की है। वे कहते हैं कि अधिकतर लोग अपने भीतर की ताकत को न पहचानकर अनजाने में अवास्तविक संसार से रिश्ता बना बैठते हैं और वास्तविक संसार से बेखबर रहते हैं। कबीरदास कहते हैं कि यह संसार पागल हो गया है। यहाँ सच कहने वाले का विरोध तथा झूठ पर विश्वास किया जाता है। हिंदू और मुसलमान राम और रहीम के नाम पर लड़ रहे हैं, जबकि दोनों ही ईश्वर का मर्म नहीं जानते। दोनों बाहय आडंबरों में उलझे हुए हैं। नियम, धर्म, टोपी, माला, छाप, तिलक, पीर, औलिया, पत्थर पूजने वाले और कुरान की व्याख्या करने वाले खोखले गुरु-शिष्यों को आडंबर बताकर उनकी निंदा की गई है।

प्रश्न 3:

ईश्वर के स्वरूप के विषय में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तर-

कबीरदास कहते हैं कि ईश्वर एक है। और उसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं है। वह सर्वव्यापी है। अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कई तर्क दिए हैं; जैसे-संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकार का प्रकाश सबके अंदर समाया हुआ है। यहाँ तक कि एक ही प्रकार की मिट्टी से कुम्हार अलग-अलग प्रकार के बर्तन बनाता है। आगे कहते है कि बढ़ई लकड़ी को काटकर अलग कर सकता है परंतु आग को नहीं। यानी मूलभूत तत्वों (धरती, आसमान, जल, आग, और हवा) को छोड़कर शेष सबको काट कर आप अलग कर सकते हो। इसी तरह से शरीर नष्ट हो जाता है किंतु आत्मा सदैव बनी रहती। आत्मा परमात्मा का ही अंश है जो अलग-अलग रूपों में सबमें समाया हुआ है। अत: ईश्वर एक है उसके रूप अनेक हो सकते हैं।

प्रश्न 4:

परमात्मा को पाने के लिए कबीर किन दोषों से दूर रहने की सलाह देते हैं?

उत्तर-

परमात्मा को पाने के लिए कबीर मोह, माया, अज्ञान, घमंड आदि से दूर रहने की सलाह देते हैं। वे जीवन-यापन के भय से मुक्ति की चेतावनी भी देते हैं। क्योंकि मोह, माया, अज्ञान, घमंड तथा भय आदि परमात्मा को पाने में बाधक हैं। कबीर दास के अनुसार असली साधक में इन दुर्गुणों का समावेश नहीं होता है।

प्रश्न 5:

कबीर पाखंडी गुरुओं के संबंध में क्या टिप्पणी करते हैं?

उत्तर-

कबीर कहते हैं कि पाखंडी गुरुओं को कोई ज्ञान नहीं होता। वे घूम-घूमकर मंत्र देकर शिष्य बनाते हैं। ये शिष्यों से गलत कार्य करवाते हैं। यानी ये मानव समाज को अलग-अलग धार्मिक चौपालों के कट्टर प्रतिनिधि बनाकर समाज में धार्मिक भेद-भाव का वातावरण बनाते हैं। फलस्वरूप समाज में कटुता का भाव पैदा होता है। अत: ऐसे गुरुओं से हमें बचना चाहिए। नहीं तो अंतत: पछताना पड़ेगा।

प्रश्न 6:

कबीर की दृष्टि में किन लोगों को आत्मबोध नहीं होता?

उत्तर-

कबीर का मानना है कि वे लोग आत्मबोध नहीं पा सकते जो बाहय आडंबरों में उलझे रहते हैं। वे सत्य पर विश्वास न करके झूठ को सही मानते हैं। धर्म के ठेकेदार लोगों को पाखंड के द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताते हैं, जबकि वे सभी गलत हैं। उनके तरीकों से अह भाव का उदय होता है; जबकि ईश्वर की प्राप्ति सहज भाव से प्राप्त की जा सकती है।

मीरा

● **जीवन परिचय-**कृष्ण भक्त कवियों में मीराबाई का प्रमुख स्थान है। उनका जन्म 1498 ई० में मारवाड़ रियासत के कुड़की नामक गाँव में हुआ। इनका विवाह 12 वर्ष की आयु में चित्तौड़ के राणा सांगा के पुत्र कुंवर भोजराज के साथ हुआ। शादी के 7-8 वर्ष बाद ही इनके पति का देहांत हो गया।

इनके मन में बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी। इसलिए वे कृष्ण को अपना आराध्य और पति मानती रहीं।

इन्होंने देश में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद ये वापस मेड़ता आ गई। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारका चली गई। माना जाता है कि वहीं रणछोड़ दास जी की मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गई। इनका देहावसान 1546 ई. में माना जाता है।

● **रचनाएँ-**मीरा ने मुख्यत: स्फुट पदों की रचना की। ये पद 'मीराबाई की पदावली' के नाम से संकलित हैं। दूसरी रचना नरसीजी-रो-माहेरो है।

● **साहित्यिक विशेषताएँ-**मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्त कवयित्री थीं। कृष्ण की उपासिका होने के कारण इनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से मौजूद है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। संत कवि रैदास उनके गुरु माने जाते हैं। इन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा – विरोध किया। इन्होंने पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा सत्संग को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम मानती थीं और ज्ञान को मुक्ति का साधन। निंदा से वे कभी विचलित नहीं हुई। वे उस युग के रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्री-मुक्ति की आवाज बनकर उभरी।

भाषा-शैली-मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। इन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। उनके पद लोक व शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय हैं। इनकी भाषा मूलत: राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है। कृष्ण के प्रेम की दीवानी मीरा पर सूफियों के प्रभाव को भी देखा जा सकता है।

पाठ का सारांश

पहले पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं और कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

दूसरे पद में प्रेम रस में डूबी हुई मीरा सभी रीति-रिवाजों और बंधनों से मुक्त होने और गिरिधर के स्नेह के कारण अमर होने की बात कर रही हैं।

मीरा पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचती हैं। लोग इस हरकत पर उन्हें बावली कहते हैं तथा कुल के लोग कुलनाशिनी कहते हैं। राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा जिसे उन्होंने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु कृष्ण सहज भक्ति से भक्तों को मिल जाते हैं।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

मरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई

जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई

छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहैं कोई?

संतन द्विग बैठि-बेठि, लोक-लाज खोयी

असुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बलि बोयी

अब त बेलि फॅलि गायी, आणद-फल होयी

दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलायी

दधि मथि घृत काढ़ि लियों, डारि दयी छोयी

भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी

दासि मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही (पृष्ठ-137)

शब्दार्थ

गिरधर-पर्वत को धारण करने वाला यानी कृष्ण। गोपाल-गाएँ पालने वाला, कृष्ण। मोर मुकुट-मोर के पंखों का बना मुकुट। सोई-वही। जा के-जिसके। छाँड़ि दयी-छोड़ दी। कुल की कानि-परिवार की मर्यादा। करिहै-करेगा। कहा-क्या। ढिग-पास। लोक-लाज-समाज की मर्यादा। असुवन-आँसू। सींचि-सींचकर। मथनियाँ-मथानी। विलायी-मथी। दधि-दही। घृत-घी। काढ़ि लियो-निकाल लिया। डारि दयी-डाल दी। जगत-संसार। तारो-उद्धार। छोयी-छाछ, सारहीन अंश। मोहि-मुझे।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित मीराबाई के पदों से लिया गया है। इस पद में उन्होंने भगवान कृष्ण को पति के रूप में माना है तथा अपने उद्धार की प्रार्थना की है।

व्याख्या-मीराबाई कहती हैं कि मेरे तो गिरधर गोपाल अर्थात् कृष्ण ही सब कुछ हैं। दूसरे से मेरा कोई संबंध नहीं है। जिसके सिर पर मोर का मुकुट है, वही मेरा पति है। उनके लिए मैंने परिवार की मर्यादा भी छोड़ दी है। अब मेरा कोई क्या कर सकता है? अर्थात् मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं संतों के पास बैठकर ज्ञान प्राप्त करती हूँ और इस प्रकार लोक-लाज भी खो दी है। मैंने अपने आँसुओं के जल से सींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है। अब यह बेल फैल गई है और इस पर आनंद रूपी फल लगने लगे हैं। वे कहती हैं कि मैंने कृष्ण के प्रेम रूप दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है। मैंने दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया और छाछ रूपी सारहीन अंशों को छोड़ दिया। वे प्रभु के भक्त को देखकर बहुत प्रसन्न होती हैं और संसार के लोगों को मोह-माया में लिप्त देखकर रोती हैं। वे स्वयं को गिरधर की दासी बताती हैं और अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

विशेष-

1. मीरा कृष्ण-प्रेम के लिए परिवार व समाज की परवाह नहीं करतीं।
2. मीरा की कृष्ण के प्रति अनन्यता व समर्पण भाव व्यक्त हुआ है।
3. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
4. 'बैठि-बैठि', 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
5. माधुर्य गुण है।
6. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का सुंदर रूप है।

7. 'मोर-मुकुट', 'प्रेम-बेलि', 'आणद-फल' में रूपक अलंकार है।
8. संगीतात्मकता व गेयता है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. मीरा किसको अपना सर्वस्व मानती हैं तथा क्यों?
2. मीरा कृष्ण-प्रेम के विषय में क्या बताती हैं?
3. मीरा के रोने और खुश होने का क्या कारण है?
4. कृष्ण को अपनाने के लिए मीरा ने क्या-क्या खोया?

उत्तर-

1. मीरा कृष्ण को अपना सर्वस्व मानती हैं; क्योंकि उन्होंने कृष्ण बड़े प्रयत्नों से पाया है। वे उन्हें अपना पति मानती हैं।
2. कृष्ण-प्रेम के विषय में मीरा बताती है कि उसने अपने आँसुओं से कृष्ण प्रेम रूपी बेल को सींचा अब वह बेल बड़ी हो गई है और उसमें आनंद-फल लगने लगे हैं।
3. मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हैं तथा संसार के अज्ञान व दुर्दशा को देखकर रोती हैं।
4. कृष्ण को अपनाने के लिए मीरा ने अपने परिवार की मर्यादा व समाज की लाज को खोया है।

2.

पग घुँघरू बांधि मीरां नाची,

मैं तो मेरे नारायण सूं, आपहि हो गई साची

लोग कहँ, मीरा भई बावरी, न्यात कहैं कुल-नासी

विस का प्याला राणी भेज्या, पवित मीरा हॉर्सी

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अविनासी (पृष्ठ-137)

शब्दार्थ

पग-पैर। नारायण-ईश्वर। आपहि-स्वयं ही। साची-सच्ची। भई-होना। बावरी-पागल। न्यात-परिवार के लोग, बिरादरी। कुल-नासी-कुल का नाश करने वाली। विस-जहर। पीवत-पीती हुई। हाँसी-हँस दी। गिरधर-पर्वत उठाने वाले। नागर-चतुर। अविनासी-अमर।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवयित्री **मीराबाई** के पदों से लिया गया है। इस पद में, उन्होंने कृष्ण प्रेम की अनन्यता व सांसारिक तानों का वर्णन किया है।

व्याख्या-मीराबाई कहती हैं कि वह पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के समक्ष नाचने लगी है। इस कार्य से यह बात सच हो गई कि मैं अपने कृष्ण की हूँ। उसके इस आचरण के कारण लोग उसे पागल कहते हैं। परिवार और बिरादरी वाले कहते हैं कि वह कुल का नाश करने वाली है। मीरा विवाहिता है। उसका यह कार्य कुल की मान-मर्यादा के विरुद्ध है। कृष्ण के प्रति उसके प्रेम के कारण राणा ने उसे मारने के लिए विष का प्याला भेजा। उस प्याले को मीरा ने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसका प्रभु गिरधर बहुत चतुर है। मुझे सहज ही उसके दर्शन सुलभ हो गए हैं।

विशेष-

1. कृष्ण के प्रति मीरा का अटूट प्रेम व्यक्त हुआ है।
2. मीरा पर हुए अत्याचारों का आभास होता है।

3. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
4. संगीतात्मकता है।
5. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।
6. भक्ति रस की अभिव्यक्ति हुई है।
7. 'बावरी' शब्द से बिंब उभरता है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. मीरा कृष्ण-भक्ति में क्या करने लगीं?
2. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?
3. राणा ने मीरा के लिए क्या भेजा तथा क्यों?
4. 'सहज मिले अविनासी'-आशय स्पष्ट करें।

उत्तर-

1. मीरा कृष्ण-भक्ति में अपने पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचने लगीं। वे कृष्ण प्रेम में खो गई।
2. लोग मीरा को बावरी कहते हैं, क्योंकि वे विवाहिता हैं। इसके बावजूद वे कृष्ण को अपना पति मानती हैं। वे लोक-लाज को छोड़ कर मंदिर में कृष्णमूर्ति के सामने नाचने लगीं। तत्कालीन समाज के लिए यह कार्य मर्यादा-विरुद्ध था।
3. राणा ने मीरा के कृष्ण प्रेम को देखते हुए उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा। वह अपने परिवार का अपमान नहीं करवाना चाहता था। मीरा ने उस प्याले को पी लिया।
4. इसका अर्थ है कि जो कृष्ण से सच्चा प्रेम करता है, उसे भगवान सहजता से मिल जाते हैं।

- **काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न**

1.

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहैं कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी
असुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बलि बोयी
अब त बलि फैलि गयी, आणद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलायी
दधि मथि घृत काढ़ि लियों, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही

प्रश्न

1. भाव-सौदर्य बताइए।
2. शिल्प–सौदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

1. इस पद में मीरा का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम व्यक्त हुआ है। वे कुल की मर्यादा को भी छोड़ देती हैं तथा कृष्ण को अपना सर्वस्व मानती हैं। उन्होंने कृष्ण-प्रेम की बेल को आँसुओं से सींचकर बड़ा किया है और भक्ति रूपी मथानी से सार रूपी घी निकाला है। वे प्रभु से अपने उद्धार की प्रार्थना करती हैं और उससे विरह की पीड़ा सहती हैं।
2. - राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में सुंदर अभिव्यक्ति है।
   - भक्ति रस है।
   - 'दूध की मथनियाँ . छोयी' में अन्योक्ति अलंकार है।
   - 'प्रेम-बेलि', 'आणद-फल' में रूपक अलंकार है।
   - अनुप्रास अलंकार की छटा है-

– गिरधर गोपाल

– मोर-मुकुट

– कुल की कानि

– कहा करिहै कोई

– लोक-लाज

– बेलि बोयी

- 'बैठि-बैठि', 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
- कृष्ण के अनेक नामों से काव्य की सुंदरता बढ़ी है-गिरधर, गोपाल, लाल आदि।
- संगीतात्मकता व गेयता है।

2.

पग धुंधरू बाधि मीरा नाची,

मैं तो मेरे नारायण सू, आपहि हो गई साची

लोग कहैं, मीरा भई बावरी, न्यात कहै कुल-नासी

विस का प्यालां राणा भंज्या, पीवत मीरा हँसी

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिल अविनासी

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प–सौदर्य बताइए।

उत्तर-

1. इस पद में मीरा की आनंदावस्था का प्रभावी वर्णन हुआ है। वे धुंघरू बाँधकर नाचती हैं तथा प्रिय कृष्ण को रिझाती हैं। उन्हें लोकनिंदा की परवाह नहीं है।
   राणा का विष का प्याला भी उन्हें मार नहीं पाता है। वे अपनी सहज भक्ति से अपने प्रिय को पाती हैं।
2. - राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में प्रभावी अभिव्यक्ति है।
   - संगीतात्मकता व गेयता है।

- अनुप्रास अलंकार है-कहै कुल।
- भक्ति रस की अभिव्यक्ति हुई है।
- नृत्य करने का बिंब प्रत्यक्ष हो उठता है।
- कृष्ण के कई नामों का प्रयोग किया है-नारायण, अविनासी, गिरधर, नागर।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पद के साथ

प्रश्न 1:

मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

उत्तर-

मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती हैं। उसका रूप मन मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं। उनके सिर पर मोरपंखी मुकुट है। इस रूप को अपना मानकर वे सारे संसार से विमुख हो गई हैं।

प्रश्न 2:

भाव व शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क)

अंसुवन जल सींचि-सीचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गई आणंद-फल होयी

(ख)

दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी

दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी

उत्तर-

(क) भाव-सौंदर्य- इस पद में भक्ति की चरम सीमा है। विरह के आँसुओं से मीरा ने कृष्ण-प्रेम की बेल बोयी है। अब यह बेल बड़ी हो गई है और आनंद-रूपी फल मिलने का समय आ गया है।

शिल्प-सौंदर्य-

1. 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
2. सांगरूपक अलंकार है-प्रेम-बेलि, आणंद-फल, असुवन जल
3. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।
4. अनुप्रास अलंकार है-बलि बोयी।
5. संगीतात्मकता है।

(ख) भाव-सौंदर्य- इन काव्य पंक्तियों में कवयित्री ने दूध की मथानी से भक्ति रूपी घी निकाल लिया तथा सांसारिक सुखों को छाछ के समान छोड़ दिया। इस प्रकार उन्होंने भक्ति की महिमा को व्यक्त किया है।

शिल्प-सौंदर्य-

1. अन्योक्ति अलंकार है।

2. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।

3. प्रतीकात्मकता है-‘घी’ भक्ति का तथा ‘छाछ” सांसारिकता का प्रतीक है।

4. दधि, घृत आदि तत्सम शब्द हैं।

5. संगीतात्मकता है।

6. गेयता है।

प्रश्न 3:

लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तर-

दीवानी मीरा कृष्ण भक्ति में अपनी सुध-बुध खो चुकी है। उसे संसार की किसी परंपरा, रीति-रिवाज, मर्यादा अथवा लोक-लाज का ध्यान नहीं है। इसीलिए लोग उसे बावरी कहते हैं। संसारी लोग मीरा की भक्ति की पराकाष्ठा को पागलपन मानते हैं। मीरा राजसी वैभव और सुख को ठुकराकर कृष्ण भजन गाती हुई घूम रही है। ऐसा कार्य तो कोई पागल ही कर सकता है।

प्रश्न 4:

विस का प्याला राणा भेज्या, पीवत मीरा हाँसी-इसमें क्या व्यंग्य छिपा है?

उत्तर-

मीरा को मारने के लिए राणा ने विष का प्याला भेजा, जिसे मीरा ने हँसते-हँसते पी लिया। कृष्ण-भक्ति के कारण उनका कुछ नहीं हुआ। इस तरह यह व्यंग्य करता है कि प्रभु-भक्ति करने वालों का विरोधी लोग कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

प्रश्न 5:

मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तर-

संसार के सभी लोग संसारी मायाजाल में फंसकर ईश्वर (कृष्ण) से दूर हो गए हैं। उनका सारा जीवन व्यर्थ जा रहा है। इस सारहीन जीवन-शैली को देखकर मीरा को रोना आता है। लोग दुर्लभ मानव जन्म को ईश्वर भक्ति में नहीं लगाते। इसलिए संसार की दुर्दशा पर मीरा को रोना आ रहा है।

पद के आसपास

प्रश्न 1:

कल्पना करें, प्रेम-प्राप्ति के लिए मीरा को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा?

उत्तर-

मीरा के कष्टों और कठिनाइयों की कल्पना करना आसान नहीं है। मीरा ने समस्त संसार का विरोध सहन किया। उस की मन:स्थिति घरवाले भी नहीं समझ सके और उनका विवाह कर दिया। ससुराल पहुँचने पर पहले दिन से ही पागल कहा गया। राजघराने की मर्यादा उन्हें बाँध न सकी। उस कड़े पहरे और पर्दे से निकलना ही कठिन था। मीरा गली-गली कृष्ण का भजन गाती नाचती फिर रही थीं। उन्हें मारने के लिए विष दिया गया, सर्प का पिटारा भेजा गया और काँटों की सेज पर सुलाया गया। ये सभी कष्ट वे कृष्ण के सहारे ही झेल रही थीं।

प्रश्न 2:

लोक-लाज खोने का अभिप्राय क्या है?

उत्तर-

मीरा का विवाह राजपूत राजपरिवार में हुआ था। वहाँ महिलाएँ पर्दे में रहती थीं। उन्हें मंदिरों में नाचने, संतों के साथ बैठने, परपुरुष के साथ संबंध बनाने का अधिकार नहीं था। ऐसे कार्य करने वाली महिलाओं को समाज से प्रताड़ना मिलती थी। मीरा ने ये सभी बंधन तोड़े और लोक-लाज खो दी। लोक-लाज खोने का अर्थ है-समाज की मर्यादाओं को तोड़ना।

प्रश्न 3:

मीरा ने 'सहज मिले अविनासी' क्यों कहा है?

उत्तर-

मीरा के अनुसार कृष्ण का जो रूप, जो संबंध (पति) उन्होंने पाया वह बिलकुल सहजता से, बिना किसी बाह्याडंबर के मीरा की व्यक्तिगत अनुभूति रही। अतः मीरा ने उन्हें 'सहज मिले अविनासी' कहा है।

प्रश्न 4:

'लोग कहै, मीरा भई बावरी, न्यात कहै कुल-नासी'- मीरा के बारे में लोग (समाज) और न्यात (कुटुब) की ऐसी धारणाएँ क्यों हैं?

उत्तर-

समाज के लोग धन-दौलत, सत्ता, जमीन आदि को ही सच मानते हैं। जबकि मीरा सुख-सुविधाएँ छोड़कर गलियों में भटकती रहती थीं। अत: वे उसे बावली समझते थे। वे उसकी भक्ति को नहीं समझ सके।

परिवारवालों का कहना था कि मीरा ने परिवार की मर्यादाओं का पालन नहीं किया। उसने पर्दा-प्रथा न मानना, संतों के साथ घूमना, मंदिरों में नाचना आदि कार्य करके सांसारिक धर्म को नहीं निभाया। अत: वे उसे कुल का नाश करने वाली मानते थे।

अन्य हल प्रश्न

- **लघूत्तरात्मक प्रश्न**

प्रश्न 1:

मीरा ने जीवन का सार किस उदाहरण से समझाया है?

उत्तर-

मीरा कहती हैं कि उसने दही को मथकर घी निकाल लिया तथा छाछ छोड़ दिया। उसने जीवन का मंथन करके कृष्ण-भक्ति को सार के रूप में प्राप्त कर लिया तथा शेष संसार को छाछ की तरह छोड़ दिया।

प्रश्न 2:

'मेरे तो गिरधर गोयाल'-पद का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर-

इस पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं

से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं। वे कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

प्रश्न 3:

'पग धुंधरू बाँध मीरा नाची'-पद का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर-

इस पद में प्रेम रस में डूबी हुई मीरा सभी रीति-रिवाजों और बंधनों से मुक्त होने और गिरिधर के स्नेह के कारण अमर होने की बात कर रही हैं। मीरा पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचती हैं। लोग इस हरकत पर उन्हें बावरी कहते हैं तथा कुल के लोग उन्हें कुलनाशिनी कहते हैं। राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा जिसे उसने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु कृष्ण सहज भक्ति से भक्तों को मिल जाते हैं।

प्रश्न 4:

आनंद-फल की प्राप्ति के लिए मीरा ने क्या किया?

उत्तर-

आनंद-फल की प्राप्ति के लिए उन्होंने कुल की मर्यादा त्यागी, परिवार के ताने सहे साथ ही संतों की संगति करनी पड़ी। उन्होंने आँसुओं से प्रेम-बेल को सींचा तब जाकर उन्हें आनद-फल प्राप्त हुआ।

प्रश्न 5:

'प्रेम-केलि' के रूपक को स्पष्ट करें।

उत्तर-

प्रेम की बेल को विरह के आँसुओं से सींचना पड़ता है, फिर वह बड़ी होती है तथा अंत में आनंद रूपी फल मिलता है। सच्चे प्रेम में विरह सहना पड़ता है तभी आनंद प्राप्त होता है।

कवि परिचय
रामनरेश त्रिपाठी

● **जीवन परिचय**-रामनरेश त्रिपाठी का जन्म 1881 ई० में उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के कोइरीपुर नामक स्थान पर हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा विधिवत् नहीं हुई। इन्होंने स्वाध्याय से हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। इनकी कविताओं का विषय-वस्तु देश-प्रेम और वैयक्तिक प्रेम हैं। इन्होंने 20 हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा की तथा हजारों ग्रामगीतों का संकलन भी किया। इनकी मृत्यु 1962 ई० में हुई।

● **रचनाएँ**-इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं-

खड काव्य-पथिक, मिलन, स्वप्न।

कविता-संग्रह-मानसी।

संपादन-कविता कौमुदी, ग्रामगीत।

आलोचना-गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता।

● **साहित्यिक विशेषताएँ**-रामनरेश त्रिपाठी छायावाद पूर्व की खड़ी बोली के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। इन्होंने अपने समय के समाज सुधार के स्थान पर रोमांटिक प्रेम को कविता का विषय बनाया। इनकी कविताओं में देश-प्रेम और वैयक्तिक प्रेम, दोनों मौजूद हैं, लेकिन देश-प्रेम को विशेष स्थान दिया है-

"पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है।
यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।"

'कविता कौमुदी' संकलन में इन्होंने हिंदी, उर्दू, बांग्ला और संस्कृत की लोकप्रिय कविताओं का संकलन किया है। ग्रामगीतों के संकलन से इन्होंने लोकसाहित्य का संरक्षण किया।
हिंदी में ये बाल साहित्य के जनक माने जाते हैं। इन्होंने कई वर्ष तक बानर नामक बाल पत्रिका का संपादन किया, जिसमें मौलिक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ, प्रेरक प्रसंग आदि प्रकाशित होते थे। कविता के अलावा उन्होंने नाटक, उपन्यास, आलोचना, संस्करण आदि अन्य विधाओं में भी रचनाएँ कीं।

पाठ का साराशा

'पथिक' कविता में दुनिया के दुखों से विरक्त काव्य नायक पथिक की प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसने की इच्छा का वर्णन किया है। यहाँ वह किसी साधु द्वारा संदेश ग्रहण करके देशसेवा का व्रत लेता है। राजा उसे मृत्युदंड देता है, परंतु उसकी कीर्ति समाज में बनी रहती है।

सागर के किनारे खड़ा पथिक, उसके सौंदर्य पर मुग्ध है। प्रकृति के इस अद्भुत सौंदर्य को वह मधुर मनोहर प्रेम कहानी की तरह पाना चाहता है। प्रकृति के प्रति पथिक का यह प्रेम उसे अपनी पत्नी के प्रेम से दूर ले जाता है। इस रचना में प्रेम, भाषा व कल्पना का अद्भुत संयोग मिलता है।

यह **'पथिक'** खंडकाव्य का अंश है। इसमें कवि ने प्रकृति के सुंदर रूप का चित्रण किया है। पथिक सागर के किनारे खड़ा है। वह आसमान में मेघमाला और नीचे नीले-समुद्र को देखकर बादलों पर बैठकर विचरण करना चाहता है। वह लहरों पर बैठकर समुद्र का कोना-कोना देखना चाहता है।

समुद्र तल से आते हुए सूरज को देखकर कवि कल्पना करता है मानो सूर्य की किरणों ने लक्ष्मी को लाने के लिए सोने की सड़क बना दी हो। वह सागर की मजबूत, भयहीन व धीर गर्जनाओं पर मुग्ध है तथा असीम आनंद पाता है। चंद्रमा के उदय के बाद आकाश में तारे छिटक जाते हैं और कवि उस सौंदर्य पर मुग्ध है। चंद्रमा की रोशनी से वृक्ष अलंकृत से हो जाते हैं, पक्षी चहक उठते हैं, फूल महक उठते हैं तथा बादल बरसने लगते हैं। पथिक भी भावुक होकर आँसू बहाने लगता है। पथिक लहर, समुद्र, तट, पत्ते, वृक्ष पहाड़ आदि सबको पाकर सुख व आनंद का जीवन जीना चाहता है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला।
रवि के सम्मुख थिरक रही हैं नभ में वारिद-माला।
नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन है।
घन पर बैठ, बीच में बिचरूं यही चाहता मन है।
रत्नाकर गर्जन करता है, मलयानिल बहता है।
हरदम यह हौसला हृदय में प्रिये! भरा रहता हैं।
इस विशाल, विस्तृत, महिमामय रत्नाकर के घर के-
कोने-कोने में लहरों पर बैठ फिरू जी भर के। (पृष्ठ-142)

शब्दार्थ

प्रतिक्षण-हर समय। नूतन-नया। वेश-रूप। रंग-बिरंग-रंगीन। निराला-अनोखा। रवि-सूर्य। सम्मुख-सामने। थिरक-नाच। नभ-आकाश। वारिद-माला-गिरती हुई वर्षा की लड़ियाँ। नील-नीला। मनोहर-सुंदर। गगन-आकाश। घन-बादल। बिचरूं-विचरण करूं। रत्नाकर-समुद्र। मलयानिल-मलय पर्वत से आने वाली सुगंधित हवा। हौसला-उत्साह। विस्तृत-फैली हुई। महिमामय-महान।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता 'पथिक' से उद्धृत है। इसके रचयिता **रामनरेश त्रिपाठी** हैं। इस कविता में पथिक दुनिया के दुखों से विरक्त होकर प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसना चाहता है। कवि पथिक के प्रकृति-प्रेम के बारे में बताता है।

व्याख्या-प्रस्तुत कविता में पथिक कहता है कि आकाश में सूर्य के सामने बादलों का समूह हर क्षण नए रूप बनाकर निराले रंग में नाचता प्रतीत हो रहा है। नीचे नीला समुद्र है तथा ऊपर मन को हरने वाला नीला आकाश है। ऐसे में पथिक का मन चाहता है कि वह मेघ पर बैठकर इन दोनों के बीच विचरण करे।

पथिक कहता है कि उसके सामने समुद्र गर्जना कर रहा है और मलय पर्वत स आने वाली सुगंधित हवाएँ भी बह रही हैं। वह प्रिय को संबोधित करता है कि इन दृश्यों से मेरे मन में उत्साह भरा रहता है। मैं भी चाहता हूँ कि लहरों पर बैठकर समुद्र के इस विशालकाय व महिमा से युक्त घर के कोने-कोने को देखें।

विशेष-

1. कवि ने प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है।
2. बादलों द्वारा नृत्य करने में मानवीकरण अलंकार है।
3. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
4. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।

5. मुक्त छंद है।
6. 'कोने-कोने' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
7. संबोधन शैली है।

● **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. कवि किस दृश्य पर मुग्ध है?
2. बादलों को देखकर कवि का मन क्या करता है?
3. समुद्र के बारे में कवि क्या कहता है?
4. 'कोने-कोने 'जी भर के।" पंक्ति का आशय बताइए।

उत्तर-

1. कवि सूरज की धूप व बादलों की लुका-छिपी पर मुग्ध है। आकाश भी नीला है तथा मनोहर समुद्र भी नीला और विस्तृत है।
2. बादलों को देखकर कवि का मन करता है कि वह बादल पर बैठकर नीले आकाश और समुद्र के मध्य विचरण करे।
3. समुद्र के बारे में पथिक के माध्यम से कवि बताता है कि यह रत्नों से भरा हुआ है। यहाँ सुगंधित हवा बह रही है तथा समुद्र गर्जना कर रहा है।
4. इसका अर्थ है कि कवि लहरों पर बैठकर महान तथा दूर-दूर तक फैले सागर का कोना-कोना घूमकर उसके अनुपम सौंदर्य को देखना चाहता है।

2.

निकल रहा हैं जलनिधि-तल पर दिनकर-बिब अधूरा।
कमला के कचन-मदिर का मानों कात कैंगूरा।
लाने को निज पुण्य-भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी।
निर्भय, दृढ़, गभीर भाव से गरज रहा सागर है।
लहरों पर लहरों का आना सुदर, अति सुदर हैं।
कहो यहाँ से बढ़कर सुख क्या पा सकता है प्राणी?
अनुभव करो हृदय से, ह अनुराग-भरी कल्याणी। (पृष्ठ-142)

शब्दार्थ

जलनिधि-सागर। दिनकर-सूर्य। बिंब-छवि। कमला-लक्ष्मी। कंचन-सोना। कांत-सुंदर। कैंगूरा-महल का ऊपरी भाग, गुंबद, बूर्ज। निज-अपना। असवारी-सवारी। रत्नाकर-समुद्र। स्वर्ण-सोना। निर्भय-निडर। दृढ़-मजबूत। गंभीर-गहरा। अनुराग-प्रेम। कल्याणी-मंगलकारिणी।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता 'पथिक' से उद्‌धृत है। इसके रचयिता **रामनरेश त्रिपाठी** हैं। इस कविता में पथिक दुनिया के दुखों से विरक्त होकर प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसना चाहता है। कवि पथिक के प्रकृति-प्रेम के बारे में बताता है।

व्याख्या-पथिक सूर्योदय का वर्णन करते हुए कहता है कि समुद्र की सतह से सूर्य का बिंब अधूरा निकल रहा है अर्थात् आधा सूर्य जल के अंदर है तथा आधा बाहर। ऐसा लगता है मानो यह लक्ष्मी देवी के स्वर्ण-मंदिर का चमकता हुआ कैंगूरा हो। पथिक को लगता है कि समुद्र ने अपनी पुण्य-भूमि

पर लक्ष्मी की सवारी लाने के लिए अति प्यारी सोने की सड़क बना दी हो। सुबह सूर्य का प्रकाश समुद्र तल पर सुनहरी सड़क का दृश्य प्रस्तुत करता है।
समुद्र भयरहित, मजबूत व गंभीर भाव से गरज रहा है। उस पर लहरें एक के बाद एक आ रही हैं, जो बहुत सुंदर हैं। वह अपनी प्रिया को कहता है कि हे प्रेममयी मंगलकारी प्रिया! तुम अपने हृदय से इस सौंदर्य का अनुभव करो और बताओ कि यहाँ जो सुख मिल रहा है, क्या उससे अधिक सुख कहीं मिल सकता है? अर्थात् इस सौंदर्य का कोई मुकाबला नहीं है।

विशेष-

1. कवि ने सूर्योदय का अद्भुत वर्णन किया है; जैसे-स्वर्णमार्ग की कल्पना।
2. कवि प्रकृति-सौंदर्य व प्रिया-प्रेम में प्रकृति को सुंदर मानता है।
3. कमला ….. कँगूरा' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
5. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।
6. मुक्त छद है।
7. प्रश्न अलंकार है।
8. भाषा प्रवाहमयी है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. सूर्योदय देखकर कवि को क्या लगता है?
2. सागर के विषय में पथिक क्या बताता है?
3. पथिक अपनी प्रिया को कैसे संबोधित करता है तथा उसे क्या बताना चाहता है?
4. 'कमला का कचन-मंदिर' किसे कहा गया है?

उत्तर-

1. सूर्योदय का दृश्य देखकर कवि को लगता है कि समुद्र तल पर सूर्य का बिंब अधूरा निकल रहा है अर्थात् आधा सूर्य जल के अंदर है तथा आधा बाहर, मानो यह लक्ष्मी देवी के स्वर्ण-मंदिर का चमकता हुआ कैंगूरा हो।
2. सागर के विषय में पथिक बताता है कि वह निर्भय होकर मजबूती के साथ गंभीर भाव से गरज रहा है, उस पर लहरों का आना-जाना बहुत सुंदर लगता है।
3. पथिक ने अपनी प्रिया को 'अनुराग भरी कल्याणी' कहकर संबोधित किया है। वह उसे बताना चाहता है कि प्रकृति-सौंदर्य असीम है। उसका कोई मुकाबला नहीं है।
4. कमला का कंचन-मंदिर उदय होते सूर्य का छोटा-अंश है। यह कवि की नूतन कल्पना है। लक्ष्मी का निवास सागर ही है जहाँ से सूरज निकल रहा है।

3.

जब गभीर तम अद्ध-निशा में जग को ढक लता है।
अतरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता हैं।
सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।
तट पर खड़ा गगन-गगा के मधुर गीत गाता है।

उसमें ही विमुग्ध हो नभ में चद्र विहस देता है।

वृक्ष विविध पत्तों-पुष्पों से तन को सज लेता है।

पक्षी हर्ष सभाल न सकतें मुग्ध चहक उठते हैं।

फूल साँस लेकर सुख की सनद महक उठते हैं- (पृष्ठ-143)

शब्दार्थ

गंभीर-गहरा। तम-अँधेरा। अर्द्ध-आधी। निशा-रात्री। जग-संसार। अंतरिक्ष-धरती की सीमा से परे। सस्मित-मुसकराता हुआ। बदन-मुख। जगत-संसार। मृदु-कोमल। गगन-आकाश। विमुग्ध-प्रसन्न। नभ-आकाश। चंद्र-चाँद। विहँस-हँसना। वृक्ष-पेड़। विविध-कई तरह के। पुष्प-फूल। तन-शरीर। हर्ष-खुशी। मुग्ध-प्रसन्न। सानंद-आनंद सहित।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता 'पथिक' से उद्धृत है। इसके रचयिता **रामनरेश त्रिपाठी** हैं। इस कविता में पथिक दुनिया के दुखों से विरक्त होकर प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसना चाहता है। कवि पथिक के प्रकृति-प्रेम के बारे में बताता है।

व्याख्या-पथिक बताता है कि जब आधी रात को गहरा अंधकार सारे संसार को ढक लेता है और आकाश की छत पर तारे बिखेर देता है अर्थात् आकाश में तारे चमकने लगते हैं। उस समय मुस्कराते हुए मुख से संसार का स्वामी अर्थात् ईश्वर धीमी गति से आता है और समुद्र तट पर खड़ा होकर आकाश-गंगा के मनमोहक गीत गाता है।

संसार के स्वामी के इस कार्य पर मुग्ध होकर आकाश में चाँद हँसने लगता है। उस समय प्रकृति भी प्रेम से मुग्ध हो जाती है। वृक्ष अपने पत्तों व फूलों से शरीर को सजा लेते हैं। पक्षी भी खुशी को सँभाल नहीं पाते और मुग्ध होकर चहचहाने लगते हैं। फूल भी सुख की आनंद युक्त साँस लेकर महकने लगते हैं।

विशेष-

1. प्रकृति का मनोहारी चित्रण है।
2. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
3. कवि की कल्पना अद्भुत है।
4. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
5. मुक्त छद है।
6. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
7. प्रसाद गुण है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. अर्द्धरात्रि का सौदर्य बताइए।
2. संसार का स्वामी क्या कार्य करता है?
3. चंद्रमा के हँसने का क्या कारण है? "
4. वृक्षों व पक्षियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर-

1. अद्र्धरात्रि में संसार पर गहरा अंधकार छा जाता है। ऐसे समय में आकाश की छत पर तारे टिमटिमाने लगते हैं। आकाश गंगा को निहारने के लिए संसार का स्वामी गुनगुनाता है।

2. संसार का स्वामी मुसकराते हुए धीमी गति से आता है तथा तट पर खड़ा होकर आकाश-गंगा के लिए मधुर गीत गाता है।
3. संसार का स्वामी आकाश-गंगा के लिए गीत गाता है। उस प्रक्रिया को देखकर चंद्रमा हँसने लगता है।
4. रात में आकाश-गंगा के सौंदर्य, चंद्रमा के हँसने, जगत-स्वामी के गीतों से वृक्ष व पक्षी भी प्रसन्न हो जाते हैं। वृक्ष अपने शरीर को पत्तों व फूलों से सजा लेता है तथा पक्षी चहकने लगते हैं।

4.

वन, उपवन, गिरि, सानु, कुंज में मेघ बरस पड़ते हैं।

मेरा आत्म-प्रलय होता हैं, नयन नीर झड़ते हैं।

पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु, गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी।

लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहनहरी।।

कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल हैं यह प्रेम-कहानी।

जी में हैं अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।

स्थिर, पवित्र, आनद-प्रवाहित, सदा शांति सुखकर हैं।

अहा! प्रेम का राज्य परम सुदर, अतिशय सुदर हैं।।

शब्दार्थ

वन-जंगल। उपवन-बाग। गिरि-पहाड़। सानु-समतल भूमि। कुंज-वनस्पतियों का झुरमुट मेघ-बादल। आत्म-प्रलय-मन का फूट पड़ना। नयन-आँख। नीर-पानी। झड़ना-निकला। तट-किनारा। तृण-घास। तरु-पेड़। नभ-आकाश। जलद-बादल। विश्व-विमोहनहारी-संसार को मुग्ध करने वाली। मनोहर-सुंदर। उज्ज्वल-उजली। जी-दिल। बानी-वाणी। स्थिर-ठहरा हुआ। आनंद-प्रवाहित-आनंद से बहने वाली धारा। सुखकर-सुखदायी। परम-अत्यधिक अतिशय-अत्यधिक।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता 'पथिक' से उद्धृत है। इसके रचयिता **रामनरेश त्रिपाठी** हैं। इस कविता में पथिक दुनिया के दुखों से विरक्त है और प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसना चाहता है, कवि पथिक के प्रकृति-प्रेम के बारे में बताता है।

व्याख्या-पथिक प्रकृति सौंदर्य से अभिभूत है। वह कहता है कि प्रकृति की प्रेमलीला से वन, उपवन, पहाड़, समुद्र तल व वनस्पतियों पर मेघ बरसने लगते हैं। स्वयं पथिक भी भावुक हो जाता है। उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। वह अपनी प्रिया से कहता है कि समुद्र की लहरों, किनारों, तिनकों, पेड़ों, पर्वतों, आकाश, किरन व बादलों पर लिखी गई विश्व को मोहित करने वाली कहानी को पढो। यह बहुत प्यारी है।

प्रकृति-सौंदर्य की यह प्रेम-कहानी बहुत मधुर, मनोहर व पवित्र है। पथिक चाहता है कि वह इस प्रेम-कहानी का अक्षर बन जाए और विश्व की वाणी बने। यहाँ सदा आनंद प्रवाहित होता है, पवित्रता है तथा सुख देने वाली शांति है। यहाँ प्रेम का राज्य छाया रहता है तथा यह बहुत सुंदर है।

विशेष-

1. प्रकृति-प्रेम का उत्कट रूप है।

2. प्रश्न, आश्चर्यबोधक व भावबोधक शैली है।
3. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
4. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।
5. मुक्त छंद है।
6. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
7. आँसुओं के लिए 'नयन-नीर' सुंदर प्रयोग है।
8. 'सुंदर' के साथ दो विशेषण-परम व अतिशय बहुत प्रभावी हैं।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. कवि कब भाव-विभोर हो जाता है?
2. कवि अपनी प्रेयसी से क्या अपेक्षा रखता है?
3. प्रकृति के लिए कवि ने किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है?
4. कवि किसे प्रेम का राज्य कह रहा है? उसकी क्या विशेषता है?

उत्तर-

1. वन, उपवन, पर्वत आदि सभी पर बरसते बादलों को देखकर कवि भाव-विभोर हो जाता है। फलस्वरूप उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं।
2. कवि अपनी प्रेयसी से अपेक्षा रखता है कि वह लहर, तट, तिनका, पेड, पर्वत, आकाश, किरण व बादलों पर लिखी हुई प्यारी कहानी को पढ़े और उनसे कुछ सीखे।
3. प्रकृति के लिए कवि ने 'स्थिर, पवित्र, आनंद-प्रवाहित' तथा 'सदा शांति सुखकर' विशेषणों का प्रयोग किया है।
4. कवि प्रकृति के असीम सौंदर्य को प्रेम का राज्य कह रहा है। यह प्रेम-राज्य स्थिर, पवित्र शांतिमय, सुंदर व सुखद है।

- **काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न**

1.

प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला।
रवि के सम्मुख थिरक रही हैं नभ में वारिद-माला।
नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन हैं।
घन पर बैठ, बीच में बिचरूं यही चाहता मन हैं।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. काव्यांश का शिल्प–सौदर्य बताइए।

उत्तर-

1. इस काव्यांश में कवि ने पथिक के माध्यम से बादलों के क्षण-क्षण में रूप बदलकर नृत्य करने का वर्णन करता है। प्रकृति का सौंदर्य अप्रतिम है।
2. - प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
   - संगीतात्मकता है। अनुप्रास अलंकार है-नीचे नील, नील गगन।

- खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है। मुक्त छद है।
- तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
- कवि की कल्पना निराली है।
- दृश्य बिंब है।

2.

रत्नाकर गजन करता हैं, मलयानिल बहता हैं।
हरदम यह हौसला ह्रदय में प्रिये! भरा रहता है।
इस विशाल, विस्तृत, महिमामय रत्नाकर के-
घर केकोने-कोने में लहरों पर बैठ. फिरूं जी भर के।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. काव्याश का शिल्प–सौदर्य बताइए।

उत्तर-

1. कवि ने पथिक के माध्यम से समुद्र के गर्जन, सुगंधित हवा तथा अपनी इच्छा को व्यक्त किया है। सूर्योदय का सुंदर वर्णन है। पथिक सागर का कोना-कोना देखना चाहता है।
2. - संस्कृतनिष्ठ शब्दावली है; जैसे- रत्नाकर, मलयानिल, विस्तृत।
   - 'कोन-कोने' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
   - 'जी भरकर' मुहावरे का सटीक प्रयोग है।
   - 'रत्नाकर' का मानवीकरण किया गया है।
   - विशेषणों का सुंदर प्रयोग है; जैसे-विशाल, विस्तृत, महिमामय।
   - संबोधन शैली से सौंदर्य में वृद्धि हुई है।
   - अनुप्रास अलंकार है-विशाल विस्तृत।
   - मुक्त छंद है।

3.

निकल रहा हैं जलनिधि-तल पर दिनकर-बिब अधूरा।
कमला के कचन-मदिर का मानो कात कैंगूरा।
लाने को निज पुण्य-भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
2. शिल्प-सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. पथिक के माध्यम से कवि सूर्योदय का वर्णन करने में अद्भुत कल्पना करता है। वह सूर्योदय के समय समुद्र पर उत्पन्न सौंदर्य से अभिभूत है।

2. ● सुनहरी लहरों में लक्ष्मी के मंदिर की कल्पना तथा चमकते सूरज में कैंगूरे की कल्पना रमणीय है।
   ● स्वर्णिम सड़क का निर्माण भी अनूठी कल्पना है।
   ● रत्नाकर का मानवीकरण किया गया है। अत: मानवीकरण अलंकार है।
   ● अनुप्रास अलंकार की छटा है-कमला के कंचन, कांत कैंगूरा।
   ● 'कमला के …… ' कैंगूरा' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
   ● तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
   ● 'असवारी' शब्द में परिवर्तन कर दिया गया है।
   ● दृश्य बिंब है।

4.

वन, उपवन, गिरि, सानु, कुंज में मेघ बरस पड़ते हैं।
मेरा आत्म-प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं।
पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु, गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी।
लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहनहारी।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।?
2. शिल्प–सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. इस काव्यांश में कवि ने प्रकृति के प्रेम को व्यक्त किया है। सागर किनारे खड़ा होकर 'पथिक' सूर्योदय के सौंदर्य पर मुग्ध है।
2. ● प्रकृति को मानवीय क्रियाकलाप करते हुए दिखाया गया है। अत: मानवीकरण अलंकार है।
   ● संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
   ● 'आत्म-प्रलय' कवि की विभोरता का परिचायक है।
   ● छोटे-छोटे शब्द अर्थ को स्पष्ट करते हैं।
   ● अनुप्रास अलंकार की छटा है-नयन नीर, तट, तृण, तरु, पर प्यारी, विश्व-विमोहनहारी।
   ● संगीतात्मकता है।
   ● संबोधन शैली भी है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

पथिक का मन कहाँ विचरना चाहता है?

उत्तर-

पथिक का मन बादल पर बैठकर नीलगगन में घूमना चाहता है और समुद्र की लहरों पर बैठकर सागर का कोना-कोना देखना चाहता है।

प्रश्न 2:

सूर्योदय वर्णन के लिए किस तरह के बिंबों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर-

सूर्योदय वर्णन के लिए कवि ने निम्नलिखित बिंबों का प्रयोग किया है-

(क) समुद्र तल से उगते हुए सूर्य का अधूरा बिंब अर्थात् गोला अपनी प्रात:कालीन लाल आभा के कारण बहुत ही मनोहर दिखता है।

(ख) वह सूर्योदय के तट पर दिखने वाले आधे सूर्य को कमला के स्वर्ण-मंदिर का कैंगूरा बताता है।

(ग) दूसरे बिंब में वह इसे लक्ष्मी की सवारी के लिए समुद्र द्वारा बनाई स्वर्ण-सड़क बताता है।

प्रश्न 3:

आशय स्पष्ट करें-

(क) सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है। तट पर खड़ा गगन-गगा के मधुर गीत गाता है।

(ख) कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल हैं यह प्रेम कहानी। जी में हैं अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।

उत्तर-

(क) इन पंक्तियों में कवि रात्रि के सौंदर्य का वर्णन करता है। वह बताता है कि संसार का स्वामी मुस्कराते हुए धीमी गति से आता है तथा तट पर खड़ा होकर आकाश-गंगा के मधुर गीत गाता है।

(ख) कवि कहता है कि प्रकृति के सौंदर्य की प्रेम-कहानी को लहर, तट, तिनके, पेड़, पर्वत, आकाश, और किरण पर लिखा हुआ अनुभव किया जा सकता है। कवि की इच्छा है कि वह मन को हरने वाली उज्वल प्रेम कहानी का अक्षर बने और संसार की वाणी बने। वह प्रकृति का अभिन्न हिस्सा बनना चाहता है।

प्रश्न 4:

कविता में कई स्थानों पर प्रकृति को मनुष्य के रूप में देखा गया है। ऐसे उदाहरणों का भाव स्पष्ट करते हुए लिखें।

उत्तर-

कवि ने अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया है जो निम्नलिखित हैं-

(क) *प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला।*

रवि के सम्मुख थिरक रही हैं। नभ में वारिद-माला।

भाव-यहाँ कवि ने सूर्य के सामने बादलों को रंग-बिरंगी वेशभूषा में थिरकती नर्तकी रूप में दर्शाया है।

वे सूर्य को प्रसन्न करने के लिए नए-नए रूप बनाते हैं।

(ख) रत्नाकर गर्जन करता है-

भाव-समुद्र के गर्जन की बात कही है। वह गर्जना ऐसी प्रतीत होती है मानो कोई वीरं अपनी वीरता का हुकार भर रहा हो।

(ग) *लाने को निज पुण्य भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।*

रत्नाकर ने निमित कर दी स्वण-सड़क अति प्यारी।

भाव-कवि को सूर्य की किरणों की लालिमा समुद्र पर सोने की सड़क के समान दिखाई देती है, जिसे समुद्र ने लक्ष्मी जी के स्वागत के लिए तैयार किया है। यह आतिथ्य भाव को दर्शाता है।

(घ) *जब गभीर तम अद्ध-निशा में जग को ढक लता हैं।*

अंतरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता है।

भाव-इस अंश में अंधकार द्वारा सारे संसार को ढकने तथा आकाश में तारे छिटकाने का वर्णन है। इसमें प्रकृति को चित्रकार के रूप में दर्शाया गया है।

(ङ) *सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।*

तट पर खड़ा गगन-गगा के मधुर गीत गाता है।

भाव-इस अंश में ईश्वर को मानवीय रूप में दर्शाया है। वह मुस्कराते हुए आकाश-गंगा के गीत गाता है।

(च) *उससे ही विमुग्ध हो नभ में चद्र विहस देता है।*

वृक्ष विविध पत्तों-पुष्पों से तन को सज लेता है।

फूल साँस लेकर सुख की सनद महक उठते हैं—

भाव-इसमें चंद्रमा को प्रकृति की प्रेम-लीला पर हँसते हुए दिखाया गया है। मधुर संगीत व अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध होकर चंद्रमा भी मानव की तरह हँसने लगता है। वृक्ष भी मानव की तरह स्वयं को सजाते हैं तथा प्रसन्नता प्रकट करते हैं। फूल द्वारा सुख की साँस लेने की प्रक्रिया मानव की तरह मिलती है।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1:

समुद्र को देखकर आपके मन में क्या भाव उठते हैं? लगभग 200 शब्दों में लिखें।

उत्तर-

समुद्र अथाह जलराशि का स्रोत है। उसमें तरह-तरह के जीव-जंतु पाए जाते हैं। वह स्वयं में रहस्य है तथा इसी कारण आकर्षण का बिंदु है। मेरे मन में बचपन से ही उत्कंठा रही है कि सागर को समीप से देखें। उसके पास जाकर देखें कि पानी की विशाल मात्रा को यह कैसे नियंत्रित करता है? इसमें किस-किस तरह की वनस्पतियाँ तथा जीव हैं? लहरें किस तरह आती-जाती हैं?

समुद्र पर सूर्योदय व सूर्यास्त का दृश्य सबसे अद्भुत होता है। सुबह लाल सूर्य धीरे-धीरे ऊपर उठता है और समुद्र के पानी का रंग धीरे-धीरे बदलता रहता है। पहले वह लाल होता है फिर वह नीले रंग में बदल जाता है। शाम के समय समुद्र की लहरों का अपना आकर्षण है। लहरें एक के बाद एक आती हैं। ये जीवन की परिचायक हैं। समुद्र की गर्जना भी सुनाई देती है। शांत समुद्र मन को भाता है। चाँदनी रात में लहरें मादक सौंदर्य प्रस्तुत करती हैं।

प्रश्न 2:

प्रेम सत्य है, सुंदर है-प्रेम के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर परिचर्चा करें।

उत्तर-

यह सही है कि प्रेम सत्य है और सुंदर है। यह अनुभूति हमें ईश्वर का बोध कराती है। प्रेम के अनेक रूप होते हैं-

- मौ का प्रेम
- देश–प्रेम
- प्रेयसी-प्रेम
- मानव-प्रेम

- सहचरणी-प्रेम
- प्रकृति–प्रेम
- बाल-प्रेम

उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं परिचर्चा आयोजित करें।

प्रश्न 3:

वर्तमान समय में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं इस पर चर्चा करें और लिखें कि प्रकृति से जुड़े रहने के लिए क्या कर सकते हैं?

उत्तर-

यह सही है कि वर्तमान समय में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। आज अपनी सुविधाओं के लिए हम जंगलों को काटकर कंक्रीट के नगर-महानगर बसाते जा रहे हैं। रोजगार के लिए चारों तरफ से लोग यहाँ आकर छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। यहाँ रहने वाला व्यक्ति कभी प्रकृति के संपर्क में नहीं रह सकता। उन्हें धूप, छाया, वर्षा, ठंड आदि का आनंद नहीं मिलता। वे लोग गमलों में प्रकृति-प्रेम को दर्शा लेते हैं। यह स्थिति बेहद चिंताजनक है। प्रकृति से जुड़े रहने के लिए हम निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं

1. हम कोशिश करें कि मनुष्यों के आवास स्थान पर खुला पार्क हो।
2. सार्वजनिक कार्यक्रम प्राकृतिक स्थलों के समीप आयोजित किए जाएँ।
3. हर घर में वृक्ष अवश्य हों।
4. स्कूलों एवं अन्य संस्थाओं में पौधे लगवाने चाहिए।
5. सड़क के दोनों किनारों पर काफी संख्या में वृक्ष लगाएँ।
6. महीने में कम-से-कम एक बार नजदीक जगल, नदी, पर्वत या पठार पर जाना चाहिए।

प्रश्न 4:

सागर संबंधी दस कविताओं का संकलन करें और पोस्टर बनाएँ।

उत्तर-

विद्याथी स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

- लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'पथिक" कविता का प्रतिपादय लिखें।

उत्तर-

'पथिक' कविता में दुनिया के दुखों से विरक्त काव्य नायक पथिक की प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होकर वहीं बसने की इच्छा का वर्णन किया है। यहाँ वह किसी साधु द्वारा संदेश ग्रहण करके देशसेवा का व्रत लेता है। राजा उसे मृत्युदंड देता है, परंतु उसकी कीर्ति समाज में बनी रहती है। सागर के किनारे खड़ा पथिक, उसके सौंदर्य पर मुग्ध है। प्रकृति के इस अद्भुत सौंदर्य को वह मधुर मनोहर उज्ज्वल प्रेम कहानी की तरह पाना चाहता है। प्रकृति के प्रति पथिक का यह प्रेम उसे अपनी पत्नी के प्रेम से दूर ले जाता है। इस रचना में प्रेम, भाषा व कल्पना का अद्भुत संयोग मिलता है।

प्रश्न 2:

किन-किन पर मधुर प्रेम-कहानी लिखी प्रतीत होती है?

उत्तर-

समुद्र के तटों, पर्वतों, पेड़ों, तिनकों, किरणों, लहरों आदि पर यह मधुर प्रेम-कहानी लिखी प्रतीत होती है।

प्रश्न 3:

‘अहा! प्रेम का राज परम सुंदर, अतिशय सुंदर है।’-भाव स्पष्ट करें।

उत्तर-

कवि प्रकृति के सुंदर रूप पर मोहित है। उसके सौंदर्य से अभिभूत होकर उसे सबसे अधिक सुंदर राज्य कहकर अपने आनंद को अभिव्यक्त कर रहा है।

प्रश्न 4:

सूर्योदय के समय समुद्र के दृश्य का कवि ने किस प्रकार वर्णन किया है?

उत्तर-

पथिक के माध्यम से सूर्योदय का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि इस समय समुद्र की सतह से सूर्य का बिंब अधूरा निकल रहा है अर्थात् आधा सूर्य जल के अंदर है तथा आधा बाहर। ऐसा लगता है मानो यह लक्ष्मी देवी के स्वर्ण-मंदिर का चमकता हुआ कैंगूरा हो। पथिक को लगता है कि समुद्र ने अपनी पुण्य-भूमि पर लक्ष्मी की सवारी लाने के लिए अति प्यारी सोने की सड़क बना दी हो। सुबह सूर्य का प्रकाश समुद्र तल पर सुनहरी सड़क का दृश्य प्रस्तुत करता है।

कवि परिचय
सुमित्रानंदन पंत

● **जीवन परिचय**-पंत जी का मूल नाम गोसाँई दत्त था। इनका जन्म 1900 ई. में उत्तरांचल के अल्मोड़ा जिले के कौसानी नामक स्थान पर हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी के गाँव में तथा उच्च शिक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई। युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर इन्होंने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। उसके बाद वे स्वतंत्र लेखन करते रहे। साहित्य के प्रति उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार मिले। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। इनकी मृत्यु 1977 ई. में हुई।

● **रचनाएँ**-पंत जी ने समय के अनुसार अनेक विधाओं में कलम चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य- वीणा, ग्रंथि , पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, चिदंबरा, उत्तरा, स्वर्ण किरण, कला, और बूढ़ा चाँद, लोकायतन आदि हैं।

नाटक-रजत रश्मि, ज्योत्स्ना, शिल्पी।

उपन्मस-हार।

कहानियाँ व संस्मरण-पाँच कहानियाँ, साठ वर्ष, एक रेखांकन।

काव्यगत विशेषताएँ-छायावाद के महत्वपूर्ण स्तंभ सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के चितेर कवि हैं। हिंदी कविता में प्रकृति को पहली बार प्रमुख विषय बनाने का काम पंत ने ही किया। इनकी कविता प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों का दस्तावेज है।

प्रकृति के अद्‌भुत चित्रकार पंत का मिजाज कविता में बदलाव का पक्षधर रहा है। आरंभ में उन्होंने छायावाद की परिपाटी पर कविताएँ लिखीं। **पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश** इन्हें जादू की तरह आकृष्ट कर रहा था। बाद में चलकर प्रगतिशील दौर में **ताज** और **वे आँखें** जैसी कविताएँ लिखीं। इसके साथ ही अरविंद के मानववाद से प्रभावित होकर **मानव तुम सबसे सुंदरतम** जैसी पंक्तियाँ भी लिखते रहे।

उन्होंने नाटक, कहानी, आत्मकथा, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्र में भी काम किया है। रूपाभ नामक पत्रिका का संपादन भी किया जिसमें प्रगतिवादी साहित्य पर विस्तार से विचार-विमर्श होता था। पंत जी भाषा के प्रति बहुत सचेत थे। इनकी रचनाओं में प्रकृति की जादूगरी जिस भाषा में अभिव्यक्त हुई है, उसे स्वयं पंत **चित्र भाषा** की संज्ञा देते हैं।

कविता का सारांश

यह कविता पंत जी के प्रगतिशील दौर की कविता है। इसमें विकास की विरोधाभासी अवधारणाओं पर करारा प्रहार किया गया है। युग-युग से शोषण के शिकार किसान का जीवन कवि को आहत करता है। दुखद बात यह है कि स्वाधीन भारत में भी किसानों को केंद्र में रखकर व्यवस्था ने निर्णायक हस्तक्षेप नहीं किया। यह कविता दुश्चक्र में फैसे किसानों के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक दुखों की परतों को खोलती है और स्पष्ट रूप से विभाजित समाज की वर्गीय चेतना का खाका प्रस्तुत करती है।

कवि कहता है कि किसान की अंधकार की गुफा के समान आँखों में दुख की पीड़ा भरी हुई है। इन आँखों को देखने से डर लगता है। वह किसान पहले स्वतंत्र था। उसकी आँखों में अभिमान झलकता था। आज सारे संसार ने उसे अकेला छोड़ दिया है। उसकी आँखों में लहलहाते खेत झलकते हैं जिनसे अब उसे बेदखल कर दिया गया है। उसे अपने बेटे की याद आती है जिसे जमींदार के कारिंदों ने लाठियों से पीटकर मार डाला। कर्ज के कारण उसका घर बिक गया। महाजन ने ब्याज की कौड़ी नहीं छोड़ी तथा उसके बैलों की जोड़ी भी नीलाम कर दी। उसकी उजरी गाय भी अब उसके पास नहीं है।

किसान की पत्नी दवा के बिना मर गई और देखभाल के बिना दुधमुंही बच्ची भी दो दिन बाद मर गई। उसके घर में बेटे की विधवा पत्नी थी, परंतु कोतवाल ने उसे बुला लिया। उसने कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दी। किसान को पत्नी का नहीं, जवान लड़के की याद बहुत पीड़ा देती थी। जब वह पुराने सुखों को याद करता है तो आँखों में चमक आ जाती है, परंतु अगले ही क्षण सच्चाई के धरातल पर आकर पथरा जाती है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

अधिकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से डरता है मन,
भरा दूर तक उनमें दारुण
दैन्य दुख का नीरव रांदन!
वह स्वाधीन किसान रहा,
अभिमान भरा आँखों में इसका,
छोड़ उसे मंझधार आज
संसार कगार सदृश बह खिसका। (पृष्ठ-147)

शब्दार्थ

गुहा-गुफा। सरीखी-समान। दारुण-निर्दय, कठोर। दैन्य-दीनता। नीरव-शब्द रहित। रोदन-रोना। स्वाधीन-स्वतंत्र। अभिमान-गर्व। मैंझधार-समस्याओं के बीच। कगार-किनारा। सदृश-समान।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता 'वे आँखें' से लिया गया है। इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इस कविता में, कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है। व्याख्या-कवि कहता है कि शोषित किसान की गड्ढों में धँसी हुई आँखें अँधेरी गुफा के समान दिखती हैं जिनसे मन में अज्ञात भय उत्पन्न होता है। ऐसा लगता है कि उनमें बहुत दूर तक कोई कष्टप्रद दयनीयता व दुख का मौन रुदन भरा हुआ है। उसकी आँखों में भयानक गरीबी का दुख व्याप्त है। किसान का अतीत अच्छा था। वह सदैव स्वाधीन था। उसके पास अपने खेत थे। उसकी आँखों में स्वाभिमान झलकता था, परंतु आज वह अकेला पड़ गया है। संसार ने उसे समस्याओं के बीच में छोड़कर किनारे की तरह बहकर उससे दूर चला गया है। **विशेष-**

1. किसान की उपेक्षा का मार्मिक चित्रण है।
2. 'अंधकार की गुह गुहा सरीखी' में उपमा अलंकर है।
3. 'दारुण दैन्य दुख' में अनुप्रास अलंकार है।
4. ' कगार सदृश ' में उपमा अलंकार।

5. भाषा में लाक्षणिकता है।

6. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।

7. भाषा में प्रवाह है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. कवि किसके बारे में बात कर रहा है?

2. कवि को किससे डर लगता है तथा क्यों?

3. पहले किसान की दशा कैसी थी? अब उसमें क्या परिवर्तन आ गया है?

4. किसान की आँखों के विषय में कवि क्या कहता है?

उत्तर-

1. कवि उस शोषित किसान के बारे में बात कर रहा है जिसकी आँखें गड्ढों में धंस चुकी हैं और वे अँधेरी गुफा के समान डरावनी प्रतीत हो रही हैं।
2. कवि को किसान की आँखों से डर लगता है, क्योंकि उनमें गहरी निराशा, हताशा व उदासीनता भरी है।
3. पहले किसान की दशा अच्छी थी। वह अपनी खेती का मालिक था। उसमें आत्मगर्व भरा था। आज उसकी हालत खराब है। उसकी दीन दशा के कारण समाज ने उससे मुँह मोड़ लिया है। उसका साथ देने वाला कोई नहीं है।
4. कवि कहता है कि किसान की आँखें अँधेरी गुफा के समान दिखती हैं। इनको देखने से मन में अज्ञात भय उत्पन्न होता है। ऐसा लगता है जैसे उनमें बहुत दूर तक कष्टप्रद दयनीयता का भाव व दुख का रुदन भरा पड़ा है। कुल मिलाकर कवि का मानना है कि किसान की आँखों में भयानक गरीबी का दुख व्याप्त है।

2.

लहराते वे खेत द्रगों में
हुआ बेदखल वह अब जिनसे,
हसती थी उसके जीवन की
हरियाली जिनके तृन-तृन से !
आँखों ही में घूमा करता
वह उसकी अखिों का तारा,
कारकुनों की लाठी से जो
गया जवानी ही में मारा। (पृष्ठ-147)

शब्दार्थ

लहराते-लहलहाते, झूमते। दृग-आँख। बेदखल-अधिकार से वचित। तृन-तिनका। आँखों का तारा-बहुत प्यारा। कारकुन-जमींदार के कारिंदे।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इस कविता में, कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या-किसान अपने अतीत की याद करता है। उसकी आँखों के समक्ष खेत लहलहाते नजर आते हैं जबकि अब उन खेतों से उसे बेदखल कर दिया गया है अर्थात् जमींदारों ने उसकी जमीन हड़प ली है। कभी इन खेतों के तिनके-तिनके में कभी हरियाली लहराती थी तथा उसके जीवन को सुखमय बनाती थी। आज वह सब कुछ खत्म हो गया है।
किसान की आँखों में उसके प्यारे पुत्र का चित्र घूमता रहता है। उसे वह दृश्य याद आता है। जब उसके जवान बेटे को जमींदार के कारिंदों ने लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला था। यह बड़े दुख की बात थी।

विशेष-

1. इन पंक्तियों में जमींदार के अत्याचारों का वर्णन है।
2. 'लहराते खेत' तथा जमींदारों की लाठी से पिटकर मरे पुत्र में दृश्य बिंब साकार हो उठता है।
3. 'तृन-तृन' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
4. 'जीवन की हरियाली' में रूपक अलंकार है।
5. 'आँखों में घूमना', 'आँखों का तारा' मुहावरे का सार्थक प्रयोग है।
6. भाषा में लाक्षणिकता है।
7. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**
  1. 'वह' कौन है? उसके साथ क्या हुआ था?
  2. खेती के कारण किसान का जीवन कैसा था?
  3. 'अखों का तारा' कौन था? वह किसान की आँखों के सामने क्यों घूमता है?
  4. कारकुनों ने क्या किया था?

उत्तर-

1. 'वह' भारतीय किसान है। उसकी जमीन को जमींदारों ने कानून का सहारा लेकर हड़प लिया था।
2. खेती के कारण किसान का जीवन खुशहाल था। खेतों में हरियाली लहराती थी। किसान की जरूरतें पूरी हो जाती थीं।
3. 'आँखों का तारा' किसान का जवान बेटा था। उसकी हत्या जमींदार के कारिंदों ने पीट-पीटकर कर दी थी। किसान की आँखों में वह दृश्य घूमता रहता है।
4. कारकुन जमींदार के कारिंदे होते थे। वे जमीन पर कब्जा करने का काम करते थे। उन्होंने किसान के जवान बेटे की लाठियों से पीट-पीटकर हत्या की थी।

3.

बिका दिया घर द्वार,

महाजन ने न ब्याज की कड़ी छोड़ी,

रह-रह आँखों में चुभती वह
कुक हुई बरधों की जोड़ी !
उजरी उसके सिवा किसे कब
पास दुहाने आने देती?

अह, आँखों में नाचा करती

उजड़ गई जो सुख की खेती !(पृष्ठ-148)

शब्दार्थ

महाजन-साहूकार, ऋणदाता। कौड़ी-एक पैसा। कुर्क-नीलाम। बरधों की जोड़ी-बैलों की जोड़ी। उजरी-उजली। सिवा-बिना। दुहाने-दूध दुहने के लिए। अह-आह। आँखों में नाचना-बार-बार सामने आना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है। इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इस कविता में, कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या-कवि किसान की दयनीय दशा का वर्णन करता है। किसान कर्ज में डूब गया। महाजन ने धन व ब्याज की वसूली के लिए किसान की स्थायी संपत्ति को नीलाम कर दिया। उसे घर से बेघर कर दिया, परंतु अपने ऋण के ब्याज की पाई-पाई चुका ली। किसान को सर्वाधिक पीड़ा तब हुई जब बैलों की जोड़ी को भी नीलाम कर दिया गया। यह बात उसकी आँखों में आज भी चुभती है। उसके रोजगार का साधन छीन लिया गया।

किसान के पास दुधारू गाय उजली (जिसे वह प्यार से उजरी कहता था) थी वह उसके सिवाय किसी और को अपने पास दूध दुहने नहीं आने देती थी। मजबूरी के कारण किसान को उसे बेचना पड़ा। इन सब बातों को याद करके किसान बहुत व्यथित होता है। ये सारे दृश्य उसकी आँखों के सामने नाचते हैं। उसकी सुखभरी खेती उजड़ चुकी है, अत: वह निराश व हताश है।

विशेष-

1. किसान पर महाजनों के अत्याचारों का सजीव वर्णन है।
2. कुर्की व गरीबी के कारण बैल व गाय बेचने का दृश्य कारुणिक है।
3. 'घर-द्वार', 'की कौड़ी', 'ने न', 'किसे कब' में अनुप्रास अलंकार है।
4. 'रह-रह' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
5. 'आँखों में चुभना', 'आँखों में नाचना' आदि मुहावरों का सार्थक प्रयोग है।
6. देशज शब्द 'बरधों' का सटीक प्रयोग है।
7. ग्रामीण परिवेश साकार हो उठा है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. महाजन ने किसान पर क्या-क्या अत्याचार किए?
2. महाजन ने बैलों की जोड़ी का क्या किया?
3. उजरी कौन थी? किसान उसे इतना याद क्यों करता है?
4. किसान की सुख की खेती क्यों उजड़ गई?

उत्तर-

1. महाजन ने किसान से अपने ऋण की वसूली के लिए उसके खेत, घर तक नीलाम कर दिए। ब्याज की वसूली के लिए उसने किसान को बेघर कर दिया तथा कौड़ी-कौड़ी वसूल ली।
2. महाजन ने कर्ज न चुका पाने की दशा में मजबूर किसान के बैलों की जोड़ी को नीलाम करवा

दिया। यह बात किसान के दिल को कचोटती है।

3. उजरी किसान की प्रिय दुधारू गाय थी। वह किसान के अतिरिक्त किसी दूसरे व्यक्ति को अपने पास दूध दुहने के लिए आने नहीं देती थी। इस कारण किसान को उसकी याद बहुत आती है।

4. किसान ने लगान चुकाने के लिए महाजन से कर्ज लिया। इसके बाद वह अपना कर्ज चुका नहीं पाया। उसका सब कुछ नीलाम कर दिया गया, इसलिए उसके सुख की खेती उजड़ गई।

4.

बिना दवा-दपन के घरनी
स्वरगा चली,-अखं आती भर,
देख-रेख के बिना दुधमुही
बिटिया दो दिन बाद गई मर!
घर में विधवा रही पताहू,
लछमी थी, यद्यपि पति घातिन,
पकडु मॅाया, कोतवाल ने,
डूब कुएँ में मरी एक दिन। (पृष्ठ-148-149)

शब्दार्थ

दवा-दर्पन-दवा आदि। घरनी-पत्नी। स्वरग-स्वर्ग। दुधमुँही-नन्हीं। पतोहू-पुत्रवधू। लछमी-लक्ष्मी। घातिन-मारने वाली।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है इसके रचयिता सुमित्रानंदन पंत हैं। इस कविता में, कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या-किसान की पारिवारिक स्थिति का वर्णन करते हुए कवि बताता है कि उसकी पत्नी दवा-दारू के अभाव में मर गई। उसके पास संसाधनों की इतनी कमी थी कि वह उसका इलाज भी नहीं करा सका। यह सोचकर उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद उस पर आश्रित किसान की नन्हीं बच्ची भी दो दिन बाद मर गई।

किसान के घर में उसकी विधवा पुत्रवधू बची हुई थी। उसका नाम लक्ष्मी था, परंतु उसे पति को मारने वाला समझा जाता था। समाज में पति की मृत्यु होने पर उसकी पत्नी को हत्या का जिम्मेदार मान लिया जाता है। एक दिन कोतवाल ने उसे बुलवाकर उसकी इज्जत लूटी। लाज के कारण उसने कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली। इस प्रकार से किसान का पूरा परिवार ही बिखर गया था।

विशेष-

1. किसान की गरीबी, शोषण व लाचारी का सजीव वर्णन है।
2. 'आँखें भर आना' मुहावरे का सार्थक प्रयोग है।
3. घरनी, स्वरग, लछमी आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग भाषा को सहजता प्रदान करता है।
4. अनुप्रास अलंकार है-दवा-दर्पन, दो दिन।
5. पति की हत्या के बाद नारी के प्रति समाज के कटु दृष्टिकोण का पता चलता है।
6. खड़ी बोली है।

7. पुलिस के अत्याचार का वर्णन है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. किसान की पत्नी व बच्ची की मृत्यु का वक्या कारण था?
2. किसान की आँखें भर आने का क्या कारण था?
3. किसान की पतोहू को क्या कहा जाता था? क्यों?
4. किसान की पतोहू ने आत्महत्या क्यों की?

उत्तर-

1. किसान की आर्थिक हालत दयनीय थी। उसकी पत्नी बीमार थी। वह उसका इलाज नहीं करवा पाया। इस कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसकी बेटी नवजात थी जो माँ के दूध पर आश्रित थी। माँ के मरने के बाद वह भी दो दिन बाद मर गई।
2. आर्थिक अभावों की वजह से किसान अपनी पत्नी की बीमारी का इलाज नहीं कर पाया, जिसकी वजह से वह मर गई। अपनी इस विवशता को सोचकर उसकी आँखें भर आती हैं।
3. किसान की पतोहू को 'पति घातिन' कहा जाता था, क्योंकि उसके पति की हत्या कारकूनों ने कर दी थी। समाज इस हत्या के लिए पतोहू को दोषी मानता है।
4. किसान की पुत्रवधू पर कोतवाल की बुरी नीयत थी। उसने उसे थाने में बुलवाया तथा उसका शारीरिक शोषण किया। इस कलंक व विवशता के कारण उसने कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली।

5.

खेर, पैर की जूती, जोरू
न सही एक, दूसरी आती,
पर जवान लड़के की सुध कर
साँप लौटते, फटती छाती।
पिछले सुख की स्मृति आँखों में
क्षण भर एक चमक हैं लाती,
तुरत शून्य में गड़ वह चितवन
तीखी नोंक सदृश बन जाती। (पृष्ठ-149)

शब्दार्थ

पैर की जूती-उपेक्षित। जोरू-पत्नी। सुधकर-याद करना। साँप लोटते-अत्यधिक व्याकुल होना। फटती छाती-बहुत दुख होना। स्मृति-याद। चमक लाना-खुशी लाना। चितवन-दृष्टि। शून्य-आकाश। सदृश-समान।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इस कविता में कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या-किसान को अपनी पत्नी की मृत्यु पर विशेष शोक नहीं है। वह उसे पैर की जूती के समान समझता है। यदि एक नहीं रहती तो दूसरी से विवाह करके लाया जा सकता है, परंतु उसे अपने जवान बेटे की याद आने पर बहुत कष्ट होता है। उसकी छाती पर साँप लौट जाते हैं तथा छाती

फटने लगती है। उसे बेटे की मृत्यु का असहनीय कष्ट है।

किसान जब पिछले खुशहाल जीवन को याद करता है तो उसकी आँखों में एक क्षण के लिए प्रसन्नता की चमक आती है, परंतु अगले ही क्षण जब वह सच्चाई के धरातल पर सोचता है, वर्तमान में झाँकता है तो उसकी नजर शून्य में अटककर गड़ जाती है, वह विचार शून्य होकर टकटकी लगाकर देखता है और उसकी नजर तीखी नोक के समान चुभने वाली हो जाती है।

विशेष-

1. पत्नी के प्रति किसान की मानसिकता घटिया है। वह पुत्र को अधिक महत्त्व देता है।
2. साँप लोटना, छाती फटना, पैर की जूती आदि मुहावरों का सजीव प्रयोग है।
3. 'तीखी नोक सदृश' में उपमा अलंकार है।
4. खड़ी बोली है।
5. ग्रामीण परिवेश का चित्रण है।

- **अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

1. पैर की जूती किसे कहा गया है? इससे क्या सिदध होता है?
2. किसान के मन में सर्वाधिक दुख किसका है?
3. किसान की आँखों में चमक आने का कारण बताइए।
4. वास्तविकता का आभास होने पर किसान को कैसा अनुभव होता है?

उत्तर-

1. प्रस्तुत काव्यांश में पत्नी को 'पैर की जूती' कहा गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा बहुत दयनीय थी।
2. किसान के मन में सर्वाधिक दुख अपने जवान बेटे की मृत्यु का है। उसकी याद आते ही उसकी छाती पर साँप लोटने लगते हैं। वह ही खेती में उसका एकमात्र सहारा था तथा आँखों का तारा था।
3. जब किसान अपने पुराने दिनों की याद करता है तो उसकी आँखों में चमक आ जाती है। लहलहाते खेत, घर-द्वार, बैल, गाय, जवान बेटा आदि सभी सुखदायी थे।
4. वास्तविकता का आभास होने पर किसान को सुखद यादें तीखी नोक के समान उसके दिल में चुभने लगती हैं। उसके मन में आक्रोश उमड़ आता है।

- **काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न**

अंधकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से डरता है मन,
भरा दूर तक उनमें दारुण
दैन्य दुख का नीरव रोदन।
वह स्वाधीन किसान रहा,
अभिमान भरा आँखों में इसका,
छोड़ उसे मँझधार आज
संसार कगार सदृश बह खिसका।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. इस अंश में कवि ने किसान की दयनीय दशा का वर्णन किया है। वह हताश व उदासीन है। समाज द्वारा उसकी उपेक्षा करना सर्वथा अनुचित है।
2.
   - ‘अंधकार की गुहा सरीखी’ में उपमा
   - ‘दारुण दैन्य दुख’ में अनुप्रास अलंकार है। अलंकार है।
   - ‘संसार कगार सदृश’ में उपमा अलंकार है।
   - संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग है।
   - करुण रस है।
   - भाषा में लाक्षणिकता है।
   - ‘संसार’ में विशेषण विपर्यय अलंकार है।

2.

लहराते वे खेत द्रगों में
हुआ बदलखल वह अब जिनसे,
हँसती थी उसके जीवन की
गया जवानी ही में मारा।
आँखों ही में घूमा करता
वह उसकी अखिों का तारा,
कारकुनों की लाठी से जो
हरियाली जिनके तृन-तृन से।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
2. शिल्प–सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. इन पंक्तियों में जमींदारों के अत्याचारों का सजीव वर्णन है। जमींदार किसानों की जमीन पर कब्जा करते हैं तथा विरोध करने पर युवाओं की हत्या तक कर दी जाती है।
2.
   - ‘तृन-तृन’ में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
   - ‘जीवन की हरियाली’ में रूपक अलंकार है।
   - ‘हँसना’ प्रसन्नता का परिचायक है।
   - भाषा में लाक्षणिकता है।
   - ‘आँखों का तारा’ व ‘आँखों में घूमना’ मुहावरे
   - कारकूनों द्वारा लाठी से मारे जाने से दृश्य बिंब का सशक्त प्रयोग है। साकार हुआ है।

3.

बिका दिया घर द्वार,

महाजन ने न ब्याज की कड़ी छोड़ी,

रह-रह आँखों में चुभती वह अह,

कुर्क हुई बरधों की जोड़ी।

उजरी उसके सिवा किसे कब

पास दुहाने आने देती?

अखिों में नाचा करती

उजड़ गई जो सुख की खेती।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
2. शिल्प–सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. इस काव्यांश में महाजनी शोषण का मर्मस्पर्शी चित्र है। किसान से कर्ज वसूली के लिए उसके खेत, घर, आदि बिकवा दिया जाता है। ब्याज की वसूली के लिए बैल तक नीलाम करवाए जाते हैं।
2.
   - बैलों की कुकी जैसे दृश्य कारुणिक हैं।
   - 'किसे कब' में अनुप्रास अलंकार है।
   - 'रह-रह' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार हैं।
   - 'बरधों' शब्द से ग्रामीण परिवेश प्रस्तुत हो जाता है।
   - खड़ी बोली में प्रभावी अभिव्यक्ति है।
   - मिश्रित शब्दावली है।
   - 'उजरी ..... देती?' में प्रश्न अलंकार है।
   - 'आँखों में चुभना' व 'आँखों में नाचना' मुहावरे का सटीक प्रयोग है।

4.

बिना दवा-दपन के घरनी

स्वरग चली, अखें आती भर,

देख-रेख के बिना दुधर्मुही

बिटिया दो दिन बाद गई मर।

घर में विधवा रही पतोहू,

लछमी थी, यद्यपि पति घातिन,

पकड़ माया, कोतवाल ने,

डूब कुएँ में मरी एक दिन।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
2. शिल्प–सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

1. इस काव्यांश में किसान की फटेहाली, विवशता व शोषण का सजीव चित्रण है। अभाव के कारण पत्नी व बच्ची की मृत्यु, पुलिस द्वारा पुत्रवधू का शोषण होना, फिर उसका आत्महत्या करना आदि परिस्थितियाँ किसान की लाचारी को व्यक्त करती हैं। पति की मृत्यु के लिए पत्नी को दोषी मानना भी समाज की रुग्ण मानसिकता का परिचायक है।
2.
   - करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है।
   - 'आँखें भर आना' मुहावरे का सार्थक प्रयोग है।
   - खड़ी बोली है।
   - अनुप्रास अलंकार है-दवा-दर्पन, दो दिन, में मरी। भाषा प्रवाहमयी है।
   - घरनी, स्वरग, लछमी, कोतवाल, पतोहू आदि शब्द ग्रामीण परिवेश को व्यक्त करते हैं।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

अधकार की गुहा सरीखी
उन आखों से डरता है मन।

(क) आमतौर पर हमें डर किन बातों से लगता है?

(ख) उन आँखों से किसकी ओर संकेत किया गया है?

(ग) कवि को उन आँखों से डर क्यों लगता है?

(घ) डरते हुए भी कवि ने उस किसान की आँखों की पीड़ा का वर्णन क्यों किया है?

(ङ) यदि कवि इन आँखों से नहीं डरता क्या तब भी वह कविता लिखता?

उत्तर-

(क) हमें दुख, पीड़ा और वेदना पहुँचानेवाली बातों से डर लगता है।

(ख) किसान की सूनी, अँधेरे की गुफा जैसी आँखों की ओर संकेत किया गया है।

(ग) कवि को उन आँखों में भरा हुआ दारुण, दुख, गरीबी, अभाव और सूनापन देखकर भय लगता है।

(घ) कवि के मन का भय वास्तव में उसको किसान से होनेवाली सहानुभूति है। किसान का वर्णन भी कवि इसी उद्देश्य से करता है कि समाज किसान की पीड़ा को जाने और उसे समझकर किसान की दशा सुधारने के लिए कुछ कार्य करे।

(ङ) डर ही पीड़ा का अनुभव है, यदि वह न होता तो उद्देश्य के अभाव में कवि कविता नहीं लिख पाता।

प्रश्न 2:

कविता में किसान की पीड़ा के लिए किन्हें जिम्मेदार बताया गया है?

उत्तर-

कविता में किसान की पीड़ा के लिए जमींदार, महाजन व कोतवाल को जिम्मेदार बताया है। जमींदार ने षड्यंत्रों से उसे जमीन से बेदखल कर दिया। उसके कारिंदों ने किसान के जवान बेटे की

पीट-पीटकर हत्या कर दी। महाजन ने मूलधन व ब्याज की वसूली के लिए उसके घर, बैल, गाय तक नीलाम करवा दिए। आर्थिक अभाव के कारण इलाज न करवा पाने की वजह से किसान की पत्नी मर गई। कोतवाल ने अपनी वासना की पूर्ति के लिए उसकी पुत्रवधू को शिकार बनाया। पीड़ा एवं लज्जा के कारण उसकी पुत्रवधू ने आत्महत्या कर ली। समाज उस पर होने वाले अत्याचारों को मूक दर्शक बनकर देखता रहा।

प्रश्न 3:

'पिछले सुख की स्मृति आँखों में क्षणभर एक चमक है लाती'-इसमें किसान के किन पिछले सुखों की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-

जब किसान के पास प्राणों से लहलहाते प्यारे खेत थे, बैलों की जोड़ी, गाय, जवान बेटा, स्त्री, पुत्री, पतोहू सबसे भरा-पूरा घर-बार था तो वह सुखी था। खेत की हरियाली को एक-एक तिनका किसान के जीवन की हँसी-खुशी था। जवान बेटा उसकी आँखों का तारा था। बैलों की जोड़ी थी और उजली गाय जो उसकी पत्नी के अलावा किसी को दूध नहीं निकालने देती थी। ये सब किसान के सुख भरे दिन थे। इन बातों से उसका मन सुखी रहता था; आज इनमें से कुछ भी उसके पास नहीं है, केवल स्मृतियाँ शेष रह गई हैं।

प्रश्न 4:

संदर्भ सहित आशय स्पष्ट करें-

(क)

उजरी उसके सिवा किसे कब
पास दुहाने आने देती?

(ख)

घर में विधवा रही पतोहू
लछमी थी , यद्यपि पति घातिन,

(ग)

पिछले सुख की स्मृति अखिों में
क्षण भर एक चमक है लाती,
तुरत शून्य में गड़ वह चितवन
तीखी नोक सदृश बन जाती।

उत्तर-

(क) संदर्भ-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है। इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इन पंक्तियों में महाजनी अत्याचार से पीड़ित किसान की उजरी गाय की दुर्दशा का वर्णन किया गया है।

आशय-कवि बताता है कि किसान का अपनी गाय के साथ विशेष लगाव था। गाय भी उससे अत्यधिक स्नेह रखती थी। वह उसके बिना किसी और को दूध दूहने नहीं देती थी। नीलामी के बाद उसने दूध देना बंद कर दिया।

(ख) **संदर्भ**-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया

है। इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इन पंक्तियों में किसान के बेटे की हत्या का दोषी उसकी पुत्रवधू को बताया जाता है। यह नारी पर होने वाले अत्याचारों की पराकाष्ठा है।

आशय-किसान के घर में सिर्फ विधवा पुत्रवधू बची थी। उसका नाम लक्ष्मी थी, परंतु उसे पति को मारने वाली कहा जाता था। समाज में विधवा के प्रति नकारात्मक रवैया है। कसूर न होते हुए पुत्रवधू को पति घातिन कहा जाता है।

(ग) संदर्भ-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक **आरोह भाग-1** में संकलित कविता **'वे आँखें'** से लिया गया है। इसके रचयिता **सुमित्रानंदन पंत** हैं। इन पंक्तियों में, कवि ने भारतीय किसान के भयंकर शोषण व दयनीय दशा का वर्णन किया है। ।

आशय-किसान जब पिछले खुशहाल जीवन को याद करता है उसकी आँखों में एक क्षण के लिए प्रसन्नता की चमक आ जाती है, परंतु अगले ही क्षण जब वह सच्चाई के धरातल पर सोचता है, वर्तमान में झाँकता है तो उसकी नजर शून्य में अटककर गड़ जाती है, वह विचार शून्य होकर टकटकी लगाकर देखता है और नजर तीखी नोक के समान चुभने वाली हो जाती है।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1:

किसान अपने व्यवसाय से पलायन कर रहे हैं। इस विषय पर परिचर्चा आयोजित करें तथा कारणों की भी पड़ताल करें।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

● **लघूत्तरात्मक प्रश्न**

प्रश्न 1:

'वे आँखें' कविता का उददेश्य बताइए।

उत्तर-

यह कविता पंत जी के प्रगतिशील दौर की कविता है। इसमें विकास की विरोधाभासी अवधारणाओं पर करारा प्रहार किया गया है। युग-युग से शोषण के शिकार किसान का जीवन कवि को आहत करता है। दुखद बात यह है कि स्वाधीन भारत में भी किसानों को केंद्र में रखकर व्यवस्था ने निर्णायक हस्तक्षेप नहीं किया। यह कविता दुश्चक्र में फँसे किसानों के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक दुखों की परतों को खोलती है और स्पष्ट रूप से विभाजित समाज की वर्गीय चेतना का खाका प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 2:

किसान के रोदन को 'नीरव' क्यों कहा गया है?

उत्तर-

कवि किसान की दयनीय स्थिति का वर्णन करता है। उसकी आँखें अंधकार की गुफा के समान हैं। उनमें दारुण दुख भीतर तक समाया हुआ है। उसकी आँखों में उसी दुख की छाया के रूप में रोने का भाव अनुभव किया जा सकता है। उसका रोदन नीरव है, क्योंकि किसान की आँखों से ही उसकी पीड़ा को महसूस किया जा सकता है। उसके ऊपर हुए अत्याचारों की झलक आँखों से मिलती है।

प्रश्न 3:

किसान की आँखों में किसका अभिमान भरा था?

उत्तर-

किसान की आँखों में कृषक व्यवसाय का अभिमान भरा था। खेत की जमीन पर उसका स्वामित्व था। वे स्वयं को अन्नदाता समझता था। वह दूसरों की सहायता करता था। खेती से ही उनके परिवार का गुजारा होता था।

प्रश्न 4:

पुत्र और पुत्रवधू के प्रति किसान का क्या वृष्टिकोण था?

उत्तर-

किसान पुत्र को अधिक महत्व देता है। उसकी याद के कारण उसकी छाती फटने लगती है तथा साँप लोटने लगता है। वह उसे अपना प्रमुख सहारा समझता था। पुत्रवधू को पुत्र के जीवित रहते हुए ही सम्मान मिलता था। पुत्र के मरने के बाद वह उसे पति घातिनी कहने लगा। वह स्त्री को पैर की जूती के समान समझता है। उसकी मान्यता है कि एक स्त्री जाती है तो दूसरी आ जाती है।

प्रश्न 5:

'नारी को समाज में आज भी उचित सम्मान नहीं मिल रहा।'-कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

कविता में नारी के प्रति समाज की मानसिकता को प्रकट किया गया है। उस समय समाज में नारी की हीन स्थिति थी। नारी का इलाज तक नहीं कराया जाता था। उसे पैर की जूती के समान नगण्य महत्व दिया जाता था। समाज में आज भी नारी को उचित सम्मान नहीं मिलता। उसे अनेक आर्थिक, सामाजिक अधिकार मिल गए हैं, परंतु उसका स्थान दोयम दर्जे का है। नौकरी करते हुए भी उसे सभी जिम्मेदारी पूरी करनी पड़ती है। उसे ससुर व पिता की संपत्ति में अधिकार नहीं मिलता। यहाँ तक कि कानून के रक्षक भी उसका शोषण करते हैं।

कवि परिचय

- **जीवन परिचय**-भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 1913 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ। इन्होंने जबलपुर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इनका हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाओं पर अधिकार था। इन्होंने शिक्षक के रूप में कार्य किया। फिर वे कल्पना पत्रिका, आकाशवाणी व गाँधी जी की कई संस्थाओं से जुड़े रहे। इनकी कविताओं में सतपुड़ा-अंचल, मालवा आदि क्षेत्रों का प्राकृतिक वैभव मिलता है। इन्हें साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्य व समाज सेवा के मद्देनजर भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया। इनका देहावसान 1985 ई. में हुआ।
- **रचनाएँ**-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं
  सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफ़रोश, चकित है दुख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि। गीतफ़रोश इनका पहला काव्य संकलन है। गाँधी पंचशती की कविताओं में कवि ने गाँधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की है।
- **काव्यगत विशेषताएँ**-सहज लेखन और सहज व्यक्तित्व का नाम है-भवानी प्रसाद मिश्र। ये कविता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख कवियों में से एक हैं। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गाँधी वाडमय के हिंदी खंडों का संपादन कर कविता और गाँधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिंदी की सहज लय की कविता है। इस सहजता का संबंध गाँधी के चरखे की लय से भी जुड़ता है, इसलिए उन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। इनकी कविताओं में बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य-विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्‌भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के करीब है।

कविता का सारांश

इस कविता में घर के मर्म का उद्घाटन है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है। सावन के बादलों को देखकर कवि को घर की याद आती है। वह घर के सभी सदस्यों को याद करता है। उसे अपने भाइयों व बहनों की याद आती है। उसकी बहन भी मायके आई होगी। कवि को अपनी अनपढ़, पुत्र के दुख से व्याकुल, परंतु स्नेहमयी माँ की याद आती है। वह पत्र भी नहीं लिख सकती।

कवि को अपने पिता की याद आती है जो बुढ़ापे से दूर हैं। वे दौड़ सकते हैं, खिलखिलाते हैं। वो मौत या शेर से नहीं डरते। उनकी वाणी में जोश है। आज वे गीता का पाठ करके, दंड लगाकर जब नीचे परिवार के बीच आए होंगे, तो अपने पाँचवें बेटे को न पाकर रो पड़े होंगे। माँ ने उन्हें समझाया होगा। कवि सावन से निवेदन करता है कि तुम खूब बरसो, किंतु मेरे माता-पिता को मेरे लिए दुखी न होने देना। उन्हें मेरा संदेश देना कि मैं जेल में खुश हूँ। मुझे खाने-पीने की दिक्कत नहीं है। मैं स्वस्थ हूँ। उन्हें मेरी सच्चाई मत बताना कि मैं निराश, दुखी व असमंजस में हूँ। हे सावन! तुम मेरा संदेश उन्हें देकर धैर्य बँधाना। इस प्रकार कवि ने घर की अवधारणा का चित्र प्रस्तुत किया है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है,
प्राण-मन घिरता रहा है,
बहुत पानी गिर रहा हैं,
घर नजर में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर हैं जो,
घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर।
घर कि घर में सब जुड़े हैं,
सब कि इतने कब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिन,
भुजा भाई प्यार बहिन,

शब्दार्थ–

गिर रहा-बरसना। प्राण-मन घिरना-प्राणों और मन में छा जाना। तिरना-तैरना। नजर-निगाह। खुशी का पूर-खुशी का भडार। परिताप-कष्ट।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है तो वह अपनी पीड़ा व्यक्त करता है।

व्याख्या-कवि बताता है कि आज बहुत तेज बारिश हो रही है। रातभर वर्षा होती रही है। ऐसे में उसके मन और प्राण घर की याद से घिर गए। बरसते हुए पानी के बीच रातभर घर कवि की नजरों में घूमता रहा। उसका घर बहुत दूर है, परंतु वह खुशियों का भंडार है। उसके घर में चार भाई हैं। बहन मायके में यानी पिता के घर आई है। यहाँ आकर उसे दुख ही मिला, क्योंकि उसका एक भाई जेल में बंद है। घर में आज सभी एकत्र होंगे। वे सब आपस में जुड़े हुए हैं। उसके चार भाई व चार बहने हैं। चारों भाई भुजाएँ हैं तथा बहनें प्यार हैं। भाई भुजा के समान कर्मशील व बलिष्ठ हैं तथा बहनें स्नेह की भंडार हैं।

विशेष-

1. सावन के महीने का स्वाभाविक वर्णन है।
2. घर की याद आने के कारण स्वाभाविक अलंकार है।
3. 'पानी गिर रहा है' में यमक अलंकार तथा आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

4. 'घर नजर में तिर रहा है' में चाक्षुष बिंब है।
5. खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. 'भुजा भाई' में उपमा व अनुप्रास अलंकार हैं।
7. प्रश्न शैली का सुंदर प्रयोग है।
8. संयुक्त परिवार का आदर्श उदाहरण है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'पानी गिरने' से कवि क्या कहना चाहता है?
2. बरसात से कवि के हृदय पर क्या प्रभाव हुआ?
3. 'भुजा भाई प्यार बहिनें' का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. मायके में आई बहन को क्या कष्ट हुआ होगा?

उत्तर –

1. कवि ने पानी गिरने के दो अर्थ दिए हैं। पहले अर्थ में यहाँ वर्षा हो रही है। दूसरे अर्थ में, बरसात को देखकर कवि को घर की याद आती है तथा इस कारण उसकी आँखों से आँसू बहने लगे हैं।
2. बरसात के कारण कवि को अपने घर की याद आ गई। वह स्मृतियों में खो गया। जेल में वह अकेलेपन के कारण दुखी है। वह भावुक होकर रोने लगा।
3. कवि ने भाइयों को भुजाओं के समान कर्मशील व बलिष्ठ बताया है। वे एक-दूसरे के गरीबी व सहयोगी हैं। उसकी बहनें स्नेह का भंडार हैं।
4. सावन के महीने में ससुराल से बहन मायके आई। वहाँ सबको देखकर वह खुश होती है, परंतु एक भाई के जेल में होने के कारण वह दुखी भी है।

2.

और माँ बिन-पढ़ी मोरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,

शर के आगे न बिचकें,

बोल में बादल गरजता,

काम में झझ लरजता,

शब्दार्थ–

गढ़ी-डूबी। स्नेह-प्रेम। पसारा-फैलाव। पत्र-चिट्ठी। व्यापा-फैला हुआ। खिलखिलाएँ-खुलकर हँसना। हिचकें-संकोच करना। बिचकें-डरें। बोल-आवाज। झांझा-तूफान। लरजता-काँपता।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है तो वह अपनी पीड़ा व्यक्त करता है। इस काव्यांश में पिता व माँ के बारे में बताया गया है।

व्याख्या-सावन की बरसात में कवि को घर के सभी सदस्यों की याद आती है। उसे अपनी माँ की याद आती है। उसकी माँ अनपढ़ है। उसने बहुत कष्ट सहन किया है। वह दुखों में ही रची हुई है। माँ बहुत स्नेहमयी है। उसकी गोद में सिर रखने के बाद दुख शेष नहीं रहता अर्थात् दुख का अनुभव नहीं होता। माँ का स्नेह इतना व्यापक है कि जेल में भी कवि उसको अनुभव कर रहा है। वह लिखना भी नहीं जानती। इस कारण उसका पत्र भी नहीं आ सकता। कवि अपने पिता के बारे में बताता है कि वे अभी भी चुस्त हैं। बुढ़ापा उन्हें एक क्षण के लिए भी आगोश में नहीं ले पाया है। वे आज भी दौड़ सकते हैं तथा खूब खिल-खिलाकर हँसते हैं। वे इतने साहसी हैं कि मौत के सामने भी हिचकते नहीं हैं तथा शेर के आगे डरते नहीं है। उनकी वाणी में ओज है। उसमें बादल के समान गर्जना है। जब वे काम करते हैं तो उनसे तूफ़ान भी शरमा जाता है अर्थात् वे तेज गति से काम करते हैं।

विशेष–

1. माँ के स्वाभाविक स्नेह तथा पिता के साहस व जीवनशैली का सुंदर व स्वाभाविक वर्णन है।
2. माँ की गोद में सिर रखने से चाक्षुष बिंब साकार हो उठता है।
3. पिता के वर्णन में वीर रस का आनंद मिलता है।
4. 'अभी भी' की आवृत्ति में अनुप्रास अलंकार है।
5. 'बोल में बादल गरजता' तथा 'काम में झंझा लरजता' में उपमा अलंकार है।
6. खड़ी बोली है।
7. भाषा सहज व सरल है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. माँ के बारे में कवि क्या बताता है?
2. कवि को माँ का पत्र क्यों नहीं मिल पाता?
3. कवि के पिता की चार विशेषताएँ बताइए।
4. 'पिता जी को बुढ़ापा नहीं व्यापा'-आशय स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. माँ के बारे में कवि बताता है कि वह दुखों में रची हुई है। वह निरक्षर है। वह बच्चों से बहुत स्नेह करती है।

2. कवि को माँ का पत्र इसलिए नहीं मिल पाता, क्योंकि वह अनपढ़ है। निरक्षर होने के कारण वह पत्र भी नहीं लिख सकती।
3. कवि के पिता की चार विशेषताएँ हैं-
   (क) उन पर बुढ़ापे का प्रभाव नहीं है।
   (ख) वे खुलकर हँसते हैं।
   (ग) वे दौड़ लगाते हैं।
   (घ) उनकी आवाज में गर्जना है।
4. कवि अपने पिता के विषय में बताता है कि वे सदैव हँसते रहते हैं, व्यायाम करते हैं। वे जिंदादिल हैं तथा मौत से नहीं घबराते। ये सभी लक्षण युवावस्था के हैं। अत: कवि के पिता जी पर बुढ़ापे का कोई असर नहीं है।

3.

आज गीता पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,
जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा हैं,
चार भाई चार बहिनें
भुजा भाई प्यार बहिनें
खेलते या खड़े होंगे,
नजर उनकी पड़े होंगे।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,

शब्दार्थ–

दंड-व्यायाम का तरीका। मुगदर-व्यायाम करने का उपकरण। मूठ-पकड़ने का स्थान। नैन-नयन। तिर-तिरना। क्षण-पल। व्यापा-फैला।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है तो वह अपनी पीड़ा व्यक्त करता है।

व्याख्या-कवि अपने पिता के विषय में बताता है कि आज वे गीता का पाठ करके, दो सौ साठ दंड-

बैठक लगाकर, मुगदर को दोनों हाथों से हिलाकर व उनकी मूठों को मिलाकर जब वे नीचे आए होंगे तो उनकी आँखों में पानी आ गया होगा। कवि को याद करके उनकी आँखें नम हो गई होंगी। कवि को घर की याद सताती है। घर में चार भाई व चार बहनें हैं जो सुरक्षा व प्यार में बँधे हैं। उन्हें खेलते या खड़े देखकर पिता जी को पाँचवें की याद आई होगों और वे जिन्हें कभी बुढ़ापा नहीं व्यापा था, कवि का नाम लेकर रो पड़े होंगे।

विशेष–

1. पिता के संस्कारी रूप, स्वस्थ शरीर व भावुकता का वर्णन है।
2. दृश्य बिंब है।
3. संयुक्त परिवार का आदर्श रूप प्रस्तुत है।
4. भाषा सहज व सरल है।
5. 'भुजा भाई' में उपमा व अनुप्रास अलंकार है।
6. खड़ी बोली में प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति है।
7. शांत रस है।
8. मुक्त छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि अपने पिता की दिनचर्या के बारे में क्या बताता है?
2. पिता की औाँखें भीगने का क्या कारण रहा होगा?
3. कवि ने भाई-बहन के बारे में क्या बताया है?
4. कवि के पिता क्यों रोने लगे होंगे?

उत्तर –

1. कवि के पिता गीता का पाठ करते हैं तथा दो सौ साठ दंड लगाकर मुगदर हिलाते हैं। फलस्वरूप उनका शरीर मजबूत बन गया है तथा गीता पाठ के कारण मन साहसी हो गया है।
2. कवि के पिता गीता पाठ व व्यायाम करके नीचे आए होंगे तो उन्हें अपने छोटे पुत्र भवानी की याद आई होगी। वह उस समय जेल में था। इस वियोग के कारण उनकी आँखों में पानी आ गया होगा।
3. कवि ने बताया कि उसके चार भाई व चार बहनें हैं, जो इकट्ठे रहते हैं।
4. कवि के पिता ने जब सभी भाई-बहनों को खड़े या खेलते देखा होगा तो उन्हें पाँचवें पुत्र भवानी की याद आई होगी। वे उसका नाम लेकर रो पड़े होंगे।

4.

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,

जिसे सोने पर सुहागा,

पिता जी कहते रहे हैं,

प्यार में बहते रह हैं,

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बाँधा बैठा हूँ अभागा,

शब्दार्थ–

अभागा-भाग्यहीन। सोने पर सुहागा-वस्तु या व्यक्ति का दूसरों से बेहतर होना। प्यार में बहना-भाव-विभोर होना। स्वर्ण-सोना। हेटे—तुच्छ।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है, तो वह अपनी पीड़ा व्यक्त करता है। वह पिता के प्यार के बारे में बताता है।

व्याख्या-कवि कहता है कि वह उनका भाग्यहीन पाँचवाँ पुत्र है। वह उनके साथ नहीं है, परंतु पिता जी को सबसे प्यारा है। जब भी कभी कवि के बारे में चर्चा चलती है तो वे भाव-विभोर हो जाते हैं। आज उन्हें अपने सोने जैसे बेटे तुच्छ लगे होंगे, क्योंकि उनका सबसे प्यारा बेटा उनसे दूर जेल में बैठा है। .

विशेष–

1. पिता को भवानी से बहुत लगाव था।
2. 'सोने पर सुहागा' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।
3. भाषा सहज व सरल है।
4. खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि स्वयं को क्या कहता है? तथा क्यों?
2. कवि स्वयं को अभागा क्यों कहता है?
3. पिता अपने पाँचों बेटों को क्या मानते हैं?
4. पिता को आज अपने बेटे हीन क्यों लग रहे होंगे?

उत्तर –

1. कवि स्वयं को अभागा कहता है, क्योंकि वह परिवार के सदस्यों-भाइयों, बहनों, और वृद्ध माता-पिता के सानिध्य से दूर है। उसे उनके प्यार की कमी खल रही है।
2. कवि स्वयं को इसलिए अभागा कहता है, क्योंकि वह जेल में बंद है। सावन के अवसर पर सारा परिवार इकट्ठा हुआ है और वह उनसे दूर है।
3. पिता अपने चार बेटों को सोने के समान तथा पाँचवें को सुहागा मानते हैं।
4. पिता अपने चार बेटों को सोने के समान मानते थे तथा पाँचवें को सुहागा। आज उनका पाँचवाँ बेटा जो उन्हें सबसे प्यारा लगता है, जेल में उनसे दूर बैठा है। अत: उसके बिना चारों बेटे उन्हें हीन लग रहे होंगे।

5.

और माँ ने कहा होगा,

दुख कितना बहा होगा,

आँख में किसलिए पानी

वहाँ अच्छा है भवानी

वह तुम्हारी मन समझकर,

और अपनापन समझकर,

गया है सो ठीक ही है,

यह तुम्हारी लीक ही है,

पाँव जो पीछे हटाता,

कोख को मेरी लजाता,

इस तरह होओो न कच्चे,

रो पड़गे और बच्चे,

शब्दार्थ–

लीक-परंपरा। पाँव पीछे हटान-कर्तव्य से हटना। कोख को लजाना-माँ को लज्जित करना। कच्चे-कमजोर।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई है। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है। ऐसे में वह अपनी पीड़ा कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। इस काव्यांश में कवि की माँ पिता को समझाती है।

व्याख्या-माँ ने पिता जी को समझाया होगा। ऐसा करते समय उसके मन में भी बहुत दु:ख बहा होगा। वह कहती है कि भवानी जेल में बहुत अच्छा है। तुम्हें आँसू बहाने की जरूरत नहीं है। वह आपके दिखाए मार्ग पर चला है और इसे अपना उद्देश्य बनाकर गया है। यह ठीक है। यह तुम्हारी ही परंपरा है। यदि वह आगे बढ़कर वापस आता तो यह मेरे मातृत्व के लिए लज्जा की बात होती। अत: तुम्हें अधिक कमजोर होने की जरूरत नहीं है। यदि तुम रोओगे तो बच्चे भी रोने लगेंगे।

विशेष–

1. माँ द्वारा धैर्य बँधाने का स्वाभाविक वर्णन है।
2. लीक पर चलना, पाँव पीछे हटाना, कोख लजाना, कच्चा होना आदि मुहावरों का साभिप्राय प्रयोग है।
3. संवाद शैली है।
4. खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।'

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. माँ ने भवानी के पिता को क्या सांत्वना दी?
2. 'वह तुम्हारा मन समझकर"-का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. माँ की कोख कवि के किस कार्य से-लज्जित होती?
4. 'यह तुम्हारी लीक ही है'-का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

1. माँ ने भवानी के पिता को कहा कि भावुक होकर आँखें नम मत करो, वह जेल में ठीक है। भवानी तुम्हारी मन की बात समझकर ही आजादी की लड़ाई में कूदा है तथा तुम्हारी परंपरा का निर्वाह किया है। अत: दुख जताने की आवश्यकता नहीं है।
2. इसका अर्थ है कि भवानी के पिता देशभक्त थे। वह ब्रिटिश सत्ता को खत्म करना चाहते थे। इसी भाव को समझकर भवानी ने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया।
3. यदि कवि देश के सम्मान व रक्षा के कार्य से अपने कदम पीछे हटा लेता तो माँ की कोख लजा जाती।
4. आशय है कि माँ पिता जी को समझाती है कि भवानी तुम्हारे ही आदशों पर चलकर जेल गया है। तुम भी भारत । माता को परतंत्र नहीं देख सकते हो। वह भी अंग्रेजी शासन का विरोध करते हुए जेल गया है। यह आपकी ही तो परंपरा है।

6.

पिता जी ने कहा होगा,

हाय, कितना सहा होगा,

कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ

धीर मैं खोता, कहाँ हूँ

हे सजील हरे सावन,

हे कि मरे पुण्य पावन,

तुम बरस लो वे न बरसें

पाँचवें को वे न तरसें,

मैं मजे में हूँ सही है,

घर नहीं हूँ बस यही है,

किंतु यह बस बड़ा बस हैं,

इसी बस से सब विरस हैं,

शब्दार्थ–

धीर खोना-धैर्य खोना। पुण्य पावन-अति पवित्र। बस-नियंत्रण, केवल। विरस-रसहीन, फीका।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है। ऐसे में वह अपनी पीड़ा कविता के माध्यम से व्यक्त करता है।

व्याख्या-माँ की बातें सुनकर पिता ने कहा होगा कि मैं रो नहीं रहा हूँ और न ही धैर्य खो रहा हूँ। यह बात कहते हुए उन्होंने सारी पीड़ा मन में समेटी होगी। कवि सावन को संबोधित करते हुए कहता है कि हे सजीले हरियाले सावन! तुम अत्यंत पवित्र हो। तुम चाहे बरसते रहो, परंतु मेरे माता-पिता की आँखों से आँसू न बरसें। वे अपने पाँचवें बेटे की याद करके दुखी न हों। वह मजे में है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसमें केवल इतना ही अंतर है कि मैं घर पर नहीं हूँ। वह घर के

वियोग को मामूली मान रहा है, परंतु यह कोई साधारण घटना नहीं है। इस वियोग से मेरा जीवन दुखमय बन गया है। मैं अलगाव का नरक भोग रहा हूँ।

विशेष–

1. पिता की भावुकता का सजीव वर्णन है।
2. सावन को दूत बनाने की प्राचीन परंपरा को प्रयोग किया गया है।
3. संवाद शैली है।
4. 'पुण्य पावन' में अनुप्रास अलंकार है।
5. 'बस' शब्द में यमक अलंकार है। इसके दो अर्थ हैं-केवल व नियंत्रण।
6. खड़ी बोली है।
7. मुक्त छद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. माँ की बात पर पिता ने अपनी व्यथा को किस प्रकार छिपाने का प्रयास किया?
2. कवि ने किसे क्या कहा?
3. भवानी का जीवन विरस, क्यों है?
4. कवि सावन से अपने माता-पिता के लिए क्या कहता है?

उत्तर –

1. माँ की बात पर पिता ने कहा कि वह रो नहीं रहा है और न ही वह धैर्य खो रहा है। इस तरह उन्होंने अपनी व्यथा छिपाने का प्रयास किया।
2. कवि ने सावन को यह संदेश देने को कहा कि वह मजे में है। घरवाले उसकी चिंता न करें। वह सिर्फ घर से दूर है।
3. भवानी का जीवन रसहीन है, क्योंकि वह घर से दूर है। पारिवारिक स्नेह के अभाव में वह स्वयं को अकेला महसूस कर रहा है।
4. कवि सावन से कहता है कि तुम चाहे जितना बरस लो, लेकिन ऐसा कुछ करो कि मेरे माता-पिता मेरे लिए न तरसें तथा आँसू न बहाएँ।

7.

किंतु उनसे यह न कहना,

उन्हें देते धीर रहना,

उन्हें कहना लिख रहा हूँ,

उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

काम करता हूँ कि कहना,

नाम करता हूँ कि कहना,

मत करो कुछ शोक कहना,

और कहना मस्त हूँ मैं,

कातने में व्यस्त हूँ मैं,

वजन सत्तर सेर मेरा,

और भोजन ढेर मरा,

कूदता हूँ खेलता हूँ,

दु:ख डटकर ठेलता हूँ,

यों न कहना अस्त हूँ मैं,

शब्दार्थ–

धीर-धैर्य। शोक-दुख। डटकर ठेलना-तल्लीनता से हटाना। मस्त-अपने में मग्न रहना। अस्त-निराश।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है। ऐसे में वह अपनी पीड़ा कविता के माध्यम व्यक्त करता है।

व्याख्या-कवि सावन से कहता है कि तुम मेरे माता-पिता से मेरे कष्टों के बारे में न बताना। तुम उन्हें धैर्य देते हुए यह कहना कि यह कहना जेल में भी पढ़ रहा है। साहित्य लिख रहा है। वह यहाँ काम करता है तथा परिवार, देश का नाम रोशन कर रहा है। उसे अनेक लोग चाहते हैं। उनसे शोक न करने की बात कहना। उन्हें यह भी बताना कि मैं यहाँ सुखी हूँ। मैं यहाँ सूत कातने में व्यस्त रहता हूँ। मेरा वजन सत्तर सेर है। मैं ढेर सारा भोजन करता हूँ, खेलता-कूदता हूँ तथा दुख को अपने नजदीक आने नहीं देता। मैं यहाँ मस्त रहता हूँ, परंतु उन्हें यह न कहना कि मैं डूबते सूर्य-सा निस्तेज हो गया हूँ।

विशेष–

1. कवि के संदेश का सुंदर वर्णन है।
2. सावन का मानवीकरण किया गया है।
3. 'कहना' शब्द की आवृत्ति मनमोहक बनी है।
4. 'काम करता', 'कि कहना' में अनुप्रास अलंकार है।
5. खड़ी बोली है।
6. 'डटकर ठेलना', 'अस्त होना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।
7. भाषा में प्रवाह है। 8. प्रसाद गुण है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि जेल की मानसिक यातना को क्यों छिपाना चाहता है?
2. यहाँ कौन किससे क्यों कह रहा है?
3. कवि अपने पुत्र धर्म का निर्वाह कैसे कर रहा है?
4. कवि जेल में कौन-कौन-सा कार्य करता है?

उत्तर –

1. कवि जेल की मानसिक यातनाओं को अपने माता-पिता से छिपाना चाहता है, ताकि उसके वृद्ध माता-पिता अपने पाँचवें बेटे के लिए चिंतित न हों।

2. यहाँ कवि सावन को संबोधित कर रहा है ताकि वह अपने माता-पिता को उसका संदेश दे सके।
3. कवि जेल में उदास है। उसे परिवार की याद आ रही है, फिर भी वह झूठ बोल रहा है; क्योंकि वह अपने परिजनों को दुखी नहीं करना चाहता। इस प्रकार कवि अपने पुत्र धर्म का निर्वाह कर रहा है।
4. कवि जेल में लिखता है, पढ़ता है, काम करता है, सूत कातता है तथा खेलता-कूदता है। इस प्रकार से कवि दुखों का डटकर मुकाबला करता है।

8.

हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ
कह न देना मौन हूँ मैं,
खुद न समझू कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,
हे सजीले हरे सावन,
हे कि मरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसों।

शब्दार्थ–

मौन-चुपचाप बक देना-फिजूल की बात कहना। शक-संदेह। पावन-पवित्र।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'घर की याद' से लिया गया है। इसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। यह कविता जेल प्रवास के दौरान लिखी गई। एक रात लगातार बारिश हो रही थी तो कवि को घर की याद आती है। ऐसे में वह अपनी पीड़ा कविता के माध्यम से व्यक्त करता है।

व्याख्या-कवि सावन को सावधान करते हुए कहता है कि मेरे परिजनों को मेरी सच्चाई न बताना। उन्हें यह न बताना कि मैं देर रात तक जागता रहता हूँ, आम व्यक्ति से दूर भागता हूँ मैं चुपचाप रहता हूँ। यह भी न बताना कि चिंता में डूबकर मैं स्वयं को भूल जाता हूँ। तुम सावधानी से बातें कहना। उन्हें कोई शक न होने देना कि मैं दुखी हूँ। हे सावन! तुम पुण्य कार्य में लीन हो, तुम स्वयं बरसकर धरती को प्रसन्न करो, परंतु मेरे माता-पिता की आँखों में आँसू न बहने देना, उन्हें मेरी याद न आने देना।

विशेष–

1. कवि अपनी व्यथा को अपने तक सीमित रखना चाहता है।

2. 'आदमी से भागता हूँ में कवि की पीड़ा का वर्णन है।
3. 'पाँचवें' शब्द से अभिव्यक्त होने वाली करुणा मर्मस्पर्शी है।
4. सावन का मानवीकरण किया है।
5. 'सावन' के लिए सजीले, हरे, पुण्य, पावन आदि विशेषणों का प्रयोग है।
6. 'बक' व 'शक' शब्द भाषा को प्रभावी बनाते हैं।
7. 'पुण्य पावन' में अनुप्रास अलंकार है।
8. खड़ी-बोली में प्रभावी अभिव्यक्ति है।
9. संवाद शैली है।
10. प्रसाद गुण है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि सावन से क्या आग्रह करता है? और क्यों?
2. कवि की वास्तविक दशा कैसी है?
3. कवि ने सावन को क्या उपमा दी है?
4. कवि सावन को क्या चेतावनी देता है?

उत्तर –

1. कवि सावन से आग्रह करता है कि वह उसके माता-पिता व परिजनों को उसकी वास्तविकता के बारे में न बताए ताकि वे अपने प्रिय पुत्र की दशा से दुखी न हों।
2. कवि निराश है। वह रातभर जागता रहता है। निराशा के कारण वह आदमी के संपर्क से दूर भागता है। वह चुप रहता है तथा स्वयं की पहचान भी भूल चुका है।
3. कवि ने सावन को 'सजीले', 'हरे', 'पुण्य-पावन' की उपमा दी है, क्योंकि वह सावन को संदेशवाहक बनाकर अपने माता-पिता तक संदेश भेजना चाहता है।
4. कवि सावन को चेतावनी देता है कि वह उसके परिजनों के सामने फिजूल में न बोले तथा कवि के बारे में सही तरीके से बताए ताकि उन्हें कोई शक न हो।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।

2. शिल्प-सौंदर्य पर प्रकाश डालें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में कवि ने अपने पिता की विशेषताएँ बताई हैं। वे सहज स्वभाव के हैं तथा शरीर से स्वस्थ हैं। वे जिदादिल हैं। उनकी आवाज में गंभीरता है तथा काम में तीव्रता है।
2. बोल, हिचकना, बिचकना, लरजना स्थानीय शब्दों के साथ मौत, शेर आदि विदेशी शब्दों का प्रयोग किया गया है।
    - चित्रात्मकता है।
    - वीर रस की अभिव्यक्ति है।
    - 'अभी भी' की आवृति में अनुप्रास है।
    - 'बोल में बादल गरजता' तथा 'काम में झझा लरजता' में उपमा अलंकार है।
    - खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
    - भाषा में प्रवाह है।
    - प्रसाद गुण है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के धिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर –

'घर की याद' का आरंभ इसी पंक्ति से होता है कि 'आज पानी गिर रहा है। इसी बात को कवि कई बार अलग-अलग ढंग से कहता है-'बहुत पानी गिर रहा है', 'रात भर गिरता रहा है। भाव यह है कि सावन की झड़ी के साथ-साथ 'घर की यादों' से कवि का मन भर आया है। प्राणों से प्यारे अपने घर को, एक-एक परिजन को, माता-पिता को याद करके उसकी आँखों से भी पानी गिर रहा है। वह कहता है कि 'घर नज़र में तैर रहा है। बादलों से वर्षा हो रही है और यादों से घिरे मन का बोझ कवि की आँखों से बरस रहा है।

प्रश्न 2:

मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है?

उत्तर –

कवि ने बहन के लिए घर को परिताप का घर कहा है। बहन मायके में अपने परिवार वालों से मिलने के लिए खुशी से आती है। वह भाई-बहनों के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करती है। घर पहुँचकर जब उसे पता चलता है कि उसका एक भाई जेल में है तो वह बहुत दुखी होती है। इस कारण कवि ने घर को परिताप का घर कहा है।

प्रश्न 3:

पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर –

कवि अपने पिता की निम्नलिखित विशेषताएँ बताता है –

1. उनके पिता को वृद्धावस्था कभी कमजोर नहीं कर पाई।

2. वे फुर्तीले हैं कि आज भी दौड़ लगा सकते हैं।
3. खिलखिलाकर हँस सकते हैं।
4. वे इतने उत्साही हैं कि मौत के सामने भी हिचकिचा नहीं सकते।
5. उनमें इतना साहस है कि वे शेर के सामने भी भयभीत नहीं होंगे। उनकी आवाज़ मानो बादलों की गर्जना है।
6. हर काम को तूफ़ान की रफ्तार से करने की उनमें अद्भुत क्षमता है।
7. वे गीता का पाठ करते हैं और आज भी 260 (दो सौ साठ) तक दंड पेलते हैं, मुगदर (व्यायाम करने का मजबूत भारी लकड़ी का यंत्र) घुमाते हैं।
8. आँखों में जल भर दिया है। वे भावुक भी हैं।

प्रश्न 4:

निम्नलिखित पंक्तियों में 'बड्स' शब्द के प्रयोग की विशेषता बताइए-

मैं मजे में हूँ सही है
घर नहीं हूँ बस यही है
किंतु यह बस बड़ा बस है।
इसी बस से सब विरस हैं।

उत्तर –

कवि ने बस शब्द का लाक्षणिक प्रयोग किया है। पहली बार के प्रयोग का अर्थ है कि वह केवल घर पर ही नहीं है। दूसरे प्रयोग का अर्थ है कि वह घर से दूर रहने के लिए विवश है। तीसरा प्रयोग उसकी लाचारी व विवशता को दर्शाता है। चौथे बस से कवि के मन की व्यथा प्रकट होती है जिसके कारण उसके सारे सुख छिन गए हैं।

प्रश्न 5:

कविता की अंतिम 12 पंक्तियों को पढ़कर कल्पना कीजिए कि कवि अपनी किस स्थिति व मन:स्थिति को अपने परिजनों से छिपाना चाहता है?

उत्तर –

इन पंक्तियों में कवि स्वाधीनता आंदोलन का वह सेनानी है जो जेल की यातना झेलकर भी यातनाओं की जानकारी अपने परिवार के लोगों को इसलिए नहीं देना चाहता है, क्योंकि इससे वे दुखी होंगे। कवि कहता है कि हे सावन ! उन्हें मत बताना कि मैं अस्त हूँ। यहाँ जैसा दुखदायी माहौल है उसकी जानकारी मेरे घरवालों को मत देना। उन्हें यह मत बताना । कि मैं ठीक से सो भी नहीं पाता और मनुष्य से भागता हूँ। कहीं उन्हें यह मत बताना कि जेल की यातनाओं से मैं मौन हो गया हूँ, कुछ नहीं बोलता। मैं स्वयं यह नहीं समझ पा रहा कि मैं कौन हूँ? अर्थात् देश-प्रेम अपराध की सजा? कहीं ऐसा न हो कि मेरे माता-पिता को शक हो जाए कि मैं दुखी हूँ और वे मेरे लिए रोने लगें हे सावन! तुम बरस लो जितना बरसना है, पर मेरे माता-पिता को रोना न पड़े। अपने पाँचवें पुत्र के लिए वे न तरसे अर्थात् वे हर हाल में खुश रहें। कवि उन्हें ऐसा कोई संदेश नहीं देना चाहता जो दुख का कारण बने।

कविता के आसपास

प्रश्न 1:

ऐसी पाँच रचनाओं का संकलन कीजिए जिसमें प्रकृति के उपादानों की कल्पना संदेशवाहक के रूप

में. की गई है।

उत्तर –

विद्याथी स्वयं करें।

प्रश्न 2:

घर से अलग होकर आप घर को किस तरह से याद करते हैं? लिखें।

उत्तर –

विद्यार्थी अपने अनुभव लिखें।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'घर की याद' कविता का प्रतिपादय लिखिए।

उत्तर –

इस कविता में घर के मर्म का उद्घाटन है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है। सावन के बादलों को देखकर कवि को घर की याद आती है। वह घर के सभी सदस्यों को याद करता है। उसे अपने भाइयों व बहनों की याद आती है। उसकी बहन भी मायके आई होगी। कवि को अपनी अनपढ़, पुत्र के दुख से व्याकुल, परंतु स्नेहमयी माँ की याद आती है। वह सावन को दूत बनाकर अपने माता-पिता के पास अपनी कुशलक्षेम पहुँचाने का प्रयास करता है ताकि कवि के प्रति उनकी चिंता कम हो सके।

प्रश्न 2:

पिता कवि को 'सोने पर सुहागा' क्यों कहते हैं?

उत्तर –

पिता कवि से बहुत स्नेह करते थे। पिता की इच्छा से ही कवि ने स्वयं को देश-सेवा के लिए अर्पित किया था। जिसकी वजह से वह आज जेल में था। उसने परिवार का नाम रोशन किया। इन कारणों से पिता ने कवि को सोने पर सुहागा कहा।

प्रश्न 3:

उम्र बड़ी होने पर भी पिता को बुढ़ापा क्यों नहीं छू पाया था?

उत्तर –

कवि के पिता की आयु अधिक थी, परंतु वे सरल स्वभाव के थे। निरंतर व्यायाम करते थे और दौड़ लगाते थे। वे खूब काम करते थे तथा निर्भय रहते थे। इस कारण उन्हें बुढ़ापा छू नहीं पाया था।

प्रश्न 4:

'देखना कुछ बक न देना' के स्थान पर 'देखना कुछ कह न देना' के प्रयोग से काव्य-सौंदर्य में क्या अंतर आ जाता?

उत्तर –

कवि यदि 'बक' शब्द के स्थान पर 'कह' शब्द रख देता तो कथन का विशिष्ट अर्थ समाप्त हो जाता। 'बकना' शब्द खीझ को प्रकट करता है। 'कहना' सामान्य शब्द है। अत: 'बक' शब्द अधिक सटीक है।

कवि परिचय

- जीवन परिचय-त्रिलोचन का जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी में सन् 1917 में हुआ। इनका मूल नाम वासुदेव सिंह है। ये हिंदी साहित्य में प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में लिखा। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर इन्हें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी इन्हें महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया। शलाका सम्मान भी इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनका निधन 9 दिसंबर, 2007 में हुआ।
- रचनाएँ-इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं
    - काव्य- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, अरघान, तम्हें सौंपता हूँ. चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला।
    - गद्य- देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थबोध, मुक्तिबोध की कविताएँ। इसके अलावा, हिंदी के अनेक कोशों के निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।
- साहित्यिक विशेषताएँ-त्रिलोचन बहुभाषाविज्ञ शास्त्री हैं। ये रागात्मक संयम व लयात्मक अनुशासन वाले कवि हैं। इसी कारण इनके नाम के साथी 'शास्त्री' जुड़ गया है, लेकिन यह शास्त्रीयता इनकी कविता के लिए बोझ नहीं बनती। ये जीवन में निहित मंद लय के कवि हैं। प्रबल आवेग और त्वरा की अपेक्षा इनके यहाँ काफी कुछ स्थिर है। इनकी भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है तथा उसका काव्य ठाठ ठेठ गाँव की जमीन से जुड़ा हुआ है। ये हिंदी में सॉनेट (अंग्रेज़ी छद) को स्थापित करने वाले कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। कवि बोलचाल की भाषा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को नया आयाम देता है। कविता की प्रस्तुति का अंदाज कुछ ऐसा है कि वस्तु रूप की प्रस्तुति का भेद नहीं रहता।

पाठ का सारांश

'चपा काल-काल अच्छर नहीं चीन्हती' कविता धरती संग्रह में संकलित है। यह पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। इसमें 'अक्षरों' के लिए 'काले-काले' विशेषण का प्रयोग किया गया है जो एक ओर शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है। वह कहती है 'कलकत्ते पर बजर गिरे।" कलकत्ते पर वज़ गिरने की कामना, जीवन के खुरदरे यथार्थ के प्रति चंपा के संघर्ष और जीवन को प्रकट करती है।

काव्य की नायिका चंपा अक्षरों को नहीं पहचानती। जब वह पढ़ता है तो चुपचाप पास खड़ी होकर आश्चर्य से सुनती है। वह सुंदर ग्वाले की एक लड़की है तथा गाएँ-भैसें चराने का काम करती है। वह अच्छी व चंचल है। कभी वह कवि की कलम चुरा लेती है तो कभी कागज। इससे कवि परेशान हो जाता है। चंपा कहती है कि दिन भर कागज लिखते रहते हो। क्या यह काम अच्छा है? कवि हँस देता है। एक दिन कवि ने चंपा से पढ़ने-लिखने के लिए कहा। उन्होंने इसे गाँधी बाबा की इच्छा बताया। चंपा ने कहा कि वह नहीं पढ़ेगी।

गाँधी जी को बहुत अच्छे बताते हो, फिर वे पढ़ाई की बात कैसे कहेंगे? कवि ने कहा कि पढ़ना अच्छा है। शादी के बाद तुम ससुराल जाओगी। तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा। अगर तुम नहीं पढ़ी तो उसके पत्र कैसे पढ़ोगी या अपना संदेशा कैसे दोगी? इस पर चंपा ने कहा कि तुम

पढ़े-लिखे झूठे हो। वह शादी नहीं करेगी। यदि शादी करेगी तो अपने पति को कभी कलकत्ता नहीं जाने देगी। कलकत्ता पर भारी विपत्ति आ जाए, ऐसी कामना वह करती है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

चंपा काल-काल अच्छर नहीं चन्हती
में जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता हैं:
इन काले चीन्हीं से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं।

शब्दार्थ

अच्छर-अक्षर। चीन्हती-पहचानती। अचरज-हैरानी। चीन्हों-अक्षरों।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रगतिशील कवि त्रिलोचन हैं। इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।

व्याख्या-कवि चंपा नामक लड़की की निरक्षरता के बारे में बताते हुए कहता है कि चंपा काले-काले अक्षरों को नहीं पहचानती। उसे अक्षर ज्ञान नहीं है। जब कवि पढ़ने लगता है तो वह वहाँ आ जाती है। वह उसके द्वारा बोले गए अक्षरों को चुपचाप खड़ी-खड़ी सुना करती है। उसे इस बात की बड़ी हैरानी होती है कि इन काले अक्षरों से ये सभी ध्वनियाँ कैसे निकलती हैं? वह अक्षरों के अर्थ से हैरान होती है।

विशेष–

1. निरक्षर व्यक्ति की हैरानी का बिंब सुंदर है।
2. 'काले काले', 'खड़ी खड़ी' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
3. ग्राम्य-भाषा का सुंदर प्रयोग है।
4. सरल व सुबोध खड़ी बोली है।
5. मुक्त छंद होते हुए भी लय है।
6. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. चंपा कौन है? उसे किस चीज का ज्ञान नहीं है?
2. चंपा चुपचाप क्या करती है?
3. चंपा की हैरानी का कारण बताइए।
4. आप चांपा को किसका/किनका प्रतीक मान सकते हैं? यहाँ कवि ने किस सामाजिक समस्या की ओर हमारा ध्यान खींचा है?

उत्तर –

1. चंपा गाँव की अनपढ़ बालिका है। उसे अक्षर ज्ञान नहीं है।

2. जब कवि पढ़ने लगता है तब वह वहाँ आकर चुपचाप खड़ी-खड़ी सुनती रहती है।
3. चंपा कवि द्वारा बोले गए अक्षरों को सुनती है। उसे आश्चर्य होता है इन काले अक्षरों से कवि ध्वनियाँ कैसे बोल लेता है। वह ध्वनियों व अक्षरों के संबंध को नहीं समझ पाती।
4. चंपा गाँव की उन निरक्षर लड़कियों की प्रतीक है जिन्हें पढ़ने-लिखने का अवसर नहीं मिल पाता है। चंपा के माध्यम से कवि ने समाज में फैली निरक्षरता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

2.

चंपा सुंदर की लड़की है
सुंदर ग्वाला है: गाएँ-भैंसे रखता है
चंपा चौपायों को लकर
चरवाही करने जाती है
चंपा अच्छी हैं
चंचल हैं
नटखट भी है
कभी-कभी ऊधम करती हैं
कभी-कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ-अब कागज गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ

शब्दार्थ

ग्वाला-गाय चराने वाला। चौपाया-चार पैरों वाले पशु यानी गाय, भैंस, आदि। चरवाही-पशु चराने का काम। चंचल-चुलबुला। नटखट-शरारती। ऊधम-तंग करने वाली हरकतें। गायब-गुम हो जाना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रगतिशील कवि त्रिलोचन हैं। इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।

व्याख्या-कवि चंपा के विषय में बताता है कि वह सुंदर नामक ग्वाले की लड़की है। वह गाएँ-भैंसें रखता है। चंपा उन सभी पशुओं को प्रतिदिन चराने के लिए लेकर जाती है। वह बहुत अच्छी है तथा चंचल है। वह शरारतें भी करती है। कभी वह कवि की कलम चुरा लेती है। कवि किसी तरह उस कलम को ढूँढ़कर लाता है तो उसे पता चलता है कि अब कागज गायब हो गया है। कवि इन शरारतों से परेशान हो जाता है।

विशेष-

1. चंपा के परिवार व उसकी शरारतों के बारे में बताया गया है।
2. ग्रामीण जीवन का चित्रण है।
3. सहज व सरल खड़ी बोली है।
4. मुक्त छंद है।
5. 'कभी-कभी' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

6. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. चंपा के पिता के विषय में बताइए।
2. चंपा क्या करने जाती है?
3. चंपा का व्यवहार कैसा है?
4. कवि की परेशानी का क्या कारण है?

उत्तर –

1. चंपा के पिता का नाम सुंदर है। वह ग्वाला है तथा गाएँ-भैंसें रखता है।
2. चंपा प्रतिदिन पशुओं को चराने के लिए लेकर जाती है।
3. चंपा का व्यवहार अच्छा है। वह चंचल है तथा नटखट भी है। कभी-कभी वह बहुत शरारतें करती है।
4. चंपा कवि की कलम चुरा लेती है। किसी तरीके से कवि उसे ढूँढ़कर लाता है तो उसके कागज गायब मिलते हैं। चंपा की इन हरकतों से कवि परेशान होता है।

3.

चंपा कहती है:
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़ काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

शब्दार्थ

कागद-कागज। गोदना-लिखते रहना। हारे गाढ़े काम सरेगा-कठिनाई में काम आएगा। जन-आंदमी।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रगतिशील कवि त्रिलोचन हैं। इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि चंपा को काले अक्षरों से कोई संबंध नहीं है। वह कवि से पूछती है कि तुम दिन-भर कागज पर लिखते रहते हो। क्या यह काम तुम्हें बहुत अच्छा लगता है। उसकी नजर

में लिखने के काम की कोई महत्ता नहीं है। उसकी बात सुनकर कवि हँसने लगता है और चंपा चुप हो जाती है। एक दिन चंपा आई तो कवि ने उससे कहा कि तुम्हें भी पढ़ना सीखना चाहिए। मुसीबत के समय तुम्हारे काम आएगा। वह महात्मा गाँधी की इच्छा को भी बताता है। गाँधी जी की इच्छा थी कि सभी आदमी पढ़ना-लिखना सीखें। चंपा कवि की बात का उत्तर देती है कि वह नहीं पढ़ेगी। आगे कहती है कि तुम तो कहते थे कि गाँधी जी बहुत अच्छे हैं। फिर वे पढ़ाई की बात क्यों करते हैं? चंपा महात्मा गाँधी की अच्छाई या बुराई का मापदंड पढ़ने की सीख से लेती है। वह न पढ़ने का निश्चय दोहराती है।

विशेष–

1. निरक्षर व्यक्ति की मनोदशा का सुंदर चित्रण है।
2. शिक्षा के प्रति समाज का उपेक्षा भाव स्पष्ट है।
3. संवाद शैली है।
4. ग्रामीण जीवन का सटीक वर्णन है।
5. देशज शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
6. अनुप्रास अलंकार है।
7. मुक्त छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. चंपा कवि से क्या प्रश्न करती है?
2. कवि ने चंपा को क्या सीख दी तथा क्यों?
3. कवि ने गाँधी का नाम क्यों लिया?
4. चंपा कवि से गाँधी जी के बारे में क्या तर्क देती है?

उत्तर –

1. चंपा कवि से प्रश्न करती है कि वह दिनभर कागज को काला करते हैं। क्या उन्हें यह कार्य बहुत अच्छा लगता है।
2. कवि चंपा को पढ़ने-लिखने की सीख देता है ताकि कष्ट के समय उसे कोई परेशानी न हो।
3. कवि का मानना है कि ग्रामीण भी गाँधी जी का बहुत सम्मान करते हैं तथा उनकी बात मानते हैं। उन्हें लगा कि शिक्षा के बारे में गाँधी जी की इच्छा जानने के बाद चंपा पढ़ना सीखेगी।
4. चंपा कवि से कहती है कि अगर गाँधी जी अच्छे हैं तो वे कभी पढ़ने-लिखने के लिए नहीं कहेंगे।

4.

मैंने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है

ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,

कुछ दिन बालम सग साथ रह चंपा जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर हैं वह कलकत्ता
केस उसे संदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी।
चंपा पढ़ लेना अच्छा है।

शब्दार्थ–

ब्याह-शादी। **गौने जाना**-ससुराल जाना। **बालम**-पति। **संग**-साथ। **संदेसा**-संदेश।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रगतिशील कवि त्रिलोचन हैं। इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।

व्याख्या-कवि चंपा को पढ़ने की सलाह देता है तो वह स्पष्ट तौर पर मना कर देती है। कवि शिक्षा के लाभ गिनाता है। वह उसे कहता है कि तुम्हारे लिए पढ़ाई-लिखाई जरूरी है। एक दिन तुम्हारी शादी भी होगी और तुम अपने पति के साथ ससुराल जाओगी। वहाँ तुम्हारा पति कुछ दिन साथ रहकर नौकरी के लिए कलकत्ता चला जाएगा। कलकत्ता यहाँ से बहुत दूर है। ऐसे में तुम उसे अपने विषय में कैसे बताओगी? तुम उसके पत्रों को किस प्रकार पढ़ पाओगी? इसलिए तुम्हें पढ़ना चाहिए।

विशेष-

1. शिक्षा के महत्व को सहज तरीके से समझाया गया है।
2. गाँवों से महानगरों की तरफ पलायनवादी प्रवृत्ति को बताया गया है।
3. ग्रामीण जीवन का चित्रण है।
4. संवाद शैली है।
5. अनुप्रास अलंकार है।
6. खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
7. मुक्त छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि ने चंपा को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए क्या तर्क दिया?
2. कलकत्ता जाने की बात से कथा पता चलता है?
3. बड़ी दूर है वह कलकत्ता, फिर भी लोग कलकत्ता क्यों जाते हैं?
4. कवि ने नारी मनोविज्ञान का सहारा लिया है-स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. कवि ने चंपा को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए तर्क दिया है कि शादी के बाद जब तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा तो तुम उसके पास कैसे अपना संदेश भेजोगी तथा कैसे उसके पत्र पढ़ोगी? इसलिए तुम्हें पढ़ना चाहिए।
2. कलकत्ता जाने की बात से पता चलता है कि महानगरों की तरफ ग्रामीणों की पलावनवादी प्रवृत्ति है। इससे परिवार बिखर जाते हैं।
3. कलकत्ता बहुत दूर तो है, किंतु महानगर है जहाँ रोजगार के अनेक साधन उपलब्ध हैं। वहाँ रोजी-रोटी के साधन सुलभ हैं। रोजगार पाने की आशा में ही लोग कलकत्ता जाते होंगे।
4. कवि ने नारी मनोविज्ञान का सहारा लिया है, क्योंकि नारी को सर्वाधिक खुशी अपने पति के नाम व उसके संदेश से मिलती है।

5.

चंपा बोली; तुम कितने झूठे हो, देखा,

हाय राम, तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो
में तो ब्याह कभी न करूंगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को सँग साथ रखूँगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

शब्दार्थ–

बजर गिरे-वज़ गिरे, भारी विपत्ति आए।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'चंपा काल-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रगतिशील कवि त्रिलोचन हैं। इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।

व्याख्या-कवि द्वारा चंपा को पढ़ने की सलाह पर वह उखड़ जाती है। वह कहती है कि तुम बहुत झूठ बोलते हो। तुम पढ़-लिखकर भी झूठ बोलते हो। जहाँ तक शादी की बात है, तो मैं शादी ही कभी नहीं करूंगी। दूसरे, यदि कहीं शादी भी हो गई तो मैं पति को अपने साथ रखेंगी। उसे कभी कलकत्ता नहीं जाने दूँगी। दूसरे शब्दों में, वह अपने पति का शोषण नहीं होने देगी। परिवारों को दूर करने वाले शहर कलकत्ते पर वज़ गिरे। वह अपने पति को उससे दूर रखेगी।

विशेष–

1. चंपा की दृष्टि में शिक्षित समाज शोषक है।
2. चंपा का भोलापन प्रकट हुआ है।
3. ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्रण हुआ है।
4. मुक्त छद है।
5. खड़ी बोली है।
6. 'बजर गिरे' से शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश जताया गया है।
7. संवाद शैली है।
8. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. चंपा कवि पर क्या आरोप लगाती है तथा क्यों?
2. चंपा की अपने पति के बारे में क्या कल्पना है?
3. चंपा कलकत्ते के बारे में क्या कहती है?
4. शिक्षा के प्रति चंपा की क्या सोच है? उसकी यह सोच कितनी उपयुक्त है?

उत्तर –

1. चंपा कवि पर झूठ बोलने का आरोप लगाती है कि कवि पढ़ाई के चक्कर में उसकी शादी व फिर पति के कलकत्ता जाने की झूठी बात कहता है।

2. चंपा अपने पति के बारे में कल्पना करती है कि वह उसे अपने साथ रखेगी तथा कलकत्ता नहीं जाने देगी अर्थात् उसका शोषण नहीं होने देगी।
3. चंपा कलकत्ते के बारे में कहती है कि उस पर वज़पात हो जाए ताकि वह नष्ट हो जाए। इससे आसपास के लोग वहाँ जा नहीं सकेंगे।
4. शिक्षा के प्रति चंपा की सोच यह है कि इससे परिवार में बिखराव होता है, लोगों का शोषण होता है। उसकी यह सोच बिल्कुल गलत है, क्योंकि शिक्षा ज्ञान एवं विकास के नए द्वार खोलती है।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

चंपा काल-काल अच्छर नहीं चन्हती
में जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता हैं:
इन काले चीन्हीं से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं।

प्रश्न

1. इस काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. इस काव्यांश का शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. कवि ने निरक्षर चंपा की हैरानी को स्वाभाविक तरीके से बताया है। वह कहता है कि अक्षरों व उनसे निकलने वाली ध्वनियों से चंपा आश्चर्यचकित होती है।
2. ग्राम्य शब्दों अच्छर, चीन्हती, चीन्हों, अचरज से ग्रामीण वातावरण का बिंब साकार हो उठता है।
    - 'काले काले', 'खड़ी खड़ी' में पुनरुक्तिप्रकाश अंलकार है।
    - 'सब स्वर' में अनुप्रास अलंकार है।
    - प्रसाद गुण है।
    - मुक्त छद है।
    - उर्दू देशज शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
    - भाषा में सहजता व सरलता है।

2.

उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि

चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़ काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं

वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

प्रश्न

1. इस काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. इस काव्यांश का शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में कवि चंपा को पढ़ने की सलाह देता है। वह गाँधी जी की भी यही इच्छा बताता है, परंतु चंपा स्पष्ट रूप से पढ़ने से इनकार कर देती है। उसे शिक्षित युवकों का परदेश में नौकरी करना तनिक भी पसंद नहीं है।
2. संवादों के कारण कविता सजीव बन गई है।
    - देशज शब्दों के प्रयोग से ग्रामीण जीवन साकार हो उठता है; जैसे हारे गाढ़े सरेगा आदि।
    - गाँधी बाबा की इच्छा का अच्छा चित्रण है।
    - खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
    - मुक्त छंद होते हुए भी गतिशीलता है।
    - शांत रस है।
    - प्रसाद गुण है।

3.

चंपा बोली; तुम कितने झूठे हो, देखा,

हाय राम, तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो
में तो ब्याह कभी न करूंगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को सँग साथ रखूँगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न

1. काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।
2. काव्यांश का शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. त्रिलोचन ने ग्रामीण ठाठ को सहजता से प्रकट किया है। ब्याह, बालम, संग, बजर आदि शब्दों से अ ा ंचलिकता का पुट मिलता है। खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
2. संवाद शैली का प्रयोग है।
    - मुक्त छंद होते हुए भी काव्य में प्रवाह है।
    - ‘कलकत्ते पर बजर गिरे’ कटु यथार्थ का परिचायक है।
    - ‘हाय राम’ कहने में नाटकीयता आई है।
    - ‘संग साथ’ में अनुप्रास अलंकार है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तर –

चंपा नहीं चाहती कि उसका बालम उसे छोड़कर कहीं दूर पैसा कमाने के लिए जाए। कवि ने उसे बताया कि कलकत्ता जो बहुत दूर है वहाँ लोग धन कमाने जाते हैं। चंपा चाहती है कि कलकत्ते का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए तो उसका बालम उसी के पास रहेगा। इसलिए वह कहती है कि कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न 2:

चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गाँधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही होगी?

उत्तर –

चंपा के मन में यह बात बैठी हुई है कि शिक्षित व्यक्ति अपने घर को छोड़कर बाहर चला जाता है। इस कारण वह पढ़ाई-लिखाई को अच्छा नहीं मानती। गाँधी जी का ग्रामीण जीवन पर बहुत अच्छा प्रभाव है। वे लोगों की भलाई की बात करते हैं। अत: वह गाँधी जी द्वारा पढ़ने-लिखने की बात कहने पर विश्वास नहीं करती, क्योंकि पढ़ाई-लिखाई परिवार को तोड़ती है। उनसे लोगों का भला नहीं होता। यह गाँधी जी के चरित्र के विपरीत कार्य है।

प्रश्न 3:

कवि ने चंपा की किन बिशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर –

चंपा एक छोटी बालिका है जो काले काले अक्षरों को नहीं पहचानती। कवि के अनुसार वह चंचल और नटखट है। दिन भरे पशुओं को चराने का काम करती है; वह जो करना चाहती है, वही करती है। उसे पढ़ना पसंद नहीं तो नहीं पढ़ती। वह नहीं चाहती कि उसका पति उससे दूर जाए, तो कहती है कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न 4:

आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ेंगी?

उत्तर –

चंपा का विश्वास है कि पढ़-लिखकर व्यक्ति अपने परिवार को छोड़कर परदेश जाकर रहने लगता है। इससे घर बिखर जाते हैं। शिक्षित होकर लोग चालाक, घमंडी व कपटी हो जाते हैं। वे परिवार को भूल जाते हैं। महानगरों में जाने वाले लोगों के परिवार बिछोह की पीड़ा सहते हैं। इसलिए उसने कहा होगा कि वह नहीं पढ़ेगी।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1:

यदि चंपा पढ़ी-लिखी होती तो कवि से कैसे बातें करती?

उत्तर –

यदि चंपा पढ़ी-लिखी होती तो कवि से पूछती कि आप क्या लिख रहे हैं? मैं भी वह पढ़ना चाहती

हूँ। पढ़ने के लिए कोई किताब माँगती और पढ़ी हुई किताबों के विषय में बातें करती। गांधी जी की धारणा को समझती।

प्रश्न 2:

इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है?'

उत्तर –

इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की व्यथा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। रोजगार की तलाश में युवक कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में जाते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। पीछे उनकी स्त्रियाँ व परिवार के लोग अकेले रह जाते हैं। स्त्रियाँ अनपढ़ होती हैं, अत: वे पति की चिट्ठी भी नहीं पढ़ पातीं और न अपना संदेश भेज पाती हैं। उनका जीवन पिछड़ा रहता है तथा वे पति का वियोग सहन करने को विवश रहती हैं।

प्रश्न 3:

संदेश ग्रहण करने ओर भेजने में असमर्थ होने पर एक अनपढ़ लड़की को जिस वेदना और विपत्ति को भोगना पड़ता है, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर –

संदेश ग्रहण न कर पानेवाली अनपढ़ लड़कियों को सदैव दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। वे अपने मन की बात अपने हिसाब से अपने पति या अन्य किसी संबंधी को नहीं लिख पातीं। उन्हें कोई भी संदेश या पत्र किसी और से ही लिखवाना या पढ़वाना पड़ता है। इससे उनके अपने हाथ में कुछ नहीं रहता। विपरीत परिस्थितियों में या कठिनाइयों के समय वे असहाय होकर अपनों तक अपनी दशा की सूचना तक नहीं भेज पातीं। कभी-कभी ऐसी अबोध लड़कियों की उपेक्षा करते हुए परिवारों में दरार पड़ जाती है। अनपढ़ रहकर स्त्री हो या पुरुष अनेक कष्टों को सहन करने के लिए विवश हैं।

प्रश्न 4:

त्रिलोचन पर एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा बनाई गई फिल्म देखिए।

उत्तर –

स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

इस कविता का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर –

'चपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता धरती संग्रह में संकलित है। यह पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। इसमें 'अक्षरों' के लिए 'काले काले' विशेषण का प्रयोग किया गया है जो एक ओर शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है। वह कहती है 'कलकत्ते पर बजर गिरे।' कलकत्ते

पर वज़ गिरने की कामना, जीवन के खुरदरे यथार्थ के प्रति चंपा के संघर्ष और जीवन को प्रकट करती है।

प्रश्न 2:

चपा को क्या अचरज होता है तथा क्यों?

उत्तर –

चंपा निरक्षर है। जब कवि अक्षरों को पढ़ना शुरू करता है तो चंपा को हैरानी होती है कि इन अक्षरों से स्वर कैसे निकलते हैं; वह अक्षर व ध्वनि के संबंध को समझ नहीं पाती। उसे नहीं पता कि लिखे हुए अक्षर ध्वनि को व्यक्त करने का ही एक रूप है। निरक्षर होने के कारण वह यह बात समझ नहीं पाती।

प्रश्न 3:

कविता की नायिका चंपा किसका प्रतिनिधित्व करती है?

उत्तर –

कविता की नायिका चंपा देश की निरक्षर व ग्रामीण स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। ये अबोध बालिकाएँ प्राय: उपेक्षा का शिकार होती हैं। वे पढ़ाई-लिखाई को निरर्थक समझकर पढ़ने के अवसर को त्याग देती हैं।

प्रश्न 4:

विवाह और पति के बारे में चपा की क्या धारणा है?

उत्तर –

विवाह की बात सुनते ही चंपा लजाकर शादी करने से मना करती है, परंतु जब पति की बात आती है तो वह सदैव उसे अपने साथ रखने की बात कहती है। वह पति को अलग करने वाले कलकत्ता के विनाश की कामना तक करती है।

प्रश्न 5: लेखक चंपा को पढ़ने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है?

उत्तर –

लेखक चंपा से कहता है कि पढ़ाई कठिन समय में काम आती है। गाँधी बाबा की भी इच्छा थी कि सभी लोग पढ़े-लिखें। साथ ही कवि चंपा को समझाता है कि एक-न-एक दिन तुम्हारी शादी होगी और तुम्हारा पति रोजगार की तलाश में कलकत्ता (कोलकाता) जाएगा। उस समय अपना संदेश पत्र के माध्यम से उस तक पहुँचा सकोगी और पति के पत्र पढ़ सकेगी।

प्रश्न 6:

चंपा ने कवि को झूठा क्यों कहा?

उत्तर –

जब कवि ने उसके विवाह तथा पति के कलकत्ता जाने की बात कही तो वह भड़क उठी। उसने कहा कि तुम पढ़-लिखकर भी बहुत झूठे हो। पहले तो वह विवाह नहीं करेगी। दूसरे, यदि शादी हो भी गई तो वह अपने पति को साथ रखेगी। केवल पढ़ने के लिए इतनी बड़ी कहानी की जरूरत नहीं है। अत: उसने कवि को झूठा कहा।

प्रश्न 7:

गाँधी जी का प्रसंग किस संदर्भ में आया तथा क्यों?

उत्तर –

गाँधी जी का प्रसंग साक्षरता के सिलसिले में आया है। गाँधी जी की इच्छा थी कि सभी लोग पढ़ना-लिखना सीखें। गाँवों में गाँधी जी का अच्छा प्रभाव है। कवि इसी प्रभाव के जरिए चंपा को पढ़ने के लिए तैयार करना चहाता था। इस कारण गाँधी जी का प्रसंग आया।

कवि परिचय

- **जीवन परिचय-**दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के राजपुर नवादा गाँव में 1933 ई में हुआ। इनके बचपन का नाम दुष्यंत नारायण था। प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने एम. ए. किया तथा यहीं से इनका साहित्यिक जीवन आरंभ हुआ। वे वहाँ की साहित्यिक संस्था परिमल की गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे और नए पते जैसे महत्वपूर्ण पत्र के साथ भी जुड़े रहे। उन्होंने आकाशवाणी और मध्यप्रदेश के राजभाषा विभाग में काम किया। अल्पायु में इनका निधन 1975 ई. में हो गया।
- **रचनाएँ-**इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

  काव्य-सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप, जलते हुए वन का वसंत।

  गीति-नाट्य-एक कंठ विषपायी।

  उपन्यास-छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दोहरी जिंदगी।
- **साहित्यिक विशेषताएँ-**दुष्यंत कुमार की साहित्यिक उपलब्धियाँ अद्भुत हैं। इन्होंने हिंदी में गजल विधा को प्रतिष्ठित किया। इनके कई शेर साहित्यिक एवं राजनीतिक जमावड़ों में लोकोक्तियों की तरह दुहराए जाते हैं। साहित्यिक गुणवत्ता से समझौता न करते हुए भी इन्होंने लोकप्रियता के नए प्रतिमान कायम किए। गजल के बारे में वे लिखते हैं- "मैं स्वीकार करता हूँ कि गजल को किसी की भूमिका की जरूरत नहीं होती. मैं प्रतिबद्ध कवि हूँ. यह प्रतिबद्धता किसी पार्टी से नहीं, आज के मनुष्य से है और मैं जिस आदमी के लिए लिखता हूँ. यह भी चाहता हूँ कि वह आदमी उसे पढ़े और समझे।"

  इनकी गजलों में तत्सम शब्दों के साथ उर्दू के शब्दों का काफी प्रयोग किया है; जैसेमेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही।

  हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

  'एक कंठ विषपायी' शीर्षक गीतिनाट्य हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण व बहुप्रशंसित कृति है।

कविता का सारांश

'साये में धूप' गजल संग्रह से यह गजल ली गई है। गजल का कोई शीर्षक नहीं दिया जाता, अत: यहाँ भी उसे शीर्षक न देकर केवल गजल कह दिया गया है। गजल एक ऐसी विधा है जिसमें सभी शेर स्वयं में पूर्ण तथा स्वतंत्र होते हैं। उन्हें किसी क्रम-व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती। इसके बावजूद दो चीजें ऐसी हैं जो इन शेरों को आपस में गूँथकर एक रचना की शक्ल देती हैं-एक, रूप के स्तर पर तुक का निर्वाह और दो, अंतर्वस्तु के स्तर पर मिजाज का निर्वाह। इस गजल में पहले शेर की दोनों पंक्तियों का तुक मिलता है और उसके बाद सभी शेरों की दूसरी पंक्ति में उस तुक का निर्वाह होता है। इस गजल में राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करने और विकल्प की तलाश को मान्यता देने का भाव प्रमुख बिंदु है।

कवि राजनीतिज्ञों के झूठे वायदों पर व्यंग्य करता है कि वे हर घर में चिराग उपलब्ध कराने का वायदा करते हैं, परंतु यहाँ तो पूरे शहर में भी एक चिराग नहीं है। कवि को पेड़ों के साये में धूप लगती है अर्थात् आश्रयदाताओं के यहाँ भी कष्ट मिलते हैं। अत: वह हमेशा के लिए इन्हें छोड़कर जाना ठीक समझता है। वह उन लोगों के जिंदगी के सफर को आसान बताता है जो परिस्थिति के

अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं। मनुष्य को खुदा न मिले तो कोई बात नहीं, उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े समय के लिए ही सही. हसीन सपना तो देखने को मिलता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि पत्थर पिघल नहीं सकते। कवि आवाज के असर को देखने के लिए बेचैन है। शासक शायर की आवाज को दबाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि किसी दूसरे के आश्रय में रहने के स्थान पर अपने घर में जीना चाहता है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरखतों के साय में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चल और उम्र भर के लिए।

शब्दार्थ

तय-निश्चित। चिराग-दीपक। हरेक-प्रत्येक। मयस्सर-उपलब्ध। दरख्त-पेड़। साये-छाया। धूप-कष्ट, रोशनी। उम्रभर-जीवन भर।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित 'गजल' से उद्धृत हैं। यह गजल दुष्यंत कुमार द्वारा रचित है। यह उनके गजल संग्रह 'साये में धूप' से ली गई है। इस गजल का केंद्रीय भाव है-राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना। **व्याख्या**-कवि कहता है कि नेताओं ने घोषणा की थी कि देश के हर घर को चिराग अर्थात् सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाएँगे। आज स्थिति यह है कि शहरों में भी चिराग अर्थात् सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। नेताओं की घोषणाएँ कागजी हैं। दूसरे शेर में, कवि कहता है कि देश में अनेक संस्थाएँ हैं जो नागरिकों के कल्याण के लिए काम करती हैं। कवि उन्हें 'दरख्त' की संज्ञा देता है। इन दरख्तों के नीचे छाया मिलने की बजाय धूप मिलती है अर्थात् ये संस्थाएँ ही आम आदमी का शोषण करने लगी हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार फैला हुआ है। कवि इन सभी व्यवस्थाओं से दूर रहकर अपना जीवन बिताना चाहता है। ऐसे में आम व्यक्ति को निराशा होती है।

विशेष-

1. कवि ने आजाद भारत के कटु सत्य का वर्णन किया है। नेताओं के झूठे आश्वासन व संस्थाओं द्वारा आम आदमी के शोषण के उदाहरण आए दिन मिलते हैं।
2. चिराग, मयस्सर, दरखत, साये आदि उर्दू शब्दों के प्रयोग से भाव में गहनता आई है।
3. खड़ी बोली में प्रभावी अभिव्यक्ति है।
4. 'चिराग' व 'दरख्त' आशा व सुव्यवस्था के प्रतीक हैं।
5. अंतिम पंक्ति में निराशा व पलायनवाद की प्रवृत्ति दिखाई देती है।
6. लक्षणा शक्ति का निर्वाह है।
7. 'साये में धूप लगती है' में विरोधाभास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. आजादी के बाद क्या तय हुआ था?
2. आज की स्थिति के विषय में कवि क्या बताना चाहता है?

3. कवि के पलायनवादी बनने का कारण बताइए।
4. कवि ने किस व्यवस्था पर कटाक्ष किया है? इसका जनसामान्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर –

1. आजादी के बाद नेताओं ने जनता को यह आश्वासन दिया था कि हर घर में सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।
2. आज स्थिति बेहद निराशाजनक है। प्रत्येक घर की बात छोड़िए, पूरे शहर में कहीं भी जनसुविधाएँ नहीं हैं, लोगों का निर्वाह मुश्किल से होता है।
3. कवि कहता है कि प्रशासन की अनेक संस्थाएँ लोगों का कल्याण करने की बजाय उनका शोषण कर रही हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार फैला हुआ है। इस कारण वह इस भ्रष्ट-तंत्र से दूर जाना चाहता है।
4. कवि ने नेताओं की झूठी घोषणाओं तथा भ्रष्ट शासन पर करारा व्यंग्य किया है। झूठी घोषणाओं तथा भ्रष्टाचार के कारण आम व्यक्ति में घोर निराशा फैली हुई है।

2.

न हो कमीज़ तो पाँवों से पेट ढक लगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।
खुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही,
कोई हसीन नजारा तो हैं नजर के लिए।

शब्दार्थ

मुनासिब-अनुकूल, उपयुक्त। सफ़र-रास्ता। खुदा-भगवान। ख्वाब-सपना। हसीन-सुंदर। नजारा-दृश्य। नजर-देखना, आँख।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित 'गजल' से उद्धृत हैं। यह गजल दुष्यंत कुमार द्वारा रचित है। यह उनके गजल संग्रह 'साये में धूप' से ली गई है। इस गजल का केंद्रीय भाव है-राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना। **व्याख्या**-कवि आम व्यक्ति के विषय में बताता है कि ये लोग गरीबी व शोषित जीवन को जीने पर मजबूर हैं। यदि । इनके पास वस्त्र भी न हों तो ये पैरों को मोड़कर अपने पेट को ढँक लेंगे। उनमें विरोध करने का भाव समाप्त हो चुका है। ऐसे लोग ही शासकों के लिए उपयुक्त हैं, क्योंकि इनके कारण उनका राज शांति से चलता है। दूसरे शेर में, कवि कहता है कि संसार में भगवान नहीं है तो कोई बात नहीं। आम आदमी का वह सपना तो है। कहने का तात्पर्य है कि ईश्वर मानव की कल्पना तो है ही। इस कल्पना के जरिये उसे आकर्षक दृश्य देखने के लिए मिल जाते हैं। इस तरह उनका जीवन कट जाता है।

विशेष-

1. कवि ने भारतीयों में विरोध-भावना का न होना तथा खुदा को कल्पना माना है।
2. 'पाँवों से पेट ढँकना' नयी कल्पना है।
3. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली है।
4. 'सफ़र' जीवन यात्रा का पर्याय है।
5. संगीतात्मकता है।

6. ‘सफ़र’ जीवन यात्रा का पर्याय है।
7. संगीतात्मकता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. पाँवों से पेट ढंकने का अर्थ स्पष्ट करें।
2. पहले शेर के अनुसार सरकार किनसे खुश रहती है और क्यों?
3. खुदा के बारे में कवि क्या व्यंग्य करता है? इसका आम आदमी के जीवन पर क्या असर होता है?
4. भारतीयों का भगवान के साथ कैसा संबंध होता है?

उत्तर –

1. इसका अर्थ यह है कि गरीबी व शोषण के कारण लोगों में विरोध करने की क्षमता समाप्त हो चुकी है। वे न्यूनतम वस्तुएँ उपलब्ध न होने पर भी अपना गुजारा कर लेते हैं।
2. सरकार ऐसे लोगों से खुश रहती है जो उसके कार्यों का विरोध न करें। ऐसे लोगों के कारण ही सरकार निरंकुश हो मनमाने फैसले लेती है जिसमें उसकी भलाई तथा जनता का शोषण निहित रहता है।
3. खुदा के बारे में कवि व्यंग्य करता है कि खुदा का अस्तित्व नहीं है। यह मात्र कल्पना है, आम आदमी ईश्वर के बारे में लुभावनी कल्पना करता है, इसी कल्पना के सहारे उसका जीवन कट जाता है।
4. भारतीय लोग ईश्वर के अस्तित्व में पूरा विश्वास नहीं रखते, परंतु इसके बहाने उन्हें सुंदर दृश्य देखने को मिलते हैं। इनकी कल्पना करके वे अपना जीवन जीते हैं।

3.

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बकरार हूँ आवाज में असर के लिए।
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी हैं इस बहर के लिए।
जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

शब्दार्थ

मुतमइन-आश्वस्त। बेकरार-बेचैन। आवाज़-वाणी। असर-प्रभाव। निजाम-शासक। सिलदे-बंद कर देना। जुबान-आवाज। शायर-कवि। एहतियात-सावधानी। बहर-शेर का छद। गुलमोहर-एक प्रकार के फूलदार पेड़ का नाम। गैर-अन्य। गलियों-रास्ते।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित ‘गज़ल’ से उद्धृत हैं। यह गजल दुष्यंत कुमार द्वारा रचित है। यह उनके गजल संग्रह ‘साये में धूप’ से ली गई है। इस गजल का केंद्रीय भाव है-राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना।

व्याख्या-पहले शेर में कवि आम व्यक्ति के विश्वास की बात बताता है। आम व्यक्ति को विश्वास है कि भ्रष्ट व्यक्तियों के दिल पत्थर के होते हैं। उनमें संवेदना नहीं होती । कवि को इसके विपरीत

इंतजार है कि इन आम आदमियों के स्वर में असर (क्रांति की चिनगारी) हो। इनकी आवाज बुलंद हो तथा आम व्यक्ति संगठित होकर विरोध करें तो भ्रष्ट व्यक्ति समाप्त हो सकते हैं। दूसरे शेर में, कवि शायरों और शासक के संबंधों के बारे में बताता है। शायर सत्ता के खिलाफ लोगों को जागरूक करता है। इससे सत्ता को क्रांति का खतरा लगता है। वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे गजल के छद के लिए बंधन की सावधानी जरूरी है, उसी तरह शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए विरोध को दबाना जरूरी है। तीसरे शेर में, शायर कहता है कि जब तक हम अपने बगीचे में जिएँ, गुलमोहर के नीचे जिएँ और जब मृत्यु हो तो दूसरों की गलियों में गुलमोहर के लिए मरें। दूसरे शब्दों में, मनुष्य जब तक जिएँ, वह मानवीय मूल्यों को मानते हुए शांति से जिएँ। दूसरों के लिए भी इन्हीं मूल्यों की रक्षा करते हुए बाहर की गलियों में मरें।

विशेष-

1. कवि सामाजिक क्रांति के लिए बेताब है, साथ ही वह मानवीय मूल्यों का संस्थापक एवं रक्षक भी है।
2. 'पत्थर पिघल नहीं सकता' से स्वेच्छाचारी शासकों की ताकत का पता चलता है।
3. 'पत्थर पिघल' में अनुप्रास अलंकार है।
4. 'गुलमोहर' का प्रतीकात्मक अर्थ है।
5. उर्दू शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
6. 'मैं' और 'तू की शैली प्रभावी है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'वे' कौन हैं तथा उनकी सोच क्या है?
2. कवि किसके लिए बेकरार है?
3. शासक किस कोशिश में रहता है?
4. शायर की हसरत क्या है?

उत्तर –

1. 'वे' आम व्यक्ति हैं। उनकी सोच है कि भ्रष्ट शासकों के कारण समस्याएँ कभी नहीं समाप्त होंगी।
2. कवि का मानना है कि आवाज में प्रभाव हो तो पत्थर भी पिघल जाते हैं। वह क्रांति का समर्थक है।
3. शासक इस कोशिश में रहते हैं कि उनके खिलाफ विद्रोह की आवाज को दबा दिया जाए।
4. शायर की हसरत है कि वह बगीचे में सदैव गुलमोहर के नीचे रहे तथा मरते समय गुलमोहर के लिए दूसरों की गलियों में मरे अर्थात् वह मानवीय मूल्यों को अपनाए रखे तथा उनकी रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दे।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

यहाँ दरखतों के साय में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चल और उम्र भर के लिए।

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौंदर्य पर प्रकाश डालें।

उत्तर –

1. कवि ने राजनेताओं की झूठी घोषणाओं व सरकारी संस्थाओं के भ्रष्ट तंत्र पर व्यंग्य किया है। वह आजादी के बाद के भारत में आम व्यक्ति की निराशा को व्यक्त करता है।
2. प्रतीकों का सुंदर प्रयोग है। 'चिराग' व 'दरख्त' क्रमश: आशा व सुव्यवस्था के प्रतीक हैं।
   - 'चिराग', मयस्सर, दरख्त, साये, उम्र, आदि उर्दू शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
   - भाषा में प्रवाह है।
   - 'साये में धूप' विरोधाभास अलंकार है।
   - शांत रस है।
   - संगीतात्मकता विद्यमान है।

2.

न हो कमीज़ तो पाँवों से पेट ढक लगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।

प्रश्न

1. गजल क्या है?
2. शिल्प–सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर –

1. गजल वह विधा है जिसमें सभी शेर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। इसका शीर्षक नहीं होता। हर शेर अपने आप में पूर्ण होता है।
2. शोषित वर्ग की पीड़ा को व्यक्त किया है।
   - 'पाँवों से पेट ढँकना' की कल्पना अनूठी व नयी है।
   - 'मुनासिब', 'सफ़र' आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग है।
   - खड़ी बोली में सजीव अभिव्यक्ति है।
   - 'सफ़र' जीवन यात्रा का प्रतीक है।
   - संगीतात्मकता है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

गजल के साथ

प्रश्न 1:

आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है। समझाकर लिखें।

उत्तर –

अंतिम शेर में गुलमोहर का शाब्दिक अर्थ तो एक खास फूलदार वृक्ष से ही है, पर सांकेतिक अर्थ

बड़ा मार्मिक है। इस शेर में कवि दुष्यंत कुमारे यह बताना चाहते हैं कि जीवन वही उत्तम है जो अपने घर की सुखद छाया में है और मरना वह उत्तम है कि दूसरों को सुख देने के लिए मरा जा सके।

प्रश्न 2:

पहले शेर में 'चिराग' शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तर –

पहले शेर में 'चिराग' शब्द का बहुवचन, 'चिरागाँ' का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ था-बहुत-सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाना, दूसरी बार यह एकवचन में प्रयुक्त हुआ है। इसमें इसका अर्थ है-सीमित सुविधाएँ मिलना। दोनों का अपना महत्व है। बहुवचन के रूप में यह कल्पना को बताता है, जबकि दूसरा रूप यथार्थ को दर्शाता है। कवि ने एक ही शब्द का प्रतीकात्मक व लाक्षणिक शब्द करके अपनी अद्भुत कल्पना क्षमता का परिचय दिया है।

प्रश्न 3:

गजल के तीसरे शेर को गौर से पढ़ें। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर –

न हो कमीज़ तो पावों से पेट बँक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।

यहाँ उन लोगों की ओर इशारा किया गया है जो हीनता और तंगहाली अथवा अभाव के समय तन ढकने के लिए कमीज़ पाने का प्रयास नहीं करते वरन् उस अभावग्रस्त दशा में अपने पैरों से पेट ढककर जीवन जी लेते हैं। उनके लिए मुनासिब शब्द का प्रयोग करता हुआ कवि यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि जीवन की यह शैली अपनानेवाले ही आज जी सकते हैं।

प्रश्न 4:

आशय स्पष्ट करें:

तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर –

इसमें कवि शायरों और शासक के संबंधों के बारे में बताता है। शायर सत्ता के खिलाफ लोगों को जागरूक करता है। इससे सत्ता को क्रांति का खतरा लगता है। वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे गजल के छद के लिए बंधन की सावधानी जरूरी है, उसी तरह शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए विरोध को दबाना जरूरी है।

गजल के आस-पास

प्रश्न 1:

दुष्यंत की इस गजल का मिजाज बदलाव के पक्ष में है। इस कथन पर विचार करें।

उत्तर –

गज़ल को बार-बार पढ़कर सहपाठियों के साथ विचार करें, परस्पर चर्चा करें कि दुष्यंत किस बात से खिन्न हैं और व्यवस्था में बदलाव क्यों चाहते हैं? उपर्युक्त प्रश्न परिचर्चा के आयोजन के लिए है।

प्रश्न 2:

'हमको मालूम है जनत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखने को गालिब ये खयाल अच्छा है"

दुष्यंत की गजल का चौथा शेर पढ़ें और बताएँ कि गालिब के उपर्युक्त शेर से वह किस तरह जुड़ता है?

उत्तर –

दुष्यंत की गजल पर चौथा शेर है-
खुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही,
कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिए।

गालिब के शेर से यह शेर पूरी तरह प्रभावित है। दोनों का अर्थ एक जैसा है। गालिब 'जन्नत' को तथा दुष्यंत खुदा को मानव की कल्पना मानते हैं। दोनों इनके अस्तित्व को मन संतुष्ट रखने का कारण मानते हैं।

प्रश्न 3:

'यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है' यह वाक्य मुहावरे की तरह अलग-अलग परिस्थितियों में अर्थ दे सकता है मसलन, यह ऐसी अदालतों पर लागू होता है, जहाँ इंसाफ नहीं मिल पाता। कुछ ऐसी परिस्थितियों की कल्पना करते हुए निम्नांकित अधूरे वाक्यों को पूरा करें-

(क) यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है, ...

(ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है,.............

(ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, ...

(घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है, ...

उत्तर –

(क) यह ऐसे नाते-रिश्तेदारों पर लागू होता है जो प्यार नहीं करते।

(ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है, जहाँ पढ़ाई नहीं होती।

(ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, जहाँ इलाज नहीं होता।

(घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है, जहाँ सुरक्षा नहीं मिलती।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'गजल' का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर –

'गजल" नामक इस विधा में कवि राजनीतिज्ञों के झूठे वायदों पर व्यंग्य करता है कि वे हर घर में चिराग उपलब्ध कराने का वायदा करते हैं, परंतु यहाँ तो शहर में ही चिराग नहीं है। कवि को पेड़ों

के साये में धूप लगती है अर्थात् आश्रयदाताओं के यहाँ भी कष्ट मिलते हैं। अत: वह हमेशा के लिए इन्हें छोड़कर जाना ठीक समझता है। वह उन लोगों के जिंदगी के सफर को आसान बताता है जो परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं। मनुष्य को खुदा न मिले तो कोई बात नहीं, उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े समय के लिए ही सही, हसीन सपना तो देखने को मिलता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि पत्थर पिघल नहीं सकते। कवि आवाज़ के असर को देखने के लिए बेचैन है। शासक शायर की आवाज को दबाने की कोशिश करता है; क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि किसी दूसरे के आश्रय में रहने के स्थान पर अपने घर में जीना चाहता है।

प्रश्न 2:

कवि के असंतोष के कारण बताइए।

उत्तर –

कवि के असंतोष के निम्नलिखित कारण हैं-

(क) जनसुविधाओं की भारी कमी।

(ख) लोगों में प्रतिरोधक क्षमता समाप्त होना।

(ग) ईश्वर के बारे में आकर्षक कल्पना करना तथा उसी के सहारे जीवन बिता देना।

प्रश्न 3:

‘दरख्तों का साया’ और ‘धूप’ का क्या प्रतीकार्थ है?

उत्तर –

‘दरख्तों का साया’ का अर्थ है-जनकल्याण की संस्थाएँ। ‘धूप’ का अर्थ है-कष्ट। कवि कहना चाहता है कि भारत में संस्थाएँ लोगों को सुख देने की बजाय कष्ट देने लगी हैं। वे भ्रष्टाचार का अड्डा बन गई हैं।

प्रश्न 4:

‘सिल दे जुबान शायर की’ पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर –

कवि का आशय यह है कि कुशासन के विरोध में जब शायर विरोध करता है तो उसे कुचल दिया जाता है। उसकी रचनाओं पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। सत्ता अपने खिलाफ विद्रोह का स्वर नहीं सुनना चाहती।

कवयित्री परिचय

- जीवन परिचय-इतिहास में शैव आदोलन से जुड़े कवियों और रचनाकारों की लंबी सूची है। अक्क महादेवी इस आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थीं। इनका जन्म कर्नाटक के उडुतरी गाँव जिला-शिवमोगा में 12वीं सदी में हुआ। इनके आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन देव अर्थात् शिव थे। इनके समकालीन कन्नड़ संत कवि बसवन्ना और अल्लामा प्रभु थे। कन्नड़ भाषा में अक्क शब्द का अर्थ बहिन होता है। अक्क महादेवी अपूर्व सुंदरी थीं। वहाँ का राजा इनके अद्भुत अलौकिक सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो गया तथा इनसे विवाह हेतु इनके परिवार पर दबाव डाला।

  अक्क महादेवी ने विवाह के लिए राजा के सामने तीन शतें रखीं। विवाह के बाद राजा ने उन शतों का पालन नहीं किया, इसलिए महादेवी ने उसी क्षण राज-परिवार को छोड़ दिया। अक्क ने इसके बाद जो किया, वह भारतीय नारी के इतिहास की एक विलक्षण घटना बन गई। इससे उनके विद्रोही चरित्र का पता चलता है। अक्क ने सिर्फ राजमहल नहीं छोड़ा, वहाँ से निकलते समय पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध अपने आक्रोश की अभिव्यक्ति के रूप में अपने वस्त्रों को भी उतार फेंका।

  वस्त्रों का उतार फेंकना केवल वस्त्रों का त्याग नहीं, बल्कि एकांगी मर्यादाओं और केवल स्त्रियों के लिए निर्मित नियमों का तीखा विरोध था। स्त्री केवल शरीर नहीं है, इसके गहरे बोध के साथ महावीर आदि महापुरुषों के समक्ष खड़े होने का प्रयास था। इस दृष्टि से देखें तो मीरा की पंक्ति तन की आस कबहू नहीं कीनी ज्यों रणमाँही सूरो अक्क पर पूर्णत: चरितार्थ होती है। अक्क के कारण शैव आदोलन से बड़ी संख्या में स्त्रियाँ जुड़ीं जिनमें अधिकतर निचले तबकों से थीं और अपने संघर्ष व यातना की कविता के रूप में अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार अक्कमहादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज हैं और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अजस्व प्रेरणास्रोत भी।
- प्रमुख रचनाएँ-इनकी रचना हिंदी में वचन-सौरभ के नाम से तथा अंग्रेजी में स्पीकिंग ऑफ शिवा (सं. -ए. के. रामानुजन) है।

पाठ का सारांश

यहाँ इनके दो वचन पाठ्यक्रम में लिए गए हैं। दोनों वचनों का अंग्रेजी से अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है। प्रथम वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम-भरा मनुहार है। वे चाहती हैं कि मनुष्य को अपनी भूख, प्यास, नींद आदि वृत्तियों व क्रोध, मोह, लोभ, अह, ईष्र्या आदि भावों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। वह लोगों को समझाती हैं कि इंद्रियों को वश में करने से ही शिव की प्राप्ति संभव है। दूसरा वचन एक भक्त का ईश्वर के प्रति समर्पण है।

चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्क महादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए। वह ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं, वह कामना करती हैं कि ईश्वर उससे ऐसे काम करवाए जिनसे उसका अहंकार समाप्त हो जाए। वह उससे भीख मैंगवाए, भले ही उसे भीख न मिले। वह उससे घर की मोह-माया छुड़वा दे। जब कोई उसे कुछ देना चाहे तो वह गिर जाए और उसे कोई कुत्ता छीनकर ले जाए। कवयित्री का एकमात्र लक्ष्य अपने परमात्मा की प्राप्ति है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

हो भूख ! मत मचल
प्यास, तड़प मत हे
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
मद ! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
अ◌ो चराचर ! मत चूक अवसर
आई हूँ सदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

शब्दार्थ

मचल-पाने की जिद। तड़प-छटपटाना। पाश-बंधन। ढील-ढीला करना। मद-नशा। मदहोश-नशे में उन्मत या होश खो बैठना। चराचर-जड़ व चेतन। चूक-छोड़ना, भूलना। चन्नमल्लिकार्जुन-शिव।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित 'वचन' से उद्धृत है। जो शैव आंदोलन से जुड़ी कर्नाटक की प्रसिद्ध कवयित्री अक्क महादेवी द्वारा रचित है। वे शिव की अनन्य भक्त थीं। इस पद में कवयित्री इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश देती है।

व्याख्या-इसमें अक्क महादेवी इंद्रियों से आग्रह करती हैं। वे भूख से कहती हैं कि तू मचलकर मुझे मत सता। सांसारिक प्यास को कहती हैं कि तू मन में और पाने की इच्छा मत जगा। हे नींद ! तू मानव को सताना छोड़ दे, क्योंकि नींद से उत्पन्न आलस्य के कारण वह प्रभु-भक्ति को भूल जाता है। हे क्रोध! तू उथल-पुथल मत मचा, क्योंकि तेरे कारण मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है। वह मोह को कहती हैं कि वह अपने बंधन ढीले कर दे। तेरे कारण मनुष्य दूसरे का अहित करने की सोचता है। हे लोभ! तू मानव को ललचाना छोड़ दे। हे अहंकार! तू मनुष्य को अधिक पागल न बना। ईर्ष्य मनुष्य को जलाना छोड़ दे। वे सृष्टि के जड़-चेतन जगत् को संबोधित करते हुए कहती हैं कि तुम्हारे पास शिव-भक्ति का जो अवसर है, उससे चूकना मत, क्योंकि मैं शिव का संदेश लेकर तुम्हारे पास आई हैं। चराचर को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

विशेष-

1. प्रभु-भक्ति के लिए इंद्रिय व भाव नियंत्रण पर बल दिया गया है।
2. सभी भावों व वृत्तियों को मानवीय पात्रों के समान प्रस्तुत किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।
3. अनुप्रास अलंकार की छटा है।
4. संबोधन शैली है।
5. शांत रस का परिपाक है।
6. खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवयित्री ने किन-किन को संबोधित किया है?

2. कवयित्री क्या प्रार्थना करती है तथा क्यों?
3. कवयित्री चराचर जगत् को क्या प्रेरणा देती है?
4. कवयित्री किसकी भक्त है? अपने आराध्य को प्राप्त करने का उसने क्या उपाय बताया है?

उत्तर –

1. कवयित्री ने भूख, प्यास, नींद, मोह, ईष्या, मद और चराचर को संबोधित किया है।
2. कवयित्री इंद्रियों व भावों से प्रार्थना करती है कि वे उसे सांसारिक कष्ट न दें, क्योंकि इससे उसकी भक्ति बाधित होती है।
3. कवयित्री चराचर जगत् को प्रेरणा देती है कि वे इस अवसर को न चूकें तथा सांसारिक मोह को छोड़कर प्रभु की भक्ति करें। वह भगवान शिव का संदेश लेकर आई है।
4. कवयित्री चन्नमल्लिकार्जुन अर्थात् शिव की भक्त है। उसने आराध्य को प्राप्त करने का यह उपाय बताया है कि मनुष्य की अपनी इंद्रियों को वश में करने से आराध्य (शिव) की प्राप्ति की जा सकती है।

2.

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर
मँगवाओ मुझसे भीख
और कुछ ऐसा करो
कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह
झोली फैलाऊँ और न मिले भीख
कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को
तो वह गिर जाए नीचे
और यदि मैं झूकूं उसे उठाने
तो कोई कुत्ता आ जाए
और उसे झपटकर छीन ले मुझसे।

शब्दार्थ

जूही-एक सुगधित फूल। भीख-भिक्षा। हाथ बढ़ाना-सहायता करना। झपटकर-खींचकर।

प्रसंग-प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित ‘वचन’ से उद्धृत है। जो शैव आदोलन से जुड़ी कर्नाटक की प्रसिद्ध कवयित्री अक्क महादेवी द्वारा रचित है। वे शिव की अनन्य भक्त थीं। इस पद में कवयित्री ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त करती है। वह अपने अहंकार को नष्ट करके ईश्वर में समा जाना चाहती है।

व्याख्या-कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती है कि हे जूही के फूल को समान कोमल व परोपकारी ईश्वर! आप मुझसे ऐसे-ऐसे कार्य करवाइए जिससे मेरा अह भाव नष्ट हो जाए। आप ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कीजिए जिससे मुझे भीख माँगनी पड़े। मेरे पास कोई साधन न रहे। आप ऐसा कुछ कीजिए कि मैं पारिवारिक मोह से दूर हो जाऊँ। घर का मोह सांसारिक चक्र में उलझने का सबसे बड़ा कारण है। घर के भूलने पर ईश्वर का घर ही लक्ष्य बन जाता है। वह आगे कहती है कि जब वह भीख माँगने के लिए झोली फैलाए तो उसे कोई भीख नहीं दे। ईश्वर ऐसा कुछ करे कि उसे भीख भी नहीं मिले। यदि कोई उसे कुछ देने के लिए हाथ बढ़ाए तो वह नीचे गिर जाए। इस प्रकार वह सहायता भी व्यर्थ हो जाए। उस गिरे हुए पदार्थ को वह उठाने के लिए झुके तो कोई कुत्ता

उससे झपटकर छीनकर ले जाए। कवयित्री त्याग की पराकाष्ठा को प्राप्त करना चाहती है। वह मान-अपमान के दायरे से बाहर निकलकर ईश्वर में विलीन होना चाहती है।

विशेष-

1. ईश्वर के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त किया गया है।
2. जूही के फूल जैसे ईश्वर' में उपमा अलंकार है।
3. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।
4. सहज एवं सरल भाषा है।
5. 'घर' सांसारिक मोह-माया का प्रतीक है।
6. 'कुत्ता' सांसारिक जीवन का परिचायक है।
7. संवादात्मक शैली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवयित्री आराध्य से क्या प्रार्थना करती है?
2. 'अपने घर भूलने' से क्या आशय है?
3. पहले भीख और फिर भोजन न मिलने की कामना क्यों की गई है?
4. ईश्वर को जूही के फूल की उपमा क्यों दी गई है?

उत्तर –

1. कवयित्री आराध्य से प्रार्थना करती है कि वह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे जिससे संसार से उसका लगाव समाप्त हो जाए।
2. 'अपना घर भूलने' से आशय है-गृहस्थी के सांसारिक झंझटों को भूलना, जिसे संसार को लोग सच मानने लगते हैं।
3. भीख तभी माँगी जा सकती है जब मनुष्य अपने अहभाव को नष्ट कर देता है और भोजन न मिलने पर मनुष्य वैराग्य की तरफ जाता है। इसलिए कवयित्री ने पहले भीख और फिर भोजन न मिलने की कामना की है।
4. ईश्वर को जूही के फूल की उपमा इसलिए दी गई है कि ईश्वर भी जूही के फूल के समान लोगों को आनंद देता है, उनका कल्याण करता है।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

हो भूख ! मत मचल
प्यास, तड़प मत हे
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
मद ! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत

अो चराचर ! मत चूक अवसर
आई हूँ सदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

प्रश्न

1. इस पद का भाव स्पष्ट करें।
2. शिल्प व भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

1. इस पद में, कवयित्री ने इंद्रियों व भावों पर नियंत्रण रखकर ईश्वर-भक्ति में लीन होने की प्रेरणा दी है। मनुष्य को भूख, प्यास, नींद, क्रोध, मोह, लोभ, ईष्या, अहंकार आदि प्रवृत्तियाँ सांसारिक चक्र में उलझा देती हैं। इस कारण वह ईश्वर-भक्ति के मार्ग को भूल जाता है।
2. यह पद कन्नड़ भाषा में रचा गया है। इसका यहाँ अनुवाद है। इस पद में संबोधन शैली का प्रयोग किया है। इंद्रियों व भावों को मानवीय तरीके से संबोधित किया गया है। अत: मानवीकरण अलंकार है। 'मत मचल' 'मचा मत' में अनुप्रास अलंकार है। प्रसाद गुण है। शैली में उपदेशात्मकता है। खड़ी बोली के माध्यम से सहज अभिव्यक्ति है।

2.

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर
मँगवाओ मुझसे भीख
और कुछ ऐसा करो
कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह
झोली फैलाऊँ और न मिले भीख
कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को
तो वह गिर जाए नीचे
और यदि मैं झूकूं उसे उठाने
तो कोई कुत्ता आ जाए
और उसे झपटकर छीन ले मुझसे।

प्रश्न

1. इस पद का भाव स्पष्ट करें।
2. शिल्प–सौदंर्य बताइए।

उत्तर –

1. इस वचन में, कवयित्री ने अपने आराध्य के प्रति पूर्णत: समर्पित भाव को व्यक्त किया है। वह अपने आराध्य के लिए तमाम भौतिक साधनों को त्यागना चाहती है वह अपने अहकार को खत्म करके ईश्वर की प्राप्ति करना चाहती है। कवयित्री निस्पृह जीवन जीने की कामना रखती है।
2. कवयित्री ने ईश्वर की तुलना जूही के फूल से की है। अत: उपमा अलंकार है। 'मैंगवाओ मुझसे' व 'कोई कुत्ता' में अनुप्रास अलंकार है। 'अपना घर' यहाँ अह भाव का परिचायक है। सुंदर बिंब योजना है, जैसे भीख न मिलने, झोली फैलाने, भीख नीचे गिरने, कुत्ते द्वारा झपटना आदि। खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है। संवादात्मक शैली है। शांत रस का परिपाक है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

'लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं'-इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर –

ज्ञानेंद्रियाँ मानव शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग हैं जो अनुभव का साधन हैं। लक्ष्य प्राप्ति की जहाँ तक बात है, यदि वह ईश्वर प्राप्ति है तो वह एक ऐसी साधना के समान है जिसमें इंद्रियाँ बाधक हैं। इस समय भूख, प्यास, लालसा, कामना, प्रेम आदि का अनुभव हमें लक्ष्य से भटका देता है। इन सबका अनुभव इंद्रियाँ करवाती हैं। अतः वे ही बाधक हैं।

प्रश्न 2:

'ओ चराचर! मत चूक अवसर'- इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

इस पंक्ति में अक्क महादेवी का कहना है कि प्राणियों ने जो जीवन प्राप्त किया है, उसे यदि वे शिव की भक्ति में लगाएँ तो उनका कल्याण हो जाएगा। समय बीत जाने के बाद कुछ नहीं मिलता। जीव इंद्रियों के वश में होकर सांसारिक मोह-माया में उलझा रहता है। वह इन चक्करों में उलझा रहा तो ईश्वर-प्राप्ति का अवसर चूक जाएगा।

प्रश्न 3:

ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है? ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर –

अक्क महादेवी दूसरे वचन में ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं। इन दोनों में साम्य का आधार यह है कि जिस प्रकार जूही का फूल श्वेत,सात्विक, कोमल और सुगंधयुक्त है, उसी प्रकार ईश्वर भी समस्त विश्व में सबसे सात्विक, कोमल हृदय हैं। जिस प्रकार जूही का पुष्प अपनी सुगंध बिखेरने में भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी कृपा सब पर समान रूप से बरसाते हैं।

प्रश्न 4:

अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर –

'अपना घर' से तात्पर्य है-मोहमाया से युक्त जीवन। व्यक्ति इस घर में सभी से लगाव महसूस करता है। वह इसे बनाने व बचाने के लिए निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। कवयित्री इसे भूलने की बात कहती है, क्योंकि घर की मोह-ममता को छोड़े बिना ईश्वर-भक्ति नहीं की जा सकती। घर का मोह छूटने के बाद हर संबंध समाप्त हो जाता है और मनुष्य एकाग्रचित होकर भगवान में ध्यान लगा सकता है।

प्रश्न 5:

दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों?

उत्तर –

दूसरे वचन में अक्कमहादेवी ईश्वर से कहती हैं कि मुझसे भीख मँगवाओ; मेरी यह दशा कर दो कि

भीख में मिला भी गिर जाए और कुत्ता उसे झपट कर खा जाए। यह सब कामना करने के पीछे कवयित्री की स्वयं के अहंकार को शून्य बनाने की बात छिपी है। संसार द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत व्यवहार से हम ईश्वर की अनन्य भक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

कविता के आसपास

प्रश्न 1:

क्या अक्क महादेवी को कन्नड़ की मीरा कहा जा सकता है? चर्चा करें।

उत्तर –

मीराबाई ने भक्ति में लीन होकर घर-परिवार और सांसारिक मोह त्याग दिया था, ठीक ऐसा ही व्यवहार अक्कमहादेवी ने भी किया था। इस दृष्टि से देखें तो मीरा की पंक्ति 'तन की आस कबहू नहीं कीनी ज्यों रणमाँही सूरो' अक्कमहादेवी पर पूर्णतः चरितार्थ होती है। पुस्तकालय से दोनों कवयित्रियों का साहित्य लें, तुलनात्मक पद एवं वचन पढ़कर कक्षा में चर्चा का आयोजन करें।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

पहले वचन का प्रतिपादय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

प्रथम वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम-भरा मनुहार है। वे चाहती हैं कि मनुष्य को अपनी भूख, प्यास, नींद आदि वृत्तियों व क्रोध, मोह, लोभ, अह, ईष्या आदि भावों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। वे लोगों को समझाती हैं कि इंद्रियों को वश में करने से शिव की प्राप्ति संभव है।

प्रश्न 2:

दूसरे वचन का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

दूसरा वचन एक भक्त का ईश्वर के प्रति समर्पण है। चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्कमहादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए। वह ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं, वह कामना करती हैं कि ईश्वर उससे ऐसे काम करवाए जिनसे उसका अहकार समाप्त हो जाए। वह उससे भीख मैंगवाए, भले ही उसे भीख न मिले। वह उससे घर की मोह-माया छुड़वा दे। जब कोई उसे कुछ देना चाहे तो वह गिर जाए और उसे कोई कुत्ता छीनकर ले जाए। कवयित्री का एकमात्र लक्ष्य अपने परमात्मा की प्राप्ति है।

प्रश्न 3:

कवयित्री मनोविकारों को क्यों दुकारती है?

उत्तर –

कवयित्री का मानना है कि मनोविकार मनुष्य को सांसारिक मोह-माया में लिप्त रखते हैं। मोह से व्यक्ति वस्तु संग्रह करता है। क्रोध में वह विवेक खोकर हानि पहुँचाता है। लोभ मनुष्य से गलत

कार्य करवाता है। अहंकार मानव को मदहोश कर देता है तथा वह स्वयं को महान समझने लगता है। ये सभी मनुष्य को ईश्वरीय भक्ति से दूर ले जाते हैं। इसी कारण मनुष्य का कल्याण नहीं होता।

प्रश्न 4:

कवयित्री शिव का क्या संदेश लेकर आई है?

उत्तर –

कवयित्री शिव की अनन्य भक्त है। वह संसार में शिव का संदेश प्रचारित करना चाहती है कि ईशभक्ति में ही प्राणी की मुक्ति है। शिव करुणामयी हैं तथा संसार का कल्याण करने वाले हैं। जो प्राणी सच्चे मन से उनकी भक्ति करता है, वे उसे मुक्ति प्रदान करते हैं। प्राणी को जीतन में ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता। अत: उसे इस अवसर को छोड़ाना नहीं चाहिए।

प्रश्न 5:

अक्क महादेवी ईश्वर से भीख मैंगवाने की प्रार्थना क्यों करती है?

उत्तर –

अक्कमहादेवी का मानना है कि व्यक्ति तभी भीख माँगता है जब उसका अहभाव समाप्त हो जाता है। वह निर्विकार हो जाता है। ऐसी दशा में ही ईश्वर भक्ति की जा सकती है। व्यक्ति निस्पृह होकर लोककल्याण की सोचने लगता है।

कवि परिचय

- **जीवन परिचय-**कवि पाश का मूल नाम अवतार सिंह संधू है। इनका जन्म 1950 ई. में पंजाब राज्य के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव में हुआ। इनका संबंध मध्यवर्गीय किसान परिवार से था। इस कारण इनकी स्नातक तक की शिक्षा अनियमित तरीके से हुई। इन्होंने जनचेतना फैलाने के लिए अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और सिआड़, हेमज्योति, हॉक, एंटी-47 जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। ये कुछ समय तक अमेरिका में रहे। इनकी मृत्यु 1988 ई. में हुई।
- **रचनाएँ-**इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

  लौह कथा, उड़दें बाजां मगर, साडै। समिया बिच, लड़ेंगे साथी (पंजाबी); बीच का रास्ता नहीं होता, लहू है कि तब भी गाता है (हिंदी अनुवाद)।
- **साहित्यिक परिचय-**पाश समकालीन पंजाबी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। ये जन आंदोलनों से जुड़े रहे और विद्रोही कविता का नया सौंदर्य विधान विकसित कर उसे तीखा, किंतु सृजनात्मक तेवर दिया। इनकी कविताएँ विचार और भाव के सुंदर संयोजन से बनी गहरी राजनीतिक कविताएँ हैं, जिनमें लोक संस्कृति और परंपरा का गहरा बोध मिलता है। वे जनसामान्य की घटनाओं पर 'आउटसाइडर' की तरह प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते, बल्कि इनकी कविताओं में वह व्यथा, निराशा और गुस्सा नजर आता है जो गहरी संपृक्तता के बगैर संभव ही नहीं है।

कविता का सारांश

यह कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह दिनोदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही दुनिया की विदूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है, जहाँ प्रतिकूलताओं से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथरायी आँखों-सी तटस्थता से कवि की असहमति है। कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है जहाँ आत्म के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

कवि का मानना है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी खतरनाक स्थितियाँ तो हैं, परंतु अन्य बातों से कम खतरनाक हैं। बिना कारण पकड़े जाना, कपट के वातावरण में सच्ची बात गुम होना या विवशतावश समय गुजार लेना या गरीबी में दिन काटना आदि बुरी दशाएँ हैं, परंतु खतरनाक नहीं। कवि कहता है कि सबसे खतरनाक वह है जब व्यक्ति में मुर्दों जैसी शांति भर जाती है। ऐसी स्थिढ़ि में व्यक्ति की विरोध-शक्ति समाप्त हो जाती है। व्यक्ति बँधे-बँधाए ढरे पर चलता है तो उसके सपने समाप्त हो जाते हैं। समय की गति रुकना भी खतरनाक दशा है, क्योंकि व्यक्ति समय के अनुसार बदल नहीं पाता।

मनुष्य की संवेदनशून्यता भी खतरनाक है। अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना समाप्त होना भी गलत है। गीत भी जब मरसिए पढ़कर सुनाने लगे और आतंकित व्यक्तियों के दरवाजों पर अकड़ दिखाए तो वह भी खतरनाक होता है। उल्लू व गीदड़ों की आवाज युक्त रात भी खतरनाक है। कवि कहता है कि जब मनुष्य आत्मा की आवाज को अनसुना कर देता है तो वह संवेदनशून्य हो जाता है। मेहनत का लुटना, पुलिस की मार, गद्दारी व लोभ की दशा अधिक खतरनाक नहीं है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती
बैठे-बिठाए पकड़ जाना-बुरा तो है
सहमी-सी चुप में जकड़ जाना-बुरा तो है
पर सबसे खतरनाक नहीं होता
कपट के शर में
सही होते हुए भी दब जाना-बुरा तो है
किसी जुगनू की लौ में पढ़ना-बुरा तो है
मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना-बुरा तो है
सबसे खतरनाक नहीं होता

शब्दार्थ

गद्दारी-देश के शासन के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचाने का भाव। लोभ-लालच। सहमी-डरी। जकड़े जाना-पकड़े जाना। कपट-छल। लौ-रोशनी। मुट्ठियाँ भींचकर-गुस्से को दबाकर। वक्त-समय।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विदूपताओं के साथ चित्रित किया है। इस अंश में कवि कुछ खतरनाक स्थितियों के विषय में बता रहा है।

व्याख्या-कवि यहाँ उन स्थितियों का वर्णन करता है जो मानव को दुख तो देती हैं, परंतु सबसे खतरनाक नहीं होतीं। वह बताता है कि किसी की मेहनत की कमाई को लूटने की स्थिति सबसे खतरनाक नहीं है, क्योंकि उसे फिर पाया जा सकता है। पुलिस की मार पड़ना भी इतनी खतरनाक नहीं है। किसी के साथ गद्दारी करना अथवा लोभवश रिश्वत देना भी खतरनाक है, परंतु अन्य बातों जितना नहीं। वह कहता है कि किसी दोष के बिना पुलिस द्वारा पकड़े जाने से बुरा लगता है तथा अन्याय को डरकर चुपचाप सहन करना भी बुरी बात है, परंतु यह सबसे खतरनाक स्थिति नहीं है। छल-कपट के महौल में सच्ची बातें छिप जाती हैं, कोई जुगनू की लौ में पढ़ता है अर्थात् साधनहीनता में गुजारा करता है, विवशतावश अन्याय को सहन कर समय गुजार देना आदि बुरी तो है, परंतु सबसे खतरनाक नहीं है। कई बातें ऐसी हैं जो बहुत खतरनाक हैं और उनके परिणाम दूरगामी होते हैं।

विशेष-

1. 'सबसे खतरनाक नहीं होती' तथा 'बुरा तो है' की आवृत्ति से परिस्थितियों की भयावहता का पता चलता है।
2. 'सहमी-सी चुप' में उपमा अलंकार है।
3. 'बैठे-बिठाए' में अनुप्रास अलंकार है।
4. साधनहीनता के लिए 'जुगनू की लौ' नया प्रयोग है।
5. 'गद्दारी लोभ की मुट्ठी' भी नया प्रयोग है।

6. कथन में जोश, आवेश व मौलिकता है।
7. 'मुट्ठयाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेने' का बिंब प्रभावशाली है।
8. सहज सरल खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'सबसे खतरनाक नहीं होती'-वाक्यांश की आवृत्ति से कवि क्या कहना चाहता है?
2. कवि ने किन-किन खतरनाक स्थितियों का उल्लेख किया है?
3. 'किसी जुगनू की लौ में पढ़ना'-आशय स्पष्ट कीजिए।
4. मुदठियाँ भींचकर वक्त निकालने को बुरा क्यों कहा गया है?

उत्तर –

1. इस वाक्यांश की आवृत्ति से कवि कहना चाहता है कि समाज में अनेक स्थितियाँ खतरनाक हैं, परंतु इनसे भी खतरनाक स्थिति जड़ता, प्रतिक्रियाहीनता की है।
2. कवि ने निम्नलिखित खतरनाक स्थितियों के बारे में बताया है-
   मेहनत की कमाई लूटना, पुलिस की मार, शासन के प्रति गद्दारी, लोभ करना।
3. इसका अर्थ है कि साधनहीनता की स्थिति में गुजारा चलाना बहुत बुरा है किंतु खतरनाक नहीं है।
4. कवि ने अपने आक्रोश को दबाकर टालते रहने की प्रवृत्ति को बुरा बताया है इससे मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य नहीं कर सकता।

2.

सबसे खतरनाक होता है।
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे खतरनाक होता हैं
हमारे सपनों का मर जाना
सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी निगाह में रुकी होती हैं

शब्दार्थ

मुर्दा शांति-निष्क्रियता, प्रतिरोध विहीनता की स्थिति। तड़प-बेचैनी। सपनों का मरना-इच्छाओं का नष्ट होना। घड़ी-समय बताने का यंत्र, वक्त। निगाह-दृष्टि।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि सबसे खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति जीवन के उल्लास व उमंग से मुँह मोड़कर निराशा व अवसाद से घिरकर सन्नाटे में जीने का अभ्यस्त हो जाता है। उसके अंदर कभी न समाप्त होने वाली शांति छा जाती है। वह मूक दर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करता जाता है, ढर्रे पर आधारित जीवन जीने लगता है। वह घर से काम पर चला जाता है और काम समाप्त करके घर लौट आता है। उसके जीवन का मशीनीकरण हो जाता है। उसके सभी सपने मर जाते हैं और जीवन में कोई नयापन नहीं रह जाता है। उसकी सारी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। ये परिस्थितियाँ अत्यंत खतरनाक होती हैं। कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दृष्टि वह है जो अपनी कलाई पर बँधी घड़ी को सामने चलता देख कर सोचे कि जीवन स्थिर है; दूसरे शब्दों में, मनुष्य नित्य हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को नहीं बदलता और न ही स्वयं को बदलना चाहता है।

विशेष-

1. कवि जीवन में आशा व समयानुसार परिवर्तन की माँग करता है।
2. 'घड़ी' में श्लेष अलंकार है।
3. 'सपनों का मर जाना' में लाक्षणिकता है।
4. 'मुर्दा शांति' से भाव स्पष्ट हो गया है।
5. भाषा व्यंजना प्रधान है।
6. खड़ी बोली है।
7. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि के अनुसार सबसे खतरनाक क्या होता है?
2. 'मुद शांति' से क्या अभिप्राय है?
3. सपनों के मर जाने से क्या होता है?
4. घड़ी के माध्यम से कवि क्या कहता है?

उत्तर –

1. कवि के अनुसार, सबसे खतरनाक वह स्थिति है जब मनुष्य प्रतिक्रिया नहीं जताता, वह उत्साहहीन हो जाता है।
2. 'मुर्दा शांति' से अभिप्राय है, मानय जीवन में जड़ता और निष्क्रियता का भाव होना अर्थात् अत्याचारों को मूक बनकर सहते जाना और कोई प्रतिक्रिया न व्यक्त करना।
3. सपनों के मरने से मनुष्य की कामनाएँ, इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। वह वर्तमान से संतुष्ट रहता है। इस प्रवृति से समाज में नए विचार व आविष्कार नहीं हो पाते।
4. घड़ी समय को बताती है। वह समय की गतिशीलता दर्शाती है तथा मनुष्य को समय के अनुसार बदलने की प्रेरणा देती है। मनुष्य द्वारा स्वयं को न बदल पाने की स्थिति खतरनाक होती है।

3.

सबसे खतरनाक वह आँख होती है
जो सब कुछ देखती हुई भी जमी बर्फ होती है
जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है

जो चीजों से उठती अंधेपन की भाप पर दुलक जाती है
जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुई
एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

शब्दार्थ

जमी बर्फ-संवेदनशून्यता। दुनिया-संसार। मुहब्बत-प्रेम। रोजमर्रा-दैनिक कार्य। उलटफेर-चक्कर। दुहराव-दोहराना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और होती जा रही स्थितियों को उसकी विदूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि सामाजिक विदूपताओं का विरोध न करने को खतरनाक मानता है। वह कहता है कि वह आँख बहुत खतरनाक होती है जो अपने सामने हो रहे अन्याय को संवेदनशून्य होकर वैसे देखती रहती है जैसे वह जमी बर्फ हो। जिसकी नजर इस संसार को प्यार से चूमना भूल जाती है अर्थात् जिस नजर से प्रेम व सौंदर्य की भावना समाप्त हो जाती है और हर वस्तु को घृणा से देखती है, वह नजर खतरनाक हो जाती है। ऐसी नजर वस्तु के स्वार्थ के लोभ में अंधी हो जाती है तथा उसे पाने के लिए लालयित हो उठती है, वह खतरनाक होती है। वह जिंदगी जो दैनिक क्रियाकलापों में संवेदनहीनता के साथ भटकती रहती है। जिसका कोई लक्ष्य नहीं है, जो लक्ष्यहीन होकर अपनी दिनचर्या को पूरा करती है, खतरनाक होती है।

विशेष-

1. कवि संवेदनशून्यता पर गहरा व्यंग्य करता है।
2. 'जमी बर्फ', 'मुहब्बत से चूमना', 'अंधेपन की भाप', 'रोजमर्रा के क्रम को पीती' आदि नए भाषिक प्रयोग हैं।
3. 'जमी बर्फ' संवेदनशून्यता का परिचायक है।
4. भाषा व्यंजना प्रधान है।
5. 'अंधेपन की भाप' में रूपक अलंकार है।
6. खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि कैसी आँख को खतरनाक मानता है?
2. दुनिया को मुहब्बत की नजर से न चूमने वाली आँख को कवि खतरनाक क्यों मानता है?
3. 'जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुड़ी पंक्ति का आशय बताइए।
4. आँख का अंधेपन की भाप पर दुलकना क्या कटाक्ष करता है?

उत्तर –

1. कवि उस आँख को खतरनाक मानता है जो अन्याय को देखकर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती। इस तरह से कवि मनुष्य की संवेदनशून्यता पर चोट कर रहा है।
2. दुनिया को मुहब्बत की नजर से न चूमने वाली आँख को कवि इसलिए खतरनाक मानता है; क्योंकि ऐसी नजर से प्रेम एवं सौंदर्य की भावना समाप्त हो जाती है। ऐसी आँख हर वस्तु को घृणा की दृष्टि से देखती है।

3. इसका अर्थ है-वह जिदगी जो दैनिक क्रियाकलापों में संवेदनहीनता के साथ भटकती रहती है।
4. इसमें कवि कहता है कि मनुष्य वस्तुओं की चाह में गलत-सही कार्य करता है। वह उनकी पूर्ति की चाह में हर मूल्य को दाँव पर लगा देता है।

4.

सबसे खतरनाक वह चाँद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आँगनों में चढ़ता है
पर आपकी आँखों की मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है।

शब्दार्थ

हत्याकांड-हत्या की घटना। वीरान-सुनसान। गड़ता-चुभना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विदूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि अपराधीकरण के बारे में बताता है कि वह चाँद सबसे खतरनाक है जो हत्याकांड के बाद उन आँगनों में चढ़ता है जो वीरान हो गए हैं। चाँद सौंदर्य और शांति का परिचायक है, परंतु हत्याकांडों का चश्मदीद गवाह भी है। ऐसे चाँद की चाँदनी लोगों की आँखों में मिर्च की तरह नहीं गड़ती। इसके विपरीत लोग शांति महसूस करते हैं।

विशेष–

1. 'चाँद' आस्था व शांति का प्रतीक है।
2. 'मिर्च की तरह गड़ना' सशक्त प्रयोग है।
3. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'चाँद' किसका प्रतीक है? कवि उसे खतरनाक क्यों मानता है?
2. घर-आँगन के वीरान होने का क्या कारण है?
3. अंतिम पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

1. 'चाँद' आस्था व शांति का प्रतीक है। कवि उसे खतरनाक मानता है, क्योंकि वह लोगों में प्रतिकार की भावना को दबा देता है।
2. इस आँगन के वीरान होने के कारण हत्याकांड हैं जो आतंक के कारण हो रहे हैं।
3. इस पंक्ति का अर्थ है कि लोग हत्याकांड पर भी शांत रहते हैं तथा अपनी खुशियों में मग्न रहते हैं, जबकि उन्हें ऐसे हमलों का प्रतिकार करना चाहिए।

5.

सबसे खतरनाक वह गीत होता है
आपके कानों तक पहुँचने के लिए

जो मरसिए पढ़ता है

जो जिंदा रूह के आसमानों पर ढलती हैं

जिसमें सिर्फ़ उल्लू बोलते और हुआँ हुआँ करते गीदड़

आतांकित लोगों के दरवाज़ों पर

जो गुंडे की तरह अकड़ता है

सबसे खतरनाक वह रात होती है

हमेशा के औधरे बद दरवाज-चौगाठों पर चिपक जाते हैं

शब्दार्थ

मरसिए-मृत्यु पर गाए जाने वाले करुण गीत। आतंकित-डरे हुए। जिंदा रूह-जीवित आत्मा। चौगाठों-चौखटें।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विदूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि वे गीत सबसे खतरनाक हैं जो मनुष्य के हृदय में शोक की लहर दौड़ाते हैं। वस्तुत: ये गीत मृत्यु पर गाए जाते हैं तथा भयभीत लोगों को और डराते हैं, उन्हें गुंडों की तरह धमकाते हैं तथा अकड़ते हैं। कवि ऐसे गीतों को निरर्थक मानता है, क्योंकि ये प्रतिरोध के भाव को नहीं जगाते। वह कहता है कि जब किसी जीवित आत्मा के आसमान पर निराशा रूपी रात्रि का घना औधेरा छा जाता है और उसमें कोई उत्साह नहीं रह जाता, ऐसी रात बहुत खतरनाक होती है। उसके हर कोने-चौखट पर उल्लू व गीदड़ों की तरह शोक व भय चिपक जाते हैं जो कभी निराशा से उबरने नहीं देते।

विशेष-

1. कवि ने संवेदनहीनता व निराशा को खतरनाक बताया है।
2. प्रतीकात्मकता है।
3. 'गुंडे की तरह अकड़ता है', उल्लू बोलते और हुआँ हुआँ' बिंब सार्थक व सजीव है।
4. गीत का मानवीकरण किया गया है।
5. 'मिर्चों की तरह', 'गुंडों की तरह' में उपमा अलंकार है।
6. खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि कैसे गीत को खतरनाक मानता है तथा क्यों?
2. कवि लोगों की किस आदत को खतरनाक मानता है?
3. कवि ने किस रात को खतरनाक माना है?
4. 'जिदा रूह के आसमानों' द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर –

1. कवि उन गीतों को खतरनाक मानता है जो शोक गीत गाकर लोगों के मन में प्रतिकार के भाव को समाप्त करके उन्हें और अधिक डराता है।

2. कवि लोगों का आतंक सहने तथा उसका विरोध न करने की आदत को खतरनाक मानता है।
3. कवि उस रात को खतरनाक मानता है जो जीवित लोगों की आत्मा रूपी आसमान पर अंधकार के समान छा जाती है
4. इसका अर्थ है-सजग लोग। वह कहना चाहता है कि सजग लोगों को अंधविश्वासों व रूढ़ियों से बचना चाहिए।

6.

सबसे खतरनाक वह दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और उसकी मुद धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए
मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती।

शब्दार्थ

मुर्दा-मृत। **जिस्म**-शरीर। **पूरब**-पूर्व दिशा।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विदूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दिशा वह है जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने अंदर की आवाज को नहीं सुनता। उसकी मुर्दा जैसी स्थिति हमें कहीं कोई प्रभाव छोड़ जाए तो यह स्थिति भी खतरनाक होती है। ऐसे लोगों में धूप की किरणों से आशा उत्पन्न भी हो तो मृतप्राय ही होती है। जो अपने ही शरीर रूपी पूर्व दिशा में चुभकर उसे लहूलुहान करती है। कवि कहना चाहता है कि अन्याय को सहना ही लोगों ने अपनी नियति मान लिया है। कवि कहता है कि किसी की मेहनत की कमाई लुट जाए तो वह खतरनाक नहीं होती। पुलिस की मार या गद्दारी आदि भी इतने खतरनाक नहीं होते। खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति में संघर्ष करने की क्षमता ही खत्म हो जाए।

विशेष-

1. कवि व्यक्ति की संवेदनहीनता को खतरनाक स्थिति बताता है।
2. 'आत्मा का सूरज' और 'जिस्म के पूरब' में रूपक अलंकार है।
3. खड़ी बोली है।
4. सांकेतिक भाषा है।
5. काव्य रचना मुक्त छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि ने आत्मा को क्या माना है?
2. कवि किस दिशा को खतरनाक मानता है?
3. 'आत्मा का सूरज डूबने जाए' का अर्थ बताइए।
4. मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

1. कवि ने आत्मा को मृत के समान तटस्थ माना है।
2. कवि उस दिशा को खतरनाक मानता है जिस पर चलकर मनुष्य अपनी आत्मा की बात अनसुनी कर देता है।
3. इसका अर्थ है-अंतरात्मा की आवाज का क्षीण पड़ना।
4. कवि कहना चाहता है कि आदर्शपरक अच्छी बातें ; जैसे-त्याग, अहिंसा, बलिदान आदि मनुष्य को प्रतिक्रियाहीन व जड़ बना देती हैं।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

कपट के शोर में
सही होते हुए भी दब जाना-बुरा तो हैं
किसी जुगनू की लों में पढ़ना-बुरा तो हैं
मुट्टियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना-बुरा तो है
सबसे खतरनाक नहीं होता

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में कवि ने कुछ स्थितियों का वर्णन किया है जो बुरी तो हैं, परंतु सबसे खतरनाक नहीं हैं। सही बातों का कपट के कारण दब जाना, अभाव में रहना, क्रोध को व्यक्त करना आदि बुरी स्थितियाँ तो हैं; परंतु सबसे खतरनाक नहीं हैं।
2. 'बुरा तो है' पद की आवृत्ति प्रभावी है।
    - 'जुगनू की लौ' से साधनहीनता प्रकट होती है।
    - 'कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना', 'जुगनू की लौ में पढ़ना', 'मुट्ठयाँ भींचकर वक्त निकाल लेना' आदि नए भाषिक प्रयोग हैं।
    - व्यंजना शब्द शक्ति है।
    - खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।
    - मुक्त छंद है।
    - सरल शब्दावली है।

2.

सबसे खतरनाक वह आँख होती है
जो सब कुछ देखती हुई भी जमी बर्फ होती है
जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है
जो चीजों से उठती अंधेपन की भाप पर दुलक जाती है
जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुई
एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में दृष्टि के अनेक रूपों का उल्लेख किया गया है। कवि संवेदनशील व परिवर्तनकारी जीवन शैली का समर्थन है। 'सबसे खतरनाक' कहकर कवि उन वस्तुओं या भावों को समाज के लिए हानिकारक व अनुपयोगी मानता है।
2. जमी बर्फ', संवेदना शून्य ठडे जीवन का
    - 'जमी बर्फ होती', 'मुहब्बत से चूमना', 'अंधेपन की प्रतीक है। भाप' आदि नए भाषिक प्रयोग हैं।
    - 'अंधेपन की भाप' में रूपक अलंकार है।
    - भाषा में व्यंजना शक्ति है।
    - खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।
    - उर्दू शब्दों का सहज प्रयोग है।
    - प्रतीकों व बिंबों का सशक्त प्रयोग है।

3.

सबसे खतरनाक वह दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और उसकी मुद धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए

प्रश्न

1. भाव-सौदर्य बताइए।
2. शिल्प–सौंदर्य बताइए।

उत्तर –

1. इस अंश में, कवि आत्मा की आवाज को अनसुना करने वाली चिंतन-शैली को धिक्कारता है। वह कट्टर विचारधारा का विरोधी है।
2. 'आत्मा का सूरज' में रूपक अलंकार है।
    - 'जिस्म के पूरब' में रूपक अलंकार है।
    - सांकेतिक भाषा का प्रयोग है।
    - खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।
    - मुक्त छंद है।
    - उर्दू शब्दावली का प्रयोग है।

पादयपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:

कवि ने किस आशय से मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना।

उत्तर –

कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना क्योंकि इन तीनों में मीन में आशा व उम्मीद की किरण बची रहती है। इनका प्रभाव सीमित होता है। इन क्रियाओं में प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। इन स्थितियों को बदला जा सकता है। जिस समाज में पारस्परिक सौहाद्र, प्रेम, दया, करुणा आदि भावनाएँ समाप्त हो जाएंगी, वह मृत हो जाएगा।

प्रश्न 2:

'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या असर पैदा हुआ?

उत्तर –

'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार, दोहराए जाने से पाठकों का ध्यान खतरनाक बातों की तरफ अधिक आकर्षित होता है। वे समाज की स्थितियों पर गंभीरता से विचार करते हैं। यह शब्द उस विभीषिका की ओर संकेत करता है जो समाज को निर्जीव कर रही है। इसके बार-बार प्रयोग से कथ्य प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुआ है।

प्रश्न 3:

कवि ने कविता में कई बातों को 'बुरा है' न कहकर 'बुरा तो है' कहा है। 'तो' के प्रयोग से कथन की भंगिमा में क्या बदलाव आया है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

कवि ने बैठे बिठाए पकड़े जाना, सहमी चुप में जकड़ने, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाने आदि को बुरा तो है कहा है। 'बुरा' शब्द प्रत्यक्ष आरोप लगाता है, परंतु 'तो' लगाने से सारा जोर 'तो' पर चला जाता है। इसका अर्थ है। कि स्थितियाँ खराब अवश्य है, परंतु उनमें सुधार की गुंजाइश है। साथ ही, यह चेतावनी भी देता है कि अगर इन्हें नहीं सुधारा गया तो भविष्य में हालात और बिगड़ेंगे।

प्रश्न 4:

'मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना'-इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक है?

उत्तर –

'मुर्दा शांति से भर जाना' का अर्थ है-निष्क्रिय होना, जड़ हो जाना या प्रतिक्रिया शून्य हो जाना। ऐसी स्थिति बहुत खतरनाक है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। उसके मन में किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है। 'हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। मनुष्य कल्पना करके ही नए-नए कार्य करता है तथा विकसित होता है। सपनों के मर जाने से हम यथास्थिति को स्वीकार करके स्थिर एवं विचारशून्य हो जाते हैं।

प्रश्न 5:

सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है/अपनी कलाई पर चलती हुई भी जो/आपकी निगाह में रुकी होती है। इन पंक्तियों में 'घड़ी' शब्द की व्यंजना से अवगत कराइए।

उत्तर –

'घड़ी' शब्द के दो अर्थ मिलते हैं। पहला अर्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। जीवन घड़ी की तरह चलता

रहता है। वह कभी नहीं रुकता। मनुष्य की चाह समाप्त होने पर ही वह जड़ हो जाता है। दूसरा अर्थ है-दिनचर्या यदि व्यक्ति समय के अनुसार स्वयं को बाँध लेता है तो वह यांत्रिक हो जाता है। वह ढर्रे पर चलता है। उसके जीवन में नया कुछ करने का अवकाश नहीं होता।

प्रश्न 6:

वह चाँद सबसे खतरनाक क्यों होता है, जो हर हत्याकांड के बाद/आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है?

उत्तर –

'चाँद' सौंदर्य का प्रतीक है, परंतु हत्याकांड के बाद कोई प्राणी सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता। हत्या होने पर आम व्यक्ति के मन में आक्रोश उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को चाँद आनंद प्रदान करने वाला नहीं लगता। जो लोग ऐसी स्थिति में आनंद लेने की कोशिश करते हैं तो ऐसी संवेदनशून्यता वास्तव में खतरनाक है।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1:

कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती', से कविता का आरंभ करके फिर इसी से अंत क्यों किया होगा?

उत्तर –

कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती' से कविता का आरंभ करके इसी पर अंत किया क्योंकि कवि का ध्येय 'खतरनाक' व 'सबसे खतरनाक' स्थितियों में अंतर बताना है। कुछ स्थितियाँ खतरनाक होती हैं, परंतु उन्हें सुधारा जा सकता है कुछ दशाएँ कवि ने बताई हैं। यदि वे समाज में आ जाती हैं तो मानवता पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। ऐसी स्थितियों से समाज को बचना चाहिए।

प्रश्न 2:

कवि द्वारा उल्लिखित बातों के अतिरिक्त समाज में अन्य किन बातों को आप खतरनाक मानते हैं?

उत्तर –

कवि द्वारा उल्लिखित बातों के अतिरिक्त हम समाज में निम्नलिखित बातों को खतरनाक मानते हैं

1. स्त्रियों का अपमान, शोषण तथा फिर उनका मजाक उड़ाना।
2. संकटग्रस्त मित्र या जानकार की मदद से दूर भागना।
3. सांप्रदायिकता
4. आतकवाद
5. निरर्थक महत्त्वाकाक्षा
6. देशद्रोह

प्रश्न 3:

समाज में मौजूद खतरनाक बातों को समाप्त करने के लिए आपके क्या सुझाव हैं?

उत्तर –

समाज में मौजूद खतरनाक बातों को समाप्त करने के लिए हमारे सुझाव निम्नलिखित हैं

1. सत्ता शीर्ष को व्यवस्था ठीक करनी चाहिए।
2. आम आदमी को जागरूक होना होगा।
3. दुष्ट लोगों का विनाश ही समाधान है।
4. वैचारिक स्तर में बढ़ोतरी करनी होगी।
5. समाज को संवेदनशीलता रखनी होगी।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'सबसे खतरनाक' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर –

यह कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह दिनोदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही दुनिया की विदूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है, जहाँ प्रतिकूलता से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथरायी आँखों-सी तटस्थता से कवि की असहमति है। कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है जहाँ आत्मा के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

प्रश्न 2:

सपनों का मर जाना किस प्रकार खतरनाक है?

उत्तर –

सपने जीवन में नए रंग भरते हैं। वे मनुष्य को नया कार्यक्षेत्र देते हैं। जब व्यक्ति के सपने मर जाते हैं तो उसके जीवन का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। बिना उद्देश्य के कोई जीवन नहीं होता। इस तरह सपनों के मर जाने से व्यक्ति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। यह स्थिति जीवन के लिए कभी अच्छी नहीं होती।

प्रश्न 3:

कवि ने किन-किन स्थितियों को बुरा बताया है?

उत्तर –

कवि ने निम्नलिखित स्थितियों को बुरा बताया है

1. मेहनत की लूट होना
2. पुलिस की मार पड़ना
3. बिना किसी दोष के गिरफ्तारी
4. डर से चुप होना
5. सही आवाज का दब जाना
6. विवशता से आक्रोश की दवा कर समय काटतें जाना;

प्रश्न 4:

कवि ने वे कौन-कौन सी स्थितियाँ बताई हैं जो सबसे खतरनाक हैं?

उत्तर –

कवि ने निम्नलिखित स्थितियों को सबसे खतरनाक बताया है

1. मुर्दे जैसी शांति का भर जाना।
2. सपनों का मर जाना।
3. तड़पकर अन्याय को सहन करना।
4. घड़ी का एक बिंदु पर ठहरना।
5. अन्याय देखकर संवेदनहीन होना।
6. ढरें पर जिंदगी चलना।
7. अत्याचार का आँखों में न गड़ना।
8. आत्मा की आवाज को अनसुना करना।

कवयित्री परिचय
निर्मला पुतुल

- जीवन परिचय-निर्मला पुतुल का जन्म सन् 1972 में झारखंड राज्य के दुमका क्षेत्र में एक आदिवासी परिवार में हुआ। इनका प्रारंभिक जीवन बहुत संघर्षमय रहा। इनके पिता व चाचा शिक्षक थे, घर में शिक्षा का माहौल था। इसके बावजूद रोटी की समस्या से जूझने के कारण नियमित अध्ययन बाधित होता रहा। इन्होंने सोचा कि नर्स बनने पर आर्थिक कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी। इन्होंने नर्सिंग में डिप्लोमा किया तथा काफी समय बाद इग्नू से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इनका संथाली समाज और उसके रागबोध से गहरा जुड़ाव पहले से था, नर्सिंग की शिक्षा के समय बाहर की दुनिया से भी परिचय हुआ। दोनों समाजों की क्रिया-प्रतिक्रिया से वह बोध विकसित हुआ जिससे वह अपने परिवेश की वास्तविक स्थिति को समझने में सफल हो सकीं।
- रचनाएँ-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
  नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।
- साहित्यिक परिचय-कवयित्री ने आदिवासी समाज की विसंगतियों को तल्लीनता से उकेरा है। इनकी कविताओं का केंद्र बिंदु वे स्थितियाँ हैं, जिनमें कड़ी मेहनत के बावजूद खराब दशा, कुरीतियों के कारण बिगड़ती पीढ़ी, थोड़े लाभ के लिए बड़े समझौते, पुरुष वर्चस्व, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि, शिक्षित समाज का दिक्कुओं और व्यवसायियों के हाथों की कठपुतली बनना आदि है। वे आदिवासी जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से, कलात्मकता के साथ हमारा परिचय कराती हैं और संथाली समाज के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं को बेबाकी से सामने रखती हैं। संथाली समाज में जहाँ एक ओर सादगी, भोलापन, प्रकृति से जुड़ाव और कठोर परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्व हैं, वहीं दूसरी ओर उसमें अशिक्षा और शराब की ओर बढ़ता झुकाव जैसी कुरीतियाँ भी हैं।

कविता का सारांश

इस कविता में दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण हुआ है। बृहतर संदर्भ में यह कविता समाज में उन चीजों को बचाने की बात करती है जिनका होना स्वस्थ सामाजिक-प्राकृतिक परिवेश के लिए जरूरी है। प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है, जो कविता का मूल स्वरूप है। कवयित्री को लगता है कि हम अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन, ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। प्राकृतिक नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँ-ये सब आधुनिकता के शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश, में विकार बढ़ रहे हैं, जिन्हें हमें मिटाना है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। कवयित्री कहती है कि निराश होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अभी भी बचाने के लिए बहुत कुछ शेष है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

अपनी बस्तियों की
नगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे

अपने चहरे पर
सथिल परगान की माटी का रंग
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को
हड़िया में
भाषा में झारखडीपन

शब्दार्थ

नंगी होना-मर्यादाहीन होना। आबो-हवा-वातावरण। हड़िया-हड्डुयों का भंडार। माटी-मिट्टी। झारखंडीपन-झारखंड का पुट।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'आओ, मिलकर बचाएँ' से उद्धृत है। यह कविता संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल द्वारा रचित है। यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को नगरीय अपसंस्कृतिक से बचाने का आहवान करती है।

व्याख्या-कवयित्री लोगों को आहवान करती है कि हम सब मिलकर अपनी बस्तियों को शहरी जिंदगी के प्रभाव से अमर्यादित होने से बचाएँ। शहरी सभ्यता ने हमारी बस्तियों का पर्यावरणीय व मानवीय शोषण किया है। हमें अपनी बस्ती को शोषण से बचाना है नहीं तो पूरी बस्ती हड्डुयों के ढेर में दब जाएगी। कवयित्री कहती है कि हमें अपनी संस्कृति को बचाना है। हमारे चेहरे पर संथाल परगने की मिट्टी का रंग झलकना चाहिए। भाषा में बनावटीपन न होकर झारखंड का प्रभाव होना चाहिए।

विशेष-

1. कवयित्री में परिवेश को बचाने की तड़प मिलती है।
2. 'शहरी आबो-हवा' अपसंस्कृति का प्रतीक है।
3. 'नंगी होना' के अनेक अर्थ हैं।
4. प्रतीकात्मकता है।
5. भाषा प्रवाहमयी है।
6. उर्दू मिश्रित खड़ी बोली है।
7. काव्यांश मुक्त छद तथा तुकांतरहित है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवयित्री वक्या बचाने का आहवान करती है?
2. संथाल परगना की क्या समस्या है?
3. झारखंडीपन से क्या आशय है?
4. काव्यांश में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

1. कवयित्री आदिवासी संथाल बस्ती को शहरी अपसंस्कृति से बचाने का आहवान करती है।
2. संथाल परगना की समस्या है कि यहाँ कि भौतिक संपदा का बेदर्दी से शोषण किया गया है, बदले में यहाँ लोगों को कुछ नहीं मिलता। बाहरी जीवन के प्रभाव से संथाल की अपनी संस्कृति नष्ट होती जा रही है।

3. इसका अर्थ है कि झारखंड के जीवन के भोलेपन, सरलता, सरसता, अक्खड़पन, जुझारूपन, गर्मजोशी के गुणों को बचाना।
4. काव्यांश में निहित संदेश यह है कि हम अपनी प्राकृतिक धरोहर नदी, पर्वत, पेड़, पौधे, मैदान, हवाएँ आदि को प्रदूषित होने से बचाएँ। हमें इन्हें समृद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

2.

ठडी होती दिनचय में
जीवन की गर्माहट
मन का हरापन
भोलापन दिल का
अक्खड़पन, जुझारूपन भी

शब्दार्थ

ठंडी होती-धीमी पड़ती। दिनचर्या-दैनिक कार्य। गर्माहट-नया उत्साह। मन का हरापन-मन की खुशियाँ। अक्खड़पन-रुखाई, कठोर होना। जुझारूपन-संघर्ष करने की प्रवृत्ति।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'आओ, मिलकर बचाएँ' से उद्धृत है। यह कविता संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल द्वारा रचित है। यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को नगरीय अपसंस्कृतिक से बचाने का आहवान करती है।

व्याख्या-कवयित्री कहती है कि शहरी संस्कृति से इस क्षेत्र के लोगों की दिनचर्या धीमी पड़ती जा रही है। उनके जीवन का उत्साह समाप्त हो रहा है। उनके मन में जो खुशियाँ थीं, वे समाप्त हो रही हैं। कवयित्री चाहती है कि उन्हें प्रयास करना चाहिए ताकि लोगों के मन उत्साह, दिल का भोलापन, अक्खड़पन व संघर्ष करने की क्षमता वापिस लौट आए।

विशेष

1. कवयित्री का संस्कृति प्रेम मुखर हुआ है।
2. प्रतीकात्मकता है।
3. भाषा प्रवाहमयी है।
4. काव्यांश मुक्त छंद तथा तुकांतरहित है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. आम व्यक्ति की दिनचर्या पर क्या प्रभाव पड़ा है?
2. जीवन की गर्माहट से क्या आशय है?
3. कवयित्री आदिवासियों की किस प्रवृत्ति को बचाना चाहती है?
4. मन का हरापन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर –

1. शहरी प्रभाव से आम व्यक्ति की दिनचर्या ठहर-सी गई है। उनमें उदासीनता बढ़ती जा रही है।
2. 'जीवन की गरमाहट' का आशय है-कार्य करने के प्रति उत्साह, गतिशीलता।

3. कवयित्री आदिवासियों के भोलेपन, अक्खड़पन व संघर्ष करने की प्रवृत्ति को बचाना चाहती है।
4. 'मन का हरापन' से तात्पर्य है-मन की मधुरता, सरसता व उमंग।

3.

भीतर की आग
धनुष की डोरी
तीर का नुकीलापन
कुल्हाड़ी की धार
जगंल की ताज हवा
नदियों की निर्मलता
पहाड़ों का मौन
गीतों की धुन
मिट्टी का सोंधाप
फसलों की लहलहाहट

शब्दार्थ

आग-गर्मी। निर्मलता-पवित्रता। मौन-चुप्पी। सोंधापन-खुशबू। लहलहाहट-लहराना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'आओ, मिलकर बचाएँ' से उद्धृत है। यह कविता संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल द्वारा रचित है। यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को नगरीय अपसंस्कृतिक से बचाने का आहवान करती है।

व्याख्या-कवयित्री कहती है कि उन्हें संघर्ष करने की प्रवृत्ति, परिश्रम करने की आदत के साथ अपने पारंपरिक हथियार धनुष व उसकी डोरी, तीरों के नुकीलेपन तथा कुल्हाड़ी की धार को बचाना चाहिए। वह समाज से कहती है कि हम अपने जंगलों को कटने से बचाएँ ताकि ताजा हवा मिलती रहे। नदियों को दूषित न करके उनकी स्वच्छता को बनाए रखें। पहाड़ों पर शोर को रोककर शांति बनाए रखनी चाहिए। हमें अपने गीतों की धुन को बचाना है, क्योंकि यह हमारी संस्कृति की पहचान हैं। हमें मिट्टी की सुगंध तथा लहलहाती फसलों को बचाना है। ये हमारी संस्कृति के परिचायक हैं।

विशेष-

1. कवयित्री लोक जीवन की सहजता को बनाए रखना
2. प्रतीकात्मकता है। चाहती है।
3. भाषा आडंबरहीन है।
4. छोटे-छोटे वाक्य प्राकृतिक बिंब को दर्शाते हैं।
5. छदमुक्त एवं अतुकांत कविता है।
6. मिश्रित शब्दावली में सहज अभिव्यक्ति है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. आदिवासी जीवन के विषय में बताइए।
2. आदिवासियों की दिनचर्या का अंग कौन-सी चीजें हैं?
3. कवयित्री किस-किस चीज को बचाने का आहवान करती है?

4. 'भीतर की आग' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर –

1. आदिवासी जीवन में तीर, धनुष, कुल्हाड़ी का प्रयोग किया जाता है। आदिवासी जंगल, नदी, पर्वत जैसे प्राकृतिक चीजों से सीधे तौर पर जुड़े हैं। उनके गीत विशिष्टता लिए हुए हैं।
2. आदिवासियों की दिनचर्या का अंग धनुष, तीर, व कुल्हाड़ियाँ होती हैं।
3. कवयित्री जंगलों की ताजा हवा, नदियों की पवित्रता, पहाड़ों के मौन, मिट्टी की खुशबू, स्थानीय गीतों व फसलों की लहलहाहट को बचाना चाहती है।
4. इसका तात्पर्य है-आतरिक जोश व संघर्ष करने की क्षमता।

4.

नाचने के लिए खुला आँगन
गाने के लिए गीत
हँसने के लिए थोड़ी-सी खिलखिलाहट
रोने के लिए मुट्ठी भर एकात
बच्चों के लिए मैदान
पशुओं के लिए हरी-हरी घास
बूढ़ों के लिए पहाड़ों की शांति

शब्दार्थ

खिलखिलाहट-खुलकर हँसना। मुट्ठी भर-थोड़ा-सा। एकांत-अकेलापन।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'आओ, मिलकर बचाएँ' से उद्धृत है। यह कविता संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल द्वारा रचित है। यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को नगरीय अपसंस्कृतिक से बचाने का आहवान करती है।

व्याख्या-कवयित्री कहती है कि आबादी व विकास के कारण घर छोटे होते जा रहे हैं। यदि नाचने के लिए खुला आँगन चाहिए तो आबादी पर नियंत्रण करना होगा। फिल्मी प्रभाव से मुक्त होने के लिए अपने गीत होने चाहिए। व्यर्थ के तनाव को दूर करने के लिए थोड़ी हँसी बचाकर रखनी चाहिए ताकि खिलखिला कर हँसा जा सके। अपनी पीड़ा को व्यक्त करने के लिए थोड़ा-सा एकांत भी चाहिए। बच्चों को खेलने के लिए मैदान, पशुओं के चरने के लिए हरी-हरी घास तथा बूढ़ों के लिए पहाड़ी प्रदेश का शांत वातावरण चाहिए। इन सबके लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे।

विशेष-

1. आदिवासियों की जरूरत के विषय में बताया गया है।
2. भाषा सहज व सरल है।
3. 'हरी-हरी' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
4. 'मुट्ठी भर एकांत' थोड़े से एकांत के लिए प्रयुक्त हुआ है।
5. काव्यांश छदमुक्त तथा अतुकांत है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. हँसने और गाने के बारे में कवयित्री क्या कहना चाहती है?
2. कवयित्री एकांत की इच्छा क्यों रखती है।

3. बच्चों, पशुओं व बूढ़ों को किनकी आवश्यकता है?
4. कवयित्री शहरी प्रभाव पर क्या व्यंग्य करती है?

उत्तर –

1. कवयित्री कहती है कि झारखंड के क्षेत्र में स्वाभाविक हँसी व गाने अभी भी बचे हुए हैं। यहाँ संवेदना अभी पूर्णत: मृत नहीं हुई है। लोगों में जीवन के प्रति प्रेम है।
2. कवयित्री एकांत की इच्छा इसलिए करती है ताकि एकांत में रोकर मन की पीड़ा, वेदना को कम कर सके।
3. बच्चों को खेलने के लिए मैदान, पशुओं के लिए हरी-हरी घास तथा बूढ़ों को पहाड़ों का शांत वातावरण चाहिए।
4. कवयित्री व्यंग्य करती है कि शहरीकरण के कारण अब नाचने-गाने के लिए स्थान नहीं है, लोगों की हँसी गायब होती जा रही है, जीवन की स्वाभाविकता समाप्त हो रही है। यहाँ तक कि रोने के लिए भी एकांत नहीं बचा है।

5.

और इस अविश्वास-भरे दौर में
थोड़ा-सा विश्वास
थोड़ी-सी उम्मीद
थोड़े-से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ
कि इस दौर में भी बचाने को
बहुत कुछ बचा हैं
अब भी हमारे पास!

शब्दार्थ-

अविश्वास-दूसरों पर विश्वास न करना। दौर-समय। सपने-इच्छाएँ।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'आओ, मिलकर बचाएँ' से उद्धृत है। यह कविता संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल द्वारा रचित है। यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को नगरीय अपसंस्कृतिक से बचाने का आहवान करती है।

व्याख्या-कवयित्री कहती है कि आज चारों तरफ अविश्वास का माहौल है। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता। अत: ऐसे माहौल में हमें थोड़ा-सा विश्वास बचाए रखना चाहिए। हमें अच्छे कार्य होने के लिए थोड़ी-सी उम्मीदें भी बचानी चाहिए। हमें थोड़े-से सपने भी बचाने चाहिए ताकि हम अपनी कल्पना के अनुसार कार्य कर सकें। अंत में कवयित्री कहती है कि हम सबको मिलकर इन सभी चीजों को बचाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि आज आपाधापी के इस दौर में अभी भी हमारे पास बहुत कुछ बचाने के लिए बचा है। हमारी सभ्यता व संस्कृति की अनेक चीजें अभी शेष हैं।

विशेष

1. कवयित्री का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।
2. 'आओ, मिलकर बचाएँ' में खुला आहवान है।
3. 'थोड़ा-सा' की आवृत्ति से भाव-गांभीर्य आया है।

4. मिश्रित शब्दावली है।
5. भाषा में प्रवाह है।
6. काव्यांश छंदमुक्त एवं तुकांतरहित है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवयित्री ने आज के युग को कैसा बताया है?
2. कवयित्री क्या-क्या बचाना चाहती है?
3. कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा कि बहुत कुछ बचा है, अब भी हमारे पास!
4. कवयित्री का स्वर आशावादी है या निराशावादी?

उत्तर –

1. कवयित्री ने आज के युग को अविश्वास से युक्त बताया है। आज कोई एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करता।
2. कवयित्री थोड़ा-सा विश्वास, उम्मीद व सपने बचाना चाहती है।
3. कवयित्री कहती है कि हमारे देश की संस्कृति व सभ्यता के सभी तत्वों का पूर्णत: विनाश नहीं हुआ है। अभी भी हमारे पास अनेक तत्व मौजूद हैं जो हमारी पहचान के परिचायक हैं।
4. कवयित्री का स्वर आशावादी है। वह जानती है कि आज घोर अविश्वास का युग है, फिर भी वह आस्था व सपनों के जीवित रखने की आशा रखे हुए है।

काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

1.

अपनी बस्तियों को
नंगी होने सं
शहर को आबो-हवा से बचाएँ उसे
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती की
हड़िया में
अपने चहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग
भाषा में झारखंडीपन

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में कवयित्री स्थानीय परिवेश को बाह्य प्रभाव से बचाना चाहती है। बाहरी लोगों ने इस क्षेत्र के प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों को बुरी तरह से दोहन किया है। वह अपने संथाली लोक-स्वभाव पर गर्व करती है।
2. प्रस्तुत काव्यांश में प्रतीकात्मकता है।
    - ‘माटी का रंग’ लाक्षणिक प्रयोग है। यह सांस्कृतिक विशेषता का परिचायक है।
    - ‘नंगी होना’ के कई अर्थ है-

        - मर्यादा छोड़ना।
        - कपड़े कम पहनना।
        - वनस्पतिहीन भूमि।

    उर्दू व लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग है।
    छदमुक्त कविता है।
    खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।

2.

ठंडी होती दिनचर्या में
जीवन की गर्माहट
मन का हरापन
भोलापन दिल का
अक्खड़पन, जुझारूपन भी

प्रश्न

1. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें।
2. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर –

1. इस काव्यांश में कवयित्री ने झारखंड प्रदेश की पहचान व प्राकृतिक परिवेश के विषय में बताया है। वह लोकजीवन की सहजता को बनाए रखना चाहती है। वह पर्यावरण की स्वच्छता व निदषता को बचाने के लिए प्रयासरत है।
2. 'भीतर की आग" मन की इच्छा व उत्साह का परिचायक है।
    - भाषा सहज व सरल है।
    - छोटे-छोटे वाक्यांश पूरे बिंब को समेटे हुए हैं।
    - खड़ी बोली है।
    - अतुकांत शैली है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न कविता के साथ

प्रश्न 1:

'माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर –

कवयित्री ने 'माटी का रंग' शब्द का प्रयोग करके यह बताना चाहा है कि संथाल क्षेत्र के लोगों को अपनी मूल पहचान को नहीं भूलना चाहिए। वह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताएँ बचाए रखना चाहता है। क्षेत्र की प्रकृति, रहन-सहन, अक्खड़ता, नाच गाना, भोलापन, जुझारूपन, झारखंडी भाषा आदि को शहरी प्रभाव से दूर रखना ही कवयित्री का उद्देश्य है।

प्रश्न 2:

भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर –

इसका अभिप्राय है-झारखंड की भाषा की स्वाभाविक बोली, उनका विशिष्ट उच्चारण। कवयित्री चाहती है कि संथाली लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषताओं को नष्ट न करें।

प्रश्न 3:
दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर –
दिल का भोलापन अर्थात् मन का साफ़ होना-इस पर कविता में इसलिए बल दिया गया है कि अच्छा मनुष्य और वह आदिवासी जिस पर शहरी कलुष का साया नहीं पड़ा वह भोला तो होता ही है, साथ-साथ उसे शहरी कही जानेवाली सभ्यता का ज्ञान नहीं तो वह अपने साफ़ मन से जो कहता है वह अक्खड़ दृष्टिकोण से कहता है। शक्तिशाली संथालों का मौलिक गुण है-जूझना, सो उसे बनाए रखना भी जरूरी है।

प्रश्न 4:
प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर –
इस कविता में आदिवासी समाज में जड़ता, काम से अरुचि, बाहरी संस्कृति का अंधानुकरण, शराबखोरी, अकर्मण्यता, अशिक्षा, अपनी भाषा से अलगाव, परंपराओं को पूर्णत: गलत समझना आदि बुराइयाँ आ गई हैं। आदिवासी समाज स्वाभाविक जीवन को भूलता जा रहा है।

प्रश्न 5:
'इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है'-से क्या आशय है?

उत्तर –
'इस दौर में भी' का आशय है कि वर्तमान परिवेश में पाश्चात्य और शहरी प्रभाव ने सभी संस्कारपूर्ण मौलिक तत्वों को नष्ट कर दिया है, परंतु कवयित्री निराश नहीं है, वह कहती है कि हमारी समृद्ध परंपरा में आज भी बहुत कुछ शेष है। आओ हम उसे मिलकर बचा लें। यही इस समय की माँग है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि को सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न 6:
निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य को उदघाटित कीजिए

(क) ठंडी होती दिनचर्या में
जीवन की गर्माहट

(ख) थोड़ा-सा विश्वास
थोडी-सी उम्मीद
थोड़े-से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ।

उत्तर –
(क) इस पंक्ति में कवयित्री ने आदिवासी क्षेत्रों से विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया है। विस्थापन से वहाँ के लोगों की दिनचर्या ठंडी पड़ गई है। हम अपने प्रयासों से उनके जीवन में उत्साह जगा सकते हैं। यह काव्य पंक्ति लाक्षणिक है इसका अर्थ है-उत्साहहीन जीवन। 'गर्माहट' उमंग, उत्साह

और क्रियाशीलता का प्रतीक है। इन प्रतीकों से अर्थ गांभीर्य आया है। शांत रस विद्यमान है। अतुकांत अभिव्यक्ति है।

(ख) इस अंश में कवयित्री अपने प्रयासों से लोगों की उम्मीदें, विश्वास व सपनों को जीवित रखना चाहती है। समाज में बढ़ते अविश्वास के कारण व्यक्ति का विकास रुक-सा गया है। वह सभी लोगों से मिलकर प्रयास करने का आहवान करती है। उसका स्वर आशावादी है। 'थोड़ा-सा' ; 'थोड़ी-सी' व 'थोड़े-से' तीनों प्रयोग एक ही अर्थ के वाहक हैं। अत: अनुप्रास अलंकार है। उर्दू (उम्मीद), संस्कृत (विश्वास) तथा तद्भव (सपने) शब्दों का मिला-जुला प्रयोग किया गया है। तुक, छद और संगीत विहीन होते हुए कथ्य में आकर्षण है। खड़ी बोली का प्रयोग दर्शनीय है।

प्रश्न 7:

बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर –

शहरों में भावनात्मक जुड़ाव, सादगी, भोलापन, विश्वास और खिलखिलाती हुई हँसी नहीं है। इन कमियों से बस्तियों को बचाना बहुत जरूरी है। शहरों के प्रभाव में आकर ही दिनचर्या ठंडी होती जा रही है और जीवन की गर्माहट घट रही है। जंगल कट रहे हैं और आदिवासी लोग भी शहरी जीवन को अपना रहे हैं। बस्ती के आँगन भी सिकुड़ रहे हैं। नाचना-गाना, मस्ती भरी जिंदगी को शहरी प्रभाव से बचाना ज़रूरी है।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1:

आप अपने शहर या बस्ती की किन चीजों को बचाना चाहेंगे?

उत्तर –

हम अपने शहर की ऐतिहासिक धरोहर को बचाना चाहेंगे।

प्रश्न 2:

आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करें।

उत्तर –

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

आओ, मिलकर बचाएँ-कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर –

इस कविता में दोनों/पक्षों का यथार्थ चित्रण हुआ है। बृहतर संदर्भ में यह कविता समाज में उन चीजों को बचाने की बात करती है जिनका होना स्वस्थ सामाजिक परिवेश के लिए जरूरी है। प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है, जो कविता का मूल स्वरूप है। कवयित्री को लगता है कि हम अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन, ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। प्राकृतिक नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँ-ये सब

आधुनिकता का शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश में विकार बढ़ रहे हैं, जिन्हें हमें मिटाना है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। वह कहती है कि निराश होने की बात नहीं है, क्योंकि अभी भी बचाने के लिए बहुत कुछ बचा है।

प्रश्न 2:

लेखिका के प्रकृतिक परिवेश में कौन-से सुखद अनुभव हैं?

उत्तर –

लेखिका ने संथाल परगने के प्राकृतिक परिवेश में निम्नलिखित सुखद अनुभव बताए हैं-

1. जगल की ताजा हवा
2. नदियों का निर्मल जल
3. पहाडीं की शांति
4. गीतों की मधुर धुनें
5. मिट्टी की स्वाभाविक सुगंध
6. लहलहाती फसलें कीजिए

प्रश्न 3:

बस्ती को बचाएँ डूबने से-आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

बस्ती के डूबने का अर्थ है-पारंपरिक रीति-रिवाजों का लोप हो जाना और मौलिकता खोकर विस्थापन की ओर बढ़ना। यह चिंता का विषय है। आदिवासियों की संस्कृति का लुप्त होना बस्ती के डूबने के समान है।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय-** प्रेमचंद का जन्म 1880 ई. में उत्तर प्रदेश के लमही गाँव में हुआ। इनका मूल नाम धनपतराय था। इनका बचपन अभावों में बीता। इन्होंने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण बी.ए. तक की पढ़ाई मुश्किल से पूरी की। ये अंग्रेजी में एम.ए. करना चाहते थे, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए नौकरी करनी पड़ी। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय होने के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के बाद भी उनका लेखन कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। ये अपनी पत्नी शिवरानी देवी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ आदोलनों में हिस्सा लेते रहे। इनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष इनकी रचनाओं में – सामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों थे। इनका निधन 1936 ई. में हुआ।

● **रचनाएँ-** प्रेमचंद का साहित्य संसार अत्यंत विस्तृत है। ये हिंदी कथा-साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

उपन्यास- सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान।

कहानी-संग्रह-सोजे-वतन, मानसरोवर (आठ खंड में), गुप्त धन।

नाटक- कर्बला, संग्राम, प्रेम की देवी।

निबंध-संग्रह-कुछ विचार, विविध प्रसंग।

● **साहित्यिक विशेषताएँ-** हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास का काल-विभाजन प्रेमचंद को ही केंद्र में रखकर किया जाता रहा है। वस्तुत: प्रेमचंद ही पहले रचनाकार हैं जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रुमानियत के धुंधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की जमीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परंपरा से भी जुड़ी। इसमें उनकी हिंदुस्तानी । भाषा अपने पूरे ठाट-बाट और जातीय स्वरूप के साथ आई है।

उनका आरंभिक कथा-साहित्य कल्पना, संयोग और रुमानियत के ताने-बाने से बुना गया है, लेकिन एक कथाकार के रूप में उन्होंने लगातार विकास किया और **पंच परमेश्वर** जैसी कहानी तथा **सेवासदन** जैसे उपन्यास के साथ सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यथार्थवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए। यथार्थवाद के भीतर भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से आलोचनात्मक यथार्थवाद तक की विकास-यात्रा प्रेमचंद ने की।

आदशो **आदर्शोन्मुख यथार्थवाद** स्वयं उन्हीं की गढ़ी हुई संज्ञा है। यह कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में उनके रचनात्मक प्रयासों पर लागू होती है जो कटु यथार्थ का चित्रण करते हुए भी समस्याओं और अंतर्विरोधों को अंतत: एक आदर्शवादी और मनोवांछित समाधान तक पहुँचा देती है। **सेवासदन, प्रेमाश्रम** आदि उपन्यास और **पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा** आदि कहानियाँ ऐसी ही हैं। बाद की रचनाओं में वे कटु यथार्थ को भी प्रस्तुत करने में किसी तरह का समझौता नहीं करते। **गोदान** उपन्यास और **पूस की रात, कफ़न** आदि कहानियाँ इसके उदाहरण हैं। साहित्य के बारे में प्रेमचंद का कहना है-

“ साहित्य वह जादू की लकड़ी है जो पशुओं में ईंट-पत्थरों में पेड़-पौधों में भी विश्व की आत्मा का दर्शन करा देती है। ”

पाठ का सारांश

'नमक का दारोगा' प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है जो आदर्शान्मुख यथार्थवाद का एक मुकम्मल उदाहरण है। यह कहानी धन के ऊपर धर्म की जीत है। 'धन' और 'धर्म' को क्रमश: सद्‌वृत्ति और असद्‌वृत्ति, बुराई और अच्छाई, असत्य और सत्य कहा जा सकता है। कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमश: पडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से हटवा देते हैं, लेकिन अंत:सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी विभाग से बखास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध-बोध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं –

" परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, किंतु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाए रखे।"

नमक का विभाग बनने के बाद लोग नमक का व्यापार चोरी-छिपे करने लगे। इस काले व्यापार से भ्रष्टाचार बढ़ा। अधिकारियों के पौ-बारह थे। लोग दरोगा के पद के लिए लालायित थे। मुंशी वंशीधर भी रोजगार को प्रमुख मानकर इसे खोजने चले। इनके पिता अनुभवी थे। उन्होंने घर की दुर्दशा तथा अपनी वृद्धावस्था का हवाला देकर नौकरी में पद की ओर ध्यान न देकर ऊपरी आय वाली नौकरी को बेहतर बताया। वे कहते हैं कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। आवश्यकता व अवसर देखकर विवेक से काम करो। वंशीधर ने पिता की बातें ध्यान से सुनीं और चल दिए। धैर्य, बुद्ध आत्मावलंबन व भाग्य के कारण नमक विभाग के दरोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। घर में खुशी छा गई।

सर्दी के मौसम की रात में नमक के सिपाही नशे में मस्त थे। वंशीधर ने छह महीने में ही अपनी कार्यकुशलता व उत्तम आचार से अफसरों का विश्वास जीत लिया था। यमुना नदी पर बने नावों के पुल से गाड़ियों की आवाज सुनकर वे उठ गए। उन्हें गोलमाल की शंका थी। जाकर देखा तो गाड़ियों की कतार दिखाई दी। पूछताछ पर पता चला कि ये पंडित अलोपीदीन की है। वह इलाके का प्रसिद्ध जमींदार था जो ऋण देने का काम करता था। तलाशी ली तो पता चला कि उसमें नमक है। पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ में ऊँघते हुए जा रहे थे तभी गाड़ी वालों ने गाड़ियाँ रोकने की खबर दी। पंडित सारे संसार में लक्ष्मी को प्रमुख मानते थे। न्याय, नीति सब लक्ष्मी के खिलौने हैं। उसी घमंड में निश्चित होकर दरोगा के पास पहुँचे। उन्होंने कहा कि मेरी सरकार तो आप ही हैं। आपने व्यर्थ ही कष्ट उठाया। मैं सेवा में स्वयं आ ही रहा था। वंशीधर पर ईमानदारी का नशा था। उन्होंने कहा कि हम अपना ईमान नहीं बेचते। आपको गिरफ्तार किया जाता है।

यह आदेश सुनकर पडित अलोपीदीन हैरान रह गए। यह उनके जीवन की पहली घटना थी। बदलू सिंह उसका हाथ पकड़ने से घबरा गया, फिर अलोपीदीन ने सोचा कि नया लड़का है। दीनभाव में बोले-आप ऐसा न करें। हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। वंशीधर ने साफ मना कर दिया। अलोपीदीन ने चालीस हजार तक की रिश्वत देनी चाही, परंतु वंशीधर ने उनकी एक न सुनी। धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

सुबह तक हर जबान पर यही किस्सा था। पंडित के व्यवहार की चारों तरफ निंदा हो रही थी। भ्रष्ट व्यक्ति भी उसकी निंदा कर रहे थे। अगले दिन अदालत में भीड़ थी। अदालत में सभी पडित अलोपीदीन के माल के गुलाम थे। वे उनके पकड़े जाने पर हैरान थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन

ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए? इस आक्रमण को रोकने के लिए वकीलों की फौज तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर के पास सत्य था, गवाह लोभ से डाँवाडोल थे।

मुंशी जी को न्याय में पक्षपात होता दिख रहा था। यहाँ के कर्मचारी पक्षपात करने पर तुले हुए थे। मुकदमा शीघ्र समाप्त हो गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने लिखा कि पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध प्रमाण आधारहीन है। वे ऐसा कार्य नहीं कर सकते। दरोगा का दोष अधिक नहीं है, परंतु एक भले आदमी को दिए कष्ट के कारण उन्हें भविष्य में ऐसा न करने की चेतावनी दी जाती है। इस फैसले से सबकी बाँछे खिल गई। खूब पैसा लुटाया गया जिसने अदालत की नींव तक हिला दी। वंशीधर बाहर निकले तो चारों तरफ से व्यंग्य की बातें सुनने को मिलीं। उन्हें न्याय, विद्वता, उपाधियाँ आदि सभी निरर्थक लगने लगे।

वंशीधर की बखास्तगी का पत्र एक सप्ताह में ही आ गया। उन्हें कत्र्तव्यपरायणता का दंड मिला। दुखी मन से वे घर चले। उनके पिता खूब बड़बड़ाए। यह अधिक ईमानदार बनता है। जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लें। उन्हें अनेक कठोर बातें कहीं। माँ की तीर्थयात्रा की आशा मिट्टी में मिल गई। पत्नी कई दिन तक मुँह फुलाए रही।

एक सप्ताह के बाद अलोपीदीन सजे रथ में बैठकर मुंशी के घर पहुँचे। वृद्ध मुंशी उनकी चापलूसी करने लगे तथा अपने पुत्र को कोसने लगे। अलोपीदीन ने उन्हें ऐसा कहने से रोका और कहा कि कुलतिलक और पुरुषों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण गण्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें। उन्होंने वंशीधर से कहा कि इसे खुशामद न समझिए। आपने मुझे परार कर दिया। वंशीधर ने सोचा कि वे उसे अपमानित करने आए हैं, परंतु पंडित की बातें सुनकर उनका संदेह दूर हो गया। उन्होंने कहा कि यह आपकी उदारता है। आज्ञा दीजिए। अलोपीदीन ने कहा कि नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी, अब स्वीकार करनी पड़ेगी। उसने एक स्टांप पत्र निकाला और पद स्वीकारने के लिए प्रार्थना की। वंशीधर ने पढ़ा। पंडित ने अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर छह हजार वार्षिक वेतन, रोजाना खर्च, सवारी, बंगले आदि के साथ नियत किया था। वंशीधर ने काँपते स्वर में कहा कि मैं इस उच्च पद के योग्य नहीं हूँ। ऐसे महान कार्य के लिए बड़े अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने वंशीधर को कलम देते हुए कहा कि मुझे अनुभव, विद्वता, मर्मज्ञता, कार्यकुशलता की चाह नहीं। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर, परंतु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाए रखे। वंशीधर की आँखें डबडबा आई। उन्होंने काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने उन्हें गले लगा लिया।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 6

दरोगा-थानेदार। प्रदत्त-दिया हुआ। निषेध-मनाही। छल-प्रपंच-धोखाधड़ी। सूत्रपात-आरंभ। घूस-रिश्वत। पौ-बारह होना-ऐश होना, अत्यधिक लाभ होना। सर्वसम्मानित-जिसका सबके द्वारा सम्मान किया गया हो। बरकंदाजी-बंदूक लेकर चलने वाला सिपाही या चौकीदार। जी ललचाना-आकर्षित होना। प्राबल्य-जोर। श्रृंगार-प्रेम। फारसीदां-फारसी जानने वाला। सर्वोच्च-सबसे ऊँचा। विरहकथा-वियोग की कहानी। मजनू-एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा का प्रेमी नायक। फ़रहाद-सीरी की प्रेमिका। वृत्तांत-कथा। आविष्कार-ईजाद। दुर्दशा-खराब दशा। ऋण-कर्ज कगारे का वृक्ष-जिसका

अंत समीप हो, किनारे खड़ा पेड़। मालिक-मुख्तार-बड़े आदमी। ओहदा-पदवी। पीर का मज़ार-देवता का ठौर-ठिकाना। निगाह-दृष्टि। चढ़ावा-भेंट। ऊपरी आय-गैरकानूनी आय। स्त्रोत-उद्गम।

पृष्ठ संख्या 7

बरकत-वृद्ध। उपरांत-उसके बाद। गरज़वाला-जरूरतमंद। बेगरज़-जिसे जरूरत न हो। दाँव पर पाना-स्वार्थ सिद्ध करना। निगाह में बाँधना-मन में धारण करना। विस्तृत-विशाल। पथप्रदर्शक-रास्ता दिखाने वाला। आत्मावलंबन-अपना सहारा। शकुन-लक्षण। प्रतिष्ठित-प्रसिद्ध, स्थापित। ठिकाना न होना-सीमा न होना, अधिक मात्रा में मिलना। सुख-संवाद-शुभ समाचार। फूला न समाना-बहुत प्रसन्न होना। महाजन-उधार देने वाले साहूकार। नरम पड़ना-शांत होना। कलवार-शराब बनाने और बेचने का धंधा करने वाला। शूल उठना-पीड़ा होना। आचार-व्यवहार। मोहित करना-प्रसन्न करना। मल्लाह-नाविक। कोलाहल-शोर। गोलमाल-गड़बड़। भ्रम-संदेह। पुष्ट किया-बढ़ाया। तमंचा-बंदूक।

पृष्ठ सख्या 8

सन्नाटा-चुप्पी। कानाफूसी होना-चुगली होना। चलता-पुरज़ा-चालाक। सदात्रत-हमेशा भोजन बाँटना। बाट देखना-इंतजार करना। टटोला-खोजा। ढेले-मिट्टी के मोटे टुकड़े। घाट-नदी का पक्का चबूतरा। अखंड-पक्का। यथार्थ-सच। निश्चितता-बेफिक्री। लिहाफ़-रजाई। अपराध-दोष। रुखाई-कठोरता। घर का मामला-आपस की बात। बाहर होना-नियंत्रण से परे। भेंट चढ़ाना-रिश्वत देना। ऐश्वर्य-धन-वैभव। उमंग-उत्साह। नमकहराम होना-किए हुए उपकार को न मानना। कौड़ियों पर ईमान बेचना-धन के लिए बेईमानी करना। हिरासत-गिरफ्तारी। कायदा-नियम। चालान होना-दोष लगाना। फुरसत-खाली समय। हुक्म-आज्ञा।

पृष्ठ संख्या 1o

स्तंभित-हैरान। हलचल मचना-अशांत माहौल। कदाचित-शायद रोब-प्रभाव। निरादर-अपमान। उददड-शरारती। माया-मोह-संसार का आकर्षण। जाल-चक्कर। अल्हड़-मस्त। धूल में मिलना-नष्ट होना। हाथ आना-उपलब्ध होना। सांख्यिक शक्ति-धन की अधिकता की कीमत। मुख्तार-सहायक कर्मचारी। नौबत पहुँचना-मौका आना। अलौकिक-अद्‌भुत। सम्मुख-सामने। अटल-जो न टले। अविचलित-बिना डगमगाए।

पृष्ठ संख्या 11

दीनता-बेचारगी। निपटारा-हल करना। असंभव-जो संभव न हो। कातर-घबराया हुआ। मूर्च्छित-बेहोश। जीभ जागना-इधर-उधर की बातें कहना। टीका-टिप्पणी करना-अपनी प्रतिक्रिया देना। निदा-बुराई। पाप कटना-समाप्त होना। कल्पित-कल्पना से। रोज़नामचा-हर रोज की कार्यवाही लिखने वाला रजिस्टर। जाली-नकली। दस्तावेज-तहरीर, सनद। गरदनें चलाना-बढ़-चढ़कर बुराई करना। अभियुक्त-दोषी। ग्लानि-पाप-बोध। क्षोभ-गुस्सा। व्यग्र-परेशान। अगाध-अथाह, अपार। अमले-कचहरी के छोटे कर्मचारी। अरदली-अफसर का निजी चपरासी। बिना माल के गुलाम-न्योछावर होना।

पृष्ठ संख्या 12

विस्मित-हैरान। पंजे में आना-नियंत्रण में आना। असाध्य-जिसका इलाज न हो। अनन्य-बहुत अधिक। वाचालता-अधिक बोलना। तत्परता-चुस्ती। निमित्त-के वास्ते। युद्ध ठनना-लड़ाई होना। डाँवाडोल-अस्थिर। तजवीज़-राय, निर्णय। निर्मूल-आधारहीन। भ्रमात्मक-धोखे में डालने वाला। दुस्साहस-अधिक खतरा। नमक हलाली-किए गए उपकार को मानना। उछल पड़ना-प्रसन्नता व्यक्त

करना। स्वजन-बाँधव-अपने भाई-दोस्त। सागर उमड़ना-भावों का वेग से प्रकट होना। व्यंग्यबाण-चुभती हुई बातें। कटु-कठोर, कड़वे। गर्वाग्नि-गर्व की आग।

पृष्ठ संख्या 13

प्रज्वलित करना-जलाना। विचित्र-अद्भुत। चोंगा-वकील और जज का ढीला वस्त्र। बैर मोल लेना-शत्रु बनाना। मुअत्तली-नौकरी से निकालना। परवाना आना-संदेश मिलना। भग्न-टूटा हुआ। व्यथित-दुखी। कुड़-बुड़ाना-असंतोष जताना। एक न सुनना-ध्यान न देना। तगादा-कर्ज वापसी के लिए जल्दी करना। सूखी तनख्वाह-वेतन मात्र पाना। ओहदेदार-ऊँचे पद वाला। अकारथ जाना-व्यर्थ होना। दुरवस्था-बुरी दशा। सिर पीटना-असंतोष व्यक्त करना। हाथ मलना-पछताना। विकट-भयानक। कामनाएँ-इच्छाएँ। मिट्टी में मिलना-नष्ट होना। सीधे मुँह बात न करना-ढंग से बात न करना। पछहिएँ-पश्चिमी। अगवानी-स्वागत करना। दंडवत करना-लेटकर प्रणाम करना।

पृष्ठ संख्या 14

लल्लो-चप्पो करना-खुशामद वाली बातें करना। भाग्य उदय होना-किस्मत जागना। कालिख लगना-बदनाम होना। अभागा-दुर्भाग्यपूर्ण। निस्संतान-बिना संतान के। कुलतिलक-परिवार का श्रेष्ठ व्यक्ति। कीर्ति-यश। धर्मपरायण-धर्म की राह पर दृढ़ता से चलने वाले। अर्पण-न्योछावर। स्वेच्छा-अपनी इच्छा। परास्त करना-हराना। ट्रकुर-सुहाती-स्वामी को अच्छी लगने वाली बातें। असहय-असहनीय। मैल मिटना-द्वेष समाप्त होना। उड़ती हुई दृष्टि-उपेक्षा-भाव से देखना। सदभाव-शुभ भावना। अविनय-धृष्टता। बेड़ी-जंजीर। सिर-माथे पर होना-विनयपूर्वक स्वीकार करना।

पृष्ठ संख्या 15

त्रुटि-दोष। कृतज्ञता-किए गए उपकार को मानना। जायदाद-संपत्ति। नियत-तय। कंपित-काँपता हुआ। सामथ्र्य-शक्ति। कीर्तिवान-यशस्वी। मर्मज्ञ-जानकर। फीकी पड़ना-कम प्रभावी होना। दस्तखत-हस्ताक्षर। बेमुरौवत-बिना लिहाज़। उददड-ढीठ। धर्मनिष्ठ-धर्म में दृढ़ विश्वास रखने वाला।

पृष्ठ संख्या 16

आँखें डबडबाना-भावुकता के कारण आँखों से आँसू आना। संकुचित-तंग। पात्र-बर्तन। एहसान-कृपा। न समाना-न आ पाना। दृष्टि-नज़र, निगाह। प्रफुल्लित-प्रसन्न।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था, जब अंग्रेज़ी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फ़ारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और श्रृंगार रस के काव्य पढ़कर फारसीदां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। (पृष्ठ-6)

प्रश्न

1. ईश्वर प्रदत्त वस्तु क्या हैं? उसके निषेध से क्या परिणाम हुआ?

2. नमक विभाग की नौकरी के आकर्षण का क्या कारण था?

3. फ़ारसी का क्या प्रभाव था?

उत्तर-

1. ईश्वर प्रदत्त वस्तु नमक है। सरकार ने नमक विभाग बनाकर उसके निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया। प्रतिबंध के कारण लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। इससे रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला।

2. लोग पटवारीगिरी के पद को छोड़कर नमक विभाग की नौकरी करना चाहते थे, क्योंकि इसमें ऊपर की कमाई होती थी। लोग इनकों घूस देकर अपना काम निकलवाते थे।

3. इस समय फ़ारसी का प्रभाव था। फ़ारसी पढ़े लोगों को अच्छी नौकरियाँ मिल जाती थीं। प्रेम की कथाएँ और श्रृंगार रस के काव्य पढ़कर फ़ारसी जानने वाले सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे।

2. उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे-बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ न मालूम कब गिर पड़ें अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्ध नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरज़वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है, लेकिन बेगरज़ को दाँव पर पाना ज़रा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्मभर की कमाई है। (पृष्ठ 6-7)

प्रश्न

1. ओहद को पीर की मज़ार क्यों कहा गया है?
2. वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?
3. तन व ऊपरी आय में क्या अतर हैं?

उत्तर-

1. हदे को पीर की मज़ार कहा गया है। जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं, उसी तरह नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है।
2. वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है, क्योंकि यह महीने में एक बार मिलता है। पूर्णमासी का चाँद भी महीने में एक ही बार दिखाई देता है। उसके बाद वह घटता जाता है और एक दिन लुप्त हो जाता है। यही स्थिति वेतन की होती है।
3. वेतन पूर्णमासी के चाँद की तरह है जो एक दिन दिखता है और अंत में लुप्त हो जाता है, जबकि ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है। इसलिए उसमें बढ़ोतरी नहीं होती, जबकि ऊपर की कमाई ईश्वर देता है इसलिए उसमें बरकत होती है।

3. पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और

नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले-चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए, फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले-बाबू जी, आशीर्वाद कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गईं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। वंशीधर रुखाई से बोले-सरकारी हुक्म! (पृष्ठ–9)

प्रश्न

1. लक्ष्मी जी के बारे में पडित जी का क्या विश्वास था?
2. गाड़ी पकड़ जाने की खबर पर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी और क्यों?
3. वशीधर की रुखाई का क्या कारण था?

उत्तर-

1. पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वे कहते थे कि संसार और स्वर्ग में लक्ष्मी का राज है।न्याय और नीति लक्ष्मी के इशारे पर नाचते हैं अर्थात् धन से दीन, ईमान और धर्म सब कुछ खरीदा जा सकता है।
2. गाड़ी पकड़े जाने पर वे शांत थे। वे इसे सामान्य बात मानते थे। वे बेफिक्री से पान चबाते रहे और फिर लिहाफ ओढ़कर सामान्य रूप से दरोगा के पास पहुँचे। वे समझते थे कि पैसों के बल पर अपना हर काम निकलवा लेंगे।
3. वंशीधर की रुखाई का कारण नमक का गैर-कानूनी व्यापार था। वे ईमानदार, कठोर व दृढ़ अफसर थे। इसलिए वे सरकारी आदेश का पालन करना और करवाना अपना प्रथम उत्तरदायित्व समझते थे।

4. पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा-हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़ककर बोले-हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुरसत नहीं है। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ। (पृष्ठ-9)

प्रश्न

1. पडित अलोपीदीन का व्यवहार केसा है?
2. 'घाट के देवता को भेंट चढ़ाने' से क्या तात्पर्य हैं?
3. वशीधर का व्यवहार कैसा था?

उत्तर-

1. पंडित अलोपीदीन चालाक व्यापारी है। वह चापलूसी, रिश्वत आदि से अपना काम निकलवाना जानता है। रिश्वत देने में माहिर होने के कारण वह सरकारी कर्मियों व अदालत से नहीं घबराता।
2. इस कथन का तात्पर्य है कि इस क्षेत्र के नमक के दरोगा को रिश्वत देना आवश्यक है अर्थात् बिना रिश्वत दिए वह मुफ्त में घाट नहीं पार करने देंगे।

3. वंशीधर ने अलोपीदीन से कठोर व्यवहार किया। वह ईमानदार था तथा गैरकानूनी कार्य करने वालों को सजा दिलाना चाहता था। इस प्रकार वंशीधर का व्यवहार सरकारी गरिमा एवं पद के अनुरूप था।

5. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानी संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोज़नामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा। (पृष्ठ-ll)

प्रश्न

1. 'दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जगती थी।' से क्या तात्पर्य हैं?
2. देवताओं की तरह गरदनें चलाने का क्या मतलब है?
3. कौन-कौन लोग गरदन चला रह थे?

उत्तर-

1. इस कथन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि संसार में परनिंदा हर समय होती रहती है। रात के समय हुई घटना की चर्चा आग की तरह सारे शहर में फैल गई। हर आदमी मजे लेकर यह बात एक-दूसरे बता रहा था।
2. इसका अर्थ है-स्वयं को निर्दोष समझना। देवता स्वयं को निर्दोष मानते हैं, अत: वे मानव पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं। पंडित अलोपीदीन के पकड़े जाने पर भ्रष्ट भी उसकी निंदा कर रहे थे।
3. पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, नकली बही-खाते बनाने वाला अधिकारी वर्ग, रेल में बेटिकट यात्रा करने वाले बाबू जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार-ये सभी गरदनें चला रहे थे।

6. कितु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना माल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किंतु लोभ से डाँवाडोल। (पृष्ठ 11-12)

प्रश्न

1. किस वन का सिह कहा गया तथा क्यों?
2. कचहरी की अगाध वन क्यों कहा गया?
3. लोगों के विस्मित होने का क्या कारण था?

उत्तर-

1. 1. पंडित अलोपीदीन को अदालत रूपी वन का सिंह कहा गया, क्योंकि यहाँ उसके खरीदे हुए अधिकारी, अमले, अरदली, चपरासी, चौकीदार आदि थे। वे उसके हुक्म के गुलाम थे।
2. कचहरी को अगाध वन कहा गया है, क्योंकि न्याय की व्यवस्था जटिल व बीहड़ होती है। हर व्यक्ति दूसरे को खाने के लिए बैठा है। वहाँ पैसों से बहुत कुछ खरीदा जा सकता है, जिससे जनसाधारण न्याय-प्रणाली का शिकार बनकर रह जाता है।
3. लोग अलोपीदीन की गिरफ्तारी से हैरान थे, क्योंकि उन्हें उसकी धन की ताकत व बातचीत की कुशलता का पता था। उन्हें उसके पकड़े जाने पर हैरानी थी क्योंकि वह अपने धन के बल पर कानून की हर ताकत से बचने में समर्थ था।

7. वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर कोचले। बूढ़े मुंशी जी तो पहले ही से कुड़-बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठे और वहाँ बस वही सूखी तनख्वाह! हमने भी तो नौकरी की है, और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर। पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरावस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिता जी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले-जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लें। बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दु:ख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गई। पत्नी ने तो कई दिनों तक सीधे मुँह से बात भी नहीं की। (पृष्ठ-13)

प्रश्न

1. वशीधर को क्या परिणाम भुगतना पड़ा?
2. 'घर में औधरा, मस्जिद में दीया अवश्य जलाएँगे। '—इस उक्ति में किस पर क्या व्यग्य हैं?
3. बूढ़ मुशी जी किसकी पढ़ाई-लिखाई को व्यर्थ मानते हैं? क्यों?

उत्तर-

1. वंशीधर ने धनी अलोपीदीन से दुश्मनी मोल ली थी। अत: उस टकराव का परिणाम तो मिलना ही था। एक सप्ताह के अंदर उनकी कर्तव्यपरायणता के चलते नौकरी छीन ली गई।
2. इस उक्ति में वंशीधर की ईमानदारी पर व्यंग्य किया है। बूढ़े मुंशी कहते हैं कि घर की आर्थिक दशा खराब है। उसे ठीक न करके जनसेवा करने से भला नहीं हो सकता।

3. बूढ़े मुंशी जी अपने बेटे वंशीधर की पढ़ाई-लिखाई को व्यर्थ मानते हैं। वे उसे अफसर बनाकर रिश्वत की कमाई से अपनी हालत सुधारना चाहते थे। वंशीधर ने उनकी कल्पना के उलट किया।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर-

इस कहानी में मुंशी वंशीधर मुझे सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, क्योंकि वे ईमानदार, कर्तव्य परायण, कठोर, बेमुरौवत और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उनके घर की आर्थिक दशा बहुत खराब थी पर फिर भी उनका ईमान नहीं डगमगाया। उनके पिता ने उन्हें ऊपरी आय पर नजर रखने की नसीहत दी, पर वे सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहे। आज देश को ऐसे कर्मियों की जरूरत है जो बिना लालच के सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहें जो परिणाम का बेखौफ़ होकर सामना कर सकें।

प्रश्न 2:

'नमक का दरोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

उत्तर-

पंडित अलोपीदीन के दो पहलू सामने आते हैं-

(क) लक्ष्मी के उपासक-पंडित अलोपीदीन लक्ष्मी के उपासक हैं। वे लक्ष्मी को सर्वोच्च मानते हैं। उन्होंने अदालत में सबको खरीद रखा है। वे कुशल वक्ता भी हैं। वाणी व धन से उन्होंने सबको वश में कर रखा है। इसी कारण वे नमक का अवैध धंधा करते हैं। वंशीधर द्वारा पकड़े जाने पर वे अदालत में धन के बल पर स्वयं को रिहा करवा लेते हैं और वंशीधर को नौकरी से हटवा देते हैं।

(ख) ईमानदारी के कायल-कहानी के अंत में इनका उज्ज्वल रूप सामने आता है। वे वंशीधर की ईमानदारी के कायल हैं। ऐसा व्यक्ति उन्हें सरलता से नहीं मिल सकता था। वे स्वयं उनके घर पहुँचे और उसे अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर बना दिया। उन्हें अच्छा वेतन व सुविधाएँ देकर मान-सम्मान बढ़ाया। उनके स्थान पर आम व्यक्ति तो सदा बदला लेने की बात ही सोचता रहता।cc

प्रश्न 3:

कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी-न-किसी सच्चाई को उजागर करते हैं। निम्नलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ से उस अंश को उदधृत करते हुए बताइए कि यह समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं-

(क) वृदध मुंशी

(ख) वकील

(ग) शहर की भीड़

उत्तर-

(क) वृद्ध मुंशी – "बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह

घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़े। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज़ को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्मभर की कमाई है।
यह संदर्भ समाज की इस सच्चाई को उजागर करता है कि कमजोर आर्थिक दशा के कारण लोग धन के लिए अपने बच्चों को भी गलत राह पर चलने की सलाह दे डालते हैं।
(ख) वकील – वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुसकुराते हुए बाहर निकले। स्वजनबांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंग्यबाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक-एक कटुवाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कदाचित् इस मुकदमे में सफ़ल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वता, लंबी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोंगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।
इस संदर्भ में ज्ञात होता है कि वकील समाज में झूठ और फ़रेब का व्यापार करके सच्चे लोगों को सजा और झूठों के पक्ष में न्याय दिलवाते हैं।
(ग) शहर की भीड़ – दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफ़र करनेवाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदने चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभभरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ़ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा। शहर की भीड़ निंदा करने में बड़ी तेज़ होती है। अपने भीतर झाँक कर न देखने वाले दूसरों के विषय में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। दूसरों पर टीका-टिप्पणी करना बहुत ही आसान काम है।

प्रश्न 4:

निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए-

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर

रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता हैं और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत हैं जिससे सदैव प्यास बुझती हैं। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्ध नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती हैं, तुम स्वय विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊ।

(क) यह किसकी उक्ति है?

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

(ग) क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर-

(क) यह उक्ति वंशीधर के पिता की है।

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है, क्योंकि यह भी महीने में एक बार ही दिखाई देता है। इसके बाद यह घटता चला जाता है और अंत में वह समाप्त हो जाता है। वेतन भी एक बार पूरा आता है और खर्च होते-होते महीने के अंत तक समाप्त हो जाता है।

(ग) मैं पिता के इस वक्तव्य से सहमत नहीं हूँ। पिता का कर्तव्य पुत्र को सही रास्ते पर चलाना होता है, परंतु यहाँ पिता स्वयं ही भ्रष्टाचार के रास्ते पर चलने की सलाह दे रहा है।

प्रश्न 5:

‘नमक का दरोगा’ कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

1. धर्म की जीत/सत्य की विजय

2. कर्तव्यनिष्ठ दारोगा

आधार – धर्म की जीत/सत्य की विजय शीर्षक का आधार है कि धन के आगे धर्म झुका नहीं और अंत में पंडित अलोपीदीन ने भी धर्म के द्वार पर जाकर माथा टेक दिया।

2. कर्तव्यनिष्ठ दारोगा-वंशीधर जैसा सत्यव्रत लेने वाले युवक जो पिता के कहने और घर की दशा को देखकर भी धन के लालच में नहीं आया। उसी के चारों ओर पूरी कहानी घूमती है।

प्रश्न 6:

कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित- उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत किस प्रकार करते?

उत्तर-

कहानी के अंत में अलोपीदीन ने वंशीधर को मैनेजर नियुक्त कर दिया। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

(क) अलोपीदीन स्वयं भ्रष्ट था, परंतु उसे अपनी जायदाद को सँभालने के लिए ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी। वंशीधर उसकी दृष्टि में योग्य व्यक्ति था।

(ख) अलोपीदीन आत्मग्लानि से भी पीड़ित था। उसे ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की नौकरी छिनने का दुख था। मैं इस कहानी का अंत इस प्रकार करता-ग्लानि से भरे अलोपीदीन वंशीधर के पास गए और वंशीधर के समक्ष ऊँचे वेतन के साथ मैनेजर पद देने का प्रस्ताव रखा। यह सुन वंशीधर ने कहा-यदि आपको अपने किए पर ग्लानि हो रही है तो अपना जुर्म अदालत में कबूल कर लीजिए। अलोपीदीन ने वंशीधर की शर्त मान ली। अदालत ने सारी सच्चाई जानकर वंशीधर को

नौकरी पर रखने का आदेश दिया। वंशीधर सेवानिवृत्ति तक ईमानदारीपूर्वक नौकरी करते रहे। सेवानिवृत्ति के उपरांत अलोपीदीन ने वंशीधर को अपने समस्त कार्यभार के लिए मैनेजर नियुक्त कर लिया।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

दारोगा वंशीधर गैरकानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अंत में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता पर मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से वंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

उत्तर-

वंशीधर स्वयं सत्यनिष्ठ था, वह कहीं भी नौकरी करे अपने काम को निष्ठा से करेगा यह उसका प्रण था। अलोपीदीन या पुलिस विभाग कितना भ्रष्ट है, उससे उसे कोई मतलब नहीं था। यह उचित भी है, हम स्वयं को नियंत्रण में रखकर कहीं भी नौकरी करें हमारा मन पवित्र हो, हमें अपने कर्तव्य का ध्यान हो यही सबसे ज्यादा जरूरी है। यदि हम उसकी जगह होते तो वही करते जो उसने किया। कीचड़ में ही कमल रहता है।

प्रश्न 2:

नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर-

आज समाज में आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस., आयकर, बिक्री कर आदि की नौकरियों के लिए लोग लालायित रहते हैं, क्योंकि इन सभी पदों पर ऊपर की आमदनी के साथ-साथ पद का रोब भी मिलता है। ये देश के नीति निर्धारक भी होते हैं।

प्रश्न 3:

अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि जब आपके तर्कों ने आपके भ्रम को पुष्ट किया हो।

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 4:

'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।' वृद्ध मुंशी जी दवारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए-

(क) जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।

(ख) जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।

(ग) 'पढ़ना'-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)

उत्तर-

(क) मेरा एक साथी अनपढ़ था। उसने व्यापार करना प्रारंभ किया और शीघ्र ही बहुत धनी और समाज का प्रतिष्ठित आदमी बन गया। मैंने पढ़ाई में ध्यान दिया तथा प्रथम श्रेणी में डिग्रियाँ लेने के

बावजूद आज भी बेरोजगार हूँ। नौकरी के लिए मुझे उसकी सिफारिश करवानी पड़ी तो मुझे अपनी पढ़ाई-लिखाई व्यर्थ लगी।

(ख) पढ़ने-लिखने के बाद जब मैं कॉलेज में प्रोफेसर हो गया तो बड़े-बड़े अधिकारी, व्यापारी अपने बच्चों के दाखिले के लिए मेरे पास प्रार्थना करने आए। उन्हें देखकर मुझे अपनी पढ़ाई-लिखाई सार्थक लगी।

(ग) 'पढ़ना-लिखना' को शिक्षा के अर्थ में प्रयुक्त किया था, क्योंकि साक्षरता का अर्थ अक्षरज्ञान से लिया जाता – है। शिक्षा विषय के मर्म को समझाती है।

प्रश्न 5:

'लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर-

इस कथन से तत्कालीन समाज में लड़कियों के प्रति उपेक्षा का भाव प्रकट होता है। जिस प्रकार खेत में उगी व्यर्थ घास फूस को उखाड़ने में बेकार की मेहनत लगती है, उसी प्रकार तत्कालीन समाज में लड़कियों को पाल-पोसकर ब्याह करना बेकार की बेगार मानी जाती थी, पर आज हमारे समाज में ऐसा नहीं है।

प्रश्न 6:

'इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था।' अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपर्युक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

उत्तर-

अलोपीदीन जैसे व्यक्ति को देखकर मुझे कुढ़न-सी महसूस होगी। ऐसे व्यक्ति कानून को मखौल बनाते हैं। इन्हें सजा अवश्य मिलनी चाहिए। मुझे उन लोगों पर भी गुस्सा आता है जो उनके प्रति सहानुभूति जताते हैं।

प्रश्न 7:

समझाइए तो ज़रा-

1. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।
2. इस विस्तृत ससार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्ध अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मावलबन ही अपना सहायक था।
3. तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।
4. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।
5. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।
6. खद एंसी समझ पर पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

7. धम ने धन को पैरों तल कुचल डाला।

8. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

उत्तर-

1. नौकरी में पद को महत्व न देकर उस से होने वाली ऊपर की कमाई पर ध्यान देना चाहिए।

2. इस संसार में व्यक्ति के जीवन संघर्ष में धैर्य, बुद्ध, आत्मावलंबन ही क्रमश: मित्र, पथप्रदर्शक व सहायक का काम करते हैं। हर व्यक्ति अकेला होता है। उसे स्वयं ही कुछ पाना होता है।

3. मनुष्य के मन में भ्रम रहता है। अनेक स्थितियों में फँसे होने पर जब व्यक्ति तर्क करता है तो सारे भ्रम दूर हो जाते हैं या संदेह पुष्टि हो जाती है।

4. इसका अर्थ है कि धन से न्याय व नीति को भी प्रभावित किया जाता है। धन से मर्जी का न्याय लिया जा सकता है तथा नीतियाँ भी अपने हक की बनवाई जा सकती हैं। ये सब धन के संकेतों पर नाचने वाली कठपुतलियाँ हैं।

5. यह संसार के स्वभाव पर तीखी टिप्पणी है। संसार में लोग कुछ करें या न करें, दूसरे की निंदा करते हैं। हालाँकि निंदा करने वाले को अपनी कमी का ध्यान नहीं रहता।

6. यह बात बूढ़े मुंशी ने कही थी। उन्हें वंशीधर द्वारा रिश्वत के मौके को ठुकराने का दुख है। इस नासमझी के कारण वह उसकी पढ़ाई-लिखाई को निरर्थक मानता है।

7. धर्म मानव की दिशा निर्धारित करता है। सत्यनिष्ठा के कारण वंशीधर ने अलोपीदीन द्वारा चालीस हजार रुपये की पेशकश को ठुकरा दिया। उसके धर्म ने धन को कुचल दिया।

8. यहाँ अदालतों की कार्य शैली पर व्यंग्य है। अदालतें न्याय का मंदिर कही जाती हैं, परंतु यहाँ भी सब कुछ बिकाऊ था। धन के कारण न्याय के सभी शस्त्र सत्य को असत्य सिद्ध करने में जुट गए। सत्य की तरफ अकेला वंशीधर था। अत: वहाँ धन व धर्म में युद्ध-सा हो रहा था।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

भाषा की चित्रात्मकता, लोकोक्तियों और मुहावरों का जानदार उपयोग तथा हिंदी-उर्दू के साझा रूप एवं बोलचाल की भाषा के लिहाज़ से यह कहानी अदभुत है। कहानी में से ऐसे उदाहरण छाँट कर लिखिए और यह भी बताइए कि इनके प्रयोग से किस तरह कहानी का कथ्य अधिक असरदार बना है?

उत्तर-

इस कहानी में ऐसे अनेक उदाहरण हैं –

1. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।
2. वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है...
3. ऊपरी आय तो बहता स्रोत है।
4. पीर का मज़ार है... आदि।

प्रश्न 2:

कहानी में मासिक वेतन के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? इसके लिए आप अपनी ओर से दो-दो विशेषण और बताइए। साथ ही विशेषणों के आधार को तर्क सहित पुष्ट कीजिए।

उत्तर-
कहानी में मासिक वेतन के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया गया है-पूर्णमासी का चाँद। हमारी तरफ से विशेषण हो सकते हैं-एक दिन का सुख या खून-पसीने की कमाई।

प्रश्न 3:

(क) बाबू जी अशीवाद!

(ख) सरकारी हुक्म!

(ग) दातागंज के।

(घ) कानपुर

दी गई विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ एक निश्चित संदर्भ में निश्चित अर्थ देती हैं। संदर्भ बदलते ही अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। अब आप किसी अन्य संदर्भ में इन भाषिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हुए समझाइए।

उत्तर-

(क) बाबूजी, आशीर्वाद! – अलोपीदीन को अपने धन और मान पर इतना घमंड था कि वे किसी पदाधिकारी को भी कुछ नहीं मानते थे। नमस्कार कहने के बजाए आशीर्वाद कह रहे थे।

(ख) सरकारी हुक्म! – वंशीधर हुक्म का पालन करने में किसी भी स्थिति में पीछे हटना या ज्यादा बात करना नहीं चाहते थे।

(ग) दातागंज के!-अलोपीदीन जैसे प्रतिष्ठित के लिए इतना परिचय काफ़ी था।

(घ) कानपुर!-जब चोरी पकड़ी जा रही थी तो यथा संभव संक्षिप्त उत्तर ही देना उचित था। इन सभी अभिव्यक्तियों को बोलने के लहजे से बदला जा सकता है। अतः मौखिक अभ्यास करें।

चर्चा करें

इस कहानी को पढ़कर बड़ी-बड़ी डिग्रियों, न्याय और विदवता के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर शिक्षकों के साथ एक परिचर्चा आयोजित करें।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

● **बोधात्मक प्रशन**

प्रश्न 1:

‘नमक का दरोगा’ पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर-

‘नमक का दरोगा’ प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है, जिसमें आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का एक मुकम्मल उदाहरण है। यह कहानी धन के ऊपर धर्म की जीत है। **‘धन’** और **‘धर्म’** को क्रमश: सद्वृत्ति और असद्वृत्ति, बुराई और अच्छाई, असत्य और सत्य कहा जा सकता है। कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमश: पंडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार, कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने

धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से हटवा देते हैं, लेकिन अंत में सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी विभाग से बखास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं- 'परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, किंतु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाए रखे।'

प्रश्न 2.

वंशीधर के पिता ने उसे कौन-कौन-सी नसीहतें दीं?

उत्तर-

वंशीधर के पिता ने उसे निम्नलिखित बातों की नसीहतें दीं-

(क) ओहदे पर पीर की मज़ार की तरह नज़र रखनी चाहिए।

(ख) मज़ार पर आने वाले चढ़ावे पर ध्यान रखो।

(ग) जरूरतमंद व्यक्ति से कठोरता से पेश आओ ताकि धन मिल सके।

(घ) बेगरज आदमी से विनम्रता से पेश आना चाहिए, क्योंकि वे तुम्हारे किसी काम के नहीं।

(ङ) ऊपर की कमाई से समृद्ध आती है।

प्रश्न 3.

'नमक का दरोगा' कहानी 'धन पर धर्म की विजय' की कहानी है। प्रमाण दवारा स्पष्ट'कीजिए।

उत्तर-

पडित अलोपीदीन धन का उपासक था। उसने हमेशा रिश्वत देकर अपने कार्य करवाए। उसे लगता था कि धन के आगे सब कमज़ोर हैं। वंशीधर ने गैरकानूनी ढंग से नमक ले जा रही गाड़ियों को पकड़ लिया। अलोपीदीन ने उसे भी मोटी रिश्वत देकर मामला खत्म करना चाहा, परंतु वंशीधर ने उसकी हर पेशकश को ठुकराकर उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। अलोपीदीन के जीवन में पहली बार ऐसा हुआ जब धर्म ने धन पर विजय पाई।

लेखिका परिचय

● **जीवन परिचय**-कृष्णा सोबती का जन्म 1925 ई. में पाकिस्तान के गुजरात नामक स्थान पर हुआ। इनकी शिक्षा लाहौर, शिमला व दिल्ली में हुई। इन्हें साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया।

● **रचनाएँ**-कृष्णा सोबती ने अनेक विधाओं में लिखा। उनके कई उपन्यासों, लंबी कहानियों और संस्मरणों ने हिंदी के साहित्यिक संसार में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति सुनिश्चित की है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

उपन्यास-जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम।

कहानी-संग्रह-डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी औंधेरे के।

शब्दचित्र, संस्मरण-हम-हशमत, शब्दों के आलोक में।

● **साहित्यिक परिचय**-हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। वे मानती हैं कि कम लिखना विशिष्ट लिखना है। यही कारण है कि उनके संयमित लेखन और साफ-सुथरी रचनात्मकता ने अपना एक नित नया पाठक वर्ग बनाया है। उन्होंने हिंदी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं, जिन्हें अमर कहा जा सकता है; जैसेमित्रो, शाहनी, हशमत आदि। भारत-पाकिस्तान पर जिन लेखकों ने हिंदी में कालजयी रचनाएँ लिखीं, उनमें कृष्णा सोबती का नाम पहली कतार में रखा जाएगा। यह कहना उचित होगा कि यशपाल के **झूठा-सच**, राही मासूम रज़ा के **आधा गाँव** और भीष्म साहनी के **तमस** के साथ-साथ कृष्णा सोबती का **जिंदगीनामा** इस प्रसंग में विशिष्ट उपलब्धि है। संस्मरण के क्षेत्र में **हम-हशमत** कृति का विशिष्ट स्थान है। इसमें उन्होंने अपने ही एक-दूसरे व्यक्तित्व के रूप में हशमत नामक चरित्र का सृजन कर एक अद्भुत प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इनके भाषिक प्रयोग में विविधता है। उन्होंने हिंदी की कथा-भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है। संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन, पंजाबी की जिंदादिली, ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में मौजूद हैं।

पाठ का सारांश

मियाँ नसीरुद्दीन शब्दचित्र **हम-हशमत** नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोट्री पकाने की कला और उसमें अपनी खानदानी महारत बताते हैं। वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

लेखिका बताती है कि एक दिन वह मटियामहल के गद्वैया मुहल्ले की तरफ निकली तो एक अँधेरी व मामूली-सी दुकान पर आटे का ढेर सनते देखकर उसे कुछ जानने का मन हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि यह खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान है। ये छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं। मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी पी रहे थे। उनके चेहरे पर अनुभव और आँखों में चुस्ती व माथे पर कारीगर के तेवर थे।

लेखिका के प्रश्न पूछने की बात पर उन्होंने अखबारों पर व्यंग्य किया। वे अखबार बनाने वाले व पढ़ने वाले दोनों को निठल्ला समझते हैं। लेखिका ने प्रश्न पूछा कि आपने इतनी तरह की रोटियाँ

बनाने का गुण कहाँ से सीखा? उन्होंने बेपरवाही से जवाब दिया कि यह उनका खानदानी पेशा है। इनके वालिद मियाँ बरकत शाही नानबाई थे और उनके दादा आला नानबाई मियाँ कल्लन थे। उन्होंने खानदानी शान का अहसास करते हुए बताया कि उन्होंने यह काम अपने पिता से सीखा। नसीरुद्दीन ने बताया कि हमने यह सब मेहनत से सीखा। जिस तरह बच्चा पहले अलिफ से शुरू होकर आगे बढ़ता है या फिर कच्ची, पक्की, दूसरी से होते हुए ऊँची जमात में पहुँच जाता है, उसी तरह हमने भी छोटे-छोटे काम-बर्तन धोना, भट्ठी बनाना, भट्ठी को आँच देना आदि करके यह हुनर पाया है। तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है।
खानदान के नाम पर वे गर्व से फूल उठते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार बादशाह सलामत ने उनके बुर्जुगों से कहा कि ऐसी चीज बनाओ जो आग से न पके, न पानी से बने। उन्होंने ऐसी चीज बनाई और बादशाह को खूब पसंद आई। वे बड़ाई करते हैं कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। लेखिका ने इस कहावत की सच्चाई पर प्रश्नचिह्न लगाया तो वे भड़क उठे। लेखिका जानना चाहती थी कि उनके बुजुर्ग किस बादशाह के यहाँ काम करते थे। अब उनका स्वर बदल गया। वे बादशाह का नाम स्वयं भी नहीं जानते थे। वे इधर-उधर की बातें करने लगे। अंत में खीझकर बोले कि आपको कौन-सा उस बादशाह के नाम चिट्ठी-पत्री भेजनी है।
लेखिका से पीछा छुड़ाने की गरज से उन्होंने बब्बन मियाँ को भट्टी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका ने उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे उन्हें मजदूरी देते हैं। लेखिका ने रोटियों की किस्में जानने की इच्छा जताई तो उन्होंने फटाफट नाम गिनवा दिए। फिर तुनक कर बोले-तुनकी पापड़ से ज्यादा महीन होती है। फिर वे यादों में खो गए और कहने लगे कि अब समय बदल गया है। अब खाने-पकाने का शौक पहले की तरह नहीं रह गया है और न अब कद्र करने वाले हैं। अब तो भारी और मोटी तंदूरी रोटी का बोलबाला है। हर व्यक्ति जल्दी में है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 22

साहबों-दोस्तों। अपन-हम। हज़ारों-हजार-अनगिनत। मसीहा-देवदूत। धूमधड़क्के-भीड़। नानबाई-रोटी बनाने और बेचने वाला। लुत्फ-आनंद। अंदाज-ढंग। आड़े-तिरछे। निहायत-बिल्कुल। पटापट-पट-पट की आवाज़। सनते-मलते। काइयाँ-चालाकी। पेशानी-माथा। तेवर-मुद्रा। पंचहज़ारी-पाँच हज़ार सैनिकों का अधिकारी। अखबारनवीस-पत्रकार। खुराफ़ात-शरारत।

पृष्ठ संख्या 23

निठल्ला-खाली। किस्म-प्रकार। इल्म-ज्ञान। हासिल-प्राप्त। कंचे-पुतली। तरेरकर-तानकर। नगीनासाज़-नगीना जड़ने वाला। आईनासाज-दर्पण बनाने वाला। मीनासाज-सोने-चाँदी पर रंग करने वाला। रफूगर-फटे कपड़ों के धागे जोड़कर पहले जैसा बनाने वाला। रँगरेज़-कपड़े रंगने वाला। तंबोली-पान लगाने वाला। फरमाना-कहना। खानदानी-पारिवारिक। पेशा-धंधा। वालिद-पिता। उस्ताद-गुरु। अख्तियार करना-स्वीकार करना।

पृष्ठ संख्या 24

हुनर-कला। मरहूम-स्वर्गीय उठ जाने-मृत्यु हो जाने। ठीया-जगह। लमहा-क्षण। आला-श्रेष्ठ। नसीहत-सीख। बजा फरमाना-ठीक कहना। कश खींचना-साँस खींचना। अलिफ-बे-जीम-फारसी लिपि के अक्षरों के नाम। सिर पर धरना-सिर पर मारना। शागिर्द-चेला। परवान करना-उन्नति की तरफ बढ़ना।

पृष्ठ संख्या 25

मदरसा-स्कूल। कच्ची-औपचारिक कक्षा, पहली कक्षा से पहले की पढ़ाई। जमात-श्रेणी। दागना-प्रश्न करना। मैंजे-कुशल तरीके से।

पृष्ठ संख्या 26

जिक्र-वर्णन। बहुतेरे-बहुत अधिक। चक्कर काटना-घूमते रहना। जहाँपनाह-राजा। रंग लाना-मजेदार बात कहना बेसब्री-अधीरता। रुखाई-रुखापन। इत्ता-इतना। गढ़ी-रची। करतब-कार्य।

पृष्ठ संख्या 27

लौंडिया-लड़की। रूमाली-रूमाल की तरह बड़ी और पतली रोटी। जहमत उठाना-कष्ट उठाना। कूच करना-मृत्यु होना। मोहलत-समय सीमा। मज़मून-विषय। शाही बावचीखाना-राजकीय भोजनालय। बेरुखी-उपेक्षा से। बाल की खाल उतारना-अधिक बारीकी में जाना। खिसियानी हँसी-शर्म से हँसना। वक्त-समय। खिल्ली उड़ाना-मज़ाक उडाना। रुक्का भेजना-संदेश भेजना।

पृष्ठ संख्या 28

बिटर-बिटर-एकटक। अंधड़-रेतीली आँधी, तीव्र भाव। आसार-संभावना। महीन-पतली। कौंधना-प्रकट होना। गुमशुदा-भूली हुई। कद्रदान-कला के पारखी।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. साहबों, उस दिन अपन मटियामहल की तरफ से न गुज़र जाते तो राजनीति, साहित्य और कला के हज़ारों-हज़ार मसीहों के धूम-धड़क्के में नानबाइयों के मसीहा मियाँ नसीरुद्दीन को कैसे तो पहचानते और कैसे उठाते लुत्फ उनके मसीही अदाज़ का!
हुआ यह कि हम एक दुपहरी जामा मस्जिद के आड़े पड़े मटियामहल के गद्वैया मुहल्ले की ओर निकल गए। एक निहायत मामूली अँधेरी-सी दुकान पर पटापट आटे का ढेर सनते देख ठिठके। सोचा, सेवइयों की तैयारी होगी, पर पूछने पर मालूम हुआ खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान पर खड़े हैं। मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए। (पृष्ठ-22)

प्रश्न

1. 'हज़ारों-हज़ार मसीहों के धूम-धड़ाके ' से क्या अभिप्राय हैं?
2. नानबाई किसे कहते हैं? यहाँ किस नानबाई का जिक्र हुआ है?
3. मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान कहाँ स्थित थी?

उत्तर-

1. इसका अभिप्राय यह है कि दिल्ली में राजनीति, साहित्य और कला में हजारों प्रतिभाशाली लोग अपनी प्रतिभा से हलचल बनाए रखते हैं।
2. नानबाई उस व्यक्ति को कहते हैं जो कई तरह की रोटियाँ बनाने और बेचने का काम करता है। यहाँ मियाँ नसीरुद्दीन नामक खानदानी नानबाई का जिक्र हुआ है।
3. मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान जामा मस्जिद के पास मटियामहल के गद्वैया मुहल्ले में थी।

2. मियाँ नसीरुद्दीन ने पंचहज़ारी अंदाज़ से सिर हिलाया-'निकाल लेंगे वक्त थोड़ा, पर यह तो कहिए, आपको पूछना क्या है? 'फिर घूरकर देखा और जोड़ा-'मियाँ, कहीं अखबारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोजियों की खुराफात है। हम तो अखबार बनानेवाले और अखबार पढ़नेवाले-दोनों

को ही निठल्ला समझते हैं। हाँ-कामकाजी आदमी को इससे क्या काम है। खैर, आपने यहाँ तक आने की तकलीफ़ उठाई ही है तो पूछिए-क्या पूछना चाहते हैं!' " (पृष्ठ-22-23)

प्रश्न

1. पचहजारी अदाज से क्या अभिप्राय है?
2. मियाँ ने लेखिका को घूरकर क्यों देखा?
3. अखबार वालों के बारे में उनकी क्या राय है?

उत्तर-

1. पंचहजारी अंदाज-बड़े सेनापतियों जैसा अंदाज। मुगलों के समय में पाँच हजार सिपाहियों के अधिकारी को पंचहजारी कहते थे। यह ऊँचा पद होता था। नसीरुद्दीन में भी उस पद की तरह गर्व व अकड़ थी।
2. मियाँ नसीरुद्दीन को शक था कि कहीं लेखिका अखबार वाली तो नहीं हैं। वे उन्हें खुराफाती मानते हैं जो खोज करते रहते हैं। इस कारण उन्होंने लेखिका को घूरकर देखा।
3. अखबार वालों के बारे में मियाँ की राय पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। वे अखबार बनाने वालों के साथ-साथ अखबार पढ़ने वालों को भी निठल्ला मानते हैं। इससे लोगों को कोई फायदा नहीं मिलता।

3. मियाँ नसीरुद्दीन ने आँखों के कंचे हम पर फेर दिए। फिर तरेरकर बोले-'क्या मतलब? पूछिए साहब-नानबाई इल्म लेने कहीं और जाएगा? क्या नगीनासाज़ के पास? क्या आईनासाज़ के पास? क्या मीनासाज़ के पास? या रफूगर, रैंगरेज़ या तेली-तंबोली से सीखने जाएगा? क्या फरमा दिया साहब-यह तो हमारा खानदानी पेशा ठहरा। हाँ, इल्म की बात पूछिए तो जो कुछ भी सीखा, अपने वालिद उस्ताद से ही। मतलब यह कि हम घर से न निकले कि कोई पेशा अख्तियार करेंगे। जो बाप-दादा का हुनर था, वही उनसे पाया और वालिद मरहूम के उठ जाने पर बैठे उन्हीं के ठीये पर!' (पृष्ठ-23-24)

प्रश्न

1. मियाँ ने लखिका को अखें तरेरकर क्यों उत्तर दिया
2. मियाँ ने किन-किन खानदानी व्यवसायों का उदाहरण दिया? क्यों?
3. मियाँ ने नानबाई का काम क्यों किया?

उत्तर-

1. मियाँ से जब लेखिका ने पूछा कि आपने नानबाई का काम किससे सीखा तो उन्हें क्रोध आ गया। उन्हें यह प्रश्न ही गलत लगा। वे अपनी आँखें तरेरकर अपनी प्रतिक्रिया जता रहे थे।
2. मियाँ ने नगीनासाज़, आईनासाज़, मीनासाज़, रफूगर, रैंगरेज व तेली-तंबोली व्यवसायों का उदाहरण दिया। उन्होंने लेखिका को समझाया कि इन लोगों के पास नानबाई का ज्ञान नहीं है। खानदानी पेशे को अपने बुर्जुगों से ही सीखा जाता है।
3. मियाँ ने नानबाई का काम किया, क्योंकि यह उनका खानदानी पेशा था। इनके पिता व दादा मशहूर नानबाई थे। मियाँ ने भी उसी परंपरा को आगे बढ़ाया।

4. मियाँ कुछ देर सोच में खोए रहे। सोचा पकवान पर रोशनी डालने को है कि नसीरुद्दीन साहिब बड़ी रुखाई से बोले-'यह हम न बतावेंगे। बस, आप इत्ता समझ लीजिए कि एक कहावत है न कि

खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। कहावत जब भी गढ़ी गई हो, हमारे बुजुर्गों के करतब पर ही पूरी उतरती है।' मज़ा लेने के लिए टोका-'कहावत यह सच्ची भी है कि.।' मियाँ ने तरेरा-'और क्या झूठी है? आप ही बताइए, रोटी पकाने में झूठ का क्या काम! झूठ से रोटी पकेगी? क्या पकती देखी है कभी! रोटी जनाब पकती है आँच से, समझे!' (पृष्ठ-26)

प्रश्न

1. मियाँ नसीरुद्दीन ने किस चीज के लिए कहा कि-यह हम न बतावेंगे?
2. मियाँ किस सोच में खो गए?
3. मियाँ किस बात का दावा करते हैं?

उत्तर-

1. मियाँ नसीरुद्दीन ने अपने पुरखों के करतबों का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने बादशाह को ऐसी चीज खिलाई जो न आग से और न पानी से पकी थी। लेखिका ने जब चीज का नाम पूछा तो उन्होंने बेरुखाई से नाम बताने से इंकार कर दिया।
2. मियाँ से जब अद्‌भुत चीज के बारे में पूछा गया तो वे सोच में पड़ गए। वास्तव में मियाँ को ऐसी चीज के बारे में पता ही नहीं था। उन्होंने अपने बुजुर्गों की प्रशंसा के लिए यह बात कह दी थी।
3. मियाँ इस बात का दावा करते हैं कि खानदानी नानबाई कुछ भी पका सकता है। रोटी आँच से पकती है, झूठ से नहीं।

5. 'अजी साहिब, क्यों बाल की खाल निकालने पर तुले हैं!' कह दिया न कि बादशाह के यहाँ काम करते थे-सो क्या काफी नहीं?'

हम खिसियानी हँसी हँसे-'है तो काफ़ी, पर ज़रा नाम लेते तो उसे वक्त से मिला लेते।'

'वक्त से मिला लेते-खूब! पर किसे मिलाते जनाब आप वक्त से?'-मियाँ हँसे जैसे हमारी खिल्ली उड़ाते हों।

'वक्त से वक्त को किसी ने मिलाया है आज तक! खैर-पूछिए-किसका नाम जानना चाहते हैं? दिल्ली के बादशाह का ही ना! उनका नाम कौन नहीं जानता-जहाँपनाह बादशाह सलामत ही न!' (पृष्ठ-27)

प्रश्न

1. मियाँ किस बात से भड़क उठे?
2. मियाँ लेखिका की बात से क्यों खीझ गए?
3. लेखिका ने बादशाह का नाम क्यों पूछा?

उत्तर-

1. मियाँ ने बताया कि उनके पूर्वज बादशाह के नानबाई थे तो लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा। इस बात परवे भड़क उठे।
2. लेखिका उनसे यह जानना चाहती थी कि उनके पूर्वज दिल्ली के किस बादशाह के यहाँ काम करते थे। मियाँ को इसका जवाब नहीं पता था। लेखिका द्वारा बार-बार यह प्रश्न पूछे जाने पर वे खीझ उठे।

3. लेखिका बादशाह का नाम जानना चाहती थी ताकि उसके समय से मियाँ के व्यवसाय के काल का पता चल सके और मियाँ के कथन की पुष्टि हो सके।

6. फिर तेवर चढ़ा हमें घूरकर कहा-'तुनकी पापड़ से ज़्यादा महीन होती है, महीन। हाँ किसी दिन खिलाएँगे, आपको।' एकाएक मियाँ की आँखों के आगे कुछ कौंध गया। एक लंबी साँस भरी और किसी गुमशुदा याद को ताज़ा करने को कहा-'उतर गए वे ज़माने। और गए वे कद्रदान जो पकाने-खाने की कद्र करना जानते थे। मियाँ अब क्या रखा है. निकाली तंदूर से-निगली और हज़म!' (पृष्ठ-28)

प्रश्न

1. तुनकी क्या है? उसकी विशेषता बताइए।
2. मियाँ के आगे क्या काँध गया?
3. 'उतर गए वे जमाने।' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर-

1. तुनकी विशेष प्रकार की रोटी है। यह पापड़ से भी अधिक पतली होती है।
2. मियाँ को अपने पुराने जमाने के दिन याद आने लगे जब लोग उनकी दुकान से तरह-तरह की रोटियाँ लेने आते थे।
3. इसका अर्थ है कि पहले जमाने में लोग कलाकारों की कद्र करते थे। वे पकाने वालों की मेहनत, कलाकारी, योग्यता आदि का मान करते थे। आज जमाना बदल गया। अब किसी के पास समय नहीं है। हर व्यक्ति केवल पेट भरने का काम करता है। उसे स्वाद की कोई परवाह नहीं है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

मियाँ नसीरुददीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है क्योंकि वे मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला का बखान करते थे। वे नानबाई हुनर में माहिर थे। उन्हें छप्पन तरह की रोटियाँ बनानी आती थी। यह तीन पीढियों से उनका खानदानी पेशा था। उनके दादा और पिता बादशाह सलामत के यहाँ शाही बावर्ची खाने में बादशाह की खिदमत किया करते थे। मियाँ रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है।

प्रश्न 2:

लेखिका मियाँ नसीरुददीन के पास क्यों गई थी?

उत्तर-

लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास इसलिए गई थी ताकि वे रोटी बनाने की कारीगरी को जाने तथा उसे लोगों को बता सके। मियाँ छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर थे। वह उनकी इस कारीगरी का रहस्य भी जानना चाहती थी। इसलिए उसने मियाँ से अनेक प्रश्न पूछे।

प्रश्न 3:

बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुददीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन अपनी कला में माहिर सुप्रसिद्ध नानबाई थे। वे स्वभाव से बड़े बातूनी और अपनी तारीफ़ स्वयं करनेवाले भी थे। बातचीत के दौरान उन्होंने लेखक को बताया कि तीन पीढ़ियों से वे खानदानी नानबाई हैं। उनके दादा और वालिद मरहूम बादशाह सलामत के शाही बावर्चीखाने में ऐसे पकवान पकाया करते थे कि बादशाह सलामत खूब खाते और सराहते थे। इस पर लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा तो वे नाराज होकर बोले क्या कीजिएगा? कोई चिट्ठी-रुक्का भेजना है? और यह कहकर वे उखड़ गए? ऐसा जान पड़ता है कि बादशाह के विषय में वे झूठ कह रहे थे। इसी कारण रुखाई से अपने काम में लग गए।

प्रश्न 4:

मियाँ नसीरुददीन के चेहरे पर किसी दबे हुए अंधड़ के आसार देख यह मजूमून न छेड़ने का फैसला किया-इस कथन के पहले और बाद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन से बादशाह का नाम पूछा तो वे सही उत्तर नहीं दे पाए। लेखिका द्वारा बहादुरशाह जफ़र का नाम लेने पर वह चिढ़ गए और बोले कि यही नाम लिख लीजिए, आपको कौन-सी बादशाह के नाम चिट्ठी भेजनी है। वह लेखिका की बातों से उकता गए थे इसलिए उन्होंने उसे नज़रअंदाज़ करने के लिए अपने कारीगर बब्बन मियाँ को भट्ठी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका उनके बेटे-बेटियों के बारे में जानना चाहती थी, परंतु मियाँ को चिढ़ता देख वह चुप रह गई, फिर उसने पूछा कि कारीगर लोग आपकी शागिर्दी करते हैं? तो मियाँ ने गुस्से में उत्तर दिया कि खाली शागिर्दी ही नहीं, दो रुपये मन आटा और चार रुपये मन मैदा के हिसाब से इन्हें गिन-गिन कर मजूरी भी देता हूँ। लेखिका द्वारा रोटियों के नाम पूछने पर मियाँ ने पल्ला झाड़ते हुए कुछ रोटियों के नाम गिना दिए। इसके बाद लेखिका ने उनके चेहरे पर तनाव देखा।

प्रश्न 5:

पाठ में मियाँ नसीरुददीन का शब्दचित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर-

पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्दचित्र लेखिका ने इस प्रकार खींचा है-हमने जो अंदर झाँका तो पाया, मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मज़ा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ, भोलापन और पेशानी पर मँजे हुए कारीगर के तेवर।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

मियाँ नसीरुददीन की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन की सबसे अच्छी बात है–अपने हुनर में माहिर होना। आज जब अधिकांश लोग अपने पारंपरिक पेशे को छोड़ते जा रहे हैं तो ऐसे लोग ही कला को जीवित रखते हैं। दूसरी बात जो उन्होंने कही थी कि 'सीख और शिक्षा क्या? काम तो करने से आता है'-कर्म करने में विश्वास

रखना एक बड़ी बात है। आज लोग आरामतलबी में पड़कर अपनी क्षमता खो देते हैं, पर वे बुजुर्ग होकर भी व्यस्त थे। और तीसरी बात, वे अखबारवालों से दूर ही रहना पसंद करते थे।

प्रश्न 2:

तालीम की तालीम ही बड़ी चीज़ होती है-यहाँ लेखिका ने तालीम शब्द का दो बार प्रयोग क्यों किया है? क्या आप दूसरी बार आए तालीम शब्द की जगह कोई अन्य शब्द रख सकते हैं? लिखिए।

उत्तर-

यहाँ 'तालीम' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। पहले 'तालीम' का अर्थ है-शिक्षा या प्रशिक्षण। दूसरे 'तालीम' का अर्थ है-पालन करना या आचरण करना। इसका अर्थ यह है कि जो शिक्षा पाई जाए, उसका पालन करना अधिक जरूरी है। दूसरी बार आए तालीम की जगह हम 'पालन' शब्द भी लिख सकते हैं।

प्रश्न 3:

मियाँ नसीरुददीन तीसरी पीढ़ी के हैं जिसने अपने खानदानी व्यवसाय को अपनाया। वर्तमान समय में प्राय: लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर-

आज के परिवेश में अनेक हुनरमंद लोग अपनी संतान को उसी कला को व्यवसाय बनाने की सलाह नहीं देते या संतान स्वयं ऐसा नहीं चाहती। इसका मुख्य कारण है कि खानदानी व्यवसाय में धन-लाभ के अवसर अपेक्षाकृत कम रहते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि आजकल खानदानी हुनर के प्रशंसक नहीं रहे। आधुनिकता और भौतिकता के युग में कला को मान नहीं मिल रहा।

प्रश्न 4:

मियाँ, कहीं अखबारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोज़ियों की खुराफात है-अखबार की भूमिका को देखते हुए इस पर टिप्पणी करें।

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन के अनुसार अखबार बनाने वाला व पढ़ने वाला-दोनों निठल्ले हैं। उनका यह दृष्टिकोण गलत है। वे उन्हें खोजियों की खुराफ़ात कहते हैं। यह कथन ठीक है। पत्रकार नए-नए तथ्यों को प्रकाश में लाते हैं। इससे लोगों का शोषण खत्म होता है। नयी खोजों से ज्ञान का प्रसार होता है, परंतु निरर्थक या भ्रम फैलाने वाली बातों को तूल देना सामाजिक दृष्टि से गलत है। सनसनीखेज खबरों से शांति भंग होती है।

प्रश्न 5:

पकवानों को जानें

- पाठ में आए रोटियों के अलग-अलग नामों की सूची बनाएँ और इनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

तीन चार वाक्यों में अनुकूल प्रसंग तैयार कर नीचे दिए गए वाक्यों का इस्तेमाल करें-

(क) पचहज़ारी अदाज़ से सिर हिलाया।

(ख) अखों के कच्चे हम पर फेर दिए।

(ग) आ बैठे उन्हीं के ठीये पर।

उत्तर-

(क) हमारे पड़ोस में एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति रहते थे। वे लोगों के हर कष्ट में साथ होते थे। समाजसेवा के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे! मैंने एक दिन उनकी समाजसेवा की प्रशंसा की तो उन्होंने पंचहज़ारी अंदाज़ में सिर हिलाया।

(ख) इस पर वे अपने कार्यों की बड़ाई करने लगे। तभी मैंने उनके कुछ कारनामे बताए जिनमें वे समाज-सेवा के नाम अपनी सेवा करते हैं। इस पर वे बौखला गए और अपनी आँखों के कंचे हम पर फेर दिए।

(ग) वे सज्जन चाहे अपना फायदा देखते हों, परंतु समाज-सेवक अवश्य हैं। वे क्षेत्र के प्रसिद्ध समाज-सेवी के चेले हैं। उनके जाने के बाद वे उन्हीं के ठीये पर आ बैठे।

प्रश्न 2:

बिटर-बिटर देखना-यहाँ देखने के एक खास तरीके को प्रकट किया गया है? देखने संबंधी इस प्रकार के चार क्रियाविशेषणों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उत्तर-

1. **टुकुर-टुकुर देखना** – बकरी सहमकर कसाई की ओर टुकुर-टुकुर देख रही थी।
2. **घूर-घूरकर देखना** – दरोगा लगातार जुम्मन को घूर घूरकर देख रहा था।
3. **चोरी-चोरी देखना** – तुम जब भी मुझे चोरी-चोरी देखते हो, मुझे अच्छा लगता है।
4. **कनखियों से देखना** – वह मुझे कभी मुँह उठाकर नहीं देखता, जब भी देखता है, कनखियों से देखता है।

प्रश्न 3:

नीचे दिए वाक्यों में अर्थ पर बल देने के लिए शब्द-क्रम परिवर्तित किया गया है। सामान्यत: इन वाक्यों को किस क्रम में लिखा जाता है? लिखें।

(क) मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए।

(ख) निकाल लगे वक्त थोड़ा।

(ग) दिमाग में चक्कर काट गई है बात।

(घ) रोटी जनाब पकती हैं अच स।

उत्तर-

(क) मियाँ छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं।

(ख) थोड़ा वक्त निकाल लेंगे।

(ग) बात दिमाग में चक्कर काट गई है।

(घ) जनाब! रोटी आँच से पकती है।

अन्य हल प्रश्न

● बोधात्मक प्रशन

प्रश्न 1:

‘मियाँ नसीरुददीन’ पाठ का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर-

मियाँ नसीरुददीन शब्दचित्र हम-हशमत नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज़ से रोटी पकाने की कला और उसमें अपने खानदानी महारत को बताते हैं। वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो ९ ` | | अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

प्रश्न 2:

मियाँ नसीरुददीन के मन में कौन-सा दर्द छिपा है?

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन को लोगों की बदली रुचि से दुख है। पहले लोग कला की कद्र करते थे। वे पकाने वाले का सम्मान भी करते थे। अब जमाना बहुत तेजी से बदल रहा है। कमाने के साथ चलने की होड़ मची है। ऐसे में खाने वाला और पकाने वाला-दोनों जल्दी में हैं। इस दृष्टिकोण के कारण देश की पुरानी कलाएँ दम तोड़ रही हैं।

प्रश्न 3:

अखबार वालों के प्रति मियाँ नसीरुददीन का दृष्टिकोण कैसा है?

उत्तर-

मियाँ नसीरूददीन का मानना है कि अखबार छापने वाले व पढ़ने वाले-दोनों बेकार होते हैं। ये वक्त खराब करते हैं। वे खबरों को मसाला लगाकर छापते हैं। मियाँ अखबार पढ़ने से ज्यादा महत्व काम को देते हैं। वे अखबारों की खोजी प्रवृत्ति से भी चिढ़ते हैं।

प्रश्न 4:

मियाँ नसीरुददीन के अनुसार सच्ची तालीम क्या है?

उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन के अनुसार सच्ची तालीम व्यावहारिक प्रशिक्षण है। यदि वे बर्तन माँजना, भट्ठी सुलगाना नहीं सीखते तो वे अच्छे नानबाई नहीं बन पाते। केवल कागजी या जबानी बातों से काम नहीं सीखा जाता है। शिक्षा को अपनाना अधिक महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 4:

मियाँ ने पढ़ाई के कितने तरीके बताए हैं?

उत्तर-

मियाँ ने पढ़ाई के दो तरीके बताएँ हैं-पहला किताबी, दूसरा व्यावहारिक। पहले तरीके में उस्ताद चेले को एक-एक शब्द का उच्चारण करवाकर पढ़ाता है। दूसरे तरीके में काम करते हुए सिखाया जाता है। इसमें छोटे काम पहले करवाए जाते हैं, फिर बड़े काम सिखाए जाते हैं।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय**-सत्यजित राय का जन्म कोलकाता में 1921 ई. में हुआ। इन्होंने भारतीय सिनेमा को कलात्मक ऊँचाई प्रदान की। इनके निर्देशन में पहली फीचर फिल्म पथेर पांचाली (बांग्ला) 1955 में प्रदर्शित हुई। इससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्होंने फिल्मों के जरिए केवल फिल्म विधा को समृद्ध ही नहीं किया, बल्कि इस माध्यम के बारे में निर्देशकों और आलोचकों के बीच एक समझ विकसित करने में भी अपना योगदान दिया।
इनके कार्यों को देखते हुए इन्हें कई पुरस्कार मिले। इन्हें फ्रांस का लेजन डी ऑनर, जीवन की उपलब्धियों पर आस्कर और भारत रत्न सहित फिल्म जगत का हर महत्वपूर्ण सम्मान मिला।
इनकी मृत्यु 1992 ई. में हुई।

● **रचनाएँ**-सत्यजीत राय फिल्म निर्देशक तो थे ही, वे बाल व किशोर साहित्य भी लिखते थे। इनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैंप्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी आदि। (बांग्ला), शतरंज के खिलाडी, सद्गति (हिंदी)।

● **साहित्यिक विशेषताएँ**-सत्यजित राय ने तीस के लगभग फीचर फिल्में बनाई। इनकी ज्यादातर फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं। इनके पसंदीदा साहित्यकारों में बांग्ला के विभूति भूषण बंद्योपाध्याय से लेकर हिदी के प्रेमचंद तक शामिल हैं। फिल्मों के पटकथा-लेखन, संगीत-संयोजन एवं निर्देशन के अलावा इन्होंने बांग्ला में बच्चों और किशोरों के लिए लेखन का काम भी बहुत संजीदगी के साथ किया है। इनकी कहानियों में जासूसी रोमांच के साथ-साथ पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षियों का सहज संसार भी है।

पाठ का सारांश

अपू के साथ ढाई साल नामक संस्मरण **पथेर पांचाली** फिल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फिल्म के इतिहास में एक बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फिल्म के सृजन और उनके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है। यही नहीं, जो फिल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चुधियाती हुई जान पड़ती है, उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है, जिसमें साधनहीनता के बीच अपनी कलादृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। यह पाठ मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखा गया है जिसका अनुवाद **विलास गिते** ने किया है।
किसी फिल्मकार के लिए उसकी पहली फिल्म एक अबूझ पहेली होती है। बनने या न बन पाने की अमूर्त शंकाओं से घिरी। फिल्म पूरी होने पर ही फिल्मकार जन्म लेता है। पहली फिल्म के निर्माण के दौरान हर फिल्म निर्माता का अनुभव संसार इतना रोमांचकारी होता है कि वह उसके जीवन में बचपन की स्मृतियों की तरह हमेशा जीवंत बना रहता है। इस अनुभव संसार में दाखिल होना उस बेहतरीन फिल्म से गुजरने से कम नहीं है।
लेखक बताता है कि **पथेर पांचाली** फिल्म की शूटिंग ढाइ साल तक चली। उस समय वह विज्ञापन कंपनी में काम करता था। काम से फुर्सत मिलते ही और पैसे होने पर शूटिंग की जाती थी। शूटिंग शुरू करने से पहले कलाकार इकट्ठे करने के लिए बड़ा आयोजन किया गया। अपू की भूमिका निभाने के लिए छह साल का लड़का नहीं मिल रहा था। इसके लिए अखबार में विज्ञापन दिया। रासबिहारी एवेन्यू के एक भवन में किराए के कमरे पर बच्चे इंटरव्यू के लिए आते थे। एक सज्जन तो अपनी लड़की के बाल कटवाकर लाए थे। लेखक परेशान हो गया। एक दिन लेखक की पत्नी की नज़र पड़ोस में रहने वाले लड़के पर पड़ी और वह सुबीर बनर्जी ही 'पथेर पांचाली' में अपू बना।

फिल्म में अधिक समय लगने लगा तो लेखक को यह डर लगने लगा कि अगर अपू और दुर्गा नामक बच्चे बड़े हो गए तो दिक्कत हो जाएगी। सौभाग्य से वे नहीं बढ़े। फिल्म की शूटिंग के लिए वे पालसिट नामक गाँव गए। वहाँ रेल-लाइन के पास काशफूलों से भरा मैदान था। उस मैदान में शूटिंग शुरू हुई। एक दिन में आधी शूटिंग हुई। निर्देशक, छायाकार, कलाकार आदि सभी नए होने के कारण घबराए हुए थे। बाकी का सीन बाद में शूट करना था। सात दिन बाद वहाँ दोबारा पहुँचे तो काशफूल गायब थे। उन्हें जानवर खा गए। अत: आधे सीन की शूटिंग के लिए अगली शरद ऋतु की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

अगले वर्ष शूटिंग हुई। उसी समय रेलगाड़ी के शॉट्स भी लिए गए। कई शॉट्स होने के लिए तीन रेलगाड़ियों से शूटिंग की गई। कलाकार दल का एक सदस्य पहले से ही गाड़ी के इंजन में सवार होता था ताकि वह शॉट्स वाले दृश्य में बायलर में कोयला डालता जाए और रेलगाड़ी का धुआँ निकलता दिख सके। सफेद काशफूलों की पृष्ठभूमि पर काला धुआँ अच्छा सीन दिखाता है। इस सीन को कोई दर्शक नहीं पहचान पाया।

लेखक को धन की कमी से कई समस्याएँ झेलनी पड़ीं। फिल्म में 'भूलो' नामक कुत्ते के लिए गाँव का कुत्ता लिया गया। दृश्य में कुत्ते को भात खाते हुए दिखाया जाना था, परंतु जैसे ही यह शॉट शुरू होने को था, सूरज की रोशनी व पैसे-दोनों ही खत्म हो गए। छह महीने बाद पैसे इकट्ठे करके बोडाल गाँव पहुँचे तो पता चला कि वह कुत्ता मर गया था। फिर भूलो जैसा दिखने वाला कुत्ता पकड़ा गया और उससे फिल्म की शूटिंग पूरी की गई। लेखक को आदमी के संदर्भ में भी यही समस्या हुई। फिल्म में मिठाई बेचने वाला है-श्रीनिवास। अपू व दुर्गा के पास पैसे नहीं थे। वे मुखर्जी के घर गए जो उससे मिठाई खरीदेंगे और बच्चे मिठाई खरीदते देखकर ही खुश होंगे। पैसे के अभाव के कारण दृश्य का कुछ अंश चित्रित किया गया। बाद में वहाँ पहुँचे तो श्रीनिवास का देहांत हो चुका था। किसी तरह उनके शरीर से मिलता-जुलता व्यक्ति मिला और उनकी पीठ वाले दृश्य से शूटिंग पूरी की गई।

श्रीनिवास के सीन में भूलो कुत्ते के कारण भी परेशानी हुई। एक खास सीन में दुर्गा व अपू को मिठाई वाले के पीछे दौड़ना होता है तथा उसी समय झुरमुट में बैठे भूलो कुत्ते को भी छलाँग लगाकर दौड़ना होता है। भूलो प्रशिक्षित नहीं था, अत: वह मालिक की आज्ञा को नहीं मान रहा था। अंत में दुर्गा के हाथ में थोड़ी मिठाई छिपा कुत्ते को दिखाकर दौड़ने की योजना से शूटिंग पूरी की गई।

बारिश के दृश्य चित्रित करने में पैसे का अभाव परेशान करता था। बरसात में पैसे नहीं थे। अक्टूबर में बारिश की संभावना कम थी। वे हर रोज देहात में बारिश का इंतजार करते। एक दिन शरद ऋतु में बादल आए और धुआँधार बारिश हुई। दुर्गा व अप्पू ने बारिश में भीगने का सीन किया। ठंड से दोनों काँप रहे थे, फिर उन्हें दूध में ब्रांडी मिलाकर पिलाई गई। बोडाल गाँव में अपू-दुर्गा का घर, स्कूल, गाँव के मैदान, खेत, आम के पेड़, बाँस की झुरमुट आदि मिले। यहाँ उन्हें कई तरह के विचित्र व्यक्ति भी मिले। सुबोध दा साठ वर्ष से अधिक के थे और झोंपड़ी में अकेले रहकर बड़बड़ाते रहते थे। फिल्मवालों को देखकर उन्हें मारने की कहने लगे। बाद में वे वायलिन पर लोकगीतों की धुनें बजाकर सुनाते थे। वे सनकी थे।

इसी तरह शूटिंग के साथ वाले घर में एक धोबी था जो पागल था। वह किसी समय राजकीय मुद्दे पर भाषण देने लगता था। शूटिंग के दौरान उसके भाषण साउंड के काम को प्रभावित करता था। **पथेर पांचाली** की शूटिंग के लिए लिया गया घर खंडहर था। उसे ठीक करवाने में एक महीना लगा। इस घर के कई कमरों में सामान रखा था तथा उन्हें फिल्म में नहीं दिखाया गया था। भूपेन

बाबू एक कमरे में रिकॉर्डिंग मशीन लेकर बैठते थे। वे साउंड के बारे में बताते थे। एक दिन जब उनसे साउंड के बारे में पूछा गया तो आवाज नदारद थी। उनके कमरे से एक बड़ा साँप खिड़की से नीचे उतर रहा था। उनकी बोलती बंद थी। लोगों ने उसे मारने से रोका, क्योंकि वह वास्तुसर्प था जो बहुत दिनों से वहाँ रह रहा था।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 33

कालखंड-समय का एक हिस्सा। स्थगित-कुछ समय के लिए टालना। भाड़ा-किराया। इंटरव्यू-साक्षात्कार। नाजुक-कोमल।

पृष्ठ संख्या 34

विज्ञापन-इश्तहार। बेहाल-बुरा हाल। नामुमकिन-जो संभव न हो।

पृष्ठ संख्या 35

चित्रित-दिखाया गया। छायाकार-फोटो खींचने वाला। नवागत-नए आए हुए। बौराए हुए-घबराए हुए। कंटिन्युइटी-निरंतरता। नदारद-गायब। शॉट्स-दृश्य। केबिन-डब्बा। बॉयलर-रेल-इंजन में कोयला डालने वाला हिस्सा। अभाव-कमी।

पृष्ठ संख्या 36

निवाला-टुकड़ा। दुम-पूँछ छोर-किनारा।

पृष्ठ संख्या 37

संदर्भ-बारे में। उलझना-परेशान होना। पुकुर-सरोवर।

पृष्ठ संख्या 38

झुरमुट-झाड़ियाँ। हॉलीवुड-फिल्म उद्योग। जाया होना-खराब होना। धीरज-धैर्य। निरभ्र-बिना बादल के।

पृष्ठ संख्या 39

धुआँधार-बहुत तेज। आसरा-सहारा। ब्रांडी-शरीर को गरम रखने का पेय।

पृष्ठ संख्या 40

पाजी-दुष्ट। मुद्दा-विषय। आपति-परेशानी। सिरदर्द बनना-समस्या बनना। ध्वस्त-टूटा-फूटा।

पृष्ठ संख्या 41

रिकॉर्डिंग मशीन-दृश्य व ध्वनि सुरक्षित रखने वाली मशीन। साउंड-रिकॉर्डिस्ट-आवाज़ सुरक्षित रखने वाली मशीन को चलाने वाला। सहम जाना-डर जाना। बोलती बंद होना-मुँह से आवाज़ न निकलना। वास्तुसर्प-घर में दिखाई देने वाला सर्प।

अर्धग्रहण संबंधी प्रश्न

1. रासबिहारी एवेन्यू की एक बिल्डिंग में मैंने एक कमरा भाड़े पर लिया था, वहाँ पर बच्चे इंटरव्यू के लिए आते थे। बहुत-से लड़के आए, लेकिन अपू की भूमिका के लिए मुझे जिस तरह का लड़का चाहिए था, वैसा एक भी नहीं था। एक दिन एक लड़का आया। उसकी गर्दन पर लगा पाउडर देखकर मुझे शक हुआ। नाम पूछने पर नाजुक आवाज़ में वह बोला-'टिया'। उसके साथ आए उसके पिता जी से मैंने पूछा, 'क्या अभी-अभी इसके बाल कटवाकर यहाँ ले आए हैं?" वे सज्जन पकड़े गए। सच छिपा नहीं सके बोले, 'असल में यह मेरी बेटी है। अपू की भूमिका मिलने की आशा से इसके बाल कटवाकर आपके यहाँ ले आया हूँ।' (पृष्ठ-33)

प्रश्न

1. बच्चे इंटरव्यू के लिए कहाँ आते थे? क्यों?
2. लखक की किसकी तलाश थी?
3. फिल्मकार को किस बात पर शक हुआ

उत्तर-

1. बच्चे इंटरव्यू के लिए रासबिहारी एवेन्यू की बिल्डिंग में आते थे। यहाँ पर लेखक किराए के एक कमरे में रहता था। बच्चे यहाँ अपू की भूमिका पाने के लिए इंटरव्यू देने आते थे।
2. लेखक को एक ऐसा लड़का चाहिए था जो छह साल का हो तथा अपू की भूमिका के लिए उपयुक्त हो।
3. फिल्मकार के पास एक लड़का आया जिसकी गर्दन पर पाउडर लगा हुआ था। उसने उस लड़के से नाम पूछा तो उसने नाजुक आवाज़ में जवाब देते हुए अपना नाम टिया बताया। इस पर फिल्मकार को शक हुआ कि कहीं वह लड़की तो नहीं है।

2. फिल्म का काम आगे भी ढाई साल चलने वाला है, इस बात का अंदाज़ा मुझे पहले नहीं था। इसलिए जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, वैसे-वैसे मुझे डर लगने लगा। अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे अगर ज्यादा बड़े हो गए, तो फिल्म में वह दिखाई देगा! लेकिन मेरी खुश किस्मती से उस उम्र में बच्चे जितने बढ़ते हैं, उतने अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाला बच्चे नहीं बढ़े। इंदिरा ठाकरून की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल उम्र की चुन्नीबाला देवी ढाई साल तक काम कर सकी, यह भी मेरे सौभाग्य की बात थी। (पृष्ठ-34)

प्रश्न

1. फिल्मकार को किस बात का अदाज़ा नहीं था?
2. फिल्मकार को कैसा डर सताने लगा था?
3. चुन्नीबाला देवी कौन थी? लेखक के लिए सौभाग्य की बात क्या थी?

उत्तर-

1. फिल्मकार को यह अंदाज़ा नहीं था कि उसकी फिल्म ढाई साल में पूरी होगी। उसे फिल्म निर्माण में आने वाली कठिनाइयों का अंदाज़ा नहीं था।
2. जब फिल्म बनने में समय अधिक लगने लगा तो फिल्मकार को अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चों के बड़े होने का डर लगने लगा। इससे फिल्म में उनका रोल खत्म हो जाता और लेखक को दुबारा नए बच्चे (अपू और दुर्गा के रोल के लिए) खोजने पड़ते।
3. चुन्नीबाला देवी अस्सी वर्ष की थी। उसने फिल्म में इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाई। लेखक के लिए यह सौभाग्य था कि ढाई साल तक फिल्म का काम चला और चुन्नीबाला देवी की मृत्यु नहीं हुई।

3. सुबह शूटिंग शुरू करके शाम तक हमने सीन का आधा भाग चित्रित किया। निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री हम सभी इस क्षेत्र में नवागत होने के कारण थोड़े बौराए हुए ही थे, बाकी का सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लेकर हम घर पहुँचे। सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो वह जगह हम पहचान ही नहीं पाए! लगा. ये कहाँ आ गए हैं हम? कहाँ गए वे सारे काशफूल। बीच के सात दिनों में जानवरों ने वे सारे काशफूल खा डाले थे! अब अगर हम उस जगह

बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती! (पृष्ठ-35)

प्रश्न

1. पहले दिन सीन का आधा भाग चित्रित क्यों ही पाया?
2. लेखक ने क्या निर्णय लिया? क्यों?
3. काशफूलों के बिना शूटिंग करने में क्या कठिनाई थी?

उत्तर-

1. फिल्मकार नया था। यह गाँव भी नया था। साथ ही छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री सभी नए थे। उन्हें अपने काम करने के स्थान का पता नहीं था। अत: उचित समन्वय के अभाव में आधा भाग ही चित्रित हो पाया।
2. रेलगाड़ी का दृश्य लंबा था। दूसरे, काम करने वाले सभी व्यक्ति नए थे। अत: पूरा सीन एक बार में चित्रित नहीं हो सकता था। अत: लेखक ने शेष आधा सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लिया और वापिस लौट गए।
3. लेखक यदि काशफूलों के बिना इस जगह पर आधे सीन की शूटिंग करते तो पहले वाले आधे सीन के साथ उसका मेल नहीं बैठ सकता था। सीन में निरंतरता नहीं रह पाती।

4. उस सीन के बाकी अंश की शूटिंग हमने उसके अगले साल शरद ऋतु में, जब फिर से वह मैदान काशफूलों से भर गया, तब की। उसी समय रेलगाड़ी के भी शॉट्स लिए। लेकिन रेलगाड़ी के इतने शॉट्स थे कि एक रेलगाड़ी से काम नहीं चला। एक के बाद एक तीन रेलगाड़ियों को हमने शूटिंग के लिए इस्तेमाल किया। सुबह से लेकर दोपहर तक कितनी रेलगाड़ियाँ उस लाइन पर से जाती हैं- यह पहले ही टाइम-टेबल देखकर जान लिया था। हर एक ट्रेन एक ही दिशा में आने वाली थी। जिस स्टेशन से वे रेलगाड़ियाँ आने वाली थीं, उस स्टेशन पर हमारी टीम के अनिल बाबू थे। रेलगाड़ी स्टेशन से निकलते समय अनिल बाबू भी इंजिन-ड्राइवर की केबिन में चढ़ते थे, क्योंकि गाड़ी के शूटिंग की जगह के पास आते ही बॉयलर में कोयला डालना ज़रूरी था, ताकि काला धुआँ निकले। सफ़ेद काशफूलों की पृष्ठभूमि पर अगर काला धुआँ नहीं आया, तो दृश्य कैसे अच्छा लगेगा? (पृष्ठ-35)

प्रश्न

1. लेखक ने आधे सीन की शूटिंग कब की तथा क्यों?
2. अनिल बाबू कहाँ रुके थे? वे इंजिन ड्राइवर के केबिन में क्यों चढ़ते थे?
3. काले धुँए की जरूरत क्यों थी?

उत्तर-

1. लेखक ने रेलगाड़ी वाले दृश्य का आधा भाग शरद ऋतु में शूट किया। इस समय यह मैदान काशफूलों से भर गया।इसके लिए पूरे साल भर इंतजार किया गया।
2. अनिल बाबू उस स्टेशन पर रुके थे जहाँ से रेलगाड़ियाँ आने वाली थीं। वे इंजिन ड्राइवर के केबिन में चढ़ते थे, क्योंकि उन्हें गाड़ी के शूटिंग की जगह के समीप पहुँचते ही बॉयलर में कोयला डालना था ताकि काला धुआँ निकले।

3. इंजन से काला धुआँ निकलना जरूरी था, क्योंकि सीन की पृष्ठभूमि सफेद काशफूलों की थी। ऐसी पृष्ठभूमि पर काले धुएँ से दृश्य अच्छा बनता है।

5. सचमुच! यह कुत्ता भूलो जैसा ही दिखता था। वह भूलो से बहुत ही मिलता-जुलता था। उसके शरीर का रंग तो भूलो जैसा बादामी था ही, उसकी दुम का छोर भी भूलो के दुम की छोर जैसा ही सफेद था। आखिर यह फेंका हुआ भात उसने खाया, और हमारे उस दृश्य की शूटिंग पूरी हुई। फिल्म देखते समय यह बात किसी के भी ध्यान में नहीं आती कि एक ही सीन में हमने 'भूलो' की भूमिका में दो अलग-अलग कुत्तों से काम लिया है! (पृष्ठ-36)

प्रश्न

1. भूलों व इस कुत्ते में क्या समानता थी?
2. भूलों की भूमिका में दो अलग-अलग कुत्तों से काम क्यों लेना पड़ा?
3. फिल्म दखने से दर्शकों की किस बात का पता नहीं चला?

उत्तर-

1. भूलो कुत्ते से गाँव का कुत्ता बहुत मिलता-जुलता था। उसके शरीर का रंग भूलो जैसा बादामी, दुम का छोर भी सफेद था। इस तरह दोनों में काफी समानता थी।
2. 'पथेर पांचाली' उपन्यास में भूलो नामक कुत्ता था। लेखक ने गाँव के कुत्ते से भूलो के दृश्य फिल्माए। धन के अभाव के कारण छह महीने शूटिंग नहीं हुई। जब दोबारा शूटिंग करने गए तो पहले कुत्ते की मृत्यु हो गई थी। दृश्य को पूरा करने के लिए भूलो जैसा नया कुत्ता खोजा गया। अत: 'भूलो' की भूमिका में दो अलग-अलग कुत्तों से काम लेना पड़ा।
3. फिल्म देखने से दर्शकों को यह नहीं पता चलता कि सीन में कुत्ता बदल दिया गया है। दोनों में इतनी समानता थी कि वे उनमें अंतर महसूस नहीं कर पाते।

6. हमें ऐसा सीन लेना था, लेकिन मुश्किल यह कि यह कुत्ता कोई हॉलीवुड का सिखाया हुआ नहीं था। इसलिए यह बताना मुश्किल ही था कि वह अपू-दुर्गा के साथ भागता जाएगा या नहीं। कुत्ते के मालिक से हमने कहा था, 'अपू-दुर्गा जब भागने लगते हैं, तब तुम अपने कुत्ते को उन दोनों के पीछे भागने के लिए कहना।' लेकिन शूटिंग के वक्त दिखाई दिया कि वह कुत्ता मालिक की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है। इधर हमारा कैमरा चालू ही था। कीमती फिल्म ज़ाया हो रही थी और मुझे बार-बार चिल्लाना पड़ रहा था-'कट्! कट्!' अब यहाँ धीरज रखने के सिवा दूसरा उपाय नहीं था। अगर कुत्ता बच्चों के पीछे दौड़ा, तो ही वह उनका पालतू कुत्ता लग सकता था। आखिर मैंने दुर्गा से अपने हाथ में थोड़ी मिठाई छिपाने के लिए कहा, और वह कुत्ते को दिखाकर दौड़ने को कहा। इस बार कुत्ता उनके पीछे भागा, और हमें हमारी इच्छा के अनुसार शॉट मिला। (पृष्ठ-38)

प्रश्न

1. 'कुत्ता' का हॉलीवुड का सिखाया हुआ नहीं था का क्या तात्पर्य है?
2. लेखक को बार-बार चिल्लाना क्यों पड़ रहा था?
3. लेखक ने अपनी इच्छा के अनुसार शॉट कैसे लिया?

उत्तर-

1. लेखक के कहने का तात्पर्य है कि हॉलीवुड में जानवरों को प्रशिक्षित करके ही उनका प्रयोग किया जाता है। इससे वे ट्रेनर की आज्ञा का पालन करते हैं, परंतु लेखक के पास ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। उसे गाँव के स्थानीय कुत्ते से फिल्म की शूटिंग पूरी करनी थी। अत: उस कुत्ते से इच्छित कार्य नहीं करवाया जा सकता।
2. लेखक कुत्ते के भागने का सीन शूट कर रहा था, परंतु कुत्ता वांछित प्रतिक्रिया ही नहीं दिखा रहा था। कैमरा चालू होने से कीमती फिल्म की बर्बादी हो रही थी। इस कारण लेखक को बार-बार 'कट-कट' चिल्लाना पड़ रहा था।
3. 'भूलो' कुत्ता अपू व दुर्गा के पीछे नहीं दौड़ रहा था। अंत में लेखक ने दुर्गा से अपने हाथ में थोड़ी मिठाई छिपाने तथा कुत्ते को दिखाकर दौड़ने को कहा। यह युक्ति काम आई और लेखक को अपनी इच्छानुसार शॉट मिल गया।

7. पैसों की कमी के कारण ही बारिश का दृश्य चित्रित करने में बहुत मुश्किल आई थी। बरसात के दिन आए और गए, लेकिन हमारे पास पैसे नहीं थे, इस कारण शूटिंग बंद थी। आखिर जब हाथ में पैसे आए, तब अक्टूबर का महीना शुरू हुआ था। शरद ऋतु में, निरभ्र आकाश के दिनों में भी शायद बरसात होगी, इस आशा से मैं अपू और दुर्गा की भूमिका करने वाले बच्चे, कैमरा और तकनीशियन को साथ लेकर हर रोज़ देहात में जाकर बैठा रहता था। आकाश में एक भी काला बादल दिखाई दिया, तो मुझे लगता था कि बरसात होगी। मैं इच्छा करता, वह बादल बहुत बड़ा हो जाए और बरसने लगे। (पृष्ठ-38-39)

प्रश्न

1. लंखक के सामने क्या समस्य थी?
2. लेखक हर रोज देहात में क्यों जाकर बैठता था?
3. लखक प्रकृति के नियम के विपरीत क्या कामना कर रहा था और क्यों?

उत्तर-

1. लेखक के पास पैसे की कमी थी और उसे बारिश का दृश्य चित्रित करना था। बरसात के मौसम में पैसे न होने के कारण वह शूटिंग न कर पाया।
2. . लेखक को बारिश का दृश्य शूट करना था। अक्टूबर में पैसे होने के बाद वह कलाकारों व तकनीशियन के साथ देहात में जाकर बैठ जाता और बारिश का इंतजार करता।
3. लेखक प्रकृति के नियम के विपरीत यह कामना कर रहा था कि अक्टूबर महीने में बारिश हो जाए, जबकि वर्षा के मुख्य महीने जुलाई, अगस्त और सितंबर माने जाते हैं, जब भरपूर वर्षा होती है। वह ऐसा इसलिए चाह रहा था, क्योंकि उसे अपनी फिल्म पूरी करनी थी और वर्षा ऋतु में उसके पास रुपये न थे।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

पथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर-

'पथेर पांचाली' फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक चला। इसके कारण निम्नलिखित थे

(क) लेखक को पैसे का अभाव था। पैसे इकट्ठे होने पर ही वह शूटिंग करता था।

(ख) वह विज्ञापन कंपनी में काम करता था। इसलिए काम से फुर्सत होने पर ही लेखक तथा अन्य कलाकार फिल्म का काम करते थे।

(ग) तकनीक के पिछड़ेपन के कारण पात्र, स्थान, दृश्य आदि की समस्याएँ आ जाती थीं।

प्रश्न 2:

अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती-इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर-

इसके पीछे भाव यह है कि कोई भी फिल्म हमें तभी प्रभावित कर पाती है जब उसमें निरंतरता हो। यदि एक दृश्य में ही एकरूपता नहीं होती तो फिल्म कैसे चल पाती। दर्शक भ्रमित हो जाता है। पथेर पांचाली फ़िल्म में काशफूलों के साथ शूटिंग पूरी करनी थी, परंतु एक सप्ताह के अंतराल में पशु उन्हें खा गए। अत: उसी पृष्ठभूमि में दृश्य चित्रित करने के लिए एक वर्ष तक इंतजार करना पड़ा। यदि यह आधा दृश्य काशफूलों के बिना चित्रित किया जाता तो दृश्य में निरंतरता नहीं बन पाती।

प्रश्न 3:

किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है?

उत्तर-

प्रथम दृश्य-इस दृश्य में 'भूलो' नामक कुत्ते को अपू की माँ द्वारा गमले में डाले गए भात को खाते हुए चित्रित करना था, परंतु सूर्य के अस्त होने तथा पैसे खत्म होने के कारण यह दृश्य चित्रित न हो सका। छह महीने बाद लेखक पुन: उस स्थान पर गया तब तक उस कुत्ते की मौत हो चुकी थी। काफी प्रयास के बाद उससे मिलता-जुलता कुत्ता मिला और उसी से भात खाते हुए दृश्य को फ़िल्माया गया। यह दृश्य इतना स्वाभाविक था कि कोई भी दर्शक उसे पहचान नहीं पाया।

दूसरा दृश्य-इस दृश्य में श्रीनिवास नामक व्यक्ति मिठाई वाले की भूमिका निभा रहा था। बीच में शूटिंग रोकनी पड़ी। दोबारा उस स्थान पर जाने से पता चला कि उस व्यक्ति का देहांत हो गया है, फिर लेखक ने उससे मिलते-जुलते व्यक्ति को लेकर बाकी दृश्य फ़िल्माया। पहला श्रीनिवास बाँस वन से बाहर आता है और दूसरा श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है। इस प्रकार इस दृश्य में दर्शक अलग-अलग कलाकारों की पहचान नहीं पाते।

प्रश्न 4:

'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फिल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

उत्तर-

भूलो की मृत्यु हो गई थी, इस कारण उससे मिलता-जुलता कुत्ता लाया गया। फ़िल्म का दृश्य इस प्रकार था कि अप्पू की माँ उसे भात खिला रही थी। अपू तीर-कमान से खेलने के लिए उतावला है। भात खाते-खाते वह तीर छोड़ता है तथा उसे लाने के लिए भाग जाता है। माँ भी उसके पीछे दौड़ती है। भूलो कुत्ता वहीं खड़ा सब कुछ देख रहा है। उसका ध्यान भात की थाली की ओर है। यहाँ तक का दृश्य पहले भूलो कुत्ते पर फ़िल्माया गया था। इसके बाद के दृश्य में अपू की माँ बचा हुआ भात गमले में डाल देती है और भूलो वह भात खा जाता है। यह दृश्य दूसरे कुत्ते से पूरा किया गया।

प्रश्न 5:

फिल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुजर जाने के बाद किस प्रकार फिल्माया गया?

उत्तर-

फिल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी। उसके देहांत के बाद उसकी जैसी कद-काठी का व्यक्ति ढूँढ़ा गया। उसका चेहरा अलग था, परंतु शरीर श्रीनिवास जैसा ही था। ऐसे में फ़िल्मकार ने तरकीब लगाई। नया – आदमी कैमरे की तरफ पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर आता है, अत: कोई भी अनुमान नहीं लगा पाता कि यह अलग व्यक्ति है।

प्रश्न 6:

बारिश का दृश्य चित्रित करने में क्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर-

फ़िल्मकार के पास पैसे का अभाव था, अत: बारिश के दिनों में शूटिंग नहीं कर सके। अक्टूबर माह तक उनके पास पैसे इकट्ठे हुए तो बरसात के दिन समाप्त हो चुके थे। शरद ऋतु में बारिश होना भाग्य पर निर्भर था। लेखक हर रोज अपनी टीम के साथ गाँव में जाकर बैठे रहते और बादलों की ओर टकटकी लगाकर देखते रहते। एक दिन उनकी इच्छा पूरी हो गई। अचानक बादल छा गए और धुआँधार बारिश होने लगी। फिल्मकार ने इस बारिश का पूरा फायदा उठाया और दुर्गा और अपू का बारिश में भीगने वाला दृश्य शूट कर लिया। इस बरसात में भीगने से दोनों बच्चों को ठंड लग गई, परंतु दृश्य पूरा हो गया।

प्रश्न 7:

किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबदध कीजिए।

उत्तर-

किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

(क) धन की कमी।

(ख) कलाकारों का चयन।

(ग) कलाकारों के स्वास्थ्य, मृत्यु आदि की स्थिति।

(घ) पशु-पात्रों के दृश्य की समस्या।

(ङ) बाहरी दृश्यों हेतु लोकेशन ढूँढ़ना।

(च) प्राकृतिक दृश्यों के लिए मौसम पर निर्भरता।

(छ) स्थानीय लोगो का हस्तक्षेप व असहयोग।

(ज) संगीत।

(झ) दृश्यों की निरंतरता हेतु भटकना।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

तीन प्रसंगों में राय ने कुछ इस तरह की टिप्पणियाँ की हैं कि दशक पहचान नहीं पाते कि... या फिल्म देखते हुए इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया कि. इत्यादि। ये प्रसंग कौन से हैं, चर्चा करें और इस पर भी विचार करें कि शूटिंग के समय की असलियत फिल्म को देखते समय कैसे छिप जाती है।

उत्तर-

फ़िल्म शूटिंग के समय तीन प्रसंग प्रमुख हैं-

(क) भूलो कुत्ते के स्थान पर दूसरे कुत्ते को भूलो बनाकर प्रस्तुत किया गया।

(ख) एक रेलगाड़ी के दृश्य को तीन रेलगाड़ियों से पूरा किया गया ताकि धुआँ उठने का दृश्य चित्रित किया जा सके। यह दृश्य काफी बड़ा था।

(ग) श्रीनिवास का पात्र निभाने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी। अत: उसके स्थान पर मिलती-जुलती कद-काठी वाले व्यक्ति से मिठाई वाला दृश्य पूरा करवाया गया। हालाँकि उसकी पीठ दिखाकर काम चलाया गया।

शूटिंग के समय अनेक तरह की दिक्कतें आती हैं, परंतु निरंतरता बनाए रखने के लिए बनावटी दृश्य डालने पड़ते हैं। दर्शक फ़िल्म के आनंद में डूबा होता है, अत: उसे छोटी-छोटी बारीकियों का पता नहीं चल पाता।

प्रश्न 2:

मान लीजिए कि आपको अपने विदयालय पर एक डॉक्यूमैंट्री फिल्म बनानी है। इस तरह की फिल्म में आप किस तरह के दृश्यों को चित्रित करेंगे? फिल्म बनाने से पहले और बनाते समय किन बातों पर ध्यान देंगे?

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 3:

पथेर पांचाली फ़िल्म में इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल की चुन्नीबाला देवी ढाई साल तक काम कर सकीं। यदि आधी फिल्म बनने के बाद चुन्नीबाला देवी की अचानक मृत्यु हो जाती तो सत्यजित राय क्या करते? चर्चा करें।

उत्तर-

यदि इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल की चुन्नीबाला देवी की मृत्यु हो जाती तो सत्यजित राय उससे मिलती-जुलती शक्ल की वृद्धा को ढूँढ़ते। यदि वह संभव नहीं हो पाता तो संकेतों के माध्यम से इस फिल्म में उसकी मृत्यु दिखाई जाती। कहानी में बदलाव किया जा सकता था।

प्रश्न 4:

पठित पाठ के आधार पर यह कह पाना कहाँ तक उचित है कि फिल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं?

उत्तर-

यह बात पूर्णतया उचित है कि फ़िल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं। वे फिल्मों के दृश्यों के संयोजन में कोई लापरवाही नहीं

बरतते। वे दृश्य को पूरा करने के लिए समय का इंतजार करते हैं। काशफूल वाले दृश्य में उन्होंने साल भर इंतजार किया। पैसे की तंगी के कारण वे परेशान हुए, परंतु उन्होंने किसी से पैसा नहीं माँगा। वे स्टूडियो के दृश्य की बजाय प्राकृतिक दृश्य फिल्माते थे। वे कला को साधन मानते थे।
भाषा की बात

प्रश्न 1:

पाठ में कई स्थानों पर तत्सम, तदभव, क्षेत्रीय सभी प्रकार के शब्द एक साथ सहज भाव से आए हैं। ऐसी भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी प्रिय फिल्म पर एक अनुच्छेद लिखें।

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 2:

हर क्षेत्र में कार्य करने या व्यवहार करने की अपनी निजी या विशिष्ट प्रकार की शब्दावली होती है। जैसे अपू के साथ ढाई साल पाठ में फिल्म से जुड़े शब्द शूटिंग, शॉट, सीन आदि। फिल्म से जुड़ी शब्दावली में से किन्हीं दस की सूची बनाइए।

उत्तर-

ग्लैमर, लाइट्स, सीन, रिकार्डिंग, कैमरा, फिल्म, हॉलीवुड, कट, अभिनेता, एक्शन, डबिंग, रोल।

प्रश्न 3:

नीचे दिए गए शब्दों के पर्याय इस पाठ में ढूँढ़िए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-
इश्तहार, खुशकिस्मती, सीन, वृष्टि, जमा

उत्तर-

(क) इश्तहार-विज्ञापन-आजकल अभिनेता व खिलाड़ी विज्ञापनों में छाए रहते हैं।

(ख) खुशकिस्मती-सौभाग्य-यह मेरा सौभाग्य है कि आप हमारे घर पधारे।

(ग) सीन-दृश्य-वाह! क्या दृश्य है।

(घ) वृष्टि-बारिश-मुंबई की बारिश ने प्रशासन की पोल खोल दी।

(ङ) जमा-इकट्ठा-सामान इकट्ठा कर ली, कल हरिद्वार जाना है।

अन्य हल प्रश्न

● **बोधात्मक प्रशन**

प्रश्न 1:

‘ अपू के साथ ढाई साल ‘ संस्मरण का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर-

अपू के साथ ढाई साल नामक संस्मरण पथेर पांचाली फ़िल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फ़िल्म के इतिहास में एक बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फ़िल्म के सृजन और उनके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है। यही नहीं, जो फ़िल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चुधियाती हुई जान पड़ती है, उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है, जिसमें साधनहीनता के बीच अपनी कलादृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। यह पाठ मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखा गया है जिसका अनुवाद विलास गिते ने किया है।
किसी फिल्मकार के लिए उसकी पहली फ़िल्म एक अबूझ पहेली होती है। बनने या न बन पाने की

अमूर्त शंकाओं से घिरी। फ़िल्म पूरी होने पर ही फ़िल्मकार जन्म लेता है। पहली फ़िल्म के निर्माण के दौरान हर फ़िल्म निर्माता का अनुभव संसार इतना रोमांचकारी होता है कि वह उसके जीवन में बचपन की स्मृतियों की तरह हमेशा जीवंत बना रहता है। इस अनुभव संसार में दाखिल होना उस बेहतरीन फ़िल्म से गुजरने से कम नहीं है।

प्रश्न 2:

'वास्तुसर्प' क्या होता है? इससे लेखक का कार्य कब प्रभावित हुआ?

उत्तर-

वास्तुसर्प वह होता है जो घर में रहता है। लेखक ने एक गाँव में मकान शूटिंग के लिए किराये पर लिया। इसी मकान के कुछ कमरों में शूटिंग का सामान था। एक कमरे में साउंड रिकार्डिंग होती थी जहाँ भूपेन बाबू बैठते थे। वे साउंड की गुणवत्ता बताते थे। एक दिन उन्होंने उत्तर नहीं दिया। जब लोग कमरे में पहुँचे तो साँप, कमरे की खिड़की से नीचे उतर रहा था। इसी डर से भूपेन ने जवाब नहीं दिया।

प्रश्न 3:

सत्यजित राय को कौन-सा गाँव सर्वाधिक उपयुक्त लगा तथा क्यों?

उत्तर-

सत्यजित राय को बोडाल गाँव शूटिंग के लिए सबसे उपयुक्त लगा। इस गाँव में अपू-दुर्गा का घर, अपू का स्कूल, गाँव के मैदान, खेत, आम के पेड़, बाँस की झुरमुट आदि सब कुछ गाँव में या आसपास मिला।

प्रश्न 4:

लेखक को धोबी के कारण क्या परेशानी होती थी?

उत्तर-

लेखक बोडाल गाँव के जिस घर में शूटिंग करता था, उसके पड़ोस में एक धोबी रहता था। वह अकसर 'भाइयो और बहनो!' कहकर किसी राजनीतिक मामले पर लंबा-चौड़ा भाषण शुरू कर देता था। शूटिंग के समय उसके भाषण से साउंड रिकार्डिंग का काम प्रभावित होता था। धोबी के रिश्तेदारों ने उसे सँभाला।

प्रश्न 5:

पुराने मकान में शूटिंग करते समय फिल्मकार को क्या-क्या कठिनाइयाँ आई?

उत्तर-

पुराने मकान में शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को निम्नलिखित कठिनाइयाँ आई-

(क) पुराना मकान खंडहर था। उसे ठीक कराने में काफी पैसा खर्च हुआ और एक महीना का वक्त लगा।

(ख) मकान के एक कमरे में साँप निकल आया जिसे देखकर आवाज रिकार्ड करने वाले की बोलती बंद हो गई।

प्रश्न 6:

'सुबोध दा' कौन थे? उनका व्यवहार कैसा था?

उत्तर-

‘सुबोध दा’ 60-65 आयु का विक्षिप्त वृद्ध था। वह हर वक्त कुछ-न-कुछ बड़बड़ाता रहता था। पहले वह फ़िल्मवालों को मारने दौड़ता है, परंतु बाद में वह लेखक को वायलिन पर लोकगीतों की धुनें सुनाता है। वह आते-जाते व्यक्ति को रुजवेल्ट, चर्चिल, हिटलर, अब्दुल गफ्फार खान आदि कहता है। उसके अनुसार सभी पाजी और उसके दुश्मन हैं।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय-**बालमुकुंद गुप्त का जन्म 1865 ई. में हरियाणा के रोहतक जिले के गुड़ियानी गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम लाला पूरनमल था। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही उर्दू भाषा में हुई। इन्होंने हिंदी बाद में सीखी। इन्होंने मिडिल कक्षा तक पढ़ाई की, परंतु स्वाध्याय से काफी ज्ञान अर्जित किया। ये खड़ी बोली और आधुनिक हिंदी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक थे।

इन्होंने कई अखबारों का संपादन किया। इन्होंने उर्दू के दो पत्रों 'अखबार-ए-चुनार' तथा 'कोहेनूर' का संपादन किया। बाद में हिंदी के समाचार-पत्रों 'हिंदुस्तान', हिंदी बंगवासी', 'भारतमित्र' आदि का संपादन किया। इनका देहावसान बहुत कम आयु में 1907 ई. में हुआ।

● **रचनाएँ-**इनकी रचनाएँ पाँच संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं—

शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, गुप्त निबंधावली, स्फुट कविताएँ।

● **साहित्यिक परिचय-**गुप्त जी भारतेंदु युग और द्ववेदी युग के बीच की कड़ी के रूप में थे। ये राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय पत्रकार थे। उस दौर के अन्य पत्रकारों की तरह वे साहित्य-सृजन में भी सक्रिय रहे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता-संग्राम का हथियार थी। यही कारण है कि उनके लेखन में निभीकता पूरी तरह मौजूद है।

इनकी रचनाओं में व्यंग्य-विनोद का भी पुट दिखाई पड़ता है। इन्होंने बांग्ला और संस्कृत की कुछ रचनाओं के अनुवाद भी किए। वे शब्दों के अद्‌भुत पारखी थे। अनस्थिरता शब्द की शुद्धता को लेकर उन्होंने महावीर प्रसाद द्रविवेदी से लंबी बहस की।

पाठ का साराश

विदाई-संभाषण पाठ वायसराय कर्जन जो 1899-1904 व 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। यह अध्याय **शिवशंभु के चिट्ठे** का अंश है। कर्जन के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए, नए-नए आयोग बनाए गए, किंतु उन सबका उद्देश्य शासन में गोरों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का अंग्रेजों के हित में सर्वोत्तम उपयोग करना था। कर्जन ने हर स्तर पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। वे सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे। लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता पर उन्होंने प्रतिबंध लगा दिया। अंततः कौंसिल में मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश-विदेश दोनों जगहों पर नीचा देखना पड़ा। क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चले गए।

लेखक ने भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की है। साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लॉर्ड कर्जन जैसा वायसराय। यह निबंध उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था। ऐसी स्थिति में विनोदप्रियता, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा-प्रयोग एवं रवानगी के साथ यह एक साहसिक गद्य का नमूना है।

लेखक कर्जन को संबोधित करते हुए कहता है कि आखिरकार आपके शासन का अंत हो ही गया, अन्यथा आप तो यहाँ के स्थाई वायसराय बनने की इच्छा रखते थे। इतनी जल्दी देश को छोड़ने की बात आपको व देशवासियों को पता नहीं थी। इससे ईश्वर-इच्छा का पता चलता है। आपके दूसरी बार आने पर भारतवासी प्रसन्न नहीं थे। वे आपके जाने की प्रतीक्षा करते थे, परंतु आपके जाने से

लोग दु:खी हैं। बिछड़न का समय पवित्र, निर्मल व कोमल होता है। यह करुणा पैदा करने वाला होता है। भारत में तो पशु-पक्षी भी ऐसे समय उदास हो जाते हैं। शिवशंभु की दो गाएँ थीं। बलशाली गाय कमजोर को टक्कर मारती रहती थी। एक दिन बलशाली गाय को पुरोहित को दान दे दिया गया, परंतु उसके जाने के बाद कमजोर गाय प्रसन्न नहीं रही। उसने चारा भी नहीं खाया। यहाँ पशु ऐसे हैं तो मानव की दशा का अंदाजा लगाना मुश्किल होता है।
इस देश में पहले भी अनेक शासक आए और चले गए। यह परंपरा है, परंतु आपका शासनकाल दु:खों से भरा था। कर्जन ने सारा राजकाज सुखांत समझकर किया था, उसका अंत दु:ख में हुआ। वास्तव में लीलामय की लीला का किसी को पता नहीं चलता। दूसरी बार आने पर आपने ऐसे कार्य करने की सोची थी जिससे आगे के शासकों को परेशानी न हो, परंतु सब कुछ उलट गया। आप स्वयं बेचैन रहे और देश में अशांति फैला दी। आने वाले शासकों को परेशान रहना पड़ेगा। आपने स्वयं भी कष्ट सहे और जनता को भी कष्ट दिए।
लेखक कहता है कि आपका स्थान पहले बहुत ऊँचा था। आज आपकी दशा बहुत खराब है। दिल्ली दरबार में ईश्वर और एडवर्ड के बाद आपका सर्वोच्च स्थान था। आपकी कुर्सी सोने की थी। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे व ऊँचा था, परंतु जंगी लाट के मुकाबले में आपको नीचा देखना पड़ा। आप धीर व गंभीर थे, परंतु कौंसिल में गैरकानूनी कानून पास करके और कनवोकेशन में अनुचित भाषण देकर अपनी धीरता का दिवाला निकाल दिया। आपके इस्तीफे की धमकी को स्वीकार कर लिया गया। आपके इशारों पर राजा, महाराजा, अफसर नाचते थे, परंतु इस इशारे में देश की शिक्षा और स्वाधीनता समाप्त हो गई। आपने देश में बंगाल विभाजन किया, परंतु आप अपनी मजी से एक फौजी को इच्छित पद पर नहीं बैठा सके। अत: आपको इस्तीफा देना पड़ा।
लेखक कहता है कि आपका मनमाना शासन लोगों को याद रहेगा। आप ऊँचे चढ़कर गिरे हैं, परंतु गिरकर पड़े रहना अधिक दुखी करता है। ऐसे समय में व्यक्ति स्वयं से घृणा करने लगता है। आपने कभी प्रजा के हित की नहीं सोची। आपने आँख बंदकर हुक्म चलाए और किसी की नहीं सुनी। यह शासन का तरीका नहीं है। आपने हर काम अपनी जिद से पूरे किए। कैसर और जार भी घेरने-घोटने से प्रजा की बात सुनते थे। आपने कभी प्रजा को अपने समीप ही नहीं आने दिया। नादिरशाह ने भी आसिफजाह के तलवार गले में डालकर प्रार्थना करने पर कत्लेआम रोक दिया था, परंतु आपने आठ करोड़ जनता की प्रार्थना पर बंग-भंग रद्द करने का फैसला नहीं लिया। अब आपका जाना निश्चित है, परंतु आप बंग-भंग करके अपनी जिद पूरा करना चाहते हैं। ऐसे में प्रजा कहाँ जाकर अपना दु:ख जताए।
यहाँ की जनता ने आपकी जिद का फल देख लिया। जिद ने जनता को दु:खी किया, साथ ही आपको भी जिसके कारण आपको भी पद छोड़ना पड़ा। भारत की जनता दु:ख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। वह जानती है कि संसार में सब चीज़ों का अंत है। उन्हें भगवान पर विश्वास है। वे दु:ख सहकर भी पराधीनता का कष्ट झेल रहे हैं। आप ऐसी जनता की श्रद्धा-भक्ति नहीं जीत सके।
कर्जन अनपढ़ प्रजा का नाम एकाध बार लेते थे। यह जनता नर सुलतान नाम के राजकुमार के गीत गाती है। यह राजकुमार संकट में नरवरगढ़ नामक स्थान पर कई साल रहा। उसने चौकीदारी से लेकर ऊँचे पद तक काम किया। जाते समय उसने नगर का अभिवादन किया कि वह यहाँ की जनता, भूमि का अहसान नहीं चुका सकता। अगर उससे सेवा में कोई भूल न हुई हो तो उसे प्रसन्न

होकर जाने की इजाजत दें। जनता आज भी उसे याद करती है। आप इस देश के पढ़े-लिखों को देख नहीं सकते।

लेखक कर्जन को कहता है कि राजकुमार की तरह आपका विदाई-संभाषण भी ऐसा हो सकता है जिसमें आप-अपने स्वार्थी स्वभाव व धूर्तता का उल्लेख करें और भारत की भोली जनता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कह सकेंगे कि आशीर्वाद देता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त कर। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझे। आपकी इस बात पर देश आपके पिछले कार्यों को भूल सकता है, परंतु आप में इतनी उदारता कहाँ?

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 46

लॉर्ड-स्वामी। चिरस्थाई-हमेशा रहने वाला। वाइसराय-शासक। करुणोत्पादक-करुणा पैदा करने वाला। पधारें-व्यंग्य अर्थ में 'सिधारें' है। हर्ष-खुशी विषाद-दु:ख। निर्मल-पवित्र। आविर्भाव-आना। दीन-गरीब। शिवशंभु-बालमुकुंद का कल्पित पात्र जो सदैव भाँग के नशे में रहता है, वह बहकी हुई, परंतु चुभती हुई सच्ची बातें कहता है।

पृष्ठ संख्या 47

वरंच-बल्कि। तथापि-फिर भी। घोर-अत्यंत दुखांत-दु:ख भरे अंत वाला। दर्शक-देखने वाला। सूत्रधार-संचालन करने वाला। सुखांत-जिसका अंत अच्छा हो। लीला-क्रीड़ा करने वाला। जाहिर-प्रकट। सुख की नींद सोना-आराम से रहना। नींद और भूख हराम करना-परेशानी में डालना। बिस्तरा गरम राख पर रखना-मुसीबत को बुलाना। चित्त-दिल।

पृष्ठ संख्या 48

विचारिए-सोचिए। शान-गौरव। चिराग-दीपक। खलीफ़ा-शासक। प्रभु महाराज-राजा। रईस-अमीर। सलाम-प्रणाम। हौदा-हाथी की पीठ पर रखा हुआ चौकोर आसन। दर्जा-श्रेणी। जंगी लाट-सेना का अफसर। पटखनी खाना-हार जाना। सिर के बल नीचे आना-बुरी तरह हारना। स्वदेश-अपना देश। धीर-गंभीर-शांत और समझदारा बेकानूनी-कानून के विरुद्ध। कनवोकेशन-दीक्षांत समारोह। वक्तृता-भाषण। दिवाला निकालना-कंगाल हो जाना। विलायत-विदेश। इस्तीफा-त्याग-पत्र। तिलांजली देना-छोड़ना। हाकिम-शासक। ताल पर नाचना-इशारे पर चलना। डोरी हिलाना-संकेत करना। हाजिर-उपस्थित। प्रलय होना-भयंकर विनाश। पायमाल होना-नष्ट होना। आरह रखना-विभाजित करना। इच्छित-चाहना। नियत-तय।

पृष्ठ संख्या 49

अदना-मामूली। नोटिस-सूचना। अवधि-समय। कान देना-ध्यान देना। कैसर-मनमाना शासन करने वाला रोम का तानाशाह। जार-रूस का स्वच्छंद शासक। घेरना-घोटना-अत्यधिक आग्रह करना। फटकने देना-पास आने देना। नादिरशाह-ईरान का बादशाह। कत्लेआम-आम जनता को मारने की प्रक्रिया।

पृष्ठ संख्या 50

विच्छेद-अलग। पराधीनता-गुलामी। कृतज्ञता-उपकार को मानना। महिमा-महानता। दीन-कमजोर, गरीब। ताब न होना-चाह न होना। विपद-संकट।

पृष्ठ संख्या 51

अभिवादन-प्रणाम। जुदा-अलग। अन्नदाता-पालनकर्ता। चूक करना-कमी रखना। संभाषण-भाषण देना। बदौलत-कारण।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लॉर्ड। आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें। पर अहो! आज आपके जाने पर हर्ष की जगह विषाद होता है। इसी से जाना कि बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा पवित्र, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है। वैर-भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव उस समय होता है। (पृष्ठ-46)

प्रश्न

1. लेखक किसके बिछड़ने की बात कर रहा है? वह कहाँ जा रहा है?
2. बिछड़न का समय कैसा होता हैं?
3. कर्ज़न के जाने के समय हर्ष की जगह विषाद क्यों हो रहा है?

उत्तर-

1. लेखक लॉर्ड कर्ज़न के भारत से बिछुड़ने की बात कर रहा है। वह इंग्लैंड वापस जा रहा है।
2. बिछड़न का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है। इस समय मन बड़ा पवित्र, निर्मल व कोमल हो जाता है। इस समय वैर-भाव समाप्त होने लगता है और शांत रस अपने-आप आ जाता है।
3. कर्ज़न के जाने के समय हर्ष की जगह विषाद हो रहा है, क्योंकि कर्ज़न सर्वाधिक शक्तिशाली वायसराय होते हुए भी उसने देश-हित में कोई काम न्हीं किया। अहंकार, गलत नीतियों व कार्यों के कारण उसके त्याग-पत्र की पेशकश को स्वीकार कर लिया गया। अब वह इंग्लैंड वापस जा रहा है। ऐसे में भारतीयों को हर्ष होना चाहिए किंतु भारतीय संस्कृति में विदाई के वक्त लोग दु:खी हो जाते हैं। इसलिए कर्जन के जाते समय भारतीयों को विषाद हो रहा है।

2. आगे भी इस देश में जो प्रधान शासक आए, अंत में उनको जाना पड़ा। इससे आपका जाना भी परंपरा की चाल से कुछ अलग नहीं है, तथापि आपके शासन-काल का नाटक घोर दुखांत है, और अधिक आश्चर्य की बात यह है कि दर्शक तो क्या, स्वयं सूत्रधार भी नहीं जानता था कि उसने जो खेल सुखांत समझकर खेलना आरंभ किया था, वह दुखांत हो जावेगा। जिसके आदि में सुख था, मध्य में सीमा से बाहर सुख था, उसका अंत ऐसे घोर दुख के साथ कैसे हुआ? आह! घमंडी खिलाड़ी समझता है कि दूसरों को अपनी लीला दिखाता हूँ। किंतु पर्दे के पीछे एक और ही लीलामय की लीला हो रही है, यह उसे खबर नहीं। (पृष्ठ-47)

प्रश्न

1. कज़्रन के शासनकाल का नाटक दुखांत क्यों हैं?
2. सबसे अधिक आश्चर्य की बात क्या है?
3. सूत्रधार कौन हैं? उसके द्वारा खेल खेलने से क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर-

1. कर्ज़न को भारत पर अंग्रेजी प्रभुत्व सुदृढ़ करने के लिए भेजा गया था, परंतु उसकी नीतियों के कारण देश में समस्याएँ बढ़ती गई। समस्याओं का समाधान करने के बजाय दमन का

रास्ता अपनाया गया। इससे इंग्लैंड के शासक उससे नाराज हो गए और कर्ज़न को बीच में ही पद से हटा दिया गया। अत: कर्ज़न के शासनकाल का नाटक दुखांत में बदल गया।

2. सबसे आश्चर्य की बात यह है कि दर्शक तो क्या, स्वयं सूत्रधार भी नहीं जानता था कि उसने जो खेल सुखांत समझकर खेलना आरंभ किया था, वह दुखांत हो जाएगा। जिसके आदि में सुख था, मध्य में सीमा से बाहर सुख था, उसका अंत ऐसे घोर दुख के साथ हुआ।
3. सूत्रधार इंग्लैंड का शासक है। वह भारत पर वायसराय के जरिए शासन करता था। वायसराय को अंग्रेजी प्रभुत्व स्थापित करने हेतु कार्य करने की छूट दी जाती थी। अगर वह सही ढंग से काम नहीं करता तो उसे हटाने का अधिकार राजा को था। उसने कर्ज़न को दोबारा वायसराय बनाया ताकि वह भारत में अंग्रेजों के अनुकूल नीतियाँ बनाएँगे, परंतु कर्ज़न के निरंकुश शासन से अंग्रेज-विरोधी माहौल बन गया। अत: कर्ज़न को बीच में ही हटा दिया गया। इसी को सूत्रधार को खेल खेलना कहा गया।

3. विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे! अलिफ़ लैला के अलहदीन ने चिराग रगड़कर और अबुलहसन ने बगदाद के खलीफा की गद्दी पर आँख खोलकर वह शान न देखी, जो दिल्ली-दरबार में आपने देखी। आपकी और आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी और आपके प्रभु महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की चाँदी की। आप दाहिने थे, वह बाएँ, आप प्रथम थे, वह दूसरे। इस देश के सब रईसों ने आपको सलाम पहले किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था, हौदा, चवर, छत्र आदि सबसे बढ़-चढ़कर थे। सारांश यह है कि ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद इस देश में आप ही का एक दर्जा था। किंतु अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबले में आपने पटखनी खाई, सिर के बल नीच आ रहे! आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आपको साफ़ नीचा देखना पड़ा! पद-त्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके। (पृष्ठ-48)

प्रश्न

1. 'कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे' किसे कहा गया और क्यों?
2. कज़न की भारत में कैसी शान-शौकत थी?
3. पद-त्याग की धमकी से ऊंचे न होने से का अभिप्राय है?

उत्तर-

1. यह पंक्ति लॉर्ड कर्ज़न के लिए कही गई है। भारत में वायसराय का पद सर्वोच्च होता था। एक तरह से सम्राट की शक्तियों से युक्त था। उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता था, परंतु गलत नीतियों के चलते किसी को उस पद से हटना पड़े तो यह अपमानजनक होता है। कर्ज़न के साथ भी ऐसा हुआ था।
2. कर्ज़न बहुत शक्तिशाली वायसराय था। उसे कल्पना से अधिक मान-सम्मान व शान-शौकत मिली। उसने दिल्ली के दरबार में इतना वैभव देखा जितना अलादीन ने चिराग रगड़कर व अबुलहसन ने बगदाद का खलीफा बनकर भी नहीं देखा था। उसकी व उसकी पत्नी की कुर्सी सोने की बनी थी। इन्हें इंग्लैंड के राजा के भाई से भी अधि क सम्मान मिलता था। जुलूस में इसका हाथी सबसे आगे व सबसे ऊँचा चलता था। ईश्वर व महाराज एडवर्ड के बाद कर्जन को ही माना जाता था।

3. . कर्जन ने वायसराय की कौंसिल में मनपसंद फौजी अफसर रखना चाहा। इसके लिए गैरकानूनी बिल भी पास किया। इस कार्य की हर जगह निंदा हुई। इस पर उसने पद-त्याग की धमकी दी। उसके इस्तीफे को बादशाह ने मंजूर किया। कर्ज़न का पासा उलट गया। पद लेने के बजाय पद छोड़ना पड़ा।

4. आप बहुत धीर-गंभीर प्रसिद्ध थे। उस सारी धीरता-गंभीरता का आपने इस बार कौंसिल में बेकानूनी कानून पास करते और कनवोकेशन वक्तृता देते समय दिवाला निकाल दिया। यह दिवाला तो इस देश में हुआ। उधर विलायत में आपके बार-बार इस्तीफा देने की धमकी ने प्रकाश कर दिया कि जड़ हिल गई है। अंत में वहाँ भी आपको दिवालिया होना पड़ा और धीरता-गंभीरता के साथ दृढ़ता को भी तिलांजलि देनी पड़ी। इस देश के हाकिम आपकी ताल पर नाचते थे, राजा-महाराजा डोरी हिलाने से सामने हाथ बाँधे हाज़िर होते थे। आपके एक इशारे में प्रलय होती थी। कितने ही राजों को मट्टी के खिलौने की भाँति आपने तोड़-फोड़ डाला। कितने ही मट्टी-काठ के खिलौने आपकी कृपा के जादू से बड़े-बड़े पदाधिकारी बन गए। आपके इस इशारे में इस देश की शिक्षा पायमाल हो गई, स्वाधीनता उड़ गई। बंग देश के सिर पर आरह रखा गया। आह, इतने बड़े माइ लॉर्ड का यह दर्जा हुआ कि फौजी अफसर उनके इच्छित पद पर नियत न हो सका और उनको उसी गुस्से के मारे इस्तीफा दाखिल करना पड़ा, वह भी मंजूर हो गया। उनका रखाया एक आदमी नौकर न रखा, उलटा उन्हीं को निकल जाने का हुक्म मिला! (पृष्ठ-48)

प्रश्न

1. कर्ज़न किसलिए प्रसिद्ध थे? उनका भारत व इंग्लैंड में दिवाला कैस निकला?
2. कज़न का भारत में कैसा प्रभाव था?
3. कज़न को इस्तीफा क्यों देना पड़ा?

उत्तर-

1. कर्ज़न धीरता व गंभीरता के लिए प्रसिद्ध थे। कर्ज़न ने कौंसिल में बंगाल-विभाजन जैसा गैरकानूनी कानून पास करवाया। कनवोकेशन में भारत-विरोधी बातें कहीं। इससे इनकी घटिया मानसिकता का पता चल गया। भारत में इनका पुरजोर विरोध किया गया। उधर इंग्लैंड में इस्तीफे की धमकी से इनकी कमजोर स्थिति का पता चल गया। ब्रिटिश सरकार ने इनकी कमजोर हालत के कारण इनका इस्तीफा मंजूर कर लिया।
2. कर्ज़न का भारत में जबरदस्त प्रभाव था। यहाँ के अफसर इसके इशारों पर नाचते थे तथा राजा-महाराजा उसकी सेवा में हाज़िर रहते थे। उसने अनेक राजाओं का शासन छीन लिया तथा अनेक निकम्मों को बड़े-बड़े पदों पर बैठाया।
3. कर्ज़न एक फौजी अफसर को अपनी इच्छा के पद पर रखवाना चाहते थे, परंतु उनकी बात नहीं मानी गई। इस पर क्रोधित होकर इसने अपना इस्तीफा भेज दिया जिसे स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार ये अपमानित हुए।

5. जिस प्रकार आपका बहुत ऊँचे चढ़कर गिरना यहाँ के निवासियों को दुखित कर रहा है, गिरकर पड़ा रहना उससे भी अधिक दुखित करता है। आपका पद छूट गया तथापि आपका पीछा नहीं छूटा है। एक अदना क्लर्क जिसे नौकरी छोड़ने के लिए एक महीने का नोटिस मिल गया हो नोटिस की अवधि को बड़ी घृणा से काटता है। आपको इस समय अपने पद पर रहना कहाँ तक पसंद है-यह आप ही जानते होंगे। अपनी दशा पर आपको कैसी घृणा आती है, इस बात के जान लेने का इन

देशवासियों की अवसर नहीं मिला, पर पतन के पीछे इतनी उलझन में पड़ते उन्होंने किसी को नहीं देखा। (पृष्ठ-49)

प्रश्न

1. 'गिरकर पड़ रहना' से क्या आशय हैं?
2. लखक ने भारतवासियों के किससे छुटकारा पाने की बात कही हैं?
3. कज़न अपने ही फैलाए जाल में फँसकर रह गए। कैसे?

उत्तर-

1. लेखक कहता है कि कर्ज़न ने पद से त्याग-पत्र दे दिया, जिसे मंजूर कर लिया गया तथा अगले वायसराय के आने तक पद पर बने रहने को कहा गया। इस बात पर लेखक व्यंग्य करता है कि जिस पद से कर्ज़न ने प्रतिष्ठा के कारण त्याग-पत्र दिया था, उसी पर कुछ दिन काम करने से गिरकर पड़े रहने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह समय अत्यंत अपमानजनक होता है।
2. लेखक ने भारतवासियों के कर्ज़न से छुटकारा पाने की बात कही है। भारतीय उसके इंग्लैंड वापसी के दिन गिन रहे थे।
3. कर्ज़न ने जो कुछ सोचा, उसके उलट हो गया। इस्तीफे की धमकी से उसने अपने पक्ष को सही ठहराना चाहा, परंतु उसका इस्तीक ही मंजूर कर लिया गया। वह इस घटनाक्रम को संभाल नहीं पाया तथा अपने ही फैलाए जाल में फैलाई जाल में फँस गया।

6. क्या आँख बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है? क्या प्रजा की बात पर कभी कान न देना और उसको दबाकर उसकी मर्जी के विरुद्ध जिद्द से सब काम किए चले जाना ही शासन कहलाता है? एक काम तो ऐसा बतलाइए, जिसमें आपने जिद्द छोड़कर प्रजा की बात पर ध्यान दिया हो। कैसर और ज़ार भी घेरने-घोटने से प्रजा की बात सुन लेते हैं पर आप एक मौका तो बताइए, जिसमें किसी अनुरोध या प्रार्थना सुनने के लिए प्रजा के लोगों को आपने अपने निकट फटकने दिया हो और उनकी बात सुनी हो। नादिरशाह ने जब दिल्ली में कत्लेआम किया तो आसिफजाह के तलवार गले में डालकर प्रार्थना करने पर उसने कत्लेआम उसी क्षण रोक दिया। पर आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। इस समय आपकी शासन-अवधि पूरी हो गई है तथापि बंग-विच्छेद किए बिना घर जाना आपको पसंद नहीं है! नादिर से भी बढ़कर आपकी जिद्द है। क्या समझते हैं कि आपकी जिद्द से प्रजा के जी में दुख नहीं होता? आप विचारिए तो एक आदमी को आपके कहने पर पद न देने से आप नौकरी छोड़े जाते हैं, इस देश की प्रजा को भी यदि कहीं जाने की जगह होती, तो क्या वह नाराज होकर इस देश को छोड़ न जाती? (पृष्ठ-49-50)

प्रश्न

1. कज़न ने किस प्रकार शासन किया था? क्या उसका शासन उचित था?
2. कैसर और ज़ार कौन थे? इन्हें किस काम के लिए जाना जाता है?
3. कज़न और नादिरशाह के बीच क्या तुलना की गई है?

उत्तर-

1. कर्ज़न ने सदा निरंकुश शासन किया। उसने मनमाने आदेश दिए तथा प्रजा की हर बात को अनसुना कर दिया। यह शासन पूर्णतया अनुचित था। लोकहित से बड़ी शासक की जिद नहीं होती।
2. 'कैसर' और 'ज़ार' शब्द रोम के तानाशाह जूलियस सीज़र से बने हैं। कैसर शब्द का प्रयोग 'मनमानी करने वाले शासकों' तथा 'ज़ार' शब्द का प्रयोग रूस के तानाशाहों के लिए किया जाता था।
3. नादिरशाह ने जिद के कारण दिल्ली में भयंकर कत्लेआम करवाया। इसी तरह कर्ज़न ने बंगाल-विभाजन कर दिया तथा आम जनता के जीने के अधिकार छीने। कर्ज़न नादिरशाह से भी अधिक जिद्दी था। नादिरशाह ने आसिफजाह की प्रार्थना पर तत्काल कत्लेआम रुकवाया, परंतु कर्ज़न पर आठ करोड़ लोगों की गिड़गड़ाहट का कोई असर नहीं पडा।

7. यहाँ की प्रजा ने आपकी जिद्द का फल यहीं देख लिया। उसने देख लिया कि आपकी जिस जिद्द ने इस देश की प्रजा को पीड़ित किया, आपको भी उसने कम पीड़ा न दी, यहाँ तक कि आप स्वयं उसका शिकार हुए। यहाँ की प्रजा वह प्रजा है, जो अपने दुख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। वह जानती है कि संसार में सब चीज़ों का अंत है। दुख का समय भी एक दिन निकल जाएगा, इसी से सब दुखों को झेलकर, पराधीनता सहकर भी वह जीती है। माइ लॉर्ड! इस कृतज्ञता की भूमि की महिमा आपने कुछ न समझी और न यहाँ की दीन प्रजा की श्रद्धा-भक्ति अपने साथ ले जा सके, इसका बड़ा दुख है। (पृष्ठ-50)

प्रश्न

1. लॉर्ड कर्ज़न की जिद्द से भारतीय जनता ने क्या पीड़ा सही ?
2. भारतीय प्रजा की क्या विशेषता है?
3. लखक को किस बात का दुख हैं?

उत्तर-

1. लॉर्ड कर्ज़न को बंगाल विभाजन की जिद्द थी। उसने 1905 में बंगाल विभाजन किया। जनता की प्रार्थनाओं व विरोध पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। इससे जनता बहुत परेशान हो गई थी। कर्ज़न को इंग्लैंड वापस जाना था, परंतु जाते-जाते वह बंगाल का विभाजन भी कर गया।
2. भारतीय प्रजा की विशेषता यह है कि यह अपने दुख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। उसे पता है कि संसार में हर चीज का अंत है। दुख का समय भी धीरे-धीरे निकल जाएगा। इसी से वह सब दुखों को झेलकर पराधीनता सहकर भी जीती है।
3. लेखक को इस बात का दुख है कि कर्ज़न ने भारत-भूमि की गरिमा को नहीं समझा। उसने भारत के कृतज्ञता भाव को नहीं समझा। यदि वह भारतीयों की भलाई के लिए कुछ करता तो अपने साथ गरीब प्रजा की श्रद्धा-भक्ति को ले जाता।

8.'अभागे भारत! मैंने तुमसे सब प्रकार का लाभ उठाया और तेरी बदौलत वह शान देखी, जो इस जीवन में असंभव है। तूने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा; पर मैंने तेरे बिगाड़ने में कुछ कमी न की। संसार के सबसे पुराने देश! जब तक मेरे हाथ में शक्ति थी, तेरी भलाई की इच्छा मेरे जी में न थी। अब कुछ शक्ति नहीं है, जो तेरे लिएँ कुछ कर सकूं। पर आशीर्वाद करता हूँ कि तू फिर उठे और अपने

प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त करे। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझे।' आप कर सकते हैं और यह देश आपकी पिछली सब बातें भूल सकता है, पर इतनी उदारता माई लॉर्ड में कहाँ? (पृष्ठ-51)

प्रश्न

1. लेखक ने लार्ड कज़न पर क्या व्यय किया हैं?
2. भारत ने लार्ड कज़न से कैसा व्यवहार किया?
3. 'इतनी उदारता माई लॉर्ड में कहाँ?'—का व्यग्य बताइए।

उत्तर-

1. लेखक लॉर्ड कर्ज़न पर व्यंग्य करता है कि उसने भारत से हर तरह के लाभ उठाए। उसने वह शान देखी। जिसे वह कभी नहीं पा सकता। उसने भारतीयों का बहुत कुछ बिगाड़ा तथा भारत की भलाई नहीं की।
2. भारत ने लॉर्ड कर्ज़न का कुछ नहीं बिगाड़ा। उसे पूरा मान-सम्मान दिया। उसकी शान-शौकत बढ़ाई तथा उसके अत्याचार सहकर भी कुछ नहीं किया।
3. लेखक व्यंग्य करता है कि कर्ज़न जाते समय भारतीयों की प्रशंसा, अपने कुकृत्यों को स्वीकारना तथा भारत के अच्छे भविष्य की कामना कर दे तो यह देश उसकी सारी पिछली बातें भूल सकता है, परंतु कर्ज़न में उदारता नहीं है। वह घमंडी तथा नस्ल-भेद से ग्रस्त है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर-

लेखक 'शिवशंभु की दो गायों' की कहानी के माध्यम से कहना चाहता है कि भारत में मनुष्य ही नहीं, पशुओं में भी साथ रहने वालों के साथ लगाव होता है। वे उस व्यक्ति के बिछुड़ने पर भी दुखी होते हैं जो उन्हें कष्ट पहुँचाता है। यहाँ भावना प्रमुख होती है। हमारे देश में पशु-पक्षियों को भी बिछड़ने के समय उदास देखा गया है। बिछड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। लॉर्ड कर्जन जैसे क्रूर आततायी के लिए भी भारत की निरीह जनता सहानुभूति का भाव रखती है।

प्रश्न 2:

आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आयने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-

लेखक ने यहाँ बंगाल के विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लॉर्ड कर्ज़न दो बार भारत का वायसराय बनकर आया। उसने भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थाई करने के लिए अनेक काम किए। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए उसने बंगाल का विभाजन करने की योजना बनाई। कज़न की इस चाल को देश की जनता समझ गई और उसने इस योजना का विरोध किया, परंतु कर्ज़न ने अपनी जिद्द को पूरा किया। बंगाल के दो हिस्से कर दिए गए-पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 3:

कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर-

कर्जन को इस्तीफा निम्नलिखित कारणों से देना पड़ा –

1. कर्जन ने बंगाल का विभाजन राष्ट्रवादी ताकतों को तोड़ने के लिए किया था, परंतु इसका परिणाम उलटा हुआ। सारा देश एकजुट हो गया और ब्रिटिश शासन की जड़े हिल गईं।
2. कर्जन इंग्लैंड में एक फ़ौजी अफ़सर को इच्छित पद पर नियुक्त करवाना चाहता था। उसकी सिफारिश को नहीं माना। गया। इससे क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा देने की धमकी दी। ब्रिटिश सरकार ने उनका इस्तीफा की मंजूर कर लिया।

प्रश्न 4:

विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने गिरे!-आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

लेखक कहता है कि कर्ज़न की भारत में शान थी। दिल्ली दरबार में उसका वैभव चरम सीमा पर था। पति-पत्नी की कुर्सी सोने की थी। उसका हाथी सबसे ऊँचा व सबसे आगे रहता था। सम्राट के भाई का स्थान भी इनसे नीचा था। इसके इशारे पर प्रशासन, राजा, धनी नाचते थे। इसके संकेत पर बड़े-बड़े राजाओं को मिट्टी में मिला दिया गया तथा अनेक निकम्मों को बड़े पद मिले। इस देश में भगवान और एडवर्ड के बाद उसका स्थान था, परंतु इस्तीफा देने के बाद सब कुछ खत्म हो गया। इसकी सिफारिश पर एक आदमी भी नहीं रखा गया। जिद के कारण इसका वैभव नष्ट हो गया।

प्रश्न 5:

आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है-यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर-

लॉर्ड कर्जन स्वयं को निरंकुश, सर्वशक्ति संपन्न मान बैठा था। भारतीय जनता उसकी मनमानी सह रही थी। अचानक गुस्साए लार्ड का इस्तीफा मंजूर हो गया और उसे जाना पड़ा। यहाँ लेखक कहना चाहते हैं कि लॉर्ड कर्जन और भारतीय जनता के बीच एक तीसरी शक्ति अर्थात् ब्रिटिश सरकार है जिस पर न तो लॉर्ड कर्जन का नियंत्रण है और न ही भारत के निवासियों का ही नियंत्रण है। इंग्लैंड की महारानी का शासन न तो कर्जन की बात सुनता है और न ही कर्जन के खिलाफ भारतीय जनता की गुहार सुनता है। उस पर इस निरंकुश का अंकुश भी नहीं चलता।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

पाठ का यह अंश शिवशभू के चिट्ठे से लिया गया है। शिवशंभु नाम की चर्चा पाठ में भी हुई है। बालमुकुंद गुप्त ने इस नाम का उपयोग क्यों किया होगा?

उत्तर-

शिवशंभु एक काल्पनिक पात्र है जो भाँग के नशे में खरी-खरी बात कहता है। यह पात्र अंग्रेजों की कुनीतियों को उजागर करता है। लेखक ने इस नाम का उपयोग सरकारी कानून के कारण किया। कर्जन ने प्रेस की अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य से सीधी टक्कर

लेने के हालात नहीं थे, परंतु शासन की पोल खोलकर जनता को जागरूक भी करना था। अतः काल्पनिक पात्र के जरिए अपनी मरजी की बातें कहलवाई जाती थीं।

प्रश्न 2:

नादिर से भी बढ़कर आपकी जिदद हैं-कर्जन के संदर्भ में क्या आपको यह बात सही लगती है? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर-

जी हाँ! कर्ज़न के संदर्भ में हमें यह बात सही लगती है। नादिरशाह एक क्रूर राजा था। उसने दिल्ली में कत्लेआम करवाया, परंतु आसिफजाह ने तलवार गले में डालकर उसके आगे समर्पण कर कत्लेआम रोकने की प्रार्थना की, तो तुरंत कत्लेआम रोक दिया गया। कर्ज़न ने बंगाल का विभाजन किया। आठ करोड़ भारतवासियों की बार-बार विनती करने पर भी उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी। इस संदर्भ में कर्ज़न की जिद्द नादिरशाह से बड़ी है। वह नादिरशाह से अधिक क्रूर था। उसने जनहित की उपेक्षा की।

प्रश्न 3:

क्या आँख बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है ? इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए शासन क्या है? इस यर अचा कीजिए।

उत्तर-

‘शासन’ किसी एक व्यक्ति की इच्छा से नहीं चलता। यह नियमों का समूह है जो अच्छी व्यवस्था का गठन करता है। यह प्रबंध जनहित के अनुरूप होनी चाहिए। निरंकुश शासक से जनता दुखी रहती है तथा कुछ समय बाद उसे शासक का विनाश हो जाता है। प्रजा को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हर नीति में जनकल्याण का भाव होना चाहिए।

प्रश्न 4:

इस पाठ में आए अलिफ लैला, अलहदीन, अबुल हसन और बगदाद के खलीफ़ा के बारे में सूचना एकत्रित कर कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

गौर करने की बात

(क) इससे आपका जाना भी परपरा की चाल से कुछ अलग नहीं है, तथापि आपके शासनकाल का नाटक घोर दुखांत है, और अधिक आश्चर्य की बात यह है कि दर्शक तो क्या, स्वय सूत्रधार भी नहीं जानता था कि उसने जो खेल सुखांत समझकर खेलना आरंभ किया था, वह दुखांत हो जावेगा।

(ख) यहाँ की प्रजा ने आपकी जिद्द का फल यहीं देख लिया। उसने देख लिया कि आपकी जिस जिदद ने इस देश की प्रजा को पीड़ित किया, आपको भी उसने कम पीड़ा न दी, यहाँ तक कि आप स्वय उसका शिकार हुए।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें सामान्य तौर पर आने के लिए यधारें शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ पधारें शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर-

यहाँ **पधारें** शब्द का अर्थ है-चले जाएँ।

प्रश्न 2:

पाठ में से कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं, जिनमें भाषा का विशिष्ट प्रयोग (भारतेंदु युगीन हिंदी) हुआ है। उन्हें सामान्य हिंदी में लिखिए

(क) आगे भी इस देश में जो प्रधान शासक आए, अत को उनकी जाना पड़ा।

(ख) आप किस को आए थे और क्या कर चले?

(ग) उनका रखाया एक आदमी नौकर न रखा।

(घ) पर आशीवाद करता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से लाभ करें।

उत्तर-

(क) पहले भी इस देश में जो प्रधान शासक हुए, अंत में उन्हें जाना पड़ा।

(ख) आप किसलिए आए थे और क्या करके चले ?

(ग) उनके रखवाने से एक आदमी नौकर न रखा गया।

(घ) आशीर्वाद देता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त करे।

अन्य हल प्रश्न

- **बोधात्मक प्रशन**

प्रश्न 1:

'विदाई-संभाषण' पाठ का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

उत्तर-

विदाई-संभाषण पाठ वायसराय कर्जन जो 1899-1904 व 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। यह अध्याय शिवशंभु के चिट्ठे का अंश है। कर्ज़न के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए, नए-नए आयोग बनाए गए, किंतु उन सबका उद्देश्य शासन में गोरों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का अंग्रेजों के हित में सर्वाधिक उपयोग करना था। कर्ज़न ने हर स्तर पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। वह सरकारी निरंकुशता का पक्षधर था। लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता तक पर उसने प्रतिबंध लगा दिया। अंतत: कौंसिल में मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उसे देश-विदेश-दोनों जगहों पर नीचा देखना पड़ा। क्षुब्ध होकर उसने इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चला गया। लेखक ने भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की है। साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लॉर्ड कर्ज़न जैसा वायसराय। यह निबंध भी उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था। ऐसी स्थिति में विनोदप्रियता, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा-प्रयोग एवं रवानगी के साथ यह एक साहसिक गद्य का नमूना भी है।

प्रश्न 2:

कैसर, ज़ार तथा नादिरशाह पर टिप्पणियाँ लिखिए।

उत्तर-

कैसर-यह शब्द रोमन तानाशाह जूलियस सीजर के नाम से बना है। यह शब्द तानाशाह जर्मन शासकों के लिए प्रयोग होता था। जार-यह भी जूलियस सीजर से बना शब्द है जो विशेष रूप से रूस के तानाशाह शासकों (16वीं सदी से 1917 तक) के लिए प्रयुक्त होता था। इस शब्द का पहली बार बुल्गेरियाई शासक (913 में) के लिए प्रयोग हुआ था। नादिरशाह-यह 1736 से 1747 तक ईरान का शाह रहा। तानाशाही स्वरूप के कारण 'नेपोलियन ऑफ परशिया' के नाम से भी जाना जाता था। पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली को नादिरशाह ने भी आक्रमण के लिए भेजा था।

प्रश्न 3:

राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से किन शब्दों में विदा ली थी?

उत्तर-

राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से विदा लेते समय कहा-'प्यारे नरवरगढ़! मेरा प्रणाम स्वीकार ले। आज मैं तुझसे जुदा होता हूँ। तू मेरा अन्नदाता है। अपनी विपद के दिन मैंने तुझमें काटे हैं। तेरे ऋण का बदला यह गरीब सिपाही नहीं दे सकता। भाई नरवरगढ़! यदि मैंने जानबूझकर एक दिन भी अपनी सेवा में चूक की हो, यहाँ की प्रजा की शुभ चिंता न की हो, यहाँ की स्त्रियों को माता और बहन की दृष्टि से न देखा हो तो मेरा प्रणाम न ले, नहीं तो प्रसन्न होकर एक बार मेरा प्रणाम ले और मुझे जाने की आज्ञा दे।'

प्रश्न 4: 'विदाई-संभाषण' तत्कालीन साहसिक लेखन का नमूना है। सिदध कीजिए।

उत्तर-

विदाई-संभाषण व्यंग्यात्मक, विनोदपूर्ण, चुलबुला, ताजगीवाला गद्य है। यह गद्य आततायी को पीड़ा की चुभन का अहसास कराता है। इससे यह नहीं लगता कि कर्ज़न ने प्रेस पर पाबंदी लगाई थी। इसमें इतने व्यंग्य प्रहार हैं कि कठोर-से-कठोर शासक भी घायल हुए बिना नहीं रह सकता। इसे साहसिक लेखन के साथ-साथ आदर्श भी कहा जा सकता है।

प्रश्न 5:

कर्ज़न के कौन-कौन-से कार्य क्रूरता की सीमा में आते हैं?

उत्तर-

कर्ज़न के निम्नलिखित कार्य क्रूरता की सीमा में आते हैं

(क) प्रेस पर प्रतिबंध।

(ख) करोड़ों लोगों की विनती के बावजूद बंगाल का विभाजन।

(ग) देश के संसाधनों का अंग्रेजी-हित में प्रयोग।

(घ) अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करना।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय**-शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा में 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिंदी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए।

इस समय एक साथ कई युवा कहानीकारों ने परंपरागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू कीं।
इस तरह कहानी की विधा साहित्य-जगत के केंद्र में आ खड़ी हुई। इस नए उठान को नई कहानी आंदोलन नाम दिया। इस आंदोलन में **शेखर जोशी** का स्थान अन्यतम है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें **पहल सम्मान** प्राप्त हुआ।

● **रचनाएँ**-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह-कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है।
शब्दचित्र-संग्रह-एक पेड़ की याद।
इनकी कहानियाँ कई भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी में भी अनूदित हो चुकी है। इनकी प्रसिद्ध कहानी **दाज्यू** पर चिल्ड्स फिल्म सोसाइटी द्वारा फिल्म का निर्माण भी हुआ है।

● **साहित्यिक परिचय**-शेखर जोशी की कहानियाँ नई कहानी आदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश और सुविधाहीन तबका इनकी कहानियों में जगह पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक नुक्तों को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। इनके रचना-संसार से गुजरते हुए समकालीन जनजीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया जा सकता है। ऐसा करने में इनकी प्रगतिशील जीवन-दृष्टि और यथार्थ-बोध का बड़ा योगदान रहा है।

पाठ का सारांश

गलता लोहा कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राहमण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे को प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।
मोहन के पिता वंशीधर ने जीवनभर पुरोहिती की। अब वृद्धावस्था में उनसे कठिन श्रम व व्रत-उपवास नहीं होता। उन्हें चंद्रदत्त के यहाँ रुद्री पाठ करने जाना था, परंतु जाने की तबियत नहीं है। मोहन उनका आशय समझ गया, लेकिन पिता का अनुष्ठान कर पाने में वह कुशल नहीं है। पिता का भार हलका करने के लिए वह खेतों की ओर चला, लेकिन हँसुवे की धार कुंद हो चुकी थी। उसे अपने दोस्त धनराम की याद आ गई। वह धनराम लोहार की दुकान पर धार लगवाने पहुँचा। धनराम उसका सहपाठी था। दोनों बचपन की यादों में खो गए। मोहन ने मास्टर त्रिलोक सिंह के बारे में पूछा। धनराम ने बताया कि वे पिछले साल ही गुजरे थे। दोनों हँस-हँसकर उनकी बातें करने लगे। मोहन पढ़ाई व गायन में निपुण था। वह मास्टर का चहेता शिष्य था और उसे पूरे स्कूल का मॉनीटर बना रखा था। वे उसे कमजोर बच्चों को दंड देने का भी अधिकार देते थे। धनराम ने भी मोहन से मास्टर के आदेश पर डडे खाए थे। धनराम उसके प्रति स्नेह व आदरभाव रखता था,

क्योंकि जातिगत आधार की हीनता उसके मन में बैठा दी गई थी। उसने मोहन को कभी अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा।
धनराम गाँव के खेतिहर या मजदूर परिवारों के लड़कों की तरह तीसरे दर्जे तक ही पढ़ पाया। मास्टर जी उसका विशेष ध्यान रखते थे। धनराम को तेरह का पहाड़ा कभी याद नहीं हुआ। इसकी वजह से उसकी पिटाई होती। मास्टर जी का नियम था कि सजा पाने वाले को अपने लिए हथियार भी जुटाना होता था। धनराम डर या मंदबुद्ध होने के कारण तेरह का पहाड़ा नहीं सुना पाया। मास्टर जी ने व्यंग्य किया-'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे। विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?" इतना कहकर उन्होंने थैले से पाँच-छह दरॉतियाँ निकालकर धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी। हालाँकि धनराम के पिता ने उसे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखा दी। विद्या सीखने के दौरान मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, परंतु गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे। धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली।
इधर मोहन ने छात्रवृत्ति पाई। इससे उसके पिता वंशीधर तिवारी उसे बड़ा आदमी बनाने का स्वप्न देखने लगे। पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। वे कभी परिवार का पूरा पेट नहीं भर पाए। अत: उन्होंने गाँव से चार मील दूर स्कूल में उसे भेज दिया। शाम को थकामाँदा मोहन घर लौटता तो पिता पुराण कथाओं से उसे उत्साहित करने की कोशिश करते। वर्षा के दिनों में मोहन नदी पार गाँव के यजमान के घर रहता था। एक दिन नदी में पानी कम था तथा मोहन घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था। पहाड़ों पर भारी वर्षा के कारण अचानक नदी में पानी बढ़ गया। किसी तरह वे घर पहुँचे इस घटना के बाद वंशीधर घबरा गए और फिर मोहन को स्कूल न भेजा। उन्हीं दिनों बिरादरी का एक संपन्न परिवार का युवक रमेश लखनऊ से गाँव आया हुआ था। उससे वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के संबंध में अपनी चिंता व्यक्त की तो वह उसे अपने साथ लखनऊ ले जाने को तैयार हो गया। उसके घर में एक प्राणी बढ़ने से कोई अंतर नहीं पड़ता। वंशीधर को रमेश के रूप में भगवान मिल गया। मोहन रमेश के साथ लखनऊ पहुँचा। यहाँ से जिंदगी का नया अध्याय शुरू हुआ। घर की महिलाओं के साथ-साथ उसने गली की सभी औरतों के घर का काम करना शुरू कर दिया। रमेश बड़ा बाबू था। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक हैसियत नहीं देता था। मोहन भी यह बात समझता था। कह सुनकर उसे समीप के सामान्य स्कूल में दाखिल करा दिया गया। कारों के बोझ व नए वातावरण के कारण वह । अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। गर्मियों की छुट्टी में भी वह तभी घर जा पाता जब रमेश या उसके घर का कोई आदमी गाँव जा रहा होता। उसे अगले दरजे की तैयारी के नाम पर शहर में रोक लिया जाता।
मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। वह घर वालों को असलियत बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। आठवीं कक्षा पास करने के बाद उसे आगे पढ़ने के लिए रमेश का परिवार उत्सुक नहीं था। बेरोज्ग्री का तर्क देकर उसे तकनी स्कूल में दाखिल करा दिया गया। वह पहले की तरह घर व स्कूल के काम में व्यस्त रहता। डेढ़-दो वर्ष के बाद उसे कारखानों के चक्कर काटने पड़े। इधर वंशीधर को अपने बेटे के बड़े अफसर बनने की उम्मीद थी। जब उसे वास्तविकता का पता चला तो उसे गहरा दुख हुआ। धनराम ने भी उससे पूछा तो उसने झूठ बोल दिया। धनराम ने उन्हें यही कहो-मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धमान थे।
इस तरह मोहन और धनराम जीवन के कई प्रसंगों पर बातें करते रहे। धनराम ने हँसुवे के फाल को बेंत से निकालकर तपाया, फिर उसे धार लगा दी। आमतौर पर ब्राहमण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। काम-काज के सिलसिले में वे खड़े-खड़े बातचीत निपटा ली जाती थी। ब्राहमण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की कार्यशाला में बैठकर उसके काम को देखने लगा।

धनराम अपने काम में लगा रहा। वह लोहे की मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर गोल बना रहा था, किंतु वह छड़ निहाई पर ठीक से फँस नहीं पा रही थी। अत: लोहा ठीक ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर उसे देखता रहा और फिर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया। नपी-तुली चोटों से छड़ को पीटते-पीटते गोले का रूप दे डाला। मोहन के काम में स्फूर्ति देखकर धनराम अवाक् रह गया। वह पुरोहित खानदान के युवक द्वारा लोहार का काम करने पर आश्चर्यचकित था। धनराम के संकोच, धर्मसंकट से उदासीन मोहन लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई की जाँच कर रहा था। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 56

अनायास-बिना प्रयास के। शिल्पकार-कारीगर। अनुगूँज-प्रतिध्वनि। निहाई-लोहे का ठोस टुकड़ा जिस पर लोहार लोहे को रखकर पीटते हैं। ठनकता-कसा हुआ तेज स्वर। खनक-आवाज। हँसुवा-घास काटने का औजार। बूते-वश। पुरोहिताई-पुरोहित का काम करना। यजमान-पूजा-पाठ कराने वाला। निष्ठा-लगन। संयम-नियंत्रण। जर्जर-जो कमजोर एवं बेकार हो, टूटा-फूटा। उपवास-भूखे रहना। नि:श्वास-गहरी साँस। रुद्रीपाठ-भगवान शंकर की पूजा के लिए मंत्र पढ़ना।

पृष्ठ संख्या 57

आशय-मतलब। अनुष्ठान-धार्मिक कार्य। अनुत्तरित-बिना उत्तर पाए। कुंद-धारहीन। धौंकनी-लोहे की नली। कनिस्तर-लोहे का चौकोर पीपा। पारखी-परखने की क्षमता रखने वाला। धमाचौकड़ी-उछल-कूद साँप सुंघ जाना-डर जाना। समवेत-सामूहिक। कुशाग्र-तेज। मॉनीटर—प्रमुख।

पृष्ठ संख्या 58

हमजोली-साथी। हीनता-छोटापन। प्रतिदवंदवी-दुश्मन। गुंजाइश-जगह। दूणी-दुगुना। सटाक्-डडा मारने की आवाज़। संटी-छड़ी।

पृष्ठ संख्या 59

घोटा लगाना-रटना। चाबुक लगाना-चोट करना। ताप-गरमी। सामथ्र्य-शक्ति। घन-बड़ा व भारी हथौड़ा। प्रसाद देना-दंड के रूप में वार। विरासत-पुरखों से प्राप्त ज्ञान, संपत्ति आदि। पैतृक-माँ-बाप का।

पृष्ठ संख्या 60

दारिद्रय-गरीबी। विदयाव्यसनी-विद्या पाने की ललक रखने वाला। उत्साहित-जोश में लाना। डेरा तय करना-रहने का स्थान निर्धारित करना। पात-पतेल-पत्ते आदि। रेला-समूह। बिरादरी-जाति।

पृष्ठ संख्या 61

साक्षात्-सामने। हाथ, बँटाना-सहयोग करना। हैसियत-सामथ्र्य, शक्ति। हीला-हवाली-ना-नुकुर। मेधावी-होशियार। लीक पर चलना-परंपरा के आधार पर चलन्। चारो’ न होना-उपाय न होना।

पृष्ठ संख्या 62

मुद्दा-विषय। बाबत-के बारे में। स्वप्नभग सपना दृउन! सैक्रेटेरियट-सचिवालयै।

पृष्ठ संख्या 63

फाल-लोहे का हिस्सा। तत्काल-तुरंत। मर्यादा-मान-सम्मान। असमंजस-दुविधा। सँड़सी-लोहे को पकड़ने का कैंचीनुमा औज़ार। अभ्यस्त-अभ्यास से सँवरा। सुघड़-सुंदर आकार वाला। हस्तक्षेप-दखल। आकस्मिक-अचानक। अवाक्-मौन, चकित।

पृष्ठ संख्या 64

हाथ डालना-काम के लिए तैयार होना। शकित-संदेह। धर्मसंकट-दुविधा। उदासीन-हटकर। त्रुटिहीन-निर्दोष। सर्जक–रचनाकार। स्पर्धा-होड़।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. लंबे बेंटवाले हँसुवे को लेकर वह घर से इस उद्देश्य से निकला था कि अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर आएगा। बूढ़े वंशीधर जी के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा। यही क्या, जन्म भर जिस पुरोहिताई के बूते पर उन्होंने घर-संसार चलाया था, वह भी अब वैसे कहाँ कर पाते हैं! यजमान लोग उनकी निष्ठा और संयम के कारण ही उन पर श्रद्धा रखते हैं लेकिन बुढ़ापे का जर्जर शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास नहीं झेल पाता। (पृष्ठ-56)

प्रश्न

1. मोहन घर से किस उद्देश्य के लिए निकला?
2. वशीधर के लिए कौन-सा कार्य कठिन हो गया?
3. यजमान किस पर श्रद्धा रखते हैं तथा क्यों?

उत्तर-

1. मोहन घर से लंबे बेंटवाला हँसुआ लेकर निकला। उसका उद्देश्य था कि इससे वह अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर देगा।
2. वंशीधर अब बूढ़ा हो गए थे। वे पुरोहिताई का काम तथा खेती से घर का गुजारा करते थे। अधिक उम्र व जर्जर शरीर के कारण अब वे कठिन श्रम व व्रत-उपवास को नहीं कर पाते थे।
3. यजमान वंशीधर पर श्रद्धा रखते हैं। वे उनकी निष्ठा व संयम की प्रशंसा करते हैं और इसी कारण उनका मान-सम्मान करते हैं।

2. मोहन के प्रति थोड़ी-बहुत ईर्ष्य रहने पर भी धनराम प्रारंभ से ही उसके प्रति स्नेह और आदर का भाव रखता था। इसका एक कारण शायद यह था कि बचपन से ही मन में बैठा दी गई जातिगत हीनता के कारण धनराम ने कभी मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा बल्कि वह इसे मोहन का अधिकार समझता रहा था। बीच-बीच में त्रिलोक सिंह मास्टर का यह कहना कि मोहन एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनकर स्कूल का और उनका नाम ऊँचा करेगा, धनराम के लिए किसी और तरह से सोचने की गुंजाइश ही नहीं रखता था। और धनराम! वह गाँव के दूसरे खेतिहर या मज़दूर परिवारों के लड़कों की तरह किसी प्रकार तीसरे दर्जे तक ही स्कूल का मुँह देख पाया था। (पृष्ठ-58)

प्रश्न

1. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वद्वी क्यों नहीं मानता था?
2. त्रिलोक मास्टर ने मोहन के बारे में क्या घोषणा की थी?
3. धनराम की नियति कय' थे?

उत्तर-

1. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं मानता था, क्योंकि उसके मन में बचपन से नीची जाति के होने का भाव भर दिया गया था। इसलिए वह मोहन की मार को उसका अधिकार समझता था।

2. त्रिलोक मास्टर ने यह घोषणा की थी कि मोहन एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनकर स्कूल व उनका नाम रोशन करेगा।
3. धनराम गाँव के गरीब तबके से संबंधित था। खेतिहर या मज़दूर परिवारों के बच्चों की तरह वह तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाया। उसके बाद वह परंपरागत काम में लग गया। यही उसकी नियति थी।

3. धनराम की मंदबुद्ध रही हो या मन में बैठा हुआ डर कि पूरे दिन घोटा लगाने पर भी उसे तेरह का पहाड़ा याद नहीं हो पाया था। छुट्टी के समय जब मास्साब ने उससे दुबारा पहाड़ा सुनाने को कहा तो तीसरी सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर लड़खड़ा गया था। लेकिन इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लाए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' अपने थैले से पाँच-छह दराँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामथ्र्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूंकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा। फर्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहाँ गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और ज़रा-सी गलती होने पर छड़, बेंत, हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपना प्रसाद दे देते। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे तो धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली और पास-पड़ोस के गाँव वालों को याद नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे थे। (पृष्ठ-59)

प्रश्न

1. धनराम तेरह का पहाड़ा क्यों नहीं याद कर पाया?
2. 'ज़बान की चाबुक' से क्या अभिप्राय है? त्रिलोक सिह ने धनराम को क्या कहा?
3. अध्यापक और लोहार के दड देने में क्या अतर था?

उत्तर-

1. धनराम ने तेरह का पहाड़ा सारे दिन याद किया, परंतु वह इस काम में सफल नहीं हो पाया। इसके दो कारण हो सकते हैं-
(क) धनराम की मंदबुद्ध
(ख) मन में बैठा हुआ पिटाई का डर।
2. इसका अर्थ है-व्यंग्य-वचन। मास्टर साहब ने धनराम को तेरह का पहाड़ा कई बार याद करने को दिया था, परंतु वह कभी याद नहीं कर पाया। उसे कई बार सजा मिली। इस बार उन्होंने उस पर व्यंग्य कसा कि तेरे दिमाग में लोहा भरा है। तुझे पढ़ाई नहीं आएगी।
3. याद न करने पर मास्टर त्रिलोक बच्चे को अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, जबकि लोहार गंगाराम सज़ा देने का हथियार स्वयं ही चुनते थे। गलती होने पर वे छड़, बेंत, हत्था-जो भी हाथ लगता, उससे सज़ा देते।

4. औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए सोहन को अपनी भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत ५ह नहीं

देता था, इस बात को मोहन भी समझने लगा था। थोड़ी-बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण रो स्कूल में उसका नाम लिखवा दिया। लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। उसका जीवन एक बँधी-बँधाई लीक पर चलता रहा। साल में एक बार गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाने का मौक भी तभी मिलता जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाला होता वरना उन छुट्टयों को भी अगले दरजे की तैयारी के नाम पर उसे शहर में ही गुज़ार देना पड़ता था। अगले दरजे की तैयारी तो बहाना भर थी, सवाल रमेश और उसकी गृहस्थी की सुविधा-असुविधा का था। मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था, क्योंकि और कोई चारा भी नहीं था। घरवालों को अपनी वास्तविक स्थिति बतलाकर वह दुखी नहीं करना चाहता था। वंशीधर उसके सुनहरे भविष्य के सपने देख रहे थे। (पृष्ठ-61)

प्रश्न

1. रमेश मोहन को किस हैसियत में रखता था तथा क्यों?
2. मोहन स्कूल में अपनी पहचान क्यों नहीं बना पाया?
3. मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया। कयों?

उत्तर-

1. रमेश मोहन को घरेलू नौकर की हैसियत में रखता था। इसका कारण यह था कि रमेश औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत का था। अत: वह मोहन को अपना भाई-बिरादर बताकर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता था।
2. रमेश ने काफी कहने के बाद मोहन का एक साधारण स्कूल में दाखिला करवा दिया। वह मेधावी था, परंतु घर के अत्यधिक काम और नए वातावरण के कारण वह अपनी प्रतिभा नहीं दिखा पाया। अत: उसकी पहचान स्कूल में नहीं बन पाई।
3. मोहन को पढ़ने के लिए शहर भेजा गया था, परंतु वहाँ पर उसे घरेलू नौकर की तरह रखा गया। उसे अपने घर की दीन दशा का पता था। वह अपनी वास्तविक स्थिति घर वालों को बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। अत: उसने परिस्थितियों से समझौता कर लिया।

5. लोहे की एक मोटी छड़ को भट्ठी में गलाकर धनराम गोलाई में मोड़ने की कोशिश कर रहा था। एक हाथ से सँडसी पकड़कर जब वह दूसरे हाथ से हथौड़े की चोट मारता तो निहाई पर ठीक घाट में सिरा न फैसने के कारण लोहा उचित ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर तक उसे काम करते हुए देखता रहा फिर जैसे अपना संकोच त्यागकर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया और धनराम के हाथ से हथौड़ा लेकर नपी-तुली चोट मारते, अभ्यस्त हाथों से धौंकनी फूंककर लोहे को दुबारा भट्ठी में गरम करते और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोकते-पीटते सुघड़ गोले का रूप दे डाला। (पृष्ठ-63)

प्रश्न

1. मोहन धनराम के आफर क्यों गया था? उस समय धनराम किस काम में तल्लीन था?
2. धनराम अपने काम में सफल क्यों नहीं हो रहा था?
3. मोहन ने धनराम का अधूरा काम कैसे पूरा किया?

उत्तर-

1. मोहन धनराम के आफर पर अपने हँसुवे की धार तेज़ करवाने के लिए गया था। उस समय धनराम लोहे की एक मोटी छड़ को भट्ठी में गलाकर उसे गोलाई में मोड़ने का प्रयास कर रहा था।
2. धनराम अपने काम में इसलिए सफल नहीं हो पा रहा था, क्योंकि वह एक हाथ से सँड़सी पकड़कर दूसरे हाथ से हथौड़े की चोट मारता तो निहाई पर ठीक घाट में सिरा न फैसने का कारण लोहा सही तरीके से नहीं मुड़ रहा था।
3. मोहन कुछ देर तक धनराम के काम को देखता रहा। अचानक वह उठा और दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर करके धनराम का हथौड़ा लेकर नपी-तुली चोट की। उसके बाद उसने स्वयं धौंकनी फूंककर लोहे को दोबारा भट्ठी में गरम किया और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोक-पीटकर सुघड़ गोले में बदल दिया।

6. धनराम की संकोच, असमंजस और धर्म-संकट की स्थिति से उदासीन मोहन संतुष्ट भाव से अपने लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जाँच रहा था। उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी-जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार-जीत का भाव। (पृष्ठ-64)

प्रश्न

1. धनराम क असमजस का क्या कारण था?
2. मोहन की मन:स्थिति पर टिप्पणी कीजिए।
3. धनराम किस सकोच, असमजस और धर्म-सकट की स्थिति में था?

उत्तर-

1. धनराम के असमंजस के दो कारण थे
   (क) मोहन ब्राहमण होकर भी लुहार का काम कर रहा था।
   (ख) मोहन शिक्षित था, फिर भी उसने कुशलतापूर्वक लोहे की छड़ को सुघड़ गोले में बदल दिया। यह भी हैरानी का विषय था।
2. मोहन ने लोहे की छड़ को सुंदर गोले में बदल दिया। इसलिए उसकी आँखों में सर्जक की चमक थी। वह धनराम से अपनी कारीगरी की प्रशंसा चाहता था।
3. धनराम लुहार जाति का था। वह लोहे की अनेक वस्तुएँ बनाया करता था। यह उसका पैतृक पेशा था। मोहन उसके बचपन का मित्र और सहपाठी था, जिसे लोहे के छल्ले बनाते हुए देखकर धनराम अपने मित्र के सामने वह संकोच, असमंजस और धर्म-संकट महसूस कर रहा था।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विदया और घन चलाने की विद्या का ज़िक्र आया है।

उत्तर-

जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने ज़बान के चाबुक लगाते हुए कहा कि 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह सच

है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फेंकने और सान लगाने के कामों में लगा दिया था वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। मास्टर जी पढ़ाई करते समय छड़ी से और पिता जी मनमाने औजार-हथौड़ा, छड़, हत्था जो हाथ लगे उससे पीट पीटकर सिखाते थे। इस प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

प्रश्न 2:

धनराम मोहन को अपना प्रतिदवंदवी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर-

धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न 3:

धनराम को मोहन के लिए व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?

उत्तर-

मोहन ब्राह्मण जति का था। उस गाँव में ब्राहमण स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा शिल्पकारों के साथ उठते-बैठते नहीं थे। यदि उन्हें बैठने के लिए कह दिया जाता तो भी उनकी मार्यादा भंग होती थी। धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी मोहन देर तक बैठा रहा। यह देखकर धनराम हैरान हो गया। वह और अधिक हैरान तब हुआ जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा नेकर लोहे पर नपी-तुली चोट मारने लगा और धौंकनी फेंकते हुए भट्ठी में गरम किया और ठोक पीठकर उसे गोल रूप दे रहा था।

प्रश्न 4:

मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

उत्तर-

लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

प्रश्न 5:

मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर-

एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत के अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि “तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?” यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान के चाबुक कहा है, क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से

भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है 'मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता'। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

प्रश्न 6:

(1) बिरादरी का यही सहारा होता है।

(क) किसने किससे कहा?

(ख) किस प्रसंग मं कहा?

(ग) किस आशय से कहा?

(घ) क्या कहानी में यह आशय स्पष्ट हुआ है?

उत्तर-

(क) यह वाक्य मोहन के पिता वंशीधर ने बिरादरी के संपन्न युवक रमेश से कहा।

(ख) जब वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के बारे में चिंता व्यक्त की तो रमेश ने उससे सहानुभूति जताई और उन्हें सुझाव दिया कि वे मोहन को उसके साथ ही लखनऊ भेज दें ताकि वह शहर में रहकर अच्छी तरह पढ़-लिख सकेगा।

(ग) यह कथन रमेश के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कहा गया। बिरादरी के लोग ही एक-दूसरे की मदद करते हैं।

(घ) कहानी में यह आशय स्पष्ट नहीं हुआ। रमेश अपने वायदे को पूरा नहीं कर पाया। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक नहीं समझता था। उसने व परिवार ने मोहन का खूब शोषण किया और प्रतिभाशाली विद्यार्थी का भविष्य चौपट कर दिया। अंत में उसे बेरोजगार कर घर वापस भेज दिया।?

(2) उसकी अखिों में एक सजक की चमक थी-कहानी का यह वाक्य-

(क) किसके लिए कहा गया हैं?

(ख) किस प्रसग में कहा गया हैं?

(ग) यह पात्र-विशेष के किन चारित्रिक पहलुओं को उजागर करता है?

उत्तर-

(क) यह वाक्य मोहन के लिए कहा गया है।

(ख) मोहन धनराम की दुकान पर हँसुवे में धार लगवाने आता है। काम पूरा हो जाने के बाद भी वह वहीं बैठा रहता है। धनराम एक मोटी लोहे की छड़ को गरम करके उसका गोल घेरा बनाने का प्रयास कर रहा होता है, परंतु सफल नहीं हो पा रहा है। मोहन ने अपनी जाति की परवाह न करके हथौड़े से नपी-तुली चोट मारकर उसे सुघड़ गोले का रूप दे दिया। अपने सधे हुए अभ्यस्त हाथों का कमाल के उपरांत उसकी आँखों में सर्जक की चमक थी।

(ग) यह मोहन के जाति-निरपेक्ष व्यवहार को बताता है। वह पुरोहित का पुत्र होने के बाद भी अपने बाल सखा धनराम के आफर पर काम करता है। यह कार्य उसकी बेरोजगारी की दशा को भी व्यक्त करता है। वह अपने मित्र से काम न होता देख उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ा देता है और काम पूरा कर देता है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन-संघर्ष में क्या फ़र्क है? चर्चा करें और लिखें।

उत्तर-

गाँव में मोहन अपने लिए संघर्ष कर रहा था। दूसरे गाँव की पाठशाला में जाने के लिए प्रतिदिन नदी पार करना, मन लगाकर पढ़ना, हर अध्यापक के मन में अपनी जगह बनाना–ये सारे संघर्ष वह अपना भविष्य बनाने और अपने माता-पिता के सपने पूरे करने के लिए कर रहा था। लखनऊ शहर में जाकर रमेश के घर में आलू लाना, दही लाना, धोबी को कपड़े देकर आना-ये सब काम वह रमेश के परिवार के लिए कर रहा था। इससे उसका अपना भविष्य धूमिल हो गया और माता-पिता के सपने टूट गए। गाँव का होनहार बालक शहर में घरेलू नौकर बनकर रह गया था। इसी प्रकार के तर्क लिखकर सहपाठियों के साथ चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

प्रश्न 2:

एक अध्यापक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है? अपनी समझ में उनकीखूबियों और खामियों पर विचार करें।

उत्तर-

मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व अध्यापक के रूप में ठीक-ठाक लगता है। वे अच्छे अध्यापक की तरह बच्चों को लगन से पढ़ाते थे। वे किसी के सहयोग के बिना पाठशाला चलाते थे। वे अनुशासन प्रिय हैं तथा दंड के भय आदि के द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। वे होशियार बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इन सब विशेषताओं के बावजूद उनमें कमियाँ भी हैं। वे जातिगत भेदभाव को मानते हैं। वे विद्यार्थियों को सख्त दंड देते थे। वे मोहन से भी बच्चों की पिटाई करवाते थे। वे कमजोर बच्चों को कटु बातें बोलकर उनमें हीन भावना भरते थे। छात्रों में हीनभावना तथा भेदभाव करने का उनका तरीका अशोभनीय था।

प्रश्न 3:

गलत लोहा कहानी का अंत एक खास तरीके से होता है। क्या इस कहानी का कोई अन्य अंत हो सकता है? चचा करें?

उत्तर-

इस कहानी का अंत और कई तरीकों से हो सकता है

1. मोहन द्वारा गाँव लौटकर झूठे मान की रक्षा के लिए कोई काम न करना और खाली बैठे रहना।
2. मोहन के माता-पिता का विद्रोह कर उठना और रमेश से झगड़ा करना, दोषारोपण करना।
3. धनराम को देखकर मोहन का मुँह फेर लेना और बात न करना।
4. मोहन द्वारा एक छोटा कारखाना खोलकर ग्रामीण लड़कों को हाथ का हुनर सिखाना।

इसके अतिरिक्त भी कहानी के अनेक अंत और तरीके हो सकते हैं।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

पाठ में निम्नलिखित शब्द लौहकर्म से सबंधित हैं। किसका क्या प्रयोजन हैं? शब्द के सामने लिखिए

(क) धोकनी ....

(ख) दराँती ....

(ग) सड़सी ....

(घ) आफर ....

(ङ) हथौड़ा ....

उत्तर-

1. धौंकनी – भट्ठी की आग को हवा देने का यंत्र।
2. दराँती – घास, अनाज आदि को काटने का औजार।
3. सँड़सी – गर्म लोहे को पकड़ने का औज़ार।
4. आफर – वह स्थान जहाँ लोहे का सामान बनाया जाता है।
5. हथौड़ा – ठोकने-पीटने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की मूठ वाला यंत्र।

प्रश्न 2:

पाठ में 'काट-छाँटकर' जैसे कई संयुक्त क्रिया शब्दों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

(क) उठा-पटककर-बच्चों ने घर में उठा-पटककर सारा सामान बिखेर दिया।

(ख) उलट-पलट-दंगाइयों ने दुकान का सारा सामान उलट-पलट दिया।

(ग) पढ़-लिखकर-हर युवा पढ़-लिखकर अफसर बनना चाहता है।

(घ) सहमते-सहमते-बैग खोने के कारण रोहित सहमते-सहमते घर में घुसा।

(ङ) खा-पीकर-हम लोग झील में खा-पीकर नाव चलाने लगे।

प्रश्न 3:

'बूते का' प्रयोग पाठ में तीन स्थानों पर हुआ है उन्हें छाँटकर लिखिए और जिन संदर्भों में उनका प्रयोग है, उन संदर्भों में उन्हें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) दान-दक्षिणा के बूते पर वे घर चलाते।

-यहाँ बूते शब्द का अर्थ है बल पर या भरोसे पर।

(ख) सीधी चढ़ाई अब अपने बूते की बात नहीं।

-यहाँ बूते शब्द का अर्थ है बस की नहीं है।

(ग) जिस पुरोहिताई के बूते पर घर चलाते थे वह भी अब कैसे चलती है।

-यहाँ बूते शब्द का अर्थ है के सहारे।

प्रश्न 4:

मोहन थोड़ा दही तो ला दे बाज़ार से।
मोहन! ये कपड़े धोबी को दे तो आ।
मोहन एक किलो आलू तो ला दे।

ऊपर के वाक्यों में मोहन को आदेश दिए गए हैं। इन वाक्यों में आप सर्वनाम का इस्तेमाल करते हुए उन्हें दुबारा लिखिए।

उत्तर-

(क) आप बाज़ार से थोड़ा दही तो ला दीजिए।

(ख) आप ये कपड़े धोबी को दे तो आइए।

(ग) आप एक किलो आलू तो ला दीजिए।

विज्ञापन की दुनिया

विभिन्न व्यापारी अपने उत्पाद की बिक्री के लिए अनेक तरह के विज्ञापन बनाते हैं। आप भी हाथ से बनी किसी वस्तु की बिक्री के लिए एक ऐसा विज्ञापन बनाइए जिससे हस्तकला का कारोबार चले।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

- **बोधात्मक प्रशन**

प्रश्न 1:

'गलता लोहा' कहानी का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

उत्तर-

गलता लोहा कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राहमण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे के प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।

प्रश्न 2:

मोहन के पिता के जीवन-संघर्ष पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-

मोहन के पिता वंशीधर तिवारी गाँव में पुरोहिती का काम करते थे। पूजा-पाठ धार्मिक अनुष्ठान करना-करवाना उनका पैतृक पेशा था। वे दूर-दूर तक यह कार्य करने जाते थे। इस कार्य से परिवार का गुजारा मुश्किल से होता था। वे अपने हीनहार बेटे को भी नहीं पढ़ा पाए। यजमान उनकी थोड़ी बहुत सहायता कर देते थे।

प्रश्न 3:

कहानी में चित्रित सामाजिक परिस्थितियाँ बताइए।

उत्तर-

कहानी में गाँव के परंपरागत समाज का चित्रण किया गया है। ब्राहमण टोले के लोग स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा वे शिल्पकार के टोले में उठते-बैठते नहीं थे। कामकाज के कारण शिल्पकारों के पास जाते थे, परंतु वहाँ बैठते नहीं थे। उनसे बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन कुछ वर्ष शहर में रहा तथा बेरोजगारी की चोट सही। गाँव में आकर वह इस व्यवस्था को चुनौती देता है।

प्रश्न 4:

वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर-

वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थी। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने घास का एक तिनका तोड़कर दाँत खोदते हुए बताया कि उसकी सक्रेटेरियट में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहुँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दु:ख होता था।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय**-कृष्णनाथ का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी में 1934 ई. में हुआ। इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए की। इसके बाद इनका झुकाव समाजवादी आंदोलन और बौद्ध दर्शन की ओर हो गया। बौद्ध दर्शन में इनकी गहरी पैठ है। वे अर्थशास्त्र के विद्वान हैं और काशी विद्यापीठ में इसी विषय के प्रोफेसर भी रहे। इनका अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं पर अधिकार है। वे दोनों भाषाओं की पत्रकारिता से जुड़े रहे। ये हिंदी की साहित्यिक पत्रिका **कल्पना** के संपादक मंडल में कई वर्ष तक रहे। इन्होंने अंग्रेजी के **मैनकाइंड** का कुछ वर्षों तक संपादन भी किया।

वे राजनीति, पत्रकारिता और अध्यापन की प्रक्रिया से बौद्ध दर्शन की ओर मुड़े। इन्होंने भारतीय व तिब्बती आचार्यों के साथ बैठकर नागार्जुन के दर्शन और वज़यानी परंपरा का अध्यापन किया। इन्होंने भारतीय चिंतक जे. कृष्णमूर्ति के साथ बौद्ध दर्शन पर काम किया। इन्हें लोहिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● **रचनाएँ**-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

लद्दाख में राग-विराग, किन्नर धर्मलोक, स्पीति में बारिश, पृथ्वी परिकमा, हिमालय यात्रा. अरुणाचल यात्रा, बौद्ध निबंधावली।

इसके अलावा, इन्होंने हिंदी और अंग्रेजी में कई पुस्तकों का संपादन भी किया।

● **साहित्यिक परिचय**-कृष्णनाथ उच्चकोटि के रचनाकार थे। इन्होंने सृजन-आकांक्षा की पूर्ति हेतु यायावरी की। एक यायावरी इन्होंने वैचारिक धरातल पर की थी, दूसरी सांसारिक अर्थ में। उन्होंने हिमालय की यात्रा शुरू की तथा बौद्ध धर्म व भारतीय मिथकों से जुड़े स्थलों को खोजना व खैगालना शुरू किया। इन्होंने अपनी इस यात्रा को शब्दों में बाँधा। वे जहाँ की यात्रा करते हैं, वहाँ पर्यटक के साथ तत्ववेत्ता की तरह अध्ययन करते चलते हैं। वे वहाँ की विशेष स्मृतियों को भी उघाड़ते हैं। ये वे स्मृतियाँ होती हैं जो इतिहास के प्रवाह में सिर्फ स्थानीय होकर रह गई हैं, लेकिन जिनका संपूर्ण भारतीय लोकमानस से गहरा रिश्ता रहा है। पहाड़ के किसी छोटे-बड़े शिखर पर दुबककर बैठी वह विस्मृत-सी-स्मृति मानो कृष्णनाथ की प्रतीक्षा कर रही हो।

इनके यात्रा-वृत्तांत स्थान-विशेष से जुड़े होकर भी भाषा, इतिहास, पुराण का संसार समेटे हुए हैं। पाठक उनके साथ खुद यात्रा करने लगता है। जो लोग इन स्थानों की यात्रा कर चुके होते हैं, वे कृष्णनाथ के यात्रा-वृत्तांत को पढ़कर अपनी यात्रा को पूरा मानेंगे।

पाठ का सारांश

यह पाठ एक यात्रा-वृत्तांत है। स्पीति, हिमालय के मध्य में स्थित है। यह स्थान अपनी भौगोलिक एवं प्राकृतिक विशेषताओं के कारण अन्य पर्वतीय स्थलों से भिन्न है। लेखक ने यहाँ की जनसंख्या, ऋतु, फसल, जलवायु व भूगोल का वर्णन किया है। ये एक-दूसरे से संबंधित हैं। उन्होंने दुर्गम क्षेत्र स्पीति में रहने वाले लोगों के कठिनाई भरे जीवन का भी वर्णन किया है। कुछ युवा पर्यटकों का पहुँचना स्पीति के पर्यावरण को बदल सकता है। ठंडे रेगिस्तान जैसे स्पीति के लिए उनका आना, वहाँ बूंदों भरा एक सुखद संयोग बन सकता है।

लेखक बताता है कि हिमाचल प्रदेश के लाहुल-स्पीति जिले की तहसील स्पीति है। ऊँचे दरों व कठिन रास्तों के कारण इतिहास में इसका नाम कम ही रहा है। आजकल संचार के आधुनिक साधनों में वायरलेस के जरिए ही केलग व काजा के बीच संबंध रहता है। केलग के बादशाह को

हमेशा अवज्ञा या बगावत का डर रहता है। यह क्षेत्र प्राय: स्वायत्त रहा है चाहे कोई भी राजा रहा हो। इसका कारण यहाँ का भूगोल है। भूगोल ही इसकी रक्षा तथा संहार करता है। पहले राजा का हरकारा आता था तो उसके आने तक अल्प वसंत बीत जाता था। जोरावर सिंह हमले के समय स्पीति के लोग घर छोड़कर भाग गए थे। उसने यहाँ के घरों और विहारों को लूटा।

स्पीति में जनसंख्या लाहुल से भी कम है। 1901 में यहाँ 3231 लोग थे, अब यहाँ 34,000 लोग हैं। लाहुल स्पीति का क्षेत्रफल 12210 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ जनसंख्या प्रति वर्गमील बहुत कम है। भारत को यहाँ का प्रशासन ब्रिटिश राज से मिला। अंग्रेजों ने 1846 ई. में कश्मीर के राजा गुलाब सिंह से यहाँ का प्रशासन लिया था ताकि वे पश्चिमी तिब्बत के ऊन वाले क्षेत्र में जा सकें। लद्दाख मंडल के समय यहाँ का शासन स्थानीय राजा (नोनी) द्वारा चलाया जाता था। अंग्रेजी काल में कुल्लू के असिस्टेंट कमिश्नर के समर्थन से नोनो काम करता था। स्थानीय लोग इसे अपना राजा मानते थे।

1873 ई. में स्पीति रेगुलेशन में लाहुल व स्पीति को विशेष दर्जा दिया गया। यहाँ पर अन्य कानून लागू नहीं होते थे। यहाँ के नोनो को मालगुजारी इकट्ठा करने तथा छोटे-छोटे फौजदारी के मुकदमों का फैसला करने का अधिकार दिया गया। उससे ऊपर के मामले वह कमिश्नर के पास भेज देता था। 1960 में इस क्षेत्र को पंजाब राज्य में तथा 1966 में हिमाचल प्रदेश बनने के बाद राज्य के उत्तरी छोर का जिला बनाया गया।

स्पीति 31.42 और 32.59 अक्षांश उत्तर और 77.26 और 78.42 पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। यहाँ चारों तरफ पहाड़ हैं। इसकी मुख्य घाटी स्पीति नदी की घाटी है। स्पीति नदी तिब्बत की तरफ से आती है तथा किन्नौर जिले से बहती हुई सतलुज में मिलती है। लेखक पारा नदी, पिन की घाटी के बारे में भी मान भाई से सुना है। यह क्षेत्र अत्यंत बीहड़ और वीरान है। यहाँ लोग रहते कैसे हैं? स्पीति के बारे में बताने पर यह सवाल लोग लेखक से पूछते हैं। ये क्षेत्र आठ-नौ महीने शेष दुनिया से कटे हुए हैं। वे एक फसल उगाते हैं तथा लकड़ी व रोजगार भी नहीं है, फिर भी वे यहाँ रह रहे हैं, क्योंकि वे यहाँ रहते आए हैं। यह तर्क से परे की चीज है।

स्पीति के पहाड़ लाहुल से अधिक ऊँचे, भव्य व नंगे हैं। इनके सिरों पर स्पीति के नर-नारियों का आर्तनाद जमा हुआ है। यहाँ हिम का आर्तनाद है, ठिठुरन है और व्यथा है। स्पीति मध्य हिमालय की घाटी है। यह हिमालय का तलुआ है। लाहुल । समुद्र की तरह से 10535 फीट ऊँचा है तो स्पीति 12986 फीट ऊँचा। स्पीति घाटी को घेरने वाली पर्वत श्रेणियों की ऊँचाई 16221 से 16500 फीट है। दो चोटियाँ 21,000 फीट से भी ऊँची हैं। इन्हें बारालचा श्रेणियाँ कहते हैं। दक्षिण की पर्वत श्रेणियों को माने श्रेणियाँ कहते हैं। शायद बौद्धों के माने मंत्रों के नाम पर इनका नामकरण किया गया हो। बौद्धों का बीज मंत्र 'ओं मणि पद्मे हु' है। इसे संक्षेप में माने कहते है।

स्पीति के पार बाह्य हिमालय दिखता है। इसकी एक चोटी 23,064 फीट ऊँची बताई जाती है। लेखक चोटियों से होड़ लगाने के पक्ष में नहीं है। इन ऊँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है। कभी-कभी उनका मान-मर्यादा करना मर्द और औरत की शान है। लेखक चाहता है कि देश-दुनिया के मैदानों व पहाड़ों से युवक-युवतियाँ आकर अपने अहंकार को गलाकर फिर चोटियों के अहंकार को चूर करें। माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई। युवक-युवतियाँ यहाँ आकर किलोल करें तो यहाँ आनंद का प्रसार हो।

स्पीति में दो ही ऋतुएँ होती हैं। जून से सितंबर तक अल्पकालिक वसंत ऋतु तथा शेष वर्ष शीत ऋतु होती है। बसंत में जुलाई में औसत तापमान 15० सेंटीग्रेड तथा शीत में, जनवरी में औसत तापमान 8० सेंटीग्रेड होता है। वसंत में दिन गर्म तथा रात ठंडी होती है। शीत ऋतु की ठंड की कल्पना ही की जा सकती है। यहाँ वसंत का समय लाहुल से कम होता है। इस ऋतु में यहाँ फूल, हरियाली आदि नहीं आते। दिसंबर से मई तक बर्फ रहती है। नदी-नाले जम जाते हैं। तेज हवाएँ मुँह, हाथ व अन्य खुले अंगों पर शूल की तरह चुभती हैं।

यहाँ मानसून की पहुँच नहीं है। यहाँ बरखा बहार नहीं है। कालिदास को अपने 'ऋतु संहार' ग्रंथ में से वर्षा ऋतु का वर्णन हटाना होगा। उसका वर्षा वर्णन लाहुल-स्पीति के लोगों की समझ से परे है। वे नहीं जानते कि बरसात में नदियाँ बहती हैं,बादल बरसते हैं और मस्त हाथी चिंघाड़ते हैं। जंगलों में हरियाली छा जाती है और वियोगिनी स्त्रियाँ तड़पती हैं। यहाँ के लोगों ने कभी पर्याप्त वर्षा नहीं देखी। धरती सूखी, ठंडी व वंध्या रहती है।

स्पीति में एक ही फसल होती है जिनमें जौ, गेहूँ, मटर व सरसों प्रमुख है। इनमें भी जो मुख्य है। सिंचाई के साधन पहाड़ों से बहने वाले झरने हैं। स्पीति नदी का पानी काम में नहीं आता। स्पीति की भूमि पर खेती की जा सकती है बशर्त वहाँ पानी पहुँचाया जाए। यहाँ फल, पेड़ आदि नहीं होते। भूगोल के कारण स्पीति नंगी व वीरान है। वर्षा यहाँ एक घटना है। लेखक एक घटना का वर्णन करता है। वह काजा के डाक बंगले में सो रहा था। आधी रात के समय उन्हें लगा कि कोई खिड़की खड़का रहा है। उसने खिड़की खोली तो हवा का तेज झोंका मुँह व हाथ को छीलने-सा लगा। उसने पल्ला बंद किया तथा आड़ में देखा कि बारिश हो रही है। बर्फ की बारिश हो रही थी। सुबह उठने पर पता चला कि लोग उनकी यात्रा को शुभ बता रहे थे। यहाँ बहुत दिनों बाद बारिश हुई।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 7०

योग-मिलाप। आकस्मिक-अचानक हुई घटना। अलंध्य-जो पार न किया जा सके। संचार-संदेश भेजने का साधन। अवज़ा-आज्ञा को न मानना। बगावत-विद्रोह। वायरलेस – बिना तार संदेश भेजना। तहत-साथ। स्वायत्त-स्वतंत्र। सिरजी-रची। संहार-अंत। हरकारा-डाकिया। अल्प-थोड़ा, कम।

पृष्ठ संख्या 71

हदस-डर। चाँग्मा-एक पेड़ का नाम! अप्रतिकार-विरोध न करना। पदधति-तरीका। जस का तस-ज्यों-का-त्यों। दूरगामी-दूर तक जाने वाला। अधीनता-गुलामी। शरीक-लम्मिलित

पृष्ठ संख्या 72

रेगुलेशन-कानून। मालगुजारी-कर। फौजदारी-मारपीट। वृत्तात-हाल। स्वराज्य-अपना राज्य। छोर-किनारा। दुर्गम-जहाँ जाना कठिन हो। प्रीति-प्रेम। वीरान-जहाँ लोग न रहते हों। आबाद-बसी हुई। अचरज-हैरानी।

पृष्ठ संख्या 73

वृत्ति-जीविका। निर्वाण-वैराग्य। अतक्र्य-तर्क से परे। भव्य-विशाल। आर्तनाद-पीड़ा भरी आवाज। अट्टहास-ठहाका लगाना। बखशना-छोड़ना। तलहटी-पहाड़ से नीचे का क्षेत्र।

पृष्ठ संख्या 74

महात्म्य-महिमा। गजेटियर-राजपत्र। बाह्य-बाहरी। मान-मर्दन-कुचलना। कूवत-सामथ्र्य, बल। किलोल-खेल।

पृष्ठ संख्या 7s

अल्पकालिक-थोड़े समय के लिए। शूल-काँटा। बरखा-बहार-वर्षा की बहार। संहार-अंत।

पृष्ठ संख्या 76

मतवाला-मस्त। नगाड़े बजाना-बैंड बजाना। कामीजन-विलास करने वाले लोग। पावस-वर्षा ऋतु का महीना। लालित्य-सौंदर्य। संवेदन-अनुभव। कलपती-चीत्कार करती। साध-इच्छा। वध्या-बेकार। कुल-दो हलों से जोती जा सकने वाली धरती। उलीचना-हाथ से बाहर फेंकना।

पृष्ठ संख्या 77

पहर-समय। पल्ला-हिस्सा। आड़-ओट। तुषार-बर्फ़।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. स्पीति हिमाचल प्रदेश के लाहुल-स्पीति जिले की तहसील है। लाहुल-स्पीति का यह योग भी आकस्मिक ही है। इनमें बहुत योगायोग नहीं है। ऊँचे दरों और कठिन रास्तों के कारण इतिहास में भी कम रहा है। अलध्य भूगोल यहाँ इतिहास का एक बड़ा कारक है। अब जबकि संचार में कुछ सुधार हुआ है तब भी लाहुल-स्पीति का योग प्रात: 'वायरलेस सेट' के जरिए है जो केलग और काजा के बीच खड़कता रहता है। फिर भी केलंग के बादशाह को भय लगा रहता है कि कहीं काजा का सूबेदार उसकी अवज्ञा तो नहीं कर रहा है? कहीं बगावत तो नहीं करने वाला है? लेकिन सिवाय वायरलेस सेट पर संदेश भेजने के वह कर भी क्या सकता है? वसंत में भी 170 मील जाना-आना कठिन है। शीत में प्राय: असंभव है। (पृष्ठ-70)

प्रश्न

1. स्पीति कहाँ स्थित हैं?
2. स्पीति का नाम इतिहास में कम क्यों हैं?
3. केलग के बादशाह को क्या भय रहता हैं?

उत्तर-

1. स्पीति हिमाचल प्रदेश के लाहुल-स्पीति जिले की तहसील है। यह पहाड़ी भू-भाग बहुत ऊँचा-नीचा है। यहाँ के दरें और पहाड़ इसे दुर्गम बनाते हैं।
2. स्पीति का इतिहास में कम ही नाम आता है, क्योंकि ऊँचे दरों व कठिन रास्तों के कारण यह आम संसार से कटा रहता है। वहाँ आवागमन अत्यंत कठिन है।
3. केलग के बादशाह को भय रहता है कि काजा का सूबेदार उसकी आज्ञा का पालन करता है या नहीं? कहीं वह बगावत तो नहीं करने वाला। उसके पास संचार का साधन मात्र वायरलेस सेट था।

2. अचरज यह नहीं कि इतने कम लोग क्यों हैं? अचरज यह है कि इतने लोग भी कैसे बसे हुए हैं? मैंने जब भी स्पीति की विपत्ति बताई है तो लोगों ने यही पूछा कि आखिर तब लोग वहाँ रहते क्यों हैं? आठ-नौ महीने शेष दुनिया से कटे हुए हैं। ठंड में ठिठुर रहे हैं। सिर्फ एक फसल उगाते हैं। लकड़ी भी नहीं है कि घर गरम रख सकें। वृत्ति नहीं है। फिर क्यों रहते हैं? क्या अपने धर्म की रक्षा के

लिए रहते हैं? अपनी जन्मभूमि के ममत्व के कारण रहते हैं? या इस मजबूरी में रहते हैं कि कहीं और जा नहीं सकते? कहाँ जाएँ? या फिर और बातों के साथ-साथ यह सब कारण हैं? मैं नहीं जानता। मैं तो इतना ही देखता हूँ कि यहाँ रह रहे हैं, इसलिए रह रहे हैं। और कोई तर्क नहीं है। तर्क से हम किसी चीज को भले सिद्ध कर सकें, स्पीति में रहने को सिद्ध नहीं कर सकते। लेकिन तर्क का इतना मोह क्यों? ज्यादा करके संसार और निर्वाण अतक्र्य है। तर्क के परे है। (पृष्ठ-72-73)

प्रश्न

1. लेखक को स्पीति में लोगों के रहने पर आश्चर्य क्यों है?
2. स्पीति में कोन-सी कठिन परिस्थितियाँ हैं?
3. ससार और निवाण अतक्र्य क्यों हैं?

उत्तर-

1. लेखक कहता है कि यहाँ भयंकर ठंड होती है। यहाँ लकड़ी, रोजगार नहीं है। फसल भी एक ही होती है। ऐसी दुर्गम स्थितियों में भी लोग यहाँ रहते हैं। इसी बात पर लेखक को हैरानी है।
2. स्पीति में निम्नलिखित कठिन परिस्थितियाँ हैं-
   (क) भयंकर ठंड ।
   (ख) आठ-नौ महीने शेष दुनिया से कटे रहना
   (ग) एक फसल ले पाना
   (घ) घर गर्म करने हेतु लकडी तक का न होना
   (ङ) रोजगार न होना
3. संसार और निर्वाण तर्क से परे हैं। लेखक कहना चाहता है कि संसार की हर वस्तु को तर्क के आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता। प्राणी की उत्पत्ति, संसार का चक्र आदि को कभी समझा नहीं जा सका। इसी तरह मृत्यु के कारण, मृत्यु के बाद जीव का स्थान आदि का सटीक उत्तर नहीं है।

3. मध्य हिमालय की जो श्रेणियाँ स्पीति को घेरे हुए हैं उनमें से जो उत्तर में हैं उसे बारालाचा श्रेणियों का विस्तार समझे। बारालाचा दरें की ऊँचाई का अनुमान 16221 फीट से लगाकर 16,500 फीट का लगाया गया है। इस पर्वत-श्रेणी में दो चोटियों की ऊँचाई 21,000 फीट से अधिक है। दक्षिण में जो श्रेणी है वह माने श्रेणी कहलाती है। इसका क्या अर्थ है? कहीं यह बौद्धों के माने मंत्र के नाम पर तो नहीं है? ‘ओं मणि पद्मे हु’ इनका बीज मंत्र है इसका बड़ा महात्म्य है। इसे संक्षेप में माने कहते हैं। कहीं इस श्रेणी का नाम इस माने के नाम पर तो नहीं है? अगर नहीं है तो करने जैसा है। यहाँ इन पहाड़ियों में माने का इतना जाप हुआ है कि यह नाम उन श्रेणियों को दे डालना ही सहज है। (पृष्ठ-73-74)

प्रश्न

1. स्पीति की किन पवतश्रेणियों ने घर रखा है? उनकी ऊँचाई कितनी हैं?
2. दक्षिण की श्रेणी के नामकरण का क्या आधार हैं?

3. स्पीति में किस धर्म का प्रभाव है? सप्रमाण उत्तर दीजिए।

उत्तर-

1. स्पीति मध्य हिमालय पर बसा हुआ है। इसके उत्तर की ओर बारालाचा श्रेणियाँ हैं। इनकी ऊँचाई 16221 फीट से लेकर 16500 फीट तक है। इस पर्वत-श्रेणी की दो चोटियों की ऊँचाई 21,000 फीट से अधिक है। दक्षिण में माने श्रेणी है।
2. दक्षिण की श्रेणी का नाम माने है। बौद्धों में भी माने एक बीज मंत्र है-'ओं मणि पद्मे हु।' इसकी बड़ी मान्यता है। इसे माने कहते हैं। लेखक का मानना है कि शायद माने मंत्र के अत्यधिक जप के कारण इसे माने श्रेणी कहने लगे हों।
3. स्पीति में बौद्ध धर्म का प्रभाव है। यहाँ की पर्वत श्रेणी को माने श्रेणी कहा जाता है। शायद इसका नाम माने के नाम पर ही हुआ हो। यदि ऐसा नहीं है तो भी यहाँ माने का जाप हुआ है, जिससे स्पष्ट होता है कि यहाँ बौद्ध धर्म का प्रभाव है।

4. मैं ऊँचाई के माप के चक्कर में नहीं हूँ। न इनसे होड़ लगाने के पक्ष में हूँ। वह एक बार लोसर में जो कर लिया सो बस है। इन ऊँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है। हाँ, कभी-कभी उनका मान-मर्दन करना मर्द और औरत की शान है। मैं सोचता हूँ कि देश और दुनिया के मैदानों से और पहाड़ों से युवक-युवतियाँ आएँ और पहले तो स्वयं अपने अहंकार को गलाएँ-फिर इन चोटियों के अहंकार को चूर करें। उस आनंद का अनुभव करें जो साहस और कूवत से यौवन में ही प्राप्त होता है। अहंकार का ही मामला नहीं है। ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। युवक-युवतियाँ किलोल करें तो यह भी हर्षित हों। अभी तो इन पर स्पीति का आर्तनाद जमा हुआ है। वह इस युवा अट्टहास की गरमी से कुछ तो पिघले। यह एक युवा निमंत्रण है। (पृष्ठ-74)

प्रश्न

1. लखक क्या नहीं चाहता तथा क्यों? W.
2. लेखक किन्हें यहाँ बुलाना चाहता है? क्यों?
3. लखक के अनुसार, माने की चोटियाँ उदास क्यों हैं?

उत्तर-

1. लेखक यह नहीं चाहता कि ऊँचाइयों के माप के चक्कर में पड़ा जाए। वह उनसे होड़ लगाने के पक्ष में भी नहीं है। इसका कारण यह है कि ऊँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु का कारण बन सकता है।
2. लेखक दुनिया के मैदानों व पहाड़ों से युवक-युवतियों को बुलाना चाहता है ताकि वे यहाँ आकर पहले अपने अहंकार को गलाएँ तथा फिर चोटियों का मान-मर्दन करें। इससे उन्हें आनंद की अनुभूति होगी।
3. लेखक के अनुसार माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हैं। दूसरे, यहाँ के भूगोल के कारण बर्फ का आर्तनाद छाया रहता है। अत: ये चोटियाँ उदास हैं।

5. यह पावस यहाँ नहीं पहुँचता है। कालिदास की वर्षा की शोभा विंध्याचल में है। हिमाचल की इन मध्य की घाटियों में नहीं है। मैं नहीं जानता कि इसका लालित्य लाहुल-स्पीति के नर-नारी समझ भी पाएँगे या नहीं। वर्षा उनके संवेदन का अंग नहीं है। वह यह जानते नहीं हैं कि 'बरसात में नदियाँ बहती हैं, बादल बरसते, मस्त हाथी चिंघाड़ते हैं, जंगल हरे-भरे हो जाते हैं, अपने प्यारों से

बिछुड़ी हुई स्त्रियाँ रोती-कलपती हैं, मोर नाचते हैं और बंदर चुप मारकर गुफाओं में जा छिपते हैं।' अगर कालिदास यहाँ आकर कहें कि 'अपने बहुत से सुंदर गुणों से सुहानी लगने वाली, स्त्रियों का जी खिलाने वाली, पेड़ों की टहनियों और बेलों की सच्ची सखी तथा सभी जीवों का प्राण बनी हुई वर्षा ऋतु आपके मन की सब साधे पूरी करें' तो शायद स्पीति के नर-नारी यही पूछेंगे कि यह देवता कौन है? कहाँ रहता है? यहाँ क्यों नहीं आता? स्पीति में कभी-कभी बारिश होती है। वर्षा ऋतु यहाँ मन की साध पूरी नहीं करती। धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है। (पृष्ठ-76)

प्रश्न

1. स्पीति में पावस क्यों नहीं आता?
2. स्पीति के लोग क्या नहीं जानते? और क्यों?
3. कालिदास यहाँ आकर क्या कहगे?

उत्तर-

1. स्पीति हिमालय की मध्य घाटियों में स्थित है। यहाँ वर्षा ऋतु नहीं होती, क्योंकि यहाँ बादल नहीं पहुँचते। यहाँ कभी-कभी वर्षा होती भी है तो बर्फ की, जिसे अत्यंत शुभ माना जाता है।
2. स्पीति के लोग यह नहीं जानते कि बरसात में नदियाँ बहती हैं, बादल बरसते हैं, मस्त हाथी चिंघाड़ते हैं, जंगल हरे-भरे हो जाते हैं, वियोगिनी स्त्रियाँ तड़पती हैं, मोर नाचते हैं तथा बंदर गुफाओं में जा छिपते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि यहाँ वर्षा न के बराबर ही होती है।
3. कालिदास यहाँ आकर कहेंगे कि अपने बहुत-से-सुंदर गुणों से सुहानी लगने वाली, स्त्रियों का जी खिलाने वाली, पेड़ों की टहनियों और बेलों की सच्ची सखी तथा सभी जीवों का प्राण बनी हुई वर्षा ऋतु आपके मन की सब साधे पूरी करें।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

इतिहास में स्पीति का वर्णन नहीं मिलता। क्यों?

उत्तर-

स्पीति हिमाचल की पहाड़ियों में एक ऐसा दुर्गम स्थल है जहाँ पहुँचना सामान्य लोगों के वश में नहीं है। संचार माध्यमों एवं आवागमन के साधनों का अभाव है। अतः यहाँ दूसरे देशों की जानकारी नहीं होती। स्पीति का भूगोल अलंघ्य है। साल में आठ-नौ महीने बरफ़ रहती है तथा यह संसार से कटा रहता है। दुर्गम स्थान के कारण किसी राजा ने यहाँ हमला नहीं किया इसका जिक्र सिर्फ राज्यों के साथ जुड़े रहने पर ही आता है। मानवीय गतिविधियों के अभाव के कारण यहाँ इतिहास नहीं बना। यह क्षेत्र प्रायः स्वायत्त ही रहा है।

प्रश्न 2:

स्पीति के लोग जीवनयापन के लिए किन कठिनाइयों का सामना करते हैं?

उत्तर-

स्पीति का जीवन बहुत कठोर है। यहाँ लंबी शीत ऋतु होती है। आठ-नौ महीने यह क्षेत्र शेष विश्व से कटा रहता है। यहाँ जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं होती। लोग ठंड से ठिठुरते रहते हैं। यहाँ न हरियाली है और न ही पेड़। यहाँ पर्याप्त वर्षा भी नहीं होती। यहाँ साल में एक ही फसल उगा सकते

हैं। जौ, गेहूँ, मटर व सरसों के अलावा दूसरी फसल नहीं हो सकती। किसी प्रकार का फल व सब्जियाँ पैदा नहीं होतीं। यहाँ रोजगार के साधन नहीं हैं। यहाँ की जमीन खेती योग्य है, परंतु सिंचाई के साधन विकसित नहीं हैं। अत: यहाँ के लोग अत्यंत जटिल परिस्थिति में रहते हैं।

प्रश्न 3:

लेखक माने श्रेणी का नाम बौदधों के माने मंत्र के नाम पर करने के पक्ष में क्यों है?

उत्तर-

माने श्रेणी के विषय में लेखक स्वयं प्रश्न करता है कि इसका क्या अर्थ है? और फिर स्वयं ही अनुमानित करता है कि कहीं यह बौद्धों के माने मंत्र के नाम पर तो नहीं है? 'ओं मणि पद्मे हुँ' इनका बीज मंत्र है। लेखक इसे बौद्धों का बीज मंत्र और संक्षेप में माने कहकर पाठक के समक्ष यह तथ्य रखता है कि इस श्रेणी में माने मंत्र का बहुत अधिक जाप हुआ है और उसे ध्यान में रखते हुए इस श्रेणी का नाम माने ही दे डालना चाहिए।

प्रश्न 4:

ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं-इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने युवा वर्ग से क्या आग्रह किया है?

उत्तर-

लेखक ने बताया है कि माने पर्वत श्रेणियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं, क्योंकि उनके जाप से यहाँ का वातावरण बोझिल व नीरस हो गया है। लेखक पहाड़ों व मैदानों से युवक-युवतियों को बुलाना चाहता है ताकि वे यहाँ आकर क्रीड़ा-कौतुक करें, प्रेम के खेल खेलें, जिससे यहाँ के वातावरण में ताजगी व उत्साह का संचार हों। चोटियों पर चढ़ने से जीवन औगड़ाई लेने लगेगा। युवाओं के अट्टहास से चोटियों पर जमा आर्तनाद पिघलेगा।

प्रश्न 5:

वर्षा यहाँ एक घटना है, एक सुखद संयोग हैं-लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-

स्पीति में वर्षा नहीं होती। वहाँ के लोग वर्षा की आनंददायक स्थितियों से अनभिज्ञ हैं। यहाँ वर्षा ऋतु मन की साध पूरी नहीं करती। यहाँ की धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है। स्पीति में साल में केवल एक फ़सल होती है। सिंचाई का साधन है-पहाड़ों से आ रहे नाले। उपजाऊ और खेती के योग्य धरती का तो यहाँ अभाव नहीं है, परंतु वर्षा नहीं होती। वर्षा यहाँ के लोगों के लिए एक घटना है। इसीलिए लेखक ने इसे एक सुखद संयोग माना है। स्पीति की यात्रा के दौरान वहाँ की वर्षा देखने का सौभाग्य भी लेखक को मिला था। स्थानीय लोगों ने भी इसी कारण लेखक की यात्रा को शुभ कहा था।

प्रश्न 6:

स्पीति अन्य पर्वतीय स्थलों से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर-

स्पीति अन्य पर्वतीय स्थलों से बहुत भिन्न हैं; जैसे-

(क) स्पीति के पहाड़ों की ऊँचाई 13000 से 21,000 फीट तक की है। ये अत्यंत दुर्गम हैं।

(ख) यहाँ के दरें बहुत ऊँचे व दुर्गम हैं।

(ग) यहाँ साल में आठ-नौ महीने बर्फ जमी रहती है तथा रास्ते बंद हो जाते हैं।

(घ) यहाँ वर्षा नहीं होती तथा पेड़ व हरियाली का नामोनिशान नहीं है।

(ङ) हुए ह फल हता है उसे भोज मर सों आदमुवा है फ्लए समय या उन नाह होती हैं।

(च) यहाँ सिर्फ दो ऋतुएँ होती हैं-वसंत व शीत ऋतु।

(छ) यहाँ परिवहन व संचार का कोई साधन नहीं।

(ज) यहाँ आबादी बेहद कम है। यहाँ प्रति किलोमीटर चार व्यक्ति रहते हैं।

(झ) यहाँ पर्यटक नहीं आते। अत: यहाँ का वातावरण उदास रहता है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

स्पीति में बारिश का वर्णन एक अलग तरीके से किया गया है। आप अपने यहाँ होने वाली बारिश का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

भारत में और संसार के हर कोने में अपना-अपना मौसम, परिवेश और ऋतु चक्र है। बारिश सभी को सुहावनी लगती है। हमारे यहाँ तेज़ हवा और गरमी के बाद काले बादलों से आसमान घिर जाता है। बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक में ऐसा आकर्षण होता है कि सभी लोग घरों से बाहर निकलकर प्रकृति का यह खेल देखने लगते हैं। बादलों से जब जल का बोझ नहीं सँभलता तो टप-टप बूंदें गिरनी आरंभ हो जाती हैं। सारा माहौल हर्ष-उल्लास से भर जाता है, माटी की भीनी-भीनी सुगंध सबको सराबोर कर देती है। बच्चे दौड़ पड़ते हैं बारिश में भीगने और नहाने के लिए, पर बड़ों का मन भी नियंत्रण खो बैठता है। पकौड़े, हलवा आदि पकवान बनते हैं। उमंग, उत्साह और उल्लास की लहर हिलोरें लेती

प्रश्न 2:

स्पीति के लोगों और मैदानी भागों में रहने वाले लोगों के जीवन की तुलना कीजिए। किन का जीवन आपको ज़्यादा अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर-

स्पीति के लोगों का जीवन मैदानी भागों के निवासियों की तुलना में बेहद कष्टदायक है। मैदानी क्षेत्रों में जलवायु कठोर नहीं है। यहाँ छह ऋतुएँ होती हैं। स्पीति में सर्दी व वसंत दो ही ऋतुएँ होती हैं। सर्दी में सब कुछ जम जाता है। वर्षा नहीं होती।

मैदानों में रोजगार, कृषि, खाद्य-सामग्री व संचार के साधनों की कमी नहीं है। व्यक्ति के पास सुख के साधनों की कमी नहीं है, जबकि स्पीति में ऐसा कुछ नहीं है। वहाँ जीवन-निर्वाह भी कठिनता से होता है। अत: मैदानी भागों में रहने वाले का जीवन ज्यादा सुखी व अच्छा है। यहाँ जीवन की गति नियमित रूप से चलती है।

प्रश्न 3:

स्पीति में बारिश एक यात्रा-वृतांत है। इसमें यात्रा के दौरान किए गए अनुभवों, यात्रा-स्थल से जुड़ी विभिन्न में कीजिए।

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 4:

लेखक ने स्पीति की यात्रा लगभग तीस वर्ष पहले की थी। इन तीस वर्षों में क्या स्पीति में कुछ परिवर्तन आया है? जानें, सोचें और लिखें।

उत्तर-

लेखक ने स्पीति की यात्रा लगभग 30 वर्ष पहले की थी, परंतु आज वहाँ कुछ परिवर्तन आया है। अब वहाँ संचार, यातायात व रोजगार के साधन कुछ विकसित हुए हैं, परंतु प्राकृतिक दशाएँ वैसी ही हैं। अत: अधिक परिवर्तन की वहाँ गुंजाइश नहीं है।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

पाठ में से दिए गए अनुच्छेद में क्योंकि, और, बल्कि, जैसे ही, वैसे ही, मानो, ऐसे, शब्दों का प्रयोग करते हुए उसे दोबारा लिखिए-

लैंप की ली तेज़ की खिड़की का एक पल्ला खोला तो तेज़ हवा को झोंका मुँह और हाथ को जैसे छीलने लगा। मैंने पल्ला भिड़ा दिया। उसकी आड़ से देखने लगा। देखा कि बारिश हो रही थी। मैं उसे देख नहीं रहा था। सुन रहा था। औधरा, ठड और हवा का झोंका आ रहा था। जैसे बरफ का अश लिए तुषार जैसी बूंदें पड़ रही थीं।

उत्तर-

लैंप की लौ तेज की। **जैसे ही** खिड़की का एक पल्ला खोला वैसे ही तेज हवा का झोंका मुँह और हाथ को जैसे छीलने लगा। मैंने पल्ला भिड़ा दिया **और** उसकी आड़ से देखने लगा। मैं उसे देख नहीं रहा था **बल्कि** सुन रहा था। अँधेरा, ठंड **और** हवा का झोंका **ऐसे** आ रहा था **मानो** बर्फ का अंश लिए तुषार जैसी बूंदें पड़ रही थीं।

अन्य हल प्रश्न

- **बोधात्मक प्रशन**

प्रश्न 1:

'स्पीति में बारिश' पाठ का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर-

यह पाठ एक यात्रा-वृत्तांत है। स्पीति हिमाचल के मध्य में स्थित है। यह स्थान अपनी भौगोलिक एवं प्राकृतिक विशेषताओं के कारण अन्य पर्वतीय स्थलों से भिन्न है। लेखक ने यहाँ की जनसंख्या, ऋतु, फसल, जलवायु व भूगोल का वर्णन किया है। ये एक-दूसरे से संबंधित हैं। उन्होंने दुर्गम क्षेत्र स्पीति में रहने वाले लोगों के कठिनाई भरे जीवन का भी वर्णन किया है। कुछ युवा पर्यटकों का पहुँचना स्पीति के पर्यावरण को बदल सकता है। ठंडे रेगिस्तान जैसे स्पीति के लिए उनका आना, वहाँ बूंदों भरा एक सुखद संयोग बन सकता है।

प्रश्न 2:

शिव का अट्टहास नहीं, हिम का आर्तनाद है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

लेखक बताता है कि पहाड़ के शिखरों पर जो बर्फ जमी होती है, उसे शिव की तेज हँसी का कारण

माना जाता है, परंतु स्पीति में यह मान्यता लागू नहीं होती। यहाँ बर्फ कष्टों का प्रतीक है। जीवन में इतने अभाव हैं कि यहाँ दर्द के सिवाय कुछ नहीं है। यही चीख-पुकार, दर्द बर्फ के रूप में जमा हो गया है। प्रश्न

प्रश्न 3:

स्पीति रेगुलेशन कब पास हुआ? इसके बारे में बताइए।

उत्तर-

स्पीति रेगुलेशन 1873 ई. में ब्रिटिश सरकार के समय पारित किया गया। इसके निम्नलिखित प्रभाव थे-

(क) लाहुल व स्पीति को विशेष दर्जा दिया गया।

(ख) यहाँ ब्रिटिश भारत के अन्य कानून लागू नहीं होते थे।

(ग) स्थानीय प्रशासन के अधिकार नोनो को दिए गए।

(घ) नोनो मालगुजारी को इकट्ठा करता तथा फौजदारी के छोटे-छोटे मुकदमों का फैसला करता था।

(ङ) अधिक बड़े मामले कमिश्नर को भेजे जाते थे।

प्रश्न 4:

बाहय आक्रमण से स्पीति के लोग अपनी सुरक्षा कैसे करते हैं?

उत्तर-

बाहरी आक्रमण से रक्षा करने के लिए स्पीति के लोग अप्रतिकार का तरीका अपनाते हैं। वे उससे लड़ते नहीं। वे चाँग्मा का तना पकड़कर या एक-दूसरे को पकड़कर आँख मींचकर बैठ जाते हैं। जब आक्रमणकारी या संकट गुजर जाता है तो वे उठकर वापस आ जाते हैं।

लेखिका परिचय

● **जीवन परिचय**-मन्नू भंडारी का जन्म 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। इन्होंने एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने कोलकाता तथा दिल्ली के मिरांडा हाऊस में बतौर प्राध्यापिका के पद पर कार्य किया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया। इन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली के शिखर सम्मान, बिहार सरकार, कोलकाता की भारतीय भाषा परिषद्, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

● **रचनाएँ**-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

कहानी-संग्रह-एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास-आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)।

पटकथाएँ-रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

● **साहित्यिक विशेषताएँ**-मन्नू भंडारी हिंदी कहानी में उस समय सक्रिय हुई जब नई कहानी आंदोलन अपने उठान पर था। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज़ में अभिव्यक्त हुई हैं। उन्होंने आक्रोश, व्यंग्य और संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है-वह चाहे कहानी हो, उपन्यास हो या फिर पटकथा ही क्यों न हो। उनका मानना है-

"लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती। असली मानक तो होता हैं रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि।"

पाठ का साराशी

पटकथा यानी पट या स्क्रीन के लिए लिखी गई वह कथा रजत पट अर्थात् फिल्म की स्क्रीन के लिए भी हो सकती है और टेलीविजन के लिए भी। मूल बात यह है कि जिस तरह मंच पर खेलने के लिए नाटक लिखे जाते हैं, उसी तरह कैमरे से फिल्माए जाने के लिए पटकथा लिखी जाती है। कोई भी लेखक अन्य किसी विधा में लेखन करके उतने लोगों तक अपनी बात नहीं पहुँचा सकता, जितना पटकथा लेखन द्वारा। इसका कारण यह है कि पटकथा शूट होने के बाद धारावाहिक या फिल्म के रूप में लाखों-करोड़ों दर्शकों तक पहुँच जाती है। इसी कारण पटकथा लेखन की ओर लेखकों का रुझान हुआ है। यहाँ मन्नू भंडारी द्वारा लिखित **रजनी** धारावाहिक की कड़ी दी जा रही है। यह नाटक 20वीं सदी के नवें दशक का बहुचर्चित टी.वी. धारावाहिक रहा है। यह वह समय था जब **हमलोग** और **बुनियाद** जैसे सोप ओपेरा दूरदर्शन का भविष्य गढ़ रहे थे। बासु चटर्जी के निर्देशन में बने इस धारावाहिक की हर कड़ी स्वयं में स्वतंत्र और मुकम्मल होती थी और उन्हें आपस में गूँथने वाली सूत्र रजनी थी। हर कड़ी में यह जुझारन और इंसाफ-पसंद स्त्री-पात्र किसी-न-किसी सामाजिक- राजनीतिक समस्या से जूझती नजर आती थी।

यहाँ **रजनी** धारावाहिक की जो कड़ी दी जा रही है, वह व्यवसाय बनती शिक्षा की समस्या की ओर समाज का ध्यान खींचती है।

पहला दृश्य

स्थान-लीला का घर

रजनी लीला के घर जाती है तथा उससे बाजार चलने को कहती है। लीला उसे बताती है कि अमित का आज रिजल्ट आ रहा है। रजनी उसे मिठाई तैयार रखने को कहती है, क्योंकि अमित बहुत होशियार है। अमित के लिए रजनी आंटी हीरो है। तभी अमित स्कूल से आता है। उसका चेहरा उतरा हुआ है। वह रिपोर्ट कार्ड माँ की तरफ फेंकते हुए कहता है कि मैंने पहले ही गणित में ट्यूशन लगवाने को कहा था। ट्यूशन न करने की वजह से उसे केवल 72 अंक मिले, लीला कहती है कि तूने सारे सवाल ठीक किए थे। तुझे पंचानवे नंबर जरूर मिलने थे। रजनी कार्ड देखती है। दूसरे विषयों में 86, 80, 88, 82, 90 अंक मिले। सबसे कम गणित में मिले। अमित गुस्से व दुख से कहता है कि सर बार-बार ट्यूशन की चेतावनी देते थे तथा न करने पर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने की चेतावनी देते थे। लीला इसे अंधेरगर्दी कहती है। रजनी अमित को तसल्ली देती है तथा सारी बातों की जाँच करती है। उसे पता चलता है कि मिस्टर पाठक उन्हें गणित पढ़ाते हैं। वे हर बच्चे को ट्यूशन लेने के लिए कहते हैं। अमित ने हाफ ईयरली में छियानबे नंबर लिए थे। अध्यापक ने फिर भी उसे ट्यूशन रखने का आग्रह किया। अमित अपनी माँ पर इसका दोषारोपण किया। रजनी उसे समझाती है कि उसे अध्यापक से लड़ना चाहिए। यह सारी बदमाशी उसकी है। रजनी अमित को कहती है कि वह कल उसके स्कूल जाकर सर से मिलेगी। अमित डरकर उन्हें जाने से रोकता है। रजनी उसे डाँटती है तथा अगले दिन स्कूल जाने का संकल्प लेती है।

दूसरा दृश्य

स्थान-हैडमास्टर का कमरा।

रजनी अमित के स्कूल के हैडमास्टर से मिलने गई। उसने अमित सक्सेना की गणित की कापी देखने की अनुमति माँगी। हैडमास्टर ने वार्षिक परीक्षा की कॉपियाँ दिखाने में असमर्थता दिखाई। रजनी कहती है कि अमित ने मैथ्स में पूरा पेपर ठीक किया था, परंतु उसे केवल बहत्तर अंक मिले। वह देखना चाहती है कि गलती किसकी है। हैडमास्टर फिर भी कॉपी न दिखाने पर अड़ा रहता है और अमित को दोषी बताता है। रजनी कहती है कि अमित के पिछले रिजल्ट बहुत बढ़िया हैं। इस बार उसके नंबर किस बात के लिए काटे गए। हैडमास्टर नियमों की दुहाई देते हैं तो रजनी व्यंग्य करती है कि यहाँ होशियार बच्चों को भी ट्यूशन लेने के लिए मजबूर किया जाता है। हैडमास्टर ट्यूशन को टीचर्स व स्टूडेंट्स का आपसी मामला बताता है। वे इनसे अलग रहते हैं। रजनी उसे कुर्सी छोड़ने के लिए कहती है ताकि ट्यूशन के काले धंधे को रोका जा सके। हैडमास्टर आग-बबूला होकर रजनी को वहाँ से चले जाने को कहता है।

तीसरा दृश्य

स्थान-रजनी का घर

शाम के समय रजनी के पति घर आते हैं। वह उनके लिए चाय लाती है, फिर उन्हें अपने काम के बारे में बताती है। इस पर रवि उसे समझाते हैं कि टीचर ट्यूशन करें या धधा। तुम्हें क्या परेशानी है। तुम्हारा बेटा तो अभी पढ़ने नहीं जा रहा। इस बात पर रजनी भड़क जाती है और कहती है कि अमित के लिए आवाज क्यों नहीं उठानी चाहिए। अन्याय करने वाले से अधिक दोषी अन्याय सहने वाला होता है। तुम्हारे जैसे लोगों के कारण इस देश में कुछ नहीं होता।

चौथा दृश्य

स्थान-डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन का कार्यालय।

रजनी दफ्तर के बाहर बेंच पर बैठी अधिकारी से मिलने की प्रतीक्षा कर रही है। वह बैचेन हो रही है। प्रतीक्षा करते-करते जब बहुत देर हो जाती है तो वह बड़बड़ाने लगती है। तभी एक आदमी आता है तथा स्लिप के नीचे पाँच रुपये का नोट रखकर देता है। चपरासी उसे तुरंत अंदर भेजता है।

रजनी यह देखकर क्रोधित होती है। वह चपरासी को धकेलकर अंदर चली जाती है। निदेशक उसे घंटी बजने पर अंदर आने की बात कहता है। रजनी उसे खरी-खोटी सुनाती है। इस पर निदेशक उससे बात करता है। रजनी प्राइवेट स्कूलों और बोर्ड के आपसी संबंधों के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रही है। निदेशक समझता है कि शायद वह कोई रिसर्च प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। वह बताता है कि बोर्ड मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों को 90% ग्रांट देता है। इस ग्रांट के बदले वे स्कूलों पर नियंत्रण रखते हैं। स्कूलों को उनके नियम मानने होते हैं। इस पर रजनी कहती है कि प्राइवेट स्कूलों में ट्यूशन के धंधे के बारे में आपका क्या रवैया है। निदेशक कहता है कि इसमें धंधे जैसी कोई बात नहीं है। कमजोर बच्चे के माँ-बाप उसे ट्यूशन दिलवाते हैं। यह कोई मजबूरी नहीं है। इस पर रजनी उसे बताती है कि होशियार बच्चों को भी ट्यूशन लेने के लिए मजबूर किया जाता है। अगर ट्यूशन न ली जाए तो उसके नंबर कम दिए जाते हैं। हैडमास्टर ऐसे टीचर के खिलाफ एक्शन लेने से परहेज करता है। क्या आपको ऐसे रैकेट बंद करने के लिए दखलअंदाजी नहीं करनी चाहिए? इस पर निदेशक कहता है कि आज तक कोई शिकायत नहीं आई। रजनी व्यंग्य करती है कि बिना शिकायत के आपको कोई जानकारी नहीं होती। निदेशक अपनी व्यस्तता का तर्क देता है तो रजनी उसे कहती है-मैं आपके पास शिकायतों का ढेर लगवाती हूँ।

पाँचवाँ दृश्य

स्थान-अखबार का कार्यालय

रजनी संपादक के पास जाती है। संपादक उनके कार्य की प्रशंसा करता है और कहता है कि आपने ट्यूशन के विरोध में बाकायदा एक आंदोलन खड़ा कर दिया। यह जरूरी है। रजनी जोश में कहती है कि आप हमारा साथ दीजिए तथा इसे अपने समाचार में स्थान दें। इससे यह थोड़े लोगों की बात नहीं रह जाती। इससे अनेक अभिभावकों को राहत मिलेगी तथा बच्चों का भविष्य सँवर जाएगा। संपादक रजनी की भावनाएँ समझकर साथ देने का वादा करता है। उसने सारी बातें नोट की तथा एक समाचार भिजवाया। रजनी उसे बताती है कि 25 तारीख को पेरेंट्स की मीटिंग की जा रही है। वे यह सूचना अखबार में जरूर दे दें तो सब लोगों को सूचना मिल जाएगी।

छठा दृश्य

स्थान-बैठक-स्थल

एक हाल में पेरेंट्स की मीटिंग चल रही है। बाहर बैनर लगा हुआ है। काफी लोग आ रहे हैं। अंदर हाल भरा हुआ है। प्रेस के लोग आते हैं। रजनी जोश में संबोधित कर रही है-आपकी उपस्थिति से हमारी मंजिल शीघ्र मिल जाएगी। कुछ बच्चों को ट्यूशन जरूरी है, क्योंकि कुछ माएँ पढ़ा नहीं सकतीं तो कुछ पिता घर के काम में मदद जरूरी नहीं समझते। टीचर्स के एक प्रतिनिधि ने बताया कि उन्हें कम वेतन मिलता है। अत: उन्हें ट्यूशन करना पड़ता है। कई जगह कम वेतन देकर अधिक वेतन पर दस्तखत करवाए जाते हैं। इस पर हमारा कहना है कि वे संगठित होकर आदोलन चलाएँ तथा अन्याय का पर्दाफाश करें। हम यह नियम बनाएँ कि स्कूल का टीचर अपने स्कूल के बच्चों का ट्यूशन नहीं करेगा। इस नियम को तोड़ने वाले टीचर्स के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। इससे बच्चों के साथ जोर-जबरदस्ती अपने-आप बंद हो जाएगी। सभा में लोगों ने इस बात का समर्थन किया।

सातवाँ दृश्य

स्थान-रजनी का घर

रजनी के पति अखबार पढ़ते हुए बताते हैं कि बोर्ड ने तुम्हारे प्रस्ताव को ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया। रजनी बहुत प्रसन्न होती है। पति भी उस पर गर्व करते हैं। तभी लीला बेन, कांतिभाई और अमित मिठाई लेकर वहाँ आते हैं।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 81

काट देना-छोड़ देना। भोग लगाना-खाना।

पृष्ठ संख्या 82

मेधावी होशियार। कांग्रेचुलेशंस-बधाई हो, मुबारक हो। सफाई-वफाई-लिखते समय होने वाली छोटी गलतियाँ व काट-छोट।

पृष्ठ संख्या 83

सफाई देना-अपने बचाव में कहना। आर्थिक-धन संबंधी। अँधेर-अन्याय। बल पड़ना-तनाव आना। स्वीकृति-मंजूरी। टर्मिनल-सत्र। हाफ-ईयरली-छमाही।

पृष्ठ संख्या 84

बदमाशी-मनमानी। घुड़कना-डाँटना।

पृष्ठ संख्या 85

जुलुम-ज़्यादती-अन्याय-अत्याचार। बर्दाश्त-सहन। दनदनाती-तेज कदमों से। असहाय-बेचारा। अदब-सम्मान। ईयरली-वार्षिक।

पृष्ठ संख्या 86

गलतफहमी-गलत अनुमान। एकज़ामिनर-परीक्षक। तैश-क्रोध। व्हॉट डू यू मीन-क्या मतलब है आपका। हरकत-गलत कार्य।

पृष्ठ संख्या 87

धाँधली-गलत कार्य। बेगुनाह-बेकसूर। शिकजा-पकड़। घिनौना-सामाजिक दृष्टि से गलत काम। रैकेट-गैरकानूनी काम करने वालों का समूह। चिदियाँ बिखेरना-छोटे-छोटे टुकड़े करके फेंकना।

पृष्ठ संख्या 88

गदगद-प्रसन्न। ठेका लेना-जिम्मेदारी लेना।

पृष्ठ संख्या 89

गुनहगार-दोषी। हिकारत-उपेक्षा। माई फुट-तुच्छ समझना। हताश-निराश। सूली पर चढ़ाना-संकट में डालना। डायरेक्टर-निदेशक। निज़ी-व्यक्तिगत।

पृष्ठ संख्या 9o

कौतूहल-जिज्ञासा। रिलेशंस-संबंध। रिसर्च-शोध। प्रोजेक्ट-कार्य।

पृष्ठ संख्या 91

रिकगनाइज़-मान्य। ग्रांट-सरकारी अनुदान। एड-सहायता। कोंचता-तंग करना।

पृष्ठ संख्या 92

एक्शन-कार्यवाही। दखलअंदाजी-हस्तक्षेप। दिन-दहाड़े-सरेआम। छेद-कमी। गड्ढे में जाना-नष्ट होना। मोंटाज-टेलीविजन में दृश्यों व छवियों को एकत्रित करके जोड़ना।

पृष्ठ संख्या 93

बाकायदा-कायदे के अनुसार। एकाएक-अचानक। इश्यू-मामला। आँख मूंदना-ध्यान न देना। आवेश-जोश।

पृष्ठ संख्या 94

राइट-अप-लिखित विषय-सामग्री। पी.टी.आई-एक समाचार-एजेंसी। फोकस-ध्यान।

पृष्ठ संख्या 95

दस्तख्त-हस्ताक्षर। पदाफाश-भेद खोलना। राय-मत। एपूल्ड-स्वीकृत।

पृष्ठ संख्या 96

धज्जियाँ बिखेरना-फाड़कर फेंकना।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. हाँ! कॉपी लौटाते हुए कहा था कि तुमने किया तो अच्छा है पर यह तो हाफ़-ईयरली है.बहुत आसान पेपर होता है इसका तो। अब अगर ईयरली में भी पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लेना शुरू कर दो। वरना रह जाओगे। सात लड़कों ने तो शुरू भी कर दिया था। पर मैंने जब मम्मी-पापा से कहा, हमेशा बस एक ही जवाब (मम्मी की नकल उतारते हुए) मैथ्स में तो तू वैसे ही बहुत अच्छा है, क्या करेगा ट्यूशन लेकर? देख लिया अब? सिक्स्थ पोज़ीशन आई है मेरी। जो आज तक कभी नहीं आई थी। (पृष्ठ-83-84)

प्रश्न

1. अमित के अध्यापक ने उस क्या कहा? क्यों?
2. अमित की मम्मी ने गणित का ट्यूशन लगाने से क्यों मना किया?
3. अमित इस स्थिति में किसे दोषी मानता है? उसकी यह सोच कितनी उचित है?

उत्तर-

1. अमित के अध्यापक ने उसे कहा कि हाफ़-ईयरली परीक्षा में तुमने अच्छा किया है, परंतु अगर ईयरली में तुम्हें पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लगवा लो। उसने ट्यूशन न लेने पर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी। वह ऐसा इसलिए कह रहे थे ताकि अमित भी उनके पास ट्यूशन पढ़ने आ जाए।
2. अमित गणित में बहुत होशियार है। इस कारण उसकी मम्मी ने गणित का ट्यूशन लगाने से मना कर दिया। इसके अलावा उन्हें अमित की प्रतिभा पर भी भरोसा था।
3. अमित गणित में कम अंक आने की वजह ट्यूशन न लगाना मानता है। वह अपने माता-पिता को इसके लिए दोषी मानता है। उसकी यह सोच तनिक भी उचित नहीं है, क्योंकि इसके लिए माँ-बाप को दोष देना उचित नहीं है।

2. कुछ नहीं कर सकते आप? तो मेहरबानी करके यह कुर्सी छोड़ दीजिए। क्योंकि यहाँ पर कुछ कर सकने वाला आदमी चाहिए। जो ट्यूशन के नाम पर चलने वाली धाँधलियों को रोक सके. मासूम और बेगुनाह बच्चों को ऐसे टीचर्स के शिकंजों से बचा सके जो ट्यूशन न लेने पर बच्चों के नंबर काट लेते हैं. और आप हैं कि कॉपियाँ न दिखाने के नियम से उनके सारे गुनाह ढक देते हैं। (पृष्ठ-87)

प्रश्न

1. वक्ता का यह कथन 'कुछ कर सकने. ' कहाँ तक उचित हैं?
2. ट्यूशन के नाम पर क्या हो रहा है?
3. कॉपियाँ न दिखाने का नियम कहाँ तक उचित है?

उत्तर-

1. वक्ता का कथन पूर्णतया सत्य और उचित है, क्योंकि प्रधानाचार्य का पद जिम्मेदारी का पद है। जो उस पद की जिम्मेदारी नहीं ले सकता, उसे पद पर रहने का अधिकार नहीं है।

2. ट्यूशन के नाम पर बच्चों का शोषण किया जाता है। उन्हें डराया-धमकाया जाता है। जो बच्चे ट्यूशन नहीं पढ़ते, उन्हें कम अंक दिए जाते हैं जैसा अमित के साथ हुआ।
3. स्कूलों में वार्षिक परीक्षा की कॉपियाँ न दिखलाने का नियम सर्वथा अन्यायपूर्ण है। इस नियम के नाम पर अंकों की गड़बड़ी को ढका जाता है तथा दोषी अध्यापक अपनी मनमानी करके बच्चों का शोषण करते हैं।

3. मुझे बाहर करने की ज़रूरत नहीं। बाहर कीजिए उन सब टीचर्स को जिन्होंने आपकी नाक के नीचे ट्यूशन का यह घिनौना रैकेट चला रखा है। (व्यग्य से) पर आप तो कुछ कर नहीं सकते, इसलिए अब मुझे ही कुछ करना होगा और मैं करूंगी, देखिएगा आप। (तमतमाती हुई निकल जाती है) (हैंडमास्टर चपरासी पर ही बिगड़ पड़ता है) जाने किस-किस को भेज देते हो भीतर। (पृष्ठ-87)

प्रश्न

1. वक्ता क्या करने की बात कहती हैं?
2. वक्ता क्या धमकी देती हैं?
3. प्रधानाचार्य किस पर बिगड़ा और क्या कहा तथा क्यों?

उत्तर-

1. वक्ता ने हैडमास्टर को कहा कि आपको उन सभी टीचर्स को बाहर करना चाहिए जिन्होंने ट्यूशन का घिनौना रैकेट चला रखा है। वे बच्चों का शोषण कर रहे हैं तथा उनका भविष्य खराब कर रहे हैं।
2. वक्ता हैडमास्टर को धमकी देती है कि आपने तो ट्यूशन करने वाले अध्यापकों के खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया। अब मुझे ही इस गलत काम को रोकने के लिए कार्रवाई करनी होगी।
3. प्रधानाचार्य चपरासी पर क्रोधित होता है। वह कहता है कि तुम किस तरह के लोगों को अंदर भेज देते हो। उसने ऐसा इसलिए कहा ताकि वक्ता का गुस्सा उस निरीह चपरासी पर उतार सके।

4. देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि. गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता जैसे लीला बेन और कांति भाई और हज़ारों-हज़ारों माँ-बाप। लेकिन सबसे बड़ा गुनहगार तो वह है जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह-तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, जैसे तुम। (नकल उतारते हुए) हमें क्या करना है, हमने कोई ठेका ले रखा है दुनिया का। (गुस्से और हिकारत से) माई फुट (उठकर भीतर जाने लगती हैं। जाते-जाते मुड़कर) तुम जैसे लोगों के कारण ही तो इस देश में कुछ नहीं होता, हो भी नहीं सकता! (भीतर चली जाती है।) (पृष्ठ-89)

प्रश्न

1. गलती सहने वाला गुनहगार कैसे होता है?
2. यहाँ किस-किसे गुनहगार कहा गया है तथा क्यों?
3. वक्ता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

1. गलती सहने वाला गुनहगार होता है, क्योंकि इससे अन्याय करने वाले को साहस मिलता है। वह अपने काम को सही मानकर और अधिक अत्याचार करने लगता है।
2. यहाँ दो प्रकार के लोगों को गुनहगार माना गया है-
   (क) गुनाह करने वाले।
   (ख) गुनाह को सहने वाले।
   ये दोनों ही गुनहगार हैं। गुनाहगार गलती करता है तथा उसे सहने वाला उसे बढ़ावा देता है।
3. वक्ता समाजसेविका है। वह किसी के ऊपर हो रहे अत्याचार को सहन नहीं करती। वह अपने पति तक को दोषी मानती है। वह स्पष्ट वक्ताँ है।

5.

निदेशक : वैरी सैड! हैडमास्टर को एक्शन लेना चाहिए। ऐसे टीचर के खिलाफ।

रजनी : क्या खूब! आप कहते हैं कि हैडमास्टर को एक्शन लेना चाहिए… हैडमास्टर कहते हैं मैं कुछ नहीं कर सकता, तब करेगा कौन? मैं पूछती हूँ कि ट्यूशन के नाम पर चलने वाले इस घिनौने रैकेट को तोड़ने के लिए दखलअंदाजी नहीं करनी चाहिए आपको, आपके बोर्ड को? (चहरा तमतमा जाता हैं)

निदेशक : लेकिन हमारे पास तो आज तक किसी पेरेंट से इस तरह की कोई शिकायत नहीं आई।

रजनी : यानी की शिकायत आने पर ही आप इस बारे में कुछ सोच सकते हैं। वैसे शिक्षा के नाम पर दिन-दहाड़े चलने वाली इस दुकानदारी की आपके (बहुत ही व्यग्यात्मक ढंग से) बोर्ड ऑफ एजुकेशन को कोई जानकारी ही नहीं, कोई चिंता ही नहीं? (पृष्ठ-92)

प्रश्न

1. रजनी निदेशक के पास क्यों गई?
2. 'क्या खूब ' में निहित व्यग्य स्पष्ट करें।
3. शिक्षा बोड की कार्यशैली पर टिप्पणी करें।

उत्तर-

1. रजनी ट्यूशन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करवाना चाहती है। वह जानना चाहती है कि शिक्षा बोर्ड के पास स्कूलों पर नियंत्रण के अधिकार हैं या नहीं।
2. इस में शिक्षा-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। अध्यापक ट्यूशन के नाम पर बच्चों का शोषण करते हैं, हैडमास्टर उनके खिलाफ एक्शन नहीं लेते तथा अधिकारी हैडमास्टर को जिम्मेदारी सिखाते हैं या लिखित शिकायत चाहते हैं। हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी से भागना चाहता है।
3. शिक्षा बोर्ड भी अन्य सरकारी विभागों की तरह अकर्मण्यशील है। वह शिकायत पर ही कोई कार्रवाई करता है अन्यथा उसे किसी बात की कोई जानकारी नहीं होती। वे स्कूलों में हो रहे शोषण से अवगत तो रहते हैं पर उसके खिलाफ कुछ नहीं करते।

6. (एकाएक जोश में आकर) आप भी महसूस करते हैं न ऐसा?. तो फिर साथ दीजिए हमारा। अखबार यदि किसी इश्यू को उठा ले और लगातार उस पर चोट करता रहे तो फिर वह थोड़े से लोगों की बात नहीं रह जाती। सबकी बन जाती है. आँख मूँदकर नहीं रह सकता फिर कोई उससे।

आप सोचिए ज़रा अगर इसके खिलाफ कोई नियम बनता है तो (आवेश के मारे जैसे बोला नहीं जा रहा है) कितने पेरेंट्स को राहत मिलेगी. कितने बच्चों का भविष्य सुधर जाएगा, उन्हें अपनी मेहनत का फल मिलेगा, माँ-बाप के पैसे का नहीं. शिक्षा के नाम पर बचपन से ही उनके दिमाग में यह तो नहीं भरेगा कि पैसा ही सब कुछ है. वे. वे. (पृष्ठ-93)

प्रश्न

1. वक्ता किससे कब बात कर रहा है?
2. अखबार किसी बात को व्यापक कैसे बना देता हैं?
3. रजनी संपादक को ट्यूशन रोकने के क्या-क्या लाभ गिनाती हैं?

उत्तर-

1. वक्ता यानी रजनी अखबार के कार्यालय में संपादक से ट्यूशन के विषय में बात कर रही है। वह उन्हें ट्यूशन के कुप्रभावों के बारे में महसूस कराती है तथा उनसे समर्थन माँगती है।
2. जब अखबार किसी बात को उठाता है तो उसका प्रचार-प्रसार पूरे समाज में हो जाता है। सभी लोग उस मुद्दे पर अपना विचार प्रस्तुत करते हैं साथ ही इससे जनमत तैयार होता है। फलस्वरूप अन्याय या शोषण के खिलाफ लोग खड़े हो जाते हैं।
3. संपादक को ट्यूशन रोकने के निम्नलिखित लाभ गिनवाए गए-

   (क) इससे प्रभावित अनगिनत बच्चों व उनके माता-पिताओं को ट्यूशन की समस्या से राहत मिलेगी।

   (ख) बच्चों का भविष्य सुधर जाएगा।

   (ग) उन्हें अपनी मेहनत का फल मिलेगा।

   (घ) वे शिक्षा को बड़ा मानेंगे न कि पैसे को।

7. (रुककर) बड़ा अच्छा लगा जब टीचर्स की ओर से भी एक प्रतिनिधि ने आकर बताया कि कई प्राइवेट स्कूलों में तो उन्हें इतनी कम तनख्वाह मिलती है कि ट्यूशन न करें तो उनका गुज़ारा ही न हो। कई जगह तो ऐसा भी है कि कम तनख्वाह देकर ज्यादा पर दस्तखत करवाए जाते हैं। ऐसे टीचर्स से मेरा अनुरोध है कि वे संगठित होकर एक आंदोलन चलाएँ और इस अन्याय का पर्दाफाश करें **(हॉल में बैठा हुआ पति धीरे से फुसफुसाता है, लो, अब एक और आदोलन का मसाला मिल गया, कैमरा फिर रजनी पर)** इसलिए अब हम अपनी समस्या से जुड़ी सारी बातों को नज़र में रखते हुए ही बोंड के सामने यह प्रस्ताव रखेंगे कि वह ऐसा नियम बनाए **(एक-एक शब्द पर जोर देते हुए)** कि कोई भी टीचर अपने ही स्कूल के छात्रों का ट्यूशन नहीं करेगा।

(रुककर) ऐसी स्थिति में बच्चों के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती करने, उनके नंबर काटने की गंदी हरकतें अपने आप बंद हो जाएँगी। साथ ही यह भी हो कि इस नियम को तोड़ने वाले टीचर्स के खिलाफ सख्त-से-सख्त कार्यवाही की जाएगी..। (पृष्ठ-95)

प्रश्न

1. प्राइवेट स्कूल के अध्यापकों की कौन-कौन-सी समस्याएँ सामने आई?
2. वक्ता ने प्राइवेट स्कूल के अध्यापकों की समस्या का क्या समाधान बताया?
3. ट्यूशन के बारे में सभा में कौन-सा प्रस्ताव रखा गया?

उत्तर-

1. प्राइवेट स्कूल के अध्यापकों की मुख्य रूप से दो समस्याएँ सामने आईं-
   (क) अध्यापकों को बेहद कम तनख्वाह मिलती है। इस कारण गुज़ारा करने के लिए उन्हें ट्यूशन करना पड़ता है।
   (ख) कई जगह उन्हें अधिक वेतन पर हस्ताक्षर करने पड़ते हैं तथा वेतन कम दिया जाता है।
2. वक्ता रजनी है। उसने प्राइवेट स्कूलों के अध्यापकों को कहा कि वे संगठित होकर आंदोलन चलाएँ और कम वेतन की धाँधलेबाजी का पर्दाफाश करें।
3. ट्यूशन के बारे में सभा में एक प्रस्ताव रखा गया कि बोर्ड यह नियम बनाए कि कोई भी टीचर अपने ही स्कूल के छात्रों को ट्यूशन नहीं करेगा। यदि वह ऐसा करे तो उस टीचर्स के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

रजनी ने अमित के मुददे को गंभीरता से लिया, क्योंकि-

(क) वह अमित से बहुत स्नेह करती थी।

(ख) अमित उसकी मित्र लीला का बटा था।

(ग) वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की सामथ्य रखती थी।

(घ) उस अखबार की सुखियों में आने का शौक था।

उत्तर-

(ग) वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की सामथ्र्य रखती थी।

प्रश्न 2:

जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है, तभी उसके माँ-बाप दयूशन लगवाते हैं। अगर लगे कि कोई टीचर लूट रहा है, तो उस टीचर से न ले ट्यूशन, किसी और के पास चले जाएँ. यह कोई मजबूरी तो है नहीं-प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताएँ कि यह संवाद आपको किस सीमा तक सही या गलत लगता है, तर्क दीजिए।

उत्तर-

रजनी ट्यूशन के रैकेट के बारे में निदेशक के पास जाती है। उसे बताती है कि बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे लोगों के बारे में बोर्ड क्या कर रहा है? निदेशक ने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। वे सहज भाव से कहते हैं कि ट्यूशन करने में कोई मजबूरी नहीं है। कमजोर बच्चे को ट्यूशन पढ़ना पड़ता है। अगर कोई अध्यापक उन्हें लूटता है तो वे दूसरे के पास चले जाएँ।

शिक्षा निदेशक का यह जवाब बहुत घटिया व गैरजिम्मेदाराना है। वे ट्यूशन को बुरा नहीं मानते। उन्हें इसमें गंभीरता नज़र नहीं आती। वे बच्चों के शोषण को नहीं रोकना चाहते। ऐसी बातें कहकर वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ना चाहता है।

प्रश्न 3:

तो एक और आदोलन का मसला मिल गया-फुसफुसाकर कही गई यह बात-

(क) किसने किस प्रसंग में कही?

(ख) इससे कहने वाले की किस मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर-

(क) यह बात रजनी के पति रवि ने पेरेंट्स मीटिंग के दौरान कही। रजनी ने कम वेतन पर काम करने वाले अध्यापकों को भी आंदोलन करने के लिए कहती है। उन्हें एकजुट होकर अन्याय करनेवालों का पर्दाफाश करना चाहिए।

(ख) इस कथन से रवि की उदासीन मानसिकता का पता चलता है। इस तरह के व्यक्ति अन्याय के खिलाफ कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता। ये स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं तथा अपने तक ही सीमित रहते हैं।

प्रश्न 4:

रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या क्या है? क्या होता अगर-

(क) अमित का पर्चा सचमुच खराब होता।

(ख) संपादक रजनी का साथ न देता।

उत्तर-

रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या शिक्षा का व्यवसायीकरण है। स्कूल के अध्यापक बच्चों को ज़बरदस्ती ट्यूशन पढ़ने के लिए विवश करते हैं तथा ट्यूशन न लेने पर वे उनको कम अंक देते हैं।

(क) यदि अमित का पर्चा खराब होता तो यह समस्या सामने नहीं आती और न ही रजनी इसे आंदोलन का रूप दे पाती। बच्चों और अभिभावकों को ट्यूशन के शोषण से पीड़ित होना पड़ता।

(ख) यदि संपादक रजनी का साथ न देता तो यह समस्या सीमित लोगों के बीच ही रह जाती। कम संख्या का बोर्ड पर कोई असर नहीं होता। आंदोलन पूरी ताकत से नहीं चल पाता और सफलता संदिग्ध रहती।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बदश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता-इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं?

उत्तर-

इस संवाद के संदर्भ में हम सबसे ज्यादा, अत्याचार करनेवाले को दोषी मानते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से चल रहे संसार में भी बहुत से कष्ट, दुख और तकलीफें हैं। अत्याचारी उन्हें अपने कारनामों से और बढ़ा देता है। वह स्वयं ऊपर से खुश दिखाई देता है, पर उसकी आत्मा तो जानती ही है कि वह गलती कर रहा है। उसके द्वारा जिसे सताया जा रहा है वह भी कष्ट उठा रहा है और उसकी आत्मा भी कष्ट उठाती है। इसलिए वह कष्ट से मुक्त होने के उपाय सोचता है, पर ऐसा कर नहीं पाती। ज्यादातर यही होता है। अतः अत्याचारी ही कष्ट का प्रथम कारण होने की वजह से अधिक दोषी है।

प्रश्न 2:

स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर-

रजनी आम स्त्रियों से अलग है। आम स्त्री सहनशील होती है, वह डरपोक होती है। वह अन्याय का विरोध नहीं करती तथा संघर्षों से दूर रहना चाहती है। रजनी इन सबके विपरीत जुझारू, संघर्षशील व बहादुर है। वह अपने सामने हो रहे अन्याय को नहीं सहन कर सकती। वह अपने पति तक को खरी-खोटी सुनाती है तथा अधिकारियों की खिंचाई करती है। यह ट्यूशन के विरोध में जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

प्रश्न 3:

पाठ के अंत में मीटिंग के स्थान का विवरण कोष्ठक में दिया गया है। यदि इसी दृश्य को फिल्माया तो आप कौन-कौन-से निर्देश देंगे?

उत्तर-

इस दृश्य को फ़िल्माते समय हम निम्नलिखित निर्देश देंगे –

1. स्टेज के पीछे बैनर लगा हो तथा उस पर एजेंडा लिखा होना चाहिए।
2. स्टेज पर माइक व कुर्सी की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. रजनी को संवाद याद होने चाहिए।
4. तालियाँ समयानुसार बजनी चाहिए।

प्रश्न 4:

इस पटकथा में दृश्य-संख्या का उल्लेख नहीं है। मगर गिनती करें तो सात दृश्य हैं। आप किस आधार पर इन दृश्यों को अलग करेंगे?

उत्तर-

पटकथा में दृश्य-संख्या नहीं है, परंतु दृश्य अलग-अलग दिए गए हैं। हम सभी दृश्यों को स्थान के आधार पर अलग-अलग करेंगे।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अंश में जो अर्थ निहित हैं उन्हें स्पष्ट करते हुए लिखिए-

(क) *वरना तुम तो मुझे <u>काट ही देतीं</u>।*

(ख) *अमित जब तक तुम्हारे <u>भोग नहीं लगा लता</u>, हमलोग खा <u>थोड़े ही</u> सकते हैं।*

(ग) *<u>बस-बस</u> मैं समझ गया।*

उत्तर-

(क) यहाँ काट ही देतीं का अर्थ है-बुरी तरह परेशान कर देतीं या जीना हराम कर देतीं। यह वाक्यांश शाब्दिक अर्थ से हटकर अर्थ प्रकट कर रहा है।

(ख) भोग लगाना-अर्थात् अमित रजनी आंटी का इतना मान रखता है, उन्हें इतना स्नेह-आदर देता है कि अपने घर में बननेवाली हर चीज़ सबसे पहले उन्हें खिलाकर आता है फिर स्वयं खाता है। अतः यह प्रयोग मान देने के अर्थ में हुआ है। थोड़े ही अर्थात् खा नहीं सकते या खा नहीं पाते ! जिस प्रकार भगवान को भोग लगाना और उसके बाद खाना हमारा स्वयं का ही बनाया हुआ नियम है, वैसे ही अमित रजनी आंटी को खिलाकर ही खाता है।

(ग) इस वाक्य में बस-बस का अर्थ यह है कि और अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है मैं सबकुछ समझ चुका हूँ। ज्यादा स्पष्टीकरण नहीं चाहता।

कोड मिक्सिंग/कोड स्विचिग

प्रश्न 1:

कोई रिसर्च प्रोजेक्ट है क्या? व्हेरी द्वटरेस्टिग सब्जेक्ट।

ऊपर दिए गए संवाद में दो पंक्तियाँ हैं पहली पंक्ति में रेखांकित अंश हिंदी से अलग अंग्रेजी भाषा का है जबकि शेष हिंदी भाषा का है। दूसरा वाक्य पूरी तरह अंग्रेजी में है। हम बोलते समय कई बार एक ही वाक्य में दो भाषाओं (कोड) का इस्तेमाल करते हैं। यह कोड मिक्सिंग कहलाता है। जबकि एक भाषा में बोलते-बोलते दूसरी भाषा का इस्तेमाल करना कोड स्विचिंग कहलाता है। पाठ में से कोड मिक्सिंग और कोड स्विचिंग के तीन-तीन उदाहरण चुनिए और हिंदी भाषा में रूपांतरण करके लिखिए।

उत्तर-

कोड मिक्सिंग

(क) नाइंटी फाइव तो तेरे पक्के हैं।

(ख) मैथ्स में ही पूरे नंबर आ सकते हैं।

(ग) सॉरी मैडम, ईयरली एक्जाम्स की कॉपियाँ तो हम नहीं दिखाते हैं।

हिदी रूपांतरण

(क) पंचानवे तो तेरे पक्के हैं।

(ख) गणित में ही तो पूरे अंक आ सकते हैं।

(ग) क्षमा कीजिए, बहन जी, वार्षिक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाएँ तो हम लोग नहीं दिखाते हैं।

कोड स्विचिंग

(क) आई मीन व्हॉट आई से। नियम का जरा भी ख्याल होता तो इस तरह की हरकतें नहीं होतीं स्कूल में।

(ख) कोई रिसर्च प्रोजेक्ट है क्या? व्हेरी इंटरेस्टिंग सब्जेक्ट।

(ग) विल यू प्लीज गेट आउट ऑफ दिस रूम। ..... मेमसाहब को बाहर ले जाओ।

हिंदी रूपां

(क) मैं जो कह रही हूँ वह सच है। नियम.।

(ख) कोई रिसर्च प्रोजेक्ट है क्या? बहुत रोचक विषय है।

(ग) कृपया आप इस कमरे से बाहर चले जाए। ...... मेमसाहब...... ।

अन्य हल प्रश्न

बोधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'रजनी' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर-

यह पाठ शिक्षा के व्यवसायीकरण, ट्यूशन के रैकेट, अधिकारियों की उदासीनता तथा आम जनता द्वारा अन्याय का विरोध आदि के बारे में बताता है। यह हमें अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा

देता है। यह पाठ सिखाता है कि यदि अन्याय को नहीं रोका गया तो वह बढ़ता जाएगा। अन्याय का विरोध समाज को साथ लेकर हो सकता है, क्योंकि आम आदमी की सहभागिता के बिना सामाजिक, प्रशासनिक व राजनैतिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन संभव नहीं है।

प्रश्न 2:

गणित के टीचर के खिलाफ अन्य बच्चों ने आवाज क्यों नहीं उठाई?

उत्तर-

गणित का अध्यापक बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन पर आने के लिए कहता था। ऐसा न करने पर उनके अंक तक काट देता था। दूसरे बच्चों ने उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाई, क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसा करने पर अगली कक्षाओं में भी उनके साथ भेदभाव किया जाएगा। अध्यापक उनका भविष्य बिगाड़ देगा और उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस डर से अमित व उसकी माँ भी रजनी को विरोध करने से रोकना चाहते थे।

प्रश्न 3:

रजनी संपादक से क्या सहायता माँगती है?

उत्तर-

रजनी संपादक को ट्यूशन की समस्या बताती है तथा उसे अखबार में छापने का आग्रह करती है। वह उनसे कहती है कि 25 तारीख की पेरेंट्स मीटिंग की खबर भी प्रकाशित करें। इससे सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी। व्यक्तिगत तौर पर हम कम लोगों से संपर्क कर पाएँगे।

प्रश्न 4:

शिक्षा बोर्ड और प्राइवेट स्कूलों के बीच क्या संबंध होता है?

उत्तर-

शिक्षा बोर्ड शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए प्राइवेट स्कूलों को 90% सहायता देकर मान्यता देता है। यह सहायता स्कूलों के रखरखाव, अध्यापक और विद्यार्थियों के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए दी जाती है। शिक्षा बोर्ड के नियमों का पालन करना प्राइवेट स्कूल का कर्तव्य है। शिक्षा बोर्ड सिलेबस बनाता है, वार्षिक परीक्षा बोर्ड करवाता है।

प्रश्न 5:

सरकारी कार्यालयों की व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-

सरकारी कार्यालयों में आम आदमी को परेशान किया जाता है। यहाँ हर कदम पर भ्रष्टाचार है। अफसर अंदर खाली बैठे रहते हैं, परंतु बाहर 'बिजी" होने का संदेश दिया जाता है। चपरासी भी रिश्वत लेकर ही मुलाकातियों को साहब से मिलने भेजता है। अधिकारी का रवैया काम को टालने वाला होता है। उसे जनता से कोई लेना-देना नहीं होता।

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय**-जवाहरलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद के एक संपन्न परिवार में 1889 ई. में हुआ। इनके पिता प्रसिद्ध वकील थे। नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा घर पर तथा उच्च शिक्षा इंग्लैंड में हैरो तथा कैम्ब्रिज में हुई। इन्होंने वहीं से वकालत की पढ़ाई की। इन पर गाँधी का बहुत प्रभाव था। उनके आहवान पर वे पढ़ाई छोड़कर आजादी की लड़ाई में जुट गए। 1929 ई. में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष बने और पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की। इनका झुकाव समाजवाद की ओर भी रहा।

1947 ई. में भारत स्वतंत्र हुआ। ये भारत के पहले प्रधानमंत्री बने तथा जीवनपर्यत भारत के निर्माण में लगे रहे। उन्होंने देश के विकास के लिए कई योजनाएँ बनाई जिनमें आर्थिक और औद्योगिक प्रगति तथा वैज्ञानिक अनुसंधान से लेकर साहित्य, कला, संस्कृति आदि क्षेत्र शामिल थे। बच्चों से इन्हें विशेष लगाव था। वे **चाचा नेहरू** के रूप में जाने जाते हैं। ये शांति, अहिंसा और मानवता के हिमायती थे। इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वशांति और पंचशील के सिद्धांतों का प्रचार किया। इनका निधन 1964 ई. में हुआ।

● **रचनाएँ**-नेहरू जी उच्चकोटि के लेखक भी थे। इन्होंने अंग्रेजी में लिखा। इनकी रचनाओं का हिंदी सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

मेरी कहानी (आत्मकथा), विश्व इतिहास की झलक, हिंदुस्तान की कहानी, पिता के पत्र पुत्री के नाम, लेखों और दुनिया।

पाठ का सारांश

'भारत माता' अध्याय **हिंदुस्तान की कहानी** का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है। उन्होंने **भारत माता** शब्द पर भी विचार किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि **भारत माता की जय** का मतलब है-यहाँ के करोड़ों-करोड़ लोगों की जय।

नेहरू जी का कहना है कि जब वे जलसों में जाते हैं तो वे श्रोताओं से भारत की चर्चा करते हैं। भारत संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला है। शहरों में लोग अधिक समझदार हैं। गाँवों में किसानों से देश के बारे में चर्चा करते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि देश के हिस्से अलग होते हुए भी एक हैं। वे उन्हें बताते थे कि उत्तर सँ लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक उनकी समस्याएँ एक जैसी है और स्वराज्य सभी के लिए फायदेमंद है।

नेहरू ने सारे भारत की यात्रा की। इस दौरान उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि हर जगह किसानों की समस्याएँ एक-सी हैं-गरीबों, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, जमींदार, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म। ये सभी बातें विदेशी सरकार की देन हैं तथा सबको इससे छुटकारा पाने के लिए सोचना है। सभी लोगों को देश के बारे में सोचना है। वे . लोगों से चीन, स्पेन, अबीसिनिया, मध्य यूरोप, मिस्र और पश्चिमी एशिया में होने वाले परिवर्तनों का जिक्र करते हैं। वे सोवियत यूनियन व अमरीका की उन्नति के बारे में बताते हैं। किसानों को विदेशों के बारे में समझाना आसान न था किंतु उन्होंने जैसा समझ रखा था वैसा मुश्किल भी न था। इसका कारण यह था कि हमारे महाकाव्यों व पुराणों ने इस देश की कल्पना करा दी थी और तीर्थ यात्रा करने

वाले लोगों ने या बड़ी लड़ाइयों में भाग लेने सिपाहियों और कुछ ने विदेशों में नौकरी करके देश-दुनिया की जानकारी दी। सन् तीस की आर्थिक मंदी की वजह से दूसरे देशों के बारे में नेहरू जी के दिए गए उदाहरण लोगों के समझ में आ जाते थे।

जलसों में नेहरू का स्वागत अकसर 'भारत माता की जय' के नारे से होता था। वे लोगों से इस नारे का मतलब पूछते तो वे जवाब न दे पाते। एक हट्टे-कट्टे किसान ने भारत माता का अर्थ धरती बताया। उन्होंने पूछा कि कौन-सी धरती? उनके गाँव, जिले, सूबे या पूरे देश की धरती। इस प्रश्न पर फिर सब चुप हो जाते। नेहरू उन्हें बताते हैं कि भारत वह है जो उन्होंने समझ रखा है। इसमें नदी, पहाड़, जंगल, खेत व करोड़ों भारतीय शामिल हैं। भारत माता की जय का अर्थ है–इन सबकी जय। जब वे स्वयं को भारत माता का अंश समझते थे तो उनकी आँखों में चमक आ जाती थी।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 114

अकसर-प्राय:। जलसा-समारोह। संस्थापक-स्थापना करने वाला। सयाने-समझदार। गिजा-खुराक। नजरिया-सोचने का तरीका। महबूद-सीमित। मसला-मुद्दा। यक-साँ-एक समान। स्वराज्य-अपना शासन। धुर-और परे। शिकजा-कसने वाला औजार। महाजन-ब्याज पर धन देने वाले। लगान-खेती की जमीन पर बुवाई का कर। सूद-ब्याज। जुल्म-अत्याचार। हासिल-प्राप्त। जुन-अंश। कशमकश-ऊहापोह, पसोपेश।

पृष्ठ संख्या 115

अचरज-हैरानी। तब्दीली-बदलावा जंग-लड़ाई। धावा-हमला, आक्रमण। मंदी-व्यापार में कमी। मुल्क-देश। हवाले-संदर्भ। ताज्जुब-हैरानी। जवाब न बन पाना-उत्तर न दे पाना। किसानी-खेती। सूबा-प्रदेश। अजीज-प्रिय।

पृष्ठ संख्या 116

आँखों में चमक आना-खुशी मिलना।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. अकसर जब मैं एक जलसे से दूसरे जलसे में जाता होता, और इस तरह चक्कर काटता रहता होता था, तो इन जलसों में मैं अपने सुनने वालों से अपने इस हिंदुस्तान या भारत की चर्चा करता। भारत एक संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला हुआ है। मैं शहरों में ऐसा बहुत कम करता, क्योंकि वहाँ के सुनने वाले कुछ ज्यादा सयाने थे और उन्हें दूसरे ही किस्म के गिज़ा की जरूरत थी। लेकिन किसानों से, जिनका नजरिया महदूद या था, मैं इस बड़े देश की चर्चा करता, जिसकी आज़ादी के लिए हम लोग कोशिश कर रहे थे और बताता कि किस तरह देश का एक हिस्सा दूसरे से जुदा होते हुए भी हिंदुस्तान एक था। मैं उन मसलों का जिक्र करता, जो उत्तर से लेकर दक्खिन तक और पूरब से लेकर पच्छिम तक, किसानों के लिए यक-साँ थे, और स्वराज्य का भी जिक्र करता, जो थोड़े लोगों के लिए नहीं, बल्कि सभी के फायदे के लिए हो सकता था। ' (पृष्ठ-114)

प्रश्न

1. 'भारत' शब्द के बारे में लेखक क्या बताता हैं?
2. लेखक ने शहरी लोगों को ज्यादा सयाना क्यों कहा है?

3. लेखक को किसानों को हिंदुस्तान की एकता बताना क्यों जरूरी लगता था?

उत्तर-

1. 'भारत' शब्द के बारे में लेखक बताता है कि यह संस्कृत का शब्द है और यह इस जाति के परंपरागत संस्थापक ' के नाम से निकला हुआ है।
2. लेखक ने शहरी लोगों को ज्यादा सयाना कहा है, क्योंकि शहरी लोगों की रुचि अलग किस्म की होती है। वे दूसरी बातों में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं। ."
3. लेखक को हिंदुस्तान की एकता बताता बहुत जरूरी लगता था, क्योंकि गाँव के लोग हिंदुस्तान का अर्थ नहीं समझते थे। लेखक उन्हें बताता कि सारा देश एक है। सारे देश के किसानों की समस्याएँ एक जैसी हैं। सभी लोग स्वराज्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

2. मैं उत्तर-पच्छिम में खैबर के दर्रे से लेकर धुर दक्खिन में कन्याकुमारी तक की अपनी यात्रा का हाल बताता और यह कहता कि सभी जगह किसान मुझसे एक-से सवाल करते, क्योंकि उनकी तकलीफें एक-सी थीं-यानी गरीबों, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, ज़मींदार, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म, और ये सभी बातें गुंथी हुई थीं, उस ढद्ढे के साथ, जिसे एक विदेशी सरकार ने हम पर लाद रखा था और इनसे छुटकारा भी सभी को हासिल करना था। मैंने इस बात की कोशिश की कि लोग सारे हिंदुस्तान के बारे में सोचें और कुछ हद तक इस बड़ी दुनिया के बारे में भी, जिसके हम एक जुज़ हैं। मैं अपनी बातचीत में चीन, स्पेन, अबीसिनिया मध्य यूरोप, मिस्र और पच्छिमी एशिया में होनेवाले कशमकशों का ज़िक्र भी ले आता। (पृष्ठ-114)

प्रश्न

1. लेखक ने कहाँ-कहाँ की यात्रा की? क्यों?
2. लेखक किससे छुटकारा पाने की बात कर रहा हैं?
3. लेखक किसानों के दृष्टिकोण में किस प्रकार का परिवर्तन लाना चाहता है?

उत्तर-

1. लेखक ने उत्तर-पच्छिम में खैबर के दर्रे से लेकर धुर दक्षिण में कन्याकुमारी तक की यात्रा की थी। वह सारे देश के लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित कर रहा था।
2. लेखक विदेशी शासन से छुटकारा पाने की बात करता है जिसके कारण सभी का शोषण हो रहा है।
3. लेखक किसानों के दृष्टिकोण में व्यापकता लाना चाहता है। वह कोशिश करता है कि लोग अपने देश के बारे में सोचें। वह उन्हें पूरे विश्व से भी जोड़ना चाहता है। अर्थात् क्षेत्रीयता की भावना त्यागकर पूरे राष्ट्र के बारे में अपनी सोच विकसित करें।

3. मैं उन्हें सोवियत यूनियन में होने वाली अचरज-भरी तब्दीलियों का हाल भी बताता और कहता कि अमरीका ने कैसी तरक्की की है। यह काम आसान न था, लेकिन जैसा मैंने समझ रखा था, वैसा मुश्किल भी न था। इसकी वजह यह थी कि हमारे पुराने महाकाव्यों ने और पुराणों की कथा-कहानियों ने, जिन्हें वे खूब जानते थे, उन्हें इस देश की कल्पना करा दी थी, और हमेशा कुछ लोग ऐसे मिल जाते थे, जिन्होंने हमारे बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी, जो हिंदुस्तान के चारों कोनों पर हैं। या हमें पुराने सिपाही मिल जाते, जिन्होंने पिछली बड़ी जंग में या और धावों के

सिलसिले में विदेशों में नौकरियाँ की थीं। सन् तीस के बाद जो आर्थिक मंदी पैदा हुई थी, उसकी वजह से दूसरे मुल्कों के बारे में मेरे हवाले उनकी समझ में आ जाते थे। (पृष्ठ-115)

प्रश्न

1. लेखक किन-किन देशों की चर्चा करता था? इसका उद्देश्य क्या था?
2. लेखक के लिए कौन-सा काम मुश्किल लगता था जो आसान हो गया?
3. विदेशों के बारे में श्रोता लेखक की बातें किस प्रकार समझ लेते थे?

उत्तर-

1. लेखक किसानों को सोवियत यूनियन में होने वाले आश्चर्यजनक परिवर्तनों तथा अमरीका की तरक्की के बारे में बताता था। इसका उद्देश्य था-स्वतंत्रता के उपरांत देश का भरपूर विकास करना।
2. लेखक को ग्रामीणों को देश-विदेश की व्यापक जानकारी देना मुश्किल लग रहा था, क्योंकि इनका दायरा सीमित था। यह कार्य आसान इसलिए हो गया, क्योंकि ग्रामीणों ने महाकाव्यों व पुराणों में अनेक किस्से-कहानी सुन रखे थे।
3. विदेशों के बारे में श्रोता लेखक की बातों को निम्न कारणों से समझ लेते थे-
   (क) विदेशों की बड़ी लड़ाई में भारतीयों ने भाग लिया था।
   (ख) विदेशों में नौकरी करके आए भारतीय वहाँ के विषय में बताते हैं।
   (ग) तीस की आर्थिक मंदी से किसान परिचित थे।

4. कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचता, तो मेरा स्वागत 'भारत माता की जय!' इस नारे से ज़ोर के साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं। मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक-दूसरे की तरफ या मेरी तरफ देखने लग जाते। मैं सवाल करता ही रहता। आखिर एक हट्टे-कटटे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानी करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है। कौन-सी धरती? खास उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से उनका मतलब है? इस तरह सवाल-जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे कहने लगते कि मैं ही बताऊँ। (पृष्ठ-115)

प्रश्न

1. नेहरू का स्वागत केसे और क्यों होता था?
2. लेखक ग्रामीणों से क्या प्रश्न पूछता था? उसका क्या प्रभाव होता?
3. लगा लखक सं क्यों ऊबने लगते थे?

उत्तर-

1. जब नेहरू किसी सभा में पहुँचते, तो उनका स्वागत 'भारत माता की जय!' के नारे लगाकर किया जाता था। लोग उन्हें स्वतंत्रता सेनानी मानते थे।
2. लेखक ग्रामीणों से पूछता कि 'भारत माता की जय!' नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है जिसकी वे जय चाहते हैं? लेखक के प्रश्न से ग्रामीणों को हैरानी होती

और वे एक-दूसरे की तरफ या लेखक की तरफ देखने लग जाते। उनसे कोई जवाब नहीं बनता।

3. लेखक किसानों से 'भारत माता' का अर्थ पूछते थे। जवाब मिलने पर फिर कई तरह के प्रश्न पूछते थे; जैसेकौन-सी धरती? उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती? इस तरह के सवालों से ग्रामीण ऊबने लगते थे।

5. मैं इसकी कोशिश करता और बताता कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। हिंदुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें अजीज हैं, लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिंदुस्तान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं, और 'भारत माता की जय!' से मतलब हुआ इन लोगों की जय का। मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो, और जैसे-जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती, इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो। (पृष्ठ-115-116)

प्रश्न

1. लेखक ने हिदुस्तान का विस्तृत रूप लोगों को किस तरह समझाया?
2. किसानों की आँखों में चमक आने का क्या कारण है?
3. 'ये सभी हमें अजीज हैं।' आपको अपने देश में क्या-क्या अजीज लगता है?

उत्तर-

1. लेखक लोगों को बताता था कि जितना कुछ वे सभी जानते हैं, वह सब हिंदुस्तान है। लेकिन इसके अलावा हिंदुस्तान बहुत विस्तृत है जिसमें यहाँ की नदियाँ, पहाड़, झरने, जंगल, खेत सब कुछ आ जाते हैं। देश के नदी, पहाड़, खेत और हिंदुस्तान के लोग भी भारत माता हैं। ये सारे देश में फैले हुए हैं।
2. जब लेखक किसानों को 'भारत माता की जय' नारे का अर्थ बताते हैं तो उन्हें इस बात का गर्व अनुभव होता है कि वे भी भारत माता के अंग हैं। यह सोचकर उनकी आँखों में चमक आ जाती है।
3. जिस प्रकार लेखक को हिंदुस्तान से असीम लगाव था, उसी प्रकार मैं भी अपने देश से अगाध प्यार करता हूँ। मैं यहाँ की नदियाँ, पेड़, पहाड़, झरने, सागर, अन्न, खेतों से बहुत लगाव रखता हूँ। इन सबसे बढ़कर मैं यहाँ के लोगों से प्यार करता हूँ। मुझे ये सब अत्यंत अजीज़ हैं।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

उत्तर-

भारत की चर्चा नेहरू जी देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर अपने सुनने वालों से किया करते थे। इस विषय की चर्चा ज्यादातर वे किसानों से करते थे। उन्हें लगता था कि किसानों

को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे उन्हें हिंदुस्तान का नाम भारत देश के संस्थापक के नाम से परंपरा से चला आ रहा है। इस देश का एक हिस्सा दूसरे से अलग होते हुए भी देश एक है। इस भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए आंदोलन की प्रेरणा देते थे।

प्रश्न 2:

नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे?

उत्तर-

नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे-

(क) वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं?

(ख) यह भारत माता कौन है?

(ग) वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की?

प्रश्न 3:

दुनिया के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था?

उत्तर-

नेहरू जी के लिए किसानों को दुनिया के बारे में बताना आसान था। इसके निम्नलिखित कारण हैं –

- महाकाव्यों व पुराणों की कथा-कहानियों से किसान पहले से परिचित थे।
- तीर्थयात्राओं के कारण देश के चारों कोनों पर है।
- कुछ सिपाहियों ने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था।
- कुछ लोग विदेशों में नौकरियाँ करते थे।
- 1930 की आर्थिक मंदी के कारण दूसरे मुल्कों के बारे में जानकारी थी।

प्रश्न 4:

किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ लेते थे?

उत्तर-

किसान सामान्यत: 'भारत माता' का अर्थ-धरती से लेते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले, नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, करोड़ों भारतीय सभी भारत माता हैं।

प्रश्न 5:

भारत माता के प्रति नेहरू जी की वया अवधारणा थी?

उत्तर-

नेहरू जी की अवधारणा थी कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। देश का हर हिस्सा- नदी, पहाड़, खेत आदि सभी इसमें शामिल हैं। दरअसल भारत में रहने वाले करोड़ों लोग हैं, 'भारत माता की जय' का अर्थ है-करोड़ों भारतवासियों की जय। इस धारणा का अर्थ है-देशवासियों से ही देश बनता है।

प्रश्न 6:

आजादी से पूर्व किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था?

उत्तर-
आजादी से पूर्व किसानों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता था-
गरीबी, कर्जदारी, पूँजीपतियों के शिकजे में फँसे रहना, जमींदारों और महाजनों के कर्ज के जाल में फँसकर तड़पना, लगान की कठोरता से वसूली, पुलिस के अत्याचार, अधिक ब्याज देना तथा विदेशी शासन के अत्याचार।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

आजादी से पहले भारत-निर्माण को लेकर नेहरू के क्या सपने थे? क्या आज़ादी के बाद वे साकार हुए? चर्चा कीजिए।

उत्तर-
आज़ादी से पहले भारत निर्माण को लेकर नेहरू के सपने निम्नलिखित थे –

1. देश में औद्योगिक क्रांति
2. महाजनी संस्कृति से मुक्ति
3. विज्ञान व तकनीक का विकास
4. गरीबी दूर करना।

उनके ये सपने कुछ हद तक पूरे हुए, परंतु पूर्णतः नहीं, भ्रष्टाचार, सरकारी अनिच्छा, वोट की राजनीति आदि के कारण अनेक योजनाएँ सिरे नहीं चढ़ सकी।

प्रश्न 2:

भारत के विकास को लेकर आप क्या सपने देखते हैं?

उत्तर-
भारत के विकास को लेकर मेरा सपना निम्नलिखित है-
(क) सभी भारतीयों को रोटी, कपड़ा व मकान सहजता से मिले।

(ख) शिक्षा का अधिकार सबको मिले।

(ग) देश के कृषि व औद्योगिक क्षेत्रों में विकास हो ताकि लोगों को रोजगार मिले।

(घ) देश में तकनीकी क्रांति आए।

(ङ) देश में शांति का माहौल कायम रहे।

प्रश्न 3:

आपकी दृष्टि में भारत माता और हिंदुस्तान की क्या संकल्पना है? बताइए।

उत्तर-
मेरी दृष्टि में भारत माता या हिंदुस्तान वह देश है जो विभिन्न भौगोलिक सीमाओं से आबद्ध है। उत्तर में हिमालय इसका मस्तक है जो प्रहरी के समान इसकी रात-दिन रक्षा करता है तो दक्षिण में सागर इसके चरणों को पखारता है। अनेक नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, पशु-पक्षी इसकी शोभा में वृद्धि करते हैं। इस देश का हर निवासी इसका अंश है। इन सबको मिलाकर बना हुआ देश भारत है।

प्रश्न 4:

वर्तमान समय में किसानों की स्थिति किस सीमा तक बदली है? चर्चा कर लिखिए।

उत्तर-

आज किसानों की दशा में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। अब वे अपने खेतों के मालिक हैं। उन्हें लगान नहीं देना पड़ता। सूखा पड़ने या बाढ़ आने पर उसे मुआवजा मिलता है। उसकी फसलों की खरीद हेतु सरकार न्यूनतम मूल्य घोषित करती है। अच्छे बीज, खाद, कीटनाशक, बिजली, पानी आदि सब पर सरकार भारी सब्सिडी देती है। अब उसे भूखा नहीं मरना पड़ता। खेती के साथ वह छोटे-छोटे कुटीर उद्योग भी लगा सकता है। अब उसे महाजनों, जमींदारों, पुलिस के अत्याचार सहने नहीं पड़ते।

प्रश्न 5:

आजादी से पूर्व अनेक नारे प्रचलित थे। किन्हीं दस नारों का संकलन करें और संदर्भ भी लिखें।

उत्तर-

1. वंदे मातरम् ! – मातृभूमि की वंदना करने के लिए। (बंकिमचंद्र)
2. भारत माता की जय! – समस्त भारत-भूमि एवं निवासियों की विजय।
3. यह हिंद! – हिंद प्रदेश (भारत) की जय! (सुभाष चंद्र बोस)
4. करो या मरो! – या तो काम करो या देशहित में अपने-आप को बलिदान कर दो। (गांधी जी)
5. जय जवान! जय किसान! – भारत के किसानों (अन्नदाता और जवानों (रक्षकों)) की जय (शास्त्री जी)
6. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे मैं लेकर रहूँगा! – स्वतंत्रता की घोषणा। (तिलक)
7. तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा। (सुभाष चंद्र बोस)
8. आराम हराम है। (नेहरू)
9. अंग्रेजों भारत छोड़ो (भारतवासी)
10. सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारी दिल में है। देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है। (रामप्रसाद बिस्मिल)

भाषा की बात

प्रश्न 1:

नीचे दिए गए शब्दों का पाठ के संदर्भ में अर्थ लिखिए-

दक्खिन, पश्चिम, यक-साँ, एक-जुज़, ढद्ढे

उत्तर-

- **दक्खिन** – (दक्षिण) भारत का दक्षिणी भाग
- **पच्छिम** – (पश्चिम) पाश्चात्य देश
- **यक-साँ** – एक जैसा, समान
- **एक जुज़** – एकजुट
- **ढद्ढे** – बोझ

प्रश्न 2:

नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों के विशेषण रूप लिखिए-

आज़ादी, चमक, हिंदुस्तान, विदेश, सरकार, यात्रा, पुराण, भारत

उत्तर-

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
आज़ादी	आजाद	सरकार	सरकारी
चमक	चमकीला	यात्रा	यात्री
हिंदुस्तान	हिंदुस्तानी	पुराण	पौराणिक
विदेश	विदेशी	भारत	भारतीय

अन्य हल प्रश्न

बोधात्मक प्रशन

प्रश्न 1:

'भारत माता' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर-

'भारत माता' अध्याय हिंदुस्तान की कहानी का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है। उन्होंने भारत माता शब्द पर भी विचार किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि भारत माता की जय का मतलब है यहाँ के करोड़ों-करोड़ लोगों की जय।

प्रश्न 2:

लोगों की आँखों में कब चमक आ जाती थी?

उत्तर-

नेहरू जी लोगों को बताते थे कि तुम ही भारत माता के अंश हो। एक तरह से तुम ही भारत माता हो। यह बात जब उनकी समझ में आ जाती थी तो उनकी आँखों में चमक आ जाती थी। उन्हें लगता था मानो उन्होंने कोई खोज कर ली हो।

प्रश्न 3:

लेखक गाँवों व शहरों में अपने भाषणों में क्या अंतर रखते थे?

उत्तर-

लेखक देश भर में भ्रमण कर जगह-जगह भाषण देते थे। शहरों में उनके भाषणों का विषय अलग होता था। शहरी लोग शिक्षित व समझदार होते थे। उनकी समस्याएँ भी भिन्न प्रकार की होती थीं। वहाँ नेहरू जी विकास या स्वतंत्रता संबंधी बातें करते थे। गाँव में लोग अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे होते थे। उनका दायरा भी सीमित होता था तथा वे संकीर्ण मानसिकता के थे। देहातों में नेहरू विदेशों की चर्चा करते थे। उन्हें यह समझाते थे कि वे देश का ही एक हिस्सा है। वे देश की एकता पर बल देते थे।

आत्मा का ताप

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय-** सैयद हैदर रज़ा का जन्म 1922 ई में मध्य प्रदेश के बाबरिया गाँव में हुआ। इन्होंने स्कूली शिक्षा नागपुर बोर्ड से पास की। उन्होंने गोंदिया में ड्राइंग टीचर की नौकरी की। इन्होंने चित्रकला की शिक्षा नागपुर स्कूल ऑफ आर्ट व सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई से प्राप्त की। इन्होंने भारत में अपनी कला की अनेक प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। इसके बाद 1950 ई. में वे फ्रांसीसी सरकार की छात्रवृत्ति पर फ्रांस गए और वहाँ चित्रकला का अध्ययन किया। इन्होंने आधुनिक भारतीय कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। इन्हें 'ग्रेड ऑव ऑफ़िसर ऑव द आर्डर ऑव आटर्स ऐंड लेटर्स' अवार्ड से सम्मानित किया गया।

● **रचना-**सैयद हैदर रज़ा कलाकार तो हैं ही, साथ ही अच्छे लेखक भी हैं। इनके द्वारा लिखी हुई पुस्तक का नाम है-'आत्मा का ताप' (आत्मकथा)।

● **विशेषताएँ-**आधुनिक भारतीय चित्रकला को जिन कलाकारों ने नया और आधुनिक मुहावरा दिया, उनमें सैयद हैदर रज़ा का नाम महत्वपूर्ण है। रज़ा सिर्फ इसी वजह से कला की दुनिया में आदरणीय नहीं हैं, बल्कि वे हुसैन व सूज़ा के समान महान कलाकार हैं जिन्होंने भारतीय चित्रकला को प्रसिद्ध दिलाई।

इनमें हुसैन घुमक्कड़ी स्वभाव के कारण भारत में ही रहे। सूज़ा न्यूयार्क चले गए और रज़ा पेरिस में जाकर बस गए। इस तरह रज़ा की कला में भारतीय व पश्चिमी कला दृष्टियों का मेल हुआ। वे लंबे समय तक पश्चिम में रहे तथा वहाँ की कला की बारीकियों का अध्ययन किया। वे ठेठ रूप से भारतीय कलाकार हैं। बिंदु उनकी कला-रचना के केंद्र में है। उनकी कई कलाकृतियाँ बिंदु का रूपकार है। यह बिंदु केवल रूपकार नहीं है, बल्कि पारंपरिक भारतीय चिंतन का केंद्र बिंदु भी है। केंद्र बिंदु की तरफ इनका झुकाव इनके स्कूली शिक्षक नंदलाल झरिया ने कराया था।

रज़ा की कला और व्यक्तित्व में उदारता है। इनकी कला में रंगों की व्यापकता और अध्यात्म की गहराई है। इनकी कला को भारत सहित दूसरे देशों में सराहा गया है। इन पर रुडॉल्फ वॉन लेडेन, पियरे गोदिबेयर, गीति सेन, जाक लासें, मिशेल एंबेयर आदि ने मोनोग्राफ लिखे हैं।

पाठ का सारांश

यह पाठ रज़ा की आत्मकथात्मक पुस्तक आत्मा का ताप का एक अध्याय है। इसका अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद मधु बी. जोशी ने किया है। इसमें रज़ा ने चित्रकला के क्षेत्र में अपने आरंभिक संघर्षों और सफलताओं के बारे में बताया है। एक कलाकार का जीवन-संघर्ष और कला-संघर्ष, उसकी सर्जनात्मक बेचैनी, अपनी रचना में सर्वस्व झोंक देने का उसका जुनून ये सारी चीजें रोचक शैली में बताई गई हैं।

लेखक को स्कूल की परीक्षा के दस में नौ विषयों में विशेष योग्यता मिली तथा वह कक्षा में प्रथम आया। पिता जी के रिटायर होने के कारण उसे गोंदिया में ड्राइंग टीचर की नौकरी की। शीघ्र ही उन्हें बंबई (मुंबई) के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में अध्ययन के लिए मध्य प्रांत की सरकारी छात्रवृत्ति सितंबर 1943 में मिली। पद से त्यागपत्र देने के बाद वह बंबई पहुँचा तो दाखिला बंद हो चुका था। छात्रवृत्ति वापस ले ली गई। सरकार ने अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की, परंतु वह वापस नहीं लौटा और मुंबई में ही रहने लगा। यहाँ एक्सप्रेस ब्लॉक स्टूडियो में

डिजाइनर की नौकरी की तथा साल भर की मेहनत के बाद स्टूडियो के मालिक जलील व मैनेजर हुसैन ने उसे मुख्य डिजाइनर बना दिया।
दिन भर काम करने के बाद वह पढ़ने के लिए मोहन आर्ट क्लब जाता। वह जेकब सर्कल में टैक्सी ड्राइवर के घर सोता था। वह ड्राइवर रात में टैक्सी चलाता था तथा दिन में सोता था। इस तरह इनका काम चलता था। एक रात नौ बजे वह कमरे पर पहुँचा तो वहाँ पुलिसवाला खड़ा था। पता चला कि यहाँ हत्या हुई है। वह घबरा गया तथा तुरंत पुलिस स्टेशन जाकर उसने कमिश्नर से मिलकर सारी बात बताई। कमिश्नर ने बताया कि टैक्सी में किसी ने सवारी की हत्या कर दी थी। अगले दिन जलील साहब ने सारी कहानी सुनने के बाद उसे आर्ट डिपार्टमेंट में कमरा दे दिया। जलील साहब ने कई दिनों तक लेखक को देर रात तक स्केच बनाते हुए देखा था। जिससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने फ्लैट का एक कमरा लेखक को दे दिया।
लेखक पूरी तरह काम में डूब गया और 1948 ई. में उसे बॉम्बे सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला। इस पुरस्कार को पाने वाला यह सबसे कम आयु का कलाकार था। दो वर्ष बाद इन्हें फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति मिली। नवंबर, 1943 में आर्ट्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी में लेखक के दो चित्र प्रदर्शित हुए। अगले दिन टाइम्स ऑफ इंडिया में कला समीक्षक रुडॉल्फ वॉन लेडेन ने लेखक के चित्रों की तारीफ की। दोनों चित्र 40-40 रुपये में बिक गए। ये पैसे उसकी महीने भर की कमाई से अधिक थे।
लेखक को प्रोत्साहन देने वालों में वेनिस अकादमी के प्रोफेसर वाल्टर लैंगहैमर भी थे। उन्होंने उसे काम करने के लिए अपना स्टूडियो दे दिया। वे 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में आर्ट डायरेक्टर थे। लेखक दिन में बनाए हुए चित्र उन्हें दिखाता। उसका काम निखरता गया। लैंगहैमर उसके चित्र खरीदने लगे। 1947 ई. में वह जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट का नियमित छात्र बन गया।
1947 व 1948 के वर्ष बहुत कठिन थे। पहले लेखक की माता व फिर पिता का देहांत हो गया।
देश में आजादी का उत्साह था, परंतु विभाजन की त्रासदी थी। लेखक युवा कलाकारों के साथ रहता था। उन्हें लगता था कि वे पहाड़ हिला सकते हैं। सभी अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बढ़िया काम करने में जुट गए।
लेखक 1948 ई. में श्रीनगर जाकर चित्र बनाए। तभी कश्मीर पर कबायली हमला हुआ। हालांकि लेखक ने भारत में रहने का फैसला किया। वह बारामूला तक गया जिसे घुसपैठियों ने ध्वस्त कर दिया था। लेखक के पास कश्मीर के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का सिफारिश पत्र था जिसके आधार पर वह यात्रा कर सका। इस यात्रा में उसकी भेंट प्रख्यात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ से हुई। उसने लेखक की चित्रों की प्रशंसा की, परंतु उनमें रचना का अभाव बताया। उसने सेजाँ का काम देखने की सलाह दी। लेखक पर इसका गहरा प्रभाव हुआ। मुंबई आकर उसने अलयांस फ्रांसे में फ्रेंच भाषा सीखी। 1950 ई. में फ्रेंच दूतावास में सांस्कृतिक सचिव से हुए वार्तालाप के बाद उसे दो वर्ष की छात्रवृत्ति मिली।
लेखक 2 अक्टूबर, 1950 को फ्रांस के मार्सेई पहुँचा। बंबई में उसमें काम करने की इच्छा थी। आत्मा का चढ़ा ताप लोगों को दिखाई देता था। लोग सहायता करते थे। वह युवा कलाकारों से कहता है कि चित्रकला व्यवसाय नहीं, आत्मा की पुकार है। इसे अपना सर्वस्व देकर ही कुछ ठोस परिणाम मिल पाते हैं। केवल जहरा जफरी को काम करने की ऐसी लगन मिली। वह दमोह शहर के आसपास के ग्रामीणों के साथ काम करती हैं। लेखक यह संदेश देना चाहता है कि कुछ घटने के

इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो-खुद कुछ करो। अच्छे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं करते, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं।
लेखक बुखार से छटपटाता-सा अपनी आत्मा को संतप्त किए रहता है। उसकी बात कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, परंतु उसमें काम करने का संकल्प है। गीता भी कहती है कि जीवन में जो कुछ है, तनाव के कारण है। जीवन का पहला चरण बचपन एक जागृति है, लेकिन लेखक के लिए बंबई का दौर ही जागृति चरण था। वह कहता है पैसा कमाना महत्वपूर्ण होता है, अंतत: वह महत्वपूर्ण नहीं होता। उत्तरदायित्व पूरे करने के लिए पैसा जरूरी है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 12o

रिटायर-कार्य से मुक्त। पेशकश-प्रस्ताव करना। गैलरियाँ-चित्र प्रदर्शनी की जगह। डिजाइनर-नए रूप बनाने वाला। दौर-सिलसिला।

पृष्ठ संख्या 121

वारदात-घटना। संदिग्ध-संदेह से मुक्त। अक्ल गुम होना-बुद्ध नष्ट होना। रामकहानी-घटना संबंधी सभी बातें। स्केच-रेखाओं से बने चित्र। ठिकाना-रहने का स्थान। गलीज-गंदा। उदघाटन-शुरुआत करना।

पृष्ठ संख्या 122

प्रतिभा-कला-शक्ति। संयोजन-मेल। दक्ष-कुशल। संग्राहक-इकट्ठा करने वाला। विश्लेषण-जाँचना-परखना। त्रासदी-दुखद घटना। सामथ्र्य-शक्ति।

पृष्ठ संख्या 123

क्रूर-कठोर। आत्मसात-मन में ग्रहण करना। उबर-मुक्त होकर। ध्वस्त-नष्ट। स्थानीय-वहीं का रहने वाला। शहराती-शहर में रहने वाला।

पृष्ठ संख्या 124

वार्तालाप-बातचीत। जीनियस-प्रतिभाशाली। ऊर्जा-शक्ति। ताप-जोश। सर्वस्व-सब कुछ। ठोस-वास्तविक।

पृष्ठ संख्या 125

धृष्टता-बिना किसी लिहाज के। हाथ पर हाथ धरना-कुछ न करना। संपन्न-धनी। चित्त-हृदय। संतप्त-दुखी। आजीविका-रोजी-रोटी। उत्तरदायित्व-जिम्मेदारी।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. मैंने अमरावती के गवर्नमेंट नॉर्मल स्कूल से त्यागपत्र दे दिया। जब तक मैं बंबई पहुँचा तब तक जे.जे. स्कूल में दाखिला बंद हो चुका था। दाखिला हो भी जाता तो उपस्थिति का प्रतिशत पूरा न हो पाता। छात्रवृत्ति वापस ले ली गई। सरकार ने मुझे अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की। मैंने तय किया कि मैं लौटूंगा नहीं, बंबई में ही अध्ययन करूंगा। (पृष्ठ-120)

प्रश्न

1. लेखक ने नौकरी से त्यागपत्र क्यों दिया?
2. लेखक की छात्रवृत्ति वापिस लेने का कारण बताइए।
3. सरकार ने उन्हें क्या पेशकश की?

उत्तर-

1. लेखक को मुंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस में अध्ययन के लिए मध्य प्रांत की सरकार की तरफ से छात्रवृत्ति मिली। इस कारण उन्होंने अमरावती के गवर्नमेंट नॉर्मल स्कूल से त्यागपत्र दे दिया।
2. लेखक को जे.जे. स्कूल में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिली, परंतु त्यागपत्र देने व अन्य कारणों से वह मुंबई देर से पहुँचा। तब तक इस स्कूल में दाखिले बंद हो गए थे। यदि दाखिला हो भी जाता तो उपस्थिति का प्रतिशत पूरा नहीं हो पाता। अत: दाखिला न लेने के कारण छात्रवृत्ति वापस ले ली गई।
3. लेखक ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और उसे जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला भी नहीं मिला। अब वह बेरोजगार था। अत: सरकार ने उसे अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की।

2. इस सम्मान को पाने वाला मैं सबसे कम आयु का कलाकार था। दो बरस बाद मुझे फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति मिल गई। मैंने खुद को याद दिलाया: भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। मेरे पहले दो चित्र नवंबर 1943 में आर्ट्स सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुए। उद्घाटन में मुझे आमंत्रित नहीं किया गया, क्योंकि मैं जाना-माना नाम नहीं था। अगले दिन मैंने 'द टाइम्स ऑफ़ इंडिया' में प्रदर्शनी की समीक्षा पढ़ी। (पृष्ठ-121)

प्रश्न

1. लखक को कौन-सा सम्मान मिला तथा क्यों?
2. 'भगवान के घर दर हैं अधर नहीं"-यह कथन किसस, किस सदर्भ में कहा?
3. लखक ने प्रदर्शनी की समीक्षा में क्या पढ़ा?

उत्तर-

1. लेखक को 1948 ई. में बॉम्बे ऑट्र्स सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला। वह पुरस्कार पाने वाला सबसे कम आयु का कलाकार था।
2. यह कथन लेखक ने उस समय कहा जब बॉम्बे ऑट्र्स सोसाइटी द्वारा स्वर्ण पदक मिला।
3. लेखक ने प्रदर्शनी की समीक्षा 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में पढ़ी जिसमें कला समीक्षक रुडॉल्फ वॉन लेडेन ने लिखा था कि एस.एच. रज़ा के नाम के छात्र के एक-दो जलरंग लुभावने हैं। उनमें संयोजन और रंगों के दक्ष प्रयोग की जबरदस्त समझदारी दिखती है।

3. भले ही 1947 और 1948 में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी हों, मेरे लिए वे कठिन बरस थे। पहले तो कल्याण वाले घर में मेरे पास रहते मेरी माँ का देहांत हो गया। पिता जी मेरे पास ही थे। वे मंडला लौट गए। मई 1948 में वे भी नहीं रहे। विभाजन की त्रासदी के बावजूद भारत स्वतंत्र था। उत्साह था, उदासी भी थी। जीवन पर अचानक जिम्मेदारियों का बोझ आ पड़ा। हम युवा थे। मैं पच्चीस बरस का था, लेखकों, कवियों, चित्रकारों की संगत थी। हमें लगता था कि हम पहाड़ हिला सकते हैं। और सभी अपने-अपने क्षेत्रों में, अपने माध्यम में सामथ्र्य भर-बढ़िया काम करने में जुट गए। देश का विभाजन, महात्मा गांधी की हत्या क्रूर घटनाएँ थीं। व्यक्तिगत स्तर पर, मेरे माता-पिता की मृत्यु भी ऐसी ही क्रूर घटना थी। हमें इन क्रूर अनुभवों को आत्मसात करना था। हम उससे उबर काम में जुट गए। (पृष्ठ-122–123)

प्रश्न

1. 1947 व 1948 में कौन-कौन-सी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई?
2. लेखक के साथ व्यक्तिगत रूप से कौन-सी दुखद घटनाएँ घटीं?
3. घटनाओं को आत्मसात करने से लखक का क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर-

1. 1947 में वर्षों की गुलामी के बाद भारत अंग्रेजों से आज़ाद हुआ। भारत का विभाजन कर दिया गया था। 1948 ई. में महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई थी। ये दोनों घटनाएँ राष्ट्र पर गहरा प्रभाव डालने वाली थीं।
2. लेखक की माता की मृत्यु 1947 में हुई। उसके पिता साथ रहते थे, परंतु माता की मृत्यु के बाद वे मंडला चले गए। 1948 ई. में उनकी भी मृत्यु हो गई। अत: सारी जिम्मेदारियाँ लेखक के कंधों पर अचानक आ पड़ीं।
3. 1947 में देश को आज़ादी मिली, परंतु विभाजन की पीड़ा के साथ। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। लेखक के ऊपर भी जिम्मेदारियाँ आ गई, क्योंकि माता-पिता दोनों का अचानक निधन हो गया। घर व देश दोनों जगह अव्यवस्था थी। अत: इन सभी घटनाओं को आत्मसात यानी चुपचाप सहन करके ही आगे बढ़ा जा सकता था।

4. 1948 में मैं श्रीनगर गया, वहाँ चित्र बनाए। ख्वाज़ा अहमद अब्बास भी वहीं थे। कश्मीर पर कबायली आक्रमण हुआ, तब तक मैंने तय कर लिया था कि भारत में ही रहूँगा। मैं श्रीनगर से आगे बारामूला तक गया। घुसपैठियों ने बारामूला को ध्वस्त कर दिया था। मेरे पास कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का पत्र था, जिसमें कहा गया था कि यह एक भारतीय कलाकार हैं, इन्हें जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए। एक बार मैं बस से बारामूला से लौट रहा था या वहाँ जा रहा था तो स्थानीय कश्मीरियों के बीच मुझ पैंटधारी शहराती को देखकर एक पुलिसवाले ने मुझे बस से उतार लिया। मैं उसके साथ चल दिया। उसने पूछा, 'कहाँ से आए हो? नाम क्या है?" मैंने बता दिया कि मैं रज़ा हूँ, बंबई से आया हूँ। शेख साहब की चिट्ठी उसे दिखाई। उसने सलाम ठोंका और परेशानी के लिए माफी माँगता हुआ चला गया। (पृष्ठ-123)

प्रश्न

1. 1948 ई में कश्मीर में क्या घटना घटी?
2. लेखक ने क्या तया किय?
3. रज़ा को मिले पत्र में क्या लिखा था?

उत्तर-

1. 1948 ई. में कश्मीर पर कबायली हमला हुआ। उन्होंने बारामूला को तहस-नहस कर दिया था। उस समय रज़ा श्रीनगर में था।
2. कबायली हमले को देखकर रज़ा ने निर्णय किया कि वह पाकिस्तान के बजाय भारत में रहेगा। वह देश विभाजन के पक्ष में नहीं था।

3. रज़ा को तत्कालीन कश्मीर के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का पत्र मिला था। इसमें लिखा था कि यह एक भारतीय कलाकार हैं, इन्हें जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए।

5. श्रीनगर की इसी यात्रा में मेरी भेंट प्रख्यात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ से हुई। मेरे चित्र देखने के बाद उन्होंने जो टिप्पणी की वह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने कहा, 'तुम प्रतिभाशाली हो, लेकिन प्रतिभाशाली युवा चित्रकारों को लेकर मैं संदेहशील हूँ। तुम्हारे चित्रों में रंग है, भावना है, लेकिन रचना नहीं है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि चित्र इमारत की ही तरह बनाया जाता है-आधार, नींव, दीवारें, बीम, छत और तब जाकर वह टिकता है। मैं कहूँगा कि तुम सेज़ाँ का काम ध्यान से देखो।' इन टिप्पणियों का मुझ पर गहरा प्रभाव रहा। बंबई लौटकर मैंने फ्रेंच सीखने के लिए अलयांस फ्रांसे में दाखिला ले लिया। फ्रेंच पेंटिंग में मेरी खासी रुचि थी, लेकिन मैं समझना चाहता था कि चित्र में रचना या बनावट वास्तव में क्या होगी। (पृष्ठ-123)

प्रश्न

1. श्रीनगर में लेखक की मुलाकात किससे हुई? वह लेखक के लिए महत्वपूर्ण कैसे थी?
2. लखक की चित्रकला में क्या कमी थी?
3. लेखक को श्रीनगर की यात्रा से क्या प्रेरणा मिली ?

उत्तर-

1. श्रीनगर में लेखक की मुलाकात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए ब्रेसाँ से हुई। उसने लेखक के चित्रों को देखा तथा उन पर टिप्पणी की। उसने कहा कि तुम प्रतिभाशाली हो, परंतु उसमें निखार नहीं आया है। तुम्हारे चित्रों में रंग, भावना है, परंतु रचना नहीं है। तुम्हें सेज़ाँ का काम देखना चाहिए।
2. लेखक की चित्रकला में रचना पक्ष की कमी थी। जिस प्रकार इमारत की रचना में आधार, नींव, दीवार, बीम, छत आदि की भूमिका होती है, उसी प्रकार लेखक के चित्रों में आधार की कमी थी।
3. लेखक को श्रीनगर की यात्रा से यह प्रेरणा मिली कि उसने बंबई लौटते ही अलमांस फ्रांसे में दाखिला लिया ताकि फ्रेंच भाषा सीख सके। उसे फ्रेंच पेंटिंग में खासी रुचि थी, परंतु वह बनावट या रचना को समझना चाहता था।

6. मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह संदेश देने की कामना है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो-खुद कुछ करो। जरा देखिए, अच्छे-खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं। और यहाँ हम बेचैनी से भरे, काम किए जाते हैं। मैं बुखार से छटपटाता-सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त किए रहता हूँ। मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ जिसमें खामी लगती है। यह बहुत गजब की बात नहीं है, लेकिन मुझमें काम करने का संकल्प है। भगवद् गीता कहती है, 'जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है।' बचपन, जीवन का पहला

चरण, एक जागृति है। लेकिन मेरे जीवन का बंबईवाला दौर भी जागृति का चरण ही था। (पृष्ठ-125)

प्रश्न

1. लेखक युवा मित्रों को क्या सर्देश देता है?
2. लेखक अपने चित्त को क्यों सतपत किए रहता हैं?
3. भगवद् गीता का सर्देश क्या है?

उत्तर-

1. लेखक युवा मित्रों के संदेश देता है कि उन्हें काम करना चाहिए। उन्हें कुछ घटने का इंतजार नहीं करना चाहिए। हाथ पर हाथ धरे रखना मूर्खता है।
2. लेखक सच्चा कलाकार है। उसकी आत्मा निरंतर नया करने के लिए व्याकुल रहती है। उसका कलाकार मन बुखार से पीड़ित व्यक्ति की तरह छटपटाता है।
3. भगवद्गीता का संदेश है-जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है। अर्थात् संघर्ष के बिना उन्नति नहीं हो सकती। अगर जीवन में उन्नति और सफलता का स्वाद चखना है तो उसे संघर्ष के पथ पर चलना ही होगा।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

रजा ने अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी की पेशकश क्यों नहीं स्वीकार की?

उत्तर-

लेखक को मध्य प्रांत की सरकार की तरफ से बंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में दाखिला लेने के लिए छात्रवृत्ति मिली। जब वे अमरावती के गवर्नमेंट नार्मल स्कूल से त्यागपत्र देकर बंबई पहुँचा तो दाखिले बंद हो चुके थे। सरकार ने छात्रवृत्ति वापस ले ली तथा उन्हें अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की। लेखक ने यह पेशकश स्वीकार नहीं की, क्योंकि उन्होंने बंबई शहर में रहकर अध्ययन करने का निश्चय कर लिया था। उन्हें यहाँ का वातावरण, गैलरियाँ व मित्र पसंद आ गए। चित्रकारी की गहराई को जानने-समझने के लिए बंबई (अब मुंबई) अच्छी जगह थी। चित्रकारी सीखने की इच्छा के कारण उन्होंने यह पेशकश ठुकरा दी।

प्रश्न 2:

बंबई में रहकर कला के अध्ययन के लिए रज़ा ने क्या-क्या संघर्ष किए?

उत्तर-

बंबई में रहकर कला के अध्ययन के लिए रज़ा ने कड़ा संघर्ष किया। सबसे पहले उन्हें एक्सप्रेस ब्लाक स्टूडियो में डिजाइनर की नौकरी मिली। वे सुबह दस बजे से सायं छह बजे तक वहाँ काम करते थे फिर मोहन आर्ट क्लब जाकर पढ़ते और अंत में जैकब सर्कल में एक परिचित ड्राइवर के ठिकाने पर रात गुजारने के लिए जाते थे। कुछ दिन बाद उन्हें स्टूडियो के आर्ट डिपार्टमेंट में कमरा मिल गया। उन्हें फर्श पर सोना पड़ता था। वे रात के ग्यारह-बारह बजे तक चित्र व रेखाचित्र बनाते थे। उनकी मेहनत देखकर उन्हें मुख्य डिजाइनर बना दिया गया। कठिन परिश्रम के कारण उन्हें मुंबई आर्ट्स सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला।

1943 ई. में उनके दो चित्र आर्ट्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी में रखे गए, किंतु उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया। उनके चित्रों की प्रशंसा हुई। उनके चित्र 40-40 रुपये में बिक गए। वेनिस अकादमी के प्रोफेसर वाल्टर लैंगहैमर ने उन्हें अपना स्टूडियो दिया। लेखक दिनभर मेहनत करके चित्र बनाता तथा लैंगहैमर उन्हें देखते तथा खरीद भी लेते। इस प्रकार लेखक नौकरी छोड़कर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट का नियमित छात्र बना।

प्रश्न 3:

भले ही 1947 और 1948 में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी हों, मेरे लिए वे कठिन बरस थे-रजा ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर-

रज़ा ने इन्हें कठिन बरस इसलिए कहा, क्योंकि इस दौरान उनकी माँ का देहांत हो गया। पिता जी की मंडला लौटना पड़ा तथा अगले साल उनका देहांत हो गया। इस प्रकार उनके कंधों पर सारी जिम्मेदारियाँ आ पड़ीं।

1947 में भारत आज़ाद हुआ, परंतु विभाजन की त्रासदी भी थी, गांधी की हत्या भी 1948 में हुई। इन सभी घटनाओं ने लेखक को हिला दिया। अत: वह इन्हें कठिन वर्ष कहता है।

प्रश्न 4:

रजा के पसंदीदा फ्रेंच कलाकार कौन थे?

उत्तर-

रज़ा के पसंदीदा फ्रेंच कलाकारों में सेज़ाँ, वॉन गॉज, गोगाँ पिकासो, मातीस, शागाल और ब्रॉक थे। इनमें वह पिकासो से सर्वाधिक प्रभावित थे।

प्रश्न 5:

तुम्हारे चित्रों में रंग है, भावना है, लेकिन रचना नहीं है। तम्हें मालूम होना चाहिए कि चित्र इमारत की ही तरह बनाया जाता है-आधार, नींव, दीवारें, बीम, छत और तब जाकर वह टिकता है-यह बात

(क) किसने, किस संदर्भ में कही?

(ख) रज़ा पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर-

(क) यह बात प्रख्यात फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ ने श्रीनगर की यात्रा के दौरान सैयद हैदर रज़ा के चित्रों को देखकर कही थी। उनका मानना था कि चित्र में भवन-निर्माण के समान सभी तत्व मौजूद होने चाहिए। चित्रकारी में रचना की जरूरत होती है। उसने लेखक को सेज़ाँ के चित्र देखने की सलाह दी।

(ख) फ्रेंच फोटोग्राफर की सलाह का रज़ा पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुंबई लौटकर उन्होंने फ्रेंच सीखने के लिए अलयांस फ्रांस में दाखिला लिया। उनकी रुचि फ्रेंच पेंटिंग में पहले ही थी। अब वे उसकी बारीकियों को समझने का प्रयास करने लगे। इस कारण उन्हें फ्रांस जाने का अवसर भी मिला।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

रज़ा को जलील साहब जैसे लोगों का सहारा न मिला होता तो क्या तब भी वे एक जाने-माने चित्रकार होते? तर्क सहित लिखिए।

उत्तर-

रज़ा को जलील साहब जैसे लोगों का सहारा न मिला होता तो भी वे एक जाने-माने चित्रकार होते। इसका कारण है-उनके अंदर चित्रकार बनने की अदम्य इच्छा। लेखक बचपन से ही प्रतिभाशाली था। उसे आजीविका का साधन मिल गया था, परंतु उसने सरकारी नौकरी छोड़कर चित्रकला सीखने के लिए कड़ी मेहनत की। मेहनत करने वालों का साथ कोई-न-कोई दे देता है। जलील साहब ने भी उनकी प्रतिभा, लगन व मेहनत को देखकर सहायता की। लेखक के उत्साह, संघर्ष करने की क्षमता, काम करने की इच्छा ही उसे महान चित्रकार बनाती है।

प्रश्न 2:

चित्रकला व्यवसाय नहीं, अंतरात्मा की पुकार हैं-इस कथन के आलोक में कला के वर्तमान और भविष्य पर विचार कीजिए।

उत्तर-

लेखक का यह कथन अक्षरश: सही है। जो व्यक्ति इस कला को सीखना चाहते हैं, उन्हें व्यावसायिकता छोड़नी होती है। व्यवसाय में व्यक्ति अपनी इच्छा से अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। वह धन के लालच में कला के तमाम नियम तोड़ देता है तथा ग्राहक की इच्छानुसार कार्य करता है। उसकी रचनाओं में भी गहराई नहीं होती। ऐसे लोगों का भविष्य कुछ नहीं होता। जो कलाकार मन व कर्म से इस कला में काम करते हैं, वे अमर हो जाते हैं। उनकी कृतियाँ कालजयी होती हैं; उन्हें पैसे की कमी भी नहीं रहती, क्योंकि उच्च स्तर की रचनाएँ बहुत महँगी मिलती हैं। वर्तमान दौर में भी चित्रकला का भविष्य उज्ज्वल है।

प्रश्न 3:

हमें लगता था कि हम पहाड़ हिला सकते हैं-आप किन क्षणों में ऐसा सोचते हैं?

उत्तर-

जब व्यक्ति में कुछ करने की क्षमता व उत्साह होता है तब वह कुछ भी कर गुजरने को तैयार हो जाता है। मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास तब आता है जब कोई समस्या आती है। मैं उस पर गंभीरता से विचार करता हूँ तथा उसका सर्वमान्य हल निकालने की कोशिश करता हूँ। ऐसे समय में मैं अपने मित्रों व सहयोगियों का साथ लेता हूँ। समस्या के शीघ्र हल होने पर हमें लगता है कि हम कोई भी कार्य कर सकते हैं।

प्रश्न 4:

राजा रवि वर्मा, मकबूल फिदा हुसैन, अमृता शेरगिल के प्रसिदध चित्रों का एक अलबम बनाइए। सहायता के लिए इंटरनेट या किसी आर्टगैलरी से संपर्क करें।

उत्तर-

विद्यार्थी स्वयं करें।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

जब तक मैं बबई पहुँचा, तब तक जे जे. स्कूल में दाखिला बद हो चुका था-इस वाक्य को हम दूसरे

तरीके से भी कह सकते हैं। मेरे बबई पहुँचने से पहले जे जे स्कूल में दाखिला बद हो चुका था। - नीचे दिए गए वाक्यों को दूसरे तरीके से लिखिए-

(क) जब तक मैं प्लेटफॉर्म पहुँचती तब तक गाड़ी जा चुकी थी।

(ख) जब तक डॉक्टर हवेली पहुँचता तब तक सेठ जी की मृत्यु हो चुकी थी।

(ग) जब तक रोहित दरवाजा बंद करता तब तक उसके साथी होली का रंग लेकर अंदर आ चुके थे।

(घ) जब तक रुचि कैनवास हटाती तब तक बारिश शुरू हो चुकी थी।

उत्तर-

(क) मेरे प्लेटफॉर्म पर पहुँचने से पहले गाड़ी जा चुकी थी।

(ख) डॉक्टर के हवेली पहुँचने से पहले सेठ जी की मृत्यु हो चुकी थी।

(ग) रोहित के दरवाजा बंद करने से पहले उसके साथी होली का रंग लेकर अंदर आ चुके थे।

(घ) रुचि के कैनवास हटाने से पहले बारिश शुरू हो चुकी थी।

प्रश्न 2:

'आत्मा का ताप' पाठ में कई शब्द ऐसे आए हैं जिनमें ऑ का इस्तेमाल हुआ है; जैसे-ऑफ, ब्लॉक, नॉर्मल। नीचे दिए गए शब्दों में यदि ऑ का इस्तेमाल किया जाए तो शब्द के अर्थ में क्या परिवर्तन आएगा? दोनों शब्दों का वाक्य-प्रयोग करते हुए अर्थ के अंतर को स्पष्ट कीजिए

हाल, काफी, बाल

उत्तर-

1. हाल-दशा-मोहन का हाल खराब है।
   हॉल-बड़ा कमरा-हमारे स्कूल के हॉल में प्रदर्शनी लगी है।
2. काफी-पर्याप्त-मेरे लिए इतना खाना काफी है।
   कॉफी-सर्दियों में पिया जाने वाला एक पेय-सुमन, मेरे लिए एक कप कॉफी बना देना।
3. बाल-केश-सुंदरमती के बाल बहुत चमकीले व बड़े हैं।
   बॉल-गेंद-सचिन ने हर बॉल पर रन लिए।

अन्य हल प्रश्न

बोधात्मक प्रशन

प्रश्न 1:

कश्मीर के प्रधानमंत्री ने लेखक को कैसा पत्र दिया था? उसका उसे क्या फायदा हुआ?

उत्तर-

कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला ने उन्हें एक पत्र दिया जिसमें लिखा था कि यह एक भारतीय कलाकार है, इन्हें जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए। एक बार लेखक बस से बारामूला से लौट रहा था। वहाँ पुलिसवाले ने शहरी आदमी को देखकर उन्हें बस से उतार लिया। पुलिस वाले ने पूछताछ की तो लेखक ने उसे शेख साहब की चिट्ठी उसे दिखाई। पुलिसवाले ने सलाम ठोंका और परेशानी के लिए माफी माँगी। प्रश्न

प्रश्न 2:

लेखक को ऑटर्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी में आमंत्रित क्यों नहीं किया गया?

उत्तर-

1943 में ऑट्र्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की तरफ से मुंबई में एक चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें सभी बड़े-बड़े नामी चित्रकारों को आमंत्रित किया गया। लेखक उन दिनों सामान्य कलाकार था। वह प्रसिद्ध नहीं था। इसलिए उसे आमंत्रित नहीं किया गया। हालाँकि उनके दो चित्र उस प्रदर्शनी में रखे गए थे।

प्रश्न 3:

प्रोफेसर लैंगहेमर कौन थे? उन्होंने रज़ा की कैसे सहायता की?

उत्तर-

प्रोफेसर लैंगहैमर वेनिस अकादमी में प्रोफेसर थे। रज़ा के चित्र देखकर उन्होंने प्रशंसा की तथा काम करने के लिए उसे अपना स्टूडियो दे दिया। वे द टाइम्स ऑफ इंडिया में आर्ट डायरेक्टर थे। लेखक दिन में उनके स्टूडियो में चित्र बनाता तथा शाम को उन्हें चित्र दिखाता। प्रोफेसर उन चित्रों का बीरीकी से विश्लेषण करते। धीरे-धीरे वे उसके चित्र खरीदने भी लगे। इस प्रकार उन्होंने रज़ा को आगे बढ़ने में सहयोग दिया।

प्रश्न 4:

कला के विषय में रज़ा के विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

रज़ा का मत है कि चित्रकला व्यवसाय नहीं, बल्कि अंतरात्मा की पुकार है। इसे अपना सर्वस्व देकर ही कुछ ठोस परिणाम मिल पाते हैं। वे कठिन परिश्रम को महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्हें हैरानी है कि अच्छे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं। युवाओं को कुछ घटने का इंतजार नहीं करना चाहिए तथा खुद नया करना चाहिए।

प्रश्न 5:

धन के बारे में हैदर रज़ा की क्या राय है?

उत्तर-

लेखक धन को जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। उनका मानना है कि उत्तरदायित्व होते हैं, किराया देना होता है, फीस देनी होती है, अध्ययन करना होता है, काम करना होता है। वे धन को प्रमुख मानते हैं। उनका मानना है कि पैसा कमाना महत्वपूर्ण होता है।

प्रश्न 6:

'आत्मा का ताप' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर-

यह पाठ रज़ा की आत्मकथात्मक पुस्तक आत्मा का ताप का एक अध्याय है। इसका अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद मधु बी. जोशी ने किया है। इसमें रज़ा ने चित्रकला के क्षेत्र में अपने आरंभिक संघर्षों और सफलताओं के बारे में बताया है। एक कलाकार का जीवन-संघर्ष और कला-संघर्ष, उसकी सर्जनात्मक बेचैनी, अपनी रचना में सर्वस्व झोंक देने का उसका जुनून ये सारी चीजें रोचक शैली में बताई गई हैं।

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर

लेखक परिचय

कुमार गंधर्व

कुमार गंधर्व भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में जाना-पहचाना नाम है। इनका जन्म 1924 ई. में कर्नाटक राज्य में बेलगाँव जिले के सुलेभावि में हुआ। इनका मूल नाम शिवपुत्र साढ़िदारमैया कामकली है। ये बचपन में ही संगीत के प्रति समर्पित हो गए। मात्र दस वर्ष की उम्र में इन्होंने गायकी की पहली मंचीय प्रस्तुति की। इनके संगीत की मुख्य विशेषता मालवा लोकधुनों और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुंदर सामंजस्य है जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है। इन्होंने लोगों में रचे-बसे लुप्तप्राय पदों का संग्रह कर और उन्हें स्वरों में बाँधकर इन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी। इनकी संगीत-साधना को देखते हुए इन्हें कालिदास सम्मान और पद्मविभूषण सहित बहुत-से सम्मानों से अलंकृत किया गया। इनका देहावसान 1992 ई. में हुआ।

पाठ का साराशी

इस पाठ में लेखक ने स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर की गायकी पर बेबाक टिप्पणी की है। यह पाठ मूल रूप से हिंदी में लिखा गया है। यह रचना भाषा की सांगीतिक धरोहर है। यह शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत को एक धरातल पर ला रखने का साहस है। यह ऐसी परख है जो न शास्त्रीय है और न सुगम। यह बस संगीत है। लता मंगेशकर के 'गानपन' के बहाने लेखक ने शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत के संबंधों पर भी अपना मत प्रकट किया है।

लेखक बताता है कि बरसों पहले वह बीमार था, उस समय एक दिन उसे रेडियो पर अद्धवितीय स्वर सुनाई दिया। यह स्वर उसके अंतर्मन को छू गया। गा समाप्त होने पर गायिका का नाम घोषित किया गया-लता मंगेशकर नाम सुनकर वह हैरान रह गया। उसे लगा कि प्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी ही उनकी बेटी की आवाज में प्रकट हुई है। यह शायद 'बरसात' फिल्म से पहले का गाना था। लता के पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था, परंतु लता उससे आगे निकल गई।

लेखक का मानना है कि लता के बराबर की गायिका कोई नहीं हुई। लता ने चित्रपट संगीत को लोकप्रिय बनाया। आज बच्चों के गाने का स्वर बदल गया है। यह सब लता के कारण हुआ है। चित्रपट संगीत के विविध प्रकारों को आम आदमी समझने लगा है तथा गुनगुनाने लगा है। लता ने नयी पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया तथा आम आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में योगदान दिया। आम श्रोता शास्त्रीय गायन व लता के गायन में से लता की ध्वनि मुद्रिका को पसंद करेगा।

आम आदमी को राग के प्रकार, ताल आदि से कोई मतलब नहीं होता। उसे केवल मस्त कर देने वाली मिठास चाहिए। लता के गायन में वह गानपनू सौ फीसदी मौजूद है। लता के गायन की एक और विशेषता है-स्वरों की निर्मलता। नूरजहाँ के गानों में मादकता थी, परंतु लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। यह अलग बात है कि संगीत दिग्दर्शकों ने उसकी इस कला का भरपूर उपयोग नहीं किया है। लता के गाने में एक नादमय उच्चार है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। दोनों शब्द एक-दूसरे में विलीन होते प्रतीत होते हैं। लेखक का मानना है कि लता के करुण रस के गाने ज्यादा अच्छे नहीं हैं, उसने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने अच्छे तरीके से गाए हैं। अधिकतर संगीत दिग्दर्शकों ने उनसे ऊँचे स्वर में गवाया है।

लेखक का मानना है कि शास्त्रीय संगीत व चित्रपट संगीत में तुलना करना निरर्थक है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत में तेज लय व चपलता प्रमुख होती है। चित्रपट संगीत व ताल प्राथमिक अवस्था का होता है और शास्त्रीय संगीत में परिष्कृत रूप। चित्रपट संगीत में आधे तालों, आसान लय, सुलभता व लोच की प्रमुखता आदि विशेषताएँ होती हैं। चित्रपट संगीत गायकों को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी अवश्य होनी चाहिए। लता के पास यह ज्ञान भरपूर है।

लता के तीन-साढे तीन मिनट के गान और तीन-साढे तीन घटे की शास्त्रीय महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक जैसे हैं। उसके गानों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होता है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर आधारित होती है और रंजकता का संबंध रसिक को आनंदित करने की सामथ्र्य से है। लता का स्थान अव्वल दरजे के खानदानी गायक के समान है। किसी ने पूछा कि क्या लता शास्त्रीय गायकों की तीन घंटे की महफिल जमा सकती है? लेखक उसी से प्रश्न करता है कि क्या कोई प्रथम श्रेणी का गायक तीन मिनट में चित्रपट का गाना इतनी कुशलता और रसोत्कटता से गा सकेगा? शायद नहीं।

खानदानी गवैयों ने चित्रपट संगीत पर लोगों के कान बिगाड़ देने का आरोप लगाया है। लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं। लेखक कहता है कि हमारे शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट वृत्ति के हैं। वे कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं, जबकि चित्रपट संगीत लोगों को अभिजात्य संगीत से परिचित करवा रहा है।

लोगों को सुरीला व भावपूर्ण गाना चाहिए। यह काम चित्रपट संगीत ने किया है। उसमें लचकदारी है। उस सगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझटें आदि निराली हैं। यहाँ नवनिर्माण की गुजाइश है। इसमें शास्त्रीय रागदारी के अलावा लोकगीतों का भरपूर प्रयोग किया गया है। संगीत का क्षेत्र विस्तृत है। ऐसे चित्रपट संगीत की बेताज सम्राज्ञी लता है। उसकी लोकप्रियता अन्य पाश्र्व गायकों से अधिक है। उसके गानों से लोग पागल हो उठते हैं। आधी शताब्दी तक लोगों के मन पर उसका प्रभुत्व रहा है। यह एक चमत्कार है जो आँखों के सामने है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 1

सहज-स्वाभाविक! तन्मयता-तल्लीनता। कलेजा-हृदय। संगति-साथ। अजब गायकी-अनोखी गायन शैली। चित्रपट-सिनेमा। निरंतर-लगातार। सितारिये-सितारवादक।

पृष्ठ संख्या 2

जोड़-बराबर। विलक्षण-अनोखा। दृष्टिकोण-विचार। कोकिला-कोयल! अनुकरण-नकल करना। स्वर मालिकाएँ-स्वरों के क्रमबद्ध समूह। इसमें शब्द नहीं होते। लय-धुन। आकारयुक्त-विशेष साँचे में ढली हुई। सूक्ष्मता-बारीकी। श्रेय-महत्व। संस्कारित-सुधरा हुआ। विषयक-संबंधी। अभिरुचि-रुचि। हाथ बँटाना-सहयोग देना।

पृष्ठ संख्या 3

श्रोता-सुनने वाला। ध्वनि मुद्रिका-स्वरलिपि। शास्त्रीय गायकी-निर्धारित नियमों के अंदर गाया जाने वाला गायन। मालकोस-भैरवी घाट का राग जिसमें 'रे' व 'प' वर्जित हैं। इसमें सारे स्वर कोमल लगते हैं। यह गंभीर प्रकृति का राग है। ताल त्रिताल-यह सोलह मात्राओं का ताल है जिसमें चार-चार मात्राओं के चार विभाग होते हैं। गानपन-आम आदमी को भावविभोर करने वाला गाने

का अंदाज। लोकप्रियता-प्रसिद्ध। मर्म-रहस्य। निर्मलता-पवित्रता। उत्तान-ऊँची तान। पाश्र्व गायिका-परदे के पीछे गाने वाली स्त्री। मुग्धता-रीझने का गुण। दिग्दर्शक-निर्देशक। नादमय उच्चार-गूंज भरा उच्चारण। रीति-तरीका।

पृष्ठ संख्या 4

करुण रस-करुण से भरा काव्यानंद। पटती-जैंचती। न्याय करना-सही व्यवहार करना। मुग्ध श्रृंगार-मन को रिझाने वाला श्रृंगार। दुतलय-तेज धुन। उत्कटता-तेजी, व्यग्रता। ऊँची पट्टी-ऊँचे स्वरों का प्रयोग। अधिकाधिक-अधिक से अधिक। अकारण-बिना कारण। चिलवाना-चिल्लाने को मजबूर करना। प्रयोजनहीन-बिना किसी उद्देश्य के। जलदलय-तेज लय। चपलता-चुलबुलापन। गुणधर्म-स्वभाव। स्थायी भाव-मन में स्थायी रूप से रहने वाला भाव। प्राथमिक अवस्था-आरंभिक दशा। परिष्कृत-सँवारा हुआ। आघात-चोट। लोच-स्वरों का बारीक मनोरंजक प्रयोग। नि:संशय-निस्संदेह।

पृष्ठ संख्या 5

खानदानी-पुश्तैनी। महफिल-नाच-रंग का स्थान। विशुदध-खरा, सच्चा। सुभाषित-सूक्ति। परिपूर्णता-संपूर्णता। दृष्टिगोचर-दिखाई देना। रंगदार-आकर्षक। आस्वादित-चखा हुआ। त्रिवेणी संगम-तीन धाराओं का मेल। समाई रहना-निवास करना। रसिक-रस लेने वाला। रंजक-दिल को लुभाने वाला। नीरस-रसहीन। अनाकर्षक-आकर्षण रहित। रंजकता-रिझाने की शक्ति।

पृष्ठ संख्या 6

अवलंबित-टिकी हुई। समक्ष-सामने। बैठक बिटाना-तालमल बिठाना। सुसंवाद साधना-आपस में तालमेल बिठाना। समाविष्ट-व्याप्त, ग्रस्त। तैलचित्र-तैलीय रंगों से बनाया हुआ चित्र। सुसंगत अभिव्यक्ति-तालमेल से युक्त अभिव्यक्ति। अव्वल-प्रथम, उच्च कोटि। दर्जा-श्रेणी। संशय-संदेह। रसोत्कटता-रस से सराबोर होना। कान बिगाड़ना-सुनने की रुचि को गिराना। आरोप-दोष। पुनरुक्ति-दोबारा कहना। वृत्ति-भावना। हुकुमशाही-अधिकार शासन। कर्मकांड-रूढ़ियाँ अभिजात्य-कुलीन वर्ग से संबंधित। चौकस-सावधान। क्रांति-पूर्ण परिवर्तन। लचकदारी-ऊपर-नीचे।

पृष्ठ संख्या 7

नवनिर्मित-नया निर्माण। गुंजाइश-स्थान। रागदारी-रागों की रचना। कौतुक-आश्चर्यजनक खेल। रूक्ष-रूखा। निर्जल-जल से रहित। पर्जन्य-बरसने वाला बादल। खोर-गली। प्रतिध्वनित-गूँजने वाला। कृषिगीत-खेती से संबंधित गीत। अतिशय-अत्यधिक। मार्मिक-मर्म को छुने वाला। विस्तीर्ण-व्यापक। अलक्षित-जिसकी तरफ ध्यान न गया हो। अदृष्टि पूर्व-अनोखा। अनभिषिक्त-विधि से रहित। सम्राज़ी-रानी। अबाधित-बेरोकटोक। जन-मन-लोगों का हृदय। सतत-लगातार। प्रभुत्व-अधिकार। पागल हो उठना-दीवाना हो जाना। प्रत्यक्ष-आँखों के सामने।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

प्रश्न 1:

लेखक ने पाठ में गानयन का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर –

‘गानपन’ का अर्थ है-गाने से मिलने वाली मिठास और मस्ती। जिस प्रकार ‘मनुष्यता’ नामक गुणधर्म होने के कारण हम उसे मनुष्य कहते हैं उसी प्रकार गीत में ‘गानपन’ होने पर ही उसे संगीत कहा जाता है। लता के गानों में शत-प्रतिशत गानपन मौजूद है तथा यही उनकी लोकप्रियता का आधार है। गानों में गानपन प्राप्त करने के लिए नादमय उच्चार करके गाने के अभ्यास की

आवश्यकता है। गायक को स्वरों के उचित ज्ञान के साथ उसकी आवाज में स्पष्टता व निर्मलता होनी चाहिए। रसों के अनुसार उसमें लय, आघात तथा सुलभता होनी चाहिए।

श्रोताओं को आनंदित करने के लिए स्वर, लय व अर्थ का संगम होना जरूरी है। रागों की शुद्धता पर जोर न देकर गाने को मिठास व स्वाभाविकता के साथ गाया जाना चाहिए।

प्रश्न 2:

लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नजर आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर –

लेखक ने लता की गायकी की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है

1. **सुरीलापन**-लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्‌भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती तथा लोच आदि हैं, उनका उच्चारण मधुर गूंज से परिपूर्ण रहता है।
2. **स्वरों की निर्मलता**-लता के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है, वही उसके गायन की निर्मलता में झलकता है।
3. **कोमलता और मुग्धता**-लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है। इसके विपरीत नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान दिखता था।
4. **नादमय उच्चार**-यह लता के गायन की अन्य विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। लता के गानों में यह बात सहज व स्वाभाविक है।
5. **शास्त्र-शुदधता**-लता के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होने के साथ-साथ रंजकता भी पाई जाती है। हमें लता की गायकी में उपर्युक्त सभी विशेषताएँ नजर आती हैं। उन्होंने भक्ति, देश-प्रेम, श्रृंगार तथा विरह आदि हर भाव के गीत गाए हैं। उनका हर गीत लोगों के मन को छू लेता है। वे गंभीर या अनहद गीतों को सहजता से गा लेती हैं। एक तरफ 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से सारा देश भावुक हो उठता है तो दूसरी तरफ 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जाएँगे।' फिल्म के अलहड़ गीत युवाओं को मस्त करते हैं। वास्तव में, गायकी के क्षेत्र में लता सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्रश्न 3:

लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं-इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर –

एक संगीतज्ञ की दृष्टि से कुमार गंधर्व की टिप्पणी सही हो सकती है, परंतु मैं इस कथन से सहमत नहीं हूँ। लता ने करुण रस के गाने भी बड़ी उत्कटता के साथ गाए हैं। उनके गीतों में मार्मिकता है तथा करुणा छलकती-सी लगती है। करुण रस के गाने आम मनुष्य से सीधे नहीं जुड़ते। लता के करुण रस के गीतों से मन भावुक हो उठता है। 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से पं जवाहरलाल नेहरू

की आँखें भी सजल हो उठी थीं। फिल्म 'रुदाली' का गीत 'दिल हुँ-हुँ करे' विरही जनों के हृदय को बींध-सा देता है। इसी तरह 'ओ बाबुल प्यारे' . गीत में नारी-मन की पीड़ा को व्यक्त किया है। अत: यह सही नहीं है कि लता ने करुण रस के गीतों के साथ न्याय नहीं किया है।

प्रश्न 4:

सगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण हैं। वहाँ अब तक अलक्षित, असशोधित और अदूष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्राप्त है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं-इस कथन को वर्तमान फ़िल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

यह सही है कि संगीत का क्षेत्र बहुत विशाल है, इसमें अनेक संभावनाएँ छिपी हुई हैं। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ हर रोज नए स्वर, नए यंत्रों व नई तालों का प्रयोग किया जाता है। चित्रपट संगीत आम व्यक्ति का संगीत है। इसने लोगों को सुर, ताल, लय व भावों को समझने की समझ दी है। आज यह शास्त्रीय संगीत का सहारा भी ले रहा है। दूसरी तरफ लोकगीतों को बड़े स्तर पर अपना रहा है। संगीतकारों ने पंजाबी लोकगीत, राजस्थानी, पहाड़ी, कृषि गीतों का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। पाश्चात्य संगीत का लोकगीतों के साथ मेल किया जा रहा है कभी तेज संगीत तो कभी मंद संगीत लोगों को मदहोश कर रहा है। इसी तरह फ़िल्मी संगीत नित नए-नए रूपों का प्रयोग कर रहा है।

प्रश्न 5:

चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए-अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

उत्तर –

शास्त्रीय संगीत के समर्थक अकसर यह आरोप लगाते हैं कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए। कुमार गंधर्व उनके इस आरोप को सिरे से नकारते हैं। वे मानते हैं कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं। इसके कारण लोगों को सुरीलेपन की समझ हो रही है। उन्हें तरह-तरह की लय सुनाई दे रही है। आम आदमी को लय की सूक्ष्मता की समझ आ रही है। इसने आम आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि को पैदा किया है। लेखक ने लोगों का शास्त्रीय संगीत को देखने और समझने में परिवर्तित दृष्टिकोण का श्रेय लता के चित्रपट संगीत की दिया है। चित्रपट संगीत पर हमारी राय कुछ अलग है। पुरानी जमाने के चित्रपट संगीत ने सुरीलापन दिया, परंतु आज का संगीत तनाव पैदा करने लगा है। अब गानों में अश्लीलता बढ़ गई है कानफोड़ें संगीत का फैलाव हो रहा है। धुनों में ताजगी नहीं आ रही है। आज चित्रपट संगीत तेज भागती जिंदगी की तरह हो गया है।

प्रश्न 6:

शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्व का आधार क्या होना चाहिए? कुमार गंधर्व की इस संबंध में क्या राय है? स्वयं आप क्या सोचते हैं?

उत्तर –

कुमार गंधर्व का स्पष्ट मत है कि चाहे शास्त्रीय संगीत हो या चित्रपट संगीत, वही संगीत महत्वपूर्ण माना जाएगा जो रसिकों और श्रोताओं को अधिक आनंदित कर सकेगा। दोनों प्रकार के संगीत का मूल आधार होना चाहिए रंजकता। इस बात का महत्त्व होना चाहिए कि रसिक को आनंद देने का

सामश्र्य किस गाने में कितना है? यदि शास्त्रीय संगीत में रंजकता नहीं है तो वह बिल्कुल नीरस हो जाएगा। अनाकर्षक लगेगा और उसमें कुछ कमी-सी लगेगी। गाने में गानपन का होना आवश्यक है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर अवलंबित रहती है और रंजकता का मर्म रसिक वर्ग के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस रीति से उसकी बैठक बिठाई जाए और श्रोताओं से कैसे सुसंवाद साधा जाए, इसमें समाविष्ट है। अत: लेखक का मत बिल्कुल सत्य है। हमारी राय भी उनके समान ही है।

अन्य हल प्रश्न

1. मूल्यपरक प्रश्न

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए मूल्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) मुझे लगता है 'बरसात' के भी पहले के किसी चित्रपट का वह कोई गाना था। तब से लता निरंतर गाती चली आ रही है और मैं भी उसका गाना सुनता आ रहा हूँ। लता से पहले प्रसिदध गायिका नूरजहाँ की चित्रपट संगीत में अपना जमाना था। परंतु उसी क्षेत्र में बाद में आई हुई लता उससे कहीं आगे निकल गई। कला के क्षेत्र में ऐसे चमत्कार कभी-कभी दीख पड़ते हैं। जैसे प्रसिद्ध सितारिये विलायत खाँ अपने सितारवादक पिता की तुलना में बहुत ही आगे चले गए। मेरा स्पष्ट मत है कि भारतीय गायिकाओं में लता के जोड़ की गायिका हुई ही नहीं। लता के कारखा चित्रपट संगीत को विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त हुई है, यही नहीं लोगों को शास्त्रीय संगीत की ओर देखने का दृष्टिकोण भी एकदम बला है।

प्रश्न

1. स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए आगे बढ़ने के लिए आप किन-किन गुणों को आवश्यक मानते हैं और क्यों? 2
2. कुछ लोग दूसरों से आगे बढ़ने के लिए अनुचित तरीकों का प्रयोग करते हैं। उनके इस कदम को आप कितना अनुचित मानते हैं और क्यों? 2
3. उन दो मूल्यों का उल्लेख कीजिए जिन्हें लोकप्रियता मिलने पर भी व्यक्ति को बनाए रखना चाहिए। 2

उत्तर –

1. स्वस्थ स्पर्धा करते हुए व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए लगन, धैर्य, निरंतर अभ्यास, कठिन परिश्रम आदि को आवश्यकता होती है, क्योंकि इन गुणों के अभाव में व्यक्ति सफलता से कोसों दूर रह जाएगा। ऐसे में किसी से आगे निकलना तो दूर उसके पास पहुँच पाना भी असंभव हो जाएगा।
2. कुछ लोग दूसरों से आगे बढ़ने के लिए अनुचित तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। उनका यह कदम स्वयं उनके अपने लिए तथा समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। उनके आगे बढ़ने का रहस्य जब लोगों को पता चलता है तब वे उपहास के पात्र बन जाते हैं। अत: मैं इसे पूरी तरह अनुचित मानता हूँ।
3. विनम्रता, सहनशीलता ऐसे मूल्य हैं, जिन्हें व्यक्ति को सफल होने पर भी बनाए रखना चाहिए।

(ख) लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म यह 'गानपन' ही है। लता के गाने की एक और विशेषता है, उसके स्वरों की निर्मलता। उसके पहले की पाश्र्व गायिका नूरजहाँ भी एक अच्छी गायिका थी, इसमें संदेह नहीं तथापि उसके गाने में एक मादक उत्तान दीखता था। लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। ऐसा दीखता है कि लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है वही उसके गायन की निर्मलता में झलक रहा है। हाँ, संगीत दिग्दर्शकों ने उसके स्वर की इस निर्मलता का जितना उपयोग कर लेना चाहिए था, उतना नहीं किया। मैं स्वयं संगीत दिग्दर्शक होता तो लता को बहुत जटिल काम देता, ऐसा कहे बिना रहा नहीं जाता। लता के गाने की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार। उसके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के अलाप दवारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं।

प्रश्न

1. यदि आप कुमार गंधर्व की जगह होते और पाठ की अन्य परिस्थितियाँ वही होतीं तो आप लता जी को कैसा काम देते और क्यों? 2
2. लता जी की गायिकी की कौन-कौन सी विशेषताएँ आपको प्रभावित करती हैं? अपने विचार लिखिए। 2
3. संगीत हमारे-आपके जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है? लिखिए। 1

उत्तर –

1. यदि मैं कुमार गंधर्व की जगह होता और अन्य परिस्थितियाँ यथावत होतीं, तो मैं भी कुमार गंधर्व की तरह उन्हें कठिन काम देता अर्थात् उनसे उस तरह का गायन करने को कहता, जिससे उनकी गायन कला और भी निखरकर लोगों के सामने आती।
2. लता जी की गायिकी की अनेक विशेषताएँ हैं, जो मुझे प्रभावित करती हैं। इनमें प्रमुख हैं- उनके गीतों में मौजूद गानपन, उनके स्वरों की निर्मलता, कोमलता, मुग्धता और उनका नादमय उच्चार। इन विशेषताओं के बारण ही वे संगीत की बेताज सम्राज्ञी हैं।
3. हमारे जीवन को संगीत अत्यंत गहराई से प्रभावित करता है। संगीत में मानव मन को शांति और सुकून पहुँचाने की क्षमता है तो इससे खुशी की अद्भुत अनुभूति होती है। यह हमें स्वर्गिक दुनिया में ले जाती है।

(ग) एक प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि शास्त्रीय संगीत में लता का स्थान कौन-सा है। मेरे मत से यह प्रश्न खुद ही प्रयोजनहीन है। उसका कारण यह है कि शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में तुलना हो ही नहीं सकती। जहाँ गंभीरता शास्त्रीय संगीत का स्थायीभाव है वहीं जलदलय और चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म है। चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है। चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग किया जाता है। उसकी लयकारी बिलकुल अलग होती है, आसान होती है। यहाँ गीत और आघात को ज्यादा महत्व दिया जाता है। सुलभता और लोच को अग्र स्थान दिया जाता है; तथापि चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और वह लता के पास नि:संशय है। तीन-साढ़े तीन मिनट के गाए हुए चित्रपट के किसी गाने का

और एकाध खानदानी शास्त्रीय गायक की तीन-साढे तीन घटे की महफिल, इन दोनों का कलात्मक और आनंदात्मक मूल्य एक ही है, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं? ऐसा मैं मानता हूँ।

प्रश्न

1. शास्त्रीय और चित्रपट संगीत की तुलना को आप कितना उचित मानते हैं? अपने विचार लिखिए। 2
2. चित्रपट संगीत गायक/गायिकाओं को शास्त्रीय संगीत की जानकारी आवश्यक होती है। इससे आप कितना सहमत हैं? 2
3. चित्रपट संगीत और शास्त्रीय संगीत में कोई एक समानता लिखिए। 1

उत्तर –

1. शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत की तुलना को मैं उचित नहीं मानता हूँ। इसका कारण है-दोनों में आधारभूत अंतरा एक ओर जहाँ शास्त्रीय संगीत में गंभीरता तथा ताल का परिष्कृत रूप पाया जाता है, वहीं चित्रपट संगीत में जलदलता, चपलता तथा ताल प्राथमिक अवस्था में होता है।
2. चित्रपट संगीत गायक/गायिकाओं को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। शास्त्रीय संगीत के ज्ञान से गायन में लोच, गंभीरता तथा उसका परिष्कृत रूप निखरकर श्रोताओं के सामने आता है। इससे चित्रपट संगीत अधिक कर्णप्रिय बनता है।
3. चित्रपट संगीत और शास्त्रीय संगीत की समानता है-उनका कलात्मक एवं आनंदात्मक मूल्य समान होना, जिसके कारण श्रोता संगीत के आनंद सागर में डूब जाते हैं।

(घ) सच बात तो यह है कि हमारे शास्त्रीय गायक बड़ी आत्मसंतुष्ट वृति के हैं। संगीत के क्षेत्र में उन्होंने अपनी हुकुमशाही स्थापित कर रखी है। शास्त्र-शुदधता के कर्मकांड को उन्होंने आवश्यकता से अधिक महत्व दे रखा है। मगर चित्रपट संगीत दवारा लोगों की अभिजात्य संगीत से जान-पहचान होने लगी है। उनकी चिकित्सक और चौकस वृत्ति अब बढ़ती जा रही है। केवल शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना उन्हें नहीं चाहिए, उन्हें तो सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए। और यह क्रांति चित्रपट संगीत ही लाया है। चित्रपट संगीत समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ लाया है। चित्रपट संगीत की लचकदारी उसका एक और सामथ्र्य है, ऐसा मुझे लगता है। उस संगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझटें सब कुछ निराली हैं। चित्रपट संगीत का तंत्र ही अलग है। यहाँ नव-निर्मिति की बहुत गुंजाइश है। जैसा शास्त्रीय रागदारी का चित्रपट संगीत दिग्दर्शकों ने उपयोग किया, उसी प्रकार राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली, उत्तर प्रदेश के लोकगीतों के भंडार को भी उन्होंने खूब लूटा है, यह हमारे ध्यान में रहना चाहिए।

प्रश्न

1. आप शास्त्रीय संगीत पसंद करते हैं या चित्रपट संगीत अपने विचार लिखिए। 2
2. ‘चित्रपट संगीत का तंत्र ही अलग है’ इससे आप कितनु सहमत हैं? 2
3. चित्रपट संगीत में नवनिर्मित की बहुत गुंजाइश है, इसे आप कितना सही मानते हैं? 1

उत्तर –

1. मैं चित्रपट संगीत अधिक पसंद करता हूँ। इसका कारण यह है कि शास्त्रीय संगीत शास्त्र-शुद्ध और नीरस होता है। इसके विपरीत चित्रपट संगीत लोगों को संगीत की दुनिया के अधिक निकट लाया है, क्योंकि ये गाने अधिक सुरीले और भावपूर्ण होते हैं।
2. मैं इससे पूरी तरह सहमत हूँ कि चित्रपट संगीत का तंत्र ही अलग है, क्योंकि चित्रपट संगीत के कारण संगीत जगत् में क्रांति आ गई है। इससे समाज की संगीतविषयक अभिरुचि में प्रभावशाली बदलाव आया है, इस संगीत में उपस्थित लचक इसकी ताकत बनकर उभरी है। मोबाइल फोन की लीड कानों में लगाए संगीत सुनते लोग इसका प्रमाण हैं।
3. चित्रपट संगीत में नवर्निमित की भरपूर गुंजाइश है, इसे मैं पूर्णतया सही मानता हूँ। आज चित्रपट संगीत में विभिन्न प्रांतों-राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली और उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का प्रयोग कर इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाया जा रहा है।

II. निबंधात्मक प्रश्न प्रश्न

प्रश्न 1:

शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में क्या अंतर है?

उत्तर –

शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत-दोनों का लक्ष्य आनंद प्रदान करना है, फिर भी दोनों में अंतर है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता अपेक्षित होती है। यह इसका स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत का गुणधर्म चपलता व तेज लय है। शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है, जबकि चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है शास्त्रीय संगीत में तालों का पूरा ध्यान रखा जाता है, जबकि चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग होता है। चित्रपट संगीत में गीत और आघात को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है, सुलभता तथा लोच को अग्र स्थान दिया जाता है। शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है। तीन-साढ़े तीन मिनट के गाए हुए चित्रपट के किसी गाने का और एकाध खानदानी शास्त्रीय गायक की तीन-साढे तीन घटे की महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक ही है।

प्रश्न 2:

कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर को बेजोड़ गायिका माना है। क्यों?

उत्तर –

लेखक ने लता मंगेशकर को बेजोड़ गायिका माना है। उनके मुकाबले कोई भी गायिका नहीं है। नूरजहाँ अपने समय की प्रसिद्ध चित्रपट संगीत की गायिका थी, परंतु लता ने उसे बहुत पीछे छोड़ दिया। वे पिछले पचास वर्षों से एकछत्र राज कायम किए हुए हैं। इतने लंबे समय के बावजूद उनका स्वर पहले की तरह कोमल, सुरीला व मनभावन है। उनकी अन्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. उनके गायन में जो गानपन है, वह अन्य किसी गायिका में नहीं मिलता।
2. उच्चारण में शुद्धता व नाद का संगम तथा भावों में जो निर्मलता है, वह अन्य गायिकाओं में नहीं है।
3. उनकी सुरीली आवाज ईश्वर की देन है, परंतु लता जी ने उसे अपनी मेहनत से निखारा है।

4. वे शास्त्रीय संगीत से परिचित हैं, परंतु फिर भी सुगम संगीत में गाती हैं। उनके गानों को सुनकर देश-विदेश में लोग दीवाने हो उठते हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने आम व्यक्ति की संगीत अभिरुचि को परिष्कृत किया है।

प्रश्न 3:

लता मंगेशकर ने किस तरह के गीत गाए हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर –

लता मंगेशकर ने चित्रपट संगीत में मुख्यतया करुण व श्रृंगार रस के गाने गाए हैं। उन्होंने अनेक प्रयोग किए हैं उन्होंने राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली व मराठी लोकगीतों को अपनाया है। लता जी ने पंजाबी लोकगीत, रूक्ष और निर्जल राजस्थान में बादल की याद दिलाने वाले गीत, पहाड़ों की घाटियों में प्रतिध्वनित होने वाले पहाड़ी गीत गाए हैं। ऋतु चक्र समझने वाले और खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषि गीत और ब्रजभूमि के सहज मधुर गीतों को फिल्मों में लिया गया है। उन्होंने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले गाने बड़ी उत्कटता से गाए हैं।

III. लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

लेखक लता के संगीत से कब स्वयं को जुड़ा महसूस करने लगे?

उत्तर –

लेखक वर्षों पहले बीमार थे। उस समय उन्होंने रेडियो पर अद्वतीय स्वर सुना। यह स्वर सीधे उनके हृदय तक जा पहुँचा। उन्होंने तन्मयता से पूरा गीत सुना। उन्हें यह स्वर आम स्वरों से विशेष लगा। गीत के अंत में जब रेडियो पर गायिका के नाम की घोषणा हुई तो उन्हें मन-ही-मन संगति पाने का अनुभव हुआ। वे सोचने लगे कि सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी एक दूसरा स्वरूप लिए उन्हीं की बेटी की कोमल आवाज में सुनने को मिली है।

प्रश्न 2:लता के नूरजहाँ से आगे निकल जाने का क्या कारण है?

उत्तर –

लता मंगेशकर प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ के बहुत बाद में आई, परंतु शीघ्र ही उनसे आगे निकल गई। नूरजहाँ के गीतों में मादक उत्तान था जो मनुष्य को जीवन से नहीं जोड़ता था। लता के स्वरों में कोमलता, निर्मलता व मुग्धता थी। जीवन के प्रति दृष्टिकोण उनके गीतों की निर्मलता में दिखता है।

प्रश्न 3:

कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर के गायन को चमत्कार की संज्ञा क्यों दी है?

उत्तर –

चित्रपट संगीत के क्षेत्र में लता बेताज सम्राज्ञी हैं। और भी कई पाश्र्व गायक-गायिकाएँ हैं, पर लता की लोकप्रियता इन सबसे अधिक है। उनकी लोकप्रियता का शिखर अचल है। लगभग आधी शताब्दी तक वे जन-मन पर छाई रही हैं। भारत के अलावा परदेश में भी लोग उनके गाने सुनकर पागल हो उठते हैं। यह चमत्कार ही है जो प्रत्यक्ष तौर पर देखा जा रहा है। ऐसा कलाकार शताब्दियों में एकाध ही उत्पन्न होता है।

प्रश्न 4:

शास्त्रीय गायकों पर लेखक ने क्या टिप्पणी की है?

उत्तर –

लेखक कहता है कि शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट प्रवृत्ति के हैं। उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपनी हुकुमशाही स्थापित कर रखी है। उन्होंने शास्त्र शुद्धता को जरूरत से ज्यादा महत्त्व दे रखा है। वे रागों की शुद्धता पर जोर देते हैं।

प्रश्न 5:

चित्रपट संगीत के विकसित होने का क्या कारण है?

उत्तर –

चित्रपट संगीत के विकसित होने का कारण उसकी प्रयोग धर्मिता है। यह संगीत आम आदमी की समझ में आ रहा है। इस संगीत को सुरीलापन, लचकदारी आदि ने लोकप्रिय बना दिया है। इन्होंने शास्त्रीय संगीत की रागदानी भी अपनाई है, वहीं राजस्थानी, पहाड़ी, पंजाबी, बंगाली, लोकगीतों को भी अपनाया है। दरअसल यह विभिन्नता में एकता का प्रचार कर रहा है। इसके माध्यम से लोग अपनी संस्कृति से परिचित हो रहे हैं।

प्रश्न 6:

लता की गायकी से संगीत के प्रति आम लोगों की सोच में क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर –

लता की गायकी के कारण चित्रपट संगीत अत्यधिक लोकप्रिय हुआ है। अब वे संगीत की सूक्ष्मता को समझने लगे हैं। वे गायन की मधुरता, मस्ती व गानपन को महत्व देते हैं। आज के बच्चे पहले की तुलना में सधे हुए स्वर से गाते हैं। लता ने नई पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है। आम लोगों का संगीत के विविध प्रकारों से परिचय हो रहा है।

प्रश्न 7:

कुमार गंधर्व ने लता जी की गायकी के किन दोषों का उल्लेख किया है?

उत्तर –

कुमार गंधर्व का मानना है कि लता जी की गायकी में करुण रस विशेष प्रभावशाली रीति से व्यक्त नहीं होता। उन्होंने करुण रस के साथ न्याय नहीं किया।

दूसरे, लता ज्यादातर ऊँची पट्टी में ही गाती हैं जो चिल्लाने जैसा होता है।

प्रश्न 8:

शास्त्रीय संगीत की तीन-साढ़े तीन घंटे की महफिल और चित्रपट संगीत के तीन मिनट के गान का आनंदात्मक मूल्य एक क्यों माना गया है?

उत्तर –

लेखक ने शास्त्रीय संगीत की तीन-साढे तीन घटे की महफिल और चित्रपट संगीत से तीन मिनट के गान का आनंदात्मक मूल्य एक माना है इन दोनों का लक्ष्य श्रोताओं को आनंदमग्न करना है। तीन मिनट के गाने में स्वर, लय व शब्दार्थ की त्रिवेणी बहती है। इसमें श्रोताओं को भरपूर आनंद मिलता है।

प्रश्न 9:

लय कितने प्रकार की होती है?

उत्तर –

लय तीन प्रकार की होती है-

1. **विलंबित लय**– यह धीमी होती है।
2. **मध्य लय**– यह बीच की होती है।
3. **दुत लय**– यह मध्य लय से दुगुनी तथा विलबित लय से चौगुनी तेज होती है।

लेखक परिचय
अनुपम मिश्र

अनुपम मिश्र का जन्म 1948 ई. में महाराष्ट्र के वर्धा में हुआ। ये पर्यावरण प्रेमी हैं तथा पर्यावरण संबंधी कई आंदोलन से घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं। इन्होंने लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का अभियान भी छेड़ा है। ये 1977 ई. से गाँधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष से संबद्ध रहे हैं। इन्होंने पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कई पुस्तकें लिखी हैं।

पाठ का सारांश

यह रचना राजस्थान की जल-समस्या का समाधान मात्र नहीं है, बल्कि यह जमीन की अतल गहराइयों में जीवन की पहचान है। यह रचना धीरे-धीरे भाषा की ऐसी दुनिया में ले जाती है जो कविता नहीं है, कहानी नहीं है, पर पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेखक राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्रोत कुंई का वर्णन करता है। वह बताता है कि कुंई खोदने के लिए चेलवांजी काम कर रहा है। वह बसौली से खुदाई कर रहा है। अंदर भयंकर गर्मी है। गर्मी कम करने के लिए बाहर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकते हैं। इससे ताजी हवा अंदर आती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा बाहर निकलती है। चेलवांजी सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का बर्तन टोप की तरह पहनते हैं, ताकि चोट न लगे। थोड़ी खुदाई होने पर इकट्ठा हुआ मलवा बाल्टी के जरिए बाहर निकाला जाता है। चेलवांजी कुएँ की खुदाई व चिनाई करने वाले प्रशिक्षित लोग होते हैं। कुंई कुएँ से छोटी होती है, परंतु गहराई कम नहीं होती। कुंई में न सतह पर बहने वाला पानी आता है और न भूजल। मरुभूमि में रेत अत्यधिक है। यहाँ वर्षा का पनी शीघ्र भूमि में समा जाता है। रेत की सतह से दस पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी चलती है। इस पट्टी से मिट्टी के परिवर्तन का पता चलता है। कुओं का पानी प्रायः खारा होता है। पीने के पानी के लिए कुंइयाँ बनाई जाती हैं। पट्टी का तभी पता चलता है जहाँ बरसात का पानी एकदम नहीं समाता। यह पट्टी वर्षा के पानी व गहरे खारे भूजल को मिलने से रोकती है। अत: बरसात का पानी रेत में नमी की तरह फैल जाता है। रेत के कण अलग होते हैं, वे चिपकते नहीं। पानी गिरने पर कण भारी हो जाते हैं, परंतु अपनी जगह नहीं छोड़ते। इस कारण मरुभूमि में धरती पर दरारें नहीं पड़तीं वर्षा का भीतर समाया जल अंदर ही रहता है। यह नमी बूंद-बूंद करके कुंई में जमा हो जाती है।
राजस्थान में पानी को तीन रूपों में बाँटा है- पालरपानी यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी है। यह धरातल पर बहता है। दूसरा रूप पातालपानी है जो कुंओं में से निकाला जाता है तीसरा रूप है-रेजाणीपानी। यह धरातल से नीचे उतरा, परंतु पाताल में न मिलने वाला पानी रेजाणी है। वर्षा की मात्रा 'रेजा' शब्द से मापी जाती है जो धरातल में समाई वर्षा को नापता है। यह रेजाणीपानी खड़िया पट्टी के कारण पाताली पानी से अलग रहता है अन्यथा यह खारा हो जाता है। इस विशिष्ट रेजाणी पानी को समेटती है कुंई। यह चार-पाँच हाथ के व्यास तथा तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई की होती है। कुंई का प्राण है-चिनाई। इसमें हुई चूक चेजारो के प्राण ले सकती है।
हर दिन की खुदाई से निकले मलबे को बाहर निकालकर हुए काम की चिनाई कर दी जाती है। कुंई की चिनाई ईट या रस्से से की जाती है। कुंई खोदने के साथ-साथ खींप नामक घास से मोटा रस्सा तैयार किया जाता है, फिर इसे हर रोज कुंई के तल पर दीवार के साथ सटाकर गोला बिछाया

जाता है। इस तरह हर घेरे में कुंई बँधती जाती है। लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक कुंडली का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। इस तरह करीब चार हजार हाथ लंबे रस्से की जरूरत पड़ती है।

पत्थर या खींप न मिलने पर चिनाई का कार्य लकड़ी के लंबे लट्ठों से किया जाता है। ये लट्ठे, अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। ये नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फँसाकर सीधे खड़े किए जते हैं तथा फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही काम समाप्त हो जाता है और कुंई की सफलता उत्सव का अवसर बनती है। पहले काम पूरा होने पर विशेष भोज भी होता था। चेजारो की तरह-तरह की भेंट, वर्ष-भर के तीज-त्योहारों पर भेंट, फसल में हिस्सा आदि दिया जाता था, परंतु अब सिर्फ मजदूरी दी जाती है। जैसलमेर में पालीवाल ब्राह्मण व मेघवाल गृहस्थी स्वयं कुंइयाँ खोदते थे। कुंई का मुँह छोटा रखा जाता है। इसके तीन कारण हैं। पहला रेत में जमा पानी से बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। मुँह बड़ा होने पर कम पानी अधिक फैल जाता है, अत: उसे निकाला नहीं जा सकता। छोटे व्यास की कुंई में पानी दो-चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है। पानी निकालने के लिए छोटी चड़स का उपयोग किया जाता है। दूसरे, छोटे मुँह को ढकना सरल है। तीसरे, बड़े मुँह से पानी के भाप बनकर उड़ने की संभावना अधिक होती है। कुंइयों के ढक्कनों पर ताले भी लगने लगे हैं। यदि कुंई गहरी हो तो पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है। यह गरेड़ी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है।

खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े क्षेत्र में से गुजरती है। इस कारण कुंई लगभग हर घर में मिल जाती है। सबकी निजी संपत्ति होते हुए भी यह सार्वजनिक संपत्ति मानी जाती है। इन पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण रहता है। किसी नई कुंई के लिए स्वीकृति कम ही दी जाती है, क्योंकि इससे भूमि के नीचे की नमी का अधिक विभाजन होता है। राजस्थान में हर जगह रेत के नीचे खड़िया पत्थर नहीं है। यह पट्टी चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर आदि क्षेत्रों में है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के गाँवों में लगभग हर घर में एक कुंई है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 9

तरबतर-पूरी तरह भीगा हुआ। चेलवांजी-कुएँ की खुदाई व चिनाई करने वाले लोग। उखरूं-पंजे के बल घुटने मोड़कर बैठना। बसौली-लकड़ी के हत्थे वाला लोहे का नुकीला औजार। हत्था-दस्ता, मूठ। फिकाना-फेंकना। दमघोंटू-साँस रोक देने वाला।

पृष्ठ संख्या 1o

मलवा-खुदाई से निकली मिट्टी। चेजारो-कुंई का काम करने वाला। चिनाई-ईट-चूने आदि से पक्का करना। दक्षतम-अपने काम में पूरी तरह प्रशिक्षित। चेजा-कुंई की खुदाई व चिनाई का काम। भूजल-भूमि के अंदर का जल। नेति-नेति-अंतहीन। पेचीदा-उलझन वाला। मरुभूमि—रेगिस्तान। अथाह-जिसकी गहराई का अंदाजा न हो।

पृष्ठ संख्या 11

परिवर्तन-बदलाव। आशंका-संदेह। अनोखी-अजीब। अन्यत्र-दूसरी जगह। लगाव-जुड़ाव, प्रेम। अलगाव-अलग होना।

पृष्ठ संख्या 12

संचित-इकट्ठा हुआ। वाष्प-भाप। संगठन-मिलकर रहना। असंख्य-अनगिनत। मंथन-विचार-विमर्श। शास्त्र-विशेष विषय का लिखित ज्ञान।

पृष्ठ संख्या 13

अंगुल-अँगुली के मोटाई के बराबर। विशिष्ट-विशेष।

पृष्ठ संख्या 14

चूक-भूल, गलती। भसकना-भरभराकर गिरना। राहत-आराम। खींप-एक प्रकार की घास जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है।

पृष्ठ संख्या 15

लड़ियाँ-एक के बाद एक; एक ही तरह की वस्तुएँ। कुंडली-गोलाकार वस्तु। डगालों-तना या मोटी टहनियाँ। उम्दा-श्रेष्ठ। चग-एक तरह की वनस्पति जिससे रस्सी बनाई जाती है।

पृष्ठ संख्या 16

धार-पानी का प्रवाह, किसी हथियार या औजार का पैना किनारा। सजलता-सजने का भाव। उत्सव-त्योहार। भेंट-सौगात। आच प्रथा-कुंई खोदने वालों को सम्मानित करने की राजस्थानी प्रथा।

पृष्ठ संख्या 17

नेग-उपहार। चड़स-चमड़े या रबड़ का थैला।

पृष्ठ संख्या 18

चड़सी-छोटी चड़स। आवक-जावक-आना-जाना। अपरिचित-अनजान। धिरनी-घूमने वाला लोहे का यंत्र। चकरी-गोल घूमने वाला लोहे का यंत्र। ओड़ाक-आड़ करने वाला। निजी-अपना, व्यक्तिगत। सार्वजनिक-सबका साझा।

पृष्ठ संख्या 19

गोधूलि-शाम का समय। बेला-समय। गोचर-पशुओं के चरने का स्थान।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

प्रश्न 1:

राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?

उत्तर –

राजस्थान के रेतीले इलाके में पीने के पानी की बड़ी भारी समस्या है। वहाँ जमीन के नीचे खड़िया की कठोर परत को तलाशकर उसके ऊपर गहरी खुदाई की जाती है और विशेष प्रकार से चिनाई की जाती है। इस चिनाई के बाद खडिया की पट्टी पर रेत के कणों में रिस-रिसकर जल एकत्र हो जाता है। इस पेय जल आपूर्ति के साधन को कुंई कहते हैं। इसका व्यास बहुत छोटा और गहराई तीस-पैंतीस हाथ के लगभग होता है। कुओं की तुलना में इसका व्यास और गहराई बहुत ही कम है। राजस्थान में कुओं की गहराई डेढ़ सौ/दो सौ हाथ होती है और कुआँ भू-जल को पाने के लिए बनता है। उस पर उसका पानी भी खारा होता है। कुंई इससे बिलकुल अलग कम गहरी, संकरे व्यासवाली

होती है। इसका जल खड़िया की पट्टी पर रिस-रिसकर गिरनेवाला जल है। यह जल मीठा, शुद्ध और रेगिस्तान के मूल निवासियों द्वारा खोजा गया अमृत है।

प्रश्न 2:

दिनोंदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपको कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं? जानें और लिखें?

उत्तर –

मानव की दोहन नीति के कारण आज पानी की समस्या भयंकर होती जा रही है, नदियों का जल-स्तर घटता जा रहा है। शहरों व गाँवों में पेयजल की भारी कमी हो रही है। यह पाठ हमें पानी के समुचित प्रयोग को सिखाता है। अगर हम वर्षा के बूंद-बूंद पानी का उचित संग्रहण व इस्तेमाल कर सकें तो पानी की समस्या दूर हो जाए। आज हम पानी का दुरुपयोग करते हैं। कोई व्यक्ति भविष्य की चिंता नहीं करता। खेती, उद्योग, निजी उपयोग हर जगह लापरवाही है। हमें प्रकृति के उपहार वर्षा के जल का संग्रहण करना चाहिए। इसके लिए गाँवों में तालाब का पुनर्निर्माण करना चाहिए। घरों में भी कुएँ बनाकर पानी का संग्रहण किया जा सकता है। छोटे-छोटे जलाशय बनाकर भूमिगत जलस्तर को बढ़ाया जा सकता है

प्रश्न 3:

चेजारो के साथ गाँव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फ़र्क आया है पाठ के आधार पर बताइए?

उत्तर –

चेजारों को खासकर कुंई बनानेवाले चेजारों का राजस्थान के समाज में बड़ा की महत्त्वपूर्ण स्थान है। अन्नदाता से भी बड़ा अमृतदाता (पानी देनेवाला) है-चेजारा। यह गाँव-समाज के लिए मीठे पानी की कुंई बनाता है अर्थात् सबकी प्यास बुझाता है। खुदाई और चिनाई की जो विशेष प्रक्रिया वह जानता है उसकी-सी जानकारी अन्य किसी के पास नहीं है। कुंई की खुदाई के पहले दिन से ही चेजारो का विशेष ध्यान रखा जाता है। कुंई की सफलता और सजलता के बाद चेजारों की विदाई पर विशेष भोज का आयोजन कर उन्हें तरह-तरह की भेंट दी जाती है। वर्ष-भर हर तीज-त्योहार पर उनको भेंट एवं उपहार दिए जाते हैं। फ़सल आने पर खलिहानों में उनके नाम से अनाज का अलग ढेर लगाया जाता है। ये सब पारंपरिक बातें अब कम होती जा रही हैं और मजदूरी देकर काम करवाने का रिवाज़ पनपता जा रहा है।

प्रश्न 4:

निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुड़यों पर ग्राम-समाज का अकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर –

राजस्थान में खड़िया पत्थर की पट्टी पर ही कुंइयों का निर्माण किया जाता है। कुंई का निर्माण ग्राम-समाज की सार्वजनिक जमीन पर होता है, परंतु उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। सार्वजनिक जमीन पर बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है। इसी नमी से साल भर कुंइयों में पानी भरता है। नमी की मात्रा वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो जाती है। अत: उस क्षेत्र में हर नई कुंई का अर्थ है-पहले से तय नमी का बँटवारा। इस कारण निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुंइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा

रहता है। यदि यह अंकुश न हो तो लोग घर-घर कई-कई कुंई बना लेंगे और सबको पानी नहीं मिलेगा। बहुत जरूरत पड़ने पर ही समाज नई कुंई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

प्रश्न 5:

कुंई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें-पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।

उत्तर –

पालरपानी-बरसाती पानी, वर्षा का जल जिसे इकट्ठा करके रख लिया जाता है और साफ़ करके प्रयोग में लाया जाता है। पातालपानी–वह जल जो दो सौ हाथ नीचे पाताल में मिलता है। यह जल ज्यादातर खारा होता है। रेजाणीपानी-रेत के कणों की गहराई में खड़िया की पट्टी के ऊपर कुंई में रिस-रिसकर एकत्र होनेवाला पानी रेजाणीपानी कहलाता है।

अन्य हल प्रश्न

1. मूल्यपरक प्रश्न

निम्नलिखित गदयाशों को पढ़कर पूछे गए मूल्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) कुंई की गहराई में चल रहे मेहनती काम पर वहाँ की गरमी का असर पड़ेगा। गरमी कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर के साथ नीचे फेंकते हैं। इससे ऊपर की ताजी हवा नीचे फिकाती है और गहराई में जमा दमघोंटू गरम हवा ऊपर लौटती है। इतने ऊपर से फेंकी जा रही रेत के कण नीचे काम कर रहे चेलवांजी के सिर पर लग सकते हैं इसलिए वे अपने सिर पर कांसे, पीतल या अन्य किसी धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहने हुए हैं। नीचे थोड़ी खुदाई हो जाने के बाद चेलवांजी के पंजों के आसपास मलबा जमा हो गया है। ऊपर रस्सी से एक छोटा-सा डोल या बाल्टी उतारी जाती है। मिट्टी उसमें भर दी जाती है। पूरी सावधानी के साथ ऊपर खींचते समय भी बाल्टी में से कुछ रेत, कंकड़-पत्थर नीचे गिर सकते हैं। टोप इनसे भी चेलवांजी का सिर बचाएगा।

प्रश्न

1. वैश्विक तापमान वृदधि रोकने में आप अपना योगदान किस प्रकार दे सकते हैं? 2
2. चेलवांजी कौन हैं? उनके व्यक्तित्व से आप कौन-कौन से मूल्य ग्रहण कर सकते हैं? 2
3. अपना सिर बचाए रखने के लिए चेलवांजी को आप क्या-क्या उपाय बता सकते हैं? 1

उत्तर –

1. वैश्विक तापमान रोकने के लिए हम अनेक प्रकार से अपना योगदान दे सकते हैं; जैसे

   (अ) खाली जगहों में अधिकाधिक पेड़ लगाकर एवं उनकी रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करके।

   (ब) पेड़ों की अंधाधुंध कटान रोकने के लिए लोगों में जन-जागरूकता फैलाकर।

   (स) कूड़ा-करकट एवं पेड़ों की सूखी पत्तियाँ व टहनियाँ न जलाने के लिए जन-जागरूकता फैलाकर।

   (द) पानी को बर्बाद होने से बचाने के लिए लोगों को जागरूक बनाकर।

2. चेलवांजी अत्यंत परिश्रमी एवं कुशल कारीगर हैं जो कुंई बनाते हैं। इनके व्यक्तित्व से हम परिश्रमशीलता, कार्य में निपुणता, लगन, सामूहिकता, परोपकार जैसे मूल्य ग्रहण कर सकते हैं।
3. चेलवांजी को सिर बचाए रखने के लिए मैं निम्नलिखित उपाय बता सकता हूँ
   (अ) सिर पर कपड़े की पगड़ी बाँधे।
   (ब) घास या पत्तियों की मोटी परत की टोपी बनाकर सिर पर धारण करें।

(ख) कुंई एक और अर्थ में कुएँ से बिलकुल अलग है। कुआँ भूजल को पाने के लिए बनता है पर कुंई भूजल से ठीक वैसे नहीं जुड़ती जैसे कुआँ जुड़ता है। कुंई वर्षा के जल को बड़े विचित्र ढंग से समेटती है-तब भी जब वर्षा ही नहीं होती! यानी कुंई में न तो सतह पर बहने वाला पानी है, न भूजल है। यह तो 'नेति-नेति' जैसा कुछ पेचीदा मामला है। मरुभूमि में रेत का विस्तार और गहराई अथाह है। यहाँ वर्षा अधिक मात्रा में भी हो तो उसे भूमि में समा जाने में देर नहीं लगती। पर कहीं-कहीं मरुभूमि में रेत की सतह के नीचे प्राय: दस-पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की एक पट्टी चलती है। यह पट्टी जहाँ भी है, काफी लंबी-चौड़ी है पर रेत के नीचे दबी रहने के कारण ऊपर से दिखती नहीं है।

प्रश्न

1. अपने आसपास जल का प्रदूषण एवं अपव्यय रोकने के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे? 2
2. भू-जल स्तर गिरने का क्या कारण है? इसके प्रति आप लोगों को कैसे जागरूक कर सकते हैं? 2
3. वर्षा के जल का संग्रह करने के लिए आप क्या-क्या उपाय अपनाएँगे? 1

उत्तर –

1. जल का प्रदूषण एवं अपव्यय रोकने के लिए हम-
   (अ) जल स्रोतों को गंदा न करने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाएँगे।
   (ब) पानी की टोटियों, टूटी पाइपों से बहते पानी को रोकने के लिए लोगों का ध्यान आकृष्ट करेंगे।
   (स) बरसात के पानी को नालियों में बहने से रोकने का उपाय करेंगे।
   (द) फैक्ट्रियों का दूषित जल नदी-झीलों में न प्रवाहित होने देने के लिए अभियान छेड़ेंगे।
2. लगातार भू-जल का दोहन तथा कम वर्षा के कारण भू-जल स्तर गिरता जा रहा है। इसे रोकने के लिए मैं भू-जल का दोहन कम करने की सलाह दूँगा तथा वर्षा-जल को छतों पर रोककर गहरे गड्ढों में उतारने के लिए प्रेरित करूंगा। ताकि पानी रिसकर जमीन में समा सके। इसके अलावा कृषि प्रणाली में सुधार तथा कम पानी चाहने वाली फसलें उगाने के लिए जागरूकता फैलाऊँगा।
3. वर्षा के जल का संग्रह करने के लिए मैं लोगों को अधिक से अधिक तालाब बनाने और पुराने तलाबों की सफाई करने के लिए प्रेरित करूंगा। साथ ही लोगों से अनुरोध करूंगा कि वे अपनी-अपनी छतों पर टंकी बनाकर वर्षा के पानी को संग्रह करें और भाप बनकर उड़ने से पहले सुरक्षित उन्हें जमीन पर उतारें।

(ग) पर यहाँ बिखरे रहने में ही संगठन है। मरुभूमि में रेत के कण समान रूप से बिखरे रहते हैं। यहाँ परस्पर लगाव नहीं, इसलिए अलगाव भी नहीं होता। पानी गिरने पर कण थोड़े भारी हो जाते हैं पर अपनी जगह नहीं छोड़ते। इसलिए मरुभूमि में धरती पर दरारें नहीं पड़तीं। भीतर समाया वर्षा का जल भीतर ही बना रहता है। एक तरफ थोड़े नीचे चल रही पट्टी इसकी रखवाली करती है तो दूसरी तरफ ऊपर रेत के असंख्य कणों का कड़ा पहरा बैठा रहता है। इस हिस्से में बरसी बूंद-बूंद रेत में समा कर नमी में बदल जाती है। अब यहाँ कुंई बन जाए तो उसका पेट, उसकी खाली जगह चारों तरफ रेत में समाई नमी को फिर से बूंदों में बदलती है। बूंद-बूंद रिसती है और कुंई में पानी जमा होने लगता है-खारे पानी के सागर में अमृत जैसा मीठा पानी।

प्रश्न

1. पानी की बढ़ती समस्या से निपटने में यह गदयांश आपकी मदद कैसे कर सकता है? लिखिए। 2
2. धरती में नीचे चल रही पट्टी पानी की रखवाली करती है। आप भूमिगत जलस्तर को बचाए रखने के लिए
   क्या-क्या करेंगे? 2
3. यह गदयांश आपके लिए क्या संदेश छोड़ जाता है? 1

उत्तर –

1. पानी की समस्या दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। इसका भीषण रूप हमें गर्मियों में देखने को मिलता है। यह गद्यांश हमें पानी को संरक्षित करने, व्यर्थ में बर्बाद न करने तथा प्रदूषित न करने की सीख दे जल समस्या से निपटने में हमारी मदद करता है।
2. धरती में चल रही पट्टी जिस तरह भूमिगत जल की रखवाली करती है उसी प्रकार इसे बनाए रखने के लिए मैं वर्षा के जल को जमीन में उतारने का प्रयास करूंगा तथा भू-जल दोहन को रोकने के लिए लोगों को जागरूक करूगा।
3. यह गद्यांश पानी को बचाए रखने बनाए रखने तथा प्रदूषित होने से बचाने का संदेश छोड़ जाता है। संक्षेप में जल ही जीवन है।

(घ) कुंई की सफलता यानी सजलता उत्सव का अवसर बन जाती है। यों तो पहले दिन से काम करने वालों का विशेष ध्यान रखना यहाँ की परंपरा रही है, पर काम पूरा होने पर तो विशेष भोज का आयोजन होता था। चेलवांजी को विदाई के समय तरह-तरह की भेंट दी जाती थी। चेजारो के साथ गाँव का यह संबंध उसी दिन नहीं टूट जाता था। आच प्रथा से उन्हें वर्ष-भर के तीज-त्योहारों में, विवाह जैसे मंगल अवसरों पर नेग, भेंट दी जाती और फसल आने पर खलियान में उनके नाम से अनाज का एक अलग ढेर भी लगता था। अब सिर्फ मजदूरी देकर भी काम करवाने का रिवाज आ गया है।

प्रश्न

1. आपके विचार से कुंई की सफलता उत्सव का अवसर क्यों बन जाती है? लिखिए। 2
2. सजलता बनाए रखने के लिए आप लोगों को जागरूक करने के लिए क्या-क्या करेंगे? 2
3. आच प्रथा बनाए रखने के विषय में आपकी क्या राय है? इस प्रथा से आपको क्या सीख मिलती है? 1

उत्तर –

1. राजस्थान में जहाँ के लोगों को पानी की भीषण कमी का सामना करना पड़ता है वहाँ कुंई लोगों को अमृत के समान मीठा पानी देती है और 'जल ही जीवन है' को चरितार्थ करती है। इसलिए कुंई की सफलता उत्सव मनाने जैसा अवसर बन जाता है।
2. सजलता बनाए रखने के लिए हम लोगों को पानी बर्बाद न करने, अत्यधिक वृक्ष लगाने, वृक्षों को कटने से बचाने तथा वर्षा का जल बचाने के लिए लोगों को जागरूक करेंगे।
3. मेरी राय में आच प्रथा बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। यह प्रथा जहाँ सामाजिक समरसता बढ़ाने का काम करती है, वहीं चेलवांजी जैसे कलाकारों का सम्मान एवं स्वाभिमान बनाए रखती है। यह प्रथा ऐसी कलाओं को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

(ङ) निजी और सार्वजनिक संपत्ति का विभाजन करने वाली मोटी रेखा कुंई के मामले में बड़े विचित्र ढंग से मिट जाती है। हरेक की अपनी-अपनी कुंई है। उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। लेकिन कुंई जिस क्षेत्र में बनती है, वह गाँव-समाज की सार्वजनिक जमीन है। उस जगह बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहेगा और इसी नमी से साल-भर कुंइयों में पानी भरेगा। नमी की मात्रा तो वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो गई है। अब उस क्षेत्र में बनने वाली हर नई कुंई का अर्थ है, पहले से तय नमी का बँटवारा। इसलिए निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुंइयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। बहुत जरूरत पड़ने पर ही समाज नई कुंई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

प्रश्न

1. कुंइयों पर ग्राम-समाज के नियंत्रण को आप कितना सही मानते हैं और क्यों? लिखिए। 2
2. 'गोधूलि बेला में कुंइयों के आसपास की नीरवता मुखरित हो उठती हैं"-के आलोक में बताइए कि कुंइयाँ समाज में किन मूल्यों को जीवित रखे हुए हैं और कैसे? 2
3. पानी की समस्या कम करने में आप अपना योगदान कैसे दे सकते हैं? 1

उत्तर –

1. कुंइयों पर ग्राम-समाज के नियंत्रण को मैं पूर्णतया सही मानता हूँ। ग्राम-समाज द्वारा इन कुंइयों पर अपना नियंत्रण रखने से उस अमृत तुल्य जल का लोगों में समान बँटवारा हो जाता है। ऐसा न होने पर वहाँ सबलों का आधिपत्य स्थापित होगा और जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली स्थिति होगी।
2. गोधूलि बेला से पूर्व कुंइयों के आसपास नीरवता छाई रहती है किंतु इस बेला में यहाँ पानी लेने औरतें या पुरुष आ जाते हैं। कुंइयों के मुँह पर लगी घिरनियों का मधुर संगीत गूँज उठता है। लोग पानी लेते हैं और कुंइयों को अगले दिन तक के लिए बंद कर दिया जाता है। इस प्रकार ये कुंइयाँ सामाजिक समरसता, समानता सहयोग तथा पारस्परिकता जैसे मूल्यों को जीवित रखे हुई हैं।
3. पानी की समस्या को कम करने के लिए मैं जल के अपव्यय को रोककर, अधिकाधिक वृक्ष लगाकर तथा पानी को कई प्रकार से (जैसे-सब्जियाँ धोकर उसी पानी को पौधों में डालना) उपयोग कर अपना योगदान दे सकता हूँ।

II. निबधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

कुंई की निर्माण प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर –

मरुभूमि में कुंई के निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजार करते हैं। वे खुदाई व विशेष तरह की चिनाई करने में दक्ष होते हैं। कुंई बनाना एक विशिष्ट कला है। चार-पाँच हाथ के व्यास की कुंई को तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई तक उतारने वाले चेजारो कुशलता व सावधानी के साथ पूरी ऊँचाई नापते हैं। चिनाई में थोड़ी-सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी-थोड़ी खुदाई होती है, डोल से मलवा निकाला जाता है और फिर आगे की खुदाई रोककर अब तक हो चुके काम की चिनाई की जाती है ताकि मिट्टी धैसे नहीं।

बीस-पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते-जाते गर्मी बढ़ती जाती है और हवा भी कम होने लगती है। तब ऊपर से मुट्ठी-भरकर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है ताकि ताजा हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके। चेजार सिर पर काँसे, पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़-पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी-किसी स्थान पर ईट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुंई को रस्से से बाँधा जाता है। ऐसे स्थानों पर कुंई खोदने के साथ-साथ खींप नामक घास का ढेर लगाया जाता है। खुदाई शुरू होते ही तीन अंगुल मोटा रस्सा बनाया जाता है।

एक दिन में करीब दस हाथ की गहरी खुदाई होती है। इसके तल पर दीवार के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहली दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच-बीच में जरूरत होने पर चिनाई भी की जाती है। कुछ स्थानों पर पत्थर और खींप नहीं मिलते। वहाँ पर भीतर की चिनाई लकड़ी के लंबे लट्ठों से की जाती है लट्ठे अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। इस काम के लिए सबसे अच्छी लकड़ी अरणी की है, परंतु इन पेड़ों की लकड़ी न मिले तो आक तक से भी काम किया जाता है। इन पेड़ों के लट्ठे नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फैसा कर सीधे खड़े किए जाते हैं। फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है। यह बँधाई कुंडली का आकार लेती है। इसलिए इसे साँपणी कहते हैं। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही काम रुक जाता है और इस क्षण नीचे धार लग जाती है। चेजारो ऊपर आ जाते हैं कुंई बनाने का काम पूरा हो जाता है।

प्रश्न 2:

कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है? स्पष्ट करें?

उत्तर –

कुंई का मुँह छोटा रखा जाता है। इसके तीन कारण प्रमुख हैं

1. रेत में जमी नमी से पानी की बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो-तीन घड़े पानी जमा होता है। कुंई के तल पर पानी की मात्रा इतनी कम होती है कि यदि कुंई का व्यास बड़ा हो तो कम मात्रा का पानी ज्यादा फैल जाएगा। ऐसी स्थिति में उसे ऊपर निकालना संभव नहीं होगा। छोटे व्यास की कुंई में धीरे-धीरे रिस कर आ रहा पानी दो-चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है।

2. कुंई के व्यास का संबंध इन क्षेत्रों में पड़ने वाली तेज गर्मी से भी है। व्यास बड़ा हो तो कुंई के भीतर पानी ज्यादा फैल जाएगा और भाप बनकर उड़ने से रोक नहीं पाएगा।
3. कुंई को और उसके पानी को साफ रखने के लिए उसे ढककर रखना जरूरी है। छोटे मुँह को ढकना सरल होता है। कुंई पर लकड़ी के ढक्कन, खस की पट्टी की तरह घास-फूस या छोटी-छोटी टहनियों से बने ढक्कनों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 3:

'राजस्थान में जल संग्रह के लिए बनी कुंई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है।" स्पष्ट करें।

उत्तर –

यह बात बिल्कुल सही है कि राजस्थान में जल संग्रह के लिए बनी कुंई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है। मरुभूमि में चारों तरफ अथाह रेत है। वर्षा भी कम होती है। भूजल खारा होता है। ऐसी स्थिति में जल की खोज, उसे निकालना आदि सब कुछ वैज्ञानिक तरीके से हो सकता है। मरुभूमि के भीतर खड़िया की पट्टी को खोजने में भी पीढ़ियों का अनुभव काम आता है। जिस स्थान पर वर्षा का पानी एकदम न बैठे, उस स्थान पर खड़िया पट्टी पाई जाती है। कुंई के जल को पाने के लिए मरुभूमि के समाज ने खूब मंथन किया तथा अनुभवों के आधार पर पूरा शास्त्र विकसित किया। कुंई खोदने में वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाई जाती है। चेजारो के सिर पर धातु का बर्तन उसे चोट से बचाता है। ऊपर से रेत फेंकने से ताजा हवा नीचे जाती है तथा गर्म हवा बाहर निकलती है, फिर कुंई की चिनाई भी पत्थर, ईट, खींप की रस्सी या अरणी के लट्ठों से की जाती है। यह खोज आधुनिक समाज को चमत्कृत करती है।

III. लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:कुंई की खुदाई किससे की जाती है?

उत्तर –

कुंई का व्यास बहुत कम होता है। इसलिए इसकी खुदाई फावड़े या कुल्हाड़ी से नहीं की जा सकती। बसौली से इसकी खुदाई की जाती है। यह छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है जिस पर लोहे का नुकीला फल तथा लकड़ी का हत्था लगा होता है।

प्रश्न 2:

कुंई की खुदाई के समय ऊपर जमीन पर खड़े लोग क्या करते हैं?

उत्तर –

कुंई की खुदाई के समय गहराई बढ़ने के साथ-साथ गर्मी बढ़ती जाती है। उस गर्मी को कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर के साथ नीचे फेंकते हैं। इससे ऊपर की ताजी हवा नीचे की तरफ जाती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा ऊपर लौटती है। इससे चेलवांजी को गर्मी से राहत मिलती है।

प्रश्न 3:

खड़िया पत्थर की पट्टी कहाँ चलती है?

उत्तर –

मरुभूमि में रेत का विस्तार व गहराई अथाह है। यहाँ अधिक वर्षा भी भूमि में जल्दी जमा हो जाती है। कहीं-कहीं मरुभूमि में रेत की सतह के नीचे प्राय: दस-पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे

खड़िया पत्थर की एक पट्टी चलती है। यह पट्टी लंबी-चौड़ी होती है, परंतु रेत में दबी होने के कारण दिखाई नहीं देती।

प्रश्न 4:

खड़िया पत्थर की पट्टी का क्या फायदा है?

उत्तर –

खड़िया पत्थर की पट्टी वर्षा के जल को गहरे खारे भूजल तक जाकर मिलने से रोकती है। ऐसी स्थिति में उस क्षेत्र में बरसा पानी भूमि की रेतीली सतह और नीचे चल रही पथरीली पट्टी के बीच अटक कर नमी की तरह फैल जाता है।

प्रश्न 5:

खड़िया पट्टी के अलग-अलग क्या नाम हैं?

उत्तर –

खड़िया पट्टी के कई स्थानों पर अलग-अलग नाम हैं। कहीं यह चारोली है तो कहीं धाधड़ी, धड़धड़ी, कहीं पर बिट्टू रो बल्लियो के नाम से भी जानी जाती है तो कहीं इस पट्टी का नाम केवल 'खड़ी' भी है।

प्रश्न 6:

कुंई के लिए कितने रस्से की जरूरत पड़ती है?

उत्तर –

लेखक बताता है कि लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडल का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। एक हाथ की गहराई में रस्से के आठ-दस लपेटे लग जाते हैं। इसमें रस्से की कुल लंबाई डेढ़ सौ हाथ हो जाती है। यदि तीस हाथ गहरी कुंई की मिट्टी को थामने के लिए रस्सा बाँधना पड़े तो रस्से की लंबाई चार हजार हाथ के आसपास बैठती है।

प्रश्न 7:

रेजाणीपानी की क्या विशेषता है? 'रेजा' शब्द का प्रयोग किसलिए किया जाता है?

उत्तर –

रेजाणीपानी पालरपानी और पातालपानी के बीच पानी का तीसरा रूप है। यह धरातल से नीचे उतरता है, परंतु पाताल में नहीं मिलता। इस पानी को कुंई बनाकर ही प्राप्त किया जाता है। 'रेजा' शब्द का प्रयोग वर्षा की मात्रा नापने के लिए किया जाता है। यह माप धरातल में समाई वर्षा को नापता है। उदाहरण के लिए यदि मरुभूमि में वर्षा का पानी छह अंगुल रेत के भीतर समा जाए तो उस दिन की वर्षा को पाँच अंगुल रेजा कहेंगे।

प्रश्न 8:

कुंई से पानी कैसे निकाला जाता है?

उत्तर –

कुंई से पानी चड़स के द्वारा निकाला जाता है। यह मोटे कपड़े या चमड़े की बनी होती है। इसके मुँह पर लोहे का वजनी कड़ा बँधा होता है। आजकल ट्रकों की फटी ट्यूब से भी छोटी चड़सी बनने लगी है। चडस पानी से टकराता है तथा ऊपर का वजनी भाग नीचे के भाग पर गिरता है। इस तरह कम

मात्रा के पानी में भी वह ठीक तरह से डूब जाती है। भर जाने के बाद ऊपर उठते ही चड़स अपना पूरा आकार ले लेता है।

प्रश्न 9:

गहरी कुंई से पानी खींचने का क्या प्रबंध किया जाता है?

उत्तर –

गहरी कुंई से पानी खींचने के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी लगाई जाती है। यह गरेडी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है। ओड़ाक और चरखी के बिना गहरी व संकरी कुंई से पानी निकालना कठिन काम होता है। ओड़ाक और चरखी चड़सी को यहाँ-वहाँ टकराए बिना सीधे ऊपर तक लाती है। इससे वजन खींचने में भी सुविधा रहती है।

प्रश्न 10:

गोधूलि के समय कुंइयों पर कैसा वातावरण होता है?

उत्तर –

गोधूलि बेला में प्राय: पूरा गाँव कुंइयों पर आता है। उस समय-मेला सा लगता है। गाँव से सटे मैदान में तीस-चालीस कुंइयों पर एक साथ घूमती घिरनियों का स्वर गोचर से लौट रहे पशुओं की घंटियों और रंभाने की आवाज में समा जाता है। दो-तीन घड़े भर जाने पर डोल और रस्सियाँ समेट ली जाती हैं।

प्रश्न 11:

राजस्थान के रेत की विशेषता बताइए।

उत्तर –

राजस्थान में रेत के कण बारीक होते हैं। वे एक-दूसरे से चिपकते नहीं है। आमतौर पर मिट्टी के कण एक-दूसरे से चिपक जाते हैं तथा मिट्टी में दरारें पड़ जाती हैं। इन दरारों से नमी गर्मी में वाष्प बन जाती है। रेत के कण बिखरे रहते हैं। अत: उनमें दरारें नहीं पड़तीं और अंदर की नमी अंदर ही रहती है। यह नमी ही कुंइयों के लिए पानी का स्रोत बनती है।

लेखिका परिचय
बेबी हालदार

लेखिका बेबी हालदार का जन्म जम्मू कश्मीर के किसी स्थान पर हुआ, जहाँ सेना की नौकरी में उनके पिता तैनात थे। इनका जन्म संभवतया 1974 ई. में हुआ। परिवार की आर्थिक दशा कमजोर होने के कारण तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह दुगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। इस कारण उन्हें सातवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 12-13 वर्षों के बाद पति की ज्यादतियों से परेशान होकर वे तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़कर दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गई। कुछ समय बाद वे गुड़गाँव चली आई और घरेलू नौकरानी के रूप में काम कर रही हैं। इनकी एकमात्र रचना है-आलो-आँधारि। यह मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखी गई तथा बाद में इसका हिंदी अनुवाद किया गया।

पाठ का साराशी

आलो-आँधारि-लेखिका की आत्मकथा है-यह उन करोड़ों झुग्गियों की कहानी है जिसमें झाँकना भी भद्रता के तकाजे से बाहर है। यह साहित्य के उन पहरुओं के लिए चुनौती है जो साहित्य को साँचे में देखने के आदी हैं, जो समाज के कोने-अँतरे में पनपते साहित्य को हाशिए पर रखते हैं और भाषा एवं साहित्य को भी एक खास वर्ग की जागीर मानते हैं। यह एक ऐसी आपबीती है जो मूलत: बांग्ला में लिखी गई, लेकिन पहली ऐसी रचना जो छपकर बाज़ार में आने से पहले ही अनूदित रूप में हिंदी में आई। अनुवादक प्रबोध कुमार ने एक जबान को दूसरी जबान दी. पर रूह को छुआ नहीं। एक बोली की भावना दूसरी बोली में बोली, रोई, मुसकराई।

लेखिका अपने पति से अलग किराए के मकान में अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी को अपने (लेखिका) लिए काम ढूँढने के लिए कहती थी। शाम को जब वह घर वापिस आती तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वे उसे सांत्वना देती थीं। लेखिका की पहचान सुनील नामक युवक से थी। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिया और घर की सफाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका से भला-बुरा कहा। लेखिका उस घर में रोज सवेरे आती तथा दोपहर तक सारा काम खत्म करके चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी।

जिस मकान में वह रहती थी, उसका किराया अधिक था। उसने कम सुविधाओं वाला नया मकान ले लिया। यहाँ के लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर का खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी। वह मकान मालिक से काम की नयी जगह ढूँढने को कहती है। उसे बच्चों की पढ़ाई, घर के किराए व लोगों की बातों की भी चिंता थी। मालिक सज्जन थे। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती है। लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को 'तातुश' कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनका सारा परिवार लेखिका का ख्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उसे एक किताब पढ़ने के लिए दी।

तातुश ने उससे लेखकों के बारे में पूछा तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए। एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ जरूर लिखे। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज कुछ पृष्ठ लिखने लगी। यह शौक आदत में बदल गया। उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उसके साथ छेड़खानी करते थे और बेमतलब परेशान करते थे। बाथरूम न होने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी।

एक दिन लेखिका काम से घर लौटी तो देखा कि मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूँढ़ने की भी दिक्कत थी। दूसरे घरों के लोग अपना सामान इकट्ठा करके नए घर की तलाश में चले गए। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। उसे दुख था कि दो भाई नजदीक रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं करते। तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला तो उन्होंने अपने घर में कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश उसका बहुत ख्याल रखते।

बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करते। उनके सद्व्यवहार को देखकर बेबी हैरान थी। उसका बड़ा लड़का किसी के घर में काम करता था। वह उदास रहती थी। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। उस लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने कई मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे। तातुश के छोटे लड़के अर्जुन के दो मित्र वहाँ आकर रहने लगे, परंतु उनके अच्छे व्यवहार से लेखिका बढ़े काम को खुशी-खुशी करने लगी। तातुश ने सोचा कि सारा दिन काम करने के बाद बेबी थक जाती होगी। उसने उसे रोजाना शाम के समय पार्क में बच्चों को घुमा लाने के लिए कहा। इससे बच्चों का दिल बहल जाएगा। अब वह पार्क में जाने लगी।

पार्क में नए-नए लोगों से मुलाकात होती। उसकी पहचान बंगाली लड़की से हुई जो जल्दी ही वापिस चली गई। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण उसने पार्क में जाना छोड़ दिया। लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन-कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के जोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा और उसने उन्हें जेलू कहकर संबोधित किया। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहुँचे। उसने उसकी माँ के निधन के बारे में बताया। लेखिका के भाइयों को पता था, परंतु उन्होंने उसे बताया नहीं। लेखिका काफी देर तक माँ की याद करके रोती रही। बाबा ने बच्चों से माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखन को पसंद करते हैं।

शर्मिला उससे तरह-तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि अगर तातुश उससे न मिलते तो यह जीवन कहाँ मिलता। लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती थी कि अपनों से बिछुड़कर कैसे जी पाएगी, परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया जब लेखिका की लेखन-कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का

शीर्षक था- 'आलो-आँधारि" बेबी हालदार। लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया। उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 21

स्वामी-पति' चुक-चुक-अफसोस जताने का भाव। अनसुनी-बिना सुने हुए।

पृष्ठ संख्या 22

फौरन-तुरंत। गेट-दरवाजा। विधवा-वह महिला जिसका पति मर गया हो।

पृष्ठ संख्या 23

राजी-सहमत। बकते-बकते-गालियाँ देते हुए। आश्चर्य-हैरान। ढेर-काफी। बाबा-पिता। सुयोग-अच्छा अवसर। चेष्टा-प्रयास। रोज-प्रतिदिन।

पृष्ठ संख्या 24

दादा-बड़ा भाई। भाड़ा-किराया। रेडी-तैयार। गुजारा-निर्वाह। हठात्-हठपूर्वक अचानक। माया-दया।

पृष्ठ संख्या 25

दरकार-जरूरत। चेहरा खिल उठना-प्रसन्न होना। बाध्य-मजबूर। तीसरे पहर-दोपहर और शाम के बीच का समय। चारा-रास्ता। रव्याल-ध्यान।

पृष्ठ संख्या 26

बंधु-मित्र। तातुश-पिता के समान। जबान-आवाज।

पृष्ठ संख्या 27

डस्टिग-झाड़-पोंछ करना। मन मसोसना-मन की बात मन में रखना।

पृष्ठ संख्या 28

आहिस्ता-धीमे से। विश्वास-यकीन। आमार मेये बेला-पुस्तक का नाम। तसलीमा नसरिन-बांग्लादेश की प्रसिद्ध लेखिका।

पृष्ठ संख्या 29

पेज-पृष्ठ। दिक्कत-कठिनाई। टेबिल-मेज। ड्रार-मेज के अंदर वस्तु रखने की बनी जगह। ऊँह-टालने का भाव।

पृष्ठ संख्या 30

चैन-आराम। बेमतलब-बिना अर्थ की। बाँदी-दासी। नागा करना-अंतराल या छुट्टी करना। हाट-स्थानीय बाजार। पाड़ा-मोहल्ला।

पृष्ठ संख्या 31

चेष्टा-प्रयास। ताने मारना-व्यंग्यात्मक बातें। फर्क-अंतर। शरम-लज्जा।

पृष्ठ संख्या 32

सिर पकड़कर बैठना-अत्यधिक परेशान होना। सहेजकर-सँभालकर। मोह-प्रेम।

पृष्ठ संख्या 33

लगाव-प्यार। बुलडोजर-तोड़-फोड़ करने वाली मशीन। राजी-सहमत।

पृष्ठ संख्या 34

नाश्ता-सुबह का हल्का भोजन। तबीयत-सेहत।

पृष्ठ संख्या 36

मास-महीना। वयस-उम्र। सिर्फ-केवल।

पृष्ठ संख्या 37

गैरकानूनी-कानून के विरुद्ध। खटना-काम में लगातार लगे रहना। भाग-दौड़-ज्यादा काम करना।

पृष्ठ संख्या 38

उत्साह-जोश। दोष-भूल। हुनर-कला। स्नेह-प्रेम। महीना-मासिक वेतन।

पृष्ठ संख्या 39

फट-से-तत्काल। चौपट-बेकार।

पृष्ठ संख्या 40

पार्क-बगीचा। आशय-मतलब। खातिर-के लिए।

पृष्ठ संख्या 41

दीदीमा-नानी।

पृष्ठ संख्या 42

फोटो कॉपी-नकल। आवाक्-हैरानी से चुप रह जाना। उत्कृष्ट-बहुत अच्छा। अभिधान-उपाधि, शब्दकोश।

पृष्ठ संख्या 43

क्षमता-योग्यता। माथा-पच्ची-दिमाग पर जोर देना। व्यवस्था-प्रबंध। कांड-घटना। 蛾...

पृष्ठ संख्या 44

जेदू-पिता के बड़े भाई। मरजी-इच्छा।

पृष्ठ संख्या 45

खड-भाग। खबर-समाचार।

पृष्ठ संख्या 47

स्मरणीय-याद आने योग्य। असाधारण-जो सामान्य न हो। दुर्दशा-बुरी हालत। आर्थिक-धन संबंधी।

पृष्ठ संख्या 48

खाते-कमाते-मेहनत के साथ निर्वाह करना। रुद्ध-रुका हुआ। दादा-बड़ा भाई। भर्ती-दाखिल। बऊदी-भाभी। भाड़ा-किराया।

पृष्ठ संख्या 49

ख्याल-ध्यान। अंतिम-आखिरी। भेंट-मुलाकात। क्रिया-कर्म-मृत्यु के बाद तौर-तरीके।

पृष्ठ संख्या 50

दी-दीदी। **बहलना**-बदलना। **राय**-विचार, मत। **मल्लेश्वरी**-भारोत्तोलना की प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी। **अंत**-समाप्त। **अभिज्ञता**-ज्ञान।

पृष्ठ संख्या 51

बांधवी-सहेली। **आहलादित**-आनंदित। **आयना**-दर्पण।

पृष्ठ संख्या 52

खुसर-फुसर-कानाफूसी करना। **तुच्छ**-छोटी।

पृष्ठ संख्या 53

मगन-मस्त। **भटकना**-बेकार में इधर-उधर घूमना। **उकताना**-परेशान होना।

पृष्ठ संख्या 54

हिलोरें मारना-अत्यधिक प्रसन्न होना।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

प्रश्न 1:

पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर –

पाठ के निम्नलिखित अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है-

1. घर में अकेले रहते देख आस-पास के सभी लोग पूछते, तुम यहाँ अकेली रहती हो? तुम्हारा स्वामी कहाँ रहता है? तुम कितने दिनों से यहाँ हो? तुम्हारा स्वामी वहाँ क्या करता है? तुम क्या यहाँ अकेली रह सकोगी। तुम्हारा स्वामी क्यों नहीं आता? ऐसी बातें सुन मेरी किसी के पास खड़े होने की इच्छा नहीं होती, किसी से बात करने की इच्छा नहीं होती।
2. उसके यहाँ से लौटने में कभी देर हो जाती तो सभी मुझे ऐसे देखते जैसे में कोई अपराध कर आ रही हूँ। बाजार-हाट करने भी जाना होता तो वह बूढ़े मकान मालिक की स्त्री, कहती, “कहाँ जाती है रोज-रोज? तेरा स्वामी है नहीं, तू तो अकेली ही है। तुझे इतना घूमने-घामने की क्या दरकार?” मैं सोचती, मेरा स्वामी मेरे साथ नहीं है तो क्या मैं कहीं घूम-फिर भी नहीं सकती और फिर उसका साथ में रहना भी तो न रहने जैसा है। उसके साथ रहकर भी क्या मुझे शांति मिली। उसके होते हुए भी पाड़े के लोगों की क्या-क्या बातें मैंने नहीं सुनीं।
3. जब मैं बच्चों के साथ कहीं जा रही होती तो लोग तरह-तरह की बातें करते, कितनी सीटियाँ मारते, कितने ताने मारते।
4. आसपास के लोग एक-दूसरे को बताते कि इस लड़की का स्वामी यहाँ नहीं रहता है, वह अकेली ही भाड़े के घर में बच्चों के साथ रहती है। दूसरे लोग यह सुनकर मुझसे छेड़खानी करना चाहते। वे मुझसे बातें करने की चेष्टा करते और पानी पीने के बहाने मेरे घर आ जाते। मैं अपने लड़के से उन्हें पानी पिलाने को कह कोई बहाना बना बाहर निकल आती।

5. मैंने सोचा यह क्या इतना सहज है। घर में कोई मर्द नहीं है तो क्या इसी से मुझे हर किसी की कोई भी बात माननी होगी। वर्तमान समय में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया है। वे अपने पैरों पर खड़ी हैं तथा अनेक तरह के कार्य कर रही हैं। महानगरों में तो अविवाहित युवतियाँ भी अकेली रहकर अपना जीवन-यापन करती हैं। कुछ मनचले अवश्य उन्हें तंग करने की कोशिश करते हैं, परंतु आम व्यक्ति का व्यवहार अपमानजनक नहीं होता।

प्रश्न 2:

अपने परिवार से लेकर तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर –

अपने परिवार से लेकर तातुश के घर तक के सफर में बेबी ने रिश्तों की सच्चाई जानी। उसने जाना कि रिश्तों का संबंध दिल से होता है, अन्यथा रिश्ते बेगाने होते हैं। पति का घर छोड़कर आने के बाद वह अकेली व असहाय थी। वह अकेले ही बच्चों के साथ किराये के मकान में रहने लगी। वह खुद ही काम ढूँढ़ने जाती। हालाँकि उसके समीप ही भाई व रिश्तेदार रहते थे, परंतु किसी ने उसकी सहायता नहीं की। वे उससे मिलने तक नहीं आए। उसे अपनी माँ की मृत्यु का समाचार तक छह महीन बाद अपने पिता से मिला। दूसरी तरफ, बाहरी व्यक्तियों ने उसकी सहायता की। सुनील नामक युवक ने उसे काम दिलवाया, तातुश ने उसे बेटी के समान माना तथा उसकी हर तरीके से मदद की। उनके प्रोत्साहन से वह लेखिका बन पाई। मकान टूटने के बाद भोला दा उसके साथ रात भर खुले आसमान में बैठा रहा। इस प्रकार दिल में स्नेह हो तो रिश्ते बन जाते हैं।

प्रश्न 3:

इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है। घरेलू नौकरों को और । किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? इस पर विचार करिए।

उत्तर –

इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की निम्नलिखित जटिलताओं का पता चलता है-

1. घरेलू नौकरों को आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती। उनकी नौकरी कभी भी खत्म हो सकती है।
2. उन्हें गदे व सस्ते मकानों में रहना पड़ता है, क्योंकि ये अधिक किराया नहीं दे पाते।
3. इन लोगों का शारीरिक शोषण भी किया जाता है। नौकरानियों को अकसर शोषण का शिकार होना पड़ता है।
4. इन लोगों के साथ मकान मालिक अशिष्ट व्यवहार करते हैं।
5. बेबी की तरह इन्हें सुबह से देर रात तक काम करना पड़ता है।

अन्य समस्याएँ

1. अपूर्ण भोजन व दवाइयों के अभाव में ये अकसर बीमार रहते हैं।
2. धन के अभाव में इनके बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं। उन्हें कम उम्र में ही दूसरों के यहाँ काम करना पड़ता है।
3. ये अकसर आर्थिक संकट में फँसे रहते हैं।

प्रश्न 4:

'आलो-आँधारि' रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मददों को समेटे है। किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर –

'आलो-आँधारि' एक ऐसी रचना है जो बेबी हालदार की आत्मकथा होने के साथ-साथ एक अनदेखी दुनिया के दर्शन करवाती है। यह ऐसी दुनिया है जो हमारे पड़ोस में है, फिर भी हम इसमें झाँकना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। दो प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

(क) परित्यक्ता स्त्री की स्थिति-इस रचना में बेबी एक परित्यक्ता स्त्री है। वह किराए के मकान में रहकर घरों में नौकरानी का काम करके गुजारा कर रही है। समाज का व्यवहार उसके प्रति कटु है। स्वयं औरतें ही उस पर ताना मारती हैं। हर व्यक्ति उस पर अपना अधिकार समझता है तथा उसका शोषण करना चाहता है। उसका मानसिक, शारीरिक व आर्थिक शोषण किया जाता है। उस पर तरह-तरह की वर्जनाएँ थोपी जाती हैं तथा सहायता के नाम पर उसका मजाक उड़ाया जाता है।

(ख) गंदी बस्तियाँ-इस रचना में गंदी बस्तियों के बारे में बताया गया है। घरेलू नौकर तंग बस्तियों में रहते हैं। वहाँ शोचालय की सुविधा भी नहीं होती। महिलाओं को इस मामले में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। नालियों. कूड़ेदानों आदि के निकट बसी इन बस्तियों में अनेक बीमारियाँ फैलने का भय रहता है। सरकार भी अपनी आँखें मूंदे रहती है।

प्रश्न 5:

तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो-जेदू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

उत्तर –

जेलू का यह कथन यह बताता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही विकट क्यों न हों, मनुष्य इच्छाशक्ति से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। आशापूर्णा देवी भी आम गृहणी थीं। वे सारा दिन घर के काम-काज में व्यस्त रहती थीं, परंतु वे लेखन में रुचि रखती थीं। परिवार के सो जाने के बाद वे लिखती थीं और लिखते-लिखते विश्व प्रसिद्ध कथाकार बन गई। बेबी की स्थिति उनसे भी खराब है। वह आर्थिक संकट से ग्रस्त है, फिर भी वह निरंतर लिखकर अपनी शैली को सुधार सकती है। वह थोड़ा समय निकालकर लिख सकती है। इस तरह वह भी प्रसिद्ध लेखिका बन सकती है।

प्रश्न 6:

बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।

उत्तर –

तातुश के संपर्क में आने से पहले बेबी कई घरों में काम कर चुकी थी। उसका जीवन कष्टों से भरा था। तातुश के परिवार में आने के बाद उसे आवास, वित्त, भोजन आदि समस्याओं से राहत मिली। यहाँ उसके बच्चों का पालन-पोषण ठीक ढंग से होने लगा। यदि उसकी जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन अंधकारमय होता। उसे गंदी बस्ती में रहने के लिए विवश होना पड़ता। उसके बच्चों को शिक्षा शायद नसीब ही नहीं होती, क्योंकि उसके पास आय के स्रोत सीमित होते। बच्चे या तो आवारा बन जाते या बाल मजदूर बनते। अकेली औरत होने के कारण उसे समाज

के लोगों के मात्र अश्लील व्यवहार का ही सामना नहीं करना पड़ता, अपितु उसे अवारा लोगों के शोषण का शिकार भी होना पड़ सकता था। बड़ा लड़का तो शायद ही उसे मिल पाता। उसके पिता भी उसे याद नहीं करते और माँ की मृत्यु का समाचार भी नहीं मिलता। इस तरह बेबी का जीवन चुनौतीपूर्ण तथा अंधकारमय होता।

अन्य हल प्रश्न

I. मूल्यपरक प्रश्न

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए मूल्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) मेम साहब की कोठी के सामने की एक कोठी में सुनील नाम का तीस-बत्तीस साल का एक युवक मोटर चलाता था। वह मुझे पहचानता था इसलिए मैंने उससे भी अपने काम के बारे में कह रखा था। एक दिन रास्ते में मुझे देखकर उसने पूछा, तुम क्या अब उस कोठी में काम नहीं करतीं? मैंने कहा, मुझे उस कोठी को छोड़े डेढ़ सप्ताह हो गए। अभी तक मुझे कोई काम नहीं मिला है। वह बोला, ठीक है, मुझे काम के बारे में कुछ पता चलेगा तो बताऊँगा। दो-एक दिन बाद दोपहर को बच्चों को खिला-पिलाकर मैं उनके साथ सो रही थी कि सुनील आया और बोला, क्यों, काम मिला? मैंने कहा, नहीं, अभी तक कुछ नहीं मिला। वह बोला, तो चलो मेरे साथ। मैंने पूछा, कहाँ? तो वह बोला, काम करना है तो मैं तुम्हें लिए चलता हूँ, बाकी बातें तुम स्वयं वहाँ कर लेना।

प्रश्न

1. सुनील के व्यवहार में कौन-कौन से मूल्य उभरकर सामने आते हैं, लिखिए? 1
2. आप सुनील की जगह होते और कहानी की अन्य परिस्थितियाँ यथावत होतीं तो आप क्या करते? 2
3. इस गदयांश में किस सामाजिक समस्या की झलक मिलती है? इसे दूर करने के लिए कोई दो उपाय सुझाइए। 2

उत्तर –

1. बेरोजगार लेखिका से सुनील से काम के लिए कह रखा था, जिसे उसने पूरा भी किया। इस प्रकार उसके व्यवहार में परोपकार, सहानुभूति, सदयता तथा पर दुखकातरता जैसे मूल्य उभरकर सामने आते हैं।
2. यदि में सुनील की जगह होता तो लेखिका को हर प्रकार से मदद करने का आश्वासन देता। उसके लिए काम तलाशने का काम पहली प्राथमिकता के आधार पर करता। काम न मिलने तक मैं लेखिका के समक्ष आर्थिक मदद का भी प्रस्ताव रखता। काम मिलने पर उसकी पहचान की जिम्मेदारी मैं स्वयं लेता।
3. इस गद्यांश में बेरोजगारी की समस्या की झलक मिलती है। इसे दूर करने के लिए मैं अनपढ़ों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करता तथा लोगों की शिल्प प्रशिक्षण लेने की प्रेरणा देता।

(ख) मैं इसी तरह रोज सबेरे आती और दोपहर तक सारा काम खत्म कर चली जाती। बीच-बीच में साहब मेरे बारे में इधर-उधर की बातें पूछ लेते। एक दिन उन्होंने मेरे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछा तो मैंने कहा, 'मैं तो पढ़ाना चाहती हूँ लेकिन वैसा सुयोग कहाँ है, फिर भी चेष्टा तो करूंगी ही बच्चों के लिए। उन्होंने एक दिन बुलाकर फिर कहा, तुम अपने लड़के और लड़की को लेकर आना। यहाँ एक छोटा-सा स्कूल है। मैं वहाँ बोल दूंगा। तुम रोज बच्चों को वहाँ छोड़ देना और

घर जाते समय अपने साथ ले जाना। मैं अब बच्चों को साथ लेकर आने लगी। उन्हें स्कूल में छोड़, घर आकर अपने काम में लग जाती। स्कूल से बच्चे जब मेरे पास आते तो साहब कुछ-न-कुछ उन्हें खाने को देते।

प्रश्न

1. शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा की ओर मोड़ने के लिए आप क्या क्या करना चाहेंगे?
2. 'आज बच्चों का अनपढ़ रहना कल के समाज पर बोझ बन जाएगा।" इस कथन से आप कितना सहमत हैं और क्यों?
3. आप 'साहब' के व्यक्तित्व के किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

उत्तर –

1. शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा की ओर मोड़ने के लिए मैं-

   (क) उनके माता-पिता की शिक्षा का महत्व समझाऊँगा।

   (ख) सायंकाल में ऐसे बच्चों को एकत्रकर पढ़ाऊँगा।

   (ग) शिक्षा से वंचित इन बच्चों को अपनी पुरानी कापियाँ, किताबें तथा अपने बचाए जेब खर्च से पेंसिल, कापियाँ तथा स्लेट आदि दूँगा।

   (घ) समाज के धनाढ्य लोगों से ऐसे बच्चों की मदद के लिए आगे आने को कहूँगा।
2. 'आज बच्चों का अनपढ़ रहना कल के समाज पर बोझ बन जाएगा।" इस कथन से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। अनपढ़ बच्चे अपने जीवन में कोई विशेष प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर पाएँगे। ऐसे में वे आजीवन मजदूर बनकर रह जाएँगे। उचित कौशल के अभाव में शायद वे अपराध की ओर कदम बढ़ा दें और समाज-देश के लिए अपना योगदान न दे सकें।
3. साहब' के व्यक्तित्व से परोपकार, सदयता, दूसरों के जीवन में उजाला फैलाने जैसे मूल्यों को अपनाना चाहूगा।

(ग) मैं सवेरे उठकर बच्चों को खिला-पिलाकर रेडी करती और घर में ताला लगाकर उनके साथ निकल पड़ती। मैं एक ही कोठी में काम करते कैसे अपना काम चलाऊँगी और कैसे घर का किराया दूँगी, इस बात को लेकर लोग आपस में खूब बातें करते। मैं स्वयं भी चिंतित थी कि मुझे और दो-एक कोठियों में काम नहीं मिला तो इतने पैसों में गुजारा कैसे होगा। मैं रोज साहब से पूछती कि किसी ने उन्हें काम के बारे में कुछ बताया क्या। वह मेरा प्रश्न और कोई बात कर टाल देते लेकिन उन्हें देखकर मुझे लगता जैसे वह नहीं चाहते कि मैं कहीं और भी काम करूं। शायद वह सोचते रहे हों कि मुझसे वह सब होगा नहीं और होगा भी तो उससे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई ठीक से नहीं चल पाएगी। शायद इसीलिए उन्होंने एक दिन हठात् मुझसे पूछा, बेबी, महीने में तुम्हारा कितना खर्चा हो जाता है? शरम से मैं कुछ नहीं बोली और उन्होंने भी दुबारा नहीं पूछा।

प्रश्न

1. 'साहब' की जगह आप होते तो लेखिका को अन्यत्र काम करने के प्रोत्साहित करते या नहीं और क्यों? 2
2. साहब का व्यक्तित्व समाज के लिए आप कितना प्रेरक मानते हैं और क्यों? 2

3. आप लेखिका की परिस्थितियों में रह रहे होते तो बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के प्रति क्या दृष्टिकोण रखते? और क्यों? 1

उत्तर –

1. यदि मैं 'साहब' की जगह होता तो लेखिका को अन्यत्र काम करने के लिए प्रोत्साहित न करता, क्योंकि समाज में अकेली रह रही औरत के प्रति कुछ लोगों का दृष्टिकोण अच्छा नहीं होता। ऐसे लोग इस तरह की औरतों से अनुचित फायदा का अवसर खोजते रहते हैं।
2. मैं 'साहब' के व्यक्तित्व को समाज के लिए प्रेरणादायक मानता हूँ. क्योंकि उन्होंने अपने घर में काम करने वाली को भरपूर सम्मान दिया और उसकी मदद की। उन्होंने अपने अनुभव के कारण ही लेखिका को अन्यत्र काम करने से मना ही नहीं किया वरन् लेखिका के सारे खर्चों का भी ध्यान रखते थे।
3. यदि मैं लेखिका जैसी परिस्थितियों में जी रहा होता मैं भी अपने बच्चों की शिक्षा का समुचित प्रबंध करने के लिए चिंतित रहता, क्योंकि अनपढ़ बच्चे बाद में समाज पर बोझ साबित होते हैं।

(घ) देखो बेबी, तुम समझो कि मैं तुम्हारा बाप, भाई, माँ, बंधु, सब कुछ हूँ। यह कभी मत सोचना कि यहाँ तुम्हारा कोई नहीं है। तुम अपनी सारी बातें मुझे साफ-साफ बता सकती हो, मुझे बिलकुल भी बुरा नहीं लगेगा। थोड़ा रुककर उन्होंने फिर कहा, देखो, मेरे बच्चे मुझे तातुश कहते हैं, तुम भी मुझे वही कहकर बुला सकती हो। उस दिन से मैं उन्हें तातुश कहने लगी। मैं तातुश कहकर उन्हें बुलाती तो वह बहुत खुश होते और कहते, तुम मेरी लड़की जैसी हो। इस घर की लड़की हो। कभी यह मत सोचना कि तुम परायी हो। वहाँ कोई भी मेरे साथ पराये जैसा व्यवहार नहीं करता। तातुश के तीन लड़के थे। उस समय तक मैंने एक ही को देखा था और वह उनका सबसे छोटा लड़का था। उसके मुँह में जैसे जबान ही नहीं थी।

प्रश्न

1. तातुश का व्यवहार वर्तमान समय में और भी प्रासंगिक हो जाता है। इस बारे में आपकी क्या राय है? 2
2. यदि आप तातुश की जगह होते तथा कहानी की अन्य परिस्थितियाँ वही होती तो आप क्या करते? 2
3. तातुश के व्यक्तित्व से आप किन-किन गुणों को अपनाना चाहेंगे? 1

उत्तर –

1. वर्तमान समय में जब विपरीत परिस्थितियों का सामना कर रही स्त्रियों के प्रति समाज के कुछ लोगों की सोच स्वस्थ नहीं है, ऐसे में तातुश ने लेखिका को अपने परिवार की सदस्या की तरह रखा और उसकी हर प्रकार से मदद करते हुए सम्मान दिया। उनका यह व्यवहार आज और भी प्रासंगिक हो जाता है।
2. यदि मैं तातुश की जगह होता तो तातुश की तरह ही नारी जाति का सम्मान करता तथा लेखिका को भरपूर मदद करता। मैं लेखिका की भावनाओं का सम्मान करता और उसके बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करता।

3. मैं तातुश के व्यक्तित्व से नारी जाति का सम्मान करने की भावना, परोपकार, सदयता तथा सहानुभूति जैसे गुणों को अपनाना चाहूँगा।

(ड) किताब पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता। कुछ दिनों बाद तातुश ने एक दिन पूछा, तुम जो किताब ले गई थीं उसे ठीक से पढ़ तो रही हो? मैंने हाँ कहा तो वह बोले, मैं तुम्हें एक चीज दे रहा हूँ, तुम उसका इस्तेमाल करना। समझना कि वह भी मेरा ही एक काम है। मैंने पूछा, कौन-सी चीज? तातुश ने अपनी लिखने की टेबिल के ड्रार से एक पेन और कॉपी निकाली और बोले, इस कॉपी में तुम लिखना। लिखने को तुम अपनी जीवन-कहानी भी लिख सकती हो। होश सँभालने के बाद से अब तक की जितनी भी बातें तुम्हें याद आएँ सब इस कॉपी में रोज थोड़ा-थोड़ा लिखना। पेन और कॉपी हाथ में लिए मैं सोचने लगी कि इसका तो कोई ठिकाना नहीं कि जो लिखूंगी वह कितना गलत या सही होगा। तातुस ने पूछा, क्यों, क्या हुआ? क्या सोचने लगी? मैं चौंक पड़ी। फिर बोली, सोच रही थी कि लिख सकूंगी या नहीं। वह बोले, जरूर लिख सकोगी। लिख क्यों नहीं सकोगी! जैसा बने वैसा लिखना।

प्रश्न

1. तातुश दवारा लेखिका को पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करने को आप कितना उचित मानते हैं और क्यों?
2. आपके आसपास भी ऐसे बच्चे होंगे जिनकी पढ़ाई-लिखाई छूट चुकी होगी, ऐसे बच्चों की पढ़ाई के लिए आप क्या-क्या मदद कर सकते हैं?
3. तातुश के व्यक्तित्व से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर –

1. तातुश द्वारा लेखिका को पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करने को मै पूर्णतया उचित मानता हूँ। तातुश ने अपने घर में काम करने वाली महिला की लेखन अभिरुचि को पहचाना और प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप उसका लेखिका वाला रूप समाज के सम्मुख आ सका।
2. हमारे आसपास भी अनेक ऐसे बच्चे हैं जिनकी पढ़ाई प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण छूट चुकी है। ऐसे बच्चों की मैं हर संभव मदद करूंगा और उन्हें पुन: पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूंगा और शिक्षा का महत्व समझाऊँगा। उन्हें शाम को कुछ समय पढ़ाऊँगा और निकटवर्ती पाठशाला में प्रवेश दिलाऊँगा।
3. तातुश के व्यक्तित्व से हमें दूसरों की मदद करने की प्रेरणा, शिक्षा के प्रति बच्चों को जागरूक बनाने, सहृदय बनने, दूसरों के जीवन में शिक्षा की रोशनी फैलाने की प्रेरणा मिलती है।

(च) जब मेरे स्वामी के सामने वहाँ के लोगों के मुँह बंद नहीं होते थे तो यहाँ तो बच्चों को लेकर मैं अकेली थी! यहाँ तो वैसी बातें और भी सुननी पड़तीं। मैं काम पर आती-जाती तो आस-पास के लोग एक-दूसरे को बताते कि इस लड़की का स्वामी यहाँ नहीं रहता है, यह अकेली ही भाड़े के घर में बच्चों के साथ रहती है। दूसरे लोग यह सुनकर मुझसे छेड़खानी करना चाहते। वे मुझसे बातें करने की चेष्टा करते और पानी पीने के बहाने मेरे घर आ जाते। मैं अपने लड़के से उन्हें पानी पिलाने को कह कोई बहाना बना बाहर निकल आती। इसी तरह मैं जब बच्चों के साथ कहीं जा रही होती तो लोग जबरदस्ती न जाने कितनी तरह की बातें करते, कितनी सीटियाँ मारते, कितने ताने मारते! लेकिन मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं उनसे बचकर निकल जाती। तातुश के यहाँ जब पहुँचती

और वह बताते कि उनके किसी बंधु ने उनसे फिर मेरे पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछा है तो खुशी में मैं वह सब भूल जाती जो रास्ते में मेरे साथ घटता।

प्रश्न

1. आप समाज में अकेली रहने वाली महिलाओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण तथा सम्मान की भावना प्रगाढ़ करने के लिए युवाओं को क्या सुझाव देंगे? 2
2. यदि आप तातुश की जगह होते और कहानी की अन्य परिस्थितियाँ वही होती तो आप क्या करते? 2
3. आपके विचार से तातुश लेखिका को पढ़ने-लिखने के लिए इतना प्रोत्साहित क्यों करते थे? 1

उत्तर –

1. समाज में अकेली रहने वाली महिलाओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण और सम्मान की भावना प्रगाढ़ करने के लिए मैं युवाओं से संयमित एवं मर्यादित व्यवहार करने का अनुरोध करूंगा। उन्हें नारी की महत्ता से भी अवगत कराऊँगा तथा संस्कार एवं नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराऊँगा।
2. यदि मैं तातुश की जगह होता तो लेखिका को जिस तरह तातुश ने प्रोत्साहित करके उसके अंदर छिपी प्रतिभा को निखारा उसी तरह मैं भी लेखिका को पढ़ने-लिखने का पर्याप्त अवसर देता। उसे काम करने वाली महिला मात्र न मानकर उसके घर की सदस्य जैसा व्यवहार करता।
3. मेरे विचार से तातुश को जिंदगी का अनुभव था। वे जानते थे कि शिक्षा से व्यक्ति का जीवन, रहन-सहन बदल जाता है तथा व्यक्ति अधिक सभ्य एवं समाजोपयोगी नागरिक बनता है। इसीलिए वे लेखिका को इतना पढ़ने-लिखने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

II. निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'आलो-आँधारि' पाठ के आधार पर तातुश का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर –

तातुश सज्जन प्रवृत्ति के अधेड़ अवस्था के शिक्षक हैं, वे दयालु हैं तथा करुण भाव से युक्त हैं। जब बेबी उनके घर काम करने आई तो उन्होंने उसके काम की प्रशंसा की। वे उसे अपनी बेटी के समान समझते थे। वे उसे कदम-कदम पर प्रोत्साहित करते थे। बेबी की पढ़ने के प्रति रुचि देखकर वे कॉपी व पेन देते हैं तथा उसे लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उसके बच्चों को स्कूल में भेजने की व्यवस्था करते हैं। उसका घर टूट जाने के बाद उसे अपने घर में जगह देते हैं। वे उसके बड़े लड़के को ढूँढकर उससे मिलवाते हैं तथा बाद में अच्छी जगह पर उसे काम दिलवाते हैं। जब कभी बेबी के बच्चे बीमार होते हैं तो उनका इलाज भी करवाते थे। तातुश बेबी के लेखन को अपने मित्रों के पास भेजते थे। वे कोई ऐसी बात नहीं करते थे जिससे बेबी को ठेस लगे। ऐसे चरित्र समाज में दुर्लभ होते हैं तथा आदर्श रूप प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न 2:

बेबी के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –

'आलो-आँधारि' रचना की प्रमुख पात्र बेबी है। यह उसकी आत्मकथा है उसके चरित्र की

निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(क) परित्यक्ता-बेबी की शादी अपने से दुगुनी उम्र के व्यक्ति के साथ हुई। उसे ससुराल में सदा प्रताड़ना मिली। वह किसी दूसरी महिला के साथ रहने लगा था। अंत में वह अपने पति को छोड़कर अलग रहने लगी और घरेलू कामकाज करके निर्वाह करने लगी। उसे अनेक तरह की सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पडा।

(ख) साहसी व परिश्रमी-बेबी पति के अत्याचारों को सहन न करके उससे अलग किराए के मकान में रहने लगी। वह लोगों के घरों में काम करके गुजारा करने लगी। वह दिन-रात काम करती थी। तातुश के घर का अत्यधिक काम वह शीघ्रता से कर लेती थी। वह हर स्थिति का सामना करती है। घर तोड़े जाने के बाद वह रात खुले आसमान के नीचे गुजारती है।

(ग) अध्ययनशील-बेबी को पढ़ने-लिखने का चाव था। तातुश की पुस्तकों की अलमारियाँ साफ करते समय वह उन पुस्तकों को खोलकर देखती थी। तातुश ने उसे 'आमार मेये बेला' पुस्तक पढ़ने के लिए दी तथा बाद में कॉपी व पेन भी लिखने के लिए दिया। तातुश की प्रेरणा से उसने लिखना शुरू किया।

(घ) स्नेहमयी माता-बेबी अपने बच्चों के भविष्य की बहुत चिंता करती है। वह उन्हें पढ़ाना-लिखाना चाहती है। तातुश की मदद से वह दो बच्चों को स्कूल भेजती है। वह बड़े लड़के के लिए भी व्याकुल रहती है जो किसी के घर काम करता है। तातुश उसे घर लाते हैं। निष्कर्षत: बेबी साहसी, परिश्रमी, अध्ययनशील व स्नेहमयी चरित्र की है।

प्रश्न 3:

सजने-सँवरने के बारे में बेबी की क्या राय थी?

उत्तर –

कोलकाता की शर्मिला दीदी ने लेखिका को अपने घर आने का निमंत्रण दिया तथा सजने-सँवरने आदि की बात कही। सजने-सँवरने की बात पर लेखिका को हैरानी होती है। बचपन से ही उसे सजने का शौक नहीं था। उसे ये काम फालतू के लगते थे। उसने देखा कि लड़कियाँ व बहुएँ घंटों शीशे के सामने खड़ी होकर श्रृंगार करती हैं। वे नयी साड़ी पहनती हैं ताकि पति उनकी तारीफ करे। वे दूसरों से प्रशंसा भी चाहती हैं। कई प्रकार के गहने पहनकर वे घूमने जाती हैं। लेखिका स्वयं को औरों से अलग मानती है। वह तो शादी के बाद भी इन चीजों से दूर रही। उसने सीधी तरह कंघी करके माँग से सिंदूर लगाना ही सीखा था।

III. लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

शर्मिला दी और बेबी के संबंधों के बारे में बताइए।

उत्तर –

शर्मिला दी कोलकाता में रहती थीं। वह बेबी को हिंदी में चिट्ठयाँ लिखती थीं। उनकी चिट्ठयों में अलग तरह की ही बात होती थी। बेबी सोचती थी कि वे भी तो घर के काम के लिए कोई लड़की रखी होंगी। क्या वह उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करती होंगी जैसा मेरे साथ। उसे तो वह किसी के घर काम करने वाली लड़की की तरह नहीं देखतीं और चिट्ठयाँ भी अपनी बाँधवी की तरह लिखती हैं। तातुश उसकी चिट्ठयों को पढ़कर सुनाते तो वह अपनी टूटी-फूटी बांग्ला में उन्हें लिख लेती थी। उदास होने पर वह इन्हें पढ़ती तथा प्रसन्न होती थी।

प्रश्न 2:

'बेबी के लिए तातुश के हृदय में माया है।'-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

तातुश ने बेबी को काम पर रखा। वे उसके बच्चों के बारे में पूछते हैं तथा उन्हें स्कूल में भेजने के लिए उसे प्रेरित करते हैं। वे बच्चों के स्कूल में प्रवेश के लिए बेबी की मदद करते हैं। जब बेबी उन्हें दूसरे घर में काम तलाशने के लिए कहती तो वे उसे दूसरी कोठी में काम न करने की सलाह देते थे। वे कहते तो कुछ न थे, परंतु कुछ ऐसा सोचा करते थे कि बेबी को महसूस होता था कि वे बेबी के प्रति माया रखते हैं, कभी-कभी वे बरतन पोंछ रहे होते थे तो कभी जाले ढूँढ़ रहे होते थे।

प्रश्न 3:

सुनील ने बेबी की सहायता कैसे की?

उत्तर –

सुनील तीस-बत्तीस साल का युवक था जो एक कोठी में ड्राइवर का काम करता था। बेबी ने उसे कहीं काम दिलवाने के लिए कह रखा था, जब सुनील को पता चला कि बेबी को डेढ़ सप्ताह से कोई काम नहीं मिला तो वह उसे तातुश के घर ले गया। उनसे बातचीत करके उसने बेबी को उनके घर का काम दिलवा दिया।

प्रश्न 4: तातुश ने बेबी को क्या दिया? उस पर बेबी की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर –

तातुश ने बेबी की पढ़ने-लिखने में रुचि देखी तो उसने उसे पेन व कॉपी दी तथा लिखने को कहा। उसने कहा कि होश सँभालने के बाद से अब तक की जितनी भी बातें तुम्हें याद आएँ, सब इस कॉपी में रोज थोड़ा-थोड़ा लिखना। पेन-कॉपी लेकर बेबी सोचने लगी कि इसका तो कोई ठिकाना नहीं कि जो लिखेंगी, वह कितना गलत या सही होगा। तातुश ने पूछा तो वह चौंक पड़ी। उसने कहा कि सोच रही थी कि लिख सकूंगी या नहीं।

प्रश्न 5:

लखिका को लेखन के लिए किन-किन लोगों ने उत्साहित किया?

उत्तर –

लेखिका को लेखन के लिए सबसे पहले तातुश ने प्रेरित किया। उन्होंने ही उसका परिचय कोलकाता और दिल्ली के लोगों से करवाया। इसके अतिरिक्त कोलकाता के जेलू आनंद, अध्यापिका शर्मिला आदि पत्र लिखकर उसे प्रोत्साहित करते थे। दिल्ली के रमेश बाबू उनसे फोन पर बातें करते थे।

प्रश्न 6: तातुश के घर बेबी सुखी थी, फिर भी उदास हो जाती थी। क्यों?

उत्तर –

तातुश के घर पर बेबी को बहुत सुविधाएँ व सहायता मिली, परंतु उसे अपने बड़े लड़के की याद आती थी। उसकी सूचना दो महीने से नहीं आई थी। जो लोग उसके लड़के को लेकर गए थे, उनके दिए पते पर वह लड़का नहीं रहता था। उसने कुछ दूसरे लोगों से पूछा तो किसी ने संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। इसलिए वह कभी-कभी उदास हो जाती थी।

प्रश्न 7:

मोहल्लेवासियों का लेखिका के प्रति कैसा रवैया था?

उत्तर –

लेखिका अकेली रहती थी, इस कारण मोहल्लेवासियों का रवैया अच्छा नहीं था। वे उसे हर समय परेशान करते थे। महिलाएँ उससे तरह-तरह के सवाल करती थीं। कुछ पुरुष उसके साथ बात करने की कोशिश करते थे तो कुछ उसे ताने देते थे। औरतें उसके अकेले रहने का कारण पूछती थीं। लोग पानी के बहाने उसके घर के अंदर तक आ जाते थे। वे उससे अजीबो-गरीब सवाल पूछते जिनके जवाब लोकलिहाज से परे थे। दुखी होकर उसने मकान बदलने का फैसला किया।

प्रश्न 8: बेबी को अपनी माँ की मृत्यु का समाचार कैसे मिला?

उत्तर –

एक दिन बेबी के पिता उससे मिलने आए। उसने अपनी माँ के बारे में पूछा तो उन्होंने इधर-उधर की बातें करनी आरंभ कर दीं, फिर बताया कि उसकी माँ तो छह-सात महीने पहले ही दुनिया छोड़ गई है। उसके भाइयों ने उसे नहीं बताया। बेबी सिसक-सिसक कर रोने लगी।

प्रश्न 9:

बेबी ने पार्क में घूमना क्यों छोड़ दिया?

उत्तर –

तातुश के कहने पर बेबी बच्चों को पार्क में घुमाने ले जाती थी। वहाँ अनेक बंगाली औरतें भी थीं। वे उससे उसके पति के बारे में तथा यहाँ अकेली रहने के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछती थीं। बेबी को इन बातों का जबाव देना तथा पुरानी बातों को फिर से दोहराना अच्छा नहीं लगता था। पार्क में आने वाले बंगाली लड़के भी उद्दंडतापूर्ण व्यवहार करते थे। इन सब कारणों से उसने पार्क में घूमना छोड़ दिया।

प्रश्न 10:

अपनी प्रकाशित रचना देखने से बेबी पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर –

बेबी को जैसे ही पैकेट में पत्रिका मिली। उसे पत्रिका के पन्ने पर अपना नाम दिखाई दिया-“आलो-आँधारि” बेबी हालदार। वह प्रसन्नता से झूम उठी। उसने अपने बच्चों से उसे पढ़वाया। बच्चे नाम पढ़कर हँसने लगे। उन्हें हँसता देख बेबी ने उन्हें अपने पास खींच लिया। तभी उसे तातुश की याद आई, जिनकी प्रेरणा से उसने लिखना शुरू किया था। वह बच्चों को छोड़कर भागती हुई तातुश के पास गई और उन्हें प्रणाम किया। तातुश ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गदयांश तथा उन पर आधारित प्रश्नोत्तर ध्यानपूर्वक पढ़िए-

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 1

1. हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिहन है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी न जाने कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है-'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।'

मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंड" ने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है।

हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉ. हयूड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी।

एक बूढ़े को हँसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हँसाओ, उसके स्वास्थ्य में वृद्ध होगी। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा, पर हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हँसी ही नहीं है, हमको बहुत काम करने हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आंतरिक हँसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान ने दी है। हँसी सबको भली लगती है। मित्र-मंडली में हँसी विशेषकर प्रिय लगती है। जो मनुष्य हँसते नहीं उनसे ईश्वर बचावे। जहाँ तक बने हँसी से आनंद प्राप्त करो। प्रसन्न लोग कोई बुरी बात नहीं करते। हँसी बैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी है। हँसी

स्वभाव को अच्छा करती है। जी बहलाती है और बुद्ध को निर्मल करती है।

प्रश्न

(क) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया? 2

(ख) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है? 2

(ग) किसी डॉक्टर ने हँसी को जीवन की मीठी मदिरा क्यों कहा है? 2

(घ) इस गदयांश में हँसी का क्या महत्व बताया गया है? 2

(ङ) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए। 1

(च) ‘पाचन-शक्ति’ एवं ‘मुर्दादिल’ का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए। 1

उत्तर –

(क) पुराने समय में हँसी को इसलिए महत्व दिया, क्योंकि वे जानते थे और कहते थे कि एक बार हँस लेना शरीर को स्वस्थ रखने की सबसे अच्छी दवा है। हँसी न जाने कितने कला-कौशलों से अच्छी है। जितना अधिक हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। उस समय लोगों का यह भी मानना था कि हँसी-खुशी ही जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। वे हँसी को सबके लिए बहुत ही काम की वस्तु मानते थे।

(ख) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस का उदाहरण देकर लेखक बताना चाहता है कि सदा अपने कर्मों को खीझने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया और प्रसन्न रहने वाला डेमाक्रीटस 109 वर्ष जिया। प्रसन्नता और हँसी सुखमय स्वस्थ जीवन के आधार हैं। अत: जो लोग दीर्घायु बनना चाहते हैं, उन्हें सदैव प्रसन्न और हँसमुख रहना चाहिए।

(ग) किसी डॉक्टर ने हँसी को जीवन की मीठी मदिरा इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार मदिरा की अल्प मात्रा के सेवन से व्यक्ति स्वयं को तन-मन से प्रसन्न महसूस करने लगता है और अपना दुख भूल जाता है, उसी प्रकार हँसी भी व्यक्ति को शरीर और मन से प्रसन्न बनाती है। वह व्यक्ति की पाचनशक्ति बढ़ाती है, उसका रक्तसंचार बढ़ाती है। इससे व्यक्ति अपना दुख भूलकर स्वयं को प्रसन्नचित्त महसूस करता है।

(घ) हँसी उदास-से-उदास व्यक्ति के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है, पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती है और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। हँसी जी बहलाती है, बुद्ध को निर्मल करती है। हँसी वैर से बचाती है। हँसी हमारे व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है क्योंकि जो भी जी से हँसता है, बुरा नहीं लगता है बल्कि ऐसे व्यक्ति को देखना अच्छा लगता है।

(ङ) हँसी की महत्ता

(च) पाचन की शक्ति   संबंध तत्पुरुष

मुर्दा जैसे दिलवाला   कर्मधारय समास

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 2

2. जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम-श्रमिक-समाज का

निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए।

आधुनिक युग में यह स्थिति प्राय: आती है, क्योंकि उद्योग-धंधे की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात् परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देता है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत है। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

प्रश्न

(क) 'जाति-प्रथा को स्वाभाविक श्रम-विभाजन नहीं कहा जा सकता।' क्यों? 2

(ख) जाति-प्रथा के सिदधांत को दूषित क्यों कहा गया है? 2

(ग)"जाति-प्रथा पेशे का न केवल दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण करती है बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे से बाँध देती है"-कथन पर उदाहरण-सहित टिप्पणी कीजिए। 2

(घ) भारत में जाति-प्रथा बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण किस प्रकार बन जाती है? उदाहरण सहित लिखिए। 2

(ङ) इस गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(च) विकसित, पैतृक – मूल शब्द एवं प्रत्यय बताइए। 1

उत्तर –

(क) जाति-प्रथा को स्वाभाविक श्रम-विभाजन इसलिए नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इस प्रकार का श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि एवं कौशल पर आधारित न होकर अनिवार्य रूप से जन्म पर आधारित होता है। कुशल एवं योग्य या सक्षम श्रमिक-समाज हर देश और उसके समाज की आवश्यकता होते हैं। ऐसे श्रमिक तैयार करने के लिए उनकी क्षमता को इतना विकसित करना चाहिए, जिससे वे अपने पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सकें, पर जाति-प्रथा पर आधारित श्रम-विभाजन में इसके लिए कोई स्थान ही नहीं है।

(ख) जाति-प्रथा का सिद्धांत इसलिए दूषित है, क्योंकि वह व्यक्ति की क्षमता या रुचि के अनुसार उसके चुनाव पर आधारित नहीं है। वह माता-पिता की जाति पर ही पूरी तरह अवलंबित और निर्भर है। जाति-प्रथा के इस दूषित सिद्धांत के कारण व्यक्ति की रुचि, योग्यता, क्षमता को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। एक तरह से उस पर वह पेशा थोप दिया जाता है जो उसके माता-पिता करते आ रहे हैं। इससे व्यक्ति समाज को अपना शत-प्रतिशत योगदान नहीं दे पाता है।

(ग) जाति-प्रथा पर आधारित श्रम-विभाजन के अंतर्गत व्यक्ति अपनी क्षमता, रुचि के अनुसार व्यवसाय या पेशा चुनने का अवसर नहीं पाता है। उसके कार्य या पेशे का निर्धारण पहले से ही यानी गर्भाधान के समय पर निर्धारित हो जाता है। यह पेशा उसका पैतृक अथवा जातिगत होता है; जैसे धोबी के परिवार में जन्म लेने वाले बच्चे का पेशा कपड़े धोना, प्रेस करना ही रह जाता है, भले ही उसकी रुचि हो या न हो। समाज की अन्य जातियाँ भी इसका उदाहरण हैं। इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि अपना पेशा बाद में बदल भी नहीं सकता है।

(घ) उद्योग-धंधों की प्रक्रिया और तकनीक में निरंतर विकास और परिवर्तन हो रहा है, जिसके कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की जरूरत पड़ सकती है। यदि वह ऐसा न कर पाए तो उसके लिए भूखे मरने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह पाता। बेरोजगारी से तंग आए व्यक्ति के लिए कोई और चारा भी नहीं रहता। उदाहरण के लिए ड्राइक्लीनिंग आदि के विकास ने धोबियों को बेरोजगार बना दिया है।

(ङ) 'जाति-प्रथा : एक अनावश्यक बंधन', 'जाति-प्रथा : एक दूषित परंपरा', 'जाति-प्रथा पर आधारित श्रम विभाजन'।

(च)

मूल शब्द	प्रत्यय
विकास	इत
पिता	इक

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 3

3. मनुष्य अपने भविष्य के बारे में चिंतित है। सभ्यता की अग्रगति के साथ ही चिंताजनक अवस्था उत्पन्न होती जा रही है। इस व्यावसायिक युग में उत्पादन की होड़ लगी हुई है। कुछ देश विकसित कहे जाते हैं। कुछ विकासोन्मुख। विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है। ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाजार ढूँढ़ते रहते हैं। अत्यधिक उत्पादन क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं। विकासोन्मुख या गरीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसलिए उन सभी आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं। उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि सारे संसार में उन वायुमंडल प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं। इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वायुमंडल विषाक्त गैसों से ऐसा भरता जा रहा है कि संसार का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं।

अपने बढ़ते उत्पादन की खपाने के लिए हर शक्तिशाली देश अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ा रहा है और आपसी प्रतिद्वंद्वता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारणास्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है। विज्ञान और तकनीकों के विकास से अणु बमों की अनेक संहारकारी किस्में ईजाद हुई हैं। ये यदि किसी सिरफिरे राष्ट्रनायक की झक के कारण सचमुच युद्ध क्षेत्र में प्रयुक्त होने लगें तो पृथ्वी जीवशून्य हो जाएगी। कहीं भी थोड़ा-सा प्रमाद हुआ तो मनुष्य का नामलेवा कोई नहीं रह जाएगा। एक ओर जहाँ मनुष्य की बुद्ध ने धरती को मानव शून्य बनाने के भयंकर मारणास्त्र तैयार कर दिए हैं वहीं दूसरी ओर मनुष्य ही इस भावी मानव-विनाश की आशंका से सिहर भी उठा है। उसका एक समझदार समुदाय इस प्रकार की कल्पना मात्र से आतंकित हो गया है कि न जाने किस दिन संसार इस विनाश लीला का शिकार हो जाए। इतिहास साक्षी है कि बहुत-सी जीव-प्रजातियाँ विभिन्न कारणों से हमेशा-हमेशा के लिए विलुप्त हो गई, बहुत-सी आज भी क्रमश: विलुप्त होने की स्थिति

में हैं, पर उनके मन में कभी अपनी प्रगति के नष्ट हो जाने की आशंका हुई थी या नहीं, हमें नहीं मालूम। शायद मनुष्य पहला प्राणी है जिसमें थोड़ा-बहुत भविष्य देखने की शक्ति है।

अन्य जीवों में यह शक्ति थी ही नहीं। यह विशेष रूप से ध्यान देने की बात है कि सिर्फ मनुष्य ही है जो अपने भविष्य के बारे में चिंतित है। यह सभी जानते हैं कि आधुनिक विज्ञान और तकनीकी ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है। उसी की कृपा से संसार के मनुष्य एक-दूसरे के निकट आए हैं, अनेक पुराने संस्कार जो गलतफहमी पैदा करते थे, झड़ते जा रहे हैं। मनुष्य को निरोग, दीर्घजीवी और सुसंस्कृत बनाने के अनगिनत साधन बढ़े हैं, फिर भी मनुष्य चिंतित है। जो अंधाधुंध प्रकृति के मूल्यवान भंडारों की लूट मचाकर आराम और संपन्नता प्राप्त कर रहे हैं, वे बहुत परेशान नहीं हैं। वे यथास्थिति भी बनाए रखना चाहते हैं और यदि संभव हो तो अपनी व्यक्तिगत, परिवारगत और जातिगत संपन्नता अधिक-से-अधिक बढ़ा लेने के लिए परिश्रम भी कर रहे हैं। ऐसे सुखी लोग 'मनुष्य का भविष्य' जैसी बातों के कारण परेशान नहीं हैं। पर जो लोग अधिक संवेदनशील हैं और मनुष्य जाति को महानाश की ओर बढ़ते देखकर विचलित हो उठते हैं, वे ही परेशान हैं।

प्रश्न

(क) संसार में वायुमंडल प्रदूषण के यंत्र क्यों बढ़ते जा रहे हैं? 2

(ख) मारण-अस्त्रों का भंडार दिन-प्रतिदिन विशाल क्यों होता जा रहा है? 2

(ग) आधुनिक विज्ञान और तकनीक का संसार पर क्या प्रभाव पड़ा है? 2.

(घ) कैसे लोग मानव-जाति के भविष्य के विषय में परेशान नहीं हैं और किस श्रेणी के लोग उसके भावी विनाश को लेकर आशंकित हैं? 2

(ङ) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(च) दीर्घजीवी, यथास्थिति शब्दों का विग्रह कर समास के नाम लिखिए। 1

उत्तर –

(क) संसार के विकसित देश अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग कर रहे हैं। ये उपकरण ऐसे हैं जो वायुमंडल को प्रदूषित करते हैं। इन उपकरणों की संख्या निरंतर बढ़ रही है जो विकास के लिए आवश्यक माने जाते हैं। इसके अलावा इस व्यावसायिक युग में अधिकाधिक उत्पादन , बढ़ाने की होड़ लगी हुई है। विकसित और विकासोन्मुख दोनों ही वायुमंडल प्रदूषण की चिंता किए बिना उत्पादन बढ़ाने में जुटे हैं।

(ख) विकसित देश अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अधिकाधिक उत्पादन कर रहे हैं ताकि खूब लाभ कमा सकें। वे अपने उत्पाद को बेचने के लिए एक ओर नए-नए क्षेत्र खोज रहे हैं तो दूसरी ओर अपने बढ़ते उत्पादन की खपाने के लिए अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहे हैं। इससे आपसी प्रतिद्वंद्वता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारणास्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है। वे अपनी सुरक्षा की तैयारी के नाम पर अस्त्रों के भंडार दिन-प्रतिदिन लगातार बढ़ाते जा रहे हैं।

(ग) आधुनिक विज्ञान और तकनीक का संसार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इसके कारण ही संसार के लोगों में निकटता बढ़ी है। पुराने संस्कारों का परिमार्जन हुआ है। मनुष्य ने भौतिक संसाधन इतने जुटा लिए गए हैं जिससे वह निरोग, दीर्घजीवी और सुसंस्कृत होने में सफल हुआ है। आगे भी

निरंतर सुख-सुविधाओं के साथ न निरंतर जुटाता चला जा रहा है। फिर भी मनुष्य अपने वजूद को लेकर चिंतित है।

(घ) ऐसे लोग मानव-जाति के भविष्य के विषय में परेशान नहीं है जो अंधाधुंध प्रकृति के मूल्यवान भंडारों की लूट मचाकर आराम और संपन्नता प्राप्त कर रहे हैं। वे अपनी संपन्नता को अधिक-से-अधिक बढ़ा लेने के लिए परिश्रम भी कर रहे हैं। इसके विपरीत जो लोग अपेक्षा से अधिक संवेदनशील हैं वे मनुष्य जाति को महाविनाश की ओर बढ़ते देखकर विचलित हो उठते हैं। ऐसे लोग अधिकांशत: विवेकी हैं। उनमें मनुष्य के भावी विनाश की व्याकुलता और चिंता अधिक है।

(ङ) महाविनाश की ओर बढ़ता मनुष्य।

(च) विग्रह	समास
दीर्घकाल तक जीवित रहने वाला	कर्मधारय समास
स्थिति के अनुसार	अव्ययी भाव समास

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 4

4. विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है- चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं।

यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है-हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते है कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

प्रश्न

(क) विनम्रता और स्वतंत्रता का परस्पर क्या संबंध है? 2

(ख) मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है? 2

(ग) नम्रता और दब्बूपन में क्या अंतर है? 2

(घ) गदयांश में युवाओं को किस सच्चाई से परिचित कराया गया है? 2

(ङ) 'परमावश्यक' और 'प्रत्येक' का संधि-विच्छेद कीजिए। 1

(च) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर –

(क) विनम्रता और स्वतंत्रता का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। विनम्रता के अभाव में व्यक्ति उच्छृखल हो जाता है। वह स्वतंत्रता की आड़ में दूसरों की स्वतंत्रता का हनन करने लगता है। इससे स्वतंत्रता अर्थहीन होकर रह जाती है। इसके साथ ही आत्मसंस्कार के लिए मानसिक स्वतंत्रता भी आवश्यक है। इस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता का मेल होने से स्वतंत्रता का महत्व बढ़ जाता है। जो व्यक्ति स्वतंत्र होता है वही मर्यादित जीवन जी सकता है तथा मर्यादा में ही विनम्रता का भाव झलकता है।

(ख) मर्यादापूर्वक जीने के लिए स्वतंत्रता बहुत आवश्यक है। स्वतंत्रता से ही व्यक्ति में आत्मनिर्भरता आती है। इसी आत्मनिर्भरता के कारण व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होने की शक्ति पाता है। इस प्रकार मर्यादित जीवन जीने के लिए स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता तथा विनम्रता जैसे गुण आवश्यक हैं।

(ग) नम्रता व्यक्ति के व्यक्तित्व के सकारात्मक विकास के लिए आवश्यक गुण है। नम्र व्यक्ति स्वतंत्र होता है। वह मर्यादित जीवन जीता है और समाज का नेतृत्व करने वाला होता है। इसके विपरीत दब्बूपन में व्यक्ति का संकल्प और बुद्ध क्षीण होती जाती है। वह आवश्यकता पड़ने पर तुरंत निर्णय नहीं ले पाता है। दब्बू व्यक्ति नेतृत्व करने के बजाय दूसरों का मुँह ताकता है, इसलिए आगे बढ़ने की जगह पीछे रह जाता है।

(घ) वर्तमान समय में युवाओं ने अपने मन में यह बात बिठा रहा है कि वे औरों की अपेक्षा बहुत अधिक जानते हैं तथा आदर्शवादी हैं। इसी मिथ्याभिमान के कारण वे मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करने लगे हैं। यहाँ युवाओं को इस सच्चाई से परिचित कराया गया है कि उन्हें यह सदैव याद रखना है कि वे अल्पज्ञ और अपने आदशों से बहुत नीचे हैं। उनकी आकांक्षाएँ उनकी योग्यताओं से बहुत अधिक बढ़ी हुई हैं। उन्हें आत्ममर्यादित बनना चाहिए।

(ङ) परम + आवश्यक, प्रति + एक।

(च) शीर्षक – विनम्रता का महत्त्व।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 5

5. पड़ोस सामाजिक जीवन के ताने-बाने का महत्वपूर्ण आधार है। दरअसल पड़ोस जितना स्वाभाविक है, हमारी सामाजिक सुरक्षा के लिए तथा सामाजिक जीवन की समस्त आनंदपूर्ण गतिविधियों के लिए वह उतना ही आवश्यक भी है। यह सच है कि पड़ोसी का चुनाव हमारे हाथ में नहीं होता, इसलिए पड़ोसी के साथ कुछ-न-कुछ सामंजस्य तो बिठाना ही पड़ता है। हमारा पड़ोसी अमीर हो या गरीब, उसके साथ संबंध रखना सदैव हमारे हित में ही होता है। पड़ोसी से परहेज करना अथवा उससे कटे-कटे रहने में अपनी ही हानि है, क्योंकि किसी भी आकस्मिक आपदा अथवा आवश्यकता के समय अपने रिश्तेदारों अथवा परिवार वालों को बुलाने में समय लगता है।

यदि टेलीफोन की सुविधा भी है तो भी कोई निश्चय नहीं कि उनसे समय पर सहायता मिल ही जाएगी। ऐसे में पड़ोसी ही सबसे अधिक विश्वस्त सहायक हो सकता है। पड़ोसी चाहे कैसा भी हो,

उससे अच्छे संबंध रखने ही चाहिए। जो अपने पड़ोसी से प्यार नहीं कर सकता, उससे सहानुभूति नहीं रख सकता, उसके साथ सुख-दुख का आदान-प्रदान नहीं कर सकता तथा उसके शोक और आनंद के क्षणों में शामिल नहीं हो सकता, वह भला अपने समाज अथवा देश के साथ क्या खाक भावनात्मक रूप में जुड़ेगा।

विश्व-बंधुत्व की बात भी तभी मायने रखती है जब हम अपने पड़ोसी से निभाना सीखें। प्राय: जब भी पड़ोसी से खटपट होती है तो इसलिए कि हम आवश्यकता से अधिक पड़ोसी के व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप करने लगते हैं। हम भूल जाते हैं कि किसी को भी अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी की रोक-टोक और हस्तक्षेप अच्छा नहीं लगता। पड़ोसी के साथ कभी-कभी तब भी अवरोध पैदा हो जाते हैं जब हम आवश्यकता से अधिक उससे अपेक्षा करने लगते हैं। बात नमक-चीनी के लेने-देने से आरंभ होती है तो स्कूटर और कार तक माँगने की गुस्ताखी हम कर बैठते हैं।

ध्यान रखना चाहिए कि जब तक बहुत जरूरी न हो, पड़ोसी से कोई चीज माँगने की नौबत ही न आए। आपको परेशानी में पड़ा देख पड़ोसी खुद ही आगे आ जाएगा। पड़ोसियों से निबाह करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि बच्चों को नियंत्रण में रखें। आमतौर से बच्चों में जाने-अनजाने छोटी-छोटी बातों पर झगड़े होते हैं और बात बड़ों के बीच सिर फुटौवल तक जा पहुँचाती है। इसलिए पड़ोसी के बगीचे से फल-फूल तोड़ने, उसके घर में ऊधम मचाने से बच्चों पर सख्ती से रोक लगाएँ भूलकर भी पड़ोसी क बच्चे पर हाथ न उठाएँ, अन्यथा संबंधों में कड़वाहट आते देर न लगेगी।

प्रश्न

(क) कैसे कह सकते हैं कि पड़ोसी के साथ सामंजस्य बिठाना हमारे हित में है? 2

(ख) 'जो अपने पड़ोसी से प्यार नहीं कर सकता, ... वह भला अपने समाज अथवा देश के साथ क्या खाक भावनात्मक रूप से जुड़ेगा।"

उपर्युक्त पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए। 2

(ग) पड़ोसी से खटपट के प्राय: क्या कारण होते हैं? 2

(घ) पड़ोसी के साथ संबंधों में कड़वाहट न आने देने के लिए क्या-क्या सावधानियाँ दरतनी चाहिए? 2

(ङ) इस गदयांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(च) किसी एक पद का समास-विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए सुविधा-असुविधा,आनंदपूर्ण

उत्तर –

(क) अपनी सामाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक जीवन की समस्त आनंदपूर्ण गतिविधियों के लिए पड़ोसी का महत्व बहुत अधिक है। हमें अपने पड़ोसी से यथासंभव सामंजस्य बनाकर रखना चाहिए। उससे अच्छे संबंध बनाकर न रखने में हमारी ही हानि है क्योंकि किसी भी आकस्मिक आपदा या आवश्यकता के समय अपने रिश्तेदारों और परिवारवालों के बुलाने में समय लगता है। संचार की सुविधा होने पर भी उनसे मदद मिलने की शत-प्रतिशत गारंटी नहीं होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पड़ोसी के साथ सामंजस्य बिठाना हमारे लिए हितकर होता है।

(ख) देश के प्रति प्रेम की प्रक्रिया पड़ोस से ही शुरू होती है। जो व्यक्ति पड़ोस के प्रति सद्भावना

नहीं रख सकता या पड़ोस में हुई घटना के प्रति सहायक या सहृदय नहीं होता तो उसके हृदय में देश-प्रेम की भावना भी नहीं हो सकती है। ऐसे व्यक्ति से राष्ट्रीय एकता की बातें सुनना व्यर्थ ही लगती हैं।

(ग) पड़ोसी के साथ खटपट होने के कई कारण हैं, जैसे-

1. व्यक्ति द्वारा आवश्यकता से अधिक पड़ोसी के व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप किया जाना।
2. पड़ोसी से आवश्यकता से अधिक अपेक्षा करना तथा छोटी-छोटी वस्तुओं की माँग करते-करते स्कूटर या कार माँगने की गलती करना।
3. पड़ोसी के बच्चों को डाँटना-डपटना तथा उन पर हाथ उठा देना।
4. अपने बच्चों को निरंकुश छोड़ देना तथा उन्हें उचित व्यवहार की शिक्षा न देना।

(घ) पड़ोसी के साथ संबंधों में कड़वाहट न आने देने के लिए अपने बच्चों को नियंत्रण में रखें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपके बच्चे उनके बगीचे से फल-फूल न तोड़ें, उनके घरों में शोर-शराबा न मचाएँ। भूलकर भी पड़ोसी के बच्चे पर हाथ न उठाएँ, अन्यथा यही छोटी-सी बात सिर फुटौवल का कारण बन जाती है।

(ङ) शीर्षक – पड़ोसी का महत्व या पड़ोसी का कर्तव्य।

(च) सुविधा और असुविधा — द्वंद्व समास

आनंद से पूर्ण — तत्पुरुष समास

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 6

6. राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय एवं विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्व है। मानव समुदाय अपनी संवेदनाओं, भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का साधन अपरिहार्यत: अपनाता हैं, इसके अतिरिक्त उसके पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। दिव्य-ईश्वरीय आनंदानुभूति के संबंध में भले ही कबीर ने 'गूंगे केरी शर्करा' उक्ति का प्रयोग किया था, पर इससे उनका लक्ष्य शब्द-रूप भाषा के महत्व को नकारना नहीं था। प्रत्युत उन्होंने भाषा को 'बहता नीर' कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी। विद्वानों की मान्यता है कि भाषा तत्व राष्ट्रहित के लिए अत्यावश्यक है। जिस प्रकार किसी एक राष्ट्र के भूभाग की भौगोलिक विविधताएँ तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताओं आदि की बाधाएँ उस राष्ट्र के निवासियों के परस्पर मिलने-जुलने में अवरोधक सिद्ध हो सकती हैं, उसी प्रकार भाषागत विभिन्नता से भी उनके पारस्परिक संबंधों में निर्बाधता नहीं रह पाती। आधुनिक विज्ञान युग में यातायात एवं संचार के साधनों की प्रगति से भौगोलिक बाधाएँ अब पहले की तरह बाधित नहीं करतीं।

इसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक संपर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक संबंधों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं। मानव-समुदाय को एक जीवित-जाग्रत एवं जीवंत शरीर की संज्ञा दी जा सकती है और उसका अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इस व्यक्तित्व को साकार करती है, उसके अमूर्त मानसिक, वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं

बिंबात्मक रूप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं, उनकी विविध भावनाएँ हैं. विचारधाराएँ हैं. संकल्प एवं आदर्श हैं, उन्हें भाषा ही अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। साहित्य, शास्त्र, गीत-संगीत आदि में मानव-समुदाय अपने आदशों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं एवं विशिष्टताओं को वाणी देता है, पर क्या भाषा के अभाव में काव्य, साहित्य, संगीत आदि का अस्तित्व संभव है? वस्तुत: ज्ञानराशि एवं भावराशि का अपार संचित कोश जिसे साहित्य का अभिधान दिया जाता है, शब्द-रूप ही तो है। अत: इस संबंध में वैमत्य की किंचित् गुंजाइश नहीं है कि भाषा ही एक ऐसा साधन है जिससे मनुष्य एक-दूसरे के निकट आ सकते हैं, उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। यही कारण है कि एक भाषा बोलने एवं समझने वाले लोग परस्पर एकानुभूति रखते हैं, उनके विचारों में ऐक्य रहता है। अत: राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा तत्व परम आवश्यक है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) भाषा के बारे में मानव समुदाय की सोच क्या है? 2

(ग) पारस्परिक संबंध बढ़ाने में विदवान भाषा को किस प्रकार उपयोगी मानते हैं? 2

(घ) राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा-तत्व क्यों आवश्यक है? 2

(ङ) भाषा के अभाव में साहित्य, संगीत, काव्य आदि की क्या स्थिति होती और क्यों? 2

(च) संधि-विच्छेद कीजिए – आनंदानुभूति, अत्यावश्यक। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक – राष्ट्रीयता और भाषा तत्व।

(ख) भाषा के बारे में मानव समुदाय की सोच यह है कि भाषा ही वह साधन है, जिसके माध्यम से मानव समुदाय की संवेदनाओं, भावनाओं एवं विचारों की सफल अभिव्यक्ति हो सकती है। इनकी अभिव्यक्ति के लिए उसके पास कोई अन्य सशक्त साधन नहीं है। इसके अलावा राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय, पनपने फलने-फूलने आदि के लिए भी भाषा एक मुख्य तत्व है।

(ग) विद्वानों का मानना है कि जिस प्रकार किसी राष्ट्र की भौगोलिक विविधताएँ लोगों के आवागमन को दुष्कर करती हैं तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताएँ आदि की बाधाएँ मार्ग को दुर्गम बनाती हैं तथा उस राष्ट्र के लोगों के परस्पर मिलन में बाधक सिद्ध होती हैं, उसी प्रकार अनेक प्रकार की भाषाएँ भी लोगों के आपसी संबंधों में बाधा उत्पन्न करती हैं। वर्तमान में यातायात और संचार के साधनों ने भौगोलिक बाधाओं पर विजय पाई है। उसी प्रकार राष्ट्र की एक संपर्क भाषा पारस्परिक संबंध बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगी और गतिरोध समाप्त होंगे।

(घ) राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा एक आवश्यक तत्व इसलिए है क्योंकि भाषा ही एकमात्र ऐसा तत्व है, जिससे मनुष्य के बीच की दूरियाँ कम हो सकती हैं और वे परस्पर निकट आ सकते हैं तथा उनमें घनिष्ठ संबंध स्थापित हो सकते हैं। एक ही भाषा बोलने, समझने और व्यवहार में लाने वाले लोग परस्पर एकानुभूति रखते हैं। उनके विचारों में एकता रहती है। वे भाषागत मतभेद भूलकर परस्पर सौहार्दपूर्वक रहते हैं।

(ङ) भाषा के अभाव में साहित्य, संगीत, काव्य आदि का अस्तित्व ही नहीं रहता क्योंकि मानव-समुदाय की अभिव्यक्ति को भाषा ही साकार रूप देती है। भाषा ही मनुष्य के अमूर्त मानसिक, वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं बिंबात्मक रूप प्रदान करता है। मनुष्यों के विविध समुदाय, उनकी भावनाएँ, विचारधाराएँ, संकल्प एवं आदर्श आदि की अभिव्यक्ति भाषा ही करती है। मनुष्य साहित्य, संगीत, काव्य आदि के माध्यम से ही भावनाओं, विचारधाराओं को मुखरित करता है। अत: साहित्य, संगीत, काव्य के लिए भी भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(च) आनंद + अनुभूति, अति + आवश्यक।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 7

7. मानव जीवन में आत्मसम्मान का अत्यधिक महत्व है। आत्मसम्मान में अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक सशक्त एवं प्रतिष्ठित बनाने की भावना निहित होती है। इससे शक्ति, साहस, उत्साह आदि गुणों का जन्म होता है जो जीवन की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आत्मसम्मान की भावना से पूर्ण व्यक्ति संघर्षों की परवाह नहीं करता है और हर विषम परिस्थिति से टक्कर लेता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में पराजय का मुँह नहीं देखते तथा निरंतर यश की प्राप्ति करते हैं। आत्मसम्मानी व्यक्ति धर्म, सत्य, न्याय और नीति के पथ का अनुगमन करता है। उसके जीवन में ही सच्चे सुख और शांति का निवास होता है। परोपकार, जनसेवा जैसे कार्यों में उसकी रुचि होती है। लोकप्रियता और सामाजिक प्रतिष्ठा उसे सहज ही प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति में अपने राष्ट्र के प्रति सच्ची निष्ठा होती है तथा मातृभूमि की उन्नति के लिए वह अपने प्राणों को उत्सर्ग करने में भी सुख की अनुभूति करता है। चूँकि आत्मसम्मानी व्यक्ति अपनी अथवा दूसरों की आत्मा का हनन करना पसंद नहीं करता है, इसलिए वह ईर्ष्या-द्वेष जैसी भावनाओं से मुक्त होकर मानव मात्र को अपने परिवार का अंग मानता है।

उसके हृदय में स्वार्थ, लोभ और अहकार का भाव नहीं होता। निश्छल हृदय होने के कारण वह आसुरी प्रवृत्तियों से सर्वथा मुक्त होता है। उसमें ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति एवं विश्वास होता है, जिससे उसकी आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है। जीवन को सरस और मधुर बनाने के लिए आत्मसम्मान रसायन-तुल्य है। आत्मसम्मान प्रत्येक जाति तथा राष्ट्र की प्रेरणा का दैवी स्रोत है। मानव-मात्र के मौलिक गुणों की यह विभूति है। प्रत्येक व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है कि आत्मसम्मान की सुरक्षा के लिए सतत प्रस्तुत रहे। इसे खोकर हम सर्वस्व खो देंगे। हमारी संस्कृति, हमारा धर्म, यहाँ तक कि हमारा अस्तित्व ही इसके अभाव में लुप्त हो जाएगा। परतंत्रता के युग में हमारे सार्वजनिक जीवन में आत्मसम्मान को निरंतर ठेस लगती रही है। चूँकि विदेशी प्रभुसत्ता ने उसका दमन करने में कोई कसर उठा नहीं रखी, इसलिए भरतीयों ने राष्ट्रपिता के नेतृत्व में आत्मसम्मान की प्रतिष्ठा के लिए स्वतंत्रता का संग्राम किया तथा उसमें सफलता प्राप्त की। आज प्रत्येक भारतीय को उच्च नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता तथा आत्मसम्मान की रक्षा करनी है।

प्रश्न

(क) आत्मसम्मान का मानव जीवन में क्या महत्व है? . 2

(ख) हर समाज को सदैव आत्मसम्मानित व्यक्तियों की जरूरत होती है, क्यों? 2

(ग) 'आत्मसम्मानित व्यक्तियों का जीवन संतों-मुनियों जैसा उदार एवं उदात्त होता है', गदयांश के

आधार पर इसे प्रमाणित कीजिए। 2

(घ) 'आत्मसम्मान खोने से व्यक्ति का सर्वस्व खो जाता है।' स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) प्रतिष्ठित, मौलिक – प्रत्यय पृथक् कर मूल शब्द भी बताइए। 1

(च) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर –

(क) आत्मसम्मान व्यक्ति का वह गुण होता है, जिसमें व्यक्तित्व को अधिकाधिक सशक्त एवं प्रतिष्ठित बनाने की भावना निहित होती है। जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास होता है, उसी में शक्ति, साहस, उत्साह जैसे गुण पुष्पित-पल्लवित होते हैं जो जीवन को उन्नति के पथ की ओर अग्रसर करते हैं। आत्मसम्मान के अभाव में न तो व्यक्ति संघर्ष का रास्ता चुनता है और न विजय प्राप्त कर पाता है, अत: व्यक्ति के जीवन में आत्मसम्मान का बहुत महत्व है।

(ख) समाज को आत्मसम्मानित व्यक्तियों की जरूरत होती है, क्योंकि

1. आत्मसम्मानित व्यक्ति धर्म, सत्य, न्याय और नीति के पथ पर चलकर मर्यादित जीवन जीता है। इससे व्यक्ति के जीवन और समाज दोनों जगह शांति रहती है।

2. आत्मसम्मानित व्यक्ति परोपकार और समाजसेवा जैसे कार्यों में रुचि लेता है।

3. ऐसा व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय होता है।

4. आत्मसम्मानित व्यक्ति राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने को तत्पर रहता है।

(ग) जिस प्रकार संत-मुनि अपना जीवन परोपकार करते हुए बिताते हैं, स्वार्थ-भाव से दूर रहते हैं, दूसरों को कष्ट नहीं पहुँचाते तथा लोभ, ईष्या-द्वेष जैसे दुर्गुणों से दूर रहकर ईश्वर शक्ति में लीन रहते हैं, उसी प्रकार आत्मसम्मानित व्यक्ति भी दूसरों के अधिकारों का हनन नहीं करता, ईष्र्या-द्वेष जैसे दुर्भावों से मुक्त रहकर मानव मात्र को अपने परिवार का अंग समझता है, आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त रहता है तथा ईश्वर के प्रति सच्ची पित, विश्वास खता है। अत आसात व्यिक्तयों क जनसमुनयों जैसा उरिए उता होता है।

(घ) आत्मसम्मान खोने से व्यक्ति अपने राष्ट्र एवं जाति के प्रति प्रेरणा का दैवीय स्रोत खो देता है। अत: व्यक्ति को आत्मसम्मान बचाए रखना चाहिए। आत्मसम्मान खोने से व्यक्ति की संस्कृति, धर्म यहाँ तक कि उसका स्वयं का अस्तित्व नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। इसके अलावा आत्मसम्मान खोकर उच्च नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता की रक्षा नहीं की जा सकती है।

(ङ)

प्रत्यय	मूल शब्द
इत	प्रतिष्टा
इक	मूल

(च) जीवन में आत्मविश्वास की महत्ता

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 8

8. आज हम इस असमंजस में पड़े हैं और यह निश्चय नहीं कर पाए हैं कि हम किस ओर चलेंगे और हमारा ध्येय क्या है? स्वभावत: ऐसी अवस्था में हमारे पैर लड़खड़ाते हैं। हमारे विचार में भारत के

लिए और सारे संसार के लिए सुख और शांति का एक ही रास्ता है और वह है अहिंसा और आत्मवाद का। अपनी दुर्बलता के कारण हम उसे ग्रहण न कर सके, पर उसके सिद्धांतों को तो हमें स्वीकार कर ही लेना चाहिए और उसके प्रवर्तन का इंतजार करना चाहिए। यदि हम सिद्धांत ही न मानेंगे तो उसके प्रवर्तन की आशा कैसे की जा सकती है। जहाँ तक मैंने महात्मा गाँधी जी के सिद्धांत को समझा है, वह इसी आत्मवाद और अहिंसा के, जिसे वे सत्य भी कहा करते थे, मानने वाले और प्रवर्तक थे। उसे ही कुछ लोग आज गाँधीवाद का नाम भी दे रहे हैं।
यद्यपि महात्मा गाँधी ने बार-बार यह कहा था कि " वे किसी नए सिद्धांत या वाद के प्रवर्तक नहीं हैं और उन्होंने अपने जीवन में प्राचीन सिद्धांतों को अमल कर दिखाने का यत्न किया।" विचार कर देखा जाए, तो जितने सिद्धांत अन्य देशों , अन्य-अन्य काल और स्थितियों में भिन्न-भिन्न नामों और धर्मों से प्रचलित हुए हैं, सभी अंतिम और मार्मिक अन्वेषण के बाद इसी तत्व अथवा सिद्धांत में समाविष्ट पाए जाते हैं। केवल भौतिकवाद इनसे अलग है। हमें असमंजस की स्थिति से बाहर निकलकर निश्चय कर लेना है कि हम अहिंसावाद, आत्मवाद और गाँधीवाद के अनुयायी और समर्थक हैं न कि भौतिकवाद के। प्रेय और श्रेय में से हमें श्रेय को चुनना है। श्रेय ही हितकर है, भले ही वह कठिन और श्रमसाध्य हो। इसके विपरीत प्रेय आरंभ में भले ही आकर्षक दिखाई दे, उसका अंतिम परिणाम अहितकर होता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) लेखक अहिंसा और आत्मवाद अपनाने के लिए लोगों को क्यों प्रेरित कर रहा है? 2

(ग) गांधीवाद क्या है? अपने नए सिदधांत के बारे में गांधी जी क्या कहते थे? 2

(घ) गांधीवाद और भौतिकवाद में अंतर स्पष्ट करते हुए बताइए कि आप किसे श्रेष्ठ समझते हैं और क्यों?

(ङ) लेखक हमें किस निश्चितता की ओर ले जाना चाहता है और क्यों? 2

(च) संधि-विच्छेद कीजिए- 1

यद्यपि, अन्वेषण।

उत्तर –

(क) शीर्षक-श्रेय या प्रेय!

(ख) लेखक अहिंसा और आत्मवाद अपनाने के लिए लोगों को इसलिए प्रेरित कर रहा है क्योंकि आज लोग अनिश्चय और असमंजस की स्थिति में हैं। वे अपने लक्ष्य और ध्येय के प्रति अनिश्चितता की स्थिति में हैं। ऐसी स्थिति में भारत सहित संसार के लिए सुख और शांति पाने का एकमात्र साधन अहिंसा और आत्मवाद है। इसी से लोगों को अनिश्चितता से मुक्ति मिल सकती है।

(ग) गांधीवाद गांधी जी के सिद्धांत 'सत्य' का दूसरा नाम है। इस सत्य के मूल में अहिंसा और आत्मवाद था। वे इस सिद्धांत के समर्थक और प्रवर्तक थे। अपने इस सिद्धांत के बारे में गांधी जी का कहना था कि वे किसी नए सिद्धांत या वाद के प्रवर्तक नहीं हैं। उन्होंने अपने जीवन में प्राचीन सिद्धांतों को अमलकर दिखाने का प्रयत्न किया है।

(घ) गांधीवाद अहिंसा और आत्मवाद पर आधारित सिद्धांत है जो सुख एवं शांति पाने का सर्वोत्तम

रास्ता है। यह हमें अनिश्चितता की मानसिक स्थिति से मुक्ति दिलाता है। इसके विपरीत भौतिकवाद का अभिप्राय इस सिद्धांत से है, जिसमें सांसरिक सुख-साधनों की प्रधानता रहती है। मनुष्य इन सुख-साधनों को पाने के लिए भटकता रहता है, जिससे सुख-शांति उससे कोसों दूर हो जाती है। मैं गांधीवाद को श्रेष्ठ समझता हूँ जो सुख-शांति पाने का मार्ग है।

(ङ) लेखक हमें उस निश्चितता की ओर ले जाना चाहता है. जिसके अंतर्गत मनुष्य को असमंजस की स्थिति गांधीवाद का समर्थक एवं अनुयायी बनना है। इसका कारण यह है कि अलग-अलग देशों में अलग-अलग नामों और धर्मों से जितने भी सिद्धांत प्रचलित हुए हैं, उन सबके मूल में अहिंसा और सत्य निहित है।

(च) शब्द संधि-विच्छेद

यद्यपि = यदि + अपि

अन्वेषण = अनु + एषण

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 9

9. संस्कृति ऐसी चीज नहीं जिसकी रचना दस-बीस या सौ-पचास वर्षों में की जा सकती हो। हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है; यहाँ तक कि हमारे उठने-बैठने, पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने और रोने-हँसने से भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है, यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता। असल में, संस्कृति जीने का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए, जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है; यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा कर रहे हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाते हैं और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं।

इसलिए, संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ हैं। यही नहीं, बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म-जन्मांतर तक करती है। अपने यहाँ एक साधारण कहावत है कि जिसका जैसा संस्कार है, उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। जब हम किसी बालक या बालिका को बहुत तेज पाते हैं तब अचानक कह देते हैं कि वह पूर्वजन्म का संस्कार है। संस्कार या संस्कृति, असल में, शरीर का नहीं, आत्मा का गुण है और जबकि सभ्यता की सामग्रियों से हमारा संबंध शरीर के साथ ही छूट जाता है, तब भी हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी आत्मा के साथ जन्म-जन्मांतर तक चलता रहता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त गदयांश का शीर्षक बताइए। 1

(ख) संस्कृति के बारे में लेखक क्या बताता है? लेखक ने संस्कृति की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं? 2

(ग) किसी समाज की संस्कृति ही वहाँ रहने वालों की संस्कृति बन जाती है, कैसे? 2

(घ) संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है, स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2

(च) विशेषण बनाइए – संस्कृति, विकास। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-सभ्यता और संस्कृति।

(ख) लेखक ने संस्कृति की विशेषताओं के विषय में बताया है कि संस्कृति की रचना अल्पकाल में नहीं होती है। व्यक्ति के आचार-विचार, सोच, पहनावा, हँसने-रोने, उठने-बैठने, घूमने-फिरने आदि में उसकी संस्कृति की झलक मिलती है। यद्यपि कोई कार्य विशेष किसी व्यक्ति की संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता। उसके आचरण और अन्य कार्यों के आधार पर उसकी संस्कृति की पहचान की जा सकती है।

(ग) संस्कृति किसी व्यक्ति के रहन-सहन और जीने का एक तरीका होता है जो कई सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें कोई व्यक्ति पैदा होता है। ऐसे में व्यक्ति जिस समाज में पैदा होता है या वह जिस समाज का अंग है, उसकी संस्कृति वहाँ रहने वाले व्यक्ति की संस्कृति बन जाती है।

(घ) समाज में रहकर हम जो संस्कार अर्जित और संचित करते हैं, वे हमारी संस्कृति का अंग बन जाते हैं और मृत्युपरांत जिस प्रकार हम सारी वस्तुएँ छोड़कर जाते हैं, उसी प्रकार संस्कृति की विरासत भी आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़े जाते हैं, इसलिए संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है और जन्म-जन्मांतर तक हमारा पीछा नहीं छोड़ती है।

(ङ) संस्कृति और सभ्यता में मुख्य अंतर यह है कि संस्कृति का संबंध परलोक से होता है। किसी प्रतिभासंपन्न या विलक्षण बुद्ध वाले बालक को देखकर हम अचानक कह उठते हैं कि यह पूर्वजन्म का संस्कार है। यह शरीर नहीं बल्कि आत्मा का गुण है। इसके विपरीत सभ्यता इसी लोक की चीज है। सभ्यता से हमारा संबंध शरीर के साथ ही समाप्त हो जाता है। इसका आत्मा से कोई संबंध नहीं होता है।

(च) शब्द विशेषणा

शब्द	विशेषण
संस्कृति	संस्कृतिक
विकास	विकासशील/विकसित

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 10

10. विज्ञापन कला जिस तेजी से उन्नति कर रही है, उससे मुझे भविष्य के लिए और भी अंदेशा है। लगता है ऐसा युग आने वाला है जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य इनका केवल विज्ञापन कला के लिए ही उपयोग रह जाएगा। वैसे ती आज भी इस कला के लिए इनका खासा उपयोग होता है। बहुत-सी शिक्षण संस्थाएँ हैं जो सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन मात्र हैं। अपनी पीढ़ी के कई लेखकों की कृतियाँ लाला छगनलाल, मगनलाल या इस तरह के नाम के किसी और लाल की स्मारक निधि से प्रकाशित होकर लाला जी की दिवंगत आत्मा के प्रति स्मारक होने का फर्ज अदा कर रही हैं मगर आने वाले युग में यह कला, दो कदम आगे बढ़ जाएगी। विद्यार्थियों को

विश्वविद्यालय के दीक्षांत महोत्सव पर जो डिग्रियाँ दी जाएँगी, उनके निचले कोने में छपा रहेगा- 'आपकी शिक्षा के उपयोग का एक ही मार्ग है, आज ही आयात-निर्यात का धंधा प्रारंभ कीजिए। मुफ्त सूचीपत्र के लिए लिखिए।'
हर नए आविष्कार का चेहरा मुस्कराता हुआ टेलीविजन पर जाकर कुछ इस तरह निवेदन करेगा- 'मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे प्रयत्न की सफलता का सारा श्रेय रबड़ के टायर बनाने वाली कंपनी को है, क्योंकि उन्हीं के प्रोत्साहन ओर प्रेरणा से मैंने इस दिशा में कदम बढ़ाया था . विष्णु के मंदिर खड़े होंगे, जिनमें संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के नीचे पट्टी लगी होगी-'याद रखिए, इस मूर्ति और इस भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशान वाले निर्माताओं को है। वास्तुकला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए।'
और ऐसे-ऐसे उपन्यास हाथ में आया करेंगे जिनकी सुंदर चमड़े की जिल्द पर एक ओर बारीक अक्षरों में लिखा होगा-साहित्य में अभिरुचि रखने वालों को इक्का माकी साबुन वालों की एक और तुच्छ भेंट और बात बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँच जाएगी कि जब एक दूल्हा बड़े अरमान से दुल्हन ब्याहकर घर आएगा और घूंघट हटाकर उसके रूप की प्रसन्नता में पहला वाक्य कहेगा, तो दुल्हन मधुर भाव से आँख उठाकर हृदय का सारा दुलार शब्दों में उड़ेलती हुई कहेगी- 'रोज सुबह उठकर नौ सौ इक्यावन नंबर के साबुन से नहाती हूँ।'

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) लेखक को विज्ञापन के प्रति भविष्य के लिए अंदेशा क्यों बढ़ रहा है? 2

(ग) वर्तमान में शिक्षण संस्थाओं की आज क्या स्थिति है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 2

(घ) सुंदर प्रतिमाएँ विज्ञापन से किस तरह प्रभावित नजर आएँगी? 2

(ङ) इस गदयांश के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है और क्यों? 2

(च) संधि विच्छेद कीजिए – दीक्षांत, महोत्सव। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-विज्ञापन की बढ़ती दुनिया।

(ख) लेखक को विज्ञापन के प्रति भविष्य के लिए अंदेशा इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि विज्ञापन कला अत्यंत तेजी से उन्नति के पथ पर अग्रसर है। इसका प्रयोग लगभग हर छोटे-बड़े कार्य के लिए किया जाने लगा है। भविष्य में ऐसा समय आने वाला है, जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य आदि अपने मूल्य उद्देश्य को छोड़कर विभिन्न उत्पादों का विज्ञापन करते नजर आएँगे। वर्तमान में ही विभिन्न वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापनों का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है।

(ग) वर्तमान में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति यह है कि वे सांप्रदायिक संस्थाओं के विज्ञापन मात्र बनकर रह गई है। इनमें भी कुछ संस्थाएँ ट्रस्टों की मोहताज बनकर रह गई हैं। इसे एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है, जैसे-'सनातन हिंदू धर्म शिक्षण संस्थान' नामक यह संस्था शिक्षा ज्ञान का प्रचार-प्रसार करती कम किसी धर्म विशेष का विज्ञापन करती अधिक प्रतीत हो रही है। इस प्रकार के अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं।

(घ) देवालयों में देवताओं की मूर्ति के नीचे पट्टी पर प्राय: उसके दानदाता या निर्माण में सहयोग

देने वाली संस्थाओं का नाम कुछ इस प्रकार लिखा होता है, ‘इस मूर्ति और भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशान वाले निर्माताओं को है। वास्तुकला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए।’ इसे पढ़कर इन मूर्तियों पर विज्ञापन का प्रभाव देखा जा सकता है, जो ‘लाल हाथी’ निशान वाली वस्तुओं की बिक्री बढ़ाती दिख रही है।

(ङ) इस गद्यांश के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि विज्ञापन कला ने मनुष्य के दैनिक जीवन को प्रभावित तो किया ही है, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, संस्कृति आदि को भी विज्ञापन का साधन बना दिया गया है। शिक्षण संस्थाएँ और देवालय भी किसी संप्रदाय, व्यक्ति विशेष या उत्पादक प्रतिष्ठान का विज्ञापन करते दिखाई देते हैं। लेखक ऐसा इसलिए कहना चाह रहा है क्योंकि विज्ञापन कला का प्रयोग नित नए-नए रूप में होने लगा है, जिससे मनुष्य का दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है।

(च) शब्द संधि-विच्छेद

दीक्षांत = दीक्षा + अंत

महोत्सव = महा + उत्सव

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 11

11. डॉ० जाकिर हुसैन भारत के असली सपूत थे, इसका सबूत उन्होंने पदारूढ़ होने के एक दिन पहले तब दिया जब वे दिल्ली में श्रृंगेरी के जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से भेंट करने गए। जगद्गुरु के सामने पुष्प और फल रखते हुए उन्होंने कहा था-आपका आशीर्वाद चाहिए और शंकराचार्य ने राष्ट्रपति के सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया था। ऐसी ही एक और घटना याद आती है। उपराष्ट्रपति निवास के अहाते में एक दिन सवेरे घूम रहे थे तो देखा कि माली के घर में कीर्तन हो रहा है। फिर क्या था, टहलते हुए उधर चले गए और सबके साथ एक कोने में दरी पर बैठ गए। जब कुरसी लाने के लिए कहा गया तो बोले, ‘भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।” और दरी पर बैठे रहे।

पटियाला में पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोबिंद सिंह के संस्थान की नींव रखने को आपसे कहा गया तो बोले, “आपने मुझसे इस पवित्र संस्थान की नींव रखने को कहा है। इससे मुझे याद आता है कि अमृतसर में दरबार साहब की नींव डालने के लिए भी एक मुसलमान को ही बुलाया गया था,” और यह कहते-कहते उनका गला भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे। बड़े-बड़े योद्धा, सिख सरदार, श्रोताओं की भी उस समय आँखें भर आई। अपने साफ़-सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरुचि से सँवारी सफेद दाढ़ी के बीच चमकते हलके गुलाबी गौर वर्ण मुखमंडल से जाकिर साहब प्रेम और आत्मीयता में गाँधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नजर आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएँ, इस संबंध में उन्होंने एक बार कहा था, “आप आज्ञा दें तो इस अवसर से लाभ उठाकर गाँधी जी के संबंध में कुछ आपसे कहूँ।

उनको जानने और समझने से उनके काम को समझना और उसमें ! जी-जान से लगना जरा सरल हो सकता है। यह इसलिए और भी करना चाहता हूँ कि अब दिन पर दिन उन लोगों की संख्या घट रही है जिन्होंने गाँधी जी को देखा था, उनके साथ काम किया था, उनके बताए हुए रास्ते पर चले, थे। जब वे दुनिया से गए तो ये लोग बच्चे थे। बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे। उनकी गिनती अब दिन-

पर-दिन बढ़ती? ही जाएगी। नया काल होगा, नए हाल होंगे, नए जंजाल होंगे, ऐसा न हो कि यह नयी नस्ल गाँधी जी और उनके की तह में जो विचार थे उनको भुला बैठे। ऐसा हुआ तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जाएगी।"

प्रश्न

(क) डॉ० जाकिर हुसैन ने भारत का असली सपूत होने का प्रमाण किस प्रकार दिया? 2

(ख) डॉ० हुसैन ने राष्ट्रपति होकर भी अपनी विनम्रता नहीं छोड़ी। उसके प्रमाणस्वरूप दो उदाहरण प्रस्तुत कीजिए। 2.

(ग) स्पष्ट कीजिए कि पटियाला और अमृतसर की घटनाएँ वर्तमान में और भी प्रासंगिक हो गई हैं। 2

(घ) डॉ० हुसैन के अनुसार हमारी मूल्यवान पूँजी कब और क्यों बरबाद हो जाएगी? 2

(ङ) संधि-विच्छेद कीजिए – पदारूढ़, आशीर्वाद। 1

(च) विपरीतार्थक शब्द लिखिए – आज्ञा, अंतिम। 1

उत्तर –

(क) राष्ट्रपति पद पर सुशोभित होने से एक दिन पूर्व डॉ. जाकिर हुसैन जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने गए। ऐसा करते हुए उन्होंने धार्मिक सौहार्द का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए हिंदू-मुस्लिम का भेद नहीं किया। उन्होंने धार्मिक रूढ़ि को त्यागकर भारत का असली सपूत होने का प्रमाण दिया।

(ख) डॉ० जाकिर हुसैन ने देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने के बाद भी अपनी विनम्रता नहीं छोड़ी। इसका पहला प्रमाण हमें तब मिलता है, जब उपराष्ट्रपति निवास के अहाते में घूमते हुए वे माली के घर हो रहे कीर्तन में शामिल हो गए और अन्य श्रोताओं की तरह ही वे भी दरी पर बैठे रहे। कुर्सी लाने का आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि भगवान के घर में सभी बराबर होते हैं। इसका दूसरा प्रमाण तब देखने को मिला, जब पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरुगोविंद सिंह के संस्थान की नींव रखने का आमंत्रण पाने पर वे अभिभूत एवं कृतज्ञ हो उठे थे।

(ग) पटियाला के पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोबिंद सिंह संस्थान की नींव और अमृतसर में दरबार साहब की नींव का कार्य धार्मिक-सांप्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर मुसलमानों द्वारा कराया गया। यह वर्तमान में और भी प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि दोनों धर्मों के अनुयायियों का एक-दूसरे पर विश्वास घटता जा रहा है। आज देश में हिंदू-मुसलिम एकता की आवश्यकता बढ़ गई है।

(घ) डॉ० जाकिर हुसैन गांधी जी और उनके सिद्धांतों के समर्थक थे। उनका मानना था कि हमारी मूल्यवान पूँजी उस समय बरबाद हो उठेगी जब हम गांधी जी के विचारों को भुला बैठेंगे। इसका कारण यह है कि गांधी जी को देखने और उनके साथ काम करने वाले अब नहीं रहे। ऐसे में उनके सिद्धांतों और विचारों को अपनाने और जीवंत रखने की आवश्यकता बढ़ जाती है।

(ङ) शब्द संधि-विच्छेद

पदारूढ़ = पद + आरूढ़

आशीर्वाद = आशी: + वाद

(च) शब्द विपरीतार्थक शब्द

अज्ञों अवज्ञा

अतिम प्रथम

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 12

12. साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है? यदि हाँ तो किस मायने में? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग निर्माता हो पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अत: कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदल जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान युग में इंगला-पिंगला, सुषुम्ना, अनहद, नाद आदि पारिभाषिक शब्दावली मन में विशेष भावोत्तेजन नहीं करती। साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है।

उसकी श्रेष्ठता का युगयुगीन आधार है, वे जीवन-मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती है। पुराने साहित्य का केवल वही श्री-सौंदर्य हमारे ग्राहय होगा जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे अथवा स्थिति रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए। किंतु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब स्वांत:सुखाय काव्य रचना करते हैं तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंत:करण में संपूर्ण संसार की सुख-भावना एवं हित-कामना सन्निहित रहती है। जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक-जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) बदलते युग का साहित्य की प्रासंगिकता और शाश्वतता पर क्या प्रभाव पड़ता है? 2

(ग) पुराने साहित्य के प्रति अरुचि का क्या कारण है? 2

(घ) किसी साहित्य की श्रेष्ठता का आधार स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) तुलसीदास के काव्य की लोकप्रियता और श्रेष्ठता पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। 2

(च) विलोम बताइए — श्रेष्ठ, निरपेक्ष। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-साहित्य की प्रासंगिकता।

(ख) बदलते युग का साहित्य की शाश्वतता और प्रासंगिकता पर यह प्रभाव पड़ता है कि साहित्य

जिस काल और परिस्थिति में लिखा जाता है, उस समय वह अधिक प्रासंगिक होता है क्योंकि वह देश-काल की जरूरत और अन्य स्थितियों को ध्यान में रखकर लिखा जाता है परंतु समय बीतने पर परिस्थितियाँ भी बदलती जाती हैं और साहित्य की प्रासंगिकता कम होती जाती है। इसके अलावा तत्कालीन युग का निर्माता साहित्यकार वर्षों बाद की बदली परिस्थितियों का युग-निर्माता नहीं हो सकता है।

(ग) पुराने साहित्य के प्रति अरुचि का कारण यह है कि समय, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलने के साथ ही पाठकों की मानसिकता और अभिरुचि भी बदली रहती है। इसके अलावा कोई कविता अपने रचनाकाल के समय जैसी उत्तेजना उत्पन्न कर सकती थी, वैसी वह सामयिक परिस्थितियाँ बदलने पर नहीं कर पाती है। कालांतर में ऐसा साहित्य अरुचिकर हो जाता है।

(घ) किसी साहित्य की श्रेष्ठता का आधार है-वे जीवन-मूल्य तथा उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती है। इसके अलावा वह श्री-सौंदर्य भी साहित्य को श्रेष्ठ बनाता है, जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे या स्थिति-रक्षा में सहायक हो। यह आवश्यक नहीं है कि जो साहित्य आकर्षक हो, वह श्रेष्ठ भी हो।

(ङ) तुलसीदास किसी दबाव में आए बिना साहित्य सृजन करते थे। वे स्वांत: सुखाय काव्य रचना करते थे, फिर भी उनका यह अभिप्राय नहीं रहता था कि मानव-समाज के लिए वह रचना पूर्णतया उपयोगी हो। इसके अलावा उनके हृदय में संपूर्ण संसार की सुख-भावना एवं हित-कामना समाई रहती थी। यही भावना उनके काव्य को श्रेष्ठ एवं लोकप्रिय बनाए हुए है।

(च) निकृष्ट, सापेक्षा।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 13

13. भारतीय मनीषा ने कला, धर्म, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में नाना भाव से महत्वपूर्ण फल पाए हैं और भविष्य में र्माता के इशारों को समझकर ही हम अपनी योजना बनाएँ तो सफलता की आशा कर सकते हैं।भी महत्वपूर्ण फल पाने की योग्यता का परिचय वह दे चुकी है, परंतु भिन्न कारणों से समूची जनता एक ही धरातल पर नहीं है और सबकी चिंतन-दृष्टि भी एक नहीं है। जल्दी ही कोई फल पा लेने की आशा में अटकलपच्चू सिद्धांत कायम कर लेना और उसके आधार पर कार्यक्रम बनाना अभिष्ट सिद्ध में सब समय सहायक नहीं होगा। विकास की अलग-अलग सीढ़ियों पर खड़ी जनता के लिए नाना प्रकार के कार्यक्रम आवश्यक होंगे। उद्देश्य की एकता ही विविध कार्यक्रमों में एकता ला सकती है, परंतु इतना निश्चित है कि जब तक हमारे सामने उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो जाता, तब तक कोई भी कार्य. कितनी ही व्यापक शुभेच्छा के साथ क्यों न आरंभ किया जाए, वह फलदायक नहीं होगा। बहुत से लोग हिंदू-मुसलिम एकता को या हिदू-संघटन को ही लक्ष्य मानकर उपाय सोचने लगते हैं।

वस्तुत: हिदू-मुसलिम एकता भी साधन हैं, साध्य नहीं। साध्य है मनुष्य को पशु समान स्वार्थी धरातल से ऊपर उठाकर ‘मनुष्यता’ के आसन पर बैठाना। हिंदू और मुसलिम अगर मिलकर संसार में लूट-खसोट मचाने के लिए साम्राज्य स्थापित करने निकल पड़े तो उस हिंदू-मुसलिम मिलन से मनुष्यता काँप उठेगी। परंतु हिंदू-मुसलिम मिलन का उद्देश्य है मनुष्य को दासता, जड़ता, मोह, कुसंस्कार और परमुखापेक्षिता से बचाना, मनुष्य को क्षुद्र स्वार्थ और अहमिका की दुनिया से ऊपर

उठाकर सत्य, न्याय और औदार्य की दुनिया में ले जाना, मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण को हटाकर परस्पर सहयोगिता के पवित्र बंधन में बाँधना। मनुष्य का सामूहिक कल्याण ही हमारा लक्ष्य हो सकता है। वही मनुष्य का सर्वोत्तम प्राप्य है। आर्य, द्रविड़, शक, नाग आदि जातियों के सैकड़ों वर्षों के संघर्ष के बाद हिंदू दृष्टिकोण बना है। नए सिरे से भारतीय दृष्टिकोण बनाने के लिए इतने लंबे अरसे की जरूरत नहीं है। आज हम इतिहास को अधिक यथार्थ ढंग से समझ सकते हैं और तदनुकूल अपने विकास की योजना बना सकते हैं। धैर्य हमें कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इतिहास नि

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) भारतीय जनता के समुचित विकास के लिए अलग-अलग कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता क्यों हैं? 2

(ग) 'हिंदू-मुसलिम एकता भी साधन है, साध्य नहीं'-ऐसा लेखक ने क्यों कहा है? 2

(घ) हिंदू-मुसलिम ऐक्य मानवता के लिए कब घातक हो सकता है? हिंदू-मुसलिम एकता का उददेश्य क्या होना चाहिए? 2

(ङ) सफलता पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? 2

(च) संधि विचौडैद करो – शुभेच्छा, सर्वोत्तमा 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-हिंदू-मुसलिम ऐक्य।

(ख) भारतीय जनता के समुचित विकास के लिए अलग-अलग कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि ऐसे अनेकानेक कारण हैं, जिनसे भारतीय जनता की आवश्यकताएँ और स्तर अलग-अलग हैं। वे एक धरातल पर नहीं हैं। उनकी चिंतन दृष्टि में भी एकता नहीं है। उस कारण जल्दबाजी में सभी के लिए कोई एक कार्यक्रम बना लेने से अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

(ग) 'हिंदू-मुस्लिम एकता भी साधन है, साध्य नहीं" लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि बहुत से लोग हिंदू-मुस्लिम एकता या हिंदू संगठन को लक्ष्य मान बैठते हैं और इस एकीकरण का उपाय सोचने लगते हैं, जबकि यह एकता साधन मात्र है साध्य नहीं। वास्तव में मनुष्य में पशुओं जैसी स्वार्थी सोच समाप्त कर, परोपकार की भावना जगाते हुए मनुष्यता के आसन पर प्रतिष्ठित करना ही साध्य है।

(घ) हिंदू-मुस्लिम ऐक्य मानवता के लिए तब घातक हो सकता है, जब हिंदू और मुस्लिम एक' होकर संसार में लूट-खसोट मचाने के लिए साम्राज्य स्थापित करना शुरू कर दें। इससे मनुष्यता का अहित होगा। हिंदू-मुस्लिम एकता का उद्देश्य होना चाहिए-मनुष्य को दासता, जड़ता, मोह, कुसंस्कार और परमुखापेक्षिता से बचाना, मनुष्य को क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठाकर सत्य, न्याय और औदार्य की दुनिया में ले जाना, मनुष्य को शोषण से बचाना और सहयोगभाव उत्पन्न करना।

(ङ) सफलता पाने के लिए हमें नए भारतीय दृष्टिकोण बनाने चाहिए। यह कार्य आसानी से किया जा सकता है क्योंकि अब भारतीयों में इतिहास को समझने की दृष्टि विकसित हो गई है। इतिहास

की इसी समझ के साथ हम नई योजनाएँ बना सकते हैं। इसके अलावा इतिहास-निर्माताओं के संकेतों को समझकर योजनाएँ बनाने से सफलता पाई जा सकती है।

(च) शब्द संधि-विच्छेद

शुभेच्छा = शुभ + इच्छा

सवत्तम = सर्व + उत्तम।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 14

14. हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कसकर चलने की आदत डालें, यह बहुत उचित है, बहुत सुंदर है, पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि हम अपने देश की भीतरी दशा को ठीक-ठाक न समझ लें और उसे हमेशा अपने सामने न रखें। हमारे देश को दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है। एक शक्ति-बोध और दूसरा सौंदर्य-बोध! बस, हम यह समझ लें कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमजोरी की भावना को बल दे या कुरुचि की भावना की। "जरा अपनी बात को और स्पष्ट कर दीजिए।" यह आपकी राय और मैं इससे बहुत ही खुश हूँ कि आप मुझसे यह स्पष्टता माँग रहे हैं। क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिरखानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर-बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और यह गड़बड़ है, वह परेशानी है? साथ ही क्या इन स्थानों में या इसी तरह के दूसरे स्थानों में आप कभी अपने देश के साथ दूसरे देशों की तुलना करते हैं और इस तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देशों को श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं? यदि इन प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' है, तो आप देश के शक्ति बोध को भयंकर चोट पहुँचा रहे हैं और आपके हाथों देश के सामूहिक मानसिक बल का ह्रास हो रहा है।

सुनी है आपने शल्य की बात! वह महाबली कर्ण का सारथी था। जब भी कर्ण अपने पक्ष की विजय की घोषणा करता, हुंकार भरता, वह अर्जुन की अजेयता का एक हल्का-सा उल्लेख कर देता। बार-बार इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्मविश्वास में संदेह की तरेड़ डाल दी, जो उसकी भावी पराजय की नींव रखने में सफल हो गई। अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते, तो मैं आपसे दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं! अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? मुँह से गंदे शब्दों में गंदे भाव प्रकट करते हैं? इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं, अपना घर, दफ्तर, गली गंदी रखते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर समय से लेट पहुँचते हैं या वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है? यदि आपका उत्तर हाँ है, तो आपके द्वारा देश के सौंदर्य-बोध को भयंकर आघात लग रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

प्रश्न

(क) 'अपने कार्यों को देश की कसौटी पर कसकर करने' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) व्यक्ति अपने देश के शक्ति-बोध को किस प्रकार चोट पहुँचाता है? 2

(ग) कर्ण की पराजय में शल्य ने किस प्रकार सहयोग दिया? 2

(घ) हम अपने देश के सौंदर्य-बोध को किस प्रकार आघात पहुँचाते हैं? 2

(ङ) उपर्युक्त गदयांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(च) संस्कृति, उल्लेख – संधि-विच्छेद कीजिए। 1

उत्तर –

(क) हमें ऐसे कार्यों को नहीं करना चाहिए, जिससे अपने देश का किसी प्रकार से अहित हो। हमारे द्वारा किया गया कार्य उचित है या अनुचित या हम जाने-अनजाने कोई ऐसा कार्य तो नहीं कर रहे हैं जो देश में कमजोरी और कुरुचि की भावना को बढ़ावा दे रहा है, इस पर विचार कर लेना चाहिए। इस कसौटी पर खरा होने पर अर्थात् हमारे द्वारा किया जो कार्य देश हित में है, उसी को करना उचित है।

(ख) जो व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों-रेलों, मुसाफिर-खानों, क्लबों, चौपालों, मोटर-बसों आदि पर अपनी देश की कमियों का रोना रोते हैं तथा देश की परेशानियों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं और अपने देश की तुलना अन्य देशों से करके अपने देश को हीन सिद्ध करता है, वे अपने देश के शक्ति-बोध को चोट पहुँचाते हैं।

(ग) महाभारत के युद्ध में कर्ण जब अपने पक्ष की विजय की घोषणा करता या अपने बल-पौरुष का उल्लेख करता उसी समय उसका सारथी शल्य बार-बार अर्जुन की अजेयता का उल्लेख कर कर्ण के आत्मविश्वास की कम करता था। इस प्रकार शल्य ने कर्ण की पराजय में सहयोग दिया।

(घ) यदि केले के छिलके रास्ते में फेंकते हैं, घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं, होटलों, धर्मशालाओं में, अन्य ऐसे स्थानों में पीक थूकते हैं या किसी उत्सव में निमंत्रित होने पर लेट पहुँचते हैं या वचन देकर किसी से समय पर मिलते नहीं हैं तो अपने देश के सौदर्य बोध को चोट पहुँचाते हैं।

(ङ) शीर्षक-हम और हमारा देश / हमारा देश और हमारा दायित्व।

(च) संस्कृति – सम् + कृति

उल्लेख – उत् + लेख

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 15

15. स्वतंत्र व्यवसाय की अर्थनीति के नए वैश्विक वातावरण ने विदेशी पूँजी निवेश को खुली छूट दे रखी है जिसके कारण दूरदर्शन में ऐसे विज्ञापनों की भरमार हो गई है जो उन्मुक्त वासना, हिंसा, अपराध, लालच और ईर्ष्यां जैसे मानव की हीनतम प्रवृत्तियों को आधार मानकर चल रहे हैं। अत्यंत खेद का विषय है कि राष्ट्रीय दूरदर्शन ने भी उनकी भौंडी नकल की ठान ली है। के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, सुनाया जा रहा है, उससे भारतीय जीवन मूल्यों का दूर का भी रिश्ता नहीं है, वे सत्य से भी कोसों दूर हैं। नयी पीढ़ी जो स्वयं में रचनात्मक गुणों के विकास करने की जगह दूरदर्शन के सामने बैठकर कुछ सीखना, जानना और मनोरंजन करना चाहती है, उसका भगवान ही मालिक है। जो असत्य है, वह सत्य नहीं हो सकता। समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही। आज यह मजबूरी हो गई है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले वासनायुक्त अश्लील दृश्यों से चार पीढ़ियाँ एक साथ आँखें चार कर रही हैं। नतीजा सामने है। बलात्कार, अपहरण, छोटी बच्चियों के साथ निकट संबंधियों द्वारा शर्मनाक यौनाचार की घटनाओं में वृद्ध। दुमक कर चलते शिशु दूरदर्शन पर दिखाए और सुनाए जा रहे स्वर और भगिमाओं पर

अपनी कमर लचकाने लगे हैं। ऐसे कार्यक्रम न शिव हैं, न समाज को शिव बनाने की शक्ति है इनमें। फिर जो शिव नहीं, वह सुंदर कैसे हो सकता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) नयी आर्थिक व्यवस्था से भारतीय दूरदर्शन किस तरह प्रभावित है? 2

(ग) नयी आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या हो रहा है? 2

(घ) अर्थनीति के नए वैश्विक वातावरण से लेखक का क्या तात्पर्य है? 2

(ङ) 'समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही'। इसका अर्थ स्पष्ट करते समाज पर इसके कुप्रभाव को स्पष्ट कीजिए। 2

(च) उपसर्ग/प्रत्यय पृथककर मूलशब्द बताइए – अपहरण, विदेशी। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-भारतीय दूरदर्शन की अनर्थकारी भूमिका।

(ख) नयी आर्थिक व्यवस्था से भारतीय दूरदर्शन बुरी तरह प्रभावित है। इसमें हिंसा, यौनाचार, बलात्कार, अपहरण आदि मानव की हीन वृत्तियों से संबंधित कार्यक्रमों की बहुलता है। इस पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं हैं जो नई पीढ़ी पर बुरा असर डाल रहे हैं। ,

(ग) नयी आर्थिक नीति से दूरदर्शन पर विज्ञापनों की बाढ़-सी आ गई है, जो हिंसा, अपराध, वासना, ईर्ष्या आदि पर आधारित होते हैं। इसके अलावा इस पर आधुनिकता के नाम पर जो कुछ दिखाया जाता है, वह सत्य और भारतीय जीवन से दूर है। इससे रचनात्मकता का ह्रास तथा पाश्चात्य जीवनमूल्यों का विकासशील देशों में व्यापक प्रचार हो रहा है।

(घ) इसका अर्थ है कि आर्थिक नीति में राष्ट्रीय प्रतिबंधों को हटाकर उसका उदारीकरण जिससे कोई देश अन्य किसी देश में व्यवसाय करने, उद्योग लगाने आदि आर्थिक कार्यक्रमों में स्वतंत्र हो। इस नीति का एकमात्र उद्देश्य अधिकाधिक धन कमाना ही रह गया है।

(ङ) इसका अर्थ है-भारतीय दूरदर्शन अपने 'सत्यम्, शिवम् व सुंदरम्' के आदर्श को भूलकर सामाजिक जीवन की विकृत कर रहा है। दूरदर्शन पर दर्शाए जा रहे वासनायुक्त अश्लील दृश्यों के कारण समाज बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इससे बलात्कार, अपहरण, अल्पायु लड़कियों के साथ यौनाचार जैसी घृणित घटनाओं में वृद्ध हुई है जो समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है।

(च)

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
अपहरा	अप	हरण	x
विदेशी	वि	देश	ई

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 16

16. संस्कृति और सभ्यता-ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी

उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति इस सबसे कहीं बारीक चीज है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है, मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन चीज है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है।

मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं-यह हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छह विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। अगर ये विकार बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाए। इसलिए आदमी इन विचारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृतियों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) 'सभ्यता' का अर्थ और इसकी पहचान बताइए। 2

(ग) संस्कृति से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 2

(घ) मनुष्य के अंदर कौन-कौन से विकार हैं? इन विकारों और संस्कृति में क्या विरोधाभास है? 2

(ङ) संक्क स्वाभाव बताते एस्ट कएि कि साक्क रूपा से कि वेश्यों को भी सहा जाता है? 2

(च) उपसर्ग बताइए — उन्नति, संस्कृति। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-सभ्यता और संस्कृति।

(ख) 'सभ्यता' का अर्थ है-मानव के भौतिक विकास का विधायक गुण। सभ्यता के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी बाहरी उन्नति करता है। किसी देश में भौतिक विकास के विभिन्न साधन, जैसे-रेलगाड़ियाँ, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन, अच्छी पोशाकें, संचार के उन्नत साधन आदि देखकर किसी देश की सभ्यता की पहचान की जा सकती है।

(ग) 'संस्कृति' का अभिप्राय है-मानव की आत्मिक उन्नति का संवर्धक आंतरिक गुण। संस्कृति से व्यक्ति अपनी भीतरी उन्नति करता है और करुणा, प्रेम, परोपकार जैसे उच्च मानवीय गुण सीखता है। संस्कृति बारीक चीज है, गुण है, विनय और विनम्रता है जो व्यक्ति के भीतर छिपी होती है और

मोटे तौर पर दिखाई नहीं देती है। संस्कृति हमारी हर आदत और पसंद में छिपी होती है।
(घ) मनुष्य के अंदर प्रकृतिप्रदत्त छह मनोविकार हैं-काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और मत्सर। इन विकारों पर रोक न लगाने से मनुष्य अपनी मनुष्यता खो बैठता है। ऐसे में उसमें और पशुओं में कोई अंतर नहीं रह जाता है। अपनी मनुष्यता बनाए रखने के लिए मनुष्य इन पर रोक लगाता है। इन विकारों और संस्कृति में विरोधाभास यह है कि इन पर अकुश लगाकर जितना ही रोका जाता है. संस्कृति उतनी ही बढ़ती है।
(ङ) संस्कृति का स्वभाव यह है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। दो देश या जातियों के लोगों के मिलन से उनकी संस्कृतियाँ प्रभावित होती हैं। इसी प्रभाव के कारण उन देशों को सांस्कृतिक रूप से अधिक धनी समझा जाता है, जिन्होंने अधिकाधिक देशों के साथ मेल-जोल किया और उन देशों एवं जातियों की संस्कृतियों की अच्छाइयों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति को समृद्धशाली बनाया।
(च) उत्, सम्।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 17

17. विधाता-रचित इस सृष्टि का सिरमौर है-मनुष्य। उसकी कारीगरी का सर्वोत्तम नमूना। इस मानव को ब्रहमांड का लघु रूप मानकर भारतीय दार्शनिकों ने 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' की कल्पना की थी। उनकी यह कल्पना मात्र कल्पना नहीं थी, प्रत्युत यथार्थ भी थी, क्योंकि मानव-मन में जो विचारना के रूप में घटित होता है, उसी का कृति रूप ही तो सृष्टि है। मन तो मन, मानव का शरीर भी अप्रतिम है। देखने में इससे भव्य, आकर्षक एवं लावण्यमय रूप सृष्टि में अन्यत्र कहाँ है? अद्भुत एवं अद्वतीय है- मानव-सौंदर्य साहित्यकारों ने इसके रूप-सौंदर्य के वर्णन के लिए कितने ही अप्रस्तुतों का विधान किया है और इस सौंदर्य-राशि से सभी को आप्यायित करने के लिए अनेक काव्य सृष्टियाँ रच डाली हैं।
साहित्यशास्त्रियों ने भी इसी मानव की भावनाओं का विवेचन करते हुए अनेक रसों का निरूपण किया है परंतु वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाए तो मानव-शरीर को एक जटिल यंत्र से उपमित किया जा सकता है। जिस प्रकार यंत्र के एक पुर्जे में दोष आ जाने पर सारा यंत्र गड़बड़ा जाता है, बेकार हो जाता है उसी प्रकार मानव-शरीर के विभिन्न अवयवों में से यदि कोई एक अवयव भी बिगड़ जाता है तो उसका प्रभाव सारे शरीर पर पड़ता है। इतना ही नहीं, गुर्दे जैसे कोमल एवं नाजुक हिस्से के खराब हो जाने से यह गतिशील वपुयंत्र एकाएक अवरुद्ध हो सकता है, व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। एक अंग के विकृत होने पर सारा शरीर दंडित हो, वह कालकवलित हो जाए- यह विचारणीय है।
यदि किसी यंत्र के पुर्जे को बदलकर उसके स्थान पर नया पुर्जा लगाकर यंत्र को पूर्ववत सुचारु एवं व्यवस्थित रूप से क्रियाशील बनाया जा सकता है तो शरीर के विकृत अग के स्थान पर नव्य निरामय अंग लगाकर शरीर को स्वस्थ एवं सामान्य क्यों नहीं बनाया जा सकता? शल्य-चिकित्सकों ने इस दायित्वपूर्ण चुनौती को स्वीकार किया तथा निरंतर अध्यवसाय पूर्णसाधना के अनंतर अंग-प्रत्यारोपण के क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। अंग-प्रत्यारोपण का उद्देश्य है कि मनुष्य दीर्घायु प्राप्त कर सके। यहाँ यह ध्यातव्य है कि मानव-शरीर हर किसी के अंग को उसी प्रकार स्वीकार नहीं करता, जिस प्रकार हर किसी का रक्त उसे स्वीकार्य नहीं होता। रोगी को रक्त देने से पूर्व रक्त-वर्ग का परीक्षण अत्यावश्यक है, तो अंग-प्रत्यारोपण से पूर्व ऊतक-परीक्षण अनिवार्य है।

आज का शल्य-चिकित्सक गुर्दे, यकृत, आँत, फेफड़े और हृदय का प्रत्यारोपण सफलता पूर्वक कर रहा है। साधन-संपन्न चिकित्सालयों में मस्तिष्क के अतिरिक्त शरीर के प्राय: सभी अंगों का प्रत्यारोपण संभव हो गया है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) मानव के प्रति भारतीय दार्शनिकों की कल्पना स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसे सृष्टि का लघु रूप क्यों कहा गया है? 2

(ग) मानव शरीर के प्रति एक साहित्यकार और वैज्ञानिक के दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2

(घ) मानव शरीर को 'मशीन' की संज्ञा क्यों दी गई है? 2

(ङ) शल्य चिकित्सक का मुख्य ध्येय बताते हुए अंग-प्रत्यारोपण की सफलता के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 2

(च) पर्याय लिखिए – लावण्यमय, निरामय। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-मानव अंग प्रत्यारोपण।

(ख) भारतीय दार्शनिकों ने मानव को ब्रह्मांड का लघु रूप मानते हुए यह कल्पना की थी कि 'यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे।' उनकी यह कल्पना यथार्थ भी थी क्योंकि मानव के मन में जो कुछ सोच-विचार के रूप में घटित होता है, वही सृष्टि में भी घटित होता है। यही कारण है कि मानव को सृष्टि का लघुरूप कहा गया है।

(ग) एक साहित्यकार मानव-शरीर को अद्भुत एवं अद्वतीय, भव्य, आकर्षक एवं लावण्यमयी सौंदर्य-राशि बताया है। वह शरीर को भावनात्मक दृष्टि से देखता है। उसने मानव-शरीर के इसी सौंदर्य-वर्णन के लिए अनेक काव्य-सृष्टियों की रचना की। इसके विपरीत एक वैज्ञानिक ने मानव-शरीर को एक जटिल यंत्र माना है। उसकी दृष्टि में भावना की जगह यांत्रिकता होती है।

(घ) मानव-शरीर को 'मशीन' की संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि जिस प्रकार मशीन के एक पुर्जे में दोष आ जाने से सारी मशीन गड़बड़ाकर बेकार हो जाती है, उसी प्रकार मानव-शरीर के विभिन्न अवयवों में से एक भी अवयव के बेकार हो जाने पर, उसका प्रभाव सारे शरीर पर पड़ता है। उदाहरणस्वरूप गुर्दे जैसे कोमल एवं नाजुक अंग के खराब होने से गतिशील शरीर अवरुद्ध हो जाता है और व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है।

(ङ) शल्य चिकित्सक का मुख्य ध्येय है-शरीर के विकृत अंग को निकालकर उसके स्थान पर नव्य निरामय अंग लगाकर शरीर को स्वस्थ एवं सामान्य बनाते हुए मनुष्य को दीर्घायु बनाना। अंग-प्रत्यारोपण को सफल बनाने के लिए निरंतर अध्यवसायपूर्ण साधना की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त अंग-प्रत्यारोपण से पूर्व ऊतक परीक्षण अनिवार्य है ताकि यह देखा जा सके कि हमारा शरीर उस नए अंग को स्वीकार कर रहा है या नहीं।

(च)

शब्द	पर्याय
लावण्यमय	सौंदर्ययुक्त
निरामय	नीरोग

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 18

18. हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता जनसंख्या वृद्ध रोकना है। इस क्षेत्र में हमारे सभी प्रयत्न निष्फल रहे हैं। ऐसा क्यों है? यह इसलिए भी हो सकता है कि समस्या को देखने का हर एक का एक अलग नजरिया है। जनसंख्या शास्त्रियों के लिए यह आँकड़ों का अंबार है। अफसरशाही के लिए यह टार्गेट तय करने की कवायद है। राजनीतिज्ञ इसे वोट बैंक की दृष्टि से देखता है। ये सब अपने-अपने ढंग से समस्या को सुलझाने में लगे हैं। अत: अलग-अलग किसी के हाथ सफलता नहीं लगी। पर यह स्पष्ट है कि परिवार के आकार पर आर्थिक विकास और शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ता है। यहाँ आर्थिक विकास का मतलब पाश्चात्य मतानुसार भौतिकवाद नहीं जहाँ बच्चों को बोझ माना जाता है। हमारे लिए तो यह सम्मानपूर्वक जीने के स्तर से संबंधित है। यह मौजूदा संपत्ति के समतामूलक विवरण पर ही निर्भर नहीं है वरन् ऐसी शैली अपनाने से संबंधित है जिसमें अस्सी करोड़ लोगों की ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल हो सके। इसी प्रकार स्त्री-शिक्षा भी है। यह समाज में एक नए प्रकार का चिंतन पैदा करेगी जिससे सामाजिक और आर्थिक विकास के नए आयाम खुलेंगे और साथ ही बच्चों के विकास का नया रास्ता भी खुलेगा। अत: जनसंख्या की समस्या सामाजिक है। यह अकेले सरकार नहीं सुलझा सकती। केंद्रीकरण से हटकर इसे ग्राम-ग्राम, व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचाना होगा। जब तक यह जन-आदोलन नहीं बन जाता तब तक सफलता मिलना संदिग्ध है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता क्या है? और क्यों? 2

(ग) जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों की असफलता का कारण बताइए। 2

(घ) स्त्री-शिक्षा का लाभ कहाँ उठाया जा सकता है? और कैसे? 2

(ङ) जनसंख्या समस्या के प्रति हमारे दृष्टिकोण में किस बदलाव की जरूरत है तथा इसे रोकने के लिए क्या कदम उठाया जाना चाहिए? 2

(च) प्रत्यय पृथककर मूल शब्द भी बताइए – प्राथमिकता, भौतिकवाद। 1

उत्तर –

(ङ) शीर्षक-जनसंख्या पर नियंत्रण।

(ख) हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता जनसंख्या वृद्ध रोकना है। इसका कारण यह है कि जनसंख्या की भयावह वृद्ध परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हो रही है। यह पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति में बाधक सिद्ध हो रही है। जनसंख्या वृद्ध अनेकानेक समस्याओं की जननी है। यह गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य, संचार तथा आवश्यक सुविधाओं में कमी का कारण बनती है। इसके अलावा यह प्राकृतिक असंतुलन की जड़ बनती है।

(ग) जनसंख्या नियंत्रण के लिए अनेक प्रयास किए गए, पर वे विफल साबित हुए। इसका मुख्य कारण है-जनसंख्या की समस्या के प्रति लोगों की सोच एक जैसी न होना। जनसंख्याशास्त्री इसे आँकड़ों का ढेर मानते हैं तो अफसरशाही के लिए यह लक्ष्य तय करने की नियमावली है तो राजनीतिज्ञ इसे अपना वोट बैंक समझते हैं। ये लोग इसे अपने-अपने ढंग से सुलझाने का प्रयास करते हैं।

(घ) स्त्री-शिक्षा का सर्वाधिक लाभ सामाजिक सोच में बदलाव लाने के लिए उठाया जा सकता है।

शिक्षित लड़कियों की सोच में अशिक्षित लड़कियों की सोच से अंतर होता है। वे रुढ़िवादी और दकियानूसी बातों का विरोध करती हैं तथा बच्चों को ईश्वर की देन नहीं मानती हैं। इसके अलावा वे यह भी जानती हैं कि बच्चे कम होने पर ही उन्हें पढ़ा-लिखाकर सुयोग्य और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इससे सामाजिक और आर्थिक विकास के नए आयाम खुलेंगे।

(ङ) जनसंख्या की समस्या के समाधान के लिए लोगों को अपने रूढ़िवादी और दकियानूसी दृष्टिकोण त्यागकर इसके कारण, इसके दुष्प्रभाव और इसे हल करने संबंधी नए एवं प्रासंगिक दृष्टिकोण अपनाने होंगे। इस सामाजिक समस्या को हल करने के लिए सरकार और जनता दोनों को आगे आना होगा। यह समस्या लगभग हर व्यक्ति से जुड़ी है, अत: जन-आदोलन बनाकर ही इस समस्या को हल किया जा सकता है।

(च)

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
प्राथमिकता	प्रथम	इक, ता
भौतिकवाद	भूत	इक, वाद

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 19

19. विविध धर्म एक ही जगह पहुँचाने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। एक ही जगह पहुँचने के लिए हम अलग-अलग रास्तों से चलें तो इसमें दुख का कोई कारण नहीं है। सच पूछो तो जितने मनुष्य हैं उतने ही धर्म भी हैं। हमें सभी धर्मों के प्रति समभाव रखना चाहिए। इसमें अपने धर्म के प्रति उदासीनता आती हो, ऐसी बात नहीं, बल्कि अपने धर्म पर जो प्रेम है उसकी अंधता मिटती है। इस तरह वह प्रेम ज्ञानमय और ज्यादा सात्विक तथा निर्मल बनता है। मैं इस विश्वास से सहमत नहीं हूँ कि पृथ्वी पर एक धर्म हो सकता है या होगा। इसलिए मैं विविध धर्मों में पाया जाने वाला तत्व खोजने की और इस बात को पैदा करने की कि विविध धर्मावलंबी एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव रखें, कोशिश कर रहा हूँ। मेरी सम्मति है कि संसार के धर्मग्रंथों को सहानुभूतिपूर्वक पढ़ना प्रत्येक सभ्य पुरुष और स्त्री का कर्तव्य है। अगर हमें दूसरे धर्मों का वैसा आदर करना है जैसा हम उनसे अपने धर्म का कराना चाहते हैं तो संसार के सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करना हमारा एक पवित्र कर्म हो जाता है।

दूसरे धर्मों के आदरपूर्ण अध्ययन से हिंदू धर्मग्रंथों के प्रति मेरी श्रद्धा कम नहीं हुई। सच तो यह है कि हिंदू शास्त्रों की मेरी समझ पर उनकी गहरी छाप पड़ी है। उन्होंने मेरी जीवन-दृष्टि को विशाल बनाया है। सत्य के अनेक रूप होते हैं, इस सिद्धांत को मैं बहुत पसंद करता हूँ। इसी सिद्धांत ने मुझे, एक मुसलमान को उसके अपने दृष्टिकोण से और ईसाई को उसके स्वयं के दृष्टिकोण से समझना सिखाया है। जिन अंधों ने हाथी का अलग-अलग तरह से वर्णन किया वे सब अपनी दृष्टि से ठीक थे। एक दूसरे की दृष्टि से सब गलत थे और जो आदमी हाथी को जानता था उसकी दृष्टि से सही भी थे और गलत भी थे। जब तक अलग-अलग धर्म मौजूद हैं तब तक प्रत्येक धर्म को किसी विशेष बाहय चिहन की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन जब बाहय चिहन केवल आडंबर बन जाते हैं अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्मों से अलग बताने के काम आते हैं तब वे त्याज्य हो जाते हैं। धर्मों के भ्रातृ-मंडल का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह एक हिंदू को अधिक अच्छा हिंदू, एक 'मुसलमान को अधिक अच्छा मुसलमान और एक ईसाई को अधिक अच्छा ईसाई बनाने में मदद करे। दूसरों के लिए हमारी प्रार्थना यह नहीं होनी चाहिए-ईश्वर, तू उन्हें वही प्रकाश दे जो तूने मुझे दिया है, बल्कि यह होनी चाहिए-तू उन्हें वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए

आवश्यकता है।

प्रश्न

(क) हम धर्मों के प्रति स्वस्थ वृष्टिकोण कैसे अपना सकते हैं? इससे हमें क्या लाभ होंगे? 2

(ख) अन्य धर्मों के अध्ययन से लेखक की जीवन-दृष्टि में क्या बदलाव आया? 2

(ग) धर्म के बाहय चिह्नों के बारे में लेखक का क्या विचार है? ये धर्म चिहन कब त्याज्य बन जाते हैं? 2

(घ) लेखक दवारा की जाने वाली प्रार्थना जनसाधारण की प्रार्थना से कैसे अलग होती है? 2

(ङ) हिंदू, पुरुष – भाववाचक संज्ञा बताइए। 1

(च) सहिष्णुता, निर्मल – विलोम शब्द लिखिए। 1

उत्तर –

(क) हम धर्मों के प्रति समभाव रखकर स्वस्थ दृष्टिकोण अपना सकते हैं। ऐसा नहीं है कि इससे हम अपने धर्म के प्रति उदासीन होंगे, बल्कि अपने धर्म के प्रति अंधविश्वास तथा उसमें छिपी रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ मिटती हैं और अपने धर्म के प्रति प्रेम अधिक सात्विक और निर्मल बन जाता है।

(ख) अन्य धर्मों के अध्ययन से लेखक की हिंदू-धर्म के प्रति श्रद्धा यथावत बनी रही। इसके अलावा हिंदू शास्त्रों की समझ ने उसकी जीवन-दृष्टि को अधिक विशाल तथा उदार बनाया है। इससे वह अधिक धर्मसहिष्णु बन गया और अन्य धर्मों का आदर करने लगा।

(ग) धर्म के बाहय चिहनों के बारे में लेखक का विचार है कि अलग-अलग धर्मों के लिए अलग-अलग बाहय चिहनों की आवश्यकता पड़ सकती है। यही बाहय चिहन जब दूसरे धर्मों से अलगाव के प्रतीक तथा आडंबर मात्र बनकर रह जाते हैं, तब ये त्याज्य बन जाते हैं।

(घ) लेखक द्वारा की जाने वाली प्रार्थना में दूसरों के कल्याण की भावना ही निहित नहीं होती है, बल्कि वह उनके सर्वोच्च विकास के लिए प्रकाश की कामना करता है। इसके विपरीत जनसाधारण अपनी प्रार्थना के माध्यम से अपने ही कल्याण की कामना करते हैं। इस प्रकार यह प्रार्थना जनसाधारण की प्रार्थना से अलग होती है।

(ङ) हिंदुत्व, पौरुष।

(च) कट्टरता, मलिन।

अपठित गद्यांश for Class 11 Hindi Example 20

20. प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की ही उपास्या है। दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते हैं, किंतु दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाहय रूप का अवलोकन करता और सत्य की खोज करता है. परंतु कवि बाह्य रूप पर मुग्ध होकर भावों का तादात्म्य स्थापित करता है; वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षम्भ भी करता है। चंद्र को देखकर उसके मस्तिष्क में अनेक विचार उठते हैं। इसका तापक्रम क्या है, कितने वर्षों में वह पूर्णत: शीतल हो जाएगा। ज्वार-भाटे पर इसका क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार और किस गति से वह सौर-मंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्वों से इसका निर्माण हुआ है।

वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहराता हैं और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवनधारियों की खोज करता है। इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का और वर्ग विभाजन की प्रधानता रहती है। वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है। कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है। वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव-चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य और भावना के संबंध पर बल देता है। वह नग्न सत्य का उपासक नहीं होता। उसका वस्तु वर्णन हृदय की प्रेरणा का परिणाम होता है, वैज्ञानिक की भाँति मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया नहीं।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) प्रकृति के प्रति कवि एवं वैज्ञानिक के दृष्टिकोण किस प्रकार भिन्न-भिन्न हैं?'

(ग) वैज्ञानिक चंद्रमा का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए क्या-क्या जानने का प्रयास करता है?

(घ) कवि प्रकृति के साथ कैसा संबंध स्थापित करता है? चंद्रमा के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ङ) कवि की कविता किन स्थितियों में मुखरित हो उठती हैं?

(च) उपसर्ग और प्रत्यय पृथककर मूल शब्द बताइए – प्रस्फुटित, अवलोकना

उत्तर –

(क) शीर्षक-प्रकृति, कवि और वैज्ञानिक।

(ख) यद्यपि कवि एवं वैज्ञानिक दोनों ही प्रकृति की उपासना करते हैं, पर दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वे दोनों ही प्रकृति से निकट संबंध स्थापित करते हैं, पर उनका ढंग अलग होता है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाहय रूप का अवलोकन करता हुआ सत्य की खोज करता है परंतु कवि प्रकृति के बाहय रूप पर मुग्ध होकर भावों का तादात्म्य स्थापित करता है।

(ग) चंद्रमा का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए वैज्ञानिक निम्नलिखित तथ्यों को जानने का प्रयास करता है

1. चंद्रमा का तापमान क्या है तथा वह कितने वर्षों में शीतल हो जाएगा।

2. इस पर ज्वार-भाटे का क्या प्रभाव होगा।

3. वह किस गति से सौर-मंडल में परिक्रमा करता है।

4. उसका निर्माण किन तत्वों से हुआ है तथा वहाँ स्थित ज्वालामुखी पर्वतों और जीवधारियों के बारे में जानने का प्रयास करता है।

(घ) कवि प्रकृति के साथ भावपूर्ण संबंध स्थापित करता है। वह प्रकृति के बाहय रूप-रंग पर मुग्ध हो जाता है। वह वैज्ञानिक जैसा सूक्ष्म निरीक्षण नहीं करता है। एक कवि जब चंद्रमा को देखता है तो उसके आकार और सुंदरता पर मुग्ध हो जाता है। वह अन्य सुंदर वस्तुओं से उसकी तुलना करते हुए उसे अपनी कृतियों का वण्र्य विषय बनाता है और नाना प्रकार से उसका वर्णन करता है।

(ङ) कवि प्रकृति की विभिन्न सुंदर वस्तुओं के साथ भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव-चेतना का अनुभव करके उसके साथ आतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य

और भावना के संबंध पर बल देता है। उसके हृदय में वस्तु-वर्णन की प्रेरणा उमड़ने लगती है। इस प्रकार प्रत्यावलोकन से कविता मुखरित हो उठती है।

(च) शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
प्रस्फुटित	प्र	स्फुटन	इत
अवलोकन	अव	लोक	अन

21. यह हमारी एकता का ही प्रमाण है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाइए, आपको जगह-जगह पर एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे, एक ही तरह के आदमियों से मुलाकात होगी जो चंदन लगाते हैं, स्नान-पूजा करते हैं. तीर्थ-व्रत में विश्वास करते हैं अथवा जो नयी रोशनी को अपना लेने के कारण इन बातों को कुछ शंका की दृष्टि से देखते हैं। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की उनकी जो दृष्टि है, वही स्वभाव और वही दृष्टि दक्षिण वालों की भी है। भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक-दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं। असल में भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं।

वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आजादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लियामेंट और शासन-विधान भी एक है। और जो बात हिंदुओं के बारे में कही जा रही है, वही बहुत दूर तक मुसलमानों के बारे में भी कही जा सकती है। देश के सभी कोनों में बसने वाले मुसलमानों के भीतर जहाँ एक धर्म को लेकर एक तरह की आपसी एकता है, वहाँ वे संस्कृति की दृष्टि से हिंदुओं के भी बहुत करीब हैं, क्योंकि ज्यादा मुसलमान तो ऐसे ही हैं, जिनके पूर्वज हिंदू थे और जो इस्लाम-धर्म में जाने के समय अपनी हिंदू-आदतें अपने साथ ले गए।

इसके सिवा अनेक सदियों तक हिंदू-मुसलमान साथ रहते आए हैं और इस लंबी संगति के फलस्वरूप उनके बीच संस्कृति और तहज़ीब की बहुत-सी समान बातें पैदा हो गई हैं जो उन्हें दिनों-दिन आपस में नजदीक लाती जा रही हैं। धार्मिक विश्वास की एकता मनुष्यों की सांस्कृतिक एकता को जरूर पुष्ट करती है। इस दृष्टि से एक तरह की एकता तो वह है जो हिंदू समाज में मिलेगी। लेकिन धर्म के केंद्र से बाहर जो संस्कृति की विशाल परिधि है, उसके भीतर बसने वाले सभी भारतीयों के बीच एक तरह की सांस्कृतिक एकता भी है जो उन्हें दूसरे देशों के लोगों से अलग करती है। संसार के हर एक देश पर अगर हम अलग-अलग विचार करें तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक देश की एक निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है जो उस देश के प्रत्येक निवासी की चाल-ढाल, बातचीत, रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीके और आदतों से टपकती रहती है। चीन से आने वाला आदमी विलायत से आने वालों के बीच नहीं छिप सकता और यद्यपि अफ्रीका के लोग भी काले ही होते हैं, मगर वे भारतवासियों के बीच नहीं खप सकते।

प्रश्न

(क) भारत की विविधता में भी एकता छिपी है-स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) 'भाषा का अंतर होने पर भी उत्तर और दक्षिण भारतीय एक हैं'-स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) उन तथ्यों का उल्लेख कीजिए जो हिंदू और मुसलमानों में निकटता बढ़ाने में सहायक रहे हैं? 2

(घ) किसी देश की सांस्कृतिक एकता के दर्शन कहाँ-कहाँ होते हैं? उदाहरण सहित बताइए। 2

(ङ) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए। 1

(च) 'इस दृष्टि से एक तरह की एकता तो वह है जो हिंदू समाज में मिलेगी।'-उपवाक्य और उसका भेद बताइए। 1

उत्तर –

(क) भारत में उत्तर से दक्षिण तक एक ही संस्कृति के मंदिर, चंदन लगाने वाले, पूजा-पाठ करने वाले, तीर्थ-व्रत में विश्वास करने वाले लोग मिल जाते हैं। उनकी जीवन-दृष्टि और स्वभाव भी एक समान मिलते हैं। इससे भारत की विविधता में भी एकता के दर्शन होते हैं।

(ख) उत्तर और दक्षिण भारतीयों के बीच भाषा की दीवार खड़ी है जो उनमें अंतर पैदा करती है, पर भाषा को छोड़ दें तो उत्तर और दक्षिण भारतीय के बीच कोई अंतर नहीं रह जाता है क्योंकि वे एक ही धर्म के अनुयायी और एक ही सांस्कृतिक विरासत के भागीदार हैं। उनके एक होने का प्रमाण यह भी है कि आजादी की लड़ाई उन्होंने साथ-साथ लड़ी और उनकी पार्लियामेंट भी एक है। इस प्रकार उत्तर और दक्षिण भारतीय एक हैं।

(ग) हिंदू और मुसलमानों में निकटता बढ़ाने वाले कथ्य हैं; जैसे-

1. मुसलमानों की संस्कृति हिंदुओं के काफी निकट है, क्योंकि उनके पूर्वज एक थे।

2. पूर्व में इसलाम धर्म अपनाने वाले हिंदू अपनी आदतें भी अपने साथ ले गए।

3.हिंदू-मुसलमान सैकड़ों वर्षों तक साथ-साथ रहे हैं।

4. सदियों तक हिंदू -मुसलमानों के साध रहने के कारण उनकी सिम्स्कृति और तहजीब में बहुत-सी सामान बातें पैदा हो गई।

(घ) किसी देश की सांस्कृतिक एकता के दर्शन वहाँ के निवासियों की चाल-ढाल, बातचीत, रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीकों और आदतों में होते हैं। उदाहरणार्थ चीन से आने वाला आदमी इंग्लैंड से आने वालों के बीच नहीं छिप सकता है। यद्यपि दक्षिण अफ्रीका के लोग कुछ भारतीयों की तरह काले होते हैं, पर भारतीयों में स्पष्ट रूप से अलग नजर आते हैं।

(ङ) विविधता में एकता।

(च) उपवाक्य-जो हिंदू समाज में मिलेगी।

भेद-विशेषण उपवाक्य।

22. पर जैसा जानकारों ने बताया, कभी वह पेड़ हरा था, उसकी जड़ें धरती की नरम-नरम मिट्टी से दबी थीं और उसकी छतनार डालें आकाश में ऐसी फैली हुई थीं जैसे विशाल पक्षी के डैने और उन डालियों के कोटरों में अनगिनत घोंसले थे। पनाह के नीड़, बसेरे। दूर बियाबाँ से लौटकर पक्षी उनमें बसेरा करते, रात की भीगी गहराई में खोकर सुबह दिशाओं की ओर उड़ जाते। और मैं जो

उस पेड़ के लुंठपन पर कुछ दुखी हो चुप हो जाता तो वह जानकार कहता, उसने वह कथा कितनी ही बार कही, आँखों देखी बात है, इस पेड़ की सघन छाया में कितने बटोहियों ने गए प्राण पाए हैं, कितने ही सूखे हरे हुए हैं। सुनो उसकी कथा, सारी बताता हूँ और उसने बताया, जलती दुपहरी में मरीचिका की नाचती आग के बीच यह पेड़ हरा-भरा झूमा पत्तों के विस्तृत ताज को सिर से उठाए। आँधी और तूफान में उसकी डालें एक-दूसरे से टकरातीं, टहनियाँ एक-दूसरे में गुँथ जातीं और जब तपी धरती बादलों की झरती झींसी रोम-रोम से पीती और रोम-रोम सजीव कर उनमें से लता प्रतानों के अंकुर फोड़ देती तब पेड़ जैसे मुस्कराता और बढ़ती लताओं की डाली रूपी भुजाओं से जैसे उठाकर भेंट लेता। उस विशाल तरु में तब बड़ा रस था। उसकी टहनी-टहनी, डाली-डाली, पोर-पोर में रस था और छलका-छलका वह लता वल्लरियों को निहाल कर देता। अनंत लताएँ, अनंत वल्लरियाँ पावस में उसके अंग-अंग से, उसकी फूटती संधियों से लिपटी रहतीं और देखने वाले बस उसके सुख को देखते रह जाते। और मेरा वह जानकार बुजुर्ग एक लंबी साँस लेकर थका-सा कह चलता कि तुम क्या जानो, जिसने केवल पावस पीले झड़ते पत्ते न देखे? फिर एक दिन, एक साल कुछ ऐसा हुआ कि जैसे सब कुछ बदल गया। जहाँ वसंत के

आते ही पत्रों के से कोमल पत्ते उस वृक्ष की टहनियों से हवा में डोलने लगते थे, वहाँ उस साल फिर वे पत्ते न डोले, वे टहनियाँ सूख चलीं। दूर दिशाओं से आकर उस पेड़ की नीड़ों में विश्राम करने वाले पक्षी उसकी छतनार डालों से उड़ गए। जहाँ अनंत-अनंत कोयलें कूका करती थीं। बौराई फुनगियों पर भौंरों की काली पंक्तियाँ मँडराया करती थीं, सहसा उस पेड़ का रस सूख चला। और जैसे उसे बसेरा लेने वाले पक्षी छोड़ चले, जैसे कूकती कोयले, टेरते पपीहे, मँडराते भौंरे उसके अनजाने हो जाए। वैसे ही लता वल्लरियाँ उसके स्कंध देश से, उसकी फैली मजबूत डालियों से, उसकी मदमाती झूमती टहनियों से धीरे-धीरे उतर गई, कुछ सूख गई मर गई। उस लता-संपदा के बीच फिर भी एक मधुर पुष्पवती पराग भरी वल्लरी उससे लिपटी रही और ऐसी कि लगता कि प्रकृति के परिवर्तन उस पर असर नहीं करते। वासंती जैसे सारी त्रुटियों में रसभरी वासंती बनी रहती। सहकार वृक्ष से लिपटी वल्लरियों की उपमा कवियों ने अनेकानेक दी हैं। पर वह तो साहित्य और कल्पना की बात थी, उसे कभी चेता न था, पर चेता मैंने उसे अब, जब उस एकांत वल्लरी को उस प्रकांड तरु से लिपटे पाया।

प्रश्न

(क) हरे पेड़ की डालें कैसी दिखती थीं? ऐसे में वृक्ष किनका आश्रयदाता बना हुआ था?

(ख) वर्षा ऋतु में वृक्ष के सुखमय दिनों का वर्णन कीजिए।

(ग) 'जैसे सब कुछ बदल गया"-यहाँ किसका सब कुछ किस तरह बदल गया था?

(घ) बादलों की फुहार का वृक्ष के विभिन्न अंगों पर क्या प्रभाव पड़ता था?

(ङ) तदभव शब्द लिखे – स्कध, पत्र।

(च) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर –

(क) हरे वृक्ष की फैली डालियाँ पक्षियों के खुले विशाल पंखों जैसी दिखती थीं। उन डालियों के कोटरों में अनगिनत घोंसले बने होते थे। दूर-दूर से लौटकर पक्षी उन घोंसलों में रहते, रातभर विश्राम करते और सवेरे उड़ जाते थे। इस प्रकार वृक्ष पक्षियों का आश्रयदाता बना हुआ था।

(ख) वर्षा ऋतु में उस वृक्ष के अंग-अंग में रस छलक उठता था, जिसे देख लता-वल्लरियाँ पुलकित हो उठती थीं और वृक्ष के अंग-अंग से, उसकी फूटती संधियों से लिपटी रहतीं। देखने वाले बस उसके सुख को देखते रह जाते।

(ग) यहाँ हरे-भरे आम के वृक्ष का सब कुछ बदल गया। उसके पत्ते और टहनियाँ सूख गई। पक्षी उसे छोड़ चले। भौंरे उस ओर आना भूल गए। अब वहाँ अनंत-अनंत कोयलों ने कूकना बंद कर दिया। उस पेड़ का रस सूख गया था और उसकी मजबूत डालियों से लता-वल्लरियाँ उतर चुकी थीं।

(घ) बादलों की फुहार से –

1. उसके लता-प्रतानों में अंकुर फूट पड़ते।
2. वृक्ष के अंग-अंग रस से भर उठते थे।
3. अनंत लताएँ और बल्लरियाँ उसके अंग-अंग से लिपटी रहती थीं।
4. उसका सुख कई गुना बढ़ जाता था।

(ङ) कधा, पत्ता।

(च) शीर्षक – ढूँठा आम।

23. तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवनयापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्रवितीय वह, जो हमें जीना सिखलाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाये जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो, माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। ऐसी विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही दूसरी विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही न अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींग-विहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में पहली विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है, परंतु दूसरी विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर के निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है; जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। राह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक

नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है। जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) विदया कितने प्रकार की होती है? मानव के लिए उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। 2

(ग) सार्थक जीवन जीने का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए बताइए कि मानव की संज्ञा पाने के लिए क्या करना चाहिए? 2

(घ) वर्तमान शिक्षा पदधति कितनी प्रासंगिक है? स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) भारतीय विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा के सोपान बताइए तथा इनका अनुपालन न करने का क्या दुष्परिणाम होगा? 2

(च) विलोम बताइए — सार्थक, विकास। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-शिक्षा के सोपान।

(ख) विद्य दो प्रकार की होती है। पहली वह, जो मनुष्य को जीवनयापन के लिए अर्जन करने योग्य बनाती है और दूसरी वह, जो अच्छे ढंग से जीना सिखाती है। मानव के लिए विद्या की उपयोगिता यह है कि जीवनयापन के लिए अर्जन करने में अक्षम व्यक्ति समाज पर बोझ बनकर रह जाता है तथा दूसरी विद्या के अभाव में व्यक्ति सार्थक जीवन नहीं जी सकता है।

(ग) सार्थक जीवन जीने का अभिप्राय है-सुचारु रूप से जीवन जीना। सार्थक जीवन जीने वाले व्यक्ति में वह जीवन-शक्ति होनी चाहिए जो उसके जीवन को सत्यपथ पर अग्रसर करने के अलावा अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तभी वह मानव की संज्ञा पा सकता है। ऐसा न होने पर वह भारवाही गधा या सींग-पूँछ रहित पशु बनकर रह जाता है।

(घ) हमारे देश की वर्तमान शिक्षा-पद्धति अप्रसांगिक बनकर रह गई है। इसका कारण यह है कि ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ लेने के बाद भी युवावर्ग अपनी रोजी-रोटी कमाने में असमर्थ पाता है। आजकल स्नातक के लिए भी जीविकोपार्जन करना कठिन हो गया है। इसके अलावा यह शिक्षा-पद्धति छात्रों को सुयोग्य नागरिक भी नहीं बना पाती है। उसमें 'कु' से 'सु' बनने के संस्कार नहीं आ पाते हैं।

(ङ) भारतीय विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा के क्रमिक सोपान इस प्रकार होना चाहिए

1. छात्र को आवश्यक शिक्षा दी जानी चाहिए।

2. छात्र को दी जाने वाली शिक्षा उपयोगी होनी चाहिए।

3. शिक्षा जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करने वाली होनी चाहिए। इन सोपानों का अनुपालन न करने पर मानवजीवन का सुंदर महल खड़ा करना कठिन है। ऐसा करना ठीक उसी तरह होगा, जैसे छत बनाने के बाद मजबूत नींव बनाने का असफल प्रयास करना।

(च) शब्द विलोम

सार्थक निरर्थक

विकास ह्रास

24. प्रजातंत्र के तीन मुख्य अंग हैं- कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। प्रजातंत्र की सार्थकता एवं दृढ़ता को ध्यान में रखते हुए और जनता के प्रहरी होने की भूमिका को देखते हुए मीडिया (दृश्य, श्रव्य और मुद्रित) को भी प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में देखा जाता है। समाचार-माध्यम या मीडिया को पिछले वर्षों में पत्रकारों और समाचार-पत्रों ने एक विश्वसनीयता प्रदान की है और इसी कारण विश्व में मीडिया एक अलग शक्ति के रूप में उभरा है। कार्यपालिका और विधायिका की समस्याओं, कार्यप्रणाली और विसंगतियों की चर्चा प्राय: होती रहती है और सर्वसाधारण में वे विशेष चर्चा में रहते ही हैं। इसमें समाचार-पत्र, रेडियो और टी.वी. समाचार अपनी टिप्पणी के कारण चर्चा को आगे बढाने में योगदान करते हैं, पर न्यायपालिका अत्यंत महत्वपूर्ण होने के बावजूद उसके बारे में चर्चा कम ही होती है।

ऐसा केवल अपने देश में ही नहीं, अन्य देशों में भी कमोबेश यही स्थिति है। स्वराज-प्राप्ति के बाद और एक लिखित संविधान के देश में लागू होने के उपरांत लोकतंत्र के तीनों अंगों के कर्तव्यों, अधिकारों और दायित्वों के बारे में जनता में जागरूकता बढ़ी है। संविधान निर्माताओं का उद्देश्य रहा है कि तीनों अंग परस्पर ताल-मेल से कार्य करेंगे। तीनों के पारस्परिक संबंध भी संविधान द्वारा निर्धारित हैं, फिर भी समय के साथ-साथ कुछ समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। आज लोकतंत्र यह महसूस करता है कि न्यायपालिका में भी अधिक पारदर्शिता हो, जिससे उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़े। 'जिस देश में पंचों को परमेश्वर मानने की परंपरा हो, वहाँ न्यायमूर्तियों पर आक्षेप दुर्भाग्यपूर्ण है।"

प्रश्न

(क) लोकतंत्र के मुख्य तीनों अंगों का नामोल्लेख कीजिए। इसके चौथे अंग का नामोल्लेख करते हुए उसकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) अत्यंत महत्वपूर्ण अंग होने के बावजूद न्यायपालिका के बारे में मीडिया में कम चर्चा क्यों होती है?2

(ग) 'पारदर्शिता' से क्या तात्पर्य है? लोकतंत्र न्यायपालिका में अधिक पारदर्शिता क्यों चाहता है? 2

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए-'जिस देश में पंचों को परमेश्वर मानने की परंपरा हो, वहाँ न्यायमूर्तियों पर आक्षेप दुर्भाग्यपूर्ण हैं'। 2

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(च) वाक्य में प्रयोग कीजिए – मर्यादा, विसंगति। 1

उत्तर –

(क) लोकतंत्र के तीन मुख्य अंग हैं-कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। चौथा अंग मीड़िया को माना जाता है। इसमें दृश्य, श्रव्य व मुद्रित माध्यम होते हैं। लोकतंत्र में मीडिया की अहम भूमिका है। यह कार्यपालिका व विधायिका की समस्याओं, कार्यप्रणाली तथा विसंगतियों की चर्चा करती है।

(ख) न्यायपालिका प्रजातंत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, परंतु इसकी चर्चा मीडिया में कम होती है, क्योंकि इसमें पारदर्शिता अधिक होती है। दूसरे न्यायपालिका अपने विशेषाधिकारों के प्रयोग से मीडिया को दबा देती है।

(ग) 'पारदर्शिता' का अर्थ है-आर-पार दिखाई देना या संदेह में न रखना। न्यायपालिका लोकतंत्र की रक्षक है, परंतु न्यायाधीशों पर आक्षेप लगने लगे हैं। अत: लोकतंत्र न्यायपालिका में पारदर्शिता चाहता है, जिससे उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़े।

(घ) इसका अर्थ है कि भारत में न्यायाधीशों को ईश्वर के बराबर का दर्जा दिया जाता था, क्योंकि वे पक्षपातपूर्ण निर्णय नहीं देते थे, आजकल न्यायाधीशों के निर्णयों व कार्यप्रणालियों पर आरोप लगाए जाने लगे हैं। यह गलत परंपरा की शुरुआत है।

(ङ) **शीर्षक**-मीडिया और लोकतंत्र।

(च) हर व्यक्ति को अपनी **मर्यादा** में रहना चाहिए।

सरकार ने वेतन-**विसंगति** दूर करने का वायदा किया।

25. संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक देश और जाति का योगदान रहता है। संस्कृति के मूल उपादान तो प्राय: सभी सुसंस्कृत और सभ्य देशों के एक सीमा तक समान रहते हैं, किंतु बाहय उपादानों में अंतर अवश्य आता है। राष्ट्रीय या जातीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान यही है कि वह हमें अपने राष्ट्र की परंपरा से संपृक्त बनाती है, अपनी रीति-नीति की संपदा से विच्छिन्न नहीं होने देती। आज के युग में राष्ट्रीय एवं जातीय संस्कृतियों के मिलन के अवसर अति सुलभ हो गए हैं, संस्कृतियों का पारस्परिक संघर्ष भी शुरू हो गया है। कुछ ऐसे विदेशी प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं, जिनके आतंक ने हमें स्वयं अपनी संस्कृति के प्रति शंकालु बना दिया है। हमारी आस्था डिगने लगी है।

यह हमारी वैचारिक दुर्बलता का फल है। अपनी संस्कृति को छोड़, विदेशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से हमारे राष्ट्रीय गौरव को जो ठेस पहुँच रही है, वह किसी राष्ट्रप्रेमी जागरूक व्यक्ति से छिपी नहीं है। भारतीय संस्कृति में त्याग और ग्रहण की अद्भुत क्षमता रही है। अत: आज के वैज्ञानिक युग में हम किसी भी विदेशी संस्कृति के जीवंत तत्वों को ग्रहण करने में पीछे नहीं रहना चाहेंगे, किंतु अपनी सांस्कृतिक निधि की उपेक्षा करके नहीं। यह परावलंबन राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप नहीं है। यह स्मरण रखना चाहिए कि सूर्य की आलोकप्रदायिनी किरणों से पौधे को चाहे जितनी जीवनशक्ति मिले, किंतु अपनी जमीन और अपनी जड़ों के बिना कोई पौधा जीवित नहीं

रह सकता। अविवेकी अनुकरण अज्ञान का ही पर्याय है।

प्रश्न

(क) आधुनिक युग में संस्कृतियों में परस्पर संघर्ष प्रारंभ होने का प्रमुख कारण बताइए। 2

(ख) हम अपनी संस्कृति के प्रति शंकालु क्यों हो गए? 2.

(ग) संस्कृति के निर्माण में किनका योगदान होता है? राष्ट्रीय संस्कृति की हमारे प्रति सबसे बड़ी देन क्या है। 2

(घ) हम अपनी सांस्कृतिक संपदा की उपेक्षा क्यों नहीं कर सकते? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(च) प्रत्यय और मूल शब्द बताइए – जातीय, सांस्कृतिक। 1

उत्तर –

(क) आधुनिक युग में संस्कृतियों में परस्पर संघर्ष प्रारंभ होने का प्रमुख कारण यह है कि आज के युग में राष्ट्रीय एवं जातीय संस्कृतियों के मिलन के अवसर अति सुलभ हो गए हैं। भिन्न संस्कृतियों के निकट आने के कारण परस्पर विरोध एवं अतिक्रमण होना स्वाभाविक है।

(ख) वर्तमान में विभिन्न संस्कृतियों के मिलन के अवसर बहुत अधिक बढ़ गए हैं। इस कारण एक संस्कृति का प्रभाव दूसरे पर पड़ना स्वाभाविक है। इससे अपनी संस्कृति के प्रति हमारी आस्था कमजोर हुई है। अपनी वैचारिक दुर्बलता के कारण हम अपनी संस्कृति के प्रति शंकालु हो उठे हैं और अपनी संस्कृति को छोड़कर विदेशी संस्कृति का विवेकहीन अनुकरण करना शुरू कर दिया है।

(ग) विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक देश और वहाँ बसने वाली जातियों का योगदान रहता है। इसके मूल उपादान तो समान परंतु बाहय उपादानों में अंतर होता है। राष्ट्रीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान यही है कि वह हमें अपने राष्ट्र की परंपराओं से जोड़े रखती है और अपनी रीतियों-नीतियों से अलग नहीं होने देती है।

(घ) हम अपनी सांस्कृतिक संपदा की उपेक्षा इसलिए नहीं कर सकते हैं क्योंकि ऐसा करना परावलंबन होगा जो राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप नहीं होता है। ऐसा करने से हमारी स्थिति उस जडविहीन पौधे के समान हो जाएगी, जिसे सूर्य भरपूर जीवनशक्ति देता है, फिर भी वह सूख जाता है क्योंकि वह अपनी जड़ और जमीन खो चुका होता है।

(ङ) शीर्षक-भारतीय संस्कृति का वैचारिक संघर्ष।

(च)

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
जातीय	जाति	ईय
सांस्कृतिक	संस्कृति	इक

26. विश्व के प्राय: सभी धर्मों में अहिंसा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। भारत के सनातन हिंदू धर्म और जैन धर्म के सभी ग्रंथों में अहिंसा की विशेष प्रशंसा की गई है। 'अष्टांग योग' के प्रवर्तक पंतजलि ऋषि ने योग के आठों अंगों में प्रथम अंग 'यम' के अंतर्गत 'अहिंसा' को प्रथम स्थान दिया है। इसी प्रकार 'गीता' में भी अहिंसा के महत्व पर जगह-जगह पर प्रकाश डाला गया है। भगवान महावीर ने अपनी शिक्षाओं का मूलाधार अहिंसा को बताते हुए 'जियो और जीने दो' की बात कही है। अहिंसा मात्र हिंसा का अभाव ही नहीं, अपितु किसी भी जीव का संकल्पपूर्वक वध नहीं करना

और किसी जीव या प्राणी को अकारण दुख नहीं पहुँचाना है। ऐसी जीवन-शैली अपनाने का नाम ही 'अहिंसात्मक जीवन-शैली' है।
अकारण या बात-बात में क्रोध आ जाना हिंसा की प्रवृत्ति का एक प्रारंभिक रूप है। क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है, वह उसकी बुद्ध का नाश कर उसे अनुचित कार्य करने को प्रेरित करता है, परिणामत: दूसरों को दुख और पीड़ा पहुँचाने का कारण बनता है। सभी प्राणी मेरे लिए मित्रवत हैं। मेरा किसी से बैर नहीं है, ऐसी भावना होने पर अह जनित क्रोध समाप्त हो जाएगा और हमारे मन में क्षमा का भाव पैदा होगा। क्षमा का यह उदात्त भाव हमें हमारे परिवार से सामंजस्य कराने व पारस्परिक प्रेम को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाता है। हमें ईष्या द्वारा द्वेष रहित होकर लोभवृत्ति का त्याग करते हुए संयमित खान-पान तथा व्यवहार एवं क्षमा की भावना को जीवन में उचित स्थान देते हुए अहिंसा का एक ऐसा जीवन जीना है कि हमारी जीवन-शैली एक अनुकरणीय आदर्श बन जाए।

प्रश्न

(क) किन-किन ग्रंथों में और किस तरह अहिंसा का महत्व प्रतिपादित किया गया है? 2

(ख) लेखक ने अहिंसा की परिधि को किस प्रकार विस्तारित किया है? 2

(ग) क्रोध क्या है? मनुष्य के लिए यह किस प्रकार घातक बन जाता है?2

(घ) मनुष्य अपनी जीवन-शैली को कैसे अनुकरणीय बना सकता है? 2

(ङ) 'जगह-जगह', 'खानपान' – विग्रह कर समास का नाम लिखिए। 1

(च) 'प्रवर्तक', 'अनुकरणीय' शब्दों के अर्थ लिखिए। 1

उत्तर –

(क) हिंदू धर्म और जैन धर्म के सभी ग्रंथों में अहिंसा की विशेष रूप से प्रशंसा करते हुए हिंसा को त्याज्य तथा निंदनीय बताया गया है। 'अष्टांग योग' के प्रवर्तक पतंजलि ऋषि ने योग के आठों भाग में प्रथम अंग 'यम' में हिंसा को प्रथम स्थान दिया है। इसी प्रकार गीता में जगह-जगह इसकी महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

(ख) लेखक के अनुसार हिसा का अभाव ही अहिंसा नहीं है, बल्कि किसी भी प्राणी का संकल्पपूर्वक वध करना या उसको बिना कारण दुख पहुँचाना भी हिंसा की श्रेणी में आता है। इस प्रकार उसने अहिंसा की परिधि का विस्तार किया है।

(ग) क्रोध हिंसा की प्रवृत्ति का प्रारंभिक रूप है। यह मनुष्य की बुद्ध का नाश कर उसकी सोचने-विचारने की क्षमता को प्रभावित करता है। इससे व्यक्ति उचित-अनुचित का निर्णय नहीं ले पाता है। बुद्ध नष्ट करके क्रोध व्यक्ति को अनुचित कार्य करने की प्रेरणा देता है। यही क्रोध दूसरों को दुख और पीड़ा पहुँचाने का कारण बन जाता है। क्रोध करने वाला मनुष्य सबकी नजरों से गिरकर उपेक्षा का पात्र बन जाता है।

(घ) मनुष्य क्षमाशील बनकर पारिवारिक सामंजस्य और पारस्परिक प्रेम को बढ़ावा दे सकता है। वह ईष्या, द्वेष तथा लोभ को त्यागकर खान-पान एवं व्यवहार को संयमित करे तथा जीवन में अहिंसा का पालन करे। इस प्रकार वह अपनी जीवन शैली को अनुकरणीय बना सकता है।

(ङ) जगह-जगह – प्रत्येक जगह-अव्ययीभाव समास।

खान-पान – खान और पान-द्वंद्व समास।

(च) प्रवर्तक – प्रवृत्त करने वाला।

अनुकरणीय – अनुकरण करने योग्य।

27. परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। उदाहरण के लिए, ऊपर कही गई। दशहरों की परियोजना को ही लें। यदि आपको कहा जाए कि इस पर निबंध लिखिए, तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा, लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों में छपे अलग-अलग शहरों के दशहरे के चित्र काट कर अपनी कॉपी में चिपकाइए और लिखिए कि कौन-सा चित्र, किस शहर के दशहरे का है, तो शायद आपको बहुत आनंद आएगा। तो इस तरह से चित्र इकट्ठे करके चिपकाना भी एक शैक्षिक परियोजना है। यह एक प्रकार की फोटो-फीचर परियोजना कहलाएगी। इस तरह से न केवल आपने चित्र काटे और चिपकाए, बल्कि कई शहरों में मनाए जाने वाले दशहरे के तरीके को भी जाना। परियोजना पाठ्य-पुस्तक से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्रदान करती है। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आप में एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नयी-नयी शैलियों का विकास होता है।
आप में चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का, रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं-एक तो वे परियोजनाएँ जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं। समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्राय: सरकारी अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती है। किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे शैक्षिक परियोजना भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नयी-नयी बातों से अपने-आप परिचित भी होते हैं।

प्रश्न

(क) गदयांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) परियोजना क्या है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) शैक्षिक परियोजना क्या है? इससे क्या-क्या लाभ हैं? 2

(घ) ज्ञान बढ़ाने के अलावा परियोजना किन-किन कौशलों का विकास करती है? 2

(ङ) समस्या का निदान करने वाली परियोजना और शैक्षिक परियोजना में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2

(च) 'देश', 'दुनिया'-शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1

उत्तर –

(क) शीर्षक-परियोजना का स्वरूप

(ख) परियोजना शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करना खेल जैसा ही आनंददायक है। छात्र इसके माध्यम से खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं। उदाहरणार्थ-दशहरे पर निबंध लिखना छात्रों के लिए अरुचिकर हो सकता है, पर अखबारों से दशहरा-संबंधी चित्र काटकर चिपकाना और प्रत्येक चित्र के नीचे संबंधित शहर का नाम लिखना रुचिकर और आनंददायक लगता है।

(ग) किसी शैक्षिक विषय से संबंधित जानकारी देने वाले चित्रों को एकत्र कर चिपकाना ही शैक्षिक परियोजना है। परियोजना एक ओर खेल-खेल में कुछ करते हुए सीखने का अवसर प्रदान करती है तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तक से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्रदान करती है। यह तथ्यों को जुटाने, उन पर विचार करने तथा कुछ नया सीखने का अवसर प्रदान करती है।

(घ) परियोजना कुछ करते हुए सीखने का अवसर प्रदान करती है। अत: इससे ज्ञान में वृद्ध के अलावा विविध कौशलों का विकास होता है। ये कौशल निम्नलिखित हैं

1. इससे एकाग्रता का विकास होता है।
2. लेखन-संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है।
3. चिंतन-क्षमता का विकास होता है।
4. इससे पूर्व में घटी किसी घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है।

(ङ) समस्या का निदान करने के लिए तैयार की गई परियोजना में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डालने के अलावा समाधान हेतु सुझाव भी प्रस्तुत किया जाता है। ये परियोजनाएँ सरकारी संस्थाओं/संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य-योजना तैयार करते समय बनाई जाती है। इसके विपरीत शैक्षिक परियोजनाएँ बनाते हुए संबंधित तथ्य जुटाते हुए बहुत-सी नई बातों से हम अपने-आप परिचित हो जाते हैं।

(च) पर्यायवाची शब्द-

1. देश – मुल्क, वतन

2. दुनिया — जग, जगत्।

28. सु-चरित्र के दो सशक्त स्तंभ हैं-प्रथम सुसंस्कार और द्रवितीय सत्संगति। सुसंस्कार भी पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत सत्संगति से विचारों को नयी दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य

हजारीप्रसाद द्ववेदी ने लिखा है-'महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।" वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है।

चरित्रवान व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश-परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति की उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के एक आचरक घटक हैं- इस बात को विस्मृत कर देते हैं।

प्रश्न

(क) सत्संगति कुमार्गी को कैसे सुधारती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) चरित्र के बारे में विदुर के विचारों को स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) सत्संगति व्यक्ति के लिए किस प्रकार कल्याणकारी होती है? इस संबंध में दविवेदी जी क्या अनुभव करते थे? 2

(घ) किसी एक व्यक्ति का चरित्र पूरे राष्ट्र के चरित्र को किस तरह प्रभावित करता है? स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) प्रस्तुत गदयांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(च) 'सुवासित', 'आनुवंशिक' शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग/प्रत्यय पृथक कर मूल शब्द बताइए। 1

उत्तर –

(क) सत्संगति से विचारों को नयी दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। इससे कुमार्गी व्यक्ति उसी तरह सुधर जाता है जैसे लोहे की कठोरता और कालिख पारस का स्पर्श पाकर कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है।

(ख) चरित्र के बारे में विदुर का विचार है कि अच्छे चरित्र के बीज वंश-परंपरा से मिल जाते हैं, परंतु चरित्र निर्माण व्यक्ति को स्वयं करना पड़ता है। सुचरित्र कभी उत्तराधिकार में नहीं मिलता। आनुवांशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थितियाँ चरित्र को प्रेरित कर सकती हैं, वे उसको अर्जित नहीं कर सकती हैं।

(ग) सत्संगति व्यक्ति के लिए विविध रूपों में कल्याणकारी होती है। सतत् सत्संगति से व्यक्ति के विचारों को नई दिशा मिलती है। इससे व्यक्ति में अच्छे विचार पनपते हैं जो उसे अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करते हैं। इससे व्यक्ति का चरित्र सुंदर बन जाता है। महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर की सत्संगति पाकर द्रविवेदी ऐसा अनुभव करते थे, मानो उनके भीतर का देवता जाग गया है।

(घ) कोई भी व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक होता है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार,

अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज तथा अनेक जातियों एवं समाज समुदायों के मेल से एक राष्ट्र बनता है। इस तरह किसी एक व्यक्ति का चरित्र पूरे राष्ट्र को प्रभावित करता है। उसका अच्छा चरित्र पूरे का गौरव बढ़ाता है और शिथिल चरित्र पूरे राष्ट्र पर संकट उत्पन्न करता है।

(ङ) शीर्षक-चरित्र निर्माण और सत्संगति।

(च) शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
सुवासित	सु	वास	इत
आनुवंशिक	अनु	वश	इक

स्वयं करें

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. जिंदगी के असली मजे उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देने वाली चीजें पहले भी थीं और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मजे बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में थक कर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की जरूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है। इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखे के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मजे ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। '

त्यक्तेन भुजीथा', जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता। बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण

उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

प्रश्न

(क) जिंदगी के असली मजे किनके लिए होते हैं? 2

(ख) अकबर का उदाहरण किस संदर्भ में दिया गया है? उसकी सफलता का रहस्य क्या था? 2

(ग) महाभारत के युद्ध में पांडव विजयी बने, कौरव क्यों नहीं? 2

(घ) निराभोगी बनने से जीवन का आनंद क्यों नहीं मिल पाता है? 2

(ङ) मोती, चाँदनी – तत्सम शब्द लिखिए। 1

(च) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

2. गौतम बुद्ध ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्म-निर्मित बंधन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उत्स यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजान में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है, लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है और आदमी है कि सदा उससे लोहा लेने को कमर कसे है। मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बडे नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन 'बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्ध करो, और बाहय उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा था-बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोची, प्रेम की बात सोची, आत्म-तोषण की बात सोची, काम करने की बात सोची।

उसने कहा-प्रेम ही बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छुखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई, आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ-बूढ़े ने कितनी गहराई में पैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था। ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है।

बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाजा। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास-बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं। मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए नि:शेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित, आत्मबंधन

का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

प्रश्न

(क) गौतम बुद्ध के अनुसार मनुष्यता क्या है? 2

(ख) नेता और वृदध के विचार सुख-प्राप्ति के संबंध में किस प्रकार भिन्न थे? 2

(ग) लेखक ने पशुत्व का चिहन और मनुष्यता का चिहन किन्हें माना है? 2

(घ) प्राणिशास्त्रियों ने मनुष्य का अनाश्यक अंग किसे कहा है? और क्यों? 2

(ङ) उपर्युक्त गदयांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(च) मिथ्या, वांछनीय – पर्याय लिखिए। 1

3. अपने कार्य को आप ही करना स्वावलंबन कहलाता है। बालक जब से होश सँभालता है, अपने निजी कार्य स्वयं करने लगता है। इसी प्रकार यदि मनुष्य जीवन की किसी भी स्थिति में अपना कार्य स्वयं करे, तो वह स्वावलंबी कहलाता है। स्वावलंबी होना नागरिकता का महान् गुण है। स्वावलंबन बड़प्पन का गुण है। कहते हैं कि एक दिन प्रसिद्ध विद्वान ईश्वर चंद्र विद्यासागर रेलवे स्टेशन के बाहर खड़े थे। तभी भीतर से एक व्यक्ति हाथ में एक छोटा बक्सा लिए उनके पास आया। उन्हें साधारण वेष में देखकर भूल से कुली समझ बैठा और बोला, “मेरा सामान ले चलोगे?” ईश्वर चंद्र बिना कुछ बोले उसका सामान उठाकर चल दिए। लक्ष्य पर पहुँचकर जब वह उन्हें मजदूरी देने लगा तो वे बोले, “मजदूरी नहीं चाहिए। तुम अपना काम स्वयं नहीं कर सकते, इसलिए मैंने तुम्हारी सहायता कर दी है।” व्यक्ति लज्जित हुआ।

जब उसे यह पता चला कि उनका कुली बंगाल का प्रसिद्ध विद्वान है तो वह उनके पाँव में गिर पड़ा। अपना कार्य आप करने की सौंगध ली। तात्पर्य यह है कि कोई कितना भी बड़ा अधिकारी, साहूकार या धनवान क्यों न हो, उसे स्वावलंबी बनना चाहिए। आप डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहते हैं, वकील या प्राध्यापक बनना चाहते हैं. व्यापारी या नेता बनना चाहते हैं-स्वावलंबन सबके लिए अनिवार्य है। बड़ा बनने के लिए मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं। यदि उनके कारण हम निराश हो जाएँ, संघर्ष से जी चुराएँ या मेहनत से दूर रहें, तो भला हमें बड़प्पन कहाँ से मिलेगा? भारत के स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का नाम सुना होगा जिन्होंने सन् 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में देश का नेतृत्व किया था। देश को विजयी बनाया था और जनता को ‘जय जवान, जय किसान’ के प्रेरणावद्र्धक शब्द दिए थे। वे बड़े निर्धन परिवार से संबंधित थे।

नदी पार स्कूल में जाने के लिए नौका वाले को पैसे भी नहीं दे सकते थे, किंतु उनमें आलस्य नहीं था। अत: प्रतिदिन तैर कर नदी पार करते थे। उन्होंने निराशा को कभी मन में नहीं आने दिया था। इसी मेहनत और स्वावलंबन का परिणाम था कि वे प्रधानमंत्री बने। जब वे प्रधानमंत्री थे, तब भी वे चपरासियों और अहलकारों पर आश्रित नहीं रहते थे। अपने यहाँ का कोई भी काम उन्हें छोटा नहीं लगता था। डॉक्टर बनकर यदि आप रोगी की आंशिक देखभाल करें, इंजीनियर बनकर दूसरों पर हुक्म चलाएँ अथवा व्यापारी बनकर अपना हिसाब-किताब स्वयं न देखें, तो व्यवसाय तो डूबेगा ही, आपको भी डूबना होगा। दूसरों से कार्य लेते समय भी स्वयं सक्रिय रहना सफलता की प्रथम सीढ़ी है।

प्रश्न

(क) स्वावलंबन किसे कहते हैं? जीवन के लिए यह क्यों आवश्यक है? 2

(ख) ईश्वर चंद्र विदयासागर यात्री का सामान लेकर क्यों चल दिए? 2

(ग) ईश्वर चंद्र विद्यासागर के साधारण से कार्य ने व्यक्ति का जीवन किस प्रकार बदल दिया? 2

(घ) प्रधानमंत्री बनने के बाद भी शास्त्री जी किस प्रकार स्वावलंबी बने रहे? 2

(ङ) निर्धन, स्वावलंबन – उपसर्ग पृथक् कर मूल शब्द लिखिए। 1

(च) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

4. बालक स्वभावत: संवेदनशील होता है, उसमें कल्पनाशक्ति भी तीव्र होती है, उसका जीवन-निरीक्षण भी। मुख्य बात यह है कि वह अपने अनुभवों के आधार पर कल्पना द्वारा जीवन की पुनर्रचना करता है, अपने अनुसार। कल्पना के रंगों में डूबी इस जीवन की पुनर्रचना के रंग निस्संदेह भावुक हैं। इन चित्रों के रंग में डूबकर वह उन्हीं चित्रों से प्राप्त संवेदनाओं में भावुक होकर रम जाता है। अपने मनोमय जीवन के इन क्षणों में, जब वह उन चित्रों में तन्मय क्रिया-प्रतिक्रिया करने में व्यस्त और ग्रस्त रहने वाले मन को बहुत पीछे छोड़ जाता है, उसके ऊपर उठ जाता है, उससे परे हो जाता है। संक्षेप में, एक ओर उसकी मुक्ति हो जाती है तो दूसरी ओर उसी के साथ एकबद्धता आ जाती है। तटस्थता और तन्मयता, दूरी और सामीप्य का द्वंद्व, उच्चतर स्तर पर एकीभूत हो जाता है। इस प्रकार के अनुभव बालकों से लेकर वृद्धों तक होते हैं, कवियों से लेकर अकवियों तक होते हैं, मजदूर से लेकर संपन्न व्यक्ति तक होते हैं। लेखकों से श्रोताओं तक होते हैं। इन्हीं अनुभवों को हम कलात्मक अनुभव या सौंदर्य अनुभव कहते हैं। केवल मनुष्य ही सौंदर्यानुभव प्राप्त कर सकते हैं, पशु नहीं।

प्रश्न

(क) बालक की सामान्य स्वाभाविक विशेषताएँ लिखिए। 2

(ख) बालक अपने जीवन की पुनर्रचना किस प्रकार करता है? 2

(ग) मनोमय जीवन का अनुभव कौन-कौन प्राप्त कर सकते हैं? 2

(घ) सौंदर्य के संदर्भ में मनुष्य और पशु किस प्रकार भिन्न हैं? 2

(ङ) संधि-विच्छेद कीजिए – पुनर्रचना, सौंदर्यानुभव। 1

(च) पुनर्रचना, निस्संदेह में प्रयुक्त उपसर्ग बताइए। 1

5. परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी है-उद्योगी पुरुष सिंह को लक्ष्मी वरण करती है। जो भाग्यवादी हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता। वे हाथ-पर-हाथ धरे रह जाते हैं। अवसर उनके सामने से निकल जाता है। भाग्य कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम है। . प्रकृति को ही देखिए। सारे जड़-चेतन अपने कार्य में लगे रहते हैं। चींटी को भी पल-भर चैन नहीं। मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूंद-बूंद मधु जुटाती है। मुरगे को सुबह बाँग लगानी ही है, फिर मनुष्य को बुद्ध मिली है, विवेक मिला है। वह निठल्ला बैठे तो सफलता की कामना करना व्यर्थ है। विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं, उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है।

जापान को दूसरे विश्वयुद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था। उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी। दिन-रात, जी-तोड़ श्रम करके वह पुन: विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। चीन को शोषण से मुक्ति भारत से देर में मिली, वह भी श्रम के बल पर आज भारत से आगे निकल गया है। जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिकाएँ झेलीं, पर श्रम के बल पर सँभल गया। परिश्रम का महत्व वे जानते हैं जो स्वयं अपने बल पर आगे बढ़े हैं। संसार के अनेक महापुरुष परिश्रम के प्रमाण हैं कालिदास, तुलसी, टैगोर और गोकी परिश्रम से ही अमर हुए। संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही प्रमाण हैं। बड़े-बड़े धन-कुबेर निरंतर श्रम से ही असीम संपत्ति के स्वामी बने हैं।

फोर्ड साधारण मैकेनिक था। धीरू भाई अंबानी शिक्षक थे। लगन और दृढ़-संकल्प परिश्रम को सार्थक बना देते हैं। गरीबी के साथ परिश्रम जुड़ जाए तो सफलता मिलती है और अमीरी के साथ श्रमहीनता या निठल्लापन आ जाए तो असफलता मुँह बाए खड़ी रहती है। भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई। अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला देश आज गेहूँ का निर्यात कर रहा है। कल-कारखाने रात-दिन उत्पादन कर रहे हैं। हमारे वस्त्र दुनिया के बाजारों में बिकते हैं। उन्नत औद्योगिक देश भी हमसे वैज्ञानिक उपकरण खरीद रहे हैं। किसी क्षेत्र में हम पिछड़े हैं तो उसका कारण है, वहाँ परिश्रम का अभाव। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है। यहाँ से परिश्रम की आदत पड़ जाए तो ठीक, अन्यथा जाने कहाँ-कहाँ की ठोकरें खानी पड़े। एडीसन से किसी ने कहा-आपकी सफलता का कारण आपकी प्रतिभा है। एडीसन ने झटपट सुधारा-प्रतिभा के माने एक औस बुद्ध और एक टन परिश्रम।

प्रश्न

(क) भाग्यवादी और परिश्रमी व्यक्ति में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) परिश्रम के संदर्भ में प्रकृति से कौन-कौन-से उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं? 2

(ग) भारत किस प्रकार उन्नति के सोपान चढ़ रहा है? 2

(घ) परिश्रम दवारा विदयार्थी किस प्रकार सफलता प्राप्त कर सकता है? 2

(ङ) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(च) प्रत्यय बताइए – सफलता, भारतीय। 1

6. भारतीय समाज में नारी की स्थिति सचमुच विरोधाभासपूर्ण रही है। संस्कृति पक्ष से उसे 'शक्ति' माना गया है तो लोकपक्ष से उसे 'अबला' कहा गया हैं। सदियों के संस्कारों की जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि उन्हें न तो कुछ वर्षों की शैक्षणिक प्रगति खोद सकती है, न कुछेक आंदोलनों से उन्हें हिलाया जा सकता है। अत: स्थिति पूर्ववत् ही बनी रही। यह स्थिति कई मामलों में अब भी उलझी हुई है और दिशा अस्पष्ट है, क्योंकि यहाँ हर प्रश्न को पश्चिमी आईने में देखा गया। तटस्थ समाजशास्त्रीय दृष्टि इस बारे में नहीं रही। हमारे यहाँ विभिन्न समाजों में स्त्रियों की स्थिति और प्रगति बहुत कुछ स्थानीय, सामुदायिक व जातीय परंपराओं पर आधारित है। एक ही धर्म और एक ही भौगोलिक स्थिति के भीतर (केरल में) कहीं मातृसत्तात्मक परिवार में स्त्री ही मुखिया है और उसे अधिकार प्राप्त हैं, कहीं मातृसत्तात्मक परिवार में भी उनका सम्मान नहीं रहा तो कहीं पितृसत्तात्मक परिवार में भी उनकी स्थिति सम्मानजनक रही।

समाजशास्त्रीय दृष्टि इन विभिन्नताओं को रेखांकित करती है। हमारा दुर्भाग्य यह रहा है कि हम पश्चिमी देशों के अंधानुकरण को अपनी प्रगति मान बैठे हैं। 'बीमेंसलिब' का अतिवाद पश्चिमी देशों को परिवारवाद की ओर लौटा रहा है। तीसरी दुनिया के हमारे जैसे देश बुनियादी समस्याएँ भूल आगे होकर उसी मुक्ति आंदोलन को अपनाने की होड़ में लगे हैं। यह सब दिशाहीन यात्रा है। स्थानीय और राष्ट्रीय परंपराओं और स्थितियों के अनुरूप कोई लक्ष्य, कोई स्पष्ट दिशा निर्धारित किए बिना, बिना इस बात पर गंभीरता से विचार किए कि 'स्त्रीवाद' का अर्थ परिवार तोड़ना या सामाजिक विघटन लाना नहीं है और न ही आजाद होने का मतलब यह है कि औरत औरत न रहे, हम अपने यहाँ इस आंदोलन को चला रहे हैं।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) भारत में नारी की स्थिति में सुधार क्यों नहीं हो पाया? 2

(ग) लेखक का नारी मुक्ति आंदोलन के प्रति कैसा दृष्टिकोण है? 2

(घ) हमारे देश में नारी मुक्ति आंदोलन की दिशा अभी तक स्पष्ट क्यों नहीं हो पाई? 2

(ङ) लेखक के अनुसार नारी मुक्ति आंदोलन में क्या भूल रही है? 2

(च) प्रत्यय बताइए – भारतीय, पश्चिमी। 1

7. 14 जनवरी, 1848 को पुणे के बुधवार पेठ निवासी भिडे के बाड़े में पहली कन्याशाला की स्थापना हुई। पूरे भारत में लड़कियों की शिक्षा की यह पहली पाठशाला थी। भारत में 3000 सालों के इतिहास में इस तरह का काम नहीं हुआ था। शूद्र और शूद्रातिशूद्र लड़कियों के लिए एक के बाद एक पाठशालाएँ खोलने में ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई को लगातार व्यवधानों, अड़चनों, लाँछनों और बहिष्कार का सामना करना पड़ा। ज्योतिबा के धर्मभीरु पिता ने पुरोहितों और रिश्तेदारों के दबाव में अपने बेटे और बहू को घर छोड़ देने पर मजबूर किया। सावित्री जब पढ़ाने के लिए घर से पाठशाला तक जाती तो रास्ते में खड़े लोग उसे गालियाँ देते, थूकते, पत्थर मारते और गोबर उछालते। दोनों पति-पत्नी सारी बाधाओं से जूझते हुए अपने काम में डटे रहे। 1840-1890 तक पचास वर्षों तक, ज्योतिबा और सावित्री बाई ने एक प्राण होकर अपने मिशन को पूरा किया।

कहते हैं-एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं। ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले ने हर मुकाम पर कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया-मिशनरी महिलाओं की तरह किसानों और अछूतों की झुग्गी-झोंपड़ी में जाकर लड़कियों को पाठशाला भेजने का आग्रह करना या बालहत्या प्रतिबंधक गृह में अनाथ बच्चों और विधवाओं के लिए दरवाजे खोल देना और उनके नवजात बच्चों की देखभाल करना या महार, चमार और मांग जाति के लोगों की एक घूंट पानी पीकर प्यास बुझाने की तकलीफ देखकर अपने घर के पानी का हौद सभी जातियों के लिए खोल देना-हर काम पति-पत्नी ने डके की चोट पर किया और कुरीतियों, अंध-श्रद्धा और पारंपरिक अनीतिपूर्ण रूढ़ियों को ध्वस्त कर दलितों-शोषितों के हक में खड़े हुए। आज के प्रतिस्पद्र्धात्मक समय में, जब प्रबुद्ध वर्ग के प्रतिष्ठित जाने-माने दंपत्ति साथ रहने के कई बरसों के बाद अलग होते ही एक-दूसरे को संपूर्णत: नष्ट-भ्रष्ट करने और एक-दूसरे की जड़ें खोदने पर आमादा हो जाते हैं, महात्मा ज्योतिबा फुले और

सावित्री बाई फुले का एक-दूसरे के प्रति और एक लक्ष्य के प्रति समर्पित जीवन एक आदर्श दांपत्य की मिसाल बनकर चमकता है।

प्रश्न

(क) 'एक और एक ग्यारह होते हैं'-इसे फुले दंपत्ति ने कैसे चरितार्थ किया? 2

(ख) महात्मा ज्योतिबा और सावित्री फुले ने आदर्श दांपत्य की मिसाल कैसे पेश की? 2

(ग) सावित्री बाई फुले को शिक्षण कार्य में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? 2

(घ) फुले दंपत्ति ने समाज़ के पिछड़े और शोषित लोगों की किन-किन रूपों में मदद की? 2

(ङ) पर्याय लिखिए – धर्मभीरु आमादा। 1

(च) 'कंधे-से-कंधा मिलाना', 'जड़ें खोदना' का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 1

8. संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं-वाणी और कर्म। कुछ लोग वचन से संसार को राह दिखाते हैं और कुछ लोग कर्म से। शब्द और आचार दोनों ही महान् शक्तियाँ हैं। शब्द की महिमा अपार है। विश्व में साहित्य, कला, विज्ञान, शास्त्र सब शब्द-शक्ति के प्रतीक प्रमाण हैं, पर कोरे शब्द व्यर्थ होते हैं, जिनका आचरण न हो। कर्म के बिना वचन, व्यवहार के बिना सिद्धसार्थकता नहीं है। निस्संदेह शब्द शक्ति महान् है, पर चिरस्थायी और सनातनी शक्ति तो व्यवहार है। महात्मा गाँधी ने इन दोनों की कठिन और अद्‌भुत साधना की थी। महात्मा जी का संपूर्ण जीवन उन्हीं दोनों से युक्त था। वे वाणी और व्यवहार में एक थे। जो कहते थे वही करते थे। यही उनकी महानता का रहस्य है। कस्तूरबा ने शब्द की अपेक्षा कृति की उपासना की थी, क्योंकि कृति का उत्तम व चिरस्थायी प्रभाव होता है। 'बा' ने कोरी शाब्दिक, शास्त्रीय, सैद्धांतिक शब्दावली नहीं सीखी थी। वे तो कर्म की उपासिका थीं। उनका विश्वास शब्दों की अपेक्षा कर्मों में था। वे जो कहा करती थीं उसे पूरा करती थीं। वे रचनात्मक कर्मों को प्रधानता देती थीं। इसी के बल पर उन्होंने अपने जीवन में सार्थकता और सफलता प्राप्त की थी।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) सज्जन व्यक्ति संसार के लिए क्या करते हैं? 2

(ग) गाँधी जी महान क्यों थे? 2

(घ) संसार की कौन-सी अचूक शक्तियाँ हैं? लोग उनका प्रयोग किस प्रकार करते हैं? 2

(ङ) शब्द-शक्ति और व्यवहार में क्या संबंध है? 2

(च) प्रत्यय पृथक करते हुए मूल शब्द बताइए – सार्थकता, शाब्दिक। 1

9. सरदार सुजान सिंह ने देवगढ़ में आने वाले इन महानुभावों के आदर-सत्कार का अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोजेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्ध के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बागीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, मगर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद कर के अँधेरे में सिगार पीते थे। मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में

दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय, 'क' नास्तिक थे, हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ खोले पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बातें कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बन जाता था।

शर्मा जी घड़ी रात ही से वेद-मंत्र पढ़ने लगते थे और मौलवी साहेब को तो नमाज और तलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य-सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है। लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हस कहाँ छिपा हुआ है? एक दिन नए फ़ैशन वालों को सूझी कि आपस में 'हॉकी' का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मैंजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। संभव है, कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाए। चलिए, तय हो गया, कोट बन गए, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ़्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी। रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे, भले मानस लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे। खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेजी से बढ़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हैं।

प्रश्न

(क) हर व्यक्ति स्वयं को अच्छे रूप में दिखाने का प्रयास क्यों कर रहा था? 2

(ख) किनके व्यवहार से नौकरों को परेशानी रहती थी? पर आजकल उनकी दिनचर्या किस तरह बदली हुई थी? 2

(ग) लेखक ने किनकी दिनचर्या पर व्यंग्य किया है और क्यों? 2

(घ) देवगढ़ में हॉकी खेलना निराली बात थी क्यों? 2

(ङ) विलोम लिखिए-जीवन, उषा। 1

(च) 'बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि उन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है?' उपर्युक्त वाक्य में से उपवाक्य छाँटकर उसका भेद बताइए। 1

10. वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्ध का अपूर्व विकास कर दिया है। द्रवितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान की अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी कि सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु-देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र-निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्रास्त्र बनने लगे हैं। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु-देशों की अधिकांश जनता और संपत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि ऐसे शास्त्रास्त्र प्राय: सभी स्वतंत्र देशों के संग्रहालयों में कुछ-न-कुछ आ गए हैं, अत: युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जाएगा। अत: दुनिया का सर्वनाश या अधिकांश नाश तो अवश्य हो ही

जाएगा। इसलिए नि:शस्त्रीकरण की योजनाएँ बन रही हैं। शस्त्रास्त्रों के निर्माण में जो दिशा अपनाई गई, उसी के अनुसार आज इतने उन्नत शस्त्रास्त्र बन गए हैं, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों के प्रयोग को रोकने के मार्ग खोजे जा रहे हैं। इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व-विनाश का भय कार्य कर रहा है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) बड़े-बड़े देश आधुनिक विनाशकारी हथियार क्यों बना रहे हैं? 2

(ग) आधुनिक युद्ध भयंकर व विनाशकारी क्यों होते हैं? 2

(घ) 'नि:शस्त्रीकरण' से क्या तात्पर्य है? वर्तमान में इसकी आवश्यकता क्यों बढ़ती जा रही है? 2

(ङ) नि:शस्त्रीकरण की योजनाएँ क्यों बनाई जा रही हैं? 2

(च) विलोम बताइए — विकास, अनिवार्य।

11. संस्कृति किसी दो-मंजिला मकान की तरह होती है। पहली मंजिल पर एकदम मूलभूत मगर चिरंतन जीवन-मूल्य होते हैं। इसमें परस्पर सहकार्य, न्याय, सौंदर्य जैसे मूलभूत तत्व आते हैं। ये मूल्य समय से परे होते हैं। मनुष्य के जीवन की आधारशिला होते हैं। पहली मंजिल पर दूसरी मंजिल का निर्माण किसी समाज की विशिष्ट आवश्यकता के अनुरूप होता है। धार्मिक, ऐतिहासिक परंपरा, आर्थिक लेन-देन, स्त्री-पुरुष संबंध और परिस्थितिजन्य अन्य मूल्यों का निर्माण में योगदान होता है। यह व्यवस्था मूलत: संरक्षणात्मक होने के कारण तरह-तरह के प्रतीक, परंपरा, रूढ़ि और अंधविश्वास का सड़ा-सा पिंजरा बनाती है। इससे पहली मंजिल के मूलभूत मूल्यों की उपेक्षा होने लगती है।

समाज को भ्रम होने लगता है कि दूसरी मंजिल की मूल व्यवस्था ही अपनी सच्ची संस्कृति है। भ्रम से कई तरह की विकृति उत्पन्न होती है, जो सामाजिक परिवर्तन से संघर्ष करने लगती है। वस्तुत: आज इन्हीं परिस्थितियों को मात देकर नयी संस्कृति का निर्माण करना देश के सामने सबसे बड़ा कार्य है। इसमें शिक्षा-पद्धति और प्रसार-माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षा से भावी पीढ़ी पर सांस्कृतिक निष्ठा के संस्कार डाले जाते हैं। हमारी शिक्षा इस कसौटी पर खरी नहीं उतरी है। समाज में विषमता की खाई चौड़ी करने में ही इसका योगदान रहा है। यह अमीरों की दोस्त और गरीबों की दुश्मन हो गई है। एकाध ठीक-ठाक शाला में बच्चे को प्रवेश दिलाने में बीस हजार रुपये तक 'हफ्ता' देना पड़ता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ख) संस्कृति की पहली मंजिल के मूल तत्व कौन-से हैं? उनकी क्या विशेषता है? 2

(ग) देश के समक्ष सबसे बड़ा कार्य क्या है? इसमें किनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। 2

(घ) जीवन मूल्यों को जीवन की आधारशिला क्यों कहा गया है? 2

(ङ) शिक्षा-पदधति की असफलता के कारणों का उल्लेख कीजिए। 2

(च) प्रत्यय बताइए – विषमता, सांस्कृतिक। 1

12. डॉ० जगदीशचंद्र बसु ने भारतीय सामग्री से भारत में ही विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म-बोध यंत्र बना डाले, जिन्हें देखकर संसार के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गए। ये सभी यंत्र बसु विज्ञान मंदिर में मौजूद हैं। इन यंत्रों की मदद से वृक्षों के बढ़ने की अति सूक्ष्म गति को भी सूई से शीशे की प्लेट पर अंकित होते हुए देखा जा सकता है। यह गति एक सेकंड में औसतन एक इंच का लाखवाँ हिस्सा होती है, इसलिए क्रेस्टोग्राफ ही उसे अंकित कर सकता है। इन यंत्रों की सहायता से यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि पौधे किस प्रकार भोजन ग्रहण करते हैं। पृथ्वी की नमी से अपना भोजन ग्रहण करते समय पौधे अत्यंत धीमी गति से ऑक्सीजन निकालते जाते हैं, जैसे श्वास छोड़ रहे हों। एक यंत्र द्वारा इस बात को देखा जा सकता है कि जब पेड़-पौधे ऑक्सीजन की एक खास मात्रा निकाल चुकते हैं तब यंत्र की सूई इसका संकेत देती है और एक घंटी अपने-आप बज उठती है। इसका मतलब है कि पौधे ने पर्याप्त भोजन ग्रहण कर लिया है। जिस समय पौधा धूप में रहता है, उस समय यह घंटी नियमित रूप से एक निश्चित अवधि के बाद बज उठती है, लेकिन छाया में या रात के समय पौधा भोजन ग्रहण करना बंद कर देता है।
और घंटी नहीं बजती। पौधे की जड़ों में अगर कोई उत्तेजक द्रव्य मिलाकर पानी डाला जाए तो घंटी बेतहाशा जोर से और जल्दी-जल्दी बजने लगती है, लेकिन अगर कोई मादक द्रव्य या विष मिला दिया जाए तो फिर घंटी नहीं बजती। हक्सले ने एक ऐसे वृक्ष का उल्लेख किया है जिसको कुछ दिन पहले आचार्य बसु ने 'बसु विज्ञान मंदिर' के उद्यान में आरोपित करने के लिए किसी दूसरी जगह से जड़ समेत उखड़वा कर मँगाया था। पूरे वयस्क पेड़ को उखाड़कर फिर से आरोपित करना उसके लिए खतरनाक होता है, क्योंकि वह इस आघात से ही मर जाता है। क्लोरोफ़ार्म देकर मनुष्य के शरीर का ऑपरेशन किया जा सकता है और बेहोशी की अवस्था में मनुष्य के स्नायु बड़े-से-बड़े आघात झल लेते हैं इसी सिद्धांत को दृष्टि में रखकर डॉ० बसु ने उखाडने से पहले क्लोरोफ़ार्म देकर उस वृक्ष को बेहोश कर दिया था। होश में आने पर वृक्ष को इस बात का अनुभव भी नहीं हुआ कि उसने स्थान-परिवर्तन किया है। उसने तुरंत पृथ्वी में जड़ पकड़ ली और लहलहाने लगा। इस परीक्षण का ही परिणाम है कि आजकल नई सड़कों और पार्कों के बनने पर रूस और अमेरिका में बड़े-बड़े पेड़ दूसरे स्थानों से लाकर वहाँ लगा दिए जाते हैं और एक रात में ही पार्क और सड़कें घने वृक्षों की छाया से ढक जाती हैं।

प्रश्न

(क) क्रेस्टोग्राफ क्या है? उसकी क्या उपयोगिता है? 2

(ख) यंत्र में लगी घंटी कब और क्यों बज उठती है? 2

(ग) डॉ० बसु के किस प्रयास से पौधा तुरंत लहलहाने लगा? 2

(घ) विज्ञान के छात्रों को 'बसु विज्ञान मंदिर' में क्यों जाना चाहिए? 2

(ङ) वयस्क, विष – विपरीतार्थक लिखिए। 1

(च) विज्ञान, छाया – विशेषण बनाकर पुनः लिखिए। 1

13. पशु और बालक भी जिनके साथ अधिक रहते हैं, उनसे परच जाते हैं। यह परचना परिचय ही है। परिचय प्रेम के प्रवर्तक है। बिना परिचय के प्रेम नहीं हो सकता। यदि देश-प्रेम के लिए हृदय में जगह करनी है तो देश के स्वरूप से परिचित और अभ्यस्त हो जाइए। बाहर निकलिए तो आँख

खोलकर देखिए कि खेत कैसे लहलहा रहे हैं, नाले झाड़ियों के बीच कैसे बह रहे हैं, टेसू के फूलों से वनस्थली कैसी लाल हो रही है, कछारों में चौपायों के झुंड इधर-उधर चरते हैं चरवाहे तान लड़ा रहे हैं, अमराइयों के बीच गाँव झाँक रहे हैं, उनमें घुसिए, देखिए तो क्या हो रहा है। जो मिले उससे दो-दो बातें कीजिए, उनके साथ किसी पेड़ की छाया के नीचे घड़ी-आध-घड़ी बैठ जाइए और समझिए। ये सब हमारे देश के हैं।

इस प्रकार देश का रूप आपकी आँखों में समा जाएगा, आप उसके अंग-प्रत्यंग से परिचत हो जाएँगे, तब आपके अंत:करण में इस इच्छा का उदय होगा कि वह कभी न छूटे, वह सदा हरा-भरा और फला-फूला रहे, उसके धनधान्य की वृद्ध हो, उसके सब प्राणी सुखी रहे। पर आजकल इस प्रकार का परिचय बाबुओं की लज्जा का एक विषय हो रहा है। वे देश के स्वरूप से अनजान रहने या बनने में अपनी बड़ी शान समझते हैं। मैं अपने एक लखनवी दोस्त के साथ साँची का स्तूप देखने गया। वसंत का समय था। महुए चारों ओर टपक रहे थे। मेरे मुँह से निकला 'महुओं की कैसी महक आ रही है।" इस पर लखनवी महाशय ने चट मुझे रोककर कहा-"यहाँ महुए-सहुए का नाम न लीजिए, लोग देहाती समझेगे।" मैं चुप हो गया। पीछे ध्यान आया यह वही लखनऊ है जहाँ कभी यह पूछने वाले भी थे कि गेहूँ का पेड़ आम के पेड़ से छोटा है या बड़ा।

प्रश्न

(क) देश से परिचय पाने के लिए आपको क्या-क्या करना होगा? 2

(ख) देश से परिचय होने पर हमारी अभिलाषा में क्या-क्या बदलाव आता है? 2

(ग) गदयांश में बाबुओं की किस मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है? 2

(घ) कछारों को सजीव बनाने में किनका योगदान है और कैसे? 2

(ङ) समास-विग्रह कीजिए – चौपाया, देश-प्रेम। 1

(च) पर्याय लिखिए – वनस्थली, अमराई। 1

14. जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम वाले हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंतत: अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता; क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने जिंदगी को ही आने से रोक रखा है। जिंदगी से, अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। जिंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह मानकर चलता है कि जिंदगी कभी भी खत्म न होने वाली चीज है। अरे! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा? कामना का अंचल छोटा मत करो, जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निझरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

प्रश्न

(क) उपर्युक्त गदयांश में जिंदगी को ठीक ढंग से जीने के जो उपाय बताए गए हैं, उनमें से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। 2

(ख) गदयांश में जीवन के साधकों को क्या चुनौती दी गई है? स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) 'जिंदगी के सभी अक्षर फूलों से नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं।' स्पष्ट करें। 2

(घ) गदयांश के अनुसार जिंदगी का भेद किसे मालूम है और कैसे? 2

(ङ) इस गदयांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(च) उपसर्ग बताइए-सकुशल, संतोष। 1

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश क्या है?

वह काव्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है, अपठित काव्यांश कहलाता है। परीक्षा में इन काव्यांशों से विद्यार्थी के भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

परीक्षा में प्रश्न का स्वरूप

परीक्षा में विद्यार्थियों को 100 से 150 शब्दों का कोई काव्यांश दिया जाएगा। उस काव्यांश से संबंधित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा तथा कुल प्रश्न पाँच अंक के होंगे।

प्रश्न हल करने की विधि-

अपठित काव्यांश का प्रश्न हल करते समय निम्नलिखित बिंदु ध्यातव्य हैं-

- विद्यार्थी कविता को मनोयोग से पढ़ें ताकि उसका अर्थ समझ में आ जाए। यदि कविता कठिन है तो इसे बार-बार पढ़ें ताकि भाव स्पष्ट हो सके।
- कविता के अध्ययन के बाद उससे संबंधित प्रश्नों को ध्यान से पढ़िए।
- प्रश्नों के अध्ययन के बाद कविता को दोबारा पढ़िए तथा उन पंक्तियों को चुनिए जिनमें प्रश्नों के उत्तर मिलने की संभावना हो।
- जिन प्रश्नों के उत्तर सीधे तौर पर मिल जाएँ, उन्हें लिखिए।
- कुछ प्रश्न कठिन या सांकेतिक होते हैं। उनका उत्तर देने के लिए कविता का भाव-तत्त्व समझिए।
- प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट होने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए।
- उत्तर अपने शब्दों में लिखिए।
- प्रतीकात्मक व लाक्षणिक शब्दों के उत्तर एक से अधिक शब्दों में दीजिए। इससे उत्तरों की स्पष्टता बढ़ेगी।

अपठित काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांश तथा उन पर आधारित प्रश्नोत्तर ध्यानपूर्वक पढ़िए-

1.

हँस ली दो क्षण खुशी मिली गर
वरना जीवन-भर क्रदन है।
किसका जीवन हँसी-खुशी में
इस दुनिया में रहकर बीता?
सदा-सर्वदा संघर्षों को
इस दुनिया में किसने जीता?
खिलता फूल म्लान हो जाता
हँसता-रोता चमन-चमन है।
कितने रोज चमकते तारे
दूर तलक धरती की गाथा
मौन मुखर कहता कण-कण है।

यदि तुमको सामथ्र्य मिला तो
मुसकाओं सबके संग जाकर।
कितने रह-रह गिर जाते हैं,
हँसता शशि भी छिप जाता है ,
जब सावन घन घिर आते हैं।
उगता-ढलता रहता सूरज
जिसका साक्षी नील गगन है।
आसमान को छुने वाली,
वे ऊँची-ऊँची मीनारें।
मिट्टी में मिल जाती हैं वे
छिन जाते हैं सभी सहारे।
यदि तुमको मुसकान मिली तो
थामो सबको हाथ बढ़ाकर।
झाँको अपने मन-दर्पण में
प्रतिबिंबित सबका आनन है।

प्रश्न

(क) कवि दो क्षण के लिए मिली खुशी पर हँसने के लिए क्यों कह रहा है? 1

(ख) कविता में संसार की किस वास्तविकता को प्रस्तुत किया गया है? 1

(ग) धरती का कण-कण कौन-सी गाथा सुनाता रहा है? 1

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए-1
झाँको अपने मन-दर्पण में
प्रतिबिंबित सबका आनन है।
(ङ) 'उगता-ढलता रहता सूरज' के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है? 1

उत्तर-

(क) जीवन में बहुत आपदाएँ हैं। अत: जब भी हँसी के क्षण मिल जाएँ तो उन क्षणों में हँस लेना चाहिए। कवि इसलिए कहता है जब अवसर मिले हँस लेना चाहिए। खुशी मनानी चाहिए।

(ख) कविता में बताया गया है कि संसार में सब कुछ नश्वर है।

(ग) धरती का कण-कण गाथा सुनाता आ रहा है कि आसमान को छूने वाली ऊँची-ऊँची दीवारें एक दिन मिट्टी में मिल जाती हैं। सभी सहारे दूर हो जाते हैं। अत: यदि समय है तो सबके साथ मुस्कराओ और यदि सामथ्र्य है तो सबको सहारा दो।

(घ) यहाँ कवि का अभिप्राय है कि यदि अपने मन-दर्पण में झाँककर देखोगे तो सभी के एक-समान चेहरे नजर आएँगे अर्थात् सभी एक ईश्वर के ही रूप दिखाई देंगे।

(ङ) 'उगता-ढलता रहता सूरज' के माध्यम से कवि ने कहना चाहा है कि जीवन में समय एक-सा नहीं रहता है। अच्छे-बुरे समय के साथ-साथ सुख-दुख आते-जाते रहते हैं।

2.

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।
मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान-पतन,
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल
आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन।
मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

प्रश्न

(क) उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के स्वभाव की किन्हीं दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 1

(ख) कविता में आए मेघ, विदयुत, सागर की गर्जना और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं? कवि ने उनका संयोजन यहाँ क्यों किया है? 1

(ग) 'शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने कभी चयन'-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(घ) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है? उसे कमजोर क्यों बताया गया है? 1

(ङ) किन पंक्तियों का आशय है-तन-मन में दृढ़निश्चय का नशा हो तो जीवन मार्ग में बढ़ते रहने से कोई नहीं. रोक सकता? 1

उत्तर-

(क) कवि के स्वभाव की निम्नलिखित दो विशेषताएँ हैं-

(अ) गतिशीलता

(ब) साहस व संघर्षशीलता

(ख) मेघ, विद्युत, सागर की गर्जना व ज्वालामुखी जीवनपथ में आई बाधाओं के परिचायक हैं। कवि इनका संयोजन इसलिए करता है ताकि अपनी संघर्षशीलता व साहस को दर्शा सके।

(ग) इसका अर्थ है कि कवि ने हमेशा चुनौतियों से पूर्ण कठिन मार्ग चुना है। वह सुख-सुविधा पूर्ण जीवन नहीं जीना चाहता।

(घ) इसका अर्थ है, समय की बाधाएँ। कवि कहता है कि संकल्पवान व्यक्ति बाधाओं व संकटों से घबराता नहीं है। वह उनसे मुकाबला कर उन पर विजय पा लेता है।
(ङ) ये पंक्तियाँ हैं-
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए, फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

3.

यह मजूर, जो जेठ मास के इस निधूम अनल में
कर्ममग्न है अविकल दग्ध हुआ पल-पल में;
यह मजूर, जिसके अंगों पर लिपटी एक लँगोटी;
यह मजूर, जर्जर कुटिया में जिसकी वसुधा छोटी;
किस तप में तल्लीन यहाँ है भूख-प्यास को जीते,
किस कठोर साधन में इसके युग के युग हैं बीते।

कितने महा महाधिप आए, हुए विलीन क्षितिज में,
नहीं दृष्टि तक डाली इसने, निर्विकार यह निज में।
यह अविकंप न जाने कितने घूंट पिए हैं विष के,
आज इसे देखा जब मैंने बात नहीं की इससे।
अब ऐसा लगता है, इसके तप से विश्व विकल है,
नया इंद्रपद इसके हित ही निश्चित है निस्संशय।

प्रश्न

(क) जेठ के महीने में अपने काम में लगा हुआ मजदूर क्या अनुभव कर रहा है? 1
(ख) उसकी दीन-हीन दशा को कवि ने किस तरह प्रस्तुत किया है? 1
(ग) उसका पूरा जीवन कैसे बीता है? उसने बडे-से-बड़े लोगों को भी अपना कष्ट क्यों नहीं बताया? 1
(घ) उसने जीवन को कैसे जिया है? उसकी दशा को देखकर कवि को किस बात का आभास होने लगा है? 1
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए: 'नया इंद्रपद इसके हित ही निश्चित है निस्संशय।' 1

उत्तर-

(क) जेठ के महीने में अपने काम में लगा हुआ मजदूर अपने काम में मग्न है। गरम मौसम भी उसके कार्य को बाधित नहीं कर रहा है।
(ख) कवि बताता है कि मजदूर की दशा खराब है। वह सिर्फ एक लँगोटी पहने हुए है। उसकी कुटिया टूटी-फूटी है। वह पेट भरने भर भी नहीं कमा पाता है।
(ग) मजदूर का पूरा जीवन तंगहाली में बीतता है। उसने बड़े-से बड़े लोगों को भी अपना कष्ट नहीं बताया, क्योंकि वह अपने काम में तल्लीन रहता था।

(घ) मजदूर ने सारा जीवन विष का घूंट पीकर जिया। वह सदा अभावों से ग्रस्त रहा। उसकी दशा देखकर कवि को लगता है कि मजदूर की तपस्या से सारा संसार विकल है।
(ङ) इसका अर्थ है कि मजदूर के कठोर तप से यह लगता है कि उसे नया इंद्रपद मिलेगा अर्थात् कवि को लगता है कि अब उसकी हालत में सुधार होगा।

4.

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर हैं,
सूर्य चंद्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर हैं,
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडल है,
बंदीजन खग-वृद, शेषफन सिंहासन है
परमहंस सम बाल्यकाल में सब, सुख पाए,
जिसके कारण 'धूल भरे हीरे कहलाए,
हम खेले कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हो मोद में
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है,
षट्क्रतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्स नहीं मखमल से कम है,

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की;
जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं,
शुचि-सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्रप्रकाश है
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे,
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शांत करेंगे
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे,
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जाएँगे
होकर भव-बंधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जाएँगे।

प्रश्न

(क) प्रस्तुत काव्यांश में 'हरित पट' किसे कहा गया है? 1

(ख) कवि अपने देश पर क्यों बलिहारी जाता है? 1

(ग) कवि अपनी मातृभूमि के जल और वायु की क्या-क्या विशेषता बताता है? 1

(घ) मातृभूमि को ईश्वर का साकार रूप किस आधार पर बताया गया है? 1

(ङ) प्रस्तुत कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। 1

उत्तर-

(क) यहाँ हरित पट शस्य-श्यामला धरती के लिए कहा है, जिस पर चारों ओर फैली हरियाली मखमल से कम सुंदर नहीं लगती है।

(ख) कवि अपनी सुंदर मातृभूमि से प्रेम करता है जिसकी प्राकृतिक छटा मनोहारी है, जो सर्वथा ईश्वर की साक्षात् प्रतिमूर्ति के रूप में विद्यमान दिखाई देती है।

(ग) कवि अपनी मातृभूमि के जल को अमृत के समान उत्तम, शीतल, निर्मल बताते हैं और वायु को शीतल, सुगंधित और श्रम की थकान को हर लेने वाली बताते हैं।

(घ) मातृभूमि को कवि ने ईश्वर का साकार रूप बताया है, क्योंकि ईश्वर की तरह ही मातृभूमि का मुकुट सूर्य और चंद्र के समान है, शेषनाग का फन सिंहासन के समान है। बादल निरंतर जिसका अभिषेक करते हैं। पक्षी प्रात: चहचहाकर गुणगान करते हैं। तारे इसके लिए फूलों के समान हैं। इस तरह मातृभूमि ईश्वर का साकार रूप है।

(ङ) मूलभाव है कि हमारी मातृभूमि अनुपम है, ईश्वर की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। ऐसी मातृभूमि पर हम बलिहारी होते हैं।

5.

मुक्त करो नारी को, मानव।
चिर बदिनि नारी को,
युग-युग की बर्बर कारा से
जननि, सखी, प्यारी को!
छिन्न करो सब स्वर्ण-पाश
उसके कोमल तन-मन के
वे आभूषण नहीं, दाम
उसके बंदी जीवन के!
उसे मानवी का गौरव दे
पूर्ण सत्व दो नूतन,
उसका मुख जग का प्रकाश हो,
उठे अंध अवगुंठन।
मुक्त करो जीवन–संगिनि को,
जननि देवि को आदृत
जगजीवन में मानव के संग ,
हो मानवी प्रतिष्ठित!

प्रेम स्वर्ग हो धरा, मधुर
नारी महिमा से मंडित,
नारी-मुख की नव किरणों से
युग-प्रभाव हो ज्योतित!

प्रश्न

(क) कनक कि वहा से पुतकरना चहता है बाह अके धन-धन क्यों का क्लब क्यों कर रहा है? ” 1

(ख) कवि नारी के आभूषणों को उसके अलंकरण के साधन न मानकर उन्हें किन रूपों में देख रहा है? 1

(ग) वह नारी को किन दो गरिमाओं से मंडित करा रहा है और क्या कामना कर रहा है? 1

(घ) वह मुक्त नारी को किन-किन रूपों में प्रतिष्ठित करना चाहता है? 1

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए- 1

नारी मुख की नव किरणों से
युग प्रभात हो ज्योतित!

उत्तर-

(क) कवि नारी को पुरुष के बंधन से मुक्त करना चाहता है। वह नारी के जननी, सखी व प्यारी रूप को बताता है, क्योंकि पुरुष का संबंध उसके साथ माँ, दोस्त व पत्नी के रूप में होता है।

(ख) कवक के आष्यों क उके अकण के साधनों मानता वाहउहें नारीक स्तक कम मानता हैं।

(ग) कवि नारी को मानवी तथा मातृत्व की गरिमाओं से मंडित कर रहा है। वह कामना करता है कि उसे पुरुष के समान दर्जा मिले।

(घ) कवि मुक्त नारी को मानवी, युग को प्रकाश देने वाली आदि रूपों में प्रतिष्ठित करना चाहता है।

(ङ) इसका अर्थ है कि नारी के नए रूप से नए युग का प्रभात प्रकाशित हो तथा वह अपने कार्यों से समाज को दिशा दे।

6.

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए।
बरसे’ आग, जलद जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए,
पाप-पुण्य सदसद् भावों की धूल उड़े उठ दाएँ-बाएँ।
नभ का वक्षस्थल फंट जाए, तारे टूक-टूक हो जाएँ।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।

प्रश्न

(क) कवि की कविता क्रांति लाने में कैसे सहायक हो सकती है? 1

(ख) कवि ने किस प्रकार के उथल-पुथल की कल्पना की है? 1

(ग) आपके] विचार] से नाश और सत्यानाश में क्या अंतर हो सकता है? कवि उनकी कमना क्यों करता है? 1

(घ) किसी समाज में फैली जड़ता और रूढ़िवादिता केवल क्रांति से ही दूर हो सकती है-पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए। 1

(ङ) काव्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 1

उत्तर-

(क) कवी लोगों में जागरूकता पैदा करता है। वह अपने संदेशों से जनता को कुशासन समाप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

(ख) कवि से ऐसी उथल-पुथल की चाह की गई है, जिससे समाज में बुरी ताकत पूर्णतया नष्ट हो जाए।

(ग) हमारे विचार में, 'नाश' से सिर्फ बुरी ताकतें समाप्त हो सकती हैं, परंतु 'सत्यानाश' से सब कुछ नष्ट हो जाता है। इसमें अच्छी ताकतें भी समाप्त हो जाती हैं।

(घ) यह बात बिलकुल सही है कि समाज में फैली जड़ता व रूढ़िवादिता केवल क्रांति से ही दूर हो सकती है। क्रांति से वर्तमान में चल रही व्यवस्था नष्ट हो जाती है तथा नए विचारों को पनपने का अवसर मिलता है।

(ङ) **लाले पड़ना-**महँगाई के कारण गरीबों को रोटी के लाले पड़ने लगे हैं।

छा जाना-बिजेंद्र ओलंपिक में पदक जीतकर देश पर छा गया।

7.

यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ!
है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन
ममता की शीतल छाया में होता। कटुता का स्वयं शमन।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मूंदे नयन।
होकर निर्मलता में प्रशांत, बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन।
संकट में यदि मुसका न सको, भय से कातर हो मत रोओ।
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ।

प्रश्न

(क) 'फूल बोने' और 'काँटे बोने' का प्रतीकार्थ क्या है? 1

(ख) मन किन स्थितियों में अशांत होता है और कैसी स्थितियाँ उसे शांत कर देती हैं? 1

(ग) संकट आ पड़ने पर मनुष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए। और क्यों? 1

(घ) मन में कटुता कैसे आती है और वह कैसे दूर हो जाती है? 1

(ङ) काव्यांश से दो मुहावरे चुनकर वाक्य-प्रयोग कीजिए। 1

उत्तर-

(क) इनका अर्थ है-अच्छे कार्य करना व बुरे कर्म करना।

(ख) मन में विरोध की भावना के उदय के कारण अशांति का उदय होता है।माता की शीतल छाया उसे शांत कर देती है।

(ग) संकट आ पड़ने पर मनुष्य को भयभीत नहीं होना चाहिए। उसे मन को मजबूत करना चाहिए। उसे मुस्कराना चाहिए।

(घ) मन में कटुता तब आती है जब उसे सफलता नहीं मिलती। वह भटकता रहता है। स्नेह से यह दूर हो जाता है।

(ङ) काँटे बोना-हमें दूसरों के लिए काँटे नहीं बोने चाहिए। घुल जाना-विदेश में गए पुत्र की खोज खबर न मिलने से विक्रम घुल गया है।

8.

पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तूही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।

प्रश्न

(क) यह काव्यांश किसे संबोधित है? उससे हम क्या पाते हैं? 1

(ख) 'प्रत्युपकार' किसे कहते हैं? देश का प्रत्युपकार क्यों नहीं हो सकता? 1

(ग) शरीर-निर्माण में मात्भूमि का क्या योगदान है? 1

(घ) 'अचल' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों? 1

(ङ) यह कैसे कह सकते हैं कि देश से हमारा संबंध मृत्युपर्यत रहता है? 1

उत्तर-

(क) यह काव्यांश मातृभूमि को संबोधित है। मातृभूमि से हम जीवन के लिए आवश्यक सभी वस्तुएँ पाते हैं।

(ख) किसी से वस्तु प्राप्त करने के बदले में कुछ देना प्रत्युपकार कहलाता है। देश का प्रत्युपकार नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक हमेशा कुछ-न-कुछ इससे प्राप्त करता रहता है।

(ग) मातृभूमि से ही मनुष्य का शरीर बना है। जल, हवा, आग, भूमि व आकाश-मातृभूमि में ही मिलते हैं।

(घ) 'अचल' विशेषण मानव के मृत शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि मृत शरीर गतिहीन होता है तथा मातृभूमि ही इसे ग्रहण करती है।

(ङ) मनुष्य का जन्म देश में होता है। यहाँ के संसाधनों से वह बड़ा होता है तथा अंत में उसी में मिल जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि देश से हमारा संबंध मृत्युपर्यत रहता है।

9.

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है. निर्मम है,
वहाँ हवा में उसे
बाहर दाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिए का डर है
यहाँ निद्र्वद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,

अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू जोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

प्रश्न

(क) पिंजड़े के बाहर का संसार निर्मम कैसे है? 1

(ख) पिंजड़े के भीतर चिड़िया को क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं? 1

(ग) कवि चिड़िया को स्वतंत्र जगत् की किन वास्तविकताओं से अवगत कराना चाहता है? 1

(घ) बाहर सुखों का अभाव और प्राणों का संकट होने पर भी चिड़िया मुक्ति ही क्यों चाहती है? 1

(ङ) कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर-

(क) पिंजड़े के बाहर संसार हमेशा कमजोर को सताने की कोशिश में रहता है। यहाँ सदैव संघर्ष रहता है। इस कारण वह निर्मम है।

(ख) पिंजड़े के भीतर चिड़िया को पानी, अनाज, आवास तथा सुरक्षा उपलब्ध है।

(ग) कवि बताना चाहता है कि बाहर जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। भोजन, आवास व सुरक्षा के लिए हर समय मेहनत करनी होती है।

(घ) बाहर सुखों का अभाव व प्राणों का संकट होने पर भी चिड़िया मुक्ति चाहती है, क्योंकि वह आजाद जीवन जीना पसंद करती है।

(ङ) इस कविता में कवि ने स्वाधीनता के महत्व को समझाया है। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास आजाद परिवेश में हो सकता है।

10.

ले चल माँझी मझधार मुझे, दे-दे बस अब पतवार मुझे।
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रह कर प्यार मुझे।
मत रोक मुझे भयभीत न कर, मैं सदा कैंटीली राह चला।
पथ-पथ मेरे पतझारों में नव सुरभि भरा मधुमास पला।
फिर कहाँ डरा पाएगा यह पगले जर्जर संसार मुझे।
इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे।
मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ उस पार चलूँ
मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा जी चाहे जीतें हार चलूँ।
मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं।
मैं नहीं अरे ऐसा राही, जो बेबस-सा मन मार चलूँ।
कब रोक सकी मुझको चितवन, मदमाते कजरारे घन की,
कब लुभा सकी मुझको बरबस, मधु-मस्त फुहारें सावन की।
जो मचल उठे अनजाने ही अरमान नहीं मेरे ऐसे-
राहों को समझा लेता हूँ सब बात सदा अपने मन की
इन उठती-गिरती लहरों का कर लेने दो श्रृंगार मुझे,
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रह कर प्यार मुझे।

प्रश्न

(क) 'अपने मन का राजा' होने के दो लक्षण कविता से चुनकर लिखिए। 1

(ख) किस पंक्ति में कवि पतझड़ को भी बसंत मान लेता है? 1

(ग) कविता का केंद्रीय भाव दो-तीन वाक्यों में लिखिए। 1

(घ)कविता के आधार पर कवि-स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 1

(ङ) आशय स्पस्टकीजिए-कब रोक सकी मुज्कोम चितवन, मदमाते कजरारे घन की। 1

उत्तर-

(क) 'अपने मन का राजा' होने के दो लक्षण निम्नलिखित हैं

1. कहीं भी रहने के लिए स्वतंत्र हूँ।
2. मुझे किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं है। मैं बंधनमुक्त रहना चाहता हूँ।

(ख) ये पंक्ति हैं-
पथ-पथ मेरे पतझारों में नव सुरभि भरा मधुमास पला।

(ग) इस कविता में कवि जीवनपथ पर चलते हुए भयभीत न होने की सीख देता है। वह विपरीत परिस्थितियों में मार्ग बनाने, आत्मनिर्भर बनने तथा किसी भी रुकावट से न रुकने के लिए कहता है।

(घ) कवि का स्वभाव निभीक, स्वाभिमानी तथा विपरीत दशाओं को अनुकूल बनाने वाला है।

(ङ) इसका अर्थ है कि किसी सुंदरी का आकर्षण भी पथिक के निश्चय को नहीं डिगा सका।

11.

पथ बंद है पीछे अचल है पीठ पर धक्का प्रबल।
मत सोच बढ़ चल तू अभय, प्ले बाहु में उत्साह-बल।
जीवन-समर के सैनिकों संभव असंभव को करो
पथ-पथ निमंत्रण दे रहा आगे कदम, आगे कदम।
ओ बैठने वाले तुझे देगा न कोई बैठने।
पल-पल समर, नूतन सुमन-शय्या न देगा लेटने।
आराम संभव है नहीं जीवन सतत संग्राम है
बढ़ चल मुसाफिर धर कदम, आगे कदम, आगे कदम।
ऊँचे हिमानी श्रृंगपर, अंगार के ध्रु-भृग पर
तीखे करारे खंग पर आरंभ कर अद्‌भुत सफर
ओ नौजवाँ, निर्माण के पथ मोड़ दे, पथ खोल दे
जय-हार में बढ़ता रहे आगे कदम, आगे कदम।

प्रश्न

(क) इस काव्यांश में कवि किसे और क्या प्रेरणा दे रहा है? 1

(ख) 'जीवन-समर के सैनिकों संभव-असंभव को करो"-का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(ग) अदभुत सफर की अदभुतता क्या है? 1

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए-जीवन सतत संग्राम है। 1

(ङ) कविता का केंद्रीय भाव दो-तीन वाक्यों में लिखिए। 1

उत्तर-

(क) इस काव्यांश में कवि मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है।

(ख) कवि ने जीवन को युद्ध के समान बताया है। वह जीवन रूपी युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों से हर हाल में विजय प्राप्त करने का आहवान करता है अर्थात् जीवन की विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं माननी चाहिए।

(ग) कवि ने अद्‌भुत सफर के बारे में बताया है। यह सफर हिम से ढकी ऊँची चोटियों पर ज्वालामुखी के लावे पर तथा तीक्ष्ण तलवार पर भी जारी रहता है।

(घ) इसका अर्थ है कि जीवन युद्ध की तरह है जो निरंतर चलता रहता है। मनुष्य सफलता पाने के लिए बाधाओं से संघर्ष करता रहता है।

(ङ) इस कविता में कवि ने जीवन को संघर्ष से युक्त बताया है। मनुष्य को बाधाओं से संघर्ष करते हुए निरंतर आगे बढ़ना चाहिए।

12.

रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी जमीन, जिसका श्रम है;
अब कौन उलट सकता स्वतंत्रता का सुसिद्ध, सीधा क्रम है।
आजादी है। अधिकार परिश्रम का पुनीत फल पाने का,
आजादी है। अधिकार शोषणों की धज्जियाँ उड़ाने का।

गौरव की भाषा नई सीख, भिकमंगो सी आवाज बदल
सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल।
स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते हैं;
रोटी क्या? ये अंबरवाले सारे सिंगार मिल सकते हैं।

प्रश्न

(क) आजादी क्यों आवश्यक है? 1

(ख) सच्चे अर्थों में रोटी पर किसका अधिकार है? 1

(ग) कवि ने किन पंक्तियों में गिड़गिड़ाना छोड़कर स्वाभिमानी बनने को कहा है? 1

(घ) कवि व्यक्ति को क्या परामर्श देता है? 1

(ङ) आजाद व्यक्ति क्या कर सकता है?1

उत्तर-

(क) परिश्रम का फल पाने तथा शोषण का विरोध करने के लिए आजादी आवश्यक है।

(ख) सच्चे अर्थों में रोटी पर उसका अधिकार है जो अपनी जमीन पर श्रम करके अनाज पैदा करता है।

(ग) ये पंक्तियाँ हैं गौरव की भाषा की नई सीख, भिखमैंगों सी आवाज बदल।

(घ) कवि व्यक्ति को स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने का और उसके बल पर सफलता पाने का परामर्श देता है।

(ङ) जो व्यक्ति आजाद है, वह शोषण का विरोध कर सकता है, पहाड़ हिला सकता है तथा आकाश से तारे तोड़कर ला सकता है।

13.

अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर
पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफानों-भूचालों की भयप्रद छाया में,
मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझ-से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय-मेघ भूचाल देख मुझको शरमाए।
में मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या
मैंने अगणित बार धरा पर स्वर्ग बनाए।

प्रश्न

(क) उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में किसका महत्व प्रतिपादित किया जाता है? 1

(ख) स्वर्ग के प्रति मजदूर की विरक्ति का क्या कारण है? 1

(ग) किन कठिन परिस्थितियों में भी मजदूर ने अपनी निर्भयता प्रकट की है? 1

(घ) मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्याप इसमें मुझे-से अगणित प्राणी आ जाते हैं। उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करके लिखिए। 1.

(ङ) अपनी शक्ति और क्षमता के प्रति उसने क्या कहकर अपना आत्म-विश्वास प्रकट किया है? 1

उत्तर-

(क) उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में मजदूर की शक्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

(ख) मजदूर निर्माता है। वह अपनी शक्ति से धरती पर स्वर्ग के समान सुंदर बस्तियाँ बना सकता है। इस कारण उसे स्वर्ग से विरक्ति है।

(ग) मजदूर ने तूफानों व भूकंपों में भी घबराहट प्रकट नहीं की है। वह हर मुसीबत का सामना करने को तैयार है।

(घ) उपर्युक्त पक्तियों में 'मैं' श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। कवि कहना चाहता है कि मजदूर वर्ग में संसार के सभी क्रियाशील प्राणी आ जाते हैं।

(ङ) मजदूर ने कहा है कि खंडहर को भी आबाद कर सकता है। उसकी शक्ति के सामने भूचाल, प्रलय व बादल भी झुक जाते हैं।

14.

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु है एक विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन संबल।

मृत्यु एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीवन नहाकर
फिर नूतन धारण करता है,
काया रूपी वस्त्र बहाकर।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी-
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर!
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।

प्रश्न

(क) कवि ने मृत्यु के प्रति निर्भय बने रहने के लिए क्यों कहा है? 1

(ख) मृत्यु को विश्राम-स्थल क्यों कहा गया है? 1

(ग) कवि ने मृत्यु की तुलना किससे और क्यों की है? 1

(घ) मृत्यु रूपी सरिता में नहाकर जीवन में क्या परिवर्तन आ जाता है? 1

(ङ) सच्चे प्रेम की क्या विशेषता बताई गई है और उसे कब निष्प्राण कहा गया है? 1.

उत्तर

(क) कवि ने मृत्यु के प्रति निर्भय बने रहने के लिए क्यों कहा है ?

(ख) कवि ने मृत्यु को विश्राम स्थल की संज्ञा दी है। जिस प्रकार मनुष्य चलते-चलते थक जाता है और विश्राम
स्थल पर रुककर पुन: ऊर्जा प्राप्त करता है उसी प्रकार मृत्यु के बाद जीव नए जीवन का सहारा लेकर फिर से चलने लगता है।

(ग) कवि ने मृत्यु की तुलना सरिता से की है, क्योंकि थका व्यक्ति नदी में स्नान करके प्रसन्न होता है। इसी तरह मृत्यु के बाद मानव नया शरीर रूपी वस्त्र धारण करता है।

(घ) मृत्यु रूपी सरिता में नहाकर जीव नया शरीर धारण करता है तथा पुराने को त्याग देता है।

(ङ) सच्चा प्रेम वह है जो आत्मबलिदान देता है। जिस प्रेम में त्याग नहीं होता, वह निष्प्राण होता है।

15.

जीवन एक कुआँ है
अथाह-अगम
सबके लिए एक-सा वृत्ताकार!
जो भी पास जाता है,
सहज ही तृप्ति, शांति, जीवन पाता है!
मगर छिद्र होते हैं जिसके पात्र में,
रस्सी-डोर रखने के बाद भी,
हर प्रयत्न करने के बाद भी-
वह यहाँ प्यासा का प्यासा रह जाता है।
मेरे मन! तूने भी, बार-बार
बड़ी-बड़ी रस्सियाँ बटीं
रोज-रोज कुएँ पर गया
तरह-तरह घड़े को चमकाया,
पानी में डुबाया, उतराया
लेकिन तू सदा हीप्यासा गया,
प्यासा ही आया!
और दोष तूने दिया
कभी तो कुएँ को
कभी पानी को
कभी सब को
मगर कभी जाँचा नहीं खुद को
परखा नहीं घड़े की तली कोचीन्हा नहीं उन असंख्य छिद्रों को
और मूढ! अब तो खुद को परख देख

प्रश्न

(क) कविता में जीवन को कुआँ क्यों कहा गया है कैसा व्यक्ति कुएँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है ?1

(ख) कवि का मन सभी प्रकार के प्रयासों के उपरांत भी प्यासा क्यों रह जाता है? 1

(ग) किन पंक्तियों का आशय है-हम अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी मानते हैं? 1

(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो रही हो तो उसे किन बातों की जाँच-परख करनी चाहिए? 1

(ङ) पात्र में छिद्र होने का आशय क्या है? 1

उत्तर-

(क) कवि ने जीवन को कुआँ कहा है क्योंकि जीवन भी कुएँ की तरह अथाह व अगम है। दोषी व्यक्ति कुएँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है।

(ख) कवि ने कभी अपना मूल्यांकन नहीं किया। वह अपनी कमियों को नहीं देखता । इस कारण वह सभी प्रकार के प्रयासों के बावजूद प्यासा रह जाता है।

(ग) ये पंक्तियाँ हैं

और दोष तूने दिया
कभी तो कुएँ को
कभी पानी की
कभी सब को।

(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो रही हो तो उसे अपनी कमियों के बारे में जानना चाहिए। उन्हें अपने में सुधार करके कार्य करने चाहिए।

(ङ) पात्र में छिद्र होने का आशय है-व्यक्ति में कमी या दोष होना, जो उसके सफल होने में बाधक बनता है।

16.

माना आज मशीनी युग में, समय बहुत महँगा है लेकिन
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।
उम्र बहुत बाकी है, लेकिन, उम्र बहुत छोटी भी तो है
एक स्वप्न मोती का है तो, एक स्वप्न रोटी भी तो है
घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है:
सोया है विश्वास जगा लो, हम सबको नदिया तरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुम से दो बातें करनी हैं।
मन छोटा करने से मोटा काम नहीं छोटा होता है,
नेह-कोष को खुलकर बाँटो, कभी नहीं टोटा होता है,
आँसू वाला अर्थ न समझे, तो सब ज्ञान व्यर्थ जाएँगे:

मत सच का आभास दबा लो, शाश्वत आग नहीं मरनी है!

तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।

प्रश्न

(क) मशीनी युग में समय महँगा होने का क्या तात्पर्य है? इस कथन पर आपकी क्या राय है?1

(ख) ‘मोती का स्वप्न’ और ‘रोटी का स्वप्न’ से क्या तात्पर्य है? दोनों में क्या अंतर है? 1

(ग) ‘घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है’-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(घ) मन और स्नेह के बारे में कवि क्या परामर्श दे रहा है और क्यों? 1

(ङ) ‘आँसू वाला अर्थ न समझे’ का क्या आशय है? 1

उत्तर-

(क) इस युग में व्यक्ति समय के साथ बँध गया है। उसे हर घंटे के हिसाब से मजदूरी मिलती है। हमारी राय में यह बात सही है।

(ख) ‘मोती का स्वप्न’ का तात्पर्य वैभव युक्त जीवन की आकाक्षा से है तथा ‘रोटी का स्वप्न’ का तात्पर्य जीवन की मूल जरूरतों को पूरा करने से है। दोनों में अमीरी व गरीबी का अंतर है।

(ग) इक अ कमान क्रियाहक आगेन वा सकता उसे पिरमकता हणती इसाक किसा हो सकता है।

(घ)मन के बारे में कवि का मानना है कि मनुष्य को हिम्मत रखनी चाहिए। हौसला खोने से बाधा खत्म नहीं होती। स्नेह भी बाँटने से कभी कम नहीं होता। कवि मनुष्य को मानवता के गुणों से युक्त होने के लिए कह रहा है।

(ङ) ‘आँसू वाला अर्थ न समझे’ का अर्थ है-उन अभावग्रस्त दीन-हीन लोगों की आवश्यकताओं को समझना जिन्हें रोटी के भी लाले पड़े रहते हैं। यदि हमें उनसे सहानुभूति नहीं है तो हमारा ज्ञान किसी काम का नहीं हुआ।

17.

नवीन कंठ दो कि मैं नवीन गान गा सकूं,
स्वतंत्र देश की नवीन आरती सजा सकूं!
नवीन दृष्टि का नया विधान आज हो रहा,
नवीन आसमान में विहान आज हो रहा,
खुली दसों दिशा खुले कपाट ज्योति-द्वार के
विमुक्त राष्ट्र-सूर्य भासमान आज हो रहा।
युगांत की व्यथा लिए अतीत आज रो रहा,
दिगंत में वसंत का भविष्य बीज बो रहा,
सुदीर्घ क्रांति झेल, खेल की ज्वलंत आग
सेस्वदेश बल सँजो रहा, कडी थकान खो रहा।
प्रबुद्ध राष्ट्र की नवीन वंदना सुना सकूं!
नवीन बीन दो कि मैं अगीत गान गा सकूं!
नए समाज के लिए नवीन नींव पड़ चुकी,
नए मकान के लिए नवीन ईंट गढ़ चुकी,

सभी कुटुब एक, कौन पास, कौन दूर है
नए समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है।
कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गरूर है
समर्थ शक्तिपूर्ण जो किसान या मजूर है।
भविष्य-द्वार मुक्त से स्वतंत्र भाव से चलो,
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिले चले चलो,
समान भाव के प्रकाशवान सूर्य के तले
समान रूप-गंध फूल-फूल-से खिले चलो।
पुराण पंथ में खड़े विरोध वैर भाव के
त्रिशूल को दले चलो, बबूल को मले चलो।
प्रवेश-पर्व है स्वेदश का नवीन वेश में
मनुष्य बन–मनुष्य से गले मिलो चले चलो।
नवीन भाव दो कि मैं नवीन गान गा सकूं
नवीन देश की नवीन अर्चना सुना सकूं!

प्रश्न

(क) कवि ने किन नवीनताओं की चर्चा की है? 1

(ख) 'नए समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है'-आशय स्पष्ट कीजिए। 1

(ग) कवि मनुष्य को क्या परामर्श देता है? 1

(घ) कवि किस नवीनता की कामना कर रहा है? 1

(ङ) किसान और कुलीन की क्या विशेषता बताई गई है? 1

उत्तर-

(क) कवि कहता है कि उसे नयी आवाज मिले ताकि वह स्वतंत्र देश के लिए नए गीत गा सके तथा नयी आरती सजा सके।

(ख) इसका अर्थ है कि स्वतंत्र भारत का हर व्यक्ति प्रकाश के गुणों से युक्त है। उसके विकास से भारत का विकास होता है।

(ग) कवि मनुष्य को सलाह देता है कि आजाद होने के बाद हमें अब मैत्रीभाव से आगे बढ़ना है। सूर्य व फूलों के समान समानता का भाव अपनाना है।

(घ) कवि कामना करता है कि देशवासियों को वैर-विरोध के भावों को भुलाना चाहिए। उन्हें मनुष्यता का भाव अपनाकर सौहार्दता से आगे बढ़ना है।

(ङ) किसान समर्थ व शक्तिपूर्ण होते हुए भी समाज हित में कार्य करता है तथा कुलीन वह है जो घमंड नहीं दिखाता है।

18.

जिसमें स्वदेश का मान भरा
आजादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए

जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त-तिलक-भारत-ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम
फिर वे जो आँधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि-संधान बने
जो ज्वालामुख-हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय-नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं।
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम।
श्रद्धानत कवि का नमस्कार
दुर्लभ है छद-प्रसून हार
इसको बस वे ही पाते हैं
जो चढ़े काल पर आते हैं !
हुकृति से विश्व कँपाते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं
रण में त्रिपुरांतक बने शर्व
कर ले जो रिपु का गर्व खर्च
जो अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम
उनको अर्पित मेरा प्रणाम!

प्रश्न

(क) कवि किन वीरों को प्रणाम करता है? 1

(ख) कवि ने भारत के माथे का लाल चंदन किन्हें कहा है? 1

(ग) दुश्मनों पर भारतीय सैनिक किस तरह वार करते हैं? 1

(घ) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ङ) कवि की श्रदधा किन वीरों के प्रति है? 1

उत्तर-

(क) कवि उन वीरों को प्रणाम करता है जिनमें स्वदेश का मान भरा है तथा जो निभीक होकर अंतिम दम तक देश के लिए संघर्ष करते हैं।

(ख) कवि ने भारत के माथे का लाल तिलक उन वीरों को कहा है जिन्होंने देश की वेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

(ग) दुश्मनों पर भारतीय वीर आँधी की तरह भीषण वार करते हैं तथा आग उगलते हुए शत्रुओं के किलों को तोड़ देते हैं।

(घ) शीर्षक-वीरों को मेरा प्रणाम।

(ङ) कवि की श्रद्धा उन वीरों के प्रति है जो मृत्यु से नहीं घबराते तथा अपनी हुकार से विश्व को कपा देते हैं।

19.

पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो।
पुरुष क्या, पुरुषार्थी हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो,
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो?
प्रगति के पथ में विचरो उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है,
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है
कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख-शांति भरो, उठो।
पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो।
न पुरुषार्थ बिना वह स्वर्ग है,
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना क्रियता कहीं,
न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर-तुल्य वरो, उठो
पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो।

न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ
सफलता वह पा सकता कहाँ?
अपुरुषार्थ भयंकर पाप है,
न उसमें यश है, न प्रताप है।
न कृमि-कीट समान मरो, उठो
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।

प्रश्न

(क) प्रथम काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को क्या प्रेरणा दी है? 1

(ख) मनुष्य पुरुषार्थ से क्या-क्या कर सकता है? 1

(ग) 'सफलता वर-तुल्य वरो उठो'-पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करें। 1

(घ) अपुरुषार्थ भयंकर पाप है-कैसे? 1

(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर-

(क) प्रथम काव्यांश में कवि मनुष्य को प्रेरणा देता है कि वह अपनी समस्त शक्तियाँ इकट्ठी करके परिश्रम करे। इससे उसका विकास होगा।

(ख) पुरुषार्थ से मनुष्य अपना व समाज का भला कर सकता है। वह विश्व में सुख-शांति की स्थापना कर सकता है।

(ग) इसका अर्थ है कि मनुष्य निरंतर कर्म करे तथा वरदान के समान सफलता को धारणा करे। दूसरे शब्दों में, जीवन में सफलता के लिए परिश्रम आवश्यक है।

(घ) अपुरुषार्थ का अर्थ है-कर्म न करना। जो व्यक्ति परिश्रम नहीं करता, उसे यश नहीं मिलता। उसे वीरत्व नहीं प्राप्त होता है। इसी कारण अपुरुषार्थ को भयंकर पाप कहा गया है।

(ङ) शीर्षक–पुरुषार्थ का महत्त्व अथवा पुरुष हो पुरुषार्थ करो।

20.

मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है।
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है।
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है।
जिसके बड़े रसीले, फल, कंद, नाज, मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है।
जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे।
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है।
मैदान, गिरि, वनों, में हरियालियाँ महकतीं।
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है।
जिसकी अनंत वन से धरती भरी पड़ी है।
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है।
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी।
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है।

प्रश्न

(क) मनमोहिनी प्रकृति की गोद में कौन-सा देश बसा हुआ है और वहाँ कौन-सा सुख प्राप्त होता है? 1

(ख) भारत की नदियों की क्या विशेषता है? 1

(ग) भारत के फूलों का स्वरूप कैसा है? 1

(घ) जगदीश का दुलारा देश भारत संसार का शिरोमणि कैसे है? 1

(ङ) काव्यांश का सार्थक एवं उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर-

(क) मनमोहिनी प्रकृति की गोद में भारत देश बसा हुआ है। यहाँ स्वर्ग के समान सुख प्राप्त होता है।

(ख) भारत की नदियों की विशेषता है कि इनका जल अमृत के समान है तथा यह निरंतर देश को सींचती रहती हैं।

(ग) भारत के फूल सुंदर व प्यारे हैं। वे दिन-रात हँसते रहते हैं।

(घ) भारत देश जगदीश का दुलारा है तथा यह संसार शिरोमणि है, क्योंकि यहीं पर सबसे पहले सभ्यता फैली।

(ङ) शीर्षक-वह देश कौन-सा है?

21.

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए, देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर रकबे में
समाहित था 'सर्व' की परिभाषा बनकर
और अब केंद्रित हो
गया हूँ, मात्र बिंदु में।
जब कभी अनेक फूलों पर
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग है,
और मधु-मनुष्यता

जिससे जीने की अपेक्षा होती है।
किंतु अब
बाग और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ।

प्रश्न

(क) कविता में प्रयुक्त 'स्व' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है? उसकी जाल से तुलना क्यों की गई है? 1

(ख) कवि का 'स्व' पहले जैसा था और अब कैसा हो गया है और क्यों? 1

(ग) कवि को अपने पूर्वजों की याद कब और क्यों आती है? 1

(घ) उसके पूर्वजों की विचारधारा पर टिप्पणी लिखिए। 1

(ङ) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए- 1

"और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है।"

उत्तर-

(क) यहाँ 'स्व' का अभिप्राय निजता से है। इसकी तुलना जाल से की गई है, क्योंकि इसमें भी जाल की तरह विस्तार व संकुचन की क्षमता होती है।

(ख) कवि का 'स्व' पहले समाज, गाँव व परिवार के बड़े दायरे में फैला था। आज यह निजी जीवन तक सिमटकर रह गया है, क्योंकि अब वह स्वार्थी हो गया है।

(ग) कवि जब मधुमक्खियों को परागकण समेटते देखता है तो उसे अपने पूर्वजों की याद आती है। पूर्वज रंग, जाति, वर्ग या कबीलों के आधार पर भेदभाव नहीं करते थे।

(घ) कवि के पूर्वज सारे देश को एक बाग के समान समझते थे। वे मनुष्यता को महत्व देते थे।

(ङ) इसका अर्थ है कि आज मनुष्य शिलालेखों की तरह जड़, कठोर, सीमित व कट्टर हो गए हैं। वे जीवन को सहज रूप में नहीं जीते।

22.

तू हिमालय नहीं, तू न गंगा-यमुना
तू त्रिवेणी नहीं, तू न रामेश्वरम्
तू महाशील की है अमर कल्पना
देश! मेरे लिए तू परम वंदना।
मेघ करते नमन, सिंधु धोता चरण,
लहलहाते सहस्त्रों यहाँ खेत-वन।
नर्मदा-ताप्ती, सिंधु, गोदावरी,
हैं कराती युगों से तुझे आचमन।
तू पुरातन बहुत, तू नए से नया
तू महाशील की है अमर कल्पना। ।

देश! मेरे लिए तू महा अर्चना।
शक्ति–बल का समर्थक रहा सर्वदा,
तू परम तत्व का नित विचारक रहा।
शांति-संदेश देता रहा विश्व की।
प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा।
सत्य और प्रेम की है परम प्रेरणा
देश! मेरे लिए तू महा अर्चना।

प्रश्न

(क) कवि का देश को 'महाशील की अमर कल्पना' कहने से क्या तात्पर्य है?1

(ख) भारत देश पुरातन होते हुए भी नित नूतन कैसे है? 1

(ग) 'तू परम तत्व का नित विचारक रहा' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। 1

(घ) देश का सत्कार प्रकृति कैसे करती है? काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 1

(ङ) "शांति-संदेश ....रहा" काव्य-पंक्तियों का अर्थ बताते हुए इस कथन की पुष्टि में इतिहास से कोई एक प्रमाण दीजिए। 1

उत्तर-

(क) कवि देश को महाशील की अमर कल्पना कहता है। इसका अर्थ है कि भारत में महाशील के अंतर्गत करुणा, प्रेम, दया, शांति जैसे महान आचरण हैं जिसके कारण भारत का उज्ज्वल चरित्र बना है। '

(ख) भारत में करुणा, दया, प्रेम आदि पुराने गुण विद्यमान हैं तथा वैज्ञानिक व तकनीकी विकास भी बहुत हुआ है। इस कारण भारत देश पुरातन होते हुए नित नूतन है।

(ग) इसका अर्थ है कि भारत ने सदा सृष्टि के परम तत्व की खोज की है।

(घ) प्रकृति देश का सत्कार करती है। मेघ यहाँ वर्षा करते हैं, सागर भारत के चरण धोता है। यहाँ लाखों लहलहाते खेत व वन हैं। नर्मदा, ताप्ती, सिंधु, गोदावरी भारत को आचमन करवाती हैं।

(ङ) इसका अर्थ है कि भारत सदा विश्व को शांति का पाठ पढ़ाता रहा है। यहाँ सम्राट अशोक व गौतम बुद्ध ने संसार को शांति व धर्म का पाठ पढ़ाया।

23.

जब-जब बाहें झुकी मेघ की, धरती का तन-मन ललका है
जब-जब मैं गुजरा पनघट से, पनिहारिन का घट छलका है।
सुन बाँसुरिया सदा-सदा से हर बेसुध राधा बहकी है,
मेघदूत को देख यक्ष की सुधियों में केसर महकी है।
क्या अपराध किसी का है फिर, क्या कमजोरी कहूँ किसी की,
जब-जब रंग जमा महफिल में जोश रुका कब पायल का है।
जब-जब मन में भाव उमड़ते, प्रणय श्लोक अवतीर्ण हुए हैं।
जब-जब प्यास जमी पत्थर में, निर्झर स्रोत विकीर्ण हुए हैं।

जब-जब गूंजी लोकगीत की धुन अथवा आल्हा की कड़ियाँ
खेतों पर यौवन लहराया, रूप गुजरिया का दमका है।

प्रश्न

(क) मेघों के झुकने का धरती पर क्या प्रभाव पड़ता है और क्यों? 1

(ख) राधा कौन थी? उसे 'बेसुध' क्यों कहा है? 1

(ग) मन के भावों और प्रेम-गीतों का परस्पर क्या संबंध है? इनमें कौन किस पर आश्रित है? 1

(घ) काव्यांश में झरनों के अनायास फूट पड़ने का क्या कारण बताया गया है? 1

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए-खेतों पर यौवन लहराया, रूप गुजरिया का दमका है। 1

उत्तर-

(क) मेघों के झुकने पर धरती का तन-मन ललक उठता है, क्योंकि मेघों से बारिश होती है और इससे धरती पर खुशियाँ फैलती हैं।

(ख) राधा कृष्ण की आराधिका थी। वह कृष्ण की बाँसुरी की मधुरता पर मुग्ध थी। वह हर समय उसमें ही खोई रहती थी। इस कारण उसे बेसुध कहा गया है।

(ग) प्रेम का स्थान मन में है। जब मन में प्रेम उमड़ता है तो कवि प्रेम-गीतों की रचना करता है। प्रेम-गीत मन के भावों पर आश्रित होते हैं।

(घ) जब-जब पत्थरों के मन में प्रेम की प्यास जागती है, तब-तब उसमें से झरने फूट पड़ते हैं।

(ङ) इसका अर्थ है कि खेतों में हरी-भरी फसलें लहलहाने पर कृषक-बालिकाएँ प्रसन्न हो जाती हैं। उनके चेहरे खुशी से दमक उठते हैं।

स्वयं करें

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1.

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिलीं, मिली हैं कटक-कुल से।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे।
परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा! ये प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
वायु चले मंद चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुजार, कष्ट की कथा सुनावे।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना।
स्मृति की पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा—खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय परिवार, देश से भिन्न हुए हैं।
कुछ कलियाँ अधखिलीं यहाँ इसलिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना।
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।
यह सब करना किंतु,
बहुत धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान,
यहाँ मत शोर मचाना।

प्रश्न

(क) कवि ने बाग की क्या दशा बताई है? 1

(ख) कवि ऋतुराज को धीरे से आने की सलाह क्यों देता है? 1

(ग) ऋतुराज को क्या-क्या न लाने के लिए कहा गया है? 1

(घ) 'कोमल बालक..................खा-खाकर' पंक्ति से किस घटना का पता चलता है? 1

(ङ) शुष्क पुष्प कहाँ गिराने की बात कही गई है तथा क्यों? 1

2.

चौड़ी सड़क पतली गली थी,
दिन का समय घनी बदली थी,
रामदास उस समय उदास थी,
अंत समय आ गया पास था,
उसे बता दिया गया था उसकी हत्या होगी।
धीरे-धीरे चला अकेले
सोचा साथ किसी को ले ले
फिर रह गया, सड़क पर सब थे,
सभी मौन थे सभी निहत्थे,
सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी।
खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर,

दोनों हाथ पेट पर रखकर
सधे कदम रख करके आए,
लोग सिमटकर आँख गड़ाए
लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी।
निकट गली से तब हत्यारा
आकर उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था आखिर उसकी हत्या होगी
भीड़ टेलकर ठेलकर लौट गया वह,
मरा पड़ा है रामदास यह
देखी-देखी बार-बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह,
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

प्रश्न

(क) रामदास की उदासी का क्या कारण था? 1

(ख) रामदास सड़क पर अकेले क्यों आया? 1

(ग) हत्यारा अपने उददेश्य में क्यों कामयाब हो गया? 1

(घ) समाज की इस मानसिकता को आप कितना उचित समझते हैं? 1

(ङ) लोगों ने रामदास की सहायता क्यों नहीं की? 1

3.

एक फाइल ने दूसरी फाइल से कहा
बहन लगता है
साहब हमें छोड़कर जा रहे हैं
इसीलिए तो सारा काम
जल्दी-जल्दी निपटा रहे हैं
मैं बार-बार सामने जाती हूँ
रोती हूँ, गिडगिडाती हूँ
करती हूँ विनती हर बार
साहब जी! इधर भी देख लो एक बार।
पर साहब हैं कि ....
कभी मुझे नीचे पटक देते हैं
कभी पीछे सरका देते हैं
और कभी-कभी तो
फाइलों के ढेर तले
दबा देते हैं।
अधिकारी बार-बार
अंदर झाँक जाता है

डरते-डरते पूछ जाता है
साहब कहाँ गए ....?
हस्ताक्षर हो गए..........?

दूसरी फाइल ने उसे
प्यार से समझाया
जीवन का नया फलसफा सिखाया
बहन! हम यूँ ही रोते हैं
बेकार गिडगिडाते हैं
लोग आते हैं, जाते हैं।
हस्ताक्षर कहाँ रुकते हैं
हो ही जाते हैं।
पर कुछ बातें ऐसी होती हैं
जो दिखाई नहीं देतीं
और कुछ आवाजें
सुनाई नहीं देतीं
जैसे फूल खिलते हैं
और अपनी महक छोड़ जाते हैं
वैसे ही कुछ लोग
कागज पर नहीं
दिलों पर हस्ताक्षर छोड़ जाते हैं।

प्रश्न

(क) साहब जल्दी-जल्दी काम क्यों निपटा रहे हैं? 1

(ख) फाइल की विनती पर साहब की क्या प्रतिक्रिया होती है? 1

(ग) 'हस्ताक्षर कहाँ रुकते हैं, हो ही जाते हैं।'-पंक्ति में छिपा व्यंग्य बताइए। 1

(घ) दूसरी फाइल ने पहली फाइल को क्या समझाया? 1

(ङ) इस काव्यांश का भाव स्पष्ट करें। 1

4.

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख–ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना
नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूं सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले,

हानि उठानी पड़े जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।
मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की ही शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना
नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय
वहन कर सकूं इसको निर्भय।

प्रश्न

(क) विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं – पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? 1

(ख) कवि अपना कोई सहायक न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है? 1

(ग) कवि निर्भय होकर क्या वहन करना चाहता है? 1

(घ) बल पौरुष न हिलने का क्या तात्पर्य है? 1

(ङ) साधारण मनुष्य और कवि की प्रार्थना में क्या अंतर दिखाई देता है? काव्यांश के आधार पर लिखिए। 1

5.

ग्राम, नगर या कुछ लोगों का
नाम नहीं होता है देश।
संसद, सड़कों, आयोगों का
नाम नहीं होता है देश।
देश नहीं होता है केवल
सीमाओं से घिरा मकान।
देश नहीं होता है कोई
सजी हुई ऊँची दुकान।
देश नहीं क्लब जिसमें बैठे
करते रहें सदा हम मौज।
देश नहीं होता बंदूकें
देश नहीं होता है फौज।
जहाँ प्रेम के दीपक जलते
वहीं हुआ करता है देश।

जहाँ इरादे नहीं बदलते
वहीं हुआ करता है देश।
हर दिल में अरमान मचलते,
वहीं हुआ करता है देश।
सज्जन सीना ताने चलते,

वहीं हुआ करता है देश।
देश वहीं होता जो सचमुच,
आगे बढ़ता कदम-कदम।
धर्म, जाति, सीमाएँ जिसका,
ऊँचा रखते हैं परचम।
पहले हम खुद को पहचानें,
फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सत्य बनेगा,
वहीं रहेगा सपना देश।

प्रश्न

(क) कवि किसे देश नहीं मानता? 1

(ख) 'पहले हम खुद को पहचानें, फिर पहचानें अपना देश'-इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(ग) किन-किन बातों से देश की पहचान होती है? 1

(घ) देश के मस्तक को ऊँचा रखने में किन-किनका योगदान होता है? 1

(ङ) कवि क्या कहना चाहता है?1

6.

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया
तले जल नहा, पहन श्वेत वसन आई
खुले लान बैठे गई दमकती लुनाई
सूरज खरगोश धवल गोद उछल आया
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया
नभ के उद्यान-छत्र-तले मेघ टीला
पड़ा हरा फूल कढ़ा मेजपोश पीला
वृक्ष खुली पुस्तक हर पेड़ फड़फड़ाया
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।
पैरों में मखमल की जूती-सी क्यारी
मेघ ऊन का गोला बुनती सुकुमारी
डोलती सिलाई, हिलता जल लहराया
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया
बोली कुछ नहीं, एक कुर्सी थी खाली
हाथ बढ़ा छज्जे की छाया सरका ली
बाँह छुड़ा भागा, गिर बर्फ हुई छाया
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

प्रश्न

(क) धूप किस रूप में आई? 1

(ख) 'पड़ा हरा फूल मेजपोश पीला' पंक्ति से क्या तात्पर्य है? 1

(ग) कवि बाँह छुड़ा कब और क्यों भागा? 1

(घ) सुकुमारी क्या बुन रही थी? उससे जल पर क्या प्रभाव पड़ा? 1

(ङ) मेघ रूपी टीले की विशेषता काव्यांश के आधार पर लिखिए। 1

7.

अभी परिंदों
में धड़कन है
पेड़ हरे है जिंदा धरती,
मत उदास
हो छाले लखकर,
चाहे
थके पर्वतारोही
धूप शिखर पर चढ़ती रहती।
फिर-फिर समय का पीपल कहता
बढ़ो हवा की लेकर हिम्मत,
बरगद का आशीष सिखाता
खोना नहीं प्यार की दौलत
पथ में
ओ़ माझी नदियां कब थकती?
चाँद भले ही बहुत दूर हो
राहों को चाँदनी सजाती,
हर गतिमान चरण की खातिर
बदली खुद छाया बन जाती।
रात भोले घिर आए,
कभी सूर्य की दौड़ न रुकती
कितने ही पक्षी बेघर हैं
हिरनों के बच्चे बेहाल,
तम से लड़ने कौन चलेगारोज दिए का यही सवाल
पग-पग है आँधी की साजिश पथ में
पर मशाल की जग न थमती।

प्रश्न

(क) उदास व्यक्ति को कवि किस तरह उत्साहित कर रहा है? 1

(ख) कवि ने नदी का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है और क्यों? 1

(ग) पीपल मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है? 1

(घ) दीप मनुष्य से क्या सवाल करता है? उससे मनुष्य को क्या प्रेरणा लेनी चाहिए? 1

(ङ) बदली किसकी प्रतीक है? वह किनके लिए छाया बन जाती है? 1

8.

उसे दरवाजे पर रखकर
चला गया है माली
उसका वहाँ होना
अटपटा लगता है मेरी आँखों को
पर जाते हुए दिन की
धुंधली रोशनी में
उसकी वह अजब अड़बंग-सी धूल भरी
धज
आकर्षित करती है मुझे
काम था
सो हो चुका है
मिट्टी थी
सो खुद चुकी है जड़ों तक
और अब कुदाल है कि एक चुपचाप
चुनौती की तरह
खड़ी है दरवाजे पर
सोचता हूँ उसे वहाँ से उठाकर
ले जाऊँ अंदर
और रख दूँ किसी कोने में
ड्राइंग-रूम कैसा रहेगा-
मैं सोचता हूँ

न सही कुदाल
एक अलंकार ही सही
यदि वहाँ रह सकती है नागफनी
तो कुदाल क्यों नहीं?
पर नहीं-मेरे मन ने कहा
कुदाल नहीं रह सकती ड्राइंग-रूम में
इससे घर का संतुलन बिगड़ सकता है
फिर किया क्या जाए मैंने सोचा
कि तभी ख्याल आया
उसे क्यों न छिपा दूँ।
पलंग के नीचे के अंधेरे में
इससे साहस थोड़ा दबेगा जरूर
पर हवा में जो भर जाएगी एक रहस्य की गंध
उससे घर की गरमाहट कुछ बढ़ेगी ही
लेकिन पलंग के नीचे कुदाल?
मैं ठठाकर हँस पड़ा इस अद्भुत बिंब पर
अंत में कुदाल के सामने रुककर
मैंने कुछ देर सोचा कुदाल के बारे में
सोचते हुए लगा उसे कंधे पर रखकर

किसी अदृश्य अदालत में खड़ा हूँ मैं
पृथ्वी पर कुदाल के होने की गवाही में

प्रश्न

(क) माली किस वस्तु को घर के दरवाजे पर रखकर चला गया और क्यों? 1

(ख) कवि ने कुदाल को दरवाजे के निकट रख कर क्या सोचा? 1

(ग) 'यदि वहाँ रह सकती है नागफनी

तो कुदाल क्यों नहीं'

आशय स्पष्ट कीजिए। 1

(घ) कुदाल के बारे में सोचते हुए कवि को क्या महसूस हुआ? 1

(ङ) कवि कुदाल को अलंकार की तरह ड्राइग रूम में नहीं सजा पाता है, क्यों? 1

1. हमारे त्योहार
अथवा
त्योहार और हम
अथवा
त्योहारों का महत्व

श्रम से थके-हारे मनुष्य ने समय-समय पर ऐसे अनेक साधन खोजे जो उसे थकान से छुटकारा दिलाए। जीवन में आई नीरसता से उसे छुटकारा मिल सके। इसी क्रम में उसने विभिन्न प्रकार के उत्सवों और त्योहारों का सहारा लिया। ये त्योहार अपने प्रारंभिक काल से ही सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक तथा जनजागृति के प्रेरणा स्रोत हैं।

भारत एक विशाल देश है। यहाँ नाना प्रकार की विभिन्नता पाई जाती है, फिर त्योहार इस विभिन्नता से कैसे बच पाते। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग परंपराओं तथा धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रक्षाबंधन, दीपावली, दशहरा, होली, ईद, ओणम, पोंगल, गरबा, पनिहारी, बैसाखी आदि त्योहार मनाए जाते हैं। इनमें दीपावली और दशहरा ऐसे त्योहार हैं जिन्हें पूरा भारत तो मनाता ही है, विदेशों में बसे भारतीय भी मनाते हैं। बैसाखी तथा वसंतोत्सव ऋतुओं पर आधारित त्योहार हैं। इस प्रकार यहाँ त्योहारों की कमी नहीं है। आए दिन कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है।

भारतवासियों को स्वभाव से ही उत्सव प्रेमी माना जाता है। वह कभी प्रकृति की घटनाओं को आधार बनाकर तो कभी धर्म को आधार बनाकर त्योहार मनाता रहता है। इन त्योहारों के अलावा यहाँ अनेक राष्ट्रीय पर्व भी मनाए जाते हैं। इनसे महापुरुषों के जीवन से हमें कुछ सीख लेने की प्रेरणा मिलती है। गाँधी जयंती हो या नेहरू जयंती इसके मनाने का उद्देश्य यही है। इस तरह त्योहार जहाँ उमंग तथा उत्साह भरकर हमारे अंदर स्फूर्ति जगाते हैं, वहीं महापुरुषों की जयंतियाँ हमारे अंदर मानवीय मूल्य को प्रगाढ़ बनाती हैं। त्योहरों के मनाने के ढंग के आधार पर इसे कई भागों में बाँटा जा सकता है।

कुछ त्योहार पूरे देश में राष्ट्रीय तथा राजनीतिक आधार पर मनाए जाते हैं; जैसे-15 अगस्त, गणतंत्र दिवस, गाँधी जयंती (साथ ही लालबहादुर शास्त्री जयंती) इन्हें राष्ट्रीय पर्व कहा जाता है। कुछ त्योहार अंग्रेजी वर्ष के आरंभ में मनाए जाते हैं; जैसे-लोहिड़ी, मकर संक्रांति। कुछ त्योहार भारतीय नववर्ष शुरू होने के साथ मनाए जाते हैं; जैसे-नवरात्र, बैसाखी, पोंगल, ओणम। पंजाब में मनाई जाने वाली लोहड़ी, महाराष्ट्र की गणेश चतुर्थी. पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा को प्रांतीय या क्षेत्रीय त्योहार कहा जाता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, फिर ये त्योहार ही परिवर्तन से कैसे अप्रभावित रहते। समय की गति और समाज में आए परिवर्तन के परिणामस्वरूप इन त्योहारों, उत्सवों तथा पर्वों के स्वरूप में पर्याप्त परिवर्तन आया है। इन परिवर्तनों को विकृति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। आज रक्षाबंधन के पवित्र और अभिमंत्रित रूप का स्थान बाजारू राखी ने लिया है। अब राखी बाँधते समय भाई की लंबी उम्र तथा कल्याण की कामना कम, मिलने वाले उपहार या धन की चिंता अधिक रहती है। मिट्टी के दीपों में स्नेह रूपी जो तेल जलाकर प्रकाश फैलाया जाता था, उसका

स्थान बिजली की रंग-बिरंगी रोशनी वाले बल्बों ने ले लिया है। सबसे ज्यादा विकृति तो होली के स्वरूप में आई है।

टेसू के फूलों के रंग और गुलाल से खेली जाने वाली होली जो दिलों का मैल धोकर, प्रेम, एवं सद्भाव के रंग में रंगती थी, वह अश्लीलता और हुड़दंग रूपी कीचड़ में सनकर रह गई है। राह चलते लोगों पर गुब्बारे फेंकना, जबरदस्ती ग्रीस, तेल, पेंट पोतने से इस त्योहार की पवित्रता नष्ट हो गई है। आज दशहरा तथा दीपावली के समय करोड़ों रुपये केवल आतिशबाजी और पटाखों में नष्ट कर दिया जाता है। इन त्योहारों को सादगी तथा शालीनतापूर्वक मनाने से इस धन को किसी रचनात्मक या पवित्र काम में लगाया जा सकता है, जिससे समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर होने में मदद मिलेगी। इससे त्योहारों का स्वरूप भी सुखद तथा कल्याणकारी हो जाएगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि लोग इन त्योहारों को विकृत रूप में न मनाएँ हमारे जीवन में त्योहारों, उत्सवों एवं पर्वो का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

एक ओर ये त्योहार भाई-चारा, प्रेम, सद्भाव, धार्मिक एवं सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ाते हैं तो दूसरी ओर धर्म-कर्म तथा आरोग्य बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। इनसे हमारी सांस्कृतिक गरिमा की रक्षा होती है तो भारतीय संस्कृति के मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आसानी से पहुँच जाते हैं। ये त्योहार ही हैं जिनसे हमारा अस्तित्व सुरक्षित था, सुरक्षित है और सुरक्षित रहेगा। हमारे त्योहारों में व्याप्त कतिपय दोषों को छोड़ दिया जाए या उनका निवारण कर दिया जाए तो त्योहार मानव के लिए बहुपयोगी हैं। ये एक ओर मनुष्य को एकता, भाई-चारा, प्रेम-सद्भाव बढ़ाने का संदेश देते हैं तो दूसरी ओर सामाजिक समरसता भी बढ़ाते हैं। हमें इन त्योहरों को शालीनता से मानाना चाहिए, ताकि इनकी पवित्रता एवं गरिमा चिरस्थायी रहे।

2. मेरे प्रिय कवि तुलसीदास

हिंदी साहित्य जगत् में ऐसे अनेक उद्भट कवि हुए, जिनकी प्रतिभा युगों तक सराही जाती रहेगी। क्योंकि इन महान कवियों ने समाज को ऐसे संदेश दिए हैं, जिनसे मानव-समाज उनका चिर ऋणी रहेगा। हालाँकि ऐसे भी कवि हुए हैं जिनकी कविताएँ तात्कालिक परिस्थितियों को बाखूबी चित्रित करती हैं और संदेश देती हैं, तथापि समाज पर दीर्घकालीन अपनी छाप नहीं छोड़ पाती हैं। वहीं ऐसे अनेक महाकवि हुए हैं जिन्हें सदियाँ बीत जाने पर भी सम्मान के साथ याद किया जाता है और उनके काव्य को आज भी सराहा जाता है। ऐसे ही थे मेरे प्रिय महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी। उनके प्रति आकर्षण होने का कारण है कि जीवन के प्रारंभिक काल से या कहा जाए कि जन्मते ही जिस पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा था, लाख विपत्तियों व विषम परिस्थितियों के बावजूद ईश्वर ने उन्हें जीवित रखा। इस प्रकार वे ईश्वरी कृपा और अपनी जिजीविषा व परिश्रम की बदौलत एक दिन फर्श से अर्श पर विराजमान हो गए। उनकी प्रतिभा का लोहा भारती ही नहीं संपूर्ण विश्व ने स्वीकारा। अन्य बहुत-से कवियों की तरह उनके जन्मकाल और स्थान के बारे में संदेह बना रहा है।

अधिकतर विद्वानों ने उनकी रचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि उनका जन्म सन् 1532 ई. में शूकर क्षेत्र (सोरों) जनपद में हुआ। उनके जीवन में जन्मते ही ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ घटीं, जिनके कारण इनका जीवन संघर्षपूर्ण हो गया। इनके पिता आत्माराम और माता हुलसी बाई थीं। कहा जाता है कि इनके मुँह से 'राम' निकला. इसलिए इनका नाम 'राम बोला' पड़ गया। गाँव के दकियानूसी लोगों ने बत्तीस दाँत साथ होने से गाँव के लिए अपशकुन माना गया।

अत: उनके माता-पिता को उन्हें लेकर गाँव छोड़ना पड़ा। इतना ही नहीं, कुछ अनहोनी घटनाएँ माता-पिता के साथ घटीं और अंतत: उनका कारण तुलसी को ही माना गया तुलसी पर ऐसा कहर टूटा कि उनके माता-पिता ने उनको भटकने के लिए छोड़ दिया। अबोध बालक भूखा, असहाय इधर-उधर भटकता रहा। कहा तो यह भी जाता है कि बालक की दयनीय दशा देखकर सबसे बड़े लालची कहे जाने वाले बंदरों को उस बालक पर दया आ गई और अपने इकट्ठे किए चने उन्हें खाने के लिए देने लगे, किंतु मानवता के धनी मानव को इन पर दया नहीं आई। हाँ ईश्वर से उलाहना देते हुए विनम्र निवेदन किया-

'पालि के कृपाल, ब्याल-बाल को न मारिए"

मानव समाज में लोकोक्ति प्रचलित है कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' नियति ने करवट बदली, भटकते हुए बालक पर एक सहृदय आचार्य 'श्री नरहरि' की दृष्टि पड़ी। भटकते बालक की दुर्दशा को देखकर उनकी मानवता और ममता एक साथ चीख पड़ी या यह कहा जाए कि बालक की प्रतिभा को उन्होंने पहचाना और वे अपने साथ ले आए। तुलसी से आचार्य नरहरि या नरहरि से तुलसी धन्य हो गए और तुलसी की काया पलट यहीं से शुरू हो गई। आगे चलकर उनके सानिध्य में अध्ययन करने लगे। भटकता हुआ बालक आगे चलकर, संस्कृत और हिंदी भाषा के आचार्य, सुयोग्य और सम्माननीय हो गए। भारतीयता और भारतीय संस्कृति के वेत्ता बन गए। बादल सूर्य को कब तक ढककर रख सकता है, तुलसी की प्रतिभा को कब तक छिपाया जा सकता था।

कालांतर में स्वयं ही उनकी प्रतिभा से लोग प्रभावित होने लगे, ईर्ष्यालु ईर्ष्या करने लगे। ऐसे ही लोगों ने उनके अस्तित्व पर आघात किए किंतु कोई भी आघात उनकी विनम्रता के आगे टिक न सका। अन्य सभी ईर्ष्यालु लोगों ने अपनी घिनौनी आदतों को इकट्ठा कर दीपक जलाने के असफल प्रयास किए और टिम-टिमाकर बुझ गए। कुछ ने सूरदास को आगे कर विवाद ही खड़ा करना चाहा। कहा-

'सूर-सूर तुलसी शशी उडगन केशव दास'

तुलसी की नियति में कुछ और ही था। इनका विवाह भी हुआ। यह सोच रहे थे, कि माता-पिता के स्नेह से वंचित पत्नी का प्यार मिलेगा। आशा और कल्पना के विपरीत पत्नी से भी धकियाए गए। पत्नी की यह अवमानना उनके जीवन में लिए प्रेरणा और वरदान बन गई। पत्नी ने अपमानित ही नहीं किया अपितु शिक्षा भी दे दी-

अस्थि चम मम देह तन, तामें ऐसी प्रीति।
ऐसी जो श्रीराम में , तो न होति भवभीति।

यहाँ से तुलसीदास जी की दशा बदल गई, सोच बदल गई। श्रीराम के प्रति विश्वास, श्रद्धा इतना बढ़ा कि उससे हटकर कुछ और, सोचना ही बंद कर दिया, इसका परिणाम यह हुआ कि मानव समाज को अमर ग्रंथ, घर-घर की शोभा का ग्रंथ, 'रामचरितमानस' दे दिया। जिसकी सराहना उनके प्रति ईर्ष्या रखने वाले व्यक्तियों को भी विवश होकर करनी पड़ी। इस अमर ग्रंथ ने उन्हें जन-जन का हृदय-सम्राट बना दिया। इस तरह उनकी पत्नी रत्नावली की अवहेलना उनके लिए ऐसी प्रेरणा बनी, जिसे वे भुला न सके। आचार्य तुलसीदास जी ऐसे महाकवि थे जो विनम्रता की प्रतिमूर्ति थे, धुन के पक्के थे, आपदाओं में धैर्य बनाए रखने में समर्थ थे।

अपने आराध्य के प्रति विश्वास के आधार पर बड़े-से-बड़े आघातों को सरलता से सहन करते चले गए। विषमताओं में भी अपनी विनम्रता और धैर्य को नहीं छोड़ा। क्रोध उन्हें छू भी न सका। तुलसीदास जी ने अपने ग्रंथ या कहो कि महाकाव्य रामचरितमानस के माध्यम से मानव जीवन को जो प्रेरणा और चेतना दी है, वह सर्वथा अप्रत्याशित रहेगी। जीवन के प्रत्येक पहलू को छूकर मनुष्य को नई दिशा दी। अत: ऐसे महाकवि मेरे ही नहीं, अपितु जन-जन के प्रिय और हृदय सम्राट बन गए।

3. महानगरीय जीवन : अभिशाप या वरदान

कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। मानव ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की ओर कदम बढ़ाए त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गई। अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह इधर-उधर जाने के लिए विवश हुआ। इसी क्रम में मनुष्य ने बेहतर जीवनयापन के लिए शहर की ओर कदम बढ़ाए।

महानगरीय जीवन का अपना एक विशेष आकर्षण होता है। यह आकर्षण है-आधुनिकता की चमक-दमक। यही चमक-दमक गाँवों तथा छोटे-छोटे शहरों के वासियों को आकर्षित करती है। महानगर की प्रच्छन्न समस्याएँ यहाँ आने वालों को अपने जाल में यूँ उलझा लेती हैं जैसे मकड़ी के जाल में कोई कीड़ा। महानगर की इन समस्याओं से आम आदमी का निकलना आसान नहीं होता है। गाँवों से या छोटे शहरों से आने वालों के लिए महानगरीय जीवन दिवास्वप्न बनकर रह जाता है। हमारे देश में दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और मुंबई की गणना महानगरों में की जाती है। इन महानगरों का अपना विशेष आकर्षण है। इनका

ऐतिहासिक महत्व होने के साथ-साथ सांस्कृतिक महत्त्व भी है। इन महानगरों में विश्व की आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ रोजगार के साधन हैं। शिक्षा एवं परिवहन की उत्तम व्यवस्था है। यहाँ की गगनचुंबी इमारतें जनसाधारण के लिए कौतूहल का विषय बनती हैं। ये महानगरों के सौंदर्य में चार चाँद लगाती हैं। यह सब देखकर विदेशी पर्यटक भी इन महानगरों की ओर आकर्षित हो पर्यटन के लिए आते हैं। महानगरों में पाई जाने वाली इन सुख-सुविधाओं की ओर जनसाधारण आसानी से आकर्षित होता है। वह कभी रोजगार की तलाश में तो कभी बेहतर जीवन जीने की लालसा में यहाँ आता है और यहीं का होकर रह जाता है।

दिल्ली जैसे महानगर की जनसंख्या तो कई साल पहले ही एक करोड़ को पार कर चुकी थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि महानगरीय जीवन संपन्न लोगों के लिए वरदान है। उनके व्यवसाय तथा कारोबार यहीं फलते-फूलते हैं, जो शहरों के लिए भी लाभदायी होते हैं। अपनी बेहतर आमदनी के कारण ये संपन्न व्यक्ति कार, ए.सी. तथा विलासिता की वस्तुओं को प्रयोग कर स्वर्गिक सुख की अनुभूति करते हैं। इसके अलावा शिक्षा की बेहतर सुविधाएँ, आवागमन के उन्नत साधन, चमचमाती सड़कें, स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएँ, एक फोन काल की दूरी पर पुलिस, खाद्य वस्तुओं की बेमौसम लगता है। महानगरों की बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में मूलभूत सुविधाओं में वृद्ध न होने से यहाँ के अधिकतर निवासियों का जीवन दूभर हो गया है। यहाँ सबसे बड़ी समस्या आवास की है।

थोड़ी-सी जगह मिली नहीं कि निम्नवर्ग ने अपनी झोंपड़ी/झुग्गी बना ली। एक ओर गगनचुंबी अट्टालिकाएँ तो दूसरी ओर शहर के माथे पर दाग बनकर सौंदर्य का नाश करती झोंपड़पट्टयाँ। यहाँ संपन्न वर्ग के एक आदमी के लिए बीस-बीस कमरे हैं तो दूसरी ओर किराए के एक कमरे में पंद्रह या बीस आदमी रहने के लिए विवश हैं। इसके अलावा यहाँ न पीने के लिए शुद्ध पानी और न साँस लेने के लिए स्वच्छ हवा है। खाद्य वस्तुओं में मिलावट का कहना ही क्या। कुछ भी शुद्ध नहीं। कमरे

ऐसे कि जिनमें शायद ही कभी धूप के दर्शन हों। यहाँ की दूषित वस्तुएँ अकसर बीमारी की जनक होती हैं। इस प्रकार जनसाधारण के लिए ये महानगर किसी अभिशाप से कम नहीं हैं। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार नगरीय जीवन के भी अच्छाई और बुराई रूपी दो पहलू हैं। संपन्न वर्ग के लिए महानगर किसी वरदान से कम नहीं है तो गरीबों के लिए अभिशाप है। यह सत्य है कि महानगरों में आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर हैं। अथक परिश्रम और लगन से इस अभिशाप को वरदान में बदलकर इनका लाभ उठाया जा सकता है।

4. पुरुषार्थ और भाग्य

अथवा

'दैव-दैव आलसी पुकारा'

भाग्य और पुरुषार्थ दोनों सहोदर, किंतु वैचारिक और व्यावहारिक स्वभाव से विपरीत प्रवृत्ति वाले हैं। दोनों में संघर्ष होता रहता है। दोनों ही अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास करते हैं। जहाँ भाग्य ने स्थान बना लिया वहाँ मनुष्य अकर्मण्य और आलसी बन जाता है और अपने भाग्य को कोसता है। परिस्थितियों का दास बनता जाता है। अनेक विषमताओं से घिर जाता है। आगे कदम बढ़ाने में डरने लगता है। दूसरी ओर पुरुषार्थ के स्थान पा लेने पर मनुष्य साहसी हो जाता है। कर्म करने में अधिकार समझता है। विषमताओं को भी धता बताते हुए आगे बढ़ता है। परिस्थितियाँ उसकी दास हो जाती हैं। प्रसन्न रहता है, सफलताएँ उसके चरण चूमने को आतुर रहती हैं। इस तरह हर मनुष्य के विचारों में द्वंद्व चलता है। मनुष्य की प्रवृत्ति के अनुसार ही भाग्य और पुरुषार्थ में से कोई स्थान बनाने में सफल हो जाता है।

जीवन में सफलता भाग्य के आधार पर नहीं मिलती है, अपितु पुरुषार्थ से मिलती है। हमारे जीवन में अनेक विपत्तियाँ आती हैं। ये विपत्तियाँ हमें रुलाने के लिए नहीं, अपितु पौरुष को चमकाने के लिए आती हैं। जीवन में यदि किंचित भी भाग्य के आधार पर अकर्मण्यता ने प्रवेश पा लिया तो सफलता दूर हो जाती है। विद्वानों का विचार है कि पहाड़ के समान दिखाई देने वाली बाधाओं को देखकर विचलित होना पौरुषता का चिहन नहीं है। हताशा, निराशा, तो कायरता के चिहन हैं। मनुष्य के अंदर वह शक्ति है जो यमराज को भी ललकार सकती है। केवल एक बार संकल्प करने की आवश्यकता होती है। असफलता की जो चट्टान सामने दिखाई देती है वह इतनी मजबूत नहीं है जो गिराई न जा सके। सिर्फ एक धक्का देने की आवश्यकता है, चकनाचूर हो जाएगी। ठहरें नहीं, रुकें नहीं, संघर्ष हमें चुनौती दे रहा है।

चुनौती स्वीकार करें और पूरी ताकत से प्रहार करें। सफलता मिल कर रहेगी। इस संबंध में भगवान श्रीकृष्ण का विचार था कि यदि तुम चाहते हो कि विजयी बनो, सफलता तुम्हारे चरण चूमे तो फिर रुकने की क्या आवश्यकता है? परिस्थितियाँ तुम्हारा क्या बिगाड़ लेंगी? विरोधी पस्थितियों से मित्रता नहीं, संघर्ष अपेक्षित है। अपने पुरुषार्थ पर विश्वास रखें। अवसर की प्रतीक्षा करें। अवसर चूकना बुद्धमानी नहीं है। अत: याद रहे कि जलधारा के बीच पड़ा कंकड़ नदी के प्रवाह को बदल देता है। एक छोटी-सी चींटी भीमकाय हाथी की मृत्यु का कारण बन सकती है, फिर हम तो पुरुष हैं। अपने पुरुषार्थ से असंभव को संभव बना सकते हैं। जीवन में यदि संघर्ष और खतरों से खेलने की प्रवृत्ति न हो तो जीवन का आधा आनंद समाप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति के मन में सांसारिक महत्वाकांक्षाएँ नहीं हैं उसे किसी भी प्रकार के संशय और विपदाएँ विचलित नहीं कर सकती हैं। आत्मबल और दृढ़ संकल्प के सम्मुख तो बड़े-से-बड़ा पर्वत भी नत हो जाता है। कहा जाता है एक निर्वासित बालक श्रीराम के पौरुष के सामने समुद्र विनती करते हुए आ खड़ा हुआ, नेपोलियन

बोनापार्ट के साहस को देखते हुए आल्पस पर्वत उसका रास्ता न रोक सका। महाराजा रणजीत के पौरुष को देखते हुए कटक नदी ने रास्ता दे दिया। संसार को रौदता हुआ जब सिकंदर ने भारत में प्रवेश किया तो राजा पोरस के पौरुष को देखकर हतप्रभ रह गया और आचार्य चाणक्य के शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य के सामने मुँह की खानी पड़ी। छत्रपति शिवाजी के सम्मुख अतुल सेना का मालिक औरंगजेब थर-थर काँपता रहा, वीरांगना झाँसी वाली रानी के शौर्य के सम्मुख अंग्रेज दाँतों तले अँगुली दबाकर रह गए। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में जाकर भारतीय संस्कृति की सर्वोत्कृष्टता की पताका फहराई। डॉ. हेडगेवार ने विषम परिस्थितियों में देश को राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत संगठन खड़ा किया।

लौह-पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल ने देश की सभी रियासतों को एक झंडे के तले खड़ा कर दिया। महात्मा-गाँधी जहाँ भी रहे, जहाँ भी गए, परिस्थितियों को चुनौती देते रहे। पुरुषार्थ से अलग भाग्यवादी लोग चलनी में दूध दुहते हैं और पश्चात्ताप करते हैं और भाग्य को कोसते हैं। भाग्यवादी मनुष्य सदैव रोता है, समय खोता है, शेखचिल्ली की कल्पना करता है, परिस्थितियों को देख घबराता है, समाज, देश, यहाँ तक कि स्वयं अपने लिए बोझ बनता है। निराशाओं से घिरा रहता है, हाथ आए सुअवसर को भी हाथ से निकाल देता है। चलनी में दूध दुहता है। दूसरों से ईष्र्या करता है, दूसरों को दोष देता है। कल्पवृक्ष हाथ लगने की कल्पना करता है और रोता हुआ आता है; रोता हुआ चला जाता है। जीवन निंदित और तिरस्कृत होता है, कुंठित होता है। इस प्रकार सर्वथा निंदनीय और हेय होता है। संपूर्ण जीवन नारकीय बन जाता है। इतना ही नहीं परंपरा से विरासत में मिली पूर्वजों की संपत्ति, यश, समृद्ध को नष्ट कर कलकित हो जाता है। ऐसे लोगों को ही पाठ पढ़ाने की आवश्यकता होती है कि

उद्यमेन हि सिद्धायन्ति कार्याणि, न मनोरथैः
नहीं सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि स्वतंत्रता के बाद जो छोटी-छोटी रियासतें थीं या कही छोटे-मोटे राजा थे, वे अपनी अतीत की परंपरा में परिवर्तन न कर सके। फलस्वरुप उन परिवारों की ओर कोई 'आँखें' उठाकर देखने वाला नहीं है। निरुद्यमी होने के कारण वे सड़क पर आ खड़े हुए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार दृष्टि जितनी ऊँची होगी तीर उतनी ही दूर जाएगा। पुरुषार्थ भी जितनी सही दिशा में होगा उतना ही पुरुष उन्नत होगा। भाग्य के भरोसे बैठे रहना कायरता है, नपुंसकता है। अत: हमें ध्यान रखना चाहिए कि पुरुषार्थ मनुष्य को महान बना देता है। कार्य के प्रति निष्क्रियता मानव को पतन की ओर ले जाती है। तमिल में एक लोकोक्ति है 'यदि पैर स्थिर रखोगे तो दुर्भाग्य की देवी मिलेगी और पैर चलेंगे तो श्री देवी मिलेगी।' यह सटीक एवं सार्थक है।

5. मनोरंजन के साधन

मनुष्य कर्मशील प्राणी है। जीवन की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वह कर्म में लीन रहता है। काम की अधिकता उसके जीवन में नीरसता लाती है। नीरसता से छुटकारा पाने के लिए उसे मनोविनोद की आवश्यकता होती है। इसके अलावा काम के बीच-बीच में उसे मनोरंजन मिल जाए तो काम करने की गति बढ़ती है तथा मनुष्य का काम में मन लगा रहता है।

मनुष्य ने जब से विकास की ओर कदम बढ़ाया, उसी समय से उसकी आवश्यकता बढ़ती गई। दूसरों के सुखमय जीवन से प्रतिस्पर्धा करके उसने अपनी आवश्यकताएँ और भी बढ़ा लीं, जिसके

कारण उसे न दिन को चैन है न रात को आराम। ऐसे में उसका मस्तिष्क, तन, मन यहाँ तक कि उसका अंग-अंग थक जाता है। एक ही प्रकार की दिनचर्या से मनुष्य उकता जाता है उसे अपनी थकान मिटाने और जी बहलाने के लिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है, जो उसकी थकान भगाकर उसके मन को पुन: उत्साह एवं उमंग से भर देता है। यही कारण है कि मनुष्य आदि काल से ही किसी-न-किसी रूप में अपना मनोरंजन करता आया है।

मानव ने प्राचीन काल से ही अपने मनोरंजन के साधन खोज रखे थे। अपने मनोविनोद के लिए पक्षियों को लड़ाना, विभिन्न जानवरों को लड़ाना, रथों की दौड़, धनुष-बाण से निशाना लगाना, लाठी-तलवार से मुकाबला करना, कम तथा बड़ी दूरी की दौड़, वृक्ष पर चढ़ना, कबड्डी, कुश्ती, गुल्ली-डंडा, गुड्डे-गुड़ियों का विवाह, रस्साकशी करना, रस्सी कूदना, जुआ, गाना-बजाना, नाटक करना, नाचना, अभिनय, नौकायन, भाला-कटार चलाना, शिकार करना, पंजा लड़ाना आदि करता था। मनुष्य के जीवन में विकास के साथ-साथ मनोरंजन के साधनों में भी बदलाव आने लगा।

आधुनिक युग में मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं। यह तो मनुष्य की रुचि, सामर्थ्य आदि पर निर्भर करता है कि वह इनमें से किनका चुनाव करता है। विज्ञान ने मनोरंजन के क्षेत्र में हमारी सुविधाएँ बढ़ाई हैं। रेडियो पर हम लोकसंगीत, फिल्म संगीत, शास्त्रीय संगीत का आनंद लेते हैं तो सिनेमा हॉल में चित्रपट पर विभिन्न फिल्मों का। इसके अलावा ताश, शतरंज, सर्कस, प्रदर्शनी, फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट, टेनिस, खो-खो, बैडमिंटन आदि ऐसे मनोरंजन के साधन हैं, जो स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद हैं।

हमारे सामने आजकल मनोरंजन के अनेक विकल्प मौजूद हैं, जिनमें से अपनी रुचि के अनुसार साधन अपनाकर हम अपना मनोरंजन कर सकते हैं। आज कवि सम्मेलन सुनना, ताश एवं शतरंज खेलना, फिल्म देखना, रेडियो सुनना, विभिन्न प्रकार के खेल खेलना तथा संगीत सुनकर मनोरंजन किया जा सकता है। सिनेमा हॉल में फिल्म देखना एक लोकप्रिय साधन है। मजदूर या गरीब व्यक्ति कम कमाता है, फिर भी वह समय निकालकर फिल्म देखने अवश्य जाता है। युवकों से लेकर वृद्धों तक के लिए यह मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन है। आज मोबाइल फोन पर गाने सुनने का प्रचलन इस प्रकार बढ़ा है कि युवाओं को कानों में लीड लगाकर गाने सुनते हुए देखा जा सकता है। मनोरंजन करने से मनुष्य अपनी थकान, चिंता, दुख से छुटकारा पाता है या यूँ कह सकते हैं कि मनोरंजन मनुष्य को खुशियों की दुनिया में ले जाते हैं। उसे उमंग, उत्साह से भरकर कार्य से छुटकारा दिलाते हैं। बीमारियों में दर्द को भूलने का उत्तम साधन मनोरंजन है। यह मनुष्य को स्वस्थ रहने में भी मदद करता है। 'अति सर्वत्र वर्जते' अर्थात् मनोरंजन की अधिकता भी मनुष्य को आलसी एवं अकर्मण्य बनाती है। अत: मनुष्य अपने काम को छोड़कर आमोद-प्रमोद में न डूबा रहे अन्यथा मनोरंजन ही उसे विनाश की ओर ले जा सकता है। हमें मनोरंजन के उन्हीं साधनों को अपनाना चाहिए, जिससे हमारा चरित्र मजबूत हो तथा हम स्वस्थ बनें।

6. भय बिनु होइ न प्रीति

प्राय: कहा जाता है कि मिमियाते बकरे कसाई के हृदय में परिवतन नहीं कर सकते और घिघियाते मनुष्य दुष्टों के हृदय में करुणा नहीं जगा सकते हैं। दया-ममता का उपदेश कोई नहीं सुनता है। भय के बिना तो प्रीति का राग नहीं सुना जा सकता। संसार में चमत्कार को नमस्कार किया जाता है।

आज मनुष्य की विनम्रता को उसका संस्कार नहीं, अपितु उसकी कमजोरी समझी जाने लगी है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर विचार किया जाए कि भारत की विनम्रता या भारत की अहिंसावादी नीति को इसकी कमजोरी समझ कर पाकिस्तान कभी सीमा-उल्लंघन तो कभी आतंकवादी-घुसपैठ या अन्य हरकतें करता रहता है। उसकी इस दुष्प्रवृत्ति में निरंतर वृद्ध होती जा रही है जिसका मुख्य कारण राजनैतिक इच्छाशक्ति व दृढ़ता में कमी है। ऐसी ही प्रवृत्ति के प्रतीक समुद्र से तीन दिन तक श्री राम रास्ता देने के लिए विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते रहे परंतु समुद्र पर कोई असर नहीं पड़ा। फलस्वरूप उनका पौरुष धधक उठा और उन्होंने लक्ष्मण से अग्निबाण लाने के लिए कहा-

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीति।

बोले राम सकोप तब , भय बिनु होई न प्रीति।

लक्ष्मण बाणा सरासन आना
सोखौं बारिधि बिसिखि कृसाना।

अन्याय का विरोध न होने पर उसका प्रचार-प्रसार बढ़ता जाता है। धीरे-धीरे वह इतना प्रचार-प्रसार पा लेता है कि फिर उसको रोकना कठिन हो जाता है और जन-जीवन को इतना संत्रस्त कर देता है कि लोगों का जीवन जीना दूभर हो जाता है। समयोपरांत प्रबुद्ध-वर्ग भी अन्यायी का मुँह कुचलने की हिमायत करता है। वह चाहता है कि येन-केन प्रकारेण अन्यायी का सिर इस प्रकार कुचल दिया जाए कि वह फिर कभी सिर न उठा सके। न्याय और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए भी उचित है कि अन्यायी का प्रतिकार दंड से किया जाए, क्योंकि लातों के भूत बातों से नहीं मानते हैं।

भारतीय समाज अपनी घिघियाने की प्रवृत्ति और निरीहता को प्रदर्शित कर शत्रुओं को आक्रमण के लिए आमंत्रित करता रहा है। इतिहास-प्रसिद्ध घटना 'सोमनाथ' के मंदिर की प्रतिष्ठा लोगों की प्रार्थना, चीख और करुण-क्रदन के कारण जाती रही। आक्रांता सबको पद्दलित कर लूटकर चला गया। लोगों की चीख-पुकार ने आक्रांता के कार्य को सरल तथा सुगम बना दिया। इसलिए अन्याय के सम्मुख सिर झुकाकर अपना स्वत्व छोड़ देना मनुष्य धर्म नहीं है, अपितु कायरता ही है।

मनुष्य कुछ हद तक तो सामान्य स्थितियों तक अन्याय को सहन कर सकता है, किंतु अन्याय सिर पर चढ़कर बोलने लगता है या आसमान को छूने लगता है तो सामान्य आदमी भी प्रतिकार करने के लिए खड़ा हो जाता है। अंत: हृदय से यही अवाज निकलती है कि अन्याय को सहन करना कायरतापूर्ण अधर्म है और अन्याय का प्रतिकार करना मानव-धर्म है। अन्याय को सहन कर लेने से अपराधी के अपराध बढ़े हैं, घटे नहीं हैं। असहाय अवस्था में अन्याय के प्रति सहिष्णुता विवशता है, किंतु निरंतर विवश बने रहना निष्क्रियता और दब्बूपन ही है। अन्याय का विरोध न्याय ही कहा जा सकता है। न्याय का पक्ष मनुष्य को युद्ध की स्थिति तक भी ले जा सकता है।

महाभारत का युद्ध अन्याय के विरोध के लिए ही तो था। अपराधों को सहन करना या उसका विरोध न करना, अनदेखा करना उसको बढ़ावा देना है। कभी-कभी तो इतना दुष्परिणाम देने वाला होता है जिसका खामियाजा सदियों तक भुगतना पड़ता है। अंग्रेजों का प्रतिकार न होने से सदियों तक अंग्रेजों के पैरों तले भारतीय कुचले जाते रहे। अन्याय का विरोध उचित है, किंतु उसके विरोध के लिए मजबूत साहस की आवश्यकता होती है। मानव का मनोबल अन्याय और अन्यायी को धराशायी करने में सहायता देता है। दुष्ट की दुष्टता तब तक विराम नहीं लेती है जब-तक उसका मुकाबला डटकर नहीं किया जाता है। हालाँकि मुकाबला करने के लिए मनोबल और उत्साह की

आवश्यकता होती है। दुष्ट तब तक भयावह दिखाई देता है जब तक उसके शरीर पर जख्म नहीं होता है।

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गाँधी के उत्साह और सकारात्मक सोच ने पाक की रोज बढ़ती हुई उच्छ्रंखलता पर जो निशान दिए, उसके बाद दशकों तक पाकिस्तान ने कोई गलती नहीं की। दुष्ट-जनों को सबक सिखाने के लिए स्वयं सामथ्र्यवान होना बहुत जरूरी है। आचार्य चाणक्य ने कहा है कि पैर में मजबूत जूता होने पर काँटे को कुचलते हुए चलो जिससे किसी और के न चुभ जाए और जूता कमजोर है तो रास्ता बदल कर चले जाना ही उचित है। शस्त्रों से सुसज्जित होने पर भी साहस और मनोबल के अभाव में बड़े-बड़े आततायी उदित होकर स्वयं अस्त हो जाते हैं। पाक के साथ ऐसा ही हुआ था कि अमेरिका से खैरात में मिले युद्ध-विमानों के होते हुए भी प्राकृतिक मनोबल के अभाव में भारत-पाक युद्ध के दौरान मुँह की खाकर रह गया। दार्शनिकों का विचार है कि दुष्टों के साथ प्रीति तभी तक सार्थक होती है जब तक वे भय के सानिध्य में रहते हैं।

परिस्थितियों का आकलन करते हुए दुष्ट की दुष्टता का प्रतिकार करना सामाजिक और पुण्यात्मक कृत्य है। ऐसा न होने पर दृष्ट की दुष्टता समाज और राष्ट्र के लिए त्रासदी बन जाती है और इतनी बड़ी त्रासदी कि जिसकी बहुत बड़ी कीमत मानव समाज को चुकानी पड़ती है। जीवन कठिन हो जाता है। मानवता, सहिष्णुता कलकित हो जाती है। प्रमाणस्वरूप इतिहास के पृष्ठों का अवलोकन करें तो चंगेज, तैमूर, मुसोलिनी आदि के रूप में ये दुष्ट शक्तियाँ आम नागरिक को समय-समय पर परेशान करती रही हैं। तत्कालिन मानव-समाज द्वारा प्रतिकार न करना ही इसका मुख्य कारण रहा है। कलम का सिपाही होने के नाते हमारे देश के कवियों व लेखकों ने इन दुष्ट लोगों के विरोध में अपनी लेखनी के माध्यम से जनमत तैयार करने का काम किया है। उनका कहना है कि क्षमाशील होना अच्छी बात तब है जब आप समर्थवान है अन्यथा आप निरीह हैं। यदि आप समर्थवान हैं फिर भी विरोध नहीं करते हैं तो भी आपको कायर समझा जाएगा। दिनकर जी ने भी कहा है

क्षमा शोभती उसी भुजंग को
जिस के पास गरल हो।

7. शिक्षा में खेलों का महत्व

अथवा

जीवन में खेलों का महत्व

विधाता ने सृष्टि में जितने भी प्राणियों की रचना की उनमें मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। जैसे मनुष्य किसी बिंदु या विचार पर चिंतन कर सकता है, वैसे अन्य प्राणी विचार नहीं कर सकते। अपनी इसी शक्ति के बल पर वह अन्य प्राणियों पर शासन करता आया है। मनुष्य ने अपनी शक्ति के बल पर प्रकृति के कार्य-कलाप में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है। मनुष्य की शक्ति में जहाँ उसकी बुद्ध और विवेक की भूमिका है वहीं इसमें उसके शारीरिक बल के योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता है। मस्तिष्क के विकास का साधन यदि शिक्षा है तो शारीरिक विकास का साधन परिश्रम एवं खेल है। परिश्रम खेल में किसी-न-किसी रूप में समाया रहता है। खेल शारीरिक विकास के सर्वोत्तम साधन हैं।

घर के बाहर खेले जाने वाले खेल-कबड्डी, कुश्ती, फुटबॉल, टेनिस, बालीवॉल, क्रिकेट, भ्रमण, दौड़ आदि शारीरिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इनकी गणना स्वास्थ्यवर्धक खेलों में की जाती है। कैरम, शतरंज, ताश आदि कुछ ऐसे खेल हैं जिन्हें घर में बैठकर खेला जा सकता है। इन खेलों से हमारा मानसिक विकास होता है। खेलों से हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता ही है साथ ही मनोरंजन भी होता है। खेल थके-हारे शरीर की थकान हर लेते हैं और हमें ऊर्जा एवं

उत्साह से भर देते हैं। आदमी खेलते समय अपनी चिंता एवं छोटे-मोटे दुख भूल जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूर वर्ग तथा किसानों को दोपहर के भोजन के बाद ताश खेलकर समय बिताते देखा जा सकता है। इससे उनका मनोरंजन होता है और वे अपनी थकान से छुटकारा पाकर दोपहर बाद काम पर जाने को तैयार होते हैं।

विद्यार्थियों के लिए खेलों का विशेष महत्व है। वे मध्यांतर में अपना खाना जल्दी से समाप्त कर खेलने में व्यस्त हो जाते हैं। उनकी पढ़ाई के घंटों में खेल के लिए समय निर्धारित होता है, जिससे वे अपनी शारीरिक तथा मानसिक थकान भूल जाएँ। उनका मनोरंजन हो और वे प्रसन्नचित्त होकर बाद की पढ़ाई में एकाग्रचित्त हो सकें। खेलों से खिलाड़ियों में मानवीय गुणों का उदय होता है। खिलाड़ी खेल-खेल में कब यह सब सीख जाते हैं पता ही नहीं चलता। कुछ खेल खिलाड़ियों द्वारा सामूहिक रूप में खेले जाते हैं; जैसे-कबड्डी, क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल आदि। इनसे खिलाड़ियों में सामूहिकता की भावना विकसित होती है, क्योंकि टीम की हार-जीत प्रत्येक खिलाड़ी के योगदान पर निर्भर करती है। इसके अलावा खिलाड़ी में आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित होती है। उसमें अपने साथियों के लिए स्नेह और मित्रता पैदा होती है जो बाद में अपनत्व की भावना प्रबल करती है। खेलते समय खिलाड़ी में जो प्रतिस्पर्धा की भावना होती है वही खेल की समाप्ति पर हाथ मिलाते ही मित्रता में बदल जाती है। ऋषियों-मुनियों को यह बात भली प्रकार पता थी कि शारीरिक और मानसिक विकास बनाए रखने के लिए खेलों का बहुत महत्व है। वे अपने आश्रम में विद्यार्थियों को विभिन्न खेलों में पारंगत बना देते थे। इससे वे बलिष्ठ बनते थे, जो रणकौशल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण योग्यता थी। शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर वे मानसिक रूप से भी स्वस्थ होते थे।

मानसिक स्वास्थ्य के साथ शारीरिक बल 'सोने पर सुहागा' के समान होती है। अकसर देखा गया है कि दिन-रात किताबों में डूबा रहने वाला विद्यार्थी यदि बीमार रहता है तो उससे सफलता की आशा कैसे की जा सकती है। वास्तव में शारीरिक बल के अभाव में सभी गुण विफल हो जाते हैं। कुछ समय पहले तक खेलों को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था पर अब समय एवं सोच बदल चुकी है। 'खेलोगे-कूदोगे हो जाओगे खराब' वाली कहावत को लोग भूलकर 'खेलोगे-कूदोगे बनोगे नवाब' वाली कहावत को अपने जीवन का अंग बना चुके हैं।

ओलंपिक खेलों और कॉमनवेल्थ खेलों आदि में विजयी होने वाले खिलाड़ियों पर होने वाली नोटों की बरसात से यह बात प्रमाणित भी हो चुकी है। खेलों के माध्यम से इतना धन, यश तथा सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं कि आम आदमी बस इनकी कल्पना भर कर सकता है। सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, विजेंद्र कुमार, सोमदेव देव वर्मन, सायना नेहवाल आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं जिनके कदम यश और धन चूम रहे हैं। अति हर चीज की बुरी होती है। यह सत्य है कि विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के समान ही खेल भी आवश्यक है पर वही विद्यार्थी खेलों में इतना लीन हो जाए कि पढ़ाई भूल जाए तो अच्छा नहीं होगा; क्योंकि हर बालक सचिन तेंदुलकर नहीं बन सकता है। अत: आवश्यक है कि खेल और शिक्षा में समन्वय बनया जाए तथा खेलों को शिक्षा का अंग बनाकर प्रत्येक विद्यालय में लागू किया जाए।

8. मेरी प्रिय पुस्तक-रामचरित मानस

यद्यपि पुस्तकें मानव के लिए हित-चिंतक मित्र हैं। पुस्तकों को पढ़ने से मनुष्य को कुछ-न-कुछ सकारात्मक संदेश मिलता है, किंतु निर्भर करता है कि हम किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ते हैं। सत्-साहित्य को पढ़ना घर बैठे सत्संग हो जाता है। सत्-साहित्य मनुष्य को नयी दिशा प्रदान करता है।

जिस व्यक्ति को सत्-साहित्य के अध्ययन की आदत पड़ जाती है, उसका चिंतन, उसके कार्य, उसके व्यवहार में सद्-परिवर्तन हो जाता है। हिंदी साहित्य समृद्ध साहित्य है, जिसमें जीवन के प्रत्येक पहलू का चिंतन है, किंतु मेरी प्रिय पुस्तक 'रामचरित मानस' ऐसी पुस्तक है जिसमें एक में ही जीवन के प्रत्येक पहलू का दार्शनिक चिंतन है जो सहजता से मनुष्य को प्रेरित करता है, विपदाओं में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है। सावधान करता है। उसके प्रत्येक संदेश अपने ही जीवन को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं।

एक में ही समग्रता है। इस तरह इसमें धैर्य है, उत्साह है, रोष है, करुणा है, ममता है, वीभत्सता है, आदर्श है, उत्कृष्टता है अर्थात् संपूर्णता है। मेरी प्रिय पुस्तक 'रामचरितमानस' के नायक श्रीराम और रचनाकार श्री तुलसीदास जी हैं। तुलसीदास जी ने नायक श्रीराम में जो रंग भरे हैं, वे अप्रतिम हैं, जो अन्यत्र सुलभ नहीं है। तुलसीदास जी ने अपने आराध्य नायक के बहाने मानव-समाज के लिए जो संदेश दिए हैं, जिन परिस्थितियों को छुआ है उनका समाधान भी किया है और सावधान भी किया है। जिसमें आदर्श-मूल्यों की सराहना है। व्यावहारिक पक्षों का निरूपण किया है। जिसे पढ़कर ऐसा लगता है कि तुलसीदास जी को जीवन के प्रत्येक पक्ष का गहन अनुभव अध्ययन था। थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही उपमाओं और सूक्तियों का सहारा लेकर मनुष्यों को संदेश देते हुए और सावधान करते हुए चले गए हैं। इस पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इसमें तुलसीदास जी ने व्यर्थ के पांडित्य का प्रदर्शन नहीं किया है। सहज, सरल, सुबोध अवधी भाषा में लिखी यह पुस्तक सरलता से ही प्राय: लोगों की समझ में आ जाती है। इसमें प्राय: उन बातों को नहीं छुआ गया है जो विवादित हो सकते हैं। सर्वत्र समन्वय की भावना को दर्शाया गया है। 'रामचरितमानस' के सभी पात्र व्यक्ति, समाज और राष्ट्रीय मूल्यों की व्याख्या करते हुए सम्मुख आते हैं।

कर्तव्य-बोध कराते हैं विषमताओं में जीने की सीख देते हैं। इसके नायक कहीं शत्रु को भी गले लगाते हुए दिखाई देते हैं तो कहीं शत्रु को ललकारते हुए। कहीं शबरी के आश्रम में पधार कर जूठे बेर खाते हुए उसकी प्रतिष्ठता बढ़ाते हैं तो कहीं काल को भी ललकारने की हिम्मत करते हुए दिखाई देते हैं। कहीं असहायों को गले लगाते हैं तो अन्यायी को ठिकाने लगाने में चूक नहीं करते हैं। यहीं जड़ समुद्र को भी भयभीत करते हैं तो कहीं ऋषियों के आश्रम में जाकर उनकी वंदना करते हुए दिखाई देते हैं। स्वयं सीखने की बात आती है तो शत्रु रावण से शिक्षा ग्रहण करने के लिए लक्ष्मण को भेज देते हैं। राजनीति का सहारा लेते हैं और विभीषण को अपने पक्ष में लेकर भेदनीति से शत्रु की लंका में फूट डाल देते हैं।

ऐसा धीरोदात्त नायक अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। 'रामचरितमानस' ग्रंथ में एक प्रेरणा है, चेतना है। भटकते मनुष्य के लिए सहारा है, एक दिशा है। धैर्य और उत्साह का साक्षात् शरीर जैसा है, आत्मीय संवेदना है. दुष्टों के लिए वेदना है, पारिवारिक-जीवन का पाठ है। राष्ट्रीय संचेतना है, प्रायश्चित की गरिमा है। संगीत का गायन है, भक्तों के लिए रामायण है, आर्यावर्त की स्थापना है, वाचकों के लिए कथा है। ऐसे 'रामचरितमानस' में सबको संदेश है। जो व्यक्ति इसके अध्ययन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सुशिक्षित करता है वह सर्वथा प्रसन्न रहता है। कदम-कदम पर संदेश है। उदाहरण के रूप में यात्रा के लिए जा रहे दंपत्ति रेल में चढ़ रहे थे पहले पुरुष स्वयं चढ़ गया और पत्नी नहीं चढ़ पाई। रेल चल दी। उन्हें अपनी असावधानी का बोध हुआ और 'रामचरितमानस' का अनुकरण न करने के कारण चूक हो गई। उन्हें चौपाई याद आई-

'सिया चढाई चढ़े रघुराई'

'रामचरितमानस' अपने लिए, अपने देश के लिए अपनी संस्कृति-पहचान के रूप में अमूल्य धरोहर है। इस ग्रंथ की अपनी विशिष्टता रही है। अनेक मठाधीशों और धर्म के ठेकेदारों के विरोध के बावजूद भी इसकी लोकप्रियता बढ़ती चली गई। हर कसौटी पर खरी उतरी। आज यह भारतीयता की पहचान बनी हुई है। धरोहर के रूप में हर घर में विद्यमान है। पूज्य ग्रंथ के रूप में सुशोभित है। कुछ लोग तो इसकी श्रेष्ठता को मानते हुए पंचम वेद कहने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। जब-जब इसकी श्रेष्ठता के गीत गाए जाते हैं तो अनायास ही रचनाकार श्री तुलसीदास जी के प्रति श्रद्धा से माथा नमन करने लगता है। इसमें लोकमंगल की कामना है। इससे तुलसीदास जी भी जन-जन के हृदय सम्राट बने हुए हैं। इसकी श्रेष्ठता को देखते हुए इस पुस्तक का अनुवाद भी अनेक भाषाओं में हो चुका है।

अत: इस पुस्तक का या इस महाकाव्य के अस्तित्व के बारे में कहा जाता है कि यह महाकाव्य धरोहर के रूप में तब तक रहेगा जब-तक गंगा-यमुना में पानी है। यह भारतीयता को अक्षुण्ण बनाए हुए है या यह कहा जाए कि यह भारतीयता का पर्याय है तो अतिशयोक्ति न होगी। इसकी श्रेष्ठता को देखते हुए घर-घर में पहुँचाने में जो उदारता गीता प्रेस, गोरखपुर ने दिखाई है वह भी सर्वथा वंदनीय ही है। यह पठनीय है। अत: इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जिस पुस्तक में लोक मंगल की कामना है, वह मेरी ही नहीं, अपितु जन-जन के लिए सराहनीय है। इसकी सरल भाषा में मनुष्य के लिए जो संदेश है, जो आदर्श है, वे संसार की अन्य पुस्तकों में इतनी सरलता से हृदय-ग्राहय नहीं है। यह महाकाव्यत्व के गुणों पर खरा उतरने के कारण यह महाकाव्य है। श्रेष्ठता की कसौटी पर खरा उतरने वाला 'रामचरितमानस' श्रेष्ठतम रचना है। इसलिए कहा गया है कि

'तुलसी के मानस में डुबकी लगाइए'।

9. वर्तमान शिक्षा–प्रणाली कितनी उपयोगी

अथवा

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली

शिक्षा के इस युग में जब हम उस मानव की कल्पना करते हैं जो अशिक्षित होता था, तो कितना हास्यास्पद तथा आश्चर्यजनक लगता है। मनुष्य को उस दशा में कितनी मुसीबतों को सामना करना पड़ा होगा, यह सोचना भी चिंतनीय है। यही कुछ कारण रहे होंगे जिनके कारण मनुष्य ने पढ़ना-लिखना सीखकर प्रगति की दिशा में अपना कदम आगे बढ़ाया। शिक्षा का कितना महत्व है-यह आज बताने की आवश्यकता नहीं है। मानव को मनुष्य बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के अभाव में उसमें और पशु में विशेष अंतर नहीं रह जाता है। ऐसे ही मनुष्य के लिए कहा गया होगा"ते मृत्युलोके भुविभारभूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।"

शिक्षा ही पशु और मनुष्य में फर्क पैदा करती है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह उम्र बढ़ने के साथ-साथ सीखना शुरू कर देता है। अनेक बातें वह माता-पिता और साथियों से सीख जाता है। वह चार-पाँच साल तक बहुत-सी बातें तथा कई शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग करना सीख जाता है। सामान्यतया यही वह समय होता है जब उसे स्कूल भेजा जाता है। शिक्षा-प्रणाली अर्थात् एक निश्चित तरीके से शिक्षा देने की पद्धति कब अस्तित्व में आई यह कहना मुश्किल है। वेदों-पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है कि वनों में गुरुकुल होते थे, जहाँ पर बच्चों को अल्पायु में ही भेज दिया जाता था। गुरु के सानिध्य में रहकर बालक पच्चीस वर्ष की उम्र तक विद्यार्जन करता था।

यहाँ रहकर वह उन सभी विद्याओं की शिक्षा प्राप्ति करता था जो उसे एक अच्छा तथा ज्ञानवान मनुष्य बनाती थी। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इस परिवर्तन से शिक्षा कैसे अछूती रह सकती थी। शिक्षा-प्रणाली में भी परिवर्तन हुए। बदलते वक्त के साथ शिक्षा-प्रणाली अपने वर्तमान स्वरूप में हमारे समक्ष हैं, इसमें भी अनेक गुण और दोष देखे जा रहे हैं। आज हमारे समाज में सरकारी, अर्धसरकारी, प्राइवेट आदि अनगिनत शैक्षिक संस्थाएँ हैं, जिनमें बच्चे को प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। इनमें बच्चे को तीन साल से पाँच साल की उम्र में प्रवेश दिया जाता है जिनमें पाठ्यक्रम के अलावा खेल-खेल के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। इनमें साधारणतया दस वर्ष की उम्र तक के बच्चे को शिक्षा तथा सामान्य विषयों की प्रारंभिक जानकारी दी जाती है। इनमें पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं। खेद का विषय है कि इस प्राथमिक शिक्षा को प्राप्त करते समय ही बहुत-से विद्यार्थी विद्यालय छोड़ देते हैं और माता-पिता की आमदनी में सहयोग देने हेतु काम में लग जाते हैं। इस प्रकृत्ति को रोकने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं।
फलस्वरूप प्राथमिक स्तर में विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों में कमी आई है। माध्यमिक स्तर प्राथमिक और महाविद्यालयी शिक्षा के बीच का स्तर है। प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण करने वाला विद्यार्थी इसमें प्रवेश लेता है। यहाँ बालक का ज्ञान क्षेत्र बढ़ता है। उसे कई विषयों को पढ़ना पड़ता है। यहीं विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार विषयों को पसंद करने लगते हैं। प्रशिक्षित अध्यापकों के नेतृत्व में वे उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाते हैं। दसवीं की पढ़ाई के बाद की शिक्षा विभिन्न वर्गों एवं व्यवसायों में बँट जाती है।
छात्रों की संख्या ग्यारहवीं कक्षा तक आते-आते प्राथमिक शिक्षा की तुलना में लगभग आधी रह जाती है। बारहवीं पास छात्र फिर विभिन्न क्षेत्रों में बँट जाते हैं। यहाँ तक आते-आते कुछ छात्र बीच में ही विद्यालय छोड़ जाते हैं, पर सरकारी नीतियों में बदलाव आने के कारण विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या में कमी आई है। प्रत्येक देश की उन्नति वहाँ के नागरिकों पर निर्भर करती है। आज शिक्षा के माध्यम से जिस तरह के नागरिक तैयार किए जाएँगे, देश की प्रगति भी उसी तरह होगी। अंग्रेजों को इस बात की समझ थी। उन्होंने भारतीय साहित्य और इतिहास नष्ट करने के साथ ही शिक्षा को अपने अनुकूल बनाया और ऐसी शिक्षा-प्रणाली भारत में लागू की जिससे भारतीय सिर्फ क्लर्क बनें और वे भारत में उनके शासन को मजबूत बनाने में अपना सहयोग दें।
सन् 1828 में लार्ड विलियम बैंटिक ने भारत में शिक्षा-प्रणाली में सुधार किया। उसी समय भारत की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी घोषित की गई थी। इससे भारतीयों का मस्तिष्क संकुचित हुआ और शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नौकरी भर रह गया। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ऐसी है कि विश्वविद्यालय की शिक्षा पाने के बाद भी विद्यार्थी स्वयं को अनिश्चित दिशा में खड़ा पाता है। आज शिक्षा पाकर भी अनेकानेक विद्यार्थी निराशाग्रस्त हैं। वे बस सरकारी नौकरी करना चाहते हैं। उसे पाने के लिए अपना समय, श्रम तथा धन गवाते रहते हैं। ऐसी शिक्षा-प्रणाली मनुष्य-को-मनुष्य बनाना, आत्मनिर्भरता की भावना भरना, चरित्र-निर्माण करना जैसे उद्देश्य से कोसों दूर है। आज यह उदरपूर्ति का साधन मात्र बनकर रह गई है। आज ऐसी शिक्षा-प्रणाली की आवश्यकता है जो देश के लिए अच्छा नागरिक, कुशल कार्यकर्ता उत्पन्न करे तथा व्यक्ति को आत्मनिर्भरता की भावना से भर दे। शिक्षा में व्यावहारिकता तथा रचनात्मकता हो जिससे आगे चलकर वही छात्र देश के विकास म हर तरह का सहयोग दे सके।

10. सत्संगति

सत्संगति को लेकर अनेक सार्थक और तथ्यपूर्ण उक्तियाँ कही गई हैं। अनेक कहानीकारों ने सत्संगति की महत्ता को अपनी कहानी का विषय बनाया है जिसके माध्यम से उन्होंने लोगों के जीवन में सत्संगति के प्रभाव को दर्शाया है। कहानीकार सुदर्शन जी की कहानी 'हार की जीत' का डाकू खडग सिंह, बाबा भारती की थोड़ी-सी बात सुनकर उससे इतना प्रभाव पड़ा कि बाबा भारती का छीना हुआ घोड़ा वापस ही नहीं किया अपितु डाकू-प्रवृत्ति को ही त्याग दिया है। इसलिए श्री तुलसीदास की उक्ति सार्थक ही है कि-

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगति साधु की, कटै कोटि अपराध।।

सज्जन पुरुषों का सत्संग पाकर अतिसामान्य जन महान हो गए। जीवन सुधरा और उनके जीवन लक्ष्य बदले और ध्येय पथ पर अग्रसर होते हुए महानों से महान हुए। अंगुलिमाल जैसा पातकी महात्मा बुद्ध के सानिध्य से अपनी हिंसक प्रवृत्ति को छोड़ दिया। ऐसे ही डाकू रत्नाकर जो डाकू-प्रवत्ति को ही अपनी कमाई का साधन मानता था, ऐसा डाकू देवर्षि नारद के सानिध्य में आया और इतना परिवर्तन हुआ. इतना प्रभाव पड़ा कि कवियों का कवि आदि कवि बन गए और डाकू रत्नाकर से महिर्ष वाल्मीकि बन गए। यह सत्संगति का प्रभाव था। इसलिए यह सत्य है कि संत्संगति सद्‌गुणों का विकास करती है। मनुष्य के असत् विचारधाराओं को दूर कर सद् प्रवृत्ति का विकास करती है। जिस प्रकार बुरे लोगों के पास बैठने से वैसा ही प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार सज्जन लोगों के संसर्ग से भी प्रभाव पड़े नहीं रहता है। इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि श्री तुलसीदास जी ने सत्य ही कहा है कि-

शठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परसि कुधात सुहाई।।

इसलिए महापुरुषों का सत्संग तीर्थ से भी बढ़कर है या यह कहा जाए कि महापुरुषों का सत्संग चलता हुआ तीर्थ है जिससे ब्रारह वर्ष के बाद आने वाले महाकुंभ के स्नान से भी बढ़कर पुण्य मिलता है, जिसका फल तुरंत मिलता है, जबकि तीर्थों का फल कुछ समय के बाद ही मिलता है। अत: सत्य सिद्ध है कि विज्ञ पुरुषों के कथानुसार सत्संग से जीवन पवित्र हो जाता है, असत् प्रवृत्तियाँ पलायन कर जाती हैं और शांति मिलती है। शांतचित्त को प्रतिक्षण आनंदानुभूति होती है। सत्संग के महत्व को स्वीकारते हुए श्री तुलसीदास जी ने यहाँ तक कहा है कि-

तात स्वग अपवर्ग सुख धरिआ तुला एक अग।
तूल न तोहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग।

जहाँ विद्वानों ने सत्संग की महिमा के गीत गाए हैं वहीं कुसंग से बचने की सलाह भी दी है। यद्यपि सज्जन पुरुष पर कुसंग का प्रभाव नहीं पड़ता है, तथापि लगातार कुसंग के संसर्ग में रहने का प्रभाव भी पड़े बिना भी नहीं रहता है। कुसंग में पड़कर बड़े-बड़े महापुरुष भी अपनी सत्प्रवृत्ति को छोड़ असत के पथ पर चल पड़े। पुराणों की कथा के अनुसार पूज्य, सज्जन अजामिल वैश्या के संसर्ग में आकर अपने पांडित्य को भुला बैठा और आजीवन उसी की सेवा में रहा। रघुवंश की राजरानी जननी, कुत्सिता मंथरा के कुसंग के प्रभाव को न नकार सकी और सदा-सदा के लिए लोगों के लिए हेय बन गई। वैधव्य का कारण बनी, पुत्र स्नेह से वंचित हो गई. पवित्र-वंश रघुवंश के लिए कलंक बन गई। जो निरंतर राम का हित सोचती थी वही कैकयी मंथरा का संसर्ग पाकर बालक राम को वन भेजने के लिए हठ कर बैठी। इस संदर्भ में तुलसीदास जी ने इस प्रकार कहा है कि

को न कुसंगति पाई नसाई।
रहें न नीच मतें चतुराई।

अत: विद्वान मानव समाज को प्रेरित करते आए हैं कि यथासंभव कुसंग से, परनिंदा से बचना चाहिए। परनिंदा से सद्-प्रवृत्तियाँ कुंठित होती हैं। संत कवि कबीरदास जी ने भी समाज को सीख देते हुए कहा है कि-

कबिरा सगति साधु की, हरें और की व्याधि।
संगति बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि।।

स्वामी भतृहरि जी ने सत्संगति की पराकाष्ठा को स्वीकारते हुए कहा है कि संगति मनुष्य के लिए क्या-क्या नहीं करती है; सत्संगति बुराइयों से हटाकर अच्छाइयों की ओर प्रेरित करती है। कुत्सित मार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर ले जाती है। अवनति से उन्नति की ओर ले जाती है। मन को प्रसन्न करती है. दुष्कृत्यों से रोकती है और निर्भय करती है। इस तरह सत्संगति मनुष्य जीवन के लिए वरदान है जो उसकी कीर्ति को दरमें दिशाओं में फैलाती है। सत्संगति का मनुष्य जीवन पर प्रभाव पड़ रहा है-इसका मूल्यांकन स्वयं ही होने लगता है कि वह प्रतिक्षण दूसरों के हित का चिंतन करता है, मन में परोपकार की भावना उत्पन्न होने लगती। परनिंदा में कोई रस नहीं आता है। मन में प्रफुल्लता रहती है, उत्साह रहता है।

अत: स्पष्ट है कि सत्संग मानव-जीवन को उन्नत पथ की ओर ले जाने वाली सहज कसौटी है, जो मनुष्य में परिवर्तन लाकर ऐसे स्थान पर पटक देती है कि जहाँ तड़पने के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं है। प्रायश्चित करने पर भी माथे पर लगे कलंक को किसी प्रकार धोया नहीं जा सकता है। किसका चरित्र कितना उन्नत है या निम्न है यह उसके व्यवहार से पता चलता है और यह व्यवहार उसके संग को बताता है। इसलिए कहा-

जो जानव सत्संग प्रभाऊ।
लोकहुँ वेद न जान उपाऊ।

11. कंप्यूटर-आज की आवश्यकता

मनुष्य की प्रगति में विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। उसने मनुष्य को वह सभी सुविधाएँ दी हैं जिनकी वह सदा से लालस: किया करता था। विज्ञान ने जिन उपकरणों एवं विशिष्ट साधनों से जीवन सुखमय बनाया है, उनमें दूरदर्शन, मोबाइल फोन, विभिन्न चिकित्सीय उपकरण, फ्रिज, ए.सी. कारें आदि हैं, परंतु कप्यूटर का नाम लिए बिना यह विकास यात्रा अधूरी सी लगती है। आज इसका प्रयोग लगभग हर स्थान पर देखा जा सकता है।

कंप्यूटर क्या है, ऐसी जिज्ञासा मन में आना स्वाभाविक है। वास्तव में कंप्यूटर अनेक यांत्रिक मस्तिष्कों का योग है, जो अत्यंत तेज गति से कम-से-कम समय में सही-सही काम कर सकता हैं। गणितीय समस्याओं को हल करने में कंप्यूटर का कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है। इसके प्रयोग से हर कार्य को अत्यंत शीघ्रता से किया जा रहा है जो इसकी दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता का कारण है। भारत में भी कंप्यूटर के प्रति आकर्षण बढ़ा है, जिसको और उन्नत बनाने के लिए विभिन्न देशों के साथ शोध कार्य किया जा रहा है।

कंप्यूटर का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में हुआ। जिसके जनक थे-चालर्स बेवेज। यह कंप्यूटर जटिल गणनाएँ आसानी से और कम समय में कर सकता है। इसमें आँकड़ों को मुद्रित करने की भी अद्भुत क्षमता है। इसमें गणनाओं के लिए एक विशेष भाषा का प्रयोग किया जाता है जिसे 'कंप्यूटर का प्रोग्राम' कहा जाता है। कंप्यूटर की गणना कितनी शुद्ध है, इसका उत्तरदायित्व कंप्यूटर

पर कम उसके प्रयोगकर्ता पर अधिक निर्भर करता है। आज इसका प्रयोग हर क्षेत्र में होने लगा है। कंप्यूटर का प्रयोग अब इतना बढ़ गया है कि यह सोचना पड़ता है कि कंप्यूटर का प्रयोग कहाँ नहीं हो रहा है। बैंक में हिसाब-किताब रखना हो या पुस्तकों का प्रकाशन, कंप्यूटर ने अपनी भूमिका से इसे आसान बना दिया है।

आज चिकित्सा, इंजीनियरिंग, रेलगाड़ियों के संचालन, उनके टिकटों की बुकिंग, वायुयान की उड़ान तथा टिकट बुकिंग में इसका प्रयोग किया जा रहा है। इसके अलावा भवनों, मोटर-गाड़ियों, हवाई-जहाज, विभिन्न उपकरणों के पुर्जों के डिजाइन तैयार करने में इसका उपयोग किया जा रहा है। कला के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। अंतरिक्ष विज्ञान, औद्योगिक क्षेत्र, आम-चुनाव तथा परीक्षा के प्रश्नपत्र बनाने और उनका मूल्यांकन करने के लिए भी कंप्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। कंप्यूटर ने अपनी उपयोगिता के कारण कार्यालयों में गहरी पैठ बना ली है। इसकी मदद से अब फाइलों की संख्या घटकर बहुत ही कम हो गई है। कार्यालय की सारी गतिविधियाँ सी.डी. में संग्रहित कर ली जाती हैं और यथा समय उनको कंप्यूटर के माध्यम से सुविधाजनक तरीके से प्रयोग में लाया जा सकता है। स्थिति यह है कि 'फाइलों को दीमक चाट गए' वाली बातें बीते समय की होती जा रही हैं।

इंटरनेट का साथ कंप्यूटर के लिए सोने पर सुहागा वाली स्थिति बना देता है। अब तो समाचार-पत्र भी इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर पढ़े जा सकते हैं। विश्व के किसी कोने में छपी पुस्तक हो या कोई फिल्म या किसी घटना की जानकारी इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर उपलब्ध है। वास्तव में बहुत-सी जानकारियों का ढेर कंप्यूटर के रूप में हमारे कमरे में उपलब्ध है। , कंप्यूटर बहुत ही उपयोगी उपकरण है। यह विज्ञान की वह अद्भुत खोज है जो बहुउपयोगी है। आवश्यकता है कि इसका आवश्यकतानुरूप तथा ठीक-ठीक प्रयोग किया जाए। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने हर कार्य के लिए कंप्यूटर पर आश्रित न बने तथा स्वयं भी सक्रिय रहे। इसे प्रयोग में लाते समय स्वास्थ्य संबंधी निर्देशों का पालन अवश्य करना चाहिए जिससे हमारे स्वास्थ्य पर इसका कुप्रभाव न पड़े।

12. समाचार-पत्रों का महत्व

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने आस-पास घटने वाली घटना के बारे में जानकारी लेना चाहता है। मनुष्य अपनी योग्यता, साधन और सामर्थ्य के अनुसार समय-समय पर समाचार जानने का प्रयास करता रहा है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया. उसकी जिज्ञासा आस-पास की परिधि तोड़कर देश-विदेश तक पहुँच गई। वह अन्य देशों की घटनाओं के बारे में जानने का इच्छुक हो गया। छापाखाना के आविष्कृत होने के बाद सामाचार-पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उससे घर बैठे विश्व की घटनाओं की जानकारी मिलने लगी।

समाचार-पत्रों के आविष्कार से पहले एक स्थान से दूसरे स्थान तक खबर भेजना या खबर पाना बड़ा ही कठिन काम था। राजा या संपन्न लोग प्राचीन काल में अपने हरकारों या अश्वारोहियों को भेजकर समाचारों का आदान-प्रदान कर लेते थे, पर आम आदमी के लिए यह बहुत ही मुश्किल कार्य था। समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने में बड़ा समय लग जाता था। कभी-कभी तो किसी की बीमारी की खबर देकर जब कोई वापस आता था तब तक बीमार व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी होती थी। सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रीलंका भेजा तथा अपने सिद्धांतों के प्रचार के लिए जगह-जगह लाटें खुदवाई और स्मारक बनवाए ताकि आने-जाने वाले इसे पढ़कर उनके विचारों से अवगत हो सकें।

पढ़े-लिखे व्यक्ति समाचार जानने के लिए प्रात:काल बिस्तर छोड़ते ही समाचार-पत्र ढूँढ़ते हैं। वह अपने समाज, देश तथा दुनिया के बारे में जानना चाहते हैं, जिसके लिए समाचार-पत्र सबसे अच्छा साधन है। प्रात: की चाय पीते समय यदि समाचार-पत्र न मिले तो चाय का स्वाद फीका-सा लगता है। लोग समाचार-पत्र पढ़ने के बाद ही अपने ऑफिस या काम पर जाना चाहते हैं। अपनी छपने की अवधि के आधार पर समाचार-पत्र कई प्रकार के होते हैं। जो समाचार-पत्र प्रतिदिन छपते हैं, उन्हें दैनिक समाचार-पत्र कहते हैं। इनमें नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, आज, वीर अर्जुन, जनसत्ता प्रमुख दैनिक समाचार-पत्र हैं। इसी तरह टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान, दि हिंदू अंग्रेजी के दैनिक समाचार-पत्रों की श्रेणी में आते हैं। सप्ताह में एक बार छपने वाले पत्रों को साप्ताहिक समाचार-पत्र कहते हैं, जिनमें सप्ताह भर के प्रमुख समाचार, विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ तथा साप्ताहिक घटनाओं का विवरण होता है। पंद्रह दिन में एक बार छपने वाले समाचार-पत्रों को पाक्षिक तथा महीने में एक बार छपने वाले समाचार-पत्रों को मासिक-पत्र कहा जाता है। इनमें ज्ञान से भरपूर लेख, सुंदर कहानियाँ, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक लेख, पुस्तक समीक्षा आदि छपा होता है। समाचार-पत्रों के लाभ की स्थिति यह है कि इनसे 'आम के आम गुठलियों के दाम' वाली कहावत चरितार्थ होती है। समाचार-पत्र पढ़कर हम घर बैठे विश्व भर की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इससे हमारा मानसिक विकास होता है। यद्यपि समाचारों का संकेत हमें रेडियो और दूरदर्शन पर भी मिल जाता है, परंतु इनकी विस्तृत जानकारी हमें समाचार-पत्रों से ही होती है। दूरदर्शन और रेडियो पर समय की बाध्यता होती है, इनमें समाचार जानने के लिए हमें उनके समय पर वहाँ उपस्थित रहना होगा, किंतु समाचार-पत्र खरीदकर हम उसे अपनी मर्जी के अनुसार पढ़ सकते हैं।

कुछ आवश्यक समाचार, संपादकीय, कहानी या विशेष समाचार को बार-बार पढ़ सकते हैं। इसके अलावा इनमें से आवश्यक सामग्री का संग्रह भी किया जा सकता है, जिसे भविष्य में कभी भी प्रयोग में लाया जा सकता है। समाचार-पत्रों में बालक से वृद्ध तक हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी सामग्री होती है। इनमें गीत, कहानी, चुटकुले, खेल, समाचार, वर्ग पहेली, आर्थिक समाचार, राजनीतिक समाचार, विभिन्न वस्तुओं के बाजार भाव, शेयरों के दाम, विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के विज्ञापन के अलावा फिल्मी दुनिया की खबरें, समीक्षा तथा फिल्मी अभिनेता-अभिनेत्रियों की आकर्षक तस्वीरें होती हैं, जिसे युवा वर्ग रुचि से पढ़ता-देखता है। समाचार-पत्रों का लोकतंत्र को चौथा स्तंभ कहा जाता है। समाचार-पत्रों के संपादकों को अपना काम निष्पक्ष भाव से करना चाहिए, ताकि इनकी विश्वसनीयता पर आँच न आए। समाचार-पत्र बहुउपयोगी हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है।

13. खेल और स्वास्थ्य
अथवा
जीवन में खेलों का महत्व

खेल मात्र खाली समय का सदुपयोग नहीं है, अपितु जीवन की नियमित आवश्यकता है। अपनी दिनचर्या में जिसने खेलों के लिए स्थान दिया है, वह मनुष्य सदैव प्रसन्न रहता है। स्वस्थ रहता है, मजबूत रहता है। बड़ी-बड़ी मुसीबतों में विचलित नहीं होता है। सदैव सूरजमुखी के जैसा चेहरा

खिला-खिला रहता है, नहीं तो गुड़हल-सा सदैव मुरझाया ही रहता है। युवक में आत्मविश्वास रहता है, नेतृत्व की क्षमता उत्पन्न होती है, इच्छाशक्ति सदैव बलवती रहती है। संगठन की शक्ति का अहसास होता है। निराशाएँ कभी ऐसे व्यक्ति का पीछा नहीं कर पाती हैं। होंठों पर मुस्कुराहट, वार्ता में आत्मविश्वास, मन में उत्साह, स्वस्थ-विचारों का विकास एक साथ झुंड बनाए रहते हैं। इस तरह स्वस्थ शरीर वरदान बन जाता है।

अत: खेल स्वास्थ्य का पर्याय है। अस्वस्थ शरीर में खेल की भावना नहीं हो सकती है। अस्वस्थ शरीर बोझिल बन अभिशाप होता है अर्थात् जीवन के हर आनंद से वंचित रहता है। मन में कुंठा होती है, ईर्ष्या होती है, सर्वथा असमर्थ होने पर भी क्रोध होता है। अनमना रहता हुआ किसी भी व्यक्ति का सामना करने में संकोच करता है। घुट-घुट कर जीता है, किसी प्रकार जीवन-यात्रा पूरी करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना में अपनी मौत माँगता है। अस्वस्थ शरीर सर्वथा हतोत्साहित रहता है। इस तरह खेलों का सीधा संबंध स्वास्थ्य, दृढ़ इच्छाशक्ति से है।

धन के अभाव में मनुष्य सुख का अनुभव कर सकता है। शरीर के स्वस्थ रहने पर धन प्राप्त करने के प्रयास किए जा सकते हैं। धन के अभाव में सामान्य-से-सामान्य जीवन जीता हुआ परिस्थितियों को सहन करते हुए सुख की कामना बनाए रख सकता है। किंतु अस्वस्थ रहने पर सुखों का अनुभव तो दूर, सब कुछ सामने होते हुए भी सुख की कामना नहीं कर पाता है। बुझा-बुझा सा, सुख में भी मुरझाया हुआ रहता है। किसी भी प्रकार की कल्पना नहीं कर सकता है। अत: जिसका स्वास्थ्य अच्छा है वह ही सब कुछ करने की और सब कुछ प्राप्त करने की इच्छा रख सकता है। इसलिए जीवंत पुरुष यही कहा करते हैं कि मनुष्य को स्वास्थ्य के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिए। जिसने नियमित खेलना सीख लिया. जीवन में नियमित प्रात: भ्रमण करना सीख लिया उसने सब सीख लिया। रोग-व्याधि उससे दूर ही भागते हैं।

भौतिक सुखों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शरीर आरोग्य हो। अत: विद्वान कहा करते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने लिए दवाओं के ढेर रखने से अच्छा है खेलना सीखो, सांसारिक सुखों की अनुभूति करनी है तो हँसना सीखो। उन्होंने यह भी कहा है अपने साथ दवाएँ रखने से तो अच्छा है कि खेलने वाले साथियों के मध्य रहो। यह भी न हो सके तो हँसोड़ व्यक्ति को अपने साथ रखो, जो सदैव हँसकर हँसाने का प्रयास करता रहे। हँसना भी खेल का एक हिस्सा है। हँसी तभी आनंददायक होगी जब शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे। स्वस्थ युवक खेल-सामग्री के अभाव में भी खेल सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि खेल के लिए विशेष साधन जुटाए जाएँ। साधन के अभाव में भी खिलाड़ी कोई-न-कोई खेल ढूँढ़ ही लेते हैं। साथी न मिलने पर भी मस्ती में अकेले भी खेला जा सकता है।

प्रेमचंद की कहानी 'बड़े भाई साहब' में छोटा भाई किसी के न होने पर फाटक पर चढ़कर आगे-पीछे कर मस्त हो जाता है। इसलिए खेल के लिए विशेष साधन की आवश्यकता नहीं है, अपितु खेल के प्रति रुचि की आवश्यकता है। आज खेल के साधन बाजार में महँगे दामों पर मिलते हैं। यह सोचकर न बैठे कि जब तक साधन नहीं होंगे तब तक कैसे खेलेंगे। न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी। अधिकांश लोग आज अपने स्तर को बनाए रखने के लिए बच्चों को घर में कैद रखना चाहते हैं, वे खेल के सभी साधन घर में ही जुटा दिए हैं, जिससे सामूहिक खेलों से बालक वंचित रह जाता है। साथ ही घर में खेले जाने वाले खेलों से मानसिक खेल तो हो जाते हैं, किंतु शारीरिक खेल नहीं हो पाते हैं। शारीरिक खेल तो घर से बाहर सामूहिक रूप से ही संपन्न होते हैं।

आज क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल तथा अन्य-अन्य खेलों के प्रति स्तरीय रुचि संपन्न घरों में उत्पन्न हुई है। किंतु ग्रामीणी क्षेत्रों में आज भी साधारणत: चार लोग इकट्ठे हुए, शोर हुआ, ताली बजाई और हो गया खेल शुरू। ग्रामीण अंचल में खेले जाने वाले प्राय: सभी खेल बिना किसी विशेष साधन के खेले जाते रहे हैं। उनमें खेलों के प्रति पर्याप्त रुचि भी होती है। आयुर्वेद में कहा गया है कि खूब भूख लगने पर भोजन का आनंद मिलता है और परिश्रम से पसीना आने पर शीतल छाया का आनंद मिलता है। थकान के बाद शीतल छाया में और सामान्य भोजन में जो आनंद की अनुभूति होती है ऐसी आनंद की अनुभूति रोगस्त शरीर को विविध प्रकार के व्यंजनों में भी नहीं मिलती है। अत: किसी प्रकार की आनंदानुभूति के लिए खेल को नियमित रूप से अपनाना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप जो बालक रुचि से खेलता है उसकी पाचन-शक्ति बढ़ती है। इसलिए उसे जोर की भूख लगती है रूखा-सूखा जो भी मिल जाता है, उसे मन भर खाता है और स्वस्थ रहता है। दूसरी तरफ ऐसे भी सुस्त और आलसी बच्चे होते हैं जिनके माँ-बाप टी०वी० पर आने वाले खाद्य पदार्थों के विज्ञापनों को दिखाकर उनके अंदर उसे खाने के लिए ललक पैदा करते हैं। फिर भी वो उसे खाने से कतराते हैं और अस्वस्थ रहते हैं। अत: खेलने वाले बच्चों, युवकों के लिए कभी चिकित्सकों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। शरीर स्वयं ही आरोग्य रहता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है—इस उक्ति के अनुसार प्रत्येक कार्य के प्रति उनके अंदर उत्साह रहता है। कोई भी राष्ट्र शक्ति-साधन इकट्ठे कर लेने से शक्तिशाली नहीं हो सकता है, यदि उस राष्ट्र के निवासी स्वस्थ न हों।

आज उन्नत राष्ट्र की पहचान उस राष्ट्र के स्वस्थ नवयुवक हैं जिनमें अदम्य उत्साह दिखाई देता है। ऐसा न होने पर सारे उपकरण धरे-के-धरे रह जाते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमारा राष्ट्र उन्नत हो, शक्ति संपन्न हो तो राष्ट्र के युवक को स्वस्थ और आरोग्य होना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब मनुष्य अपनी लाख व्यस्तता से समय निकाल कर व्यायाम और खेलों के लिए नियमित समय दें। यह जीवन का अंग हो। हम स्वयं खेलते हुए स्वस्थ रहते हुए दूसरों को भी प्रेरित करें।

14. पर्वों का बदलता स्वरूप

भारतीय स्वभावत: उत्सवप्रिय होते हैं। वे समय-असमय उत्सव मनाने का बहाना खोज लेते हैं। यह उनके स्वभाव में प्राचीन काल से शामिल रहा है। मनुष्य अपने थके-हारे मन को पुन: स्फूर्ति तथा उल्लासमय बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के पर्व मनाता रहा है। मनुष्य के जीवन में पर्वो का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि ये मानव-जीवन को खुशियों से भर देते हैं तथा हमें निराशा एवं दुख से छुटकारा दिलाते हैं। वास्तव में पर्व सांस्कृतिक चेतना के वाहक हैं।

भारत में आए दिन कोई-न-कोई पर्व और त्योहार मना लिया जाता है। यहाँ कभी महापुरुषों की प्रेरणाप्रद पुण्यतिथियों तथा जयंतियों का आयोजन किया जाता है तो कभी ॠतु मौसम, महीने के आगमन और प्रस्थान पर पर्व मनाए जाते हैं। साथ ही धार्मिक तथा क्षेत्रीय पर्व एवं त्योहर भी मनाए जाते हैं। इनमें से राष्ट्रीय और धार्मिक पर्व विशेष महत्व रखते हैं। कुछ पर्व ऐसे होते हैं, जिन्हें सारा देश बिना किसी भेदभाव के मनाता है और इनको मनाने का तरीका भी लगभग एक-सा होता है। ये राष्ट्रीय पर्व कहलाते हैं।

स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती (2 अक्टूबर) को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। इनके अलावा कुछ त्योहार धर्म के आधार पर मनाए जाते हैं। इनमें से कुछ को हिंदू मनाते हैं तो मुसलमान नहीं और मुसलमान मनाते हैं तो सिख या इसाई नहीं, क्योंकि ये उनके धर्म से संबंधित होते हैं। दीपावली, दशहरा, रक्षाबंधन, होली, मकर संक्राति तथा वसंत पंचमी हिंदुओं से संबंधित

पर्व या त्योहार माने जाते हैं तो, ईद-उल-जुहा, बकरीद, मोहर्रम आदि मुसलिम धर्म मानने वालों के त्योहार हैं। बैसाखी. लोहिड़ी सिख धर्म से संबंधित त्योहार हैं तो क्रिसमस ईसाई धर्म मानने वालों का त्योहार है। भारत में पर्व मनाने की परंपरा कितनी पुरानी है, इस संबंध में सही-सही कुछ नहीं कहा जा सकता है। हाँ, त्योहारों में एक बात जरूर हर समय पाई जाती रही है कि इनके मूल में एकता, हर्ष, उल्लास तथा उमंग का भाव निहित रहा है। त्योहारों को मनाने के पीछे कोई-न-कोई घटना या कारण अवश्य रहता है, जो हमें प्रतिवर्ष इसे मनाने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरणार्थ-दीपावली के दिन भगवान रामचंद्रजी के वनवास की अवधि बिताकर अयोध्या वापस आए तो लोगों ने खुश होकर घी के दीप जलाकर उनका स्वागत किया। उसी घटना की याद में आज भी प्रतिवर्ष घी के दीपक जलाकर उस घटना की याद किया जाता है और खुशी प्रकट की जाती है। बाजार के प्रभाव के कारण हमारा जीवन काफी प्रभावित हुआ है, तो हमारे पर्व इसके प्रभाव से कैसे बच पाते। पर्वो पर बाजार का व्यापक प्रभाव पड़ा है। पहले बच्चे राम लीला करने या खेलने के लिए अपने आसपास उपलब्ध साधनों से धनुष-बाण, गदा आदि बना लेते थे, चेहरे पर प्राकृतिक रंग आदि लगाकर किसी पात्र का अभिनय करते थे, पर आज धनुष-बाण हो या गदा, मुखौटा हो या अन्य सामान सभी कुछ बाजार में उपलब्ध है। इसी प्रकार दीपावली के पर्व पर मिट्टी के दीप में घी या तेल भरकर दीप जलाया जाता था, बच्चों के खेल-खिलौने भी मिट्टी के बने होते थे, पर आज मिट्टी के दीप की जगह फैसी लाइटें, मोमबत्तियाँ तथा बिजली की रंग-बिरंगी लड़ियों ने ले ली है। बच्चों के खिलौनों से बाजार भरा है। सब कुछ मशीन निर्मित हैं। रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ कितनी मनमोहक होती हैं. यह बताने की आवश्यकता नहीं है। सब बाजार के बढ़ते प्रभाव का असर है। कोई भी पर्व या त्योहार हो उससे संबंधित कार्डों से बाजार भरा है। समय की गति और युग-परिवर्तन के कारण युवकों के धार्मिक सोच में काफी बदलाव आया है। युवाओं का प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव कम होता जा रहा है। वे विदेशी संस्कृति, रीति-रिवाज, फैशन को महत्व देने लगे हैं। इस कारण आज हमारे समाज में पाश्चात्य पर्वो को स्वीकृति मिलती जा रही है। युवाओं का 'वेलेंटाइन डे' मनाने के प्रति बढ़ता क्रेज इसक: जीता-जागता उदाहरण है। आज की पीढ़ी को परंपरागत भारतीय त्योहारों की जानकारी भले न हो पर वे पाश्चात्य पर्वो की जरूर जानते हैं। पर्वो-त्योहरों के मनाने के तौर-तरीके और उनके स्वरूप में बदलाव आने का सबसे प्रमुख कारण मनुष्य के पास समय का अभाव है। आज मनुष्य के पास दस दिन तक बैठकर राम-लीला देखने का समय नहीं है। वे महँगाई की मार से परेशान हैं उनके लिए दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल हो गया है। जिनके पास मूलभूत सुविधाएँ हैं वे सुखमय जीवन जीने की लालसा में दिन-रात व्यस्त रहते हैं और पर्व-त्योहार के लिए भी मुश्किल से समय निकाल पाते हैं। f. बदलते समय के साथ-साथ पर्व-त्योहार के स्वरूप में बदलाव आया है। महँगाई, समयाभाव, बाजार के बढ़ते प्रभाव ने इन्हें प्रभावित जरूर किया है, पर इनकी उपयोगिता हमेशा बनी रहेगी। इनके बिना जीवन सूखे रेगिस्तान के समान हो जाएगा।

15. 'इंटरनेट-सूचना पौद्योगिकी क्षेत्र में क्रांति'

यदि आज स्वर्ग से मनु महाराज अपनी पृथ्वी को देखें तो वे शायद ही पहचान पाएँ कि यह वही पृथ्वी है जिसे वे हजारों वर्ष पूर्व छोड़ आए थे। इसका स्पष्ट कारण विज्ञान के ये नित नए-नए आविष्कार हैं, जिन्होंने धरती की कायापलट कर रख दी है। चिकित्सा सुविधा हो या खेती की बढ़ी

पैदावार, यातायात के साधन में ना सुख देने वाला 'एअरकंडीशनर' सभी में विज्ञान का योगदान समाया है। विज्ञान की प्रगति के साथ-ही-साथ संचार जगत् में धूम मची हुई है। इन्हीं धूम मचाने वाले साधनों में एक है इंटरनेट और उससे जुड़ा कंप्यूटर।

इंटरनेट की गणना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की दुनिया के नवीनतम संसाधनों में की जाती है। प्रोद्योगिकी के इस युग में जो अत्यंत लाभकारी एवं नवीनतम उपकरण मिले हैं, उनमें इंटरनेट अद्धवितीय है। इस साधन ने कंप्यूटर से जुड़कर विश्व समुदाय को विचार-विमर्श करने का एक मंच प्रदान किया है, जिससे दूरियाँ सिमटकर अब अत्यंत छोटी हो गई हैं। इसकी मदद से मनुष्य ने दूरी नामक बाधा पर विजय पा ली है। विज्ञान के इस नवीन आविष्कार का आरंभ सन् 1960 के दशक में हुआ। शीतयुद्ध के समय अमेरिका को ऐसी कमांड कंट्रोल संरचना की आवश्यकता थी, जो परमाणु आक्रमण के प्रभाव से बेअसर रहे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने ऐसा विकेंद्रित सत्ता वाला नेटवर्क बनाया, जिसमें सभी कंप्यूटरों को समान दर्जा था।

विज्ञान के बढ़ते कदम तथा मनुष्य की बढ़ती जिज्ञासा की शांति करते-करते इंटरनेट बहुउद्देशीय हो गया। अब तो इंटरनेट का प्रयोग अनेक तरह से होने लगा है। इंटरनेट एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें बहुत-से कंप्यूटरों को आपस में जोड़ दिया जाता है ताकि उनसे सूचनाएँ दी अथवा ली जा सकें। वास्तव में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए ही इन कंप्यूटरों को आपस में जोड़ा जाता है। इस प्रकार इंटरनेट करोड़ों कंप्यूटरों को जोड़ने वाला विश्वव्यापी संजाल है। इसमें प्रत्येक इंटरनेट कंप्यूटर होस्ट के नाम से जाना जाता है। यह स्वतंत्र रूप से काम करता है। इंटरनेट के रूप में लोगों को ऐसा सशक्त साधन मिल गया है कि वे दो अलग-अलग प्रांतों में रह रहे हों या अलग-अलग सुदूर देशों में, इसके माध्यम से सुगमतापूर्वक विचार-विमर्श कर सकते हैं। वे एक-दूसरे को नाना प्रकार की सूचनाएँ दे रहे हैं अथवा ले रहे हैं। जिन सूचनाओं को पाना अत्यंत दुष्कर तथा दुर्लभ था, उन्हें इंटरनेट पर आसानी से पाया जा सकता है।

विद्यार्थियों को अब मोटी-मोटी पुस्तकों को खरीदने से छुट्टी मिल गई है। किताबों के रूप में जहाँ उनके पास संसाधन सीमित होते थे, वहीं इंटरनेट ने उनके सामने जानकारी का भंडार खोलकर रख दिया है। इंटरनेट के प्रयोग में 1996 तक काफी लोकप्रियता आ गई थी। लगभग 4.5 करोड़ लोगों ने इसका प्रयोग शुरू कर दिया था, जिनमें से करीब तीन लाख अकेले अमेरीका से थे। 1999 के आते-आते दुनियाभर में इंटरनेट प्रयोग करने वालों की संख्या बढ़कर 15 करोड़ तक जा पहुँची जिनमें आधे अमेरीकी थे। इस समय तक ई-कॉमर्स की अवधारणा तेजी से फैली, जिससे इंटरनेट से खरीद-फरोख्त लोकप्रिय हो गई।

भारत में भी इंटरनेट कनेक्शनों और प्रयोग करने वालों की संख्या बढ़कर करोड़ों में पहुँच गई है। यह संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। अति हर चीज की खराब होती है। इंटरनेट पर काम करते समय कंप्यूटर के सामने बैठना होता है, जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे गर्दन तथा कमर में दर्द शुरू हो जाता है। इसका अधिक कुप्रभाव आँखों पर पड़ता है। बच्चे इससे विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। इसके अलावा बच्चे अपनी पढ़ाई को छोड़कर इंटरनेट युक्त कंप्यूटर पर खेल खेलने लगते हैं, जिससे वे मोटापे, दृष्टिहीनता तथा आलस्य का शिकार होते जाते हैं। अच्छाई तथा बुराई एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इंटरनेट प्रयोग करने वालों के साथ भी यही बात है। इंटरनेट के प्रयोग से हानि की कोई संभावना नहीं। यह तो प्रयोगकर्ता की आदत, व्यवहार तथा

प्रयोग करने के समय पर निर्भर करता है। इंटरनेट सूचना तथा ज्ञान का भंडार है। हमें इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

16. दैवीय प्रकोप—भूकंप

यद्यपि प्राकृतिक आपदा जब भी गुस्सा दिखाती है तो कहर ढहाए बिना नहीं मानती है। आकाश तारों को छू लेने वाला विज्ञान प्राकृतिक आपदाओं के समाने विवश है। अनेक प्राकृतिक आपदाओं में कई आपदाएँ मनुष्य की अपनी दैन हैं। कुछ वर्षों में प्रकृति के गुस्से के जो रूप दिखे हैं, उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि प्रकृति के क्षेत्र में मनुष्य जब-जब हस्तक्षेप करता है तो उसका ऐसा ही परिणाम होता है जो सुनामी के रूप में और गुजरात के भयावह भूकंप के रूप में देखने और सुनने में आया। इन दृश्यों को देखकर अनायास ही लोगों के मुँह से निकल पड़ता है कि जनसंख्या के संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रकृति में ऐसी हलचल होती रहती है, जो अनिवार्य रूप में हमेशा से होती रही है। वर्षा का वेग बाढ़ बनकर कहर ढहाता है तो कभी ओला, तूफान, आँधी और सूखा आदि के रूप में प्रकृति मनुष्यों को अपनी चपेट में लेती है। अपनी प्रगति का डींग हाँकने वाला विज्ञान और वैज्ञानिक यहाँ असहाय दिखाई देते हैं अर्थात् प्राकृतिक आपदाओं से संघर्ष करने की मनुष्य में सामथ्र्य नहीं है।

धरती हिलती है, भूचाल आता है। जब यही भूचाल प्रलयंकारी रूप ले लेता है, तो भूकंप कहलाता है। सामान्य भूकंप तो जहाँ-तहाँ आते रहते हैं, जिनसे विशेष हानि नहीं होती है। जब जोर का झटका आता है तो गुजरात के दृश्य की पुनरावृत्ति होती है। ये भूकंप क्यों होता है, कहाँ होगा, कब होगा? वैज्ञानिक इसका सटीक उत्तर अभी तक नहीं दे सके हैं। हाँ भूकंप की तीव्रता को नापने का यंत्र विज्ञान ने जैसे-तैसे बना लिया है। सर्दी से बचने के लिए हीटर लगाकर, गर्मी से बचने के लिए वातानुकूलित यंत्र लगाकर, प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने में सामान्य सफलता प्राप्त कर ली है, पर वर्षों के प्रयास के बावजूद भी इससे निजात पाने की बात तो दूर उसके रहस्यों को भी नहीं जान पाया है। यह उसके लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है। कुछ आपदाएँ तो मनुष्य की देन हैं।

अनुमानित वैज्ञानिक घोषणाओं के अनुसार अंधाधुंध प्रकृति को दोहन और पर्यावरण का तापक्रम बढ़ने से धरती के अंदर हलचल होती है और यह हलचल तीव्र हो जाती है तो भूकंप के झटके आने लगते हैं। धरती हिलने या भूकंप के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कुछ धार्मिक व्याख्याओं के कारण यह धरती सप्त-मुँह वाले नाग के सिर पर टिकी है। जब नाग सिर बदलता है तो धरती हिलती है। दूसरी किंवदंती है कि धरती धर्म की प्रतीक गाय के सींग पर टिकी है और जब गाय सींग बदलती है तो तब धरती हिलती है। कुछ धर्माचार्यों का मानना है कि जब पृथ्वी पर पाप-स्वरूप भार अधिक बढ़ जाता है तो धरती हिलती है और जहाँ पाप अधिक वहाँ धरती कहर ढहा देती है। इसके विपरीत वैज्ञानिक का मानना है कि पृथ्वी की बहुत गहराई में तीव्रतम आग है। जहाँ आग है वहाँ तरल पदार्थ है। आग के कारण पदार्थ में इस तरह की हलचल होती रहती है। जब यह उथल-पुथल अधिक बढ़ जाती है तब झटके के साथ पृथ्वी की सतह से ज्वालामुखी फूट पड़ता है। पदार्थ निकलने की तीव्रता के अनुसार पृथ्वी हिलने लगती है। इनमें से कोई भी तथ्य हो, परंतु ऐसे दैवीय-प्रकोप से अभी सुरक्षा का कोई साधन नहीं है। मनुष्य-जाति के अथक प्रयास से निर्मित, संचित सभ्यता एक झटके में मटियामेट हो जाती है। सब-कुछ धराशायी हो जाता है। वहाँ जो बच जाते हैं, उनमें हाहाकार मच जाती है। राजा और रंक लगभग एकसमान हो जाते हैं क्योंकि ऐसे दैवीय प्रकोप बिना किसी संकोच और भेदभाव के समान रूप से पूरी मानवता पर कहर ढहा देती है।

गुजरात में एकाएक, तीव्रगति से भूकंप हुआ। इस भूकंप ने शायद गुस्से से दिन चुना गणतंत्र दिवस 26 जनवरी। संपूर्ण देश गणतंत्र के राष्ट्रीय उत्सव में मग्न था। गुजरात के लोग दूरदर्शन पर गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम को देख रहे थे। तभी एकाएक झटका लगा धरती हिली। ऐसा लगा कि लंबे समय से धरती अपने गुस्से को दबाए हुए थी। आज उसका गुस्सा फूट पड़ा। ऐसा फूटा कि लोग सोच भी न पाए कि क्या हुआ और थोड़ी ही देर में गगनचुंबी अट्टालिकाएँ, अस्पताल, विद्यालय, फैक्टरी और टेलीविजन के सामने बैठी भीड़ को उसने निगल लिया। शेष रह गई उन लोगों की चीत्कार, जो उसकी चपेट में आने से बच गए थे। बचने वाले लोगों के लिए सरकारी सहायता पहुँचने लगी। यह सहायता कुछ के हाथ लगी और कुछ वंचित रह गए। वितरण की समुचित व्यवस्था न हो सकी। प्राकृतिक आपदा आकस्मिक रूप से अपना स्वरूप दिखाती है। ऐसे समय में मानवीय चरित्र के भी दर्शन होते हैं।

मानवता के नाते ऐसी आपदाओं में मनुष्य एकजुट होकर आपदा-ग्रसित लोगों का धैर्य बँधते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम यथासंभव और यथासामथ्र्य तुम लोगों की सहायता करने के लिए तत्पर हैं। इस तरह टूटता हुआ धैर्य, ढाढस पाकर पुन: पुनर्जीवित हो उठता है। ऐसे समय में ढाढ़स की आवश्यकता भी होती है। यह मानवीय चरित्र भी है। किंतु आश्चर्य तो तब होता है जब इस प्रकार के भयावह दृश्य को देखते हुए भी कुछ लोग अमानवीय कृत्य यानी पीड़ित लोगों के यहाँ चोरी, लूट आदि करने में भी संकोच नहीं करते हैं। एक ओर तो देश के कोने-कोने से और दूसरे देशों से सहायता पहुँचती है और दूसरी ओर व्यवस्था के ठेकेदार उसमें भी कंजूसी करते हैं और अपनी व्यवस्था पहले करने लगते हैं। ऐसे लोग ऐसे समय में मानवता को ही कलंकित करते हैं।

गुजरात में भूकंप के समय समाचार-पत्रों ने लिखा कि बहुत सी समाग्रियाँ वितरण की समुचित व्यवस्था न होने से बेकार हो गई। ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य को संदेश देती हैं कि जब-तक जिओ, तब-तक परस्पर प्रेम से जिओ। मैं कब कहर बरपा दूँ। उसका मुझे भी पूर्ण ज्ञान नहीं है। प्राकृतिक आपदा गीता के उस संदेश को दोहराती है कि कर्म करने में तुम्हारा अधिकार है फल में नहीं। यह प्राकृतिक आपदा मनुष्य को सचेत करती है और संदेश देती है कि मैं मौत बनकर सामने खड़ी हूँ। जब तक जी रहे हो तब तक मानवता की सीमा में रहो और जीवन को आनंदित करो. निश्चित और सात्विक रहो।

17. आतंकवाद-समस्या और समाधान

आतंक कैसा भी हो, भय पैदा करना ही उसका उद्देश्य है। आतंकवाद की परिभाषा भिन्न-भिन्न विचारकों की भिन्न-भिन्न है। यह आतंक अनेक रूप लिए होता है इसलिए आतंकवाद को एक निश्चित परिभाषाबद्ध नहीं किया जा सकता है। इसके अनेक रूप हैं। राजनैतिक आतंकवाद, आर्थिक आतंकवाद, यहाँ तक एक शांत-स्वभाव से अपने कर्तव्य का निर्वाह करने वाले व्यक्ति की शक्ति को छीनना और उसे भयभीट करने से लेकर भारत में संसद पर हमला करना या अमेरिका की शान गगन-चुंबी टावर पर हमला करना सभी आतंकवाद के अंतर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त अपनी दादागीरी दिखाते हुए एक देश के द्वार दूसरे देश की संप्रभुता को छीनने का प्रयास करना आतंकवाद ही तो होता है। तर्क के आधार पर तो सभी अपने आतंक का समुचित उद्देश्य ही बताते है, फिर आतंक केसा भी हो वह सर्वथा निंदनीय है, अकरणीय है। महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा की मान्यता को स्वीकारते हुए हिंसा की परिभाषा स्वीकारते हुए कहा था कि सोते हुए व्यक्ति को जगाना अर्थात् उसके चैन में खलल डालना, उसे दुख देना हिंसा के अंतर्गत है, तो ठीक वैसे ही किसी पर बैठे-बैठाए अपने सिद्धांत थोपना और मानने के लिए किसी प्रकार बाध्य करना

आतंकवाद है। घिनौनेपन के स्तर के अनुसार उसके रूप बदलते जाते हैं। सामान्य आतंकवाद से लकर असामान्य आतंकवाद तक। जब निम्नस्तर पर कोई दबंग पुरुष सामान्य स्तर पर आतंक फैलाने लगता है तो उच्चस्तरीय लोग उसे रोकने के स्थान पर उसे बढ़ावा देते हैं और उसका अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु इस्तेमाल करते हैं।

पुलिस-प्रशासन से उसे बचाते हैं। वही आगे चलकर ऐसा भस्मासुर बन जाता है, जिसका उपचार भगवान शंकर की तरह उनके पास भी नहीं होता है। वह इतनी शक्ति भी अर्जित कर लेता है, उनको भी आँखें दिखाने लगता है। समयानुसार गाँव, जिला और देश की सीमाओं को लाँघता हुआ पैर पसारने लगता है। सुविज्ञ लोग हमेशा से कहते आए हैं कि दुष्टजन की छोटी-सी गलती पर यदि प्रतिक्रिया नहीं होती है तो उसका दुस्साहस बहुत अधिक बढ़ जाता है। आज का आतंकी सुशिक्षित और प्रशिक्षित है। वह मच्छर की तरह पहले गुनगुनाता है। सब्जबाग दिखाता है। संगठन खड़ा करता है और अवसर पाते ही डक मारने में किंचित् देरी नहीं करता है। देश और विदेश में जितना भी आतंकवाद पनपा उसके पीछे सरकारों की दुलमुल नीति रही।

आज आतंकवाद इतना पैर पसार चुका है, शरण देने वालों के लिए ही आँख की किरकिरी बन गया है। भारत में आतंकवाद ने कब जड़ें जमा लीं, पता ही नहीं चला। आज भारत का प्रत्येक कोना आतंकवाद के साये में है। कुकुरमुत्ते की तरह, जहाँ-तहाँ आतंकी जन्में हैं। भारत की प्रखर, बड़े-बड़े को लोहे के चने चबा देने वाली, भारत की प्रतिष्ठित प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गाँधी आतंकवाद की भेंट चढ़ गई। समय बीता, उनकी ही कोख से जन्में प्रगति की राह पर चलते हुए राजीव गाँधी, आतंकियों को नहीं सुहाए और वे भी आतंक के शिकार हुए। इतना ही नहीं भारत का सर्वोच्च सभा-सदन संसद भवन पर आतंकियों के आक्रमण हुए।

देश की संप्रभुता को तहस-नहस करने के प्रयास हुए। दाउद इब्राहिम के नेतृत्व में मुंबई में मानवता को कपा देने वाला तांडव नृत्य हुआ। समय बीता पुन: मुंबई में आतंकी हमला हुआ। लंबे समय तक पंजाब आतंक के साए में साँस लेता रहा। आज भारत आतंक के साए में है। नित्य धमकी मिलती है। अपहरण होते हैं। लाख सुरक्षा-व्यवस्था होते हुए भी जहाज का अपहरण हुआ जिसमें नवविवाहित दंपति में से पति की हत्या कर दी गई। जहाज के बदले में क्रूर आतंकी छोड़े गए। आज भी वही स्थिति दोहराई जा सकती है। संसद भवन के आक्रांता को सजा मिल चुकी है, फिर भी आतंकियों के दुस्साहस बढ़ते जा रहे हैं।

आतंक इतना पैर पसार चुका है कि इसके अनेक रूप सुनने और पढ़ने को मिलते हैं। उल्फा आतंकवादी, नक्सल उग्रवादी, लिट्टे उग्रवादी, जमात ए-इस्लाम उग्रवादी-ये सभी आतंक के पर्याय हैं। इस आतंकवाद के कारण कितने ही युवक, बुजुर्ग महिला तथा संपत्ति का नुकसान हुआ और हो रहा है। इसका अंत कब होगा? होगा या नहीं? यह संदिग्ध हैं। हमारे देश में आतंकवाद गहरी जड़ जमा चुका है। आतंकवाद पैर पसारते-पसारते विश्व स्तर तक अपनी जड़ जमा चुका है। उसके तार आज विश्व स्तर पर फैले हैं। अमेरिका को सबसे ताकतवर, समृद्ध और सुरक्षा की दृष्टि से सशक्त माना जाता है।

वह दूसरे देशों में पनपते हुए आतंक की खिल्ली उड़ाता था, एक दिन ऐसा भी उसे देखने को मिला जिस दिन उसकी गगनचुंबी इमारतें धू-धू करके धरती में समा गई, तब उसके कान खड़े हुए। संपूर्ण अमेरिका काँप उठा। वहाँ के राष्ट्रपति को थोड़ी देर के लिए गुस्सा आया। हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की कि आतंकी संगठन के मुखिया ओसामा-बिन-लादेन यदि चूहे के बिल में भी होगा, वहाँ से भी ढूँढ

निकालेंगे। जिसके कारण अफगानिस्तान तहस-नहस हुआ, पाक में भी संदिग्ध स्थानों पर बम बरसाए।
अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने गुपचुप राजनीति के तहत ओसामा-बिन-लादेन के ठिकाने का पता लगाकर उसे मौत के घाट उतार दिया। इस तरह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के अनेक देश आतंक से प्रभावित हैं। लाइलाज होता हुआ आतंकवाद ऐसे ही प्रचार-प्रसार पाता गया तो कई देशों पर इनका साम्राज्य भी हो सकता है। यदि आतंकी गुटों ने परमाणु केंद्रों पर कब्जा कर लिया तो बंदर के हाथ में गई तलवार सर्व विनाश का कारण बन सकती है। समय रहते राष्ट्रों ने एकजुट होकर आतंक के विरुद्ध इच्छाशक्ति नहीं दिखाई तो आतंकवाद अपना प्रभुत्व बढ़ाता जाएगा। उसके बाद चेतना आई तो बहुत देर हो गई होगी। आज स्वयं की बनाई गई कुल्हाड़ी अपने ही पैरों पर गिरती हुई दिखाई दे रही है।

18. युवाओं में बढ़ती नशाखोरी-समस्या और समाधान

मनुष्य द्वारा मादक द्रव्यों का सेवन करना कोई नयी बात नहीं है। उसकी यह प्रवृत्ति हजारों वर्ष पुरानी है। इसका प्रमाण यह है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में 'सोम' और 'सुरा' का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि हर्ष, उल्लास एवं विशेष अवसरों पर इसका प्रयोग किया जाता था। वेद-पुराण भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि इसका प्रयोग समय-समय पर लोगों द्वारा किया जाता था जो उल्लासवर्धन करने के साथ-साथ झगड़े का भी कारण बन जाता था। आज युवा वर्ग भी इसके सेवन से स्वयं को नहीं बचा पाया है।
मानव ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की ओर कदम बढ़ाए वह नित नयी खोजें करता गया । इनमें विज्ञान का विशेष योगदान था। उसके आविष्कारों ने जहाँ मनुष्य को अनेक उपयोगी वस्तुओं से अवगत कराया, वहीं कुछ हानिप्रद वस्तुओं की खोज भी उससे जाने-अनजाने में हो गई। उसने धीरे-धीरे इनका प्रयोग करना सीख लिया। शुरू में ऐसी वस्तुओं का प्रयोग दर्द निवारण में, उल्लास वृद्ध तथा विशेष अवसरों पर ही किया जाता था, पर आज आम आदमी भी इसका सेवन करने लगा है। युवा वर्ग इसके सेवन को अपनी शान में वृद्ध समझते हैं। नशीली वस्तुएँ मीठे जहर के समान होती हैं, जो व्यक्ति को धीरे-धीरे मौत के द्वार की ओर ले जाती हैं। इनका दुष्प्रभाव थोड़े समय के बाद दिखने लगता है पर तब तक उस दिशा में बढ़े कदमों को वापस खींच पाना अत्यंत कठिन हो जाता है।
आज युवावर्ग चोरी-छिपे, पार्टियों में या मित्रों के साथ मादक द्रव्य का सेवन करने लगा है और धीरे-धीरे उसकी गिरफ्त में आने लगा है। भारत जैसे विकासशील देश में यह समस्या एकदम नयी नहीं है, पर पिछले एक-दो दशकों में यह समस्या अत्यंत तेजी से बढ़ी है। कुछ समय पूर्व तक जिन मादक द्रव्यों का सेवन कुछ ही लोग करते थे तथा अधिकांश लोग उससे दूर रहते थे, उन्हीं मादक पदार्थों का सेवन युवा और यहाँ तक कि स्कूल जाने वाले कुछ विद्यार्थी भी करने लगे हैं। जो युवा इसका सेवन लंबे समय से कर रहे हैं वे इसके बिना नहीं रह पाते हैं। ऐसे पदार्थों का सेवन करना उनकी आदत बन चुकी है।
पाश्चात्य संस्कृति अपनाते-अपनाते भारतीय युवक तेजी से इन्हें भी अपनाते जा रहे हैं। दुख की बात है कि अब तो युवतियाँ भी इसके चपेट में आने लगी हैं। इसका असर महानगरी युवाओं पर अधिक हो रहा है। पहले यह आदत संपन्न वर्ग तक ही सीमित होती थी पर आज यह हर वर्ग में फैल रही है। ग्रामीण-शहरी, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, युवक-युवतियाँ तथा बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति इसके सेवन के आदी हो रहे हैं पर युवा वर्ग इनका अधिक शिकार हो रहा है। आज मादक

द्रव्यों को 'ड्रग्स' नाम से जाना जाता है। इसकी परिधि में मादक द्रव्य और दवाइयाँ दोनों ही आ जाती हैं। पहले तो इनका प्रयोग सुंघने, खाने या पीने के माध्यम से किया जाता था पर आज इसे इन माध्यमों के अलावा इंजेक्शन के माध्यम से भी लिया जाता है। ये पदार्थ मनुष्य की जैविक क्रिया-प्रणाली को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य से युवा वर्ग इन सभी का प्रयोग करने लगा है। w मादक द्रव्यों को मुख्यता दो वर्गों में बाँटा जा सकता है

1. कम हानि वाले मादक द्रव्य
2. अधिक हानिकर मादक द्रव्य

सामान्य या कम हानिकर मादक द्रव्यों में मुख्य रूप से निकोटीन और कैफीन को लिया जा सकता है। 'निकोटीन' तंबाकू में पाया जाता है, जिसे तंबाकू, पान मसाले, गुटखा और सिगरेट के माध्यम से सेवन किया जाता है। इनका असर धीरे-धीरे स्वास्थ्य पर पड़ता है। अत: इनका प्रयोग अधिक तथा दीर्घकाल तक करने से होता है। इसके अलावा कुछ मादक द्रव्य पोस्ते के पौधे से भी तैयार किए जाते हैं, जिनमें अफीम, मॉरफीन, हेरोइन, स्मैक आदि हैं। इनका प्रयोग लोग नींद लाने, दर्द भगाने, सुखानुभूति के लिए करते हैं। इनके धीरे-धीरे प्रयोग से कुछ दिन में ही युवावर्ग इसका आदी हो जाता है। इनमें हेरोइन सबसे खतरनाक पदार्थ है जिसके सेवन से व्यक्ति स्वयं को सुखद स्थिति में महसूस करता है, किंतु इसका असर खत्म होने पर वह अजीब-सी बेचैनी और पीड़ा की अनुभूति करता है।

वह बार-बार इसका सेवन करना चाहता है। दूसरे वर्ग में शराब और एल्कोहल जैसे मादक द्रव्यों को रखा जा सकता है, जिनके सेवन से अधिक हानि होने की संभावना रहती है। शराब पीने वाले व्यक्ति की दिनचर्या ही इसी पर आधारित होकर रह जाती है। एक बात तो यह तय है कि मादक द्रव्य या ड्रग्स जो भी हैं उनका दीर्घकालीन प्रयोग गंभीर समस्या एवं मौत का कारण बन सकता है। इतना होने पर भी इनका सेवन करने वालों की कमी नहीं है, उल्टे इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। इनके व्यसनी लोगों की चाल, बात करने का ढंग, उनकी जीवन-शैली आदि देखकर इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। युवावर्ग को यह जान लेना चाहिए कि शौक और मौज के लिए अपनाए गए इन मादक द्रव्यों के लगातार लेने की आदत बनने के पहले ही छोड़ देना चाहिए। इसके लिए उन्हें स्वजागरूकता लानी होगी। मादक द्रव्यों का सेवन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व सभी के लिए हानिप्रद है। अत: इसका त्यागकर इनसे दूर रहने में ही युवावर्ग और सभी की भलाई है।

19. समय का महत्व और उसका सदुपयोग

अथवा

'काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब'

अनेक विचारकों का विचार है कि जिसने समय की कदर नहीं की, जिसने समय के महत्व को नहीं समझा, सफलता उससे दूर होती गई। शीघ्र और विचार कर कार्य न करने वाले का समय उसके जीवन-रस को ही पी जाता है। इस संदर्भ में महापुरुषों ने यह भी कहा है कि जीवन का क्षण-क्षण मूल्यवान है। जो अवसर को चूक जाते हैं वे आजीवन पछताते रहते हैं, क्योंकि जीवन का जो क्षण व्यतीत हो जाता है उसे करोडों स्वर्ण-मुद्रा से पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता है। समय यदि निरर्थक ही व्यतीत हो गया तो उससे बढ़कर कोई हानि नहीं है। महाभारत में मेधावी अपने पिता

जी से कहता है-पिता जी! कल का काम आज और आज का काम अभी क्यों नहीं कर लेते हैं? समय बीत जाने पर पछताने के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह जाता है। एक कवि ने भी समय के महत्व को समझते हुए कहा है-

रात बिताई सोइ के, दिवस बितायौ खाय।

हीरा जन्म अमोल है, ऐसोई बीतौ जाय।।

जो व्यक्ति कार्य को 'कल' के लिए टाल देते हैं तो कार्य के होने में सदैव संदेह बना रहता है। सफलता भी उन्हें कल के लिए टाल देती है। फिर कभी उचित समय नहीं आता है। कार्य की श्रेष्ठता समय से आँकी जाती है। समय की श्रेष्ठता कार्य से नहीं। कार्य कैसा भी हो उसे शीघ्र निपटा लेने में ही अपनी भलाई है। इसलिए कवि ने कहा है-

काल्ह करै सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परले होएगी, बहुरि करोगे कब।।

महाभारत में प्रसंग आता है कि राजदरबार में आए हुए व्यक्ति को युधिष्ठिर ने कल के लिए आश्वस्त किया तो भीम ने ढोल बजवा कर उनकी इस भूल के प्रति सचेत किया। भीम ने उन्हें संदेश दिया कि भैया ने कल तक के समय को जीत लिया है। युधिष्ठिर सचेत हुए अपनी इस भूल के लिए प्रायश्चित किया। जीवन के एक क्षण का भी महत्व है। आने वाले एक क्षण का भरोसा नहीं किया जा सकता है। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है। अनेक विद्वानों का मत है कि जिस व्यक्ति ने समय का नियोजन करना सीख लिया वह सब कुछ सीख गया। इसलिए समय-नियोजन को सफलता का मूल मंत्र कहा गया है।

आग लगने पर कुआँ खोदना मूर्खता ही है। ऐसे लोगों का विनाश निश्चित है। आचार्य चाणक्य ने इस संदर्भ में कहा है एक भौंरा कमल पुष्प का रसपान करने के लालच में सायं होने पर कमल में ही बंद हो जाता है। भौंरा सोचता है 'कल फिर सूर्य उगेगा, कमल खिलेगा, मैं स्वच्छद हो जाऊँगा, रातभर रसपान करूंगा, किंतु कमल खिलने से पहले मदमस्त हाथी आता है और कमल नाल सहित उखाड़ अपने मुँह में रख लेता है।' अत: पल में क्या होने वाला है, कुछ कहा नहीं जा सकता है। पल में ही बड़े-बड़े भवन धराशायी हो गए। पल में ही अप्रत्याशित घटनाएँ घटीं और बड़े-बड़े महापुरुष चले गए। इस तरह समय किसी पर दया नहीं करता है।

समय निरंतर गतिमान है। इसे रोका नहीं जा सकता है। यह किसी को क्षमा नहीं करता है। राजा-रंक, संत-अंसत, गरीब-अमीर आदि सभी समय के गाल में स्मा गए। ऐसे चक्रवर्ती सम्राट जिनका संपूर्ण धरा पर साम्राज्य था। सिकंदर और हिटलर, औरंगजेब और अकबर, लेनिन और बोनापार्ट सभी सम्राटों को समय ने बिना दया के अपने आगोश में समेट लिया। अर्जुन और भीष्म जैसे महायोद्धा, कर्ण और बलि जैसे दानी , हरिश्चंद और युधिष्ठिर जैसे सत्यवादी, दधीचि और राजा शिवि जैसे त्यागी, शुकदेव और अष्टावक्र जैसे आत्मज्ञानी, आदि गुरु शंकर और चाणक्य जैसे आचार्य सब-के-सब समय की चक्की में पीस कर समाप्त हो गए।

काल के भी काल स्वयं सृष्टि नियंता भी समय आने पर चले गए। वे भी इसका उल्लंघन न कर सके। समय किसी के प्रति दया नहीं करता है। इसलिए समय का जितना अधिक सदुपयोग किया जा सकता है, करणीय है; अन्यथा प्रायश्चित ही हाथ लगता है। महापुरुष यही संदेश देते हैं कि जीवन का बीता हुआ प्रत्येक क्षण शमशान की ओर ले जा रहा है। इसे समझाते हुए कवि ने कहा है-

गूँजते थे जिनके डंके से, जमीनों आसमान।

चुप पड़े हैं मकबरों में, हू हा कुछ भी नहीं।

समय की गति बड़ी विचित्र होती है। मनुष्य चाहता कुछ और है होता कुछ और है। जिस नक्षत्र में श्रीराम का राजतिलक होना था, उसी नक्षत्र में उन्हें तपस्वी वेश में वन जाना पड़ा। जिस अर्जुन के गांडीव की टंकार से शत्रु थर्रा उठते थे उसी अर्जुन को नपुंसक वेश में राजा विराट के यहाँ रहना पड़ा। जिस दिग्विजयी सम्राट रावण के भय से देवगण भी भयभीत रहते थे, काल भी जिसके वश में था। समय आने पर उसे भी कोई नहीं बचा सका, फिर सामान्य लोगों की क्या सामर्थ्य है जो समय का अतिक्रमण कर सके। इसलिए समय को बलवान कहा गया है। इसी सत्य को समझाते हुए सभी संदेश देते हैं। जब तक मनुष्य के शरीर में ताकत है, धन कमाता है, पत्नी प्रेम करती है, पुत्र आज्ञा का पालन करता है।

हृदय में उत्साह रहता है, वाणी में मिठास होती है, मन में प्रेसन्नता रहती है, घर में संपन्नता रहती है। समय गुजरता है, बुढ़ापा आ जाता है, शक्ति क्षीण हो जाती है, हाथ-पैर काम नहीं करते, लाठी के बिना चला नहीं जाता। अंततः प्रायश्चित करता है कि जीवन व्यर्थ ही चला गया। अत: कल की प्रतीक्षा किए बिना सत् कार्य को शीघ्र करने में ही भलाई है। अत: समय सतत प्रवाहमान है, जिसे रोका नहीं जा सकता है। मनुष्य-जीवन की सार्थकता समय के सदुपयोग में है। जिस व्यक्ति ने समय का सदुपयोग नहीं किया, समय उसका सब कुछ नष्ट कर देता है। क्षण-क्षण मूल्यवान है। क्षण-क्षण का सदुपयोग करना उचित है। जिन्होंने समय का सदुपयोग किया वे सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते गए। इसलिए कबीरदास जी ने कहा-

'कालह करे सो आज कर, आज करे सो अब'

20. जानलेवा बीमारी एड्स

अथवा

एड्स-कारण और निवारण

रहिमन बहुभेषज करत, व्याधि न छाँड़त साथ।

खग मृग बसत अरोग वन, हरि अनाथ के नाथ।।

कवि रहीम की ये पक्तियाँ उस समय जितनी प्रासंगिक थी, उतनी या उससे कहीं अधिक आज भी प्रासंगिक हैं। विज्ञान के कारण भले ही नाना प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ बढ़ी हैं पर नयी-नयी बीमारियों के कारण मनुष्य पूरी तरह चिंता मुक्त नहीं हो पाया। कुछ बीमारियाँ थोड़े-से इलाज से ठीक हो जाती हैं तो कुछ थोड़े अधिक इलाज से, परंतु कुछ बीमारियाँ ऐसी हैं जो थोड़ी लापरवाही के कारण जानलेवा साबित हो जाती हैं। ऐसी ही एक बीमारी है-एड्स।

विश्व के अनेक देशों की तरह भारत भी इस बीमारी से अछूता नहीं है। हमारे देश में लाखों लोग एच० आई० वी० के संक्रमण से पीड़ित हैं। दुर्भाग्य से युवा और लड़के भी इससे संक्रमित हो रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में 3 करोड़, 61 लाख वयस्क इससे पीड़ित हैं। वहीं 14 लाख बच्चे भी संक्रमणग्रस्त पाए गए हैं। इसकी बढ़ती गति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1991 में यह संख्या आधी थी। देश के जिन राज्यों में इसके रोगियों की

संख्या अधिक है उनमें आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, नागालैंड और मणिपुर प्रमुख हैं। इस रोग के संक्रमण से 75% से अधिक पुरुष हैं जिनमें से 83% को यह यौन कारणों से हुआ है। अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी भाग में 38 लाख के करीब लोग इसके शिकार बन गए। वहाँ एच० आई० वी० और एड्स से प्रभावितों की संख्या ढाई करोड़ पार कर चुकी है। सही बात तो यह है कि एड्स ने अपने पैर दुनिया भर में पसार दिया है। किसी देश-विशेष को ही नहीं वरन् विश्व को एकजुट होकर इसके निवारण के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। एड्स एक भयंकर एवं लगभग लाइलाज बीमारी है जो एच० आई० वी० नामक वायरस से फैलती है। एड्स (AIDS) का पूरा नाम (Acquired) (एक्वायर्ड), I (Immuno)(इम्यूनो), D (Deficiency)(डिफेसेंसी) और S (Syndrome) (सिंड्रोम) है।

वास्तव में एड्स बहुत-से लक्षणों का समूह है जो शरीर की रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को कम कर देता है, जिससे संक्रमित व्यक्ति को आसानी से कोई भी बीमारी हो जाती है और रोगी असमय काल-कवलित हो जाता है। एच० आई वी० वायरस जब एक बार किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाता है तो इस संक्रमण के लक्षण सात से दस साल तक प्रकट नहीं होते हैं और व्यक्ति स्वयं को भला-चंगा महसूस करता है। उसे स्वयं भी इस संक्रमण का ज्ञान नहीं होता है, किंतु जब संक्रमण अपना असर दिखाता है तो व्यक्ति रोगग्रस्त हो जाता है।

एच० आई० वी० संक्रमित व्यक्ति का इलाज असंभव होता है। उसकी जिंदगी उस नाव के समान हो जाती है जिसका खेवनहार केवल ईश्वर ही होता है। किसी स्वस्थ व्यक्ति को एड्स किन कारणों से हो सकता है, इसकी जानकारी लोगों में विशेषकर युवाओं को जरूर होनी चाहिए। एड्स को यौन रोग की संज्ञा दी गई है, क्योंकि यह रोग एच० आई० वी० संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन संबंध स्थापित करने से होता है। यदि महिला एच० आई० बी० संक्रमित है तो संबंध बनाने जाले पुरुष को और यदि पुरुष संक्रमित है तो संबंधित महिला को एड्स होने की संभावना हो जाती है। इसके प्रसार का दूसरा कारण है-दूषित सुइयों कर प्रयोग।

जब कोई डॉक्टर किसी एच० आई० वी० संक्रमित व्यक्ति को सुई लगाता है और उसी सुई का प्रयोग स्वस्थ व्यक्ति के लिए करता है तो यह रोग फैलता है। मादक पदार्थों का सुई द्वारा सेवन करने से भी एड्स फैलने की संभावना बनी रहती है। एड्स फैलने का तीसरा कारण है-संक्रमित रोगी का रक्त स्वस्थ व्यक्ति को चढ़ाना। इसके फैलने का चौथा और अंतिम कारण है-एच० आई वी० संक्रमित माता द्वारा बच्चे को स्तनपान कराना। जिस व्यक्ति को एड्स हो जाता है उसके शरीर के वजन में धीरे-धीरे कमी आने लगती है। उसके बगल, गर्दन और जाँघों की ग्रंथियों में सूजन आ जाती है। बुखार होने के साथ मुँह और जीभ पर सफेद चकत्ते पड़ जाते हैं। ये लक्षण अन्य रोग के भी हो सकते हैं, अत: इसकी पुष्टि करने के लिए एलिसा टेस्ट (Elisa Test) तथा वेस्टर्न ब्लाक (Westem Block) नामक खून की जाँच द्वारा की जाती है।

इन जाँचों द्वारा पुष्टि होने पर ही किसी व्यक्ति को एड्स का रोगी समझना चाहिए। समूचा विश्व 1 दिसंबर को प्रतिवर्ष एड्स दिवस मनाता है। एड्स का अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक लाल फीता (रिबन) है जिसे पहनकर लोग इसके विरुद्ध अपनी वचनबद्धता दर्शाते हैं। एड्स दिवस दुनिया के सभी देशों के बीच एकजुट होकर प्रयास करने तथा इसके खिलाफ एकजुटता विकसित करने का संदेश देता है। अब समय आ गया है कि लोगों को एड्स के बारे में भरपूर जानकारी दी जाए। एड्स के विषय में जानकारी ही इसका बचाव है। युवाओं और छात्रों को इसके विषय में अधिकाधिक जानकारी दी जानी चाहिए।

आम लोगों के बीच कुछ भ्रांतियाँ फैली हैं कि यह छुआछूत की बीमारी है, जबकि सच्चाई यह है कि एड्स साधारण संपर्क करने से, हाथ मिलाने, गले लगाने, संक्रमित व्यक्ति के साथ उठने-बैठने से नहीं फैलता है। अत: हमारा कर्तव्य बन जाता है कि संक्रमित व्यक्ति या एड्स रोगी की उपेक्षा न करें तथा उसका साथ देकर उसका मनोबल बढ़ाने का प्रयास करें। आइए, हम सब मिलकर लोगों को जागरूक बनाएँ तथा पूरी जानकारी दें, क्योंकि जानकारी ही इसका बचाव है।

21. वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ और हमारा कर्तव्य

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जो मनुष्य के चाहने या न चाहने पर निर्भर नहीं करता है। वसंत ऋतु में मनोहारी फूलों एवं कोमल पत्तियों से सजे वृक्ष हेमंत ऋतु में ठूँठ बनकर रह जाते हैं। यही हाल मनुष्य का है। अपने धन, रूप, बल आदि पर दर्प करने वाला मनुष्य 60-65 वर्ष की आयु के बाद उस दशा में पहुँच जाता है जहाँ उसे अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। दुर्भाग्य से कल तक हमें जिन्होंने सहारा दिया, पाल-पोसकर बड़ा किया और किसी योग्य बनाया उन्हीं आदरणीयों, पूजनीयों को अनेक समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है।

वर्तमान समय में जब संयुक्त परिवार पूर्णतया विघटन की कगार पर है, ऐसे में वरिष्ठ नागरिकों का समूह स्वयं को अकेला महसूस करने लगा है। शहरों में यह समस्या ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों की संस्कृति एक-दूसरे के सहयोग की आवश्यकता और पारिवारिक सहनशीलता के कारण आज भी संयुक्त परिवार प्रथा है और वरिष्ठ नागरिक उतने असहाय नहीं हैं। वहाँ उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति परिजन करते हैं। संयुक्त परिवार होने के कारण उनको अकेलेपन की समस्या नहीं सताती है। इसके विपरीत शहरों में वरिष्ठ नागरिकों को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ की जीवनशैली, शहर की महँगाई, शहरी चकाचौंध में बढ़ी आवश्यकताएँ पति-पत्नी दोनों को कोल्हू के बैल की तरह काम करने पर विवश कर देती हैं। ऐसे में परिवार के वरिष्ठ नागरिकों को अपने काम खुद करने पड़ते हैं।

परिजनों द्वारा उनकी मदद करना तो दूर उल्टे बच्चों की कुछ जिम्मेदारियाँ उन पर जरूर डाल दी जाती हैं। शहरों में जनसाधारण के छोटे मकान भी समस्या का कारण बनते हैं। मकानों में संयुक्त परिवार का निर्वाह अत्यंत कठिनाई से होता है। ऐसे में वरिष्ठ नागरिक अपने ही परिवार में अलग-थलग होकर रह जाते हैं। पैंसठ साल का हर व्यक्ति वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में आ जाता है। परिजनों द्वारा समय न मिल पाने, उनकी बातें न सुनी जाने के कारण प्राय: इन्हें पार्कों में बैठे या सार्वजनिक स्थानों पर अपनी-अपनी कथा-व्यथा सुनते-सुनाते देखा जा सकता है। सेवा-निवृत्ति के बाद इन्हें अपना समय काटना मुश्किल लगने लगता है। ज्यों-ज्यों इनकी आयु बढ़ती है, त्यों-त्यों इनकी शारीरिक तथा अन्य समस्याएँ उभरकर सामने आती हैं।

वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इनकी प्रमुख समस्या इनका एकाकीपन है। ये अपने ही परिवार में उपेक्षित और फालतू बनकर रह जाते हैं। इनकी समस्या या इनकी बातों को सुनने का समय इनकी औलाद के पास ही नहीं होती है। वे जिस आदर-सम्मान के हकदार होते हैं उन्हें वह नहीं मिल पाता है। शारीरिक अस्वस्थता वरिष्न नागरिकों की अगली प्रमुख समस्या है। वर्तमान समय का खान-पान इस समस्या को और भी बढ़ावा देता है। अब तो साठ साल तक ही स्वस्थ रहना कठिन होता जा रहा है। इस उम्र में उन्हें नाना प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। परिवार में अकेले होने के कारण न वे स्वयं अस्पताल जा सकते हैं और आर्थिक रूप से सुदृढ़ न होने के कारण वे अपने महँगे इलाज का खर्च भी वहन नहीं कर सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों ने परिवार, समाज और राष्ट्र को किसी-न-किसी रूप में कुछ-न-कुछ दिया है। ऐसे में हम सबका यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम उनकी समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करें तथा उनसे तदानुभूति बनाने का प्रयास करें। समाज के कुछ लोगों को आगे आकर ऐसे सामुदायिक भवन या क्लब की व्यवस्था करनी चाहिए जहाँ उनकी हर आवश्यकता की पूर्ति हो सके। उनके मनोरंजन के भरपूर साधन हों। जिससे उनका एकाकीपन दूर हो तथा वे स्वयं को समाज की मुख्यधारा से कटा हुआ न महसूस करें। इसका एक लाभ यह भी होगा कि युवा पीढ़ी को उनके अनुभवों का लाभ भी मिलेगा। ऐसे लोगों को अपने अनुभव का लाभ बाँटने का अवसर मिलना चाहिए। उन्हें तो बस अवसर का इंतजार होता है। ऐसे लोगों को सप्ताह में एक बार घूमने-फिरने का अवसर मिलना चाहिए। यह उनके शारीरिक स्वास्थ्य और एकाकीपन दूर करने में लाभप्रद होगा।

सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं पर ध्यान दिया है। इसी क्रम में उनके लिए बैकों और डाकखानों की विभिन्न योजनाओं में अधिक ब्याज प्रदान करती है। सरकारी वाहनों में उनके लिए सीटें आरक्षित होती हैं। बस के मासिक पास और रेलवे यात्रा किराए में छूट प्रदान की जाती है। अस्पतालों एवं अन्य स्थानों पर उनके लिए विशेष काउंटर बनाए गए हैं। इसके अलावा वृद्धावस्था पेंशन प्रदान कर आर्थिक मदद प्रदान करने की पहल की है।

वरिष्ठ नागरिको को भी युवा पीढ़ी की कुछ सीमितताओं को सनाझ्ना चाहिए। उन्हें समय न मिल पाने का कारण शहरी जीवन-शैली, बढ़ती महँगाई और कामकाज का बढ़ता बोझ समझकर किसी प्रकार की शिकवा-शिकायत नहीं रखनी चाहिए। उन्हें यथा संभव प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। स्वयं को अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार काम में व्यस्त रखना चाहिए। दिन भर ताश खेलने की अपेक्षा छोटे बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाने, बागवानी करने या अन्य सामाजिक कार्यों में व्यस्त रखना चाहिए। साथ ही युवा पीढ़ी को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वे हमारे पूज्य और आदरणीय हैं और उनकी सेवा शुश्रुषा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

22. मन के हारे हार है मन के जीते जीत

मनुष्य की मानसिक प्रेरणा ही मनुष्य के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण मार्ग-दर्शिका होती है। हतप्रभ मनुष्य दुविधा को अपनी सहचारिणी बना लेता है और उसके साथ रहते सर्वथा संपन्न व्यक्ति सदैव हर क्षेत्र में असफल रहता है। मन की प्रेरणा उत्साह से भरपूर है तो सामान्य-से-सामान्य परिस्थितियों में भी आगे जाने के लिए स्वयं ही पथ का निर्माण कर लेता है अथवा कंटकाकीर्ण मार्ग को प्रशस्त करता हुआ निरंतर अग्रसर रहता है। इसके विपरीत निराशा यदि एक बार ही मन में आ जाती है तो बढ़ते हुए कदमों के सामने क्षण-क्षण अवरोध उत्पन्न कराती है। इसलिए विचारकों ने कहा है कि ‘मन के हारे हार है और मन के जीते जीत।’ विद्वानों का विचार है कि जहाँ तक संभव है वहाँ तक विषम परिस्थितियों में भी निराशा को मन में नहीं आने देना चाहिए।

एक बार निराशा ने किसी प्रकार प्रवेश पा लिया तो अपना स्थायी निवास बनाने में भी सफल हो जाती है और कलयुग की तरह अपने कहर बरपाने का निरंतर प्रयास करती है। निराशा मानव जीवन की ऐसी प्रखर शत्रु है जिसकी हर सोच मीठी और आत्मीय जान पड़ती है, किंतु उस मच्छर की तरह कभी नहीं चूकती जो कान के समीप गुनगुनाता है और अवसर मिलते ही डक मारता है। इस निराशा के प्रभाव को जानते हुए ही पांडवों ने शल्य से युद्ध के मैदान में तेजस्वी वीर कर्ण के मन में उसकी विजय के प्रति निराशा का संचार किया और अजेय कर्ण निराशा के प्रभाव में इतना आ गया कि अंतत:, पराजय को प्राप्त हुआ। राम-रावण युद्ध में रावण के दिग्विजयी सेना के मन में एक बार निराशा ने स्थान पा लिया कि जिसके स्पर्श-मात्र से पत्थर भी पानी में तैरने लगते हैं या

जब एक वानर संपूर्ण वाटिका उजाड़कर लंका में आग लगा गया तो वानर-सेना से कैसे युद्ध में डट सकेंगे? ऐसी निराशा ने उन्हें पराजय तक पहुँचा दिया।

इसलिए निराशा मानव जीवन के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। सफलताएँ उसी के चरण चूमती हैं जो निरंतर सफलता के प्रति आशाएँ बनाए हुए द्वगुणित उत्साह से कार्य करते हैं। बीच में आए व्यवधान उन्हें हतोत्साहित न कर और प्रेरित करते हैं। योग्य-पुरुष उन व्यवधानों से सीख भी लेते जाते हैं। आचार्य मिश्र जी ने कहा है कि जीवन में ठोकरें मनुष्य को सीख देती हैं। सुयोग्य पुरुष ठोकरें खाकर सँभलते और आगे बढ़ते हैं। जो लोग ठोकर खाकर पुन:-पुन: ठोकर खाते हैं वे मूर्ख कहे जा सकते हैं। महाभारत के पात्र पांडवों ने अपने वनवास से हतोत्साहित न होकर सदुपयोग करते हुए शक्ति संचय करने का काम किया।

उनके जीवन में आए व्यवधानों ने उन्हें इतना मजबूत बना दिया कि वे हर परिस्थिति का सामना करने में सफल हुए और दूसरी ओर सर्वथा संपन्न कौरव पांडवों के संचित शक्ति से दुविधा-ग्रस्त रहे और महायोद्धाओं के साथ होने के बावजूद असफल रहे। एक-एक करके मरते गए। पितामह भीष्म, गुरु द्रोणचार्य, धनुर्धर कर्ण, अतुलनीय वीरवर कृपाचार्य, हाथी-सम बल रखने वाला दुश्शासन सारे-के-सारे वीरगति को प्राप्त हुए, किंतु सभी मिलकर पांडवों में से एक को भी न मार सके। इसका एकमात्र कारण था कि पांडवों में उत्साह था, जीत के प्रति उनकी आशा बलवती थी। मन में आशा बलवती हो, विचार उन्नत हों, मन में उत्साह हो तो विपरीत परिस्थितियाँ भी अनुकूल हो जाती हैं।

संकल्प दृढ़ होते जाते हैं। कोई भी उपहास, कोई भी विषम परिस्थितियाँ व्यवधान नहीं बन पाती है। मनुष्य के चट्टान से भी मजबूत संकल्पों को देखकर सहायक बन जाती हैं। शिकागों में हुए धर्म सम्मेलन में पहुँचे स्वामी विवेकानंद को किसी प्रकार सहयोग नहीं था। शिकागो तक जाने के लिए धन का अभाव, अकेला मस्त योगी, धर्म सम्मेलन में प्रवेश पाने की न कोई पूर्व व्यवस्था, न कोई साथी, साथी था तो अपना आत्म-विश्वास, मजबूत संकल्प। वह योगी शिकागो पहुँचा, धर्म-सम्मेलन में पहुँचा सम्माननीय लोगों के मध्य मंच पर आसीन हुआ। इतना ही नहीं उस मंच से भारतीय-संस्कृति का जो शंखनाद किया, जो ललकार की- वह सभी से टकराती हुई, गूँजती हुई संपूर्ण विश्व में सुनाई दी। इसके पीछे उनका आत्म-विश्वास, दृढ़-संकल्प, बलवती आशा ही तो थी। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को कौन नहीं जानता। लोग उसके इरादों की खिल्ली उड़ाते रहे, उपहास करते रहे। प्रत्येक उपहास उसके इरादों को मजबूत करते रहे। वही उपहास करने वाले लोग, जंगल में घूमने वाले, लकड़ी काटने वाले लिंकन के निर्देशों पर कार्य करने के लिए विवश हुए। सिद्ध है जहाँ निराशाएँ मनुष्य को सफलताओं से दूर ले जाती हैं वहीं बलवती आशाएँ उसे सफलता के समीप ले जाकर खड़ी कर देती हैं और अंतत: सफलताएँ चरण चूमती हुई अपना सौभाग्य समझती हैं। लक्ष्मी उसका आदर करती है, लोग अपेक्षा किए बिना सहायक होते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, युद्ध के मैदान में वही लोग विजयी होते हैं जो अपनी जीत के प्रति आशान्वित होते हैं। मनुष्य की हार वहीं हो जाती है, जहाँ उसके मन में निराशा प्रवेश पा लेती है। दुविधा पैरों को लड़खड़ा देती है। अत: सत्य ही कहा है-

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'

23. दहेज-प्रथा-एक सामाजिक कलंक

यद्यपि दहेज-प्रथा कभी सात्विक प्रथा थी, जिसे सुख-समृद्ध के लिए शुभ शकुन के रूप में माना जाता था, किंतु समय-अंतराल में ऐसा परिवर्तन हुआ कि सात्विक परंपरा अपशकुन और अभिशाप बन गई। दहेज के नाम पर विज्ञजनों के यहाँ स्त्रियों के साथ ऐसी-ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ हुई कि मानवता के नाम पर सन्नाटा छा गया। संपूर्ण मानव-समाज कलकित हो गया, परिणामस्वरूप नारी समाज में जागरूकता आई और नारियाँ दूसरे पथ पर चल पड़ीं। नारी के द्वारा दूसरे रास्ते को अपनाने पर विज्ञजनों को अपनी नाक कटती हुई दिखाई देने लगी और दिखावे में दहेज-प्रथा के विरोध में उनके द्वारा अविश्वसनीय बातें कही जाने लगीं। इन घटनाओं ने समाचार-पत्रों और दूरदर्शन के माध्यम से नारी-जाति को सतर्क कर दिया।

जैसे-जैसे दहेज का प्रचलन बढ़ता गया वैसे-वैसे मनुष्य पशुता की ओर बढ़ता गया। अपने उन्नत स्तर की पहचान दहेज से जोड़ने लगा। मनुष्य की बढ़ती महत्त्वाकांक्षा के अनुकूल लड़की की ओर से दहेज न मिलने पर अपनी साख को निम्न समझने लगा। लोगों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ा। चल पड़ा कुत्सित रास्ते पर। संबंधों को घिनौना रूप देने लगा और वधू पर कहर बरपाने लगा। स्थिति यहाँ तक पहुँचने लगी वधुएँ आग की लपटों से झुलसने लगीं, सिसकने लगीं या आग के हवाले होने लगीं।

मनुष्यों की बढ़ती ही महत्वाकाक्षाएँ अपमान के स्तर तक जा पहुँचीं। बढ़ती हुई घटनाओं को देखकर कानून बने, लोग सलाखों के भीतर जाने लगे। फिर आगे चलकर सामान्य-सी घटनाओं को दहेज का रूप देकर कानून का दुरुपयोग होने लगा और परिवार छिन्न-भिन्न होने लगे। स्थान-स्थान पर स्लोगन लिखे-पढ़े गए-'लड़की सृष्टि की जननी है' या 'भ्रूण-हत्या अपराध है', 'भ्रूण-हत्या पाप है"। ऐसे स्लोगन लिखने का कारण आनुपातिक दृष्टि से घटती हुई लड़कियों की संख्या है।

सामान्य स्तर के लोगों में दहेज-प्रथा के चलन के कारण लड़की के जन्म को अभिशाप समझा जाने लगा और विज्ञान की देन अल्ट्रासाउंड का सहयोग लेकर गर्भ में ही लिंग-परीक्षण कराकर भ्रूण-हत्याओं का दौर चल पड़ा-दहेज के नाम पर मनुष्यों में धन संचय की ऐसी प्रवृत्ति बढ़ी कि पदासीन मनुष्य भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया और सारे भ्रष्टाचार के पीछे लोग कहने लगे कि परिवार में कन्या है, दहेज के लिए धन संचय करना पड़ता है। इस तरह मनुष्यों में यह प्रवृत्ति भी बढ़ी कि बेटी के विवाह में दहेज दिया है तो बेटे के विवाह में दहेज लूगा। ऐसी परिस्थिति में संबंधियों के बीच विवाद हुए। बिना-वधू के बरातें लौटीं, छीछालेदर हुई। चर्चाएँ हुई। सारा सामाजिक स्तर धराशायी हुआ। लड़की वाले अपमान का घूंट पीकर गए और जो अपमान के घूंट को न पी सके उन्होंने ताल ठोंकी या आत्महत्याएँ कीं।

अपराध बढ़े और सारे दोष घूम-फिर कर कन्या को दिए जाने लगे। इस तरह स्नेह के प्रति ग्रहण लगता गया। 镜, यद्यपि प्रत्येक परिवार की इच्छा रहती है कि मेरी बेटी का संबंध सर्वथा संपन्न परिवार में हो। इसके लिए परिवारों में दहेज के नाम पर माँग बढ़ी। लोग अपनी काली कमाई को दहेज के नाम पर खर्च करने लगे और देखा-देखी सामान्य परिवार भी कर्ज लेकर अपने स्तर को बनाए रखने में जुटने लगे और दहेज प्रथा का मुँह सुरसा की तरह बढ़ता गया। दहेज-धन से परिवारों का स्तर आँका जाने लगा। लड़की की योग्यता, उसका सौंदर्य, उसका आचरण दहेज की प्रथा में अदृश्य हो गया। लड़कों की । कीमतें लगने लगीं। दहेज प्राप्त लोगों के लिए यह कुप्रथा चाँदी या सोने का सिक्का बन गई। ऐसे ही लोग बढ़-चढ़कर बोलने लगे।

ऐसे लोगों ने कुप्रथा को महिमा-मंडित कर दिया। वर-वधू को अहम् ने एक-दूसरे को कचोटा, स्नेह के संबंधों में ग्रंथियों ने स्थान लिए, अंततः संबंध बिखर कर रह गए। इस तरह दहेज-प्रथा आज के

समय में सर्वथा निंदनीय है। दहेज-प्रथा को देखते हुए ऐसा लगता है कि मनुष्य के परंपरागत गौरव का इतिहास दहेज से जुड़ा है। ऐसे लोग समाज में प्रभावशाली हैं। उनके रहते दहेज-प्रथा को समाप्त करना सामान्य कार्य नहीं है, किंतु असंभव भी नहीं है। यह कार्य चुनौतियों से भरा अवश्य है। सत्कार्य के लिए संघर्ष भी करना पड़े तो करणीय है। ऐसी भावना लेकर नवयुवक समाज में चेतना लाएँ। विज्ञ जन केवल प्रवचन न कर युवकों को सहयोग दें, उचित मार्गदर्शक करें, उत्साह बनाएँ रखें। दहेज-प्रथा के लालची लोगों का पूर्णत: बहिष्क करें तो शीघ्र इस कलकित प्रथा का अंत हो जाएगा। केवल कानून बनाने से काम नहीं चल सकता।

काले धन वाले कोई-न-कोई प्रविधि निकाल लेते हैं और कानून से बचे रहना उनके लिए सामान्य कार्य है। यद्यपि इस ओर लोग संस्थाएँ बनाकर सामूहिक विवाह कराकर प्रयास तो कर रहे हैं, परंतु यह प्रयास अपर्याप्त है। जन-क्रांति के रूप में अंत संभव है। दहेज-कुप्रथा से घटती घटनाएँ सभ्य-समाज को कलकित करती हैं। यदि इस कुप्रथा पर शीघ्र विचार न हुआ तो सभ्य-समाज कहा जाने वाला मनुष्य-समाज सिर धुनते रह जाएगा। आज लड़के-लड़कियाँ उस रास्ते पर चल पड़े हैं कि दहेज लेना और देना तो दूर शर्मिदा होकर घर में आँसू बहाकर बैठ जाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह जाता है। पाश्चात्य-सभ्यता के अनुकरण का बहाना लेकर परस्पर संबंधों की ओर नवयुवक चल पड़े हैं। देर होने पर कितने दुष्परिणाम हो सकते हैं, उसका सहज अनुमान लगाना भी संभव नहीं है।

24. आज की भारतीय नारी

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए माने जाते हैं। किसी एक पहिए का असंतुलन गाड़ी के कुशल परिचालन में बाधक बनता है। इस संतुलन को बनाए रखने के दोनों में सहयोग और सामंजस्य आवश्यक है जिससे पारिवारिक और सामाजिक प्रगाढ़ता आती है। इसके बाद भी भारतीय समाज सदा से ही पुरुष प्रधान रहा है। समाज में पुरुषों की स्थिति उच्च तथा महिलाओं की स्थिति निम्न रही है। ऐसा माना जाता है कि सभ्यता के आरंभ में स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया था। वे पुरुषों के साथ हर काम में बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं। समय के साथ धीरे-धीरे पुरुष और महिलाओं के कार्यों का बँटवारा होता गया। पुरुषों ने जहाँ घर से बाहर के कामों को सँभाला वहीं महिलाओं ने घरेलू कार्यों को।

बच्चों का पालन, पुरुषों की सेवा जैसे कार्य उनके हिस्से में आ गए। इससे उनका स्थान हीन नहीं माना गया। परिवार में उनकी स्थिति सम्मानजनक थी। वैदिक काल में नारी का स्थान अत्यंत ऊँचा था। कहा जाता था- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'। अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। तब महिलाएँ वेद मंत्रों की रचना करती और धर्माचार्यों के साथ शास्त्रार्थ में भाग लेती थीं। धीरे-धीरे समय बदला और नारी का स्थान घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गया। उसे भोग्या मान लिया गया। मध्यकाल तक उसकी स्थिति में और गिरावट आ गयी थी। उसे ताड़ना का अधिकारी मान लिया गया। यह विडंबना ही थी कि कहा गया-

'ढोल, गँवार, शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।।'

इतना ही नहीं उसके अधिकारों को छीन लिया गया। बच्चे पैदा करना, पालना-पोसना, पर्दे में रहना, पति सेवा करना, घर के सदस्यों के लिए भोजन बनाना और पति की इच्छानुसार वासना-पूर्ति करना ही उसका काम रह गया। उसे शिक्षा से भी वंचित रखा गया, इससे उसका मानसिक विकास अवरुद्ध हो गया। जो स्त्री कदम-कदम पर पुरुषों की सहायिका होती थी और हर महत्वपूर्ण निर्णय में उसकी भागीदारी आवश्यक समझी जाती थी, उसी को दासी जैसा समझा जाने लगा।

मुगलकाल में स्त्रियों की स्थिति बद से बदतर हुई जो अंग्रेजी शासन काल में भी वैसी ही बनी रही। नारी की दशा सुधारने का बीड़ा राजाराम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने उठाया। सती-प्रथा को बंद कराया गया और स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोले गए।

देश को आजादी मिलने के बाद नारी स्थिति में बहुत बदलाव आया। उसे समानता का अधिकार दिया गया। उसकी शिक्षा की बेहतर व्यवस्था की गई। संसद, विधानसभा और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर उसके लिए सीटें आरक्षित की गई। इससे सामाजिक व्यवस्था में उसका स्थान उच्चतर होता गया और उसका सामाजिक योगदान बढ़ने लगा। आज की नारी घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रही। वह पुरुषों की भाँति अनेक प्रकार के शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़ी हो रही है। उसने स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, विभिन्न कार्यालयों के अलावा प्रशासनिक पदों पर अपने कार्यों से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। आज आप किसी भी क्षेत्र में दृष्टि डालें, नारी को कार्यरत पाएँगे।

पहले जिन क्षेत्रों में केवल पुरुषों का वर्चस्व रहता था, अब नारियों को काम करते हुए देखा जा सकता है। अनेक पदों पर उन्होंने बेहतर काम करके दिखाया है। इसका एक लाभ यह भी है कि अपने पैरों पर खड़ी होने से उसमें आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन और आत्म-विश्वास में जबरदस्त वृद्ध हुई है। वह अपनी समस्याओं से अब खुद निपटने में सक्षम हो चुकी है। कुछ पदों पर तो महिलाएँ इतनी कुशलता से काम करती हैं कि वे पद उन्हीं के होकर रह गए हैं। वर्तमान भारतीय नारी के आत्म-विश्वास, स्वावलंबन स्वंतत्रता में हुई वृद्ध कर एक दुष्प्रभाव भी दिखने लगा है। वह स्वच्छद हो गई है जिससे उसका दिग्भ्रमित होना स्वाभाविक है।

वह अधिकाधिक सुख-सुविधाओं में जीना चाहती है। उसने आधुनिकता के नाम अंग-प्रदर्शन की प्रवृत्ति को अपनाया है। उसके व्यवहार में प्रदर्शन का भाव अधिक रहने लगा है। उसके भीतर के नारी के गुण समाप्त होते जा रहे हैं। उनकी जगह रुखापन, बनावटीपन, ईर्ष्या जैसे अमानवीय गुण भरते जा रहे हैं। विवाह जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक रिश्ते एवं मान्यताएँ उसे बेमानी-सी लगने लगी हैं। भारत जैसे विकसित देश में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी काम करना आवश्यक होता जा रहा है। आज उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ कार्यालयों में कार्य करती हैं, किंतु कम पढ़ी-लिखी और अनपढ़ महिलाएँ छोटे-मोटे काम करती हैं।

शहर की बढ़ती महँगाई, उन्नत जीवन स्तर जीने तथा बच्चों के उन्नत भविष्य की चिंता आदि के कारण काम करना उनकी विवशता है। घर आकर भी उन्हें अपने लिए निर्धारित काम करने पड़ते हैं। इस प्रकार उन्हें दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। इस प्रकार से स्त्री घर और बाहर की दोहरी चक्की में पिसती है। उसकी जिदगी एक मशीन की भाँति बन गई है। अंत में हम कह सकते हैं कि नारी शिक्षित और स्वावलंबी जरूर हुई है पर उसे आज भी शारीरिक, मानसिक शोषण का सामना करना पड़ता है, परंतु इसमें उसका दोष नहीं, बल्कि सारा दोष पुरुष प्रधान समाज के पुरुषों का है। हमें अपने संस्कारों और विचारों में बदलाव लाना होगा ताकि नारी की सच्ची स्वंतत्रता मिल सके।

25. विज्ञान-अभिशाप या वरदान

विज्ञान की चमक और उसके बढ़ते हुए प्रभाव से भौतिक वस्तुओं के प्रति मनुष्य का आकर्षण बढ़ रहा है, साथ ही उसकी भावना में भी परिवर्तन हो रहा है। प्राचीन परंपराओं को छोड़कर नवीनता को अपनाने का आकर्षण बढ़ रहा है। नए जीवन-दर्शन का विकास हो रहा है। नयी धारणाओं, मान्यताओं का जन्म हो रहा है। इस तरह विज्ञान की चमक से मनुष्य इतना चौंधिया गया है कि

नए-नए सौख्य के साधन ढूँढ़ता जा रहा है, किंतु सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए वह बेचैन हो उठा है। इसके विपरीत रचनात्मक संवृद्ध में ऐसी संहारक शक्तियों को इकट्ठा कर रहा है कि उसके प्रयोग से विज्ञान के ही द्वारा सुख के सभी साधन मटियामेट होकर स्वयं भी नष्ट हो सकते हैं। इस प्रकार विज्ञान की सर्जनात्मक शक्ति मनुष्य की समझदारी से मानवता में सुख की सिहरन भर सकती है तो ध्वंसात्मक प्रवृत्ति मटियामेट कर सकती है। इसे हम वरदान समझे या अभिशाप, समझ नहीं पाते हैं।

विज्ञान की प्रगति मनुष्य का सुख और सौंदर्य से अभिनंदन करती है तो दूसरी ओर विध्वंसकारी तत्वों का निर्माण कर विनाश की स्थिति को स्पष्ट करती है। विज्ञान के प्रभाव के कारण मानव-जीवन का भविष्य जितना उज्ज्वल है उतना ही चुनौतियों से भरा हुआ है। एक ओर आदमी तारागणों को छूने के लिए बेचैन है 'हम रोज नए युग में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे हैं' नयी दुनिया में प्रवेश कर नए युग का निर्माण कर रहे हैं तो दूसरी ओर नए-नए अन्वेषणों से दुनिया के विनाश का साजो-समान एकत्र कर रहे हैं।

वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण सौ वर्ष पहले की दुनिया से आज की दुनिया सभी प्रकार से दूसरे रूप में हमारे सामने है। इसी तरह सौ वर्ष बाद विश्व की क्या रूपरेखा होगी, उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य का जीवन चुनौती पूर्ण है। इस तरह मनुष्य की सुख-समृद्ध का कारण विज्ञान वरदान के रूप में है तो तुरंत विनाश की स्मृति अभिशाप ही है ऐसा कहने में कोई संकोच भी नहीं है। विज्ञान के आविष्कारों से, विज्ञान की प्रगति से जहाँ संसार का हित होता है, वहीं उसका विनाश भी हो सकता है। कुछ तो नाश को ही उत्कर्ष का कारण मानते हैं।

अणु बम के विस्फोट से जापान घुटने के बल गिर पड़ा था। वही कालांतर में महाशक्ति के रूप में उदित हुआ। विज्ञान का आविष्कार परमाणु शक्ति का प्रयोग विनाश में ही होता है ऐसा सोचना गलत ही है। परमाणु शक्ति का प्रयोग रचनात्मक कार्यों में भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है। विशाल पर्वतों को तोड़कर उसके बीच से रास्ता बनाना इसके लिए साधारण कार्य है। रचनात्मक कार्यों में तीव्रता लाने का श्रेय विज्ञान के दूसरे रूप को ही जाता है। आज विज्ञान ने देशों की, नगरों की दूरियाँ कम कर दी हैं। आकाश में तीव्र गति से उड़ते हुए जहाज ही नहीं, अपितु मैट्रो जैसी चमत्कारी सुविधा ने नगरों की दूरी बहुत कम कर दी है। इस प्रकार विज्ञान के दोनों पक्षों को देखते हुए यही कहना उचित है कि प्रकृति के नियमानुसार विज्ञान के प्रगति से हित और विनाश साथ-साथ जुड़े हुए हैं।

मनुष्य की सदैव से ऐसी प्रवृत्ति रही है कि जब कोई पक्ष प्रगतिमान होता है, रचनात्मक होता है तो उसके दूसरे रूप को भी खोजने लगता है। विज्ञान भी अछूता नहीं रहा। जब विज्ञान सुख-साधन इकट्ठे करने लगा तो विनाश की प्रवृत्तिवालों का ध्यान उसके दूसरे पक्ष की ओर गया और वे विनाश का भयावह रूप प्रस्तुत कर दिए। यह मनुष्य की सोच का ही परिणाम रहा कि विज्ञान का भयावह रूप मनुष्यों में भय की सिहरन पैदा करता है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं; जैसे-आर्थिक, राजनैतिक असमानताएँ, विद्वेष की स्थितियाँ आदि। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को पद्दलित करने की राह पर चल पड़ता है और विज्ञान के दूसरे पक्ष का सहारा लेने लगता है। इस प्रकार पारस्परिक विद्वेष ने विज्ञान के भयावह रूप को अपना लेने के कारण विज्ञान अभिशाप बनता चला गया।

हिंसा और प्रति हिंसा का क्रम चलता रहा और विज्ञान का अभिशाप रूप अपने पैर पसारता रहा। अब उसका पक्ष इतना प्रबल हो गया कि सभी उसके प्रभाव में आ गए और उसका डर सताने लगा। आज संपूर्ण विश्व आर्थिक, राजनैतिक एवं विचारात्मक संघर्षों से घिरा हुआ है। इन संघर्षों के बीच

में कभी चुपके-चुपके कभी शोर मचा कर विज्ञान की उस तकनीक की शरण में राष्ट्र चलते चले जाते हैं जो घातक होती है। इस विचार से विज्ञान अभिशप्त हो गया है। निष्कर्ष में यही कहा जा सकता है कि विज्ञान तो मनुष्य के प्रयोग की तकनीक है। विज्ञान को अभिशाप न कहकर मनुष्य की सोच अभिशाप है। विज्ञान ने अपने उपयोग के अनुसार रचनात्मक और विनाशत्मक दोनों रूप प्रस्तुत किए हैं।

मनुष्य अपने सुख के लिए रचनात्मक विज्ञान का सदुपयोग करता है, तब वह वरदान रूप होती है। जब मनुष्य दूसरों के सुख से आहत होता है और उसके अंदर दूसरों के सुख-चैन को छीनने की पैशाचिक प्रवृत्ति जोर मारने लगती है तब वह विज्ञान का दुरुपयोग करने लगता है। ऐसी स्थिति में विज्ञान अभिशाप बन जाता है। अत: विज्ञान को वरदान या अभिशाप कहना मनुष्य की सोच का परिणाम है। विज्ञान के भयावह स्वरूप को देखकर दुनिया पारस्परिक तनाव, मतभेदों के रूप में जी रही है। दुनिया का काम तो यथावत् चल रहा है किंतु भयमुक्त नहीं है।

26. स्वतंत्रता के बाद का भारत

संसार के देशों में अपना विशिष्ट स्थान रखने वाले भारत को समय के अनेक थपेड़ों को सहना पड़ा है। इन थपेड़ों से देश । प्रभावित हुआ है। इसी क्रम में देश को गुलामी का जोरदार थपेड़ा सहना पड़ा है। यह कभी मुसलमानों के आक्रमण रूप में आया, कभी मुगल आक्रमण रूप में तो कभी अंग्रेजी शासन की दासता के रूप में। दासता के इस काल में देश की उन्नति की बात करना भी बेमानी होगा, उल्टे इस समय देश पतन और अवनति के गर्त में जरूर गिरा। सन् 1947 में देश को जब अंग्रेजी दासता से मुक्ति मिली तब यहाँ के लोगों ने आजादी की हवा में साँस ली और उन्नति की ओर कदम बढ़ाए।

स्वतंत्र होने के बाद ही भारतीयों को अपनी उपलब्धियों की ओर देखने का अवसर मिला। उपलब्धियों ने भारतीयों को गर्वानुभूति कराई। इससे भारतीयों को प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाने का उत्साह प्राप्त हुआ। उन्होंने शिक्षा, उद्योग, हरित क्रांति, सैनिक शक्ति, संचार आदि को उन्नत बनाने की योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया। उन्नति की ओर बढ़ते कदम आज उस मुकाम तक आ पहुँचे जहाँ से प्राचीन या स्वतंत्रता के पूर्व के भारत को पहचानना कठिन हो गया है।

स्वतंत्रता के बाद के भारत की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैंखादय निर्भरता- स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के कुछ वर्षों तक भारत खाद्यान्नों का आयात किया करता था। इसके लिए उसे अन्य राष्ट्रों की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था। इस समस्या को समाप्त करने के उपाय सोचे गए। इसका परिणम था-हरित क्रांति। डॉ० स्वामीनाथन और अन्य भारतीयों ने गेहूँ, चावल, मक्का, तिलहन आदि की उन्नतशील प्रजातियों की खोज की। उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में अच्छी उपज देने लायक बनाया। सरकार ने खाद, सिंचाई के साधन, उन्नत कृषि औजारों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किसानों को अनुदान दिया। इसका परिणाम सामने था। धीरे-धीरे भारत में खाद्यान्नों की कमी समाप्त हुई। लगातार बढ़ती जनसंख्या के बाद भी भारत आज खाद्यान्न निर्यात करने की स्थिति में पहुँच चुका है।

भारतीय रेलवे-यद्यपि भारत में रेल प्रणाली की शुरुआत अंग्रेजों ने मुंबई और थाणे के बीच रेल चलाकर कर दी थी, परंतु भारत जैसे देश में यह तो दाल में नमक के बराबर भी नहीं था। अभी बहुत कुछ करना था। स्वतंत्रता के बाद भारत में नयी पटरियाँ बिछाई गई। प्रतिवर्ष नयी-नयी रेलगाड़ियाँ चलाई गई जो प्रतिदिन लाखों लोगों को अपनी मंजिल तक पहुँचाती हैं। अब तो दुर्गम स्थानों और पहाड़ी भागों में भी पटरियाँ बिछाई जा चुकी हैं। कई मार्गों पर पहाड़ काटकर सुरंगें बनाई गई और रेल परिचालन किया गया।

आज स्थिति यह है कि भारतीय रेलवे की एक लाख किमी० से अधिक लंबी पटरियों पर 7000 से अधिक स्टेशन हैं। इन स्टेशनों से चलने वाली रेलें प्रतिदिन दस लाख से अधिक यात्रियों को उनकी मंजिल तक पहुँचाती हैं। आज सबसे लंबी रेल सुरंग, सर्वाधिक ऊँचाई पर बना स्टेशन, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी रेल व्यवस्था इसकी उन्नति की कहानी का स्वयं बखान करते हैं। फिल्मोदयोग- भारतीय फिल्म उद्योग ने स्वतंत्रता के बाद लगातार उन्नति की है। विज्ञान की नित नयी खोजों के कारण फिल्मों की गुणवत्ता में सुधार आया है।

भारतीय सिनेमा अर्थात् बॉलीवुड में बनी फिल्मों की लोकप्रियता देश की सीमा पार कर विश्व के अनेक देशों तक पहुँची है। यहाँ बनी फिल्मों को अन्य देशों में रुचि के साथ देखा जाता है। इनके कर्णप्रिय गीतों पर विदेशी भी थिरकने को मजबूर हो जाते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष 300 से अधिक फिल्मों का निर्माण होता है जो राजस्व का सशक्त स्रोत है। फिल्मोद्योग में 20 लाख से भी अधिक लोगों को रोजगार मिला है। भारतीय सिनेमा नित्य-प्रति उन्नति के सोपान पर चढ़ता जा रहा है।

हथियार एवं परमाणु संपन्न भारत-कभी हथियारों के लिए दुनिया के अन्य देशों का मुँह देखने वाला भारत आज परमाणु संपन्न राष्ट्र बन चुका है।

स्वतंत्रता के बाद के कुछ वर्षों बाद भारत को कमजोर समझकर चीन और पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया था, जिसका भारत ने मुँह तोड़ जवाब दिया। उसके बाद भारत ने आत्मरक्षा के उद्देश्य से अत्याधुनिक हथियारों का निर्माण किया। श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व ने भारत के परमाणु कार्यक्रम ने उन्नति के शिखर को छुआ। मई 1998 में श्री कलाम की अगुआई में तीन परमाणु परीक्षण किए और दुनिया को यह संदेश दिया कि वे भारत को कमजोर समझकर उस पर आँख उठाने की चेष्टा न करें। भारतीय सेनाएँ-किसी भी देश की गरिमा और स्वतंत्रता बनाए रखने में वहाँ की सेनाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

भारतीय सेना के पाँच लाख से अधिक सैनिक सीमाओं तथा देश के अंदर सुरक्षा के लिए कटिबद्ध रहते हैं। भारतीय थल सेना, वायु सेना और जल सेना के जवान अपने उत्तरदायित्वों का भली प्रकार निर्वहन करते हुए दुश्मनों के लिए चुनौती बने हुए हैं। देश की सीमाओं पर लगी सेना घुसपैठियों को देश में आने से रोकती है। वायु सेना के सजग प्रहरी देश की रखवाली करते हुए दुश्मनों को मार गिराते हैं। जल सेना समुद्री सीमा की रखवाली करते हुए दुश्मनों को चेतावनी देती प्रतीत होती हैं। सुदृढ़ अर्थव्यवस्था-स्वतंत्रता के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में जबरदस्त सुधार हुआ है। देश में प्रति-व्यक्ति के आय में वृद्ध हुई है। कृषि और आधारभूत उद्योगों के कारण विकास दर में वृद्ध हुई है। मेरी कामना है कि हमारा देश भारत उन्नति के नित नए सोपान चढ़ता रहे और विश्व में एक मजबूत राष्ट्र के रूप में गिना जाए।

27. मातृभाषा के प्रति हमारी अभिरुचि

देश का विकास और राष्ट्रीय चरित्र मातृभाषा में सुरक्षित है। इस संबंध में महापुरुषों ने मातृभाषा के महत्त्व को स्वीकार किया है। स्वामी दयानंद, विवेकानंद, तिलक, मालवीय जी ने ही नहीं विदेशी विद्वान मैक्समूलर ने भी हिंदी की तारीफ के पुल बाँधे। जापान, चीन, रूस जैसे प्रगतिमान देशों ने भी अपनी मातृभाषा को महत्व दिया है और निरंतर प्रगतिमान हैं। न जाने क्यों, भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ के निवासियों को अपना कुछ अच्छा नहीं लगता, अपितु उन्हें विदेशी वस्तुएँ अच्छी लगती हैं। उनकी संस्कृति आकर्षित करती है। इतना ही नहीं, विदेशी वस्तुओं को अपनाकर भारतीय गौरवान्वित महसूस करने लगे हैं।

अपनी सहज सरल भाषा के प्रति घटती रुचि उनके इस सोच का ही कारण है। जिस समय देश स्वतंत्र हुआ उस समय लोगों में अपनी मातृभाषा के लिए अच्छी भावना थी इसलिए हिंदी के विकास के लिए राष्ट्रीय-स्तर पर प्रयास किए गए। मातृभाषा के सुधार के लिए नीतियाँ बनाई गई कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगी। ताकि अंग्रेजी ज्ञान के बिना परेशानी नहीं होगी। अहिंदी भाषी प्रदेशों की आशंकाएँ देखते हुए त्रिभाषा पर आधारित राष्ट्रीय नीति बनाई गई।
जिसको समुचित रूप से न अपनाने पर भाषाओं के विकास की बात दुलमुल नीति में छिप गई। इस दुलमुल नीति से अंग्रेजी भाषा के प्रति राज्यों की रुचि बढ़ी। सुविज्ञजनों ने विचार दिए कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के महत्व को बनाए रखने के लिए हिंदी का ज्ञान देना अनिवार्य होना चाहिए। अहिंदी प्रदेशों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का अध्ययन होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालय के बाद अंग्रेजी भाषा के अध्ययन का प्रावधान हो। इसके प्रयास हुए, किंतु समुचित प्रयास न होने के कारण अंग्रेजी अपना वर्चस्व स्थापित करती गई। सुविज्ञों ने योजनाएँ बनाई थीं उसके प्रति सजगता और ईमानदारी से कार्य किया जाता तो आज हिंदी या अन्य मातृभाषाओं की ऐसी दुर्दशा न होती।
अंग्रेजी का ज्ञान न रखने वाले शिक्षित लोग स्वयं को हेय समझने लगे। लोगों के मन में यह भाव पनपने लगा कि वैश्वीकरण के कारण अंग्रेजी का ज्ञान ही उनकी प्रगति में सहायक हो सकता है। इतना दम-खम अन्य भाषाओं में नहीं है। इसी विचारधारा ने पब्लिक स्कूलों को हवा दी। पब्लिक स्कूलों की संख्या बढ़ी, इतनी बढ़ी कि कई गुनी हो गई। इन स्कूलों में संपन्न परिवारों के बच्चे प्रवेश पाने लगे। इन्हें उच्च-शिक्षा अर्थात् उत्तम शिक्षा का केंद्र मानकर सामान्य जन भी येन-केन प्रकारेण इन्हीं स्कूलों में अपने बच्चे भेजने का प्रयास करने लगे। इस प्रकार पब्लिक स्कूल बढ़ते गए, सरकारें भी अंग्रेजी के वर्चस्व को नकार न सकी। प्रतिवर्ष करोड़पति लोगों की संख्या भी बढ़ी और उन्हें लुभाने के लिए इन स्कूलों ने लुभावने आकर्षण दिखाए।
सरकारी स्कूलों में केवल अति सामान्य परिवार के बच्चे पढ़ने के लिए विवश और तड़प कर रह गए। पब्लिक स्कूलों के प्रति आकर्षण को देख दूर-दराज के क्षेत्रों में पब्लिक स्कूल खुल गए, जिनमें हिंदी भाषा को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। इस तरह हिंदी या अन्य मातृभाषाओं की दुर्दशा होती गई। जब उच्च-शिक्षा प्राप्त युवक अपनी डिग्रियों को लेकर नौकरी के लिए कपनियों के द्वार पर दस्तक देता है तो अंग्रेजी के ज्ञान बिना उसके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। इस परिस्थिति का लाभ उठाकर चतुर लोगों ने अंग्रेजी सिखाने के लिए संस्थान खोले और अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व से परिचय कराया। इससे अंग्रेजी का प्रचलन बढ़ता गया और अपनी भाषा के प्रति रुचि घटती गई। हिंदी भाषा के सुधार के स्थान पर अंग्रेजी को सँवारने में युवक लग गए और अंततः हिंदी को हेय समझने लगे। अब आज का छात्र अपनी प्रगति अपना उज्ज्वल भविष्य अंग्रेजी में ही देखता है। वह विचार समाप्त हो गया कि अपनी मातृभाषा के द्वारा बच्चे का विकास संभव है। उसके लिए भले ही रट्टू तोता की तरह अंग्रेजी के वाक्य रटने पड़े। भले ही अपने देश में हम विदेशी कहे जाने लगें। इस तरह हमारी मातृभाषा का पथ हमने स्वयं पथरीला कर लिया। ऐसा करने में सरकारों ने खूब सहयोग दिया, भले ही इसमें उनकी विवशता रही हो।

यद्यपि अंग्रेजी के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है, तथापि अपनी मातृभाषा की ओर भी ध्यान देना चाहिए, नहीं तो हम अपने ही देश में विदेशी हो जाएँगे। इसका परिणाम सबसे अधिक अपनी संस्कृति पर पड़ेगा और पड़ रहा है। अपनी सनातन संस्कृति का वर्चस्व न रहने पर हम विश्व स्तर पर लताड़े जाएँगे। यही कारण था महात्मा गाँधी जैसे सुविज्ञ मातृभाषा के महत्व को न नकार सके। उनका कहना था कि मातृभाषा को छोड़कर हम दूसरों के पिछलग्गू बन जाएँगे। अब तो बस यही कह सकते हैं कि परमात्मा हमें सद्बुद्धि दे।

28. भारत की विभिन्न ऋतुएँ

दयालु प्रकृति ने हमारे देश भारत को अपने हाथों से अनेक उपहार प्रदान किए हैं। उन्हीं में से एक है-विविध ऋतुओं का उपहार। यहाँ एक ही साल में अनेक ऋतुओं के दर्शन होते हैं जो विविधताओं के देश भारत में एक और कड़ी जोड़ने का काम करते हैं। विश्व का शायद कोई ऐसा देश हो जहाँ की ऋतुओं में इतनी विविधता हो।

भारत में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं। ये ऋतुएँ हैं- ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत। ये ऋतुएँ बारी-बारी से आती हैं और सौंदर्य बिखेरकर चली जाती हैं। इन ऋतुओं के काल को भारतीय महीनों से यदि जोड़ा जाए तो ग्रीष्म ऋतु बैशाख और जेठ में, वर्षा ऋतु-आषाढ़ और सावन में, शरद ऋतु-भादों और क्वार (अश्विन) में, हेमंत ऋतु-कार्तिक और अगहन में, शिशिर ऋतु-पूस और माघ में तथा वसंत ऋतु-फाल्गुन और चैत के महीने में पड़ती हैं। इनमें से प्रत्येक ऋतु काल दो महीने का होता है।

भारत विश्व के विशाल भू-भाग पर स्थित है। इसकी सीमाओं पर समुद्र पर्वत तथा अन्य देशों का भू-भाग है। उत्तर में स्थित हिमालय की चोटियाँ वर्ष भर बर्फ से ढँकी रहती हैं, इस कारण आसपास के प्रांतों में सर्दियों में भयंकर सर्दी और गर्मियों में गर्मी मड़ती है। पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान वर्षा ऋतु में भी सूखा रहता है तो पूर्वोतर राज्यों में उसी समय अच्छी खासी वर्षा होती है। दक्षिणी और दक्षिणी-पश्चिमी सीमा के समुद्र तटीय स्थानों की जलवायु समशीतोष्ण रहती है, उसी समय उत्तरी राज्य में खूब गर्मी पड़ती है।

देश के किसी भाग की नदियाँ सदानीरा कहलाती हैं तो दूसरे भाग की नदियाँ वर्षा ऋतु के अलावा सद्खी ही रहती हैं। इसी विविधता में ऋतुएँ भी विविधता का एक अध्याय जोड़ जाती हैं। एक ऋतु हमें पसीने से सराबोर करती है तो दूसरी ऋतु गर्मी का ताप हर लेती है और शीतलता की गंगा में नहला जाती है। एक ऋतु हमें दाँत किटकिटाने पर विवश करती है, तो दूसरी ऋतु हर्ष एवं उल्लास से आप्लावित कर जाती है। ऋतुओं का ऐसा सामंजस्य शायद ही किसी देश में हो।

ग्रीष्म ऋतु-ऋतुओं का आनंद उठाने के क्रम में हम सबसे पहले ग्रीष्म ऋतु से मुलाकात करते हैं। यूँ तो एक विशेष प्रकार की भौगोलिक बनावट के कारण भारत एक गर्म देश माना जाता है, किंतु ग्रीष्म ऋतु में गर्मी का प्रभाव देखते ही बनता है। इस समय सूर्य की किरणें आग के बाण चलाती हुई प्रतीत होती हैं। सारा भूमंडल तवे जैसा जलने लगता है। इस समय दिन बड़ा तथा रातें छोटी होने लगती हैं। दिन में लू चलती है। ऐसे में रातें सुहावनी हो जाती हैं। फलों एवं सब्जियों की दृष्टि से यह ऋतु समृद्ध होती है। पपीता, फलों का राजा आम, अंगूर, कटहल, जामुन, शरीफा खूब मिलते हैं। खीरा, ककड़ी घीया, तोरी आदि तरावट पहुँचाने का काम करते हैं। इस ऋतु में विविध प्रकार के शीतल पेय पीने का अपना अलग ही आनंद उठाया जा सकता है। इस समय खेत से फसलें कट चुकी होती हैं। किसान का घर धन-धान्य से भरा होता है। किसान नयी फसल बोने के लिए वर्षा का इंतजार करते दिखाई देते हैं।

वर्षा ऋतु-वर्षा को ऋतुओं की रानी कहा जाता है। ग्रीष्म ऋतु समाप्त होते ही वर्षा का आगमन होता है। किसानों के लिए इस ऋतु का विशेष महत्व होता है। यह ऋतु धरती की तपन शांत कर देती है। वर्षा की शीतल बूंदें हर प्राणी के लिए जीवनदायी होती हैं। सूखी धरती फिर से हरी-भरी होने लगती है। वर्षा से नदी-नाले, तालाब खेत सब पानी से भर जाते हैं। किसान धान, मक्का, ज्वार-बाजरा, खीरा, ककड़ी, तोरी आदि की बुवाई करते हैं। अत्यधिक वर्षा हानिप्रद होती है।

सफाई का इस ऋतु में विशेष महत्व होता है। इस ऋतु में अनेक बीमारियाँ फैलती हैं तथा मच्छर और मक्खियाँ पनपते हैं। कवियों ने अपने साहित्य में इस ऋतु का नाना प्रकार से वर्णन किया है।

शरद ऋतु-वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में जलवायु समशीतोष्ण होता है। यह ऋतु अत्यंत मनोरम होती है। इसी समय से दिन छोटे और रातें बड़ी होने लगती हैं। वर्षा ऋतु में आसमान में छाए बादलों का घमंड घट जाता है। वे निर्धन हो जाते हैं। इस समय आसमान बिलकुल स्वच्छ होता है। शरद पूर्णिमा की छटा देखते ही बनती है। इस समय प्रकृति में चहुँ ओर हरियाली दिखाई देती है। इसी ऋतु से त्योहारों का आगमन शुरू हो जाता है।
विजयदशमी इस ऋतु का प्रमुख त्योहार है।

हेमंत ऋतु-इस ऋतु के आते-आते जाड़ा कुछ बढ़ जाता है। रातें और बड़ी तथा दिन छोटे हो जाते हैं। वर्षा ऋतु में बोई गई फसलें पककर तैयार हो जाती हैं। किसान उनकी कटाई करके नयी फसल बोने की तैयारी करते हैं। इस समय विविध त्योहार मनाए जाते हैं।

शिशिर ऋतु-शिशिर ऋतु में जाड़ा अपने चरम पर होता है। दिन एक दम छोटे और रातें बड़ी होती हैं। कोहरे के कारण कई बार सूरज के दर्शन नहीं होते हैं। यह स्वास्थ्यवर्धक ऋतु मानी जाती है। इस समय पेड़-पौधे ढूँठ बनकर रह जाते हैं। उनकी पत्तियाँ उनका साथ छोड़ जाती हैं।

वसंत ऋतु-वसंत को 'ऋतुराज' की संज्ञा दी गई है। शिशिर ऋतु में ढूँठ हुए पौधों में कोमल पत्ते, कलियाँ, फूल तथा फल आ जाते हैं। बसंती हवा वातावरण में मादकता घोल जाती है। प्राकृतिक सौंदर्य चहुँ ओर बिखर जाता है। खेतों में फूली सरसों देखकर लगता है मानी धरती ने पीली ओढ़नी ओढ़ रखी हो। आमों में मंजरियाँ आ जाती हैं। कोयल मतवाली हो कूक-कूक कर वसंत के आने की सूचना सभी को देती फिरती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ऋतु अत्युत्तम मानी जाती है। वसंत पंचमी, बैसाखी, होली इस ऋतु के प्रमुख त्योहार हैं। सचमुच हमारे देश जैसी ऋतु मानव जाति को विविधता धरती पर अन्यत्र दुर्लभ है।

29. प्रकृति, पर्यावरण और विकास

प्रकृति चक्र निरंतर टूट रहा है या यह कहो प्रकृति रूठ रही है, प्रकृति में गुस्सा समाया हुआ है। प्रकृति का गुस्सा कहाँ थमेगा? यह कहा नहीं जा सकता है। इस प्रकृति के रूठने का कारण मनुष्य ही है। प्रकृति चक्र के टूटने का रूठने से मनुष्य-मात्र चिंतित है, समाधान की ओर अग्रसर नहीं है। "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" की नीति पर चलता मनुष्य मात्र दूसरों को उपदेश दे रहा है, दूसरों को दोष दे रहा है, किंतु स्वयं बाज नहीं आ रहा है। यदि ऐसे ही दूसरों को उपदेश देता रहा और प्रकृति को मनाने का प्रयास नहीं किया गया तो प्रकृति कब मानव जाति को निगल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।

प्रकृति बार-बार अपने क्रोध का संकेत दे रही है; फिर भी मनुष्य अपनी आदत से मजबूर है कि बाज ही नहीं आ रहा है। इससे तो यह प्रतीत हो रहा है कि शीघ्र ही प्रकृति के क्रोध के बवडर में मानव-संस्कृति काल-के गाल समा जाएगी। पिछले कुछ दशकों में दुनिया की विकास दर लगभग दो गुनी हो गई है, किंतु पर्यावरण को गर्माने वाली गैसों का उत्सर्जन भी अपेक्षा से अधिक बढ़ गया है। इस कारण इस विकास ने पर्यावरण को प्रदूषित किया है। विकास के नाम पर प्रतिस्पद्र्धा की दौड़ लगी हुई है। सड़कों पर वाहन दौड़ रहे हैं।

खूब तेल फूंका जा रहा है। एक के बाद एक अमीर होने के हक को बताकर कार्बन को उगल रहे हैं। संसार के कर्णधार यह समझते थे कि तेज विकास ही गरीबी का इलाज है। खेती हो, उद्योग हो या

अन्य साधन हो, सबके लिए तेल, कोयला जैसे ईंधन चाहिए, किंतु अचानक बदलते मौसम ने बता दिया कि पर्यावरण की बर्बादी की कीमत पर गरीबी का उन्मूलन नहीं किया जा सकता है। विकास से गरीबी मिटेगी अवश्य, परंतु दूसरी ओर सूखा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य को कहीं का नहीं छोड़ेंगी। दुनिया पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने लिए तो चिंतित है, किंतु विकास को छोड़कर नहीं। पर्यावरण परिवर्तन से भूमि की उर्वरता कम होती जा रही है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि तापमान के वृद्ध के कारण आगे के कुछ वर्षों में खाद्य-संकट उत्पन्न हो जाएगा। भारत में जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न कारण विकास के लिए चुनौती बनकर सामने खड़ा हुआ दिखाई दे रहा है। तापमान बढ़ने से गर्मियों में नदियों में पानी कम हो जाता है, जिससे सिंचाई पर प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप कृषि कार्य के लिए समस्या उत्पन्न हो रही है। नदियों के सूखने से पीने के पानी का भी संकट वर्ष-प्रति वर्ष गहराता जा रहा है। लोग चिंतित हैं कि बदलते पर्यावरण और प्रकृति का कोप ऐसे ही बढ़ता रहा तो शीघ्र ही अनेक आपदाएँ एक साथ इकट्ठी होकर टूट पड़ेगी, जिनसे शीघ्र निजात पाना संभव नहीं होगा।

जीवन की आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करना, बिना खाद्य सामग्री, पानी और हवा के व्यर्थ ही प्रतीत होंगी। यह जानते हुए कि खाद्य, पानी, हवा जीवन के लिए पहली आवश्यकता है, फिर भी इससे बेखबर होकर मनुष्य अन्य सुविधाओं की ओर दौड़ रहा है। वैज्ञानिक आँकड़ों के अनुसार विकास के संसाधनों से निकलता कार्बन और उसके कारण बढ़ते हुए तापमान ने संकेत दे दिए हैं कि तूफान, बाढ़ और सूखा जैसी आपदाओं में वृद्ध होगी। समुद्र के जल-स्तर में वृद्ध होने से एक देश के नागरिक दूसरे देशों की शरण लेंगे। एक क्षेत्र के लोग दूसरे क्षेत्रों में पलायन करेंगे। संतुलन बिगड़ेगा, बाहरी लोगों का दबाब आर्थिक, सामाजिक ढाँचे छिन्न-भिन्न कर देगा।

अांतरिक सुरक्षा का खतरा बढ़ेगा। समाचार-पत्रों के अनुसार समुद्र का जल स्तर बढ़ने से अपने पड़ोसी देश बांग्ला-देश का बहुत बड़ा भूभाग समुद्र के आगोश में आने पर और खारे पानी के कारण कृषि-भूमि अनुपजाऊ होने पर हमेशा की तरह वहाँ के लोग भारत में शरण लेकर जनसंख्या संतुलन को बिगाड़ सकते हैं। इस तरह प्राकृतिक आपदा राष्ट्रीय सुरक्षा के रूप में संकट बनकर खड़ी हो सकती है। इतना ही नहीं, देशों में परस्पर टकराव बढ़ने की संभावना बलवती हो सकती है। पानी के लिए देशों में टकराव बढ़ सकता है। भारत के एक कोने में ऊँचे स्तर पर बसा तिब्बत पानी का बहुत बड़ा स्रोत है। नदियों का तंत्र है।

पड़ोसी देश पानी के लिए नदियों के प्रवाह को बाधिक कर सकता है। इस प्रकार प्राकृतिक आपदाएँ राष्ट्रीय सुरक्षा में अप्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव दिखा सकती हैं। पर्यावरणीय प्रदूषण के लिए विश्व के विकसित, विकासशील देश संयुक्त रूप से जिम्मेवार हैं। हालाँकि विकसित देशों की जिम्मेदारी अन्य देशों की अपेक्षाकृत कुछ अधिक है। अत: प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए उन्हें पहल करनी चाहिए। – इस समस्या से निजात मिलना तभी संभव है जब विश्व के सभी देश मिलकर जिम्मेदारियाँ उठाएँ, अंतर्राष्ट्रीय कानून बनाएँ और उसका पालन करें, अन्यथा प्राकृतिक असंतुलन की अजीबी-गरीब स्थिति पैदा हो जाएगी। लोग अस्वस्थ होंगे, भयभीत होंगे। प्रकृति से खिलवाड़ केरने का परिणाम महाविनाश होगा। समय रहते ही यदि विश्व स्तर पर शीघ्र ही हल नहीं निकाला तो आने वाले वर्षों में प्रकृति का ऐसा कहर हो सकता है जो सँभालने पर भी नहीं सँभल सकता है।

30. भारत के बदलते गाँव

भारत गाँवों का देश है। यहाँ की 80% से अधिक जनसंख्या गाँवों में बसती है और वहीं कुछ-न-कुछ कारोबार कर अपना जीवन-यापन करती है। इन गाँवों में ही देश का अन्नदाता बसता है। ये गाँव देश की अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश की सरकार चुनने में भी गाँव अपनी भूमिका से पीछे नहीं हटते। गाँवों की महत्ता आदिकाल से रही है, आज है और भविष्य में भी रहेगी। कभी अपनी धूलभरी सड़कों, कच्चे मकानों, अधनंगे बच्चों और दयनीय दशा के लिए जाने-पहचाने जाने वाले गाँवों में भी परिवर्तन की बयार पहुँच चुकी है।
कुछ विज्ञान के बढ़ते चरणों ने तो कुछ सरकारी प्रयासों ने गाँवों की दशा सुधारने का प्रयास किया.है। गाँव पूरी तरह से बदल गए हैं, सुख-सुविधाओं से भरपूर हो गए हैं, ऐसा दावा करना न्यायसंगत नहीं होगा, पर इतना जरूर है कि गाँवों की दशा में सुधार आया है। यह सुधार किन-किन क्षेत्रों में आया है इस पर एक दृष्टि डालते हैं।
शिक्षा का प्रसार-गाँवों के पिछड़ेपन का सर्वप्रमुख कारण था-वहाँ शिक्षा का प्रचार-प्रसार न होना। शिक्षा के अभाव में अनपढ़ किसान महाजनों एवं सूदखोरों के चंगुल में फँसते थे और आजीवन ऋणमुक्त नहीं हो पाते थे। वे सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते थे। वे अपनी उपज का उचित मूल्य भी नहीं प्राप्त कर पाते थे। स्वतंत्रतोत्तर भारत में गाँवों तक शिक्षा पहुँचाने को प्राथमिकता दी गई। अब किसानों के बच्चों को शिक्षा के लिए दूरदराज नहीं जाना पड़ता है। वे पढ़-लिखकर उच्च पदों को सुशोभित कर रहे हैं। वे सरकारी योजनाओं का फायदा उठाकर अपनी उपज बढ़ा रहे हैं। ग्रामीण अब बैंकों के द्वारा देख चुके हैं। इससे ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। आज ग्रामीणों ने शिक्षा के महत्व को पहचान लिया है। इससे उनके दृष्टिकोण में भी बदलाव आ गया है।
सड़क तथा यातायात व्यवस्था में सुधार-जो गाँव पहले अपनी धूल एवं कीचड़ भरी सड़कों के लिए जाने-पहचाने जाते थे, आज उन सड़कों की कायापलट हो चुकी है। सड़कों के अभाव में वर्षा के चार महीनों में उन गाँवों में पहुँचना पहाड़ चढ़ने जैसा होता था, पर अब किसी ऋतु-मौसम में वहाँ जाया जा सकता है। यातायात के कारण विकास के कदम गाँवों की परिधि में पहुँच चुके हैं। किसानों और अन्य ग्रामीणों की बैलगाड़ी की जगह मोटर साइकिलों, ट्रैक्टरों और कारों ने ले ली है। पैदल यात्रा करना तो अब बीते जमाने की बात हो चुकी है।
कृषि क्षेत्र में बदलाव-वैज्ञानिक उन्नति के कारण कृषि की दशा सुधरी है। अब किसान हल जैसे परंपरागत कृषि उपकरणों की जगह ट्रैक्टर कल्टीवेटर, हैरो आदि का प्रयोग करते हैं। सिंचाई नहरों और ट्यूब-वेल द्वारा की जाती है। कृषि जो कभी बैलों के सहारे ही की जाती थी आज पूरी तरह से यंत्रों से की जाने लगी है। ग्रामीण बुवाई, कटाई, निराई, मड़ाई, दुलाई जैसे कृषि कार्य मशीनों से करने लगे हैं। इससे उपज में वृद्ध हुई है और ग्रामीणों की दशा सुधरी है।
विद्युतीकरण से क्रांति-स्वतंत्रता के बाद प्रत्येक गाँव में बिजली पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया। आज गाँवों में बिजली पहुँच गई है। वहाँ अब टेलीविजन, कूलर, पंखे, वाशिंग मशीन, प्रेस आदि का प्रयोग शुरू हो गया है। बच्चों को पढ़ने के लिए अब दीए और केरोसीन लैंप जलाने की आवश्यकता नहीं रही। बस बटन दबाते ही घर उजाले से भर उठता है। विद्युतीकरण से ग्रामीणों का जीवन सुखमय बना है। वहाँ कुश्ती, ताश, दंगल या बातचीत ही मनोरंजन के साधन हुआ करते थे, पर अब वे रेडियो, टेलीविजन पर तरह-तरह के मनोरंजक कार्यक्रम देखते हैं और देश-दुनिया की खबरों से अवगत होते हैं। अब तो ग्रामीणों और किसानों के लिए विशेष कार्यक्रम बनाए जाने लगे हैं।

यद्यपि ये सुविधाएँ गाँव के हर व्यक्ति के पास नहीं हैं फिर भी गाँवों की दशा में सुधार आया है। ꠸
०
बढ़ती चिकित्सा सुविधाएँ-पहले गाँवों में चिकित्सा सुविधाएँ न के बराबर थीं, किंतु सरकारी प्रयासों और यातायांत के बढ़ते ‘ साधनों के कारण वहाँ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आँगनवाड़ी केंद्र, सामुदायिक केंद्र जैसी सुविधाएँ हो गई हैं। इससे उन्हें शारीरिक परेशानियों के लिए अब झाड़-फूंक करने वालों, तांत्रिकों, वैद्यों और हकीमों पर ही निर्भर नहीं रहना पड़ता है। उन्हें चिकित्सा की बेहतर सुविधाएँ उनके आसपास ही मिल रही हैं। गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए ही उन्हें शहर की ओर जाना पड़ता है। डॉक्टर, प्रशिक्षित नसों और दाइयों की सेवाएँ उन्हें गाँवों में ही मिलने लगी हैं।
सामाजिक समता का प्रसार-यद्यपि गाँवों में आज भी छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाँति की बातें फैली हैं, फिर भी अब यह स्थिति पहले जितनी विकट नहीं है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने उनके दृष्टिकोण में पर्याप्त बदलाव ला दिया है।
राजनैतिक सोच का विकास-आज गाँवों में राजनीति की बयार घर-घर तक पहुँच चुकी है। ग्रामीणों ने देश की राजनीति की – ” दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्राम-पंचायतों की स्थापना तथा लोकतंत्र के कारण गाँवों की राजनीति बहुत प्रभावित हुई है। अब उन्हें बहला-फुसलाकर किसी के पक्ष में मतदान नहीं कराया जा सकता है। दुर्भाग्य से इस राजनीतिक चेतना से गाँवों में जातीय और सांप्रदायिक विवाद बढ़ा है। परस्पर सहयोग से रहने वाले ग्रामीण आज विभिन्न खेमों में बँटकर रह गए हैं।
शहर की ओर पलायन-गाँवों की दशा सुधरने के बाद भी शिक्षित युवा अपना पैतृक गाँव छोड़कर शहर की ओर पलायन कर रहा है। वह शिक्षित होकर नौकरी की राह में शहर भागने लगा है। यद्यपि गाँवों की दशा में पहले की अपेक्षा बहुत अधिक परिवर्तन आया है, तथापि परंतु वहाँ अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। सरकार को गाँवों के उत्थान की ओर ध्यान देना चाहिए।

31. परोपकार

परोपकार के संबंध में हमारे ऋषि-मुनियों ने, हमारे धर्म ग्रंथों में अनेक प्रकार से चर्चाएँ की हैं। केवल चर्चाएँ ही नहीं कीं, अपितु उसके अनुसार अपने जीवन को जिया। जीवन की सार्थकता परोपकार में ही निहित है, इसके लिए उन्होंने जो सिद्धांत बनाए उसके अनुसार स्वयं उस पर चले। महाभारत के प्रणेता, पुराणों के रचनाकार श्री वेदव्यास जी ने परोपकार के महत्व को विशेष रूप से स्वीकारते हुए कहा कि-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनंद्वयम्।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

परोपकार के प्रति तो प्रकृति भी सदैव तत्पर रहती है। प्रकृति की परोपकार भावना से ही संपूर्ण विश्व चलायमान है। प्रकृति से प्रेरित होकर मनुष्य को परोपकार के लिए तत्पर रहना उचित है। प्रकृति के उपादानों के बारे में कहा जाता है कि वृक्ष दूसरों को फल देते हैं, छाया देते हैं, स्वयं धूप में खड़े रहते हैं। कोई भी उनसे निराश होकर नहीं जाता है उनका अपना सब कुछ परार्थ के लिए होता है। इसी प्रकार नदियाँ स्वयं दूसरों के लिए निरंतर निनाद करती हुई बहती रहती हैं। इस विषय में कवि ने कहा है-

वृक्ष कबहुँ नहि फल भखें, नदी न सञ्चे नीर।

परमारथ के कारन, साधुन धरा शरीर।।

इस प्रकार संपूर्ण प्रकृति अपने आचरण से लोगों को संदेश देती हुई दिखाई देती है और परार्थ के लिए प्रेरणा देती हुई प्रतीत होती है। प्रकृति से प्रेरित होकर महापुरुषों का भी जीवन परोपकार में व्यतीत होता है उनकी संपत्ति का संचय दान के लिए होता है। प्रकृति के उपादान निरंतर परोपकार करते हुए दिखाई देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका कार्य ही परोपकार है। चंद्र उदय होता है शीतलता प्रदान करता है चला जाता है। सूर्य उदय होता है प्रकाश फैलाता है और चला जाता है। पुष्प खिलते हैं, सुगंध फैलाते हैं और मुरझा जाते हैं।

परोपकार में ही अलौकिक सुख की अनुभूति होती है। भारतीय संस्कृति में परोपकार के महत्व को सर्वोपरि माना गया है। भारत के मनीषियों ने जो उदाहरण प्रस्तुत किए, ऐसे उदाहरण धरती क्या संपूर्ण ब्रहमांड में भी नहीं सुने जाते हैं। यहाँ महर्षि दधीचि से उनकी परोपकार भावना से विदित होकर देवता भी सहायता के लिए याचना करते हैं और महर्षि अपने जीवन की चिंता किए बिना सहर्ष उन्हें हड्डियाँ तक देते हैं। याचक के रूप में आए इंद्र को दानवीर कर्ण अपने जीवन-रूपी कवच और कुंडलों को अपने हाथ से उतारकर देते हैं। राजा रंतिदेव स्वयं भूखे होते हुए भी अतिथि को भोजन देते हैं। इस परोपकार की भावना से यहाँ की संस्कृति में अतिथि को देवता समझते हैं। विश्व में भारतीय संस्कृति ऐसी है जिसमें परोपकार को सर्वोपरि धर्म माना गया है। इसलिए तो हमारे धर्म ग्रंथों में सभी के कल्याण की कामना की गई है-

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्।

इस तरह त्याग और बलिदान के लिए भारत-भूमि, विश्व क्या संपूर्ण ब्रहमांड में अप्रतिम हैं। अत: जीवन की सार्थकता कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने परोपकार में ही बताई है-

'वही मनुष्य है जो मनुष्यं के लिए मरे"

इसलिए प्रकृति भी लोगों को निरंतर प्रेरित करती है कि सुखमय जीवन जीना चाहते हो तो यथासंभव परोपकार करो। परोपकार में स्वार्थ की भावना नहीं होती है। आज परोपकार में मनुष्य अपना स्वार्थ देखने लगा है। वणिक बुद्ध से अपने हानि-लाभ की गणना कर परोपकार की ओर प्रेरित होता है। पारस्परिक वैमनस्यता बढ़ी है। लोगों में दूरियाँ बढ़ी हैं। हम आपद्-समय में सहायता करना भूलते जा रहे हैं जिससे मनुष्य एकाकी जीवन जीने का आदी होता जा रहा है। सामूहिकता की भावना नष्ट होती जा रही है, क्योंकि आज मनुष्य परोपकार से दूर होता जा रहा है।

परोपकार के सूत्र इतने ढीले हो गए हैं कि परोपकार में भी लोग अपना स्वार्थ देखते हैं। इसका कारण है कि दो से चार बनाने में लगा मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि उसे परपीड़ा का अनुभव नहीं होता है। प्रकृति समय-समय पर सावधान कर रही है कि परोपकार से दूर मत हो, अन्यथा जीवन सरस न होकर नीरस हो जाएगा। m जीवन में सुख की अनुभूति परोपकार से होती है तो परोपकार का महत्व स्वयं ही प्रतीत होने लगता है। स्वयं प्रगति की ओर बढ़ते हुए दूसरों को अपने साथ ले चलना मनुष्य का ध्येय होगा तो संपूर्ण मानवता धन्य होगी।

मात्र अपने स्वार्थ में डूबे रहना तो पशु प्रवृत्ति है। मनुष्यता के अभाव में कोई भी मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। भूखे को भोजन देने, प्यासे को पानी देने की भावना तो मनुष्य में होनी चाहिए। इतनी भावना भी समाप्त हो जाती है तो पशुवत जीवन है। जिस दिन परोपकार की

भावना पूर्णत: समाप्त हो जाएगी उस दिन धरती की शस्य-स्यामला न रहेगी, माता का मातृत्व स्नेह समाप्त हो जाएगा। पुत्र अपनी मर्यादा को भूल जाएगा। अंतत: मानव बूढ़े सिंह समूह की तरह इधर-उधर ताकता हुआ, पानी के लिए पुकार लगाता हुआ अपने ही मैल की दुर्गंध में साँस लेने के लिए विवश हो जाएगा। अत: संपूर्ण सृष्टि आज भी सहयोग की भावना से चल रही है। यह भावना समाप्त होते ही सब उलट-पुलट हो जाएगा। इसलिए श्री तुलसीदास जी ने कहा-

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

32. भारत की सामाजिक समस्याएँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज का अंग माना गया है। मनुष्य और समस्याओं का अत्यंत घनिष्ठ नाता है। मनुष्य को जिन समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है, धीरे-धीरे वही सामाजिक समस्या बन जाती है। भारतीय समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं जिनके सुधार एवं समाधान की महती आवश्यकता है। भारतीय समाज में अनेक संप्रदायों, जातियों एवं धर्मों के मानने वाले लोग हैं। यहाँ हिंदू मुसलिम, सिख, पारसी, बौद्ध, ईसाई आदि धर्मों को मानने वाले बसते हैं जिनकी जातियों की गणना करना कठिन है, फिर भी भारतीय समाज में हिंदुओं की बहुलता है। यहाँ विभिन्न संप्रदायों के अनुयायी भी परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। जब समाज में रहने वालों में इतनी विविधता है तो वहाँ अनेक समस्याओं का होना भी स्वाभाविक ही है। भरतीय समाज में पाई जाने वाली कुछ समस्याएँ इस प्रकार हैं-

कुरीतियाँ और अंधविश्वास-भारतीय समाज नाना प्रकार की कुरीतियों, रूढ़ियों और अंधविश्वास से आज भी मुक्त नहीं हो पाया है। ये अंधविश्वास और कुरीतियाँ इतनी गहराई से अपनी जड़ें जमा चुकी हैं कि इनसे छुटकारा पाना कठिन हो रहा है। लोग इनसे प्रताड़ित होते रहते हैं पर इन्हें छोड़ने को तैयार नहीं हैं। भारतीय कितने भी महत्वपूर्ण काम के लिए घर से निकल रहे हों और बिल्ली रास्ता काट जाए या कोई छींक दे अथवा एक आँख वाला आदमी सामने आ जाए तो वे इसे अपशकुन मानकर काम को अगले दिन के लिए छोड़ बैठते हैं। भले ही वे इलाज के लिए निकल रहे हों और इस तरह टालमटोल करने से नुकसान उठाना पड़े पर उन्हें इसकी चिंता नहीं रहती है। सोने का आभूषण खोने पर सोना दान देना, हाथ से पानी भरा लोटा छूटकर गिरना, पीछे से आवाज लगाने पर यह मान बैठना कि काम नहीं होगा जैसे अंधविश्वास आज भी प्रचलित हैं, जिनका कोई उचित कारण समझ में नहीं आता है। सिर दर्द, बदन दर्द या बुखार होने पर डॉक्टर के पास जाने के बजाए ओझा, तांत्रिक, मौलवी एवं झाड़-फूंक करने वालों की शरण में जाना बेहतर समझते हैं। उन्हें आज भी ताबीज, गंडा, भभूत, पूजास्थल की मिट्टी पर अधिक भरोसा है। इन्हीं कुरीतियों और अंधविश्वासों के बल पर हजारों-लाखों की रोटी-रोजी चल रही है। देखा जाए तो समाज के कुछ लोगों द्वारा वैज्ञानिक उन्नति एवं खोजों का घोर अपमान है। ऐसे अंधविश्वासी वैज्ञानिकों को कम महत्ता देकर पाखडियों को महत्त्व देते हैं।

जाति-पाँति की समस्या-भारतीय समाज विशेषत: ग्रामीण अंचलों में आज भी जातिवाद का बोलबाला है। सैद्धांतिक रूप से लोग इसे समाज की प्रगति में बाधक मानते हैं पर व्यावहारिक रूप से इस सिद्धांत को नहीं अपनाया जाता है। जाति-पाँति की भावना ने समाज में कटुता और विषमता का जहर घोल रखा है। लोग चाहकर भी एक मंच पर आकर समता का भाव प्रदर्शित

नहीं कर पाते हैं, क्योंकि नीची जाति के लोगों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। उच्च वर्ग के लोग इन्हें अपने साथ बिठाने में हीनता अनुभव करते हैं। इससे समाज विखंडित हो गया है।

दहेज प्रथा-वर्तमान में दहेज प्रथा भारतीय समाज की प्रमुख समस्या बन गई है। इसके कारण सामाजिक संरचना प्रभावित हो रही है। देश के कुछ राज्यों में स्त्रियों की जनसंख्या तेजी से गिर रही है। गहराई से देखा जाए तो इसके मूल में दहेज की समस्या है, जिसके कारण लोग गर्भ में भ्रूण लिंग परीक्षण कराकर यह सुनिश्चित कराना चाहते हैं कि आने वाली संतान बेटी तो नहीं है। यदि कन्या है तो उसकी भ्रूण-हत्या कराकर वे छुटकारा पाना चाहते हैं। इससे समाज का लिंगानुपात प्रभावित हो रहा है। इसका समाधान किए बिना समाज की प्रगति की कामना करना बेमानी होगी।

नारी जाति के प्रति असम्मान की भावना-जिस समाज में कभी कहा जाता था 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' वही समाज आज नारी पर भिन्न-भिन्न रूपों में अत्याचार करने के लिए तत्पर है। पुरुषों ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाए, जिसके प्रभाव स्वरूप अनमेल विवाह, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह जैसी अनेक सामाजिक समस्याएँ सामने आई। इन सबका दंश नारी जाति को झेलना पड़ा और उसने विवशता और निरीहता से सहा। बाल विवाह रोकने का लक्ष्य लेकर सरकार ने 'शारदा एक्ट' पारित किया पर वह भी समाज का विशेष भला न कर सका। आज भी राजस्थान के पिछड़े इलाकों में एक ही मंडप में एक ही परिवार की कई छोटी-बड़ी लड़कियों के फेरे पूरे करा लिए जाते हैं, जिनमें एकाध तो ठीक से चलना भी नहीं सीखी होती हैं।

उत्तर प्रदेश के ग्रामीणांचलों में आज भी बाल विवाह की प्रथा प्रचलित है। नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र न होने के कारण पुरुष की दया दृष्टि पर निर्भर है। वह घर की चारदीवारी में कैद रहने को विवश है। मुसलिम समाज में नारी की स्थिति और भी दयनीय है। पर्दा प्रथा, बहुविवाह, बालविवाह और तलाक पदधति ने उसकी स्थिति को बद से बदतर बना दिया है। वास्तव में नारी को मात्र भोग-विलास की वस्तु समझने का दौर मुगल काल से ही शुरू हो गया था। जिंदगी रूपी गाड़ी के दो पहियों में से एक होने पर भी समाज में नारी को सम्मानजनक स्थान नहीं मिल पाता है। वह पुरुष की अर्धांगिनी है। उसकी उपेक्षा करके समाज की उन्नति की बात सोचना भी बेमानी होगी।

समाज में अनेक समस्याओं के लिए उत्तरदायी कारक है-जनसंख्या वृद्ध, जो स्वयं एक समस्या होने के साथ-साथ अनेक समस्याओं की जन्मदात्री है। बेरोजगारी इसी से उत्पन्न समस्या है, जिससे निराश, हताश होकर युवावर्ग असामाजिक कार्य करने का दुस्साहस कर बैठता है और समाज पर बोझ बन जाता है। – समाज उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़ता रहे, इसके लिए सामाजिक समस्याओं पर विजय पाना जरूरी है। इन समस्याओं पर दृढ़ इच्छा शक्ति, साहस और तत्परता से प्रयास करके विजय पाई जा सकती है।

33. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

स्वतंत्रता स्वाभाविक रूप से प्राणी-जगत को प्रिय है। स्वतंत्रता के अभाव में प्राणी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को भूल जाता है और संपूर्ण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास को कुंठित कर देता है। पराधीन-मनुष्य को स्वर्गिक संपदाएँ सुख की अनुभूति कराने में समर्थ नहीं होती हैं। अनुशासित स्वतंत्र जीवन में जो सुखानुभूति होती है उसकी सहज कल्पना भी नहीं की जा सकती

है। वह वर्णनातीत होती है-'हम पंछी उन्मुक्त गगन के'। कवि ने पिंजरबद्ध पक्षी की कल्पना करते हुए चित्रित किया है कि पक्षी भी दाना, चुग्गा, पानी के होने पर भी निरंतर पिंजरे से मुक्त होने का प्रयास करता, है फिर परतंत्र जीवन में मनुष्य को कैसे सुख मिल सकता है। इस सोच को व्यास जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

'सर्व परवशं दुःखं , सर्वमात्मवशं सुख'

पराधीनता मनुष्य के माथे पर कलंक है, जिसे आसानी से मिटाया नहीं जा सकता है। श्री विष्णु प्रभाकर जी ने इस संबंध में लाला लाजपत राय के अनुभवों को, चित्रित करते हुए लिखा है कि वे अमेरिका, इग्लैंड, फ्रांस गए और दूसरे देशों में घूमे। जहाँ भी गए भारतीय होने के नाते उनके माथे पर गुलाम होने का कलंक लगा रहा। तब उन्होंने कहा कि मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, अपितु स्वर्ग के समान उपहार और साधन हों और वह गुलाम हो तो सारे उपहार और साधन उसे गौरव प्रदान नहीं कर सकते। उस स्थिति में सुख की अनुभूति नहीं होती है। अत: चैतन्य व्यक्ति की बात तो क्या जब पिंजरबद्ध चिड़िया को सुख-साधन सुख प्रदान नहीं कर सकते। अत: परतंत्रता से बढ़कर पीड़ित करने वाली पीड़ा शायद ही दूसरी हो सकती है।

परतंत्रता मानसिक शारीरिक, वैचारिक सभी प्रकार से पीड़ित करती है। भारत की परंपरा 'अतिथि देवो भव:' की रही। अंग्रेजों ने भारत की इस उदारता का चालाकी से लाभ उठाया। अतिथि बनकर आए और अवसर पाकर संपूर्ण भारत के सामने अतिथि का चोगा उतार कर उन्होंने भारत को गुलाम बना लिया। आस्तीन के साँप इस अतिथि की जब पोल खुली तब तक बहुत देर हो चुकी थी। भारत के लोग पिंजरबद्ध पक्षी की तरह तड़प कर रह गए। अंग्रेजों की यातनाएँ बढ़ने लगीं। अंग्रेज भारतीय जनता पर कहर ढहाने लगे।

परतंत्रता में भारतीय कुलबुलाने लगे, पिंजर को तोड़ने की योजनाएँ बनने लगीं। किंतु अंग्रेज इतना चतुर थे कि भारतीयों की कोई भी योजना काम नहीं आती थी। कारण था कि योजना बनते ही उसका प्रचार हो जाता था और अंग्रेज योजनाओं का दमन कर देते। इस तरह भारतीय असफल होते। प्राणों की आहुति देकर अपना कृत्य समाप्त कर लेते। प्राणों की आहुति देने वाले भारतीयों की संख्या बढ़ती गई जिसे देखकर अंग्रेज तिलमिलाए अवश्य पर घबराए नहीं। क्रांतिकारियों का दल आगे आया। भगत सिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर, बिस्मिल आदि सहजता से प्राणों की आहुति देते गए। उन क्रांतिकारियों के मन में भावना थी कि परतंत्र जीवन तो नरक से भी बदतर है। इसलिए उन्होंने स्वतंत्रता के लिए आहुति देना ही श्रेष्ठकर समझा।

जब मनुष्य स्वयं मरने की चिंता किए बिना शत्रु से लोहा लेने के लिए आतुर होता है तो भय स्वयं पलायन कर जाता है। प्राणों को हथेली पर लिए पुरुष को कोई भय विचलित नहीं कर सकता है। यही कारण था कि क्रांतिवीर आजाद चंद्रशेखर, भगत सिंह, राजगुरु जैसे बाल-युवक अंग्रेजों की शक्ति की चिंता किए बिना भिड़ने को आतुर रहते थे। ऐसे निडर युवकों को वीर सावरकर, सुभाष चंद्र बोस जैसे महान राष्ट्र भक्तों का दिशा-निर्देशन प्राप्त हो जाए तो कैसी भी भयानक आपदा हो पथ-विचलित नहीं कर सकती।

ऐसा संयोग मुझे मिला होता तो मैं दिशा-निर्देशन के अनुसार कंधे-से-कंधा मिलाकर सहयोग . करता। जन-समान्य में स्वतंत्रता के महत्त्व और परतंत्रता के कलंक की बातें बताकर मानव-समूह को चैतन्य करने का प्रयास करता। छत्रपति शिवाजी की नीति से प्रेरित करते हुए छापामार पद्धति से शत्रु अंग्रेजों को भयभीत करता और आचार्य चाणक्य की नीतियों को अपनाकर जन-सामान्य को संगठित करता और अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिए उन्हें प्रेरित करता। ईश्वर से निरंतर प्रार्थना

और कामना रहती कि हे ईश्वर! इस पराधीनता से मुक्त करने की शक्ति और प्रेरणा दे। परतंत्रता का कलंक लिए हुए कोई भी स्वाभिमानी पुरुष सुख का अनुभव नहीं कर सकता, भले ही सिर पर क्यों न धारण कर लिया जाए। चंद्र शिवे के शिखर पर रहते हुए दुर्बल ही बना रहता है। परतंत्रता से बढ़कर कोई नरक नहीं है।

परतंत्र व्यक्ति का न कोई सम्मान, न कोई स्वाभिमान होता है। वह तो मात्र घुट-घुटकर अपमान के घूंट पीकर जीवन जीता है। परतंत्र मनुष्य की न कोई मर्यादा है न कोई पुण्य है। परतंत्र मनुष्य के द्वारा किए गए सारे सुकृत्य उसके मालिक के हिस्से में जाते हैं; इसलिए कविवर दिनकर जी ने कहा है-

छीनता हो स्वत्व कोई और तू
त्याग-तप से काम ले, यह पाप है।
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

34. छात्रों में बढ़ता असंतोष-कारण और निवारण

प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा के केंद्र हुआ करते थे। शिक्षार्थी इन गुरुकुलों में एक निश्चित उम्र में जाते थे और अपनी शिक्षा-दीक्षा पूरी करके ही घर लौटते थे। वे बारह से पंद्रह वर्ष तक गुरु के पास रहते थे, जिससे उनमें संयम, धैर्य, त्याग जैसे मानवीय गुणों का विकास हो जाता था, पर आज स्थिति एकदम विपरीत है। आज का विद्यार्थी ज्ञानार्जन के उद्देश्य से विद्यालय, महाविद्यालय और अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लेता है। वह ज्ञानार्जन के साथ-साथ जीविकोपार्जन का साधन भी प्राप्त कर लेना चाहता है। इनमें भी द्रवितीय उद्देश्य को प्रमुख उद्देश्य को गौण बनता जा रहा है। जब यह उद्देश्य पूरा नहीं होता है तो विद्यार्थी आक्रोशित हो उठते हैं। वे हड़ताल, प्रदर्शन तोड़-फोड़, मारकाट, उद्दंडता आदि का रास्ता अपनाते हैं। वे असामाजिक कार्यों में शामिल हो निरुद्देश्य भटकते हैं। आखिर क्या है इस आक्रोश का कारण।

छात्रों में बढ़ते असंतोष के कारणों पर विचार करने से, सबसे पहला कारण दिखाई देता है-शिक्षा द्वारा जीविकोपार्जन का उद्देश्य न पूरा हो पाना। शिक्षण संस्थानों में दो तरह के विद्यार्थी आते हैं-एक वे जो संपन्न घर से आते हैं, जिन्हें आर्थिक अभावों से कुछ लेना-देना नहीं होता है। शिक्षा प्राप्ति के बाद उन्हें नौकरी मिले या न मिले, इसकी उन्हें चिंता नहीं होती। वे प्राय: मौजमस्ती करने और घर के वातावरण से छुटकारा पाने विद्यालय आते हैं। दूसरे वे छात्र हैं जो मध्यम और गरीब परिवारों से आते हैं। वे नौकरी और रोजी-रोटी का सपना पाले आते हैं।

विद्यालय में प्रवेश के समय उनकी आँखों में जो सपने और चमक होती है वह पढ़ाई समाप्त होते-होते क्षीण होने लगती है। ये छात्र जब अमीर घरों से आए छात्रों से अपनी तुलना करते हैं तो उनके मन में कुंठा, असंतोष और आक्रोश का उदय होता है। कुछ गरीब छात्रों की महत्त्वाकांक्षा बहुत ऊँची होती है। वे आर्थिक अभाव में महँगे संस्थानों में प्रवेश नहीं ले पाते हैं। उनकी शिक्षा का खर्च परिजन बड़ी कठिनाई से उठा रहे होते हैं, जिसका सीधा असर उनके मनोमस्तिष्क पर होता है। वे तनाव ग्रस्त हो जाते हैं। एक ओर ऊँची महत्वाकांक्षा और दूसरी ओर आर्थिक चक्र के भेंवर में फैसकर वे दिग्भ्रमित हो जाते है। ऐसे में विद्यार्थी सरकारी सहायता का मुँह देखने को विवश हो जाता है।

सरकारी सहायता उसके सुनहरे भविष्य का ताना-बाना बुनने में असमर्थ रहती है। अंतत: इसका परिणाम असंतोष के रूप में समाज के सामने आता है। छात्रों में बढ़ते असंतोष का दूसरा कारण

उनकी ऊँची महत्वाकांक्षा है। आज का विद्यार्थी विद्यालय से उच्च शिक्षण संस्थानों का सफर तय कर लेता है, परंतु वह व्यावसायिक शिक्षा को हीन समझकर उससे दूरी बनाए रखता है। वह छोटे रोजगार करना पंसद नहीं करता। उसकी निगाह प्रशासनिक पदों पर लगी रहती है। इस तरह के पद न मिलने पर भी छोटे पद उसे आकृष्ट नहीं कर पाते हैं। फलस्वरूप वे बेरोजगारों की पंक्ति को और लंबी बनाते हैं। उनका यह हाल देखकर आने वाले छात्रों का मन निराशा में डूबने लगता है। अपना भविष्य अंधकारमय देख वे असंतोष से भर उठते हैं।

छात्र असंतोष का तीसरा कारण भौतिकवाद में फँसे स्वार्थी समाज के नैतिक मूल्यों में आती निरंतर गिरावट है। समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार का कद बढ़ता जा रहा है। थाने हों या कोई सरकारी कार्यलय, अस्पताल हों या न्यायालय शीघ्र काम करवाने के लिए चढ़ावा देना ही पड़ता है। अयोग्य और कम पढ़े-लिखे उम्मीदवार, सुयोग्य उम्मीदवारों पर वरीयता पाकर नौकरी करते हैं। यही दशा शिक्षण संस्थाओं की भी है। प्रवेश परीक्षाएँ दिखावा बनकर रह गई हैं। ऐसे में योग्य छात्रों में असंतोष पैदा होना स्वाभाविक है। आज शिक्षण संस्थानों को राजनीति की हवा लग गई है।

छात्र संघों पर राजनीतिक पार्टियों का कब्जा होने लगा है। ये छात्र संघ चुनाव के समय में अनुशासनहीनता को बढ़ावा देते हैं। वे विद्यालयी गतिविधियों तथा शिक्षण कर्मियों पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं। मतदान की घटी आयु (18 वर्ष) ने राजनीतिक हस्तक्षेप की छूट दे दी है, जिससे पढ़ाई-लिखाई पीछे छूटती जा रही है। उनकी स्थिति धोबी के कुत्ते जैसी होती है जो न राजनीति का खिलाड़ी बन पाता है और न प्रतिभाशाली छात्र। ऐसे में आक्रोशित होने के अलावा दूसरा विकल्प नहीं सूझता है। प्रतिभासंपन्न छात्रों में असंतोष उत्पन्न होने के दो कारण और नजर आते हैं। उनमें से पहला है उनकी गरीब परिवारों से संबद्ध ता, जिसके कारण वे महँगे संस्थानों में प्रवेश नहीं ले पाते हैं और संपन्न परिवार के औसत और निचले स्तर के छात्र कैपीटेशन या डोनेशन के बल पर दाखिला पा जाते हैं।

दूसरा कारण है-आरक्षण – व्यवस्था। आरक्षित वर्ग के काफी कम अंक वाले छात्र डॉक्टरी, इंजीनियरिंग और पैरामेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश पा लेते हैं पर प्रतिभाशाली छात्रों को सामान्य श्रेणी में होने का दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। इससे असंतोष उत्पन्न होता है और छात्र घुट-घुटकर जीता है। छात्रों में बढ़ता असंतोष रोकने के लिए शिक्षा को रोजगारपरक बनाना होगा। समाज में समता की भावना पैदा कर आरक्षण समाप्त करना होगा तथा प्रतिभाशाली छात्रों की मदद के लिए सरकार एवं समाज को आगे आना होगा, भले ही वे किसी जाति, धर्म या समाज से संबंध रखते हैं।

35. युवाओं पर चलचित्रों का प्रभाव

विज्ञान ने मनुष्य के हाथों में अनेक ऐसी वस्तुएँ और साधन दिए हैं जिनसे उसका जीवन सुखमय बना है। ऐसा ही एक अद्भुत साधन है सिनेमा, जिसने मनुष्य के मनोरंजन की परिभाषा ही बदल दी है। जानवरों, पक्षियों के द्वारा मन बहलाने वाला मनुष्य कुश्ती, शिकार, सामूहिक नृत्य तक आ पहुँचा था, किंतु बीसवीं शताब्दी में सिनेमा ने क्रांतिकारी बदलाव लाया। लोगों ने इसे अत्यधिक पसंद किया। सिनेमा से एक ओर मनोरंजन होता है तो दूसरी ओर संदेश और विचारों के संप्रेषण का सशक्त माध्यम भी है। यूँ तो हर आयुवर्ग के लोग इसे पसंद करते हैं, परंतु युवावर्ग इससे सर्वाधिक प्रभावित होता है।

सिनेमा नाटक का विकसित और परिष्कृत रूप है। समाज के बड़े वर्ग को सिनेमा ने प्रभावित किया है अत: इसका उपयोग समाज और राष्ट्र में व्याप्त कुरीतियाँ, कुप्रथाएँ, सामाजिक समस्याओं के निवारण में किया जा सकता है, किंतु यह युवावर्ग में कुसंस्कार और असामाजिक वृत्तियों का विकास कर रहा है। सिनेमा के प्रभाव से नवयुवकों के चरित्र में क्या-क्या बदलाव आ रहा है, नवयुवक किस सीमा तक विपथगामी हुए हैं। यह विचारणीय है।

फैशन के प्रति उत्कट अभिलाषा-युवा जब अभिनेताओं को सुंदर वेशभूषा से सज्जित देखता है तो वह भी उसी तरह की वेशभूषा अपनाने के लिए लालायित हो उठता है। उसमें आधुनिक फैशन की स्वाभाविक वृत्ति जाग उठती है। वह स्वयं को अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए फैशन के अनुरूप वस्त्रों को नए रूप में सिलाता है। सिनेमा से उसे फैशन के नए-नए वस्त्रों की श्रृंखला प्राप्त हुई है जहाँ उसके पास चुनाव के अनेक विकल्प हैं। यह कहना तनिक भी गलत न होगा कि युवक-युवतियाँ अकसर उसी प्रकार के वस्त्रों का चयन करते हैं जैसा वे सिनेमा में अपने प्रिय अभिनेता-अभिनेत्रियों को आभूषित देखते हैं।

आज समाज में फैशन का दौर समय-समय पर बदलता रहता है। कुछ समय पहले तक बिलकुल ढीली-ढाली कमीजों का चलन रहता है तो थोड़े समय बाद ही एकदम सामान्य या शार्ट शर्ट का जमाना आ जाता है। ऐसा किसके प्रभाव से होता है? सीधा-सा जवाब है सिनेमा के। आज अभिनेता-अभिनेत्रियाँ जिस प्रकार की केश सज्जा करती हैं, उसी प्रकार का केश। विन्यास युवक-युवतियों का देखा जा सकता है। युवक-युवतियों के बातचीत का तरीका, हावभाव, चलने-फिरने का ढंग आदि सिनेमा से प्रभावित होता नजर आता है। कभी जीवन आदर्श माना जाने वाला-'सादा जीवन' आज पिछड़ेपन का पर्याय बनकर रह गया है। जो युवक-युवतियाँ आधुनिक फैशन के वस्त्र नहीं पहनते हैं, समाज उन्हें पिछड़ों की श्रेणी में समझने की भूल करता है ऐसा लगता है कि फैशन की इस अंधी दौड़ में सादगी कुचलकर रह गई है।

असामाजिक वृत्तियाँ अपनाता युवा-फिल्मों ने समाज को अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है। समाज में अत्यंत रुचि से फिल्में देखी जाती हैं, किंतु आज के फिल्म-निर्माता अपने उद्देश्य से भटक गए हैं। वे अधिकाधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से ऐसी फिल्में बनाते हैं, जिनमें शयन कक्ष के अंतरंग दृश्य, नायिका द्वारा झरने के नीचे स्नान-दृश्य, आलिंगन और चुंबन के दृश्यों की भरमार होती है। वे कहानी की माँग बताकर अपना पल्ला झाड़ लेना चाहते हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि ऐसे दृश्यों का कहानी से कुछ लेना-देना नहीं होता है। आज पूरे परिवार के साथ फिल्म देखना कठिन होता जा रहा है। फिल्मों की नकल करते हुए अब विज्ञापनों में भी यही सब कुछ दिखाया जाता है। ऐसे वासनात्मक दृश्य युवा मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। वे कल्पना की दुनिया की हकीकत में उतारना चाहते हैं, जबकि वास्तविक जीवन में यह सब संभव नहीं है।

वे अभिनेता-अभिनेत्रियों के व्यवहार को अपने जीवन में उतारना चाहते हैं, जिसका परिणाम होता है-समाज में अपमानित होना और कभी जेल जाने तक की स्थिति आ जाना। वासना को बढ़ावा देते ये दृश्य मन की शुचिता को नष्ट करते हैं और युवा मन में यौन कुंठा पैदा करते हैं। उनका व्यवहार मानसिक रोगियों जैसा हो जाता है। वे भारतीय संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य देशों के मुक्त यौन संसार में विचरण करना चाहते हैं। ऐसे में जीवन के मानवीय मूल्य बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं।

नवयुवकों में सिनेमा के कारण ही हिंसात्मक वृत्ति, चोरी की कला, बलात्कार, छेड़छाड़ की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है।

कल्पनालोक में विचरण-सिनेमा के कारण युवावर्ग कल्पना की दुनिया में विचरण करने लगा है। वह अभिनेता-अभिनेत्रियों की तरह अत्यंत शीघ्रता से और अल्प समय में ही अमीर बन जाना चाहता है। वह अपने जीवन साथी संगिनी को उसी तरह से पा लेना चाहता है जैसा कि वह फिल्मों में देखता है। वह जीवन में आने वाली समस्याओं को फिल्मी अंदाज में हल कर लेना चाहता है, जबकि वास्तविकता इससे कोसों दूर होती है। युवाओं की जीवन दृष्टि यह बनती जा रही है कि वे अपने अभिनेताओं जैसा ही राजसी ठाट से भोगवादी जिंदगी जिए, परंतु इसके लिए उसे काम न करना पड़े। उसमें आलस्य और अकर्मण्यता जैसे दुर्गुण भरते जा रहे हैं। इसके विपरीत वह अपने कथन से सच्चा कर्मवादी होने का दावा करता है।

आदर्शों का उन्नयन-हर सिक्के के दो पहलू की तरह सिनेमा के भी दो पहलू हैं। एक ओर जहाँ सिनेमा ने नवयुवकों पर कुप्रभाव डाला है, वहीं कुछ फिल्मों के माध्यम से आदर्श को बढ़ावा भी दिया है। स्वतंत्रता पूर्व की फिल्मों में आजादी पाने की उत्कट लालसा का संदेश, भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'हकीकत' में देशभक्ति एवं देश-प्रेम का संदेश दिया गया है। सिनेमा ने दर्शकों के व्यवहार को भी परिष्कृत किया है। दुर्भाग्य से ऐसी फिल्मों की संख्या ऊँगलियों पर गिनी जा सकती है। फिल्म निर्माताओं को अपना नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व समझते हुए ऐसी फिल्में बननी चाहिए जो नवयुवकों को चारित्रिक दृढ़ता प्रदान करे ताकि वे समाजोपयोगी नागरिक बनें।

36. विज्ञापन की आकर्षक दुनिया

विज्ञापन शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' के योग से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है विशेष रूप से कुछ बताना अर्थात् किसी वस्तु के गुणों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन का दूसरा नाम विज्ञापन है। विज्ञापन के मूल में किसी वस्तु की बिक्री बढ़ाना और उससे अधिकाधिक लाभ कमाना निहित है। विज्ञापन के माध्यम से आम जनता के बीच किसी वस्तु की ऐसी छवि प्रस्तुत की जाती है, जिससे जनसाधारण उसे खरीदने के लिए लालायित हो उठे। विज्ञापनों के माध्यम से उस वस्तु-विशेष को ही क्यों खरीदा जाए, उसके प्रयोग से आपके व्यक्तित्व में किस प्रकार वृद्ध हो सकती है, आदि के प्रति जिज्ञासा का उत्तर समाहित किया जाता है। इनकी भाषा इतनी आकर्षक, सरल तथा मोहजाल में बाँधने वाली होती है कि जनसाधारण इसमें उलझकर अंतत: फँस ही जाता है।

वर्तमान समय में भौतिकवाद का बोलबाला है। संपन्न लोग उपभोगवादी होते जा रहे हैं। वे अधिकाधिक वस्तुओं के उपयोग में विश्वास रखते हैं। उन्होंने उपभोगवाद को सुख समझ लिया है। ऐसे लोगों की इस दुखती रग को उत्पादकों ने पहचान लिया है। वे अपने उत्पादों को विज्ञापन की चासनी में डुबोकर लोगों (उपभोक्ताओं) तक पहुँचाते हैं जिससे उपभोगवादी लोगों के मनोमस्तिष्क पर ये विज्ञापन सीधे चोट करते हैं। वे इन वस्तुओं को खरीदना चाहते है, क्योंकि वे उपभोग को ही सुख मानते हैं। ऐसे में विज्ञापन सामयिक आवश्यकता बन चुका है।

आधुनिक जीवन-प्रणाली के लिए उपयोगी वस्तुओं का यह एक सशक्त माध्यम बन चुका है। आज जनसाधारण भी इसकी आवश्यकता महसूस करने लगा है। उत्पादक और बिचौलिए इन्हीं विज्ञापनों के माध्यम से सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाते हैं। विज्ञापनों की दुनिया तब से आरंभ होती है, जब मानव आखेटक था। वह आखेट कर जीवनयापन किया करता था। वह गुफाओं की

दीवारों, शिलाओं आदि पर उस क्षेत्र में पाए जानवरों के चित्र बनाकर दूसरों को यह बताने की कोशिश करता था कि यहाँ अमुक जानवर पाए जाते हैं। इससे उसे शिकार करने तथा अपनी रक्षा के लिए निर्देश मिल जाया करता था। पढ़ना-लिखना सीखने के बाद मनुष्य ने इस क्षेत्र में विशेष उन्नति की।

मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए शिलाओं पर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को उत्कीर्ण करा कर विज्ञापन का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत किया। यह काम उसने किसी स्थान विशेष पर ही नहीं, बल्कि पूरे देश में कराया ताकि बौद्धधर्म का प्रचार-प्रसार हो सके। इतिहास में इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि व्यावसायिक विज्ञापन भी मंदिरों की दीवारों पर, शिलाओं पर या ऐसे ही सार्वजनिक स्थलों पर उत्कीर्ण कर किए जाते थे। कागज और छापेखाने के आविष्कार ने इस कला को पंख लगा दिए। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि में या उनके मुखपृष्ठ और अंतिम पृष्ठ किसी-न-किसी वस्तु का विज्ञापन करते दिखते हैं। उत्पादकों ने वस्तुओं के विज्ञापन के लिए इसे ही अपना अंत बिंदु नहीं समझा। उन्होंने इससे भी आगे बढ़कर दीवारों, बसों, यातायात के अन्य साधनों, पोस्टरों पर भी उत्पादित वस्तुओं का विवरण छपवाया।

कंप्यूटर के आविष्कार और उनके प्रयोग ने विज्ञापन की दुनिया को और भी आकर्षक और रंगीन बना दिया है। विज्ञापन जितना ही बड़ा और आकर्षक होता है वह उतना ही व्यय साध्य होता है। अब तो रेडियो, दूरदर्शन विज्ञापन के सशक्त और आकर्षक साधन बन गए हैं जो आम जनता तक हजारों वस्तुओं का विज्ञापन कर रहे हैं। यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है कि लिखित वस्तुओं के विज्ञापन को जानने-समझने के लिए पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है, परंतु दृश्य-श्रव्य उपकरणों द्वारा प्रस्तुत विज्ञापनों के लिए पढ़ा-लिखा होना भी आवश्यक नहीं है। व्यावसायिक सफलता में विज्ञापनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

साधारण और कम गुणवत्ता वाली वस्तु भी जनसाधारण के मस्तिष्क में अत्यंत आसानी से पैठ बना लेती है, क्योंकि विज्ञापन उन्हें लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा देता है। विज्ञापन में वस्तुओं के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है, जबकि उसकी कमियों को ढँक दिया जाता है, इसलिए विज्ञापन पर आँख मूँदकर भरोसा करना हानिकर हो सकता है। इसके बाद भी विज्ञापन आज स्वयं व्यवसाय का रूप ले चुका है, जिसमें सैकड़ों एजेंसियाँ और हजारों लोग कार्यरत हैं। विज्ञापन बनाना भी एक कला है जिसमें कम-से-कम शब्दों के माध्यम में गागर मे सागर भरने का प्रयास किया जाता है, जिससे जनमानस प्रभावित हुए बिना न रह सके। विज्ञापन प्रचार तंत्र का अनिवार्य अंग बन चुका है। वस्तुओं की बिक्री में विज्ञापन अत्यंत लाभदायी और उपयोगी हैं।

विज्ञापन का प्रभाव वस्तुओं की बिक्री पर शीघ्र दिखाई देने लगता है। ये विज्ञापन उपभोक्ताओं को वस्तुओं के चयन, तुलनात्मक मूल्य, गुणवत्ता का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं, जिससे उपभोक्ताओ में जागरूकता बढ़ती है। आजकल विज्ञापनों का प्रयोग वस्तुओं की खरीद के अलावा नौकरी खोजने, शादी योग्य वर या कन्या हेतु उपयुक्त जीवन साथी खोजने, सार्वजनिक कार्यक्रमों की सूचना पाने, सरकारी कार्यक्रमों एवं योजनाओं की जानकारी लेने-देने आदि में किया जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विज्ञापन बहुपयोगी है, परंतु इस पर आँख बंदकर भरोसा नहीं करना चाहिए। कुछ कंपनियों द्वारा इसका गलत उपयोग भोले-भाले लोगों और युवाओं को ठगने के लिए किया जाने लगा है। आज विज्ञापन का युग है और इसकी महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

37. विद्यार्थी और अनुशासन
अथवा
विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता

प्राचीन काल में मानव-जीवन को चार भागों में विभाजित किया जाता था। इन्हें क्रमश: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास नामों से जाना जाता था। इनमें ब्रह्मचर्य को ही आज विद्यार्थी-जीवन का नाम दिया गया है। यह जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल है। इस काल में सीखी गई बातों पर ही पूरा जीवन निर्भर करता है। जीवन को सुंदर और असुंदर बनाने में इस काल का सर्वाधिक महत्व है। जिस प्रकार किसी प्रासाद की मजबूती और स्थिरता उसकी नींव या आधारशिला की मजबूती पर निर्भर करती है, छोटे पौधों का विशालकाय आकार उनके शैशवकाल में संरक्षण और देखभाल पर निर्भर करता है, उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन की सुख-शांति, आचार-विचार और व्यवहार उसके विद्यार्थी-जीवन पर निर्भर करता है। यूँ तो जीवन में कदम-कदम पर अनुशासन की आवश्यकता होती है, परंतु जीवन का निर्माण काल कहलाने वाले विद्यार्थी-जीवन में इसकी जरूरत और उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

विद्यार्थी-जीवन में बालक का मस्तिष्क गीली एवं कच्ची मिट्टी के समान होता है, जिसे मनचाहा आकार प्रदानकर भाँति-भाँति के खिलौने और मूर्तियाँ बनाई जा सकती हैं। उसी मिट्टी के सूख जाने और पका लिए जाने पर उसे और कोई नया आकार नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार यह काल नवीन वृक्ष की उस नवीन और लोचदार टहनी के समान है, जिसे मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकता है और सदा-सदा के लिए मनचाहे आकार में ढाला जा सकता है।

कालांतर में वही कोमल डालियाँ इतनी कड़ी एवं कठोर हो जाती हैं कि उन्हें मोड़ना इतना कठिन हो जाता है कि वे मुड़ने के बजाय टूट जाती हैं। ऐसा ही होता है विद्यार्थी-जीवन। इस काल में सच्चरित्रता, सदाचारिता और अनुशासन का सीखा पाठ जीवन भर के लिए योग्य नागरिक बना देता है। इस काल में बालक यदि गलत आचरण करना सीख जाता है तो वह परिवार और समाज के लिए मुश्किलें खड़ी कर देता है। इस काल में अनुशासन का भरपूर पालन करना चाहिए ताकि हर विद्यार्थी समाजोपयोगी नागरिक बनकर समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान दे सके।

प्राचीन काल में विद्यार्थी-जीवन ऋषियों-मुनियों के आश्रमों में शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करने में बीत जाता था। तब विद्यार्थी अनुशासित जीवन जीते हुए विद्यार्जन करते थे। तब अनुशासन की समस्या थी ही नहीं, परंतु वर्तमान काल में विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता अपने चरम पर है। उनकी इस अनुशासनहीनता से केवल अध्यापकगण और विद्यालय-प्रशासन ही नहीं परेशान हैं, वरन घर-बाजार यहाँ तक कि सड़कों पर भी उनकी अनुशासनहीनता और उद्दंडता देखी जा सकती है। आज का विद्यार्थी अपने अध्यापकों के अलावा अपने माता-पिता और अभिभावकों की अवज्ञा करता है, उनके सदुपदेशों का निरादर करता है, इ: पिचले से पोजकता है अतिराते पिरचता हैऔ माता-पिता तथा अध्यापकों के ला सिद सिद्ध होता है।

अनुशासनहीनता के मूल कारणों पर यदि विचार करें तो ज्ञात होता है कि इसका मुख्य कारण माता-पिता की ढिलाई और उसकी शरारतों को अनदेखा किया जाना है। माता-पिता के संस्कार भी इसके लिए किसी सीमा तक उत्तरदायी होते हैं। माँ-बाप लाड़-प्यार के कारण बच्चे की शरारतों को अनदेखा करते हैं और उसका पक्ष लेते हैं। बच्चा आचरण का पहला पाठ घर से ही सीखता है। यदि इस पहली पाठशाला में ही उसे सही शिक्षा और अनुशासन का पाठ न पढ़ाया गया तो स्कूल और कॉलेज में उससे अनुशासनप्रिय बनने की उम्मीद कैसे की जा सकती है। यदि पास-पड़ोस के

लोग और अध्यापक बच्चे की अनुशासनहीनता की शिकायत करते हैं तो अपने बच्चे का पक्ष लेते हुए माता-पिता विद्यालय और सरकारी तंत्र पर इसका दोषारोपण करने से नहीं चूकते हैं। इससे अनुशासनहीन छात्रों का मनोबल और भी बढ़ जाता है। अनुशासनहीनता बढ़ाने में वर्तमान शिक्षा-प्रणाली भी कम उत्तरदायी नहीं है।

छात्रों को रट्टू तोता बनाने वाली शिक्षा से व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो पाता है। इसके अलावा पाठ्यक्रम में नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। आठवीं तक किसी छात्र को फेल न करने की सरकारी नीति ने कोढ़ में खाज का काम किया है। अब बच्चों में न फेल होने का भय रहा और न शारीरिक दंड का। सालभर में दो-चार दिन भी विद्यालय आने वाले छात्र को अगली कक्षा में उत्तीर्ण करना अध्यापकों की मजबूरी बन गई है। ऐसे उन्मुक्त ।

वातावरण में छात्र का मन क्यों पढ़ने को करे। कहा गया है-'खाली दिमाग शैतान का घरा' पढ़ाई से विमुख छात्र अपने मनोमस्तिष्क को कहीं-न-कहीं तो लगाएँगे। ऐसे में उनकी अनुशासनहीनता बढ़ती ही जाती है। आजकल तो स्थिति यह बन गई है कि छात्रों को अपनी पाठ्यपुस्तकों के नाम भले न पता हों, पर वे 'शिक्षा का अधिकार कानून' की कुछ बातें और अध्यापकों द्वारा डाँटने-फटकारने को कानून-विरुद्ध होना जरूर जानने लगे हैं। यदि अध्यापक ने गृहकार्य न करने, पुस्तकें न लाने और नकल रोकने के क्रम में छात्र को एकाध थप्पड़ मार दिया तो छात्र के माता-पिता अपने आस-पास के दस-बीस लोगों को लेकर विद्यालय पहुँचन जाते हैं और अध्यापकों के साथ गाली-गलौच, मार-पीट करने की हद तक उतर आते हैं। अब तो स्थानीय नेना भी अभिभावकों का साथ देने के लिए विद्यालय आ जाते हैं।

मीडिया की कार्य-प्रणाली देखकर यही लगता है, मानो उन्हें इसी अवसर की प्रतीक्षा रहती हो। विद्यालयों में सुविधाओं की कमी और कुप्रबंधन भी छात्रों की अनुशासनहीनता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है। विद्यालयों में छोटे-छोटे वर्गकक्ष, टूटी-फूटी दीवारें, घिसे-पिटे श्यामपट्ट, निर्धारित संख्या से कई गुना अधिक बैठे छात्र, अध्यापकों की कमी, उनकी अरुचिकर शिक्षण-विधि, खेल-कूद की सुविधाओं का घोर अभाव, पाठ्यक्रम की अनुपयोगिता, शिक्षा का रोजगारपरक न होना, उच्च शिक्षा पाकर भी रोजगार और नौकरी की अनिश्चयभरी स्थिति छात्रों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न करती है।

छात्रों की मनोदशा का अनुचित फायदा राजनैतिक तत्व उठाते हैं। वे छात्रों को भड़काकर स्कूल-कॉलेज बंद करवाने तथा उनका बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ती है। विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए माता-पिता, विद्यालय-प्रशासन और सरकारी तंत्र तीनों को ही अपनी-अपनी भूमिका का उचित निर्वहन करना होगा। इसके लिए माता-पिता को जीवन की पहली पाठशाला से ही बच्चे में अनुशासन की भावना उत्पन्नकर उसे पुष्पित-पल्लवित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए माता-पिता को अपनी भागम-भाग भरी दिनचर्या से कुछ समय निकालकर बच्चे को अनुशासन का पाठ पढ़ाया होगा।

छात्रों में अनुशासनहीनता रोकने के लिए विद्यालयों और अध्यापकों को अपनी भूमिका का उचित निर्वाह करना होगा। अध्यापकों को चाहिए कि वे अध्ययन-अध्यापन पर पूरा ध्यान दें, छात्रों को गृहकार्य दें, उनकी नियमित जाँच करें, जिससे छात्रों को खाली बैठकर शैतानी करने का अवसर न मिले। इसके अलावा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा और चारित्रिक शिक्षा को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। प्रतिदिन प्रार्थना-सभा में नैतिक शिक्षा देने के अलावा इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहिए। विद्यालयों में छात्रों के लिए इतनी सुविधाएँ बढ़ानी चाहिए कि विद्यालय और वर्गकक्ष में

उनका मन लगे। इसके अलावा छात्रों के माता-पिता का अप्रत्यक्ष रूप में वोट लेने के लिए ऐसी नीतियाँ नहीं बनानी चाहिए, जिसका दुष्प्रभाव सीधे छात्रों के भविष्य पर पड़े।

आखिर ऐसी क्या कमी है जो शैक्षिक नीतियाँ बनाने वाले नेता और अधिकारीगण उन्हीं स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं, जिनके लिए वे नीतियाँ बनाते हैं। आज शिक्षा-प्रणाली और शिक्षा-व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाने की आवश्यकता है। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने तथा कल के भविष्य को नैतिक सीख देकर अनुशासनहीनता की बढ़ती समस्या पर अंकुश लगाया जा सकता है।

38. आदर्श विद्यार्थी

विद्यार्थी शब्द दो शब्दों 'विद्या' और 'अर्थी' के मेल से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है-विद्या को चाहने वाला अर्थात् ज्ञान-प्राप्ति में रुचि रखने वाला। आदर्श विद्यार्थी वह होता है जो आलस्य और अन्य व्यसनों से दूर रहकर विद्यार्जन में अपना मन लगाए। वह अधिकाधिक ज्ञानार्जन को ही अपना लक्ष्य बनाए और उसकी प्राप्ति के लिए सतत प्रयासरत रहे। आदर्श विद्यार्थी का नाम लेते ही हमारे मस्तिष्क में ऐसे छात्र की छवि उभरती है जो विद्यार्जन को सर्वोच्च लक्ष्य मानता है। वह समय से शैय्या त्यागकर दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर नाश्ता आदि करता है, विद्यालय समय से पहुँचता है, विद्यालय के नियमों का पालन करता है, अध्यपाकों को प्रणाम करता है, उनका कहना मानता है, पाठ दोहराता है तथा पढ़ाई में मन लगाता है।

आदर्श विद्यार्थी सदाचार के पथ पर चलते हुए विद्यार्जन के लिए कठिन साधना करता है। इसके लिए वह आलस्य त्यागकर कठोर परिश्रम करता है। परिश्रम के मार्ग पर अनुगमन करता हुआ आदर्श विद्यार्थी अपने सुखों का त्यागकर देता है। विद्यार्थी और सुख में धनात्मक सहसंबंध होने पर विद्यार्जन में बाधा आती है और वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है। कहा भी गया है-

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम्
विद्यार्थी वा त्यजेत विद्यां वा त्यजेत सुखम्।

अर्थात् सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्यार्थी को सुख कहाँ विद्यार्थी या तो विद्या को त्याग दे या सुख को त्याग दे। आदर्श विद्यार्थी के लक्षण बताते हुए संस्कृत में ही कहा गया है-

काक चेष्टा बकोध्यानम् श्वान निद्रा तथैव च,
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम्।

अर्थात् एक आदर्श विद्यार्थी में अपने लक्ष्य को पाने के प्रति कौए जैसी चेष्टा हो, बगुले जैसा ध्यान लगाने की दक्षता हो और उसकी नींद कुत्ते जैसी हो। अर्थात् तनिक-सी आहट मिलते ही नींद खुलने वाली हो। वह अल्प भोजन करने वाला तथा घर-परिवार के शोरगुलमय वातावरण से दूर रहकर विद्यार्जन करने वाला हो। इसे हम संक्षेप में कह सकते हैं कि विद्यार्थी का जीवन सुख-सुविधा से दूर रहकर तपस्वियों जैसा जीवन बिताने वाला लक्ष्य के प्रति समर्पित होना चाहिए।

आदर्श विद्यार्थी का फैशन और बनाव-श्रृंगार से कुछ लेना-देना नहीं होता है। वह कपड़ों का प्रयोग तन ढकने के लिए करना है, दूसरों को दिखाने या सुंदर लगने के लिए नहीं। उसके कपड़े साफ़-सुथरे होते हैं। इन साधारण से कपड़ों में वह उच्च-विचारों को अपनाकर 'सादा जीवन उच्च विचार' की कहावत चरितार्थ करता है। एक आदर्श विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहता है। वह जानता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वस्थ तन और मन के बिना वह दत्तचित्त होकर विद्यार्जन नहीं कर सकता है। इसके लिए वह स्वस्थ दिनचर्या का पालन करता है और ब्रहममुहूर्त में ही शैय्या त्याग देता है।

दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर वह किसी बगीचे, पार्क या खुले मैदान में भ्रमण के लिए जाता है। वहाँ भ्रमण और व्यायाम करता है। वह अपनी रुचि के अनुरूप योग भी करता है। प्रात:काल की शीतल वायु उसे नवस्फूर्ति से भर देती है। इससे उसका स्वास्थ्य उत्तम बनता है तथा पढ़ाई-लिखाई में मन अधिकाधिक लगता है। आदर्श विद्यार्थी का व्यवहार अनुकरणीय होता है। वह विद्यालय में अपना पाठ समाप्त कर कमजोर सहपाठियों की मदद करता है। वह सहपाठियों से मित्रवत व्यवहार करता है तथा उनसे लड़ाई-झगड़ा नहीं करता है। वह अपने व्यवहार से सभी विद्यार्थियों का प्रिय बन जाता है।

वह खेल के मैदान में भी अपनी अच्छी आदतों का परिचय देता है। वह खेल में हार को भी उसी प्रकार लेता है, जैसे जीत को। वह बेईमानीपूर्वक जीतना पसंद नहीं करता है। वह खेल-भावना का परिचय देता हुआ अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। पुस्तकालय में वह शांतिपूर्वक पढ़ता है तथा पुस्तकालय के नियमों का पालन करता है। वह पुस्तकों के पृष्ठों को न फाड़ता है और न मोड़ता है। वह पुस्तकालय की पुस्तकें समय पर वापस करना अपना कर्तव्य समझता है। वह अपने सहपाठियों की मदद के लिए तैयार रहता है। इसके लिए वह अपने जेबखर्च को भी दूसरों की भलाई के लिए खर्च कर देता है। वह कमजोर छात्रों को अपनी पुस्तकें और कॉपियाँ देकर उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करता है।

विद्यालय में सहपाठियों के प्रति अपने कर्तव्य के निर्वहन की भाँति ही आदर्श विद्यार्थी समाज के प्रति भी अपने कर्तव्य को भली प्रकार समझता है। वह सामाजिक नियमों का पालन करते हुए एक सभ्य नागरिक होने का प्रमाण देता है। वह स्वयं ों से दूर रहकर अनुशासित जीवन बिताता है। वह किसी के साथ असभ्यता से पेश नहीं आता है। वह समाजसेवा लेता है। वह बड़ों को सम्मान और छोटों को स्नेह देता है। वह वृद्धजनों और महिलाओं की मदद करता है। वह -दुखियों और उपेक्षितों के प्रति सदयता से व्यवहार करके एक सच्चे नागरिक का कर्तव्य निभाता है। वह अपनी विनम्रता सभी का दिल जीत लेता है। वह अपनी विद्या या ज्ञान पर अभिमान किए बिना विनम्र बना रहता है।

वह ईष्या-द्वेष, क्रोध-लोभ आदि दुर्गुणों से दूर रहता है तथा नशाखोरी, मद्यपान जैसी बुराइयों से दूरी बनाकर रहता है। आदर्श विद्यार्थी अपने सामाजिक कर्तव्यों का बखूबी निर्वाह करता है। वह सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। निरक्षरता, मद्यपान के विरुद्ध चलाए गए अभियानों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। वह स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, पल्स पोलियो जैसे सामाजिक सुरक्षा के अभिमानों को भी सफल बनाने का प्रयास करता है। इसी प्रकार वह देश के प्रति अगाध सम्मान रखते हुए उसकी रक्षा करते हुए सब कुछ न्योछावर करने की भावना रखता है।

आदर्श विद्यार्थी केवल किताबी कीड़ा ही नहीं होता है, वह अपने सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान को ही पर्याप्त नहीं मानता है। इसके लिए वह समाचार-पत्र, विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं आदि का नियमित अध्ययन करता है और अपने बड़ों की बातें सुनकर उनका पालन करता है। एक आदर्श विद्यार्थी का जीवन फूलों की शैय्या नहीं है। उसे तरह-तरह के कष्ट सहते हुए योगियों-तपस्वियों जैसा जीवन जीते हुए अनुकरणीय जीवन जीना होता है। इन गुणों से युक्त होने पर कोई छात्र आदर्श विद्यार्थी की संज्ञा से विभूषित करने योग्य बन पाता है। सभी छात्रों को आदर्श विद्यार्थी बनने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

39. प्रदूषण-नियंत्रण में मनुष्य का योगदान

अथवा

प्रदूषण-नियंत्रण में हमारी भूमिका

मनुष्य और प्रकृति का साथ अनादि काल से रहा है। प्रकृति की गोद में ही पल बढ़कर वह बड़ा हुआ है। आदि काल में मनुष्य का जीवन पशुओं जैसा था। उसने विकास की सीढ़ियों पर कदम भी नहीं बढ़ाए थे। उसकी आवश्यकताएँ बहुत ही सीमित थीं। किसी-न-किसी तरह से वह अपना पेट भरने और तन ढकने का इंतजाम कर ही लेता था और गुफाओं-कंदराओं में रात्रि बिता लेता था। उस समय वह प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता था। इससे उसका पर्यावरण शुद्ध और जीवन के अनुकूल था, पर ज्यों-ज्यों मनुष्य ने सभ्यता की ओर कदम बढ़ाए, उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती ही गई। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की और प्रकृति का भरपूर दोहन किया। इससे हमारा पर्यावरण दूषित हो गया और वर्तमान में यह एक सीमा को पार कर गया है। अब पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण का उपाय सोचने और करने के लिए मनुष्य विवश हो गया है।

मनुष्य और पृथ्वी के अन्य जीवों का जीवन उसके पर्यावरण पर निर्भर करता है। जीवधारी अपने पर्यावरण में ही पलते-बढ़ते हैं। जीवन और पर्यावरण का संबंध इतना निकट का है कि दोनों का सहअस्तित्व अत्यावश्यक है। ऐसे में शुद्ध पर्यावरण जीवन की सबसे पहली आवश्यकता बन गई है। सजीवों के चारों ओर प्रकृति और उसके अंगों का जो घेरा व्याप्त है, वही उनका पर्यावरण है। हमारे चारों ओर की जैव और अजैव वस्तुएँ हमारे पर्यावरण की रचना करती हैं। इन वस्तुओं में भूमि, पेड़-पौधे, जंगल, पर्वत, नदियाँ, सागर, मरुस्थल, घास-फूस, रंग-बिरंगे फूल, पौधे, मन को हर लेने वाले पक्षी, झील, सरोवर आदि प्रमुख हैं।

हमारे चारों ओर लहराते हरे-भरे पेड़, जल से भरी नदियाँ और तालाब, जल बरसाने वाले बादल पर्यावरण को संतुलित रूप प्रदान करते हैं, जिनसे जीवधारियों को जीवन-योग्य परिस्थितियाँ मिलती हैं। दुर्भाग्य जीवधारियों में श्रेष्ठ और विवेकशील कहलाने वाला मनुष्य ही इस पर्यावरण का दुश्मन बन बैठा है और जाने-अनजाने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने को तैयार है। वह अपने स्वार्थ और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध और अविवेकपूर्ण दोहन करता जा रहा है। प्रकृति ने जीवों का जीवन सुखद और मनोरम बनाने के लिए जो वरदान दिए थे, वह उनका दुरुपयोग करने पर तुला है। इससे प्राकृतिक असंतुलन का खतरा पैदा हो गया है और प्रकृति-तंत्र बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। असमयवृष्टि, सूखा, भू-स्खलन, चक्रवात, समुद्री तूफान, बाढ़ आदि इस बिगड़े प्राकृतिक तंत्र के कुछ दुष्परिणाम हैं जो जान-माल को भारी क्षति पहुँचा रहे हैं।

वायुमंडल में बढ़ती कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य जहरीली गैसों से वैश्विक तापमान बढ़ता जा रहा है, जिससे पहाड़ों और ध्रुवों पर जमी बर्फ़ के पिघलने का खतरा उत्पन्न हो गया है। यदि ऐसा हुआ तो पृथ्वी और समुद्र में हर ओर जल-ही-जल होगा, जिसमें सब कुछ डूबा हुआ नजर आएगा और पृथ्वी पर जीवों का नमोनिशान भी शेष न रहेगा। पर्यावरण प्रदूषण के कारणों में प्रमुख है- वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और उनके स्थान पर नए वृक्षों का रोपण न किया जाना। विश्व की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्ध हो रही है। एक ओर विश्व की जनसंख्या 6 अरब से ऊपर पहुँच चुकी है तो दूसरी ओर हमारे देश की जनसंख्या की सवा एक अरब को पार करने वाली है। इतनी अधिक जनसंख्या के लिए भोजन और आवास की समस्या को दूर करने के लिए वनों की कटाई की गई। खेती करने के लिए जंगलों का सफाया किया गया। कल तक जहाँ हरे-भरे खेत और वन लहराते थे, वहाँ अब कंकरीट के जंगल खड़े कर दिए गए हैं। इस जनसंख्या की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कल-कारखाने लगाए गए, सड़कें और रेल की पटरियाँ बिछाई गई। इन सभी कार्यों के लिए

जमीन चाहिए थी, जिसके लिए वनों को काटा गया। इससे प्राकृतिक संतुलन डगमगाने लगा। प्राणवायु ऑक्सीजन देने वाले वृक्षों के कटने से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड गैस का बढ़ना तय हो गया। इसके अलावा जलविद्युत परियोजना तथा सिंचाई के लिए नहरें निकालने हेतु नदियों पर बाँध बनाए गए जो अप्रत्यक्ष रूप में पर्यावरण-प्रदूषण बढ़ाने का काम करते हैं।
खेती में अधिकाधिक उपज पाने के लिए रासायनिक उर्वरकों और रसायनों का जमकर प्रयोग किया गया, जिससे ये रासायनिक पदार्थ बहकर जलस्रोतों में जा मिले और जल-प्रदूषण को बढ़ाया। इससे मछलियाँ और अन्य जलचर असमय कालकवलित होने लगे। उधर पेड़ों और वनों के निरंतर सफ़ाए के कारण वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गई। ये वन्य जीव प्रकृति को साफ़-सुथरा बनाने में मदद करते थे, पर इनकी घटती संख्या से पर्यावरण प्रदूषित हुआ। एक ओर मनुष्य अपनी बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कल-कारखाने लगाता जा रहा था, जिनसे निकलने वाला जहरीला धुआँ वायु को प्रदूषित कर रहा था तो दूसरी ओर इनसे निकला रासायनिक तत्वयुक्त जहरीला पानी जल-स्रोतों को दूषित कर रहा था। मनुष्य ने वैज्ञानिक सुविधाओं का खूब लाभ उठाया और उसने मोटर-गाड़ियों का भारी संख्या में निर्माण किया। इन वाहनों के लिए पेट्रोल और डीजल का भरपूर दोहन किया गया। इनसे निकला धुआँ वायु प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है तो इनका शोर ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है। इससे साँस संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं और शोर के कारण मनुष्य बहरा हो रहा है। इन सबसे हमारा पर्यावरण बुरी तरह प्रदूषित हो रहा है। यदि यह प्रदूषण इसी तरह बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह नीला ग्रह भी प्राणियों के रहने योग्य नहीं रह जाएगा और जीवन का नामोंनिशान भी शेष नहीं रह जाएगा। ऐसे में पर्यावरण प्रदूषण रोकने की तुरंत आवश्यकता है।
पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए जनआंदोलन की जरूरत है। यह समस्या किसी व्यक्ति विशेष के रोकने से नहीं रुकने वाली। इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें सरकार और जनसाधारण को मिल-जुलकर प्रयास करना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह कल-कारखानों की चिमनियाँ ऊँची करने का आदेश दे ताकि इनका जहरीला धुआँ हमारे पर्यावरण से ऊपर उठकर वायुमंडल में चला जाए। इन कारखानों का दूषित पानी बिना शोधित किए जल-स्रोतों में नहीं मिलने देना चाहिए। इसके अलावा वर्षा का जल-संरक्षण करने के लिए कानून बनाएँ ताकि हर व्यक्ति इसका पालन करे और भौमिक जलस्तर ऊँचा उठ सके। नदियों और अन्य जल-स्रोतों को दूषित करने वालों के साथ सरकार सख्ती से बर्ताव करे।
जन साधारण को चाहिए कि वे अपने आस-पास की खाली जमीन पर अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाकर उनकी देखभाल करें ताकि वे वृक्ष बन सकें। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करके अपनी स्वार्थपूर्ति की आदत का परित्याग करना चाहिए। पेड़ों की सूखी पत्तियाँ जलाने के बजाय उनकी खाद बनानी चाहिए। खेती में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग कम करके जैविक कृषि को बढ़ावा देना चाहिए। वाहनों में डीजल की जगह सी०एन०जी० का प्रयोग करना चाहिए। नदियों के किनारे खेती करने बस्तियाँ बसाने, नए कल-कारखाने लगाने पर तत्काल रोक लगानी चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण रोकने तथा पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए यह कदम आज ही उठा लेना चाहिए, क्योंकि कल तक बहुत देर हो चुकी होगी।

40. जनसंख्या में स्त्रियों का घटता अनुपात
अथवा
स्त्रियों की घटती संख्या और बढ़ता सामाजिक असंतुलन

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। जिस प्रकार किसी भी गाड़ी को सुचारु रूप से गतिमान रहने के लिए दो पहियों की जरूरत ही नहीं होती बल्कि दोनों पहिए समान गुण और आकार वाले होने चाहिए, उसी प्रकार सामाजिक जीवन की गाड़ी को सुचारु रूप से गतिशील बनाए रखने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों की संख्या में समानता होने के अलावा उनके गुणों में भी एकरूपता होनी चाहिए। दुर्भाग्य से भारतीय जनसंख्या में स्त्रियों का अनुपात घटा है। इसका प्रमाण हमें समय-समय पर की गई जनगणनाओं से मिलता है।

स्त्रियों की संख्या में कमी भारत के एक-दो राज्यों को छोड़कर प्रत्येक राज्य में देखी जा सकती है। इससे सामाजिक असंतुलन का खतरा उत्पन्न हो गया है जो किसी भी दृष्टि से शुभ संकेत नहीं है। यदि इस पर ध्यान न दिया गया तो यह असंतुलन बढ़ता ही जाएगा। हमारे देश में प्रत्येक दस वर्ष बाद जनगणना की जाती है। इससे स्त्रियों और पुरुषों की जनसंख्या का पता चल जाता है। विगत दशकों में हुई जनगणना पर ध्यान दें तो यह निष्कर्ष निकलकर सामने आता है कि स्त्रियों की संख्या और उनकी जनसंख्या के अनुपात में निरंतर गिरावट आई है। हरियाणा और पंजाब जैसे शिक्षित और संपन्न राज्यों में स्त्रियों की जनसंख्या प्रति हजार पुरुषों की तुलना में 850 से कम हो चुकी है। यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है कि जो राज्य जितने ही शिक्षित और संपन्न हैं, वहाँ स्त्रियों की संख्या का अनुपात उतना ही कम है। केरल इसका अपवाद है।

पिछड़ा कहे जाने वाले पूर्वोत्तर राज्यों में स्त्रियों की जनसंख्या का अनुपात संपन्न राज्यों से काफी बेहतर है। कुछ शिक्षित और संपन्न राज्यों में विवाह योग्य लड़कों को लड़कियाँ मिलने में काफी परेशानी आ रही है। इन लड़कों के सामने अब यह समस्या उत्पन्न हो गई है कि उनके अविवाहित रहने की स्थिति बन गई है। इससे उनके माता-पिता अब अपने पुत्रों के लिए बहू लाने के लिए अन्य राज्यों की ओर जाने के लिए विवश हुए हैं। समाज में स्त्रियों का घटता अनुपात एक सामाजिक समस्या है। इस समस्या के प्रति कुछ मनीषी, सामाजिक कार्यकर्ता और सरकार के कुछ अधिकारी-कर्मचारी ही परेशान थे, परंतु अपने पुत्रों के अविवाहित रह जाने की आशंका और अपना वंश डूबने । के भय ने लोगों को इस समस्या का हल खोजने के लिए विवश कर दिया है। वे इसके कारणों पर विचार करने के लिए विवश हुए हैं।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही पुत्रों को अधिक महत्व दिया गया है। माता-पिता की सोच रही है कि पुत्र के पिंडदान किए बिना उन्हें स्वर्ग नहीं प्राप्त होगा। जब तक महँगाई कम थी, तब तक लोग अधिक बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का बोझ आसानी से वहन कर लेते थे, परंतु वर्तमान में बढ़ती महँगाई ने परिवार को एक या दो बच्चों तक सीमित रहने पर विवश कर दिया है। लोग यह चाहने लगे हैं कि संतान के रूप में लड़का ही पैदा हो। इसके लिए वे नाना प्रकार की युक्तियाँ अपनाते हैं। इसके लिए ओझा और तांत्रिकों की मदद लेने वाले मनुष्य ने अब वैज्ञानिक उपकरणों का सहारा लेकर गर्भ में ही लिंग-परीक्षण करवाना शुरू कर दिया।

अल्ट्रासाउंड के माध्यम से कराए गए इस लिंग-परीक्षण में मनोनुकूल परिणाम न पाकर वह गर्भपात करवा देता है। दुर्भाग्य से इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियाँ भी इस घृणित काम में पुरुषों का साथ देने पर विवश हैं। वे महिला होकर भी कन्याभ्रूण हत्या में पुरुषों का साथ देती नजर आती हैं। इससे दंपती को कन्याभ्रूण से छुटकारा तो मिल जाता है, पर वे इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि आने वाली पीढ़ी को उनके इस कुकृत्य का कितना नुकसान उठाना होगा। वे भूल जाते हैं कि आखिर उनके लाडलों के विवाह के लिए लड़कियाँ कहाँ से आएँगी? उनके इसी कृत्य का दुष्परिणाम है-महिलाओं की जनसंख्या का निरंतर गिरना। इस समस्या का एक अन्य प्रमुख कारण है-समाज की

पुरुषप्रधान मानसिकता। इस सोच के कारण समाज में लड़के-लड़कियों के पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा और पुष्पित-पल्लवित होने के अवसर देने में दोहरा मापदंड अपनाया जाता है।

माता-पिता प्राय: कन्याओं के जन्म के बाद से ही पालन-पोषण, देख-भाल, इलाज आदि में लापरवाही बरतते हैं, जिससे जन्म के बाद कन्या शिशुओं की मृत्यु हो जाती है या उनका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो पाता है। समाज में लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई तथा उच्च शिक्षा को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता है, इसलिए उन्हें घर से बाहर नहीं जाने दिया जाता है। लड़कियों को समाज में बोझ माना जाता है। इसका कारण है-उनके विवाह के समय दहेज की व्यवस्था करना, जबकि लड़कों को हर तरह की छूट एवं आजादी दी जाती है।

अल्पायु में लड़कियों के स्वास्थ्य एवं विकास पर ध्यान न देने के कारण वे असमय काल-कवलित हो जाती हैं। इससे स्त्री-पुरुषों की जनसंख्या संबंधी असंतुलन में वृद्ध होती है। अल्पायु में लड़कियों की मृत्यु का असर तत्काल नहीं दिखता है। इसका असर दस-बारह वर्ष बाद दिखाई देता है, तब इसका विकराल रूप समाज और सरकार के लिए चिंता का विषय बन जाता है। बुद्धजीवी वर्ग और सरकारी तंत्र तब इसके लिए उपाय सोचना शुरू करता है। 'लाडली योजना', 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', 'कन्या विद्याधन' जैसी सरकारी योजनाएँ इसी दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए सफल कदम हैं। इसके अलावा विभिन्न प्रचार माध्यमों द्वारा जनजागरूकता अभियान चलाकर जनचेतना उत्पन्न करने का प्रयास करती है।

कन्या जन्म देने पर माता-पिता को प्रोत्साहन राशि देना, कन्या के विवाह में आर्थिक मदद प्रदान करना आदि इस दिशा में उठाए गए ठोस कदम हैं। सरकार ने भ्रूण-लिंग-परीक्षण को अपराध बनाकर तथा लिंग-परीक्षण करने वाले डॉक्टरों को सजा देने का कानूनी प्रावधान बनाकर सराहनीय प्रयास किया है। इससे लोगों की सोच में बदलाव आया है और वे कन्याओं के प्रति अधिक सदय बने हैं। स्त्री-पुरुष जनसंख्या के घटते अनुपात को कम करने की दिशा में किए जा रहे सरकारी प्रयासों को जन-जन तक विशेषकर पिछड़े और दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुँचाने की आवश्यकता है। सरकार प्रचार-तंत्र के माध्यम से ऐसा कर भी रही है। वास्तव में लोगों की विचारधारा में बदलाव लाने की आवश्यकता है ताकि वे लड़के और लड़कियों को एक समान समझे और लड़कियो के जन्म को बोझ न समझे तथा उन्हें इस संसार में आने का अवसर दें।

समाज में लोगों ने किसी सीमा तक इसके दुष्परिणामों का आँकलन कर लिया है। समाज में स्त्रियों की कमी से बहुओं की कमी की आशंका, सामाजिक अपराधों में वृद्ध और बिगड़ते सामाजिक असंतुलन के भय का परिणाम है कि लोगों की सोच में बदलाव आया है। इससे कन्या जनसंख्या में कुछ सुधार आया है, पर अभी इस दिशा में बहुत कुछ सुधार लाने की आवश्यकता है। समाज को इस दिशा में आज से ही ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है वरना आगामी कुछ ही दशकों में वह दिन आ जाएगा, जब किसी भी महिला को द्रौपदी बनने के लिए विवश होना पड़ेगा। ऐसा दिन आने की प्रतीक्षा किए बिना हमें इस दिशा में ठोस कदम उठा लेना चाहिए।

41. सठ सुधरहिं सत्संगति पाई

अथवा

सत्संगति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में मिल-जुलकर परस्पर सद्भाव से रहता है। वह कभी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तो कभी परस्पर विचार-विमर्श के लिए लोगों से मिलता-जुलता है और उनकी संगति करता है। समाज में कुछ लोग अधिक ज्ञानवान, बुद्धमान,

विद्वान और सुयोग्य होते हैं। ऐसे लोगों की संगति में उठना-बैठना, बात-चीत करना और उनकी बातों से प्रभावित होना सत्संगति कहलाता है। सत्संगति शब्द 'संगति' में 'सत्' उपसर्ग लगाने से बना है, जिसका अर्थ है-अच्छे लोगों की संगति। यहाँ अच्छे लोगों से तात्पर्य श्रेष्ठ, सदाचारी और विद्वतजनों से है जो लोगों को कुमार्ग त्यागकर सन्मार्ग पर चलने और श्रेष्ठ आचरण की सीख देते हैं। ऐसे लोगों के संपर्क में आकर व्यक्ति के दुर्गुणों का नाश होता जाता है और उसमें अच्छे गुणों का उदय होने लगता है। सत्संगति के असर के कारण व्यक्ति के अवांछित गुण लोभ, स्वार्थ, दुर्बुद्ध, विषय-वासनाओं में डूबे रहने की प्रवृत्ति, ईष्र्यालु प्रवृत्ति, परनिंदा आदि का नाश होता है। इससे व्यक्ति में परोपकार, त्याग, मैत्रीभाव, सद्भाव, संतोष जैसे सद्‌गुणों का उदय एवं पुष्पन-पल्लवन होता है। इससे व्यक्ति की समाज में लोकप्रियता और यश बढ़ता है तथा जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति होती है। सत्संगति की महत्ता बताते हुए कवि तुलसीदास ने कहा है-

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई।

अर्थात् श्रेष्ठ लोगों की संगति पाकर दुष्ट-से-दुष्ट व्यक्ति सुधरकर अच्छा आदमी उसी प्रकार बन जाता है, जैसे पारस पत्थर का स्पर्श पाकर लोहे जैसी साधारण और कुरूप-सी धातु सुंदर और मूल्यवान सोने में बदलकर बहुमूल्य बन जाती है। व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में संगति का बहुत महत्व होता है। व्यक्ति जिस प्रकार के लोगों की संगति करता है, वैसा ही बनता है। अच्छों की संगति करके व्यक्ति अच्छा और बुरों की संगति करके बुरा बनता है। इसी संबंध में कहा गया है-

कदली सीप भुजंग ते एक स्वाति गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन।।

अर्थात् संगति का माहात्म्य भी निराला होता है। स्वाति नक्षत्र में आसमान से गिरने वाली वर्षा की बूंदें संगति के अनुसार अलग-अलग स्वरूप पाती हैं। स्वाति की बूंद केले के पत्ते पर गिरकर कपूर का रूप पा जाती है, साँप के फन पर गिरकर मणि बन जाती है और वही बूंद सीप में गिरकर बहुमूल्य मोती बन जाती है। यही दशा व्यक्ति की भी होती है। वह जैसी संगति करता है, वैसा ही बन जाता है। सत्संगति की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि 'बिनु सत्संग विवेक न होई।' अर्थात् सत्संग के बिना व्यक्ति में सुबुद्ध और विवेक का उदय नहीं होता है। संत कबीर ने सत्संगति को औषधि के समान बताते हुए समस्त प्रकार के दुर्गुण रूपी रोग को हरने वाला बताया है। इसके विपरीत कुसंगति में पड़कर आठों पहर दूसरों का अहित करने की सोचता रहता है। उनका कहना है-

कबिरा संगति साधु की हरै और की व्याधि।
ओछी संगति नीच की आठों पहर उपाधि।

सत्संगति की तुलना कल्यवृक्ष से की जा सकती है, जो मनुष्य को मधुर फल देते हुए सर्वविधि भलाई करती है। कहा भी गया है-'महाजनस्य संगति: कस्यो न उन्नतिकारक:।' अर्थात् श्रेष्ठ जनों की संगति किसकी उन्नति नहीं करती। इसका तात्पर्य यह है कि सत्संगति सभी की उन्नति का साधन बनती है। खिलते कमल का साथ पाकर ओस की बूंदें मोती के समान चमक उठती हैं और साधारण से कीट-पतंगे पुष्प की संगति करके देवताओं के सिर पर इठलाने का सौभाग्य पा जाते हैं। इसी प्रकार गंधी (इत्र बेचने वाला) चाहे कुछ दे या न दे पर इत्र की संगति के कारण सुवास (सुगंध) तो दे ही जाता है।

सत्संगति मनुष्य को सदाचार और ज्ञान ही नहीं प्रदान करती, बल्कि इससे मनुष्यों को अच्छे लोगों के विचारों को सुनने, समझने और व्यवहार में लाने की प्रेरणा मिलती है। इससे वह सुख, संतोष एवं शांति की अनुभूति करता है। ऐसा व्यक्ति मोह-माया से ऊपर उठकर लाभ-हानि, सुख-दुख, यश-अपयश को समान समझते हुए ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति-भावना रखता है। ऐसा नहीं है कि केवल श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से ही ज्ञान और विवेक मिलता है, इसका अन्य साधन श्रेष्ठ साहित्य भी है। इस साहित्य और अच्छी पुस्तकों का सामीप्य पाकर मनुष्य सत्संगति जैसा ही लाभ प्राप्त करता है।

रामायण, रामचरितमानस, गीता, वेद-पुराण के अलावा महापुरुषों की जीवनियाँ और आत्मकथाएँ पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इनकी संगति की एक अन्य विशेषता यह है कि इनसे ज्ञान और बुद्ध पाने के लिए समय और स्थान की बाध्यता नहीं होती है। पुस्तकें पास होने पर हम किसी समय और कहीं भी, लेटकर या बैठकर इनको पढ़ते हुए आनंदित हो सकते हैं। इसके अलावा सत्संगति के लिए महापुरुषों का हमारे आस-पास और निकट उपस्थित होना आवश्यक होता है, किंतु पुस्तकों के माध्यम से सौ-पचास साल क्या हजारों साल पहले जन्में महापुरुषों के विचारों का लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राम, कृष्ण, ईसामसीह, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महापुरुषों की संगति का लाभ लोग पुस्तकों के माध्यम से ही उठा रहे हैं।

सत्संगति के प्रभाव से व्यक्ति की आत्मा पूर्णतया बदल जाती है। उसका हृदय-परिवर्तन हो जाता है। आजीवन लूटमार करने । वाले वाल्मीकि क्रूर और हिंसक डाकू के रूप में जाने जाते थे, किंतु साधु-महापुरुषों की संगति पाकर वे साधु ही नहीं बने, बल्कि उच्च कोटि के विद्वान बने और संस्कृत भाषा में भगवान राम की पावन गाथा का गुणगान 'रामायण' के रूप में करके विश्व प्रसिद्ध हो गए। कुछ ऐसा ही उदाहरण डाकू अंगुलिमाल का है जो लोगों को लूटने के बाद उनकी अंगुली काट लेता था और उनकी माला बनाकर गले में पहन लेता था। उसी क्रूर डाकू का सामना जब महात्मा बुद्ध से हुआ तो उनकी संगति पाकर उसने लूटमार और हत्या का मार्ग त्याग दिया और सदा-सदा के लिए सुधरकर अच्छा आदमी बन गया और भगवद्भजन में रत रहने लगा। इसी प्रकार पुष्पों की संगति पाकर हवा सुवासित हो जाती है और लोगों का मन अपनी ओर खींच लेती है।

सत्संगति व्यक्ति में अनेक मानवीय गुणों का उदय करती है। इससे व्यक्ति में त्याग, परोपकार, साहस, निष्ठा, ईमानदारी जैसे मूल्यों का उदय होता है। सत्संगति से व्यक्ति विवेकी बनता है, जिससे उसका जीवन सुगम बन जाता है। अत: मनुष्य को चाहिए कि ऐसी लाभदायी सत्संगति को छोड़कर भूलकर भी कुसंगति की ओर कदम न बढ़ाए। सत्संगति ही व्यक्ति की भलाई कर सकती है, कुसंगति नहीं। अत: हमें सदैव सत्संगति ही करनी चाहिए।

42. धूम्रपान की बढ़ती-प्रवृत्ति और उसके खतरे

अथवा

धूम्रपान कितना घातक

मनुष्य श्रमशील प्राणी है। मानव-जीवन और श्रम का घनिष्ठ रिश्ता है। आदि काल में वह भोजन पाने के लिए श्रम करता था तो वर्तमान काल में अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताओं और क्षुधापूर्ति के लिए। श्रम के उपरांत थकान होना स्वाभाविक है। इस थकान से वह मुक्ति पाना चाहता है। इसके अलावा मनुष्य के जीवन में दुख-सुख आते-जाते रहते हैं। थकान और दुख दोनों से छुटकारा पाने के लिए वह धूम्रपान का सहारा लेने लगता है। उसका दुख और थकान इससे कितना दूर होता होगा,

पर वह अपने स्वास्थ्य के लिए नाना प्रकार की मुसीबतें जरूर मोल ले लेता है, जिसका दुष्प्रभाव तात्कालिक न होकर दीर्घकालिक होता है।

'धूम्रपान' शब्द दो शब्दों 'धूम्र' और 'पान' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है-धूम्र अर्थात् धुएँ का पान करना। अर्थात् नशीले पदार्थों के धुएँ का विभिन्न प्रकार से सेवन करना, जो नशे की स्थिति उत्पन्न करते हैं और यह नशा व्यक्ति के मनोमस्तिष्क पर हावी हो जाता है। इससे धूम्रपान करने वाले व्यक्ति का मस्तिष्क शिथिल हो जाता है और वह अपने आस-पास की वास्तविक स्थिति में अलग-सा महसूस करने लगता है। यही स्थिति उसे एक काल्पनिक आनंद की दुनिया में ले जाती है। एक बार धूम्रपान की आदत पड़ जाने पर इसे छोड़ना मुश्किल होता है, पर यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो यह कार्य असंभव नहीं होता है।

समाज में धूम्रपान की प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। मनुष्य प्राचीन काल से ही तंबाकू और उनके उत्पादों को विभिन्न रूप में सेवन करता रहा है। इसी तंबाकू एवं अन्य नशीले पदार्थ को बीड़ी, सिगरेट में भरकर उसके धुएँ का सेवन कुछ लोगों द्वारा किया जाता रहा है। समाज की वही प्रवृत्ति उत्तरोत्तर चली जा रही है। श्रमिक वर्ग में धूम्रपान की प्रवृत्ति अधिक देखी जा सकती है। यह वर्ग अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार बीड़ी-तंबाकू का सेवन करता है तो उच्च आयवर्ग के लोग बीड़ी-तंबाकू का सेवन करना अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं समझते हैं। वे प्रसिद्ध कंपनियों द्वारा उत्पादित तथा सिलेब्रिटीज द्वारा विज्ञापित महँगे सिगरेट का सेवन करते हैं। ऐसा करना वे अपनी शान समझते हैं।

दुख तो यह है कि यह शिक्षित एवं प्रतिष्ठित वर्ग धूम्रपान के खतरों से भलीभाँति परिचित होता है, फिर भी धूम्रपान करना अपनी शान एवं प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला मान बैठता है। बीड़ी-सिगरेट की उत्पादक कंपनियाँ और सरकार दोनों को ही यह पता है कि बीड़ी-सिगरेट का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए घातक होता है, पर कंपनियाँ इनके पैकेटों पर साधारण-सी चेतावनी-'सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' लिखकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेती हैं और सरकार भी इसे मौन स्वीकृति दे देती है। इनके प्रयोग करने वाले इस नाममात्र की वैधानिक चेतावनी को अनदेखा कर उसका धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं और जाने-अनजाने अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करते है।

यद्यपि सरकार ने इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाते हुए सार्वजानिक स्थानों और सरकारी कार्यालयों में इसके प्रयोग पर पाबंदी लगा दी है। उसने ऐसा करने वालों के विरुद्ध दो सौ रूपये का अर्थदंड भी लगाया है, पर लोग किसी कोने में या किनारे खड़े होकर चेहरा छिपाकर धूम्रपान कर लेते हैं। धूम्रपान को रोकने की जिम्मेदारी जिन पर डाली गई है, यदि वे धूम्रपान करने वाले व्यक्ति को पकड़ते भी हैं तो कुछ ले-देकर मामला रफा-दफा करने में उन्हें अपनी भलाई नजर आती है। यह मध्यम मार्ग अपनाने की प्रवृत्ति के कारण धूम्रपान रोकने की यह मुहिम कारगर सिद्ध नहीं हो सकी। इसके विपरीत धूम्रपान करने वाले इस दो सौ रूपये के अर्थदंड का मजाक उड़ाते हुए नजर आते हैं।

धूम्रपान को दोहरा नुकसान है। एक ओर यदि प्रयोग करने वाले के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालता है तथा गाढ़ी कमाई को बर्बाद करता है तो दूसरी ओर यह हमारे पर्यावरण के लिए हानिकारक है। धूम्रपान करने वालों के पास जो लोग खड़े होते हैं, वे भी अपनी साँस द्वारा उस धुएँ का सेवन करते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। युवा और बच्चे विशेष रूप से इसका शिकार होते हैं। ऐसे लोग चाहकर भी इस दुष्प्रभाव से नहीं बच पाते हैं। इसके अलावा बच्चों के

कोमल मन पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। उनमें अपने बड़ों की देखादेखी धूम्रपान करने की इच्छा पनपती है और वे चोरी-छिपे इसका प्रयोग करना शुरू करते हैं।

विज्ञापन और फ़िल्मों के अलावा समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं में दर्शाए गए विज्ञापनों की जीवन-शैली देखकर युवा मन भी वैसा करने को आतुर हो उठता है। सीमित आय के कारण युवा वैसी जीवन-शैली तो अपना नहीं पाता है, पर धूम्रपान की कुप्रवृत्ति का शिकार जरूर हो जाता है। इस संबंध में युवाओं को खुद ही सोच-समझकर उचित आदत डालने का निर्णय लेना होगा। बीड़ी-सिगरेट आदि सरकार की आय तथा कंपनियों के ऊँचे मुनाफ़े का साधन हैं। इस कारण इन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने में सरकार भी ईमानदारी और दृढ़ता से प्रयास नहीं करती है, पर आय प्राप्त करने के लिए देश की बहुसंख्यक जनता के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करना बुद्धमानी की बात नहीं है। इस पर रोक लगाने से एक व्यावहारिक समस्या यह जरूर उठ सकती है कि इनमें काम करने वाले श्रमिक बेरोजगार हो जाएँगे।

यदि ईमानदारीपूर्वक इस समस्या के समाधान के लिए कदम उठाया जाए तो इसका हल यह है कि इन श्रमिकों को अन्य कामों में समायोजित कर उन्हें भुखमरी से बचाया जा सकता है। लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने के बजाय बीड़ी, तंबाकू और सिगरेट उद्योग पर प्रतिबंध लगाने से ही मानवता का कल्याण हो सकेगा। धूम्रपान के विरुद्ध जन-जागृति भलीभाँति इसलिए नहीं फैल पा रही है, क्योंकि इससे होने वाला नुकसान तत्काल नहीं दिखाई देता है। यह नुकसान बाहय रूप में न होकर आंतरिक होता है जो तुरंत दिखाई नहीं देता है।

धूम्रपान करते समय जो धुआँ श्वासनली से होकर हमारे फेफड़ों में जाता है, वह एक काली परत बना देता है, जिससे श्वास-संबंधी अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। इसकी शुरुआत प्राय: खाँसी से होती है। यह ऐसा व्यसन है जो एक बार छू जाने पर आसानी से नहीं छोड़ता है। यह खाँसी धीरे-धीरे बढ़ती हुई टी०बी० और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों में बदल जाती है। धूम्रपान रोकने के लिए लोगों को अपनी सोच में बदलाव लाना होगा और इसके खतरों से सावधान होकर इसे त्यागने का दृढ़ निश्चय करना होगा। यदि एक बार ठान लिया जाए तो कोई भी काम असंभव नहीं है।

बस आवश्यकता है तो दृढ़ इच्छाशक्ति की। इसके अलावा सरकार को धूम्रपान कानून के अनुपालन के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए। धूम्रपान का प्रचार करने वाले विज्ञापनों पर अविलंब रोक लगाना चाहिए तथा इसका उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए। विद्यालय पाठ्यक्रम का विषय बनाकर बच्चों को शुरू से ही इसके दुष्परिणाम से अवगत कराना चाहिए ताकि युवावर्ग इससे दूरी बनाने के लिए स्वयं सचेत हो सके। हमें धूम्रपान रोकने में हर संभव सरकार और लोगों की मदद करनी चाहिए।

43. बढ़ती जनसंख्या : एक भीषण चुनौती

अथवा

समस्याओं की जड़ : बढ़ती जनसंख्या

अथवा

जनसंख्या विस्फोट : एक समस्या

स्वतंत्रोत्तर भारत को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनमें जनसंख्या की निरंतर वृद्ध मुख्य है। जनसंख्या-वृद्धि अपने-आप में समस्या होने के साथ-साथ अनेक समस्याओं की जड़ भी है। सरकार समस्याओं को दूर करने के जो उपाय अपनाती है, जनसंख्या विस्फोट के कारण वे अपर्याप्त सिद्ध होते हैं और समस्या पहले से भी भीषण रूप में मुँहबाए सामने खड़ी मिलती है। इस

समस्या का प्रभावी नियंत्रण किए बिना आर्थिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव है।

स्वतंत्रता के बाद देश में स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर सुधार हुआ है। इसके अलावा अन्य सुविधाएँ भी बढ़ी हैं। इसका सीधा असर मृत्यु-दर पर पड़ा है। मृत्यु-दर में आई गिरावट जनसंख्या-वृद्ध का कारण है। 2011 में हुई जनगणना से ज्ञात होता है कि हमारे देश की जनसंख्या 120 करोड़ को पार कर गई है। यह वर्तमान में सवा अरब के निकट पहुँच चुकी होगी। भारत का विश्व में जनसंख्या में दूसरा स्थान है, पर क्षेत्रफल में सातवाँ स्थान। यही विषमता जनसंख्या-संबंधी समस्याओं को बढ़ाती है। इतनी विशाल जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, परिवहन, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना ही अपने-आप में भीषण चुनौती है।

भारत जैसे सीमित संसाधनों वाले देश के लिए यह समस्या और भी विकराल रूप में नजर आती है। यहाँ संसाधन सीमित हैं। ऐसे में जनसंख्या पर नियंत्रण किए बिना विकास की बात करना निरर्थक है। जनसंख्या-वृद्ध के कारण भोजन और आवास की समस्या सबसे पहले सामने आती है। जनसंख्या के पोषण के लिए खाद्यान्न की आवश्यकता होती है। इसे उगाने के लिए विस्तृत कृषियोग्य जमीन की आवश्यकता होती है। इसके अलावा आवास के लिए मकान बनाने के लिए भी भूमि की जरूरत होती है। इसके लिए कृषियोग्य जमीन पर कंकरीट के जंगल खड़े किए जाते हैं या फिर हरे-भरे जीवनदायी जंगलों का सफ़ाया करके भवनों का निर्माण किया जाता है। इसका दुष्प्रभाव खाद्यान्न के उत्पादन पर पड़ता है और कृषि-उत्पादन गिरता है।

विकास के नाम पर कल-कारखानों की स्थापना, सड़कों का निर्माण, बढ़ता शहरीकरण आदि भूमि घेरते जा रहे हैं, जिससे खाद्यान्न-उत्पादन कम होता जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या की समस्या के कारण खाद्यान्न की कमी और भी बढ़ती जा रही है। इसके अलावा यातायात के साधन, वस्त्र, पेट्रोलियम पदार्थ आदि का उत्पादन जितना बढ़ाया जाता है, वह बढ़ती जनसंख्या रूपी सुरसा के मुँह में चला जाता है और हमारी स्थिति वही ढाक के तीन पात वाली रह जाती है। जनसंख्या-वृद्ध की भयंकरता देखकर यही अंदेशा होने लगा है कि पेट्रोलियम जैसे अनवीकरणीय संसाधन आने वाले कुछ ही वर्षों में समाप्त हो जाएँगे और ये संसाधन पुस्तकों में इतिहास की वस्तु बनकर रह जाएँगे।

जनसंख्या-वृद्ध का दुष्परिणाम स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ा है। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्ध हुई है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सरकार ने नए अस्पताल खुलवाए, स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में वृद्ध की। उसने नए मेडिकल कॉलेज खोले और पुराने मेडिकल कॉलेजों में सीटों की संख्या में वृद्ध की। स्वास्थ्य सेवाएँ जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आँगनवाड़ी केंद्र, आशा बहनों की नियुक्ति की, पर बढ़ती जनसंख्या के कारण हर एक को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ नहीं मिल पा रही हैं। विदेशों की तुलना में यहाँ प्रति डॉक्टर मरीजों की संख्या काफी ज्यादा है। सरकारी अस्पतालों में लगी लंबी-लंबी लाइनें इस बात का प्रमाण हैं। यहाँ प्राइवेट अस्पताल अत्यधिक महँगे हैं और सरकारी अस्पताल आवश्यकता से बहुत कम हैं, जिससे गरीब आदमी मरने को विवश है। यदि जनसंख्या पर नियंत्रण न किया गया तो यह स्थिति और भी भयंकर हो जाएगी।

जनसंख्या-वृद्ध के कारण शत-प्रतिशत साक्षरता की दर का सपना आज भी सपना बनकर रह गया है। शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बाद भी स्थिति में बहुत बदलाव नहीं आया है। सरकार प्रतिवर्ष सैकड़ों नए विद्यालय खोलती है और हजारों नए शिक्षकों की भर्ती करती है, फिर भी

विद्यालयों की कक्षाओं में निर्धारित संख्या से दूने-तिगुने छात्र बैठने को विवश है। यह स्थिति तो प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों की है, पर उच्च शिक्षा की स्थिति और भी खराब है। जनसंख्या-वृद्ध के कारण उच्च शिक्षण संस्थाएँ ऊँट के मुँह में जीरा साबित हो रही हैं। कॉलेजों में एक सीट के विरुद्ध तीस से अधिक आवेदन-पत्र इसी स्थिति को दर्शाते हैं। यातायात एवं परिवहन की समस्या को जनसंख्या-वृद्ध ने कई गुणा बढ़ा दिया है।

प्राइवेट वाहनों की संख्या में निरंतर वृद्ध होने पर भी बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों पर टिकट के लिए लंबी लाइनें लगी ही रहती हैं। रेल का आरक्षित टिकट पाने के लिए लोग रात से लाइन में लग जाते हैं, पर अधिकांश के हाथ निराशा ही लगती है। जनसंख्या-वृद्ध ने बेरोजगारी में वृद्ध की है। बेरोजगारी की स्थिति भयावह हो चुकी है। अब तो सरकारी नौकरी के दस-बीस पदों के लिए लाखों में आवेदन-पत्र आने लगे हैं। रोजगार दफ्तरों में पंजीयकों की निरंतर बढ़ती लाइनें देखकर इसका अनुमान लगाया जा सकता है। अकुशल श्रमिकों का हाल और भी बुरा है। प्रात: लेबरचौंक पर इकट्ठे मजदूरों में से आधे को भी काम नहीं मिल पाता है।

जनसंख्या-विस्फोट से उत्पन्न यह बेरोजगारी और भी कई समस्याएँ पैदा करती है। जिस व्यक्ति को काम नहीं मिलता है, वह व्यर्थ की बातों में अपनी ऊर्जा व्यर्थ करता है। कहा भी गया है-'बुभुक्षक: किम् न करोति पापं।' अर्थात् भूखा व्यक्ति हर प्रकार का पाप-कर्म करने को तत्पर हो जाता है। यह बेरोजगार जनसंख्या अपराध-कार्यों में संलिप्त होकर समाज में अनैतिक कार्य करते हैं और कानून-व्यवस्था को चुनौती देते हैं। इसके अलावा इससे समाज में विषमता की खाई और चौड़ी होती जाती है, जिससे आक्रोश और असंतोष बढ़ता है। इसका कुप्रभाव सामाजिक एकता और अखंडता पर पड़ता है। वे आर्थिक आधार पर बँटकर असंतुष्ट भाव लिए जीने को विवश रहते हैं।

जनसंख्या-वृद्ध एक नहीं अनेक समस्याओं की जननी है। यह किसी भी दृष्टि से व्यक्ति, देश एवं विश्व के हित में नहीं है। जनसंख्या की वृद्ध रोके बिना किसी समाज और राष्ट्र की उन्नति की बात सोचना भी बेईमानी है। इसे रोकने के लिए जन-जन और सरकार को सामूहिक प्रयास करना होगा। सबसे पहले लोगों में जन-जागरूकता फैलानी होगी। समाज में जनसंख्या-वृद्ध के लिए उत्तरदायी रुढ़िवादी सोच को हतोत्साहित कर 'लड़का-लड़की एक समान' होने की सोच पैदा करनी होगी। उन्हें छोटे-परिवार का महत्व बताना होगा तथा कम बच्चे होने पर ही अच्छे रहन-सहन की कल्पना की जा सकती है, यह बात समझानी होगी। दो से अधिक बच्चों वाले नेताओं के चुनाव लड़ने पर, ऐसे कर्मचारियों की वेतन-वृद्ध एवं पदोन्नति पर रोक तथा एक-दो बच्चों वाले माता-पिता को सुविधाएँ देने का प्रयास सरकार द्वारा किया जाना चाहिए। इसके अलावा परिवार-कल्याण जैसे कार्यक्रमों को गाँव-गाँव तथा सुदूर स्थानों तक पहुँचाना चाहिए। जनसंख्या-वृद्ध के दुष्परिणाम संबंधी पाठ विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल करके बच्चों को जागरूक बनाना चाहिए ताकि आने वाले समय में जनसंख्या-वृद्ध रोकने में वे बेहतर योगदान दे सकें।

44. मोबाइल फोन : सुविधाएँ एवं असुविधाएँ

अथवा

मोबाइल फोन बिना सब सूना

विज्ञान ने मानव-जीवन को अनेक तरह से सुखमय बनाया है। उसने मनुष्य को ऐसे अनेक सुविधाजनक उपकरण दिए हैं, जिनकी वह कभी कल्पना भी नहीं करता था। मानव-जीवन का शायद ही कोई कोना ही जो विज्ञान से प्रभावित न हो। संचार का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। संचार के क्षेत्र में क्रांति लाने में विज्ञान-प्रदत्त कई उपकरणों का हाथ है, पर मोबाइल फोन की

भूमिका सर्वाधिक है। मोबाइल फोन जिस तेजी से लोगों की पसंद बनकर उभरा है, उतनी तेजी से कोई अन्य संचार साधन नहीं। आज इसे अमीर-गरीब, युवा-प्रौढ़ हर एक. की जेब में देखा जा सकता है।

मोबाइल फोन अत्यंत तेजी से लोकप्रिय हुआ है। इसके प्रभाव से शायद ही कोई बचा हो। आजकल इसे हर व्यक्ति की जेब में देखा जा सकता है। कभी विलासिता का साधन समझा जाने वाला मोबाइल फोन आज हर व्यक्ति की जरूरत बन गया है। इसकी लोकप्रियता का कारण इसका छोटा आकार, कम खर्चीला होना, सर्वसुलभता और इसमें उपलब्ध अनेकानेक सुविधाएँ हैं। मोबाइल फोन का जुड़ाव तार से न होने के कारण इसे कहीं भी लाना-ले जाना सरल है। इसका छोटा और पतला आकार इसे हर जेब में फिट होने योग्य बनाता है। किसी समय मोबाइल फोन पर बातें करना तो दूर सुनना भी महँगा लगता था, पर बदलते समय के साथ आने वाली कॉल्स निःशुल्क हो गई। अनेक प्राइवेट कंपनियों के इस क्षेत्र में आ जाने से दिनोंदिन इससे फोन करना सस्ता होता जा रहा है।

मोबाइल फोन जब नए-नए बाजार में आए थे तब बड़े महँगे होते थे। चीनी कंपनियों ने सस्ते फोन की दुनिया में क्रांति उत्पन्न कर दी और उनके फोन भारत के ही नहीं वैश्विक बाजार में छा गए। इन मोबाइल फोनों की एक विशेषता यह भी है कि कम दाम के फोन में जैसी सुविधाएँ चाइनीज फोनों में मिल जाती हैं, वैसी अन्य कंपनियों के महँगे फोनों में मिलती हैं। गरीब-से-गरीब व्यक्ति यहाँ तक कि मजदूर और रिक्शा चालक की जेब में मोबाइल फोन पहुँचाने का श्रेय चीनी कंपनियों को ही है। इसके अलावा जेब में पैसे होने पर अब मोबाइल फोन खरीदने के लिए शहर के बड़े-बड़े बाजारों में जाने की जरूरत नहीं रही। ये फोन सर्वसुलभ हैं। इन्हें गाँवों के छोटे-छोटे बाजारों से खरीदा जा सकता है। इनसे जुड़ी हर छोटी-बड़ी सुविधाएँ और चार्ज करने की सुविधा गली-गली में हो गई है।

मोबाइल फोन को लोकप्रिय बनाने में सर्वाधिक योगदान है, इसमें बढ़ती नित नई-नई सुविधाएँ। पहले इन फोनों से केवल बात की जा सकती थी और सुनी जा सकती थी, पर आजकल इसे जेब का बात करने वाला कंप्यूटर कहें तो कोई 'अतिशयोक्ति न होगी। अब मोबाइल फोन पर एफ०एम० के माध्यम से प्रसारित संगीत का आनंद उठाया जाता है तो इसमें लगे मेमोरी कार्ड द्वारा रिकॉर्डड संगीत का भी आनंद उठाया जा सकता है। इसमें लगा कैमरा मनचाहे फोटो खींच सकता है तो रिकार्डिंग सिस्ट्म द्वारा कई घंटों की रिकार्डिग करके उनका मनचाहा आनंद उठाया जा सकता है। अब तो फोन पर बातें करते हुए दूसरी ओर से बात करने वाले का चित्र भी देखा जा सकता है। इसमें फाइलें बनाकर विभिन्न प्रकार के डेटा सँभालकर रखे जा सके हैं। इस फोन को प्रिंटर से जोड़कर इनको कागज पर छापा जा सकता है। इसमें लगा कैल्कुलेटर, कैलेंडर भी बड़े उपयोगी हैं, जिनका उपयोग समय-समय पर किया जा सकता है। आधुनिक मोबाइल फोन में उन सभी सुविधाओं का आनंद उठाया जा सकता है तथा उन कामों को किया जा सकता है, जिन्हें कंप्यूटर पर किया जाता है।

मोबाइल फोन ने समय की बचत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब फोन करने के लिए हमें न फोन वाले कमरे में जाने की जरूरत है और न बाहर लगे पी०सी०ओ० के पास। बस जेब से निकला और शुरू कर दिया बातचीत। यद्यपि इसका लाभ हर वर्ग का व्यक्ति उठा रहा है, पर व्यापारी वर्ग इससे विशेष रूप से लाभान्वित हो रहा है। बाजार-भाव की जानकारी लेना-देना, माल का ऑर्डर देना, क्रय-विक्रय का हिसाब-किताब बताने जैसे कार्य मोबाइल फोन पर ही होने लगे हैं। इसके लिए उन्हें शहर या दूसरे बाजार तक जाने की जरूरत नहीं रही। मजदूर वर्ग के पास मोबाइल आ

जाने से उनकी रोजी-रोटी में वृद्ध हुई है। अब वे दीवारों, दुकानों और ग्राहकों के पास अपने नंबर लिखवा देते हैं और लोग उन्हें बुला लेते हैं।
राजमिस्त्री, पलबर, कारपेंटर, ऑटोरिक्शा आदि एक कॉल पर उपस्थित हो जाते हैं। अकेले और अपनी संतान से दूर रहने वाले वृद्धजनों के लिए मोबाइल फोन किसी वरदान से कम नहीं है। वे इसके माध्यम से पल-पल अपने प्रियजनों से जुड़े रहते हैं और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें जगह-जगह भटकने की समस्या से मुक्ति मिल गई है। मोबाइल फोन के प्रयोग से कामकाजी महिलाओं और कॉलेज जाने वाली लड़कियों के आत्म-विश्वास में वृद्ध हुई है। वे अपने परिजनों के संपर्क में रहती हैं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में पुलिस या परिजनों को कॉल कर सकती हैं।
विद्यार्थियों के लिए मोबाइल फोन अत्यंत उपयोगी है। अब मोटी-मोटी पुस्तकों को पीडिएफ फॉर्म में डाउनलोड करके अपनी रुचि के अनुसार कहीं भी और कभी भी पढ़ सकते हैं। इससे जटिल चित्रों के फोटो खींचकर बाद में अपनी सुविधानुसार इनका अध्ययन किया जा सकता है। कक्षा में पढ़ाए गए किसी पाठ या सेमीनार के लेक्चर की वीडियो रिकार्डिंग करके इसका लाभ उठाया जा सकता है। जिस प्रकार किसी सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार मोबाइल फोन का दूसरा पक्ष उतना उज्ज्वल नहीं है।
मोबाइल फोन के दुरुपयोग की प्राय: शिकायतें मिलती रहती हैं। लोग समय-असमय कॉल करके दूसरों की शांति में व्यवधान उत्पन्न करते हैं। कभी-कभी मिस्डकॉल के माध्यम से परेशान करते हैं। कुछ लोग अश्लील एसएमएस भेजकर इसका दुरुपयोग करते हैं। इसका सर्वाधिक नुकसान विद्यार्थियों की पढ़ाई पर हो रहा है। विद्यार्थीगण पढ़ने के बजाए फोन पर गाने सुनने, अश्लील फ़िल्में देखने, अनावश्यक बातें करने में व्यस्त रहते हैं। इससे उनकी पढ़ाई का स्तर गिर रहा है। वे अभिभावकों से महँगे फोन खरीदने की जिद करते हैं तथा अनावश्यक दबाव बनाते हैं जो अभिभावकों की जेब पर भारी पड़ता है। मोबाइल फोन पर बातें करना हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस पर ज्यादा बातें करना बहरेपन को न्योता देना है।
आतंकवादियों के हुए,पगतउद्देश्य के ला किया जाता है वे लोइलोड हिंसा, कुमारजैसा घनाओं के ल इसाक प्रयोग करने लगे हैं। मोबाइल फोन नि:संदेह अत्यंत उपयोगी उपकरण और विज्ञान का चमत्कार है। इसका सदुपयोग और दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में है। हम सबको इसका सदुपयोग करते हुए इसकी उपयोगिता को कम नहीं होने देना चाहिए। हमें भूलकर भी इसका दुरुपयोग और अत्यधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

45. बेरोजगारी की समस्या
अथवा
बेरोजगारी का दानव

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद जो समस्याएँ दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ी हैं, उनमें जनसंख्या-वृद्ध, महँगाई, बेरोजगारी आदि मुख्य हैं। इनमें बेरोजगारी की समस्या ऐसी है जो देश के विकास में बाधक होने के साथ ही अनेक समस्याओं की जड़ बन गई है।
किसी व्यक्ति के साथ बेरोजगारी की स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब उसे उसकी योग्यता, क्षमता और कार्य-कुशलता के अनुरूप काम नहीं मिलता, जबकि वह काम करने के लिए तैयार रहता है। बेरोजगारी की समस्या शहर और गाँव दोनों ही जगहों पर पाई जाती है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में यह अधिक दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि भारत की 80% जनसंख्या गाँवों में बसती है।

उनकी रोजी-रोटी का मुख्य साधन कृषि है। कृषि में साल के कुछ ही महीनों में काम होता है, बाकी महीनों में किसान या खेतिहर मजदूरों को बेकार बैठना पड़ता है।

शहरों में रोजगार के साधन गाँवों की अपेक्षा अधिक हैं, पर यहाँ भी बेरोजगारी है, क्योंकि यहाँ रोजगार के अवसर और उन्हें चाहने वाले की संख्या देखकर एक अनार सौ बीमार वाली कहावत चरितार्थ होती नजर आती है। नवीनतम आँकड़ों से पता चला है कि इस समय हमारे देश में ढाई करोड़ बेरोजगार हैं। यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। यद्यपि सरकार और उद्यमियों द्वारा इसे कम करने का प्रयास किया जाता है, पर यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरा साबित होता है। हमारे देश में विविध रूपों में बेरोजगारी पाई जाती है। इसे ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि पहले वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो पढ़-लिखकर शिक्षित और उच्च शिक्षित हैं।

वे सरकारी या प्राइवेट नौकरियाँ करना चाहते हैं, पर उन्हें अवसर नहीं मिल पाता। वे पूँजी, प्रशिक्षण और उचित मार्गदर्शन के अभाव में स्वरोजगार भी नहीं कर पाते हैं और बेरोजगार रहते हैं। यह वर्ग मजदूरी जैसा काम करके अपना पेट भरना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा करने में उसकी शिक्षा आड़े आती है। दूसरे वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो अनपढ़ और अप्रशिक्षित हैं। पहले उन्हें काम ही नहीं मिलता है, यदि उन्हें काम मिलता भी है तो प्रशिक्षण के अभाव में वे अयोग्य सिद्ध होते हैं और बेरोजगार बने रह जाते हैं। तीसरे वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो काम तो कर रहे हैं, पर उन्हें अपनी योग्यता और अनुभव के अनुपात में बहुत कम वेतन मिलता है। इससे वे सदा असंतुष्ट बने रहते हैं। चौथे और अंतिम वर्ग में उन बेरोजगारों को रख सकते हैं, जिन्हें साल में कुछ ही महीने काम मिल पाता है और शेष महीने वे बेरोजगार रहते हैं।

खेती में काम करने वाले मजदूर और किसानों को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। इस प्रकार की बेरोजगारी का दूसरा नाम 'प्रच्छन्न बेरोजगारी' है। बेरोजगारी के कारणों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इसका मुख्य कारण औद्योगीकरण और नवीनतम साधनों की खोज एवं विकास है। औद्योगीकरण के कारण जो काम पहले हाथ से होते थे और जो हजारों मजदूरों द्वारा महीनों में पूरे किए जाते थे, आज मशीनों की मदद से कुछ ही मजदूरों की सहायता से कुछ ही दिना में पूरे कर लिए जाते हैं। सूती वस्त्र उद्योग, जिसमें कपास के बीज निकालने, साफ़ करके सूत कातने, रंगने, करघे पर बुनने में हजारों मजदूर सालभर लगे रहते थे, आज वही काम मशीनें अल्प समय में कर रही हैं। इससे हथकरघा उद्योग नष्ट हो गया और इन पर काम करके आजीविका कमाने वाले बेरोजगार हो गए।

वृहत पैमाने पर औद्योगीकरण होने से पूर्व हमारे देश में कृषि, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, बर्तनों की ढलाई, चमड़े की रंगाई, धातुकर्म आदि संबंधी लघु उद्योग सुव्यवस्थित एवं सुचारु रूप से चल रहे थे, पर औद्योगीकरण ने हजारों शिल्पकारों-दस्तकारों को बेरोजगार कर सड़क पर ला खड़ा किया। पहले इन कामों को पैतृक रूप में किया जाता था। पिता के अशक्त एवं वृद्ध होने पर उसका बेटा उस कार्य को स्वयंमेव सीख जाता था और पैतृक पेशे को अपनाकर रोजी-रोटी का साधन जुटा लेता था और बेरोजगार होने से बच जाता था। इसके अलावा नई तकनीक आ जाने से बेरोजगारी में असीमित वृद्ध हुई है। खेती में खेत जोतने के लिए ट्रैक्टर का प्रयोग, सिंचाई के लिए ट्यूबवेल, खरपतवार नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी, निराई करने के लिए हैरो एवं कल्टीवेटर, कटाई के

लिए हारवेस्टर, मड़ाई के लिए थ्रेसर का प्रयोग किए जाने से हजारों-लाखों मजदूर बेरोजगार हुए हैं।
जिन बैंकों में पहले सौ-सौ क्लर्क काम करते थे, उनका काम अब चार-पाँच कंप्यूटरों द्वारा किया जा रहा है। बेरोजगारी का दूसरा सबसे बड़ा कारण है-जनसंख्या-वृद्ध। आजादी मिलने के बाद सरकार ने रोजगार के नए-नए अवसरों का सृजन करने के लिए नए पदों का सृजन किया और कल-कारखानों की स्थापना की। इससे लोगों को रोजगार तो मिला, पर बढ़ती जनसंख्या के कारण यह प्रयास नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। इससे बेरोजगारी की स्थिति ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। बेरोजगारी का अन्य कारण है-गलत शिक्षा-नीति, जिसका रोजगार से कुछ भी लेना-देना नहीं है। यह बेरोजगारों की फ़ौज खड़ी करती है।
उच्च शिक्षा प्राप्ति के उपरांत भी व्यक्ति न सरकारी या प्राइवेट नौकरी के लिए कुशल बन पाता है और न स्वरोजगार के योग्य। उचित शिक्षण-प्रशिक्षण के अभाव में देश के युवा तकनीकी ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाते हैं और कुशलता के अभाव में बेरोजगार रह जाते हैं। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली श्रम के प्रति तिरस्कार-भाव पैदा करती है, जिससे पढ़ा-लिखा व्यक्ति शारीरिक श्रम से जी चुराता है। इसके अलावा स्त्रियों द्वारा नौकरी करने से भी पुरुष बेरोजगारी में वृद्ध हुई है। बेरोजगारी एक ओर जहाँ परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति बाधक है, वहीं यह खाली दिमाग शैतान का घर होने की स्थिति उत्पन्न करती है।
ऐसे बेरोजगार युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग समाज एवं राष्ट्रविरोधी कार्यों में करते हैं। इससे लड़ाई-झगड़ा, हत्या, आंदोलन, लूट-पाट, उपद्रव, छीना-झपटी आदि बढ़ती है और सामाजिक शांति भंग होती है तथा अपराध का ग्राफ़ बढ़ता है। बेरोजगारी की समस्या से छुटकारा पाने के लिए शिक्षा को रोजगार से जोड़ने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा को विद्यालयों में लागू करने के अलावा अनिवार्य बनाना चाहिए। स्कूली पाठ्यक्रमों में श्रम की महिमा संबंधी पाठ शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवावर्ग श्रम के प्रति अच्छी सोच पैदा कर सके। इसके अलावा एक बार पुन: लघु एवं कुटीर उद्योग की स्थापना एवं उनके विकास के लिए उचित वातावरण बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रशिक्षण देने तथा ब्याज-मुक्त ऋण देकर युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। किसानों को खाली समय में दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन, मोमबत्ती, अगरबत्ती बनाने जैसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस काम में सरकार के अलावा धनी लोगों को भी आगे आना चाहिए ताकि भारत बेरोजगार मुक्त बन सके और प्रगति के पथ पर चलते हुए विकास की नई ऊँचाइयाँ छू सके।

46. भारतीय किसान
अथवा
हमारे अन्नदाता की बदहाल स्थिति

भारत कृषिप्रधान देश है। यहाँ की 70% से अधिक जनसंख्या की आजीविका का साधन कृषि है। यह जनसंख्या भोजन के अलावा अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी खेती पर आश्रित रहती है। कृषि करने वाले ये किसान शहरी तथा अकृषियोग्य क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भोजन उपलब्ध कराकर अन्नदाता की भूमिका निभाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था में किसानों का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री किसानों का महत्व बखूबी समझते थे, तभी उन्होंने 'जय जवान जय किसान' का नारा देकर किसानों को गौरवान्वित कराने का प्रयास किया। स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी किसानों के बारे में कहते थे-'भारत का हृदय गाँवों में बसता है। वहीं

सेवा और श्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान नगरवासियों के अन्नदाता और सृष्टिपालक हैं।'

देश को आजादी दिलाने में भी हमारे देश के किसानों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। देश के अन्नदाता अर्थात् भारतीय किसान का स्मरण करते ही एक दीन-दुर्बल किंतु घोर परिश्रमी और सरल स्वभाव वाले व्यक्ति की मूर्ति हमारी आँखों के सामने घूम जाती है। भारतीय किसान की परिश्रमशीलता और सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना काम करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति को देखकर किसानों की उपेक्षा करने वालों को संबोधित करते हुए राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा है-

यदि तुम होते दीन कृषक तो आँख तुम्हारी खुल जाती,

जेठ माह के तप्त धूप में, अस्थि तुम्हारी घुल जाती।

दाने बिना तरसते रहते, अस्ति तुम्हारी घुल जाती।

मुँह से बात न आती कोई कैसे बढ़-बढ़ बात बनाते तुम।

सचमुच खेती करना अत्यंत ही श्रमसाध्य कार्य है, जिसमें खून-पसीना एक करना पड़ता है। कृषि-कार्य में आराम करने का तो कोई निश्चित समय है ही नहीं। एक भारतीय किसान ऋषियों-मुनियों की तरह ब्रहममुहूर्त में उठकर अपने बैलों तथा अन्य जानवरों को चारा-पानी देकर खेत की ओर चला जाता है। सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना वह खेत में निराई-गुड़ाई, जुताई-बुताई, कटाई आदि काम में जुटा रहता है। धान की रोपाई के समय न झुलसाने वाली गर्मी की परवाह रहती है और न माघ महीने की हड्डुयाँ कैंपा देने वाली सर्दी में खेतों की सिंचाई करने की। उसे निराई-गुड़ाई-कटाई जैसे श्रमसाध्य कार्य सर्दी-गर्मी की परवाह किए बिना करना पड़ता है। उसका कलेवा खेत की मेड़ पर होता है और कभी भोजन भी दोपहरी में खेत के पास स्थित किसी पेड़ के नीचे हो जाता है। उसे अपनी फसलों की रखवाली करते हुए खुले आसमान के नीचे या कि ऐसे नये जक, सात बनी ही है इस प्रकरउसी दिवाँ अवता असाध्या औ को जनक सवाद नमूना होती है।

भारतीय किसान अत्यंत दीन-हीन दशा में जीवन बिताता है। अब भी दूरदराज के स्थानों और दुर्गम जगहों पर भारतीय कृषि मानसून का जुआ बनी हुई है। वहाँ सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना होता है। यदि समय पर वर्षा न हुई तो फसल बोने से लेकर उसके पकने तक संदेह बना रहता है। इसके अलावा उसकी फसलें प्राकृतिक आपदा, असमयवर्षा और ओलावृष्टि के अलावा टिड्डुयों के आक्रमण का शिकार हो जाती हैं। देश का अन्नदाता दूसरों का पेट तो भरता है, पर उसे रूखा-सूखा खाकर जीवन बिताना पड़ता है। वह गरीबी में पैदा होता है, गरीबी में पलता-बढ़ता है और उसी तंगहाली में जीता-मरता है। पेट तो वह जैसे-तैसे भर भी लेता है, पर उसके शरीर पर शायद ही कभी पूरे कपड़े रहते हों। उसका आवास छप्परों में रहता है।

वह सूदखोरों से कर्ज लेकर अपनी खून-पसीने की कमाई ब्याज में देता रहता है। वह कुरीतियों और रुढ़ियों का शिकार होकर आजीवन घोर विपन्नता में दिन बिताता है। प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों विशेषकर 'पूस की रात' में 'होरी', और 'कफ़न' में घीसू माधव के चरित्र के माध्यम से इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

भारतीय किसान का स्वभाव अत्यंत सीधा और सरल होता है। साहूकार, नेता-मंत्री उसका शोषण करते हैं तथा दिवास्वप्न दिखाते हैं। हर बार चुनाव के समय उसकी दशा सुधारने का वायदा किया जाता है, पर अगले चुनाव में ही नेताओं को उसकी याद आती है। उसकी आवश्यकताएँ अत्यंत सीमित होती हैं। वह रूखा-सूखा खाकर भी संतुष्टि की अनुभूति करता है। रूखा-सूखा जो भी मिला

खा लिया, मोटा-महीन जैसा भी वस्त्र मिला पहन लिया और धरती माँ की गोद में विश्राम कर लिया। प्रकृति ' की निकटता पाकर वह स्वस्थ रहता है। उसमें मुनियों-सा त्याग, संतोष तथा गरीबी में भी खुश रहने की प्रवृत्ति होती है तो उसकी हड्डयों में दधीचि की हड्डयों जैसी मजबूती होती है।

वह छल-कपट, ईष्या से दूर रहता है, पर दूसरों के छल-कपट का शिकार हो जाता है। किसानों की इस दयनीय स्थिति के एक नहीं अनेक कारण हैं। सर्वप्रथम उसके पास जमीन की मात्रा सीमित होना है, जिसमें वह अपने खाने भर के लिए अनाज पैदा कर पाता है, जिससे वह अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ ही पूरी कर पाता है। दूसरे भारतीय किसानों का अशिक्षित होना। अशिक्षा के कारण भारतीय किसान अपने अधिकारों के बारे में अनभिज्ञ रहते हैं। वे सरकारी योजनाओं से अनभिज्ञ रहकर उनका लाभ नहीं उठा पाते हैं। उनकी अशिक्षा का सर्वाधिक फायदा साहूकार उठाते हैं जो थोड़े से रुपये उधार देकर उनसे मनचाही राशि पर अँगूठा लगवा लेते हैं। इसके अलावा अशिक्षा के कारण वे बैंकों तक जाने में भयभीत रहते हैं और उनसे कम ब्याज दर पर भी ऋण लेते हुए डरते हैं। उनकी दयनीय दशा का तीसरा कारण सरकार द्वारा की गई उपेक्षा है।

सरकार उनके कल्याण के लिए घोषणाएँ तो करती है, पर ये योजनाएँ कागजों तक ही सीमित रह जाती हैं। भारतीय किसान को उसकी दयनीय दशा से उभारने के लिए सरकारी प्रयास अत्यंत आवश्यक है। सर्वप्रथम किसानों को सरकारी और गैर-सरकारी ऋण से मुक्ति दिलाई जाए तथा उन्हें खाद, बीज और उन्नत यंत्रों के लिए सस्ती दरों पर ऋण दिया जाना चाहिए। उनकी उपज का समर्थन मूल्य बढ़ाया जाना चाहिए तथा उनकी फसल का बीमा करवाना चाहिए ताकि वे प्राकृतिक आपदाओं की मार से बच सकें। इसके अलावा किसानों को मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, दुधारू पशुओं का पालन कर दुग्ध उत्पादन करने जैसे कृषि से जुड़े लघु उद्योगों का प्रशिक्षण देना चाहिए। देश के अन्नदाता की उन्नति के बिना राष्ट्र' की तरक्की की कल्पना करना बेईमानी है। अत: उनकी उन्नति के लिए सरकारी संस्थाओं के अलावा निजी संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए। हमें किसानों को सम्मान देना चाहिए, क्योंकि शहरी लोगों को भोजन मिलना, उनके परिश्रम का ही परिणाम है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने ठीक ही कहा था-

हे ग्राम देवता ! नमस्कार
सोने-चाँदी से नहीं किंतु मिट्टी से तुमने किया प्यार,
हे ग्राम देवता नमस्कार।

47. मेरे सपनों का भारत

स्वर्ग के समान सुखद और सुंदर जिस भू-भाग पर मैं रहता हूँ, दुनिया उसे भारत के नाम से जानती-पहचानती है। प्रकृति ने हमारे देश को मुक्त हस्त से सुंदरता और समृद्ध का खजाना सौंपा है। हमारा देश इतना धनवान हुआ करता था कि प्राचीन काल में इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। यही वह देश है, जहाँ ज्ञान की गंगा बहती थी, और इसी देश ने ज्ञान का आलोक दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाया। इसी देश में दूध की नदियाँ बहती थीं। यह देश शांति का केंद्र रहा है, जहाँ दुनिया भर से लोग शांति की खोज में आया करते थे।

कालांतर में परिस्थितियाँ बदलीं। विदेशी आक्रमणकारियों और अंग्रेजी कुशासन के कारण 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला भारत विपन्नता के जाल में घिर गया। दूध-दही की नदियाँ न जाने क्यों

सूख गई। सारी शांति अशांति में बदल गई और यहाँ गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, अलगाववाद आदि समस्याएँ लगातार बढ़ने लगीं। इससे लोगों का जीवन दुखमय हो गया। मेरे सपनों के भारत में इन समस्याओं के लिए कोई स्थान नहीं होगा। मैं चाहता हूँ कि भारत अपने उस खोए गौरव को पुन: प्राप्त करे और ज्ञान का आलोक बिखेरता हुआ विश्व का सिरमौर बने। जहाँ सारे सुखी और स्वस्थ हों, मैं ऐसे भारत का सपना देखा करता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि हमारे भारत में एक बार पुन: रामराज की स्थापना हो। यद्यपि रामराज की स्थापना उस समय राजतंत्र के माध्यम से हुई थी, पर मैं आधुनिक भारत में रामराज की स्थापना लोकतंत्र के माध्यम से ही करना चाहता हूँ। यहाँ प्रधानमंत्री की लगभग वही स्थिति है जो किसी समय राजा की हुआ करती थी। हमारा नेतृत्व प्राचीन राजाओं राम, कृष्ण, शिवाजी, सम्राट अशोक के समान प्रभावी एवं ओजस्वी हो। वह राम और कृष्ण की तरह ही जनता का शुभचिंतक एवं रक्षक हो। हमारे प्रधानमंत्री के सलाहकार आचार्य चाणक्य जैसे कुशल कूटनीतिज्ञ एवं प्रणेता हों। उनमें 'सादा जीवन उच्च विचार' की भावना हो। वे फैशन तथा दिखावे से दूर रहकर अपने त्यागमयी जीवन से देश के लोगों में प्रेरणा एवं नव उत्साह भर सकें। ऐसे राष्ट्रनायक के मन में लोगों के प्रति सच्ची सहानुभूति हो, वे लोगों के सच्चे हितैषी हों। उनके मन में यह भावना अवश्य होनी चाहिए कि लोगों का सर्वविधि कल्याण ही उनके जीवन का लक्ष्य है। एक राजा को अपने कर्तव्य के प्रति सचेत करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा था-

जासु राज निज प्रजा दुखारी।
सो नृप अवश्य नरक अधिकारी।।

मेरे सपनों के भारत में कुशल नेतृत्व स्वार्थपरता से दूर रहते हुए आदर्शवादी होना चाहिए। उसके शासन-काल में ऐसी परिस्थितियाँ होनी चाहिए कि सभी को अपनी-अपनी योग्यता-क्षमता के अनुरूप कार्य मिले, जिससे सभी को सुखमय जीवन जीने का अवसर मिले। हर हाथ को काम मिलने से आधी समस्याएँ स्वयंमेव हल हो जाएँगी। लोगों को अवसर प्रदान करने में भाई-भतीजावाद, जातिवाद, धार्मिकता, क्षेत्रीयता जैसी संकीर्ण भावनाओं का त्यागकर उनसे ऊपर उठकर काम करना चाहिए ताकि नेतृत्व पर 'अंधा बाँटे रेवड़ी पुनि-पुनि अपने को देय' का आरोप न लगे। इससे योग्य व्यक्तियों को ही योग्य पदों पर सेवाएँ देने का अवसर मिलेगा जो समाज और देश के विकास में सहायक होगा। इससे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का बोलबाला कम होगा। मैं अपने सपनों के भारत में दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव शिक्षा-नीति में चाहूँगा।

वोट के लालच में बच्चें को जबरदस्ती अगली कक्षाओं में उत्तीर्णकर उन्हें मजदूर बनाने की कुचाल बंद होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा-नीति बनानी चाहिए, जिसमें शिक्षकों को मन लगाकर काम करने का अवसर मिले। छात्रों के मन में फेल होने का भय उत्पन्न करना ही होगा ताकि वे अपनी पढ़ाई के प्रति सजग बनें और पढ़कर उत्तीर्ण होना चाहें। उनके मनोमस्तिष्क से नकल की बात निकाल देनी चाहिए। परिश्रमपूर्वक ज्ञानार्जन से वे सुयोग्य अधिकारी और प्रशासक बनकर अपने कर्तव्य का निर्वहन करेंगे, तब रिश्वतखोरी, जालसाजी आदि में कमी आएगी। उस समय विद्वान सम्मान की दृष्टि से देखें जाएँगे। तब लोगों में धन-पिपासा कम होगी। लोग शिक्षा के प्रति जागरूक होंगे। ऐसे वातावरण में नकली डिग्रियाँ खरीदने-बेचने, ट्रांसफर-पोस्टिंग में रिश्वतखोरी, सांसदों-विधायकों का नोट के बदले वोट देने की प्रवृत्ति, गवन, छपले, घोटाले आदि गुजरे समय की बात बनकर रह जाएगी। शिक्षा ही लोक सेवकों में सेवाभाव पैदा कर सकती है। मैं चाहता हूँ कि हमारे

देश में लोगों के मन में यह बात फिर पैदा हो कि 'नर सेवा नाराण सेवा।' अपने सपनों के भारत में मैं चाहता हूँ कि सभी स्वस्थ एवं नीरोग रहें। इसके लिए लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी एवं सुलभता होनी चाहिए। इसके लिए देशभर में नए-नए अस्पताल, स्वास्थ्य-केंद्र खुलने चाहिए, जिससे लोग अपने इलाज के लिए यहाँ-वहाँ न भटकें।

लोगों को दवाइयाँ नि:शुल्क मिलें या अत्यंत उचित दर पर मिलें ताकि ये जनसाधारण की पहुँच में हों। इसके अलावा यहाँ अच्छे डॉक्टरों की कमी न हो। इसके लिए सुयोग्य और प्रशिक्षित डॉक्टर तैयार हों और उनमें सेवाभाव कूट-कूटकर भरा हो। उनका कार्य-व्यवहार इस तरह हो कि मरीज उन्हें ईश्वर का दूसरा रूप समझे। इससे चरक और सुश्रुत का सपना साकार होता दिखेगा। मैं अपने सपनों के भारत में चाहता हूँ कि सभी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो। इसके लिए सबसे पहले कृषि-उत्पादन बढ़ाने पर इतना जोर दिया जाना चाहिए कि हमारे देश में जरूरत से अधिक अनाज पैदा हो। यहाँ अनाज का बफर स्टॉक हो ताकि कोई भूखे पेट न सोए और सभी को पेटभर भोजन मिले। इसके अलावा वस्त्र-उत्पादन भी इस तरह हो कि हर तन को पूरी तरह ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र मिले। अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा कोई भी नग्न या अर्धनग्न नजर न आए।

लोगों की तीसरी मूलभूत आवश्यकता है-उनके सिर पर छत होना। मैं चाहता हूँ कि हर देशवासी के सिर पर छत हो। इसके लिए सस्ते मकान बनाकर यह जरूरत पूरी की जा सकती है। किसी देश में लोगों को सुख-सुविधाओं का लाभ तभी मिलता है, जब वे लोगों की पहुँच में हों। अर्थात् उनका मूल्य देशवासियों की जेब के अनुरूप हो। इसके लिए महँगाई पर तत्काल अंकुश लगाने की जरूरत है। महँगाई पर अंकुश लगाए बिना सभी को सुविधाएँ दिलाने की बात सोचना बेईमानी होगी। मैं चाहता हूँ कि रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा स्कूटर, कार, फ्रिज, टेलीविजन, फोन जैसी सुविधाएँ इतनी सस्ती हो कि वे हर एक को सुलभ हो सकें। मैं चाहता हूँ कि मेरे सपनों के भारत में न्याय-व्यवस्था सुलभ, सरल और त्वरित हो।

लोगों का देश की न्याय-प्रणाली में विश्वास हो। यहाँ संचार, परिवहन, यातायात की सुविधाएँ उन्नत हों। लोगों में परस्पर सौहार्द एवं भाईचारा हो। जातीयता-धार्मिक कट्टरता, क्षेत्रीयता, भाषायी विरोध आदि से हमारा देश मुक्त हो। यहाँ लोगों में एकता हो ताकि समय पड़ने पर देश के दुश्मनों और बाहरी शक्तियों से मुकाबला किया जा सके। इसके अलावा यहाँ की जनसंख्या-वृद्ध पर अंकुश लगे ताकि सेवाओं का इतना बँटवारा न हो जाए कि लोगों के हिस्से में उनका टुकड़ा भी न आए।

अंत में मैं यही चाहूँगा कि यहाँ रोजगार के इतने अवसर हों कि सभी को काम मिले, उनकी आय अच्छी हो ताकि वे स्वस्थ, नीरोग रहते हुए राष्ट्र की उन्नति में अपना अमूल्य योगदान दे सकें और हमारा देश दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता हुए अपने प्राचीन गौरव को पुन: प्राप्त कर ले।

48. मनोरंजन के आधुनिक साधन

अथवा

मनोरंजन के बढ़ते साधन

मनुष्य परिश्रमी प्राणी है। परिश्रम से उसका संबंध आदि काल से रहा है। आदि काल में पशुओं जैसा जीवन बिताने वाला मनुष्य अपने भोजन और अपनी सुरक्षा के लिए परिश्रम किया करता था। इससे उत्पन्न थकान से मुक्ति पाने के लिए उसे मनोरंजन की आवश्यकता हुई होंगी। मनुष्य ने उसी समय अर्थात् आदि काल से ही मनोरंजन के साधन ढूँढ़ लिए होंगे। मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता . की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसके मनोरंजन के साधनों में भी बढ़ोत्तरी और बदलाव आता गया।

आज प्रत्येक आयुवर्ग की रुचि के अनुसार मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग कर लोग आनंदित हो रहे हैं।

प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन प्राकृतिक वस्तुएँ और मनुष्य के निकट रहने वाले जीव-जंतु थे। वह पालतू पशुओं कुत्ता, खरगोश, बिल्ली, भेड़ा (नर भेड़) से मनोरंजन करता था। वह तोता, कबूतर, मुर्गा, तीतर आदि पालकर उन्हें लड़ाकर अपना मनोरंजन किया करता था। इसके अलावा वह पत्थर के टुकड़ों, कपड़े की गेंद, गुल्ली-डंडा, दौड़, घुड़दौड़ आदि से भी मन बहलाया करता था। स्वतंत्रता के बाद मनोरंजन के साधनों में भरपूर बदलाव आया।

मनोरंजन के आधुनिक साधनों में रेडियो सबसे लोकप्रिय सिद्ध हुआ। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों की स्थापना और उन पर प्रसारित क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों ने इसकी आवाज को घर-घर तक पहुँचाया। आकार में छोटा होना, लाने-ले जाने में सरल होना, बैट्री का प्रयोग, बिजली की अनिवार्यता न होना इसकी लोकप्रियता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए। दूरदर्शन की खोज से पहले यह हमारे देश की करोड़ों जनता का सस्ता और सुलभ साधन था। उस समय यह हर अमीर-गरीब की जरूरत बन गया था, विशेषकर श्रमिक वर्ग की। रेडियो की एक विशेषता यह थी कि यह काम करने में बाधक नहीं साधक सिद्ध होता था। मजदूर इस पर कार्यक्रम, गीत-संगीत आदि सुनते हुए अपना मनोरंजन करता था तथा बिना थकान महसूस किए काम करता जाता था।

गृहणियाँ इसे सुनते हुए रसोई में काम करती थीं तो प्रौढ़ इसके कार्यक्रम सुनकर मनोरंजन करते थे। रेडियो छात्रों के लिए भी कम उपयोगी न था। उनके लिए विविध शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे। इसके कार्यक्रमों में इतनी विविधता होती थी कि हर आयुवर्ग की रुचि का ध्यान रखकर इसका प्रसारण किया जाता था। एफ०एम० चैनलों के प्रसारण से एकबार फिर रेडियो की लोकप्रियता में वृद्ध हुई। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के माध्यम से लोगों से जुड़ने की जो पहल की है, उसका साधन रेडियो ही है। पहाड़ी, दुर्गम और दूर-दराज के क्षेत्रों में मनोरंजन का सर्वाधिक सुलभ, सस्ता और लोकप्रिय साधन रेडियो है। मनोरंजन के आधुनिक साधनों में दूरदर्शन जितनी तेजी से लोकप्रिय हुआ है, उतनी तेजी से कोई अन्य साधन नहीं। यह उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग सभी को समान रूप से आकर्षित करता है।

रेडियो के माध्यम से हम प्रसारित कार्यक्रमों की आवाज ही सुन पाते थे, परंतु दूरदर्शन पर आवाज के साथ-साथ विभिन्न अदाओं और हाव-भाव वाले चित्र भी साक्षात् रूप में देखे जाते हैं। ये चित्र मानव-जीवन का प्रतिबिंब होते हैं, जिनसे दर्शक स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करता है। दूरदर्शन के माध्यम से हम घर बैठे-बिठाए उन स्थानों और घटनाओं को देख सकते हैं, जिन्हें हम कभी सोच भी नहीं सकते थे। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में इतनी विविधता होती है कि हर आयुवर्ग इसकी ओर आकर्षित हो जाता है। इस पर बच्चों के लिए कार्टून, छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम, युवाओं के लिए धारावाहिक, फ़िल्में और खेलों का सजीव प्रसारण, प्रौढ़ों के लिए धारावाहिक, चर्चाएँ फ़िल्में आदि प्रसारित की जाती हैं। इसके अलावा महिलाओं और युवाओं के बीच दूरदर्शन अत्यधिक लोकप्रिय है। इतना ही नहीं किसानों, व्यापारियों, उद्यमियों आदि के लिए भी विविध रूपों में जानकारियाँ दी जाती हैं। वास्तव में दूरदर्शन ने अपने कार्यक्रमों से जनजीवन में विशेष जगह बना लिया है।

टेपरिकॉर्डर और वीडियो क्रमश: रेडियो और दूरदर्शन के समांतर उनके थोड़े सुधरे रूप हैं। इनके माध्यम से मनचाहे कार्यक्रमों को मनचाहे समय पर सुना और देखा जा सकता है, क्योंकि इन कार्यक्रमों का रिकॉर्डेड रूप इन पर प्रसारित किया जाता है। लोगों का सामूहिक मनोरंजन करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में भी इनका उपयोग किया जा रहा है। वीडियोगेम और कंप्यूटर पर खेले जाने वाले कुछ खेल भी बच्चों और युवाओं के मनोरंजन के साधन हैं। इन साधनों की एक कमी यह है कि इन्हें घर में बैठकर देखना या सुनना पड़ता है।

घर से बाहर मैदानों की ओर चलकर लोग विभिन्न खेलों के माध्यम से भी अपना मनोरंजन करते हैं। खेल मनोरंजन के अलावा स्वास्थ्यवर्धन के भी अच्छे साधन हैं। क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, टेनिस, दौड़, तैराकी, व्यायाम, घुड़सवारी आदि घर से बाहर खेले जाने वाले खेलों के रूप में हमारा मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं स्वास्थ्यवर्धन करते हैं। ताश, लूडो, शतरंज, कैरमबोर्ड आदि खेलों द्वारा घर बैठे-बिठाए मनोरंजन किया जाता है। आजकल पर्यटन द्वारा मनोरंजन करने की प्रवृत्ति जोरों पर है। पहले यह प्रवृत्ति राजाओं और धन-सम्पन्न लोगों तक ही सीमित थी, परंतु वर्तमान में मध्यम और निम्न वर्ग भी अपनी आय के अनुरूप दूर था निकट के स्थानों पर कुछ दिनों के लिए भ्रमण पर जाकर मनोरंजन करने लगा है। इस काम को सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके लिए नए-नए पर्यटन केंद्र खोले जा रहे हैं और वहाँ तक पहुँचने के लिए सड़कों तथा यातायात के साधनों का विकास किया जा रहा है। इन पर्यटन स्थलों पर ठहरने और खाने-पीने की उत्तम व्यवस्था होने से लोगों का रुझान पर्यटन द्वारा मनोरंजन करने की ओर झुका है।

पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक स्थल, प्राचीन इमारतें, समुद्री इलाके, पहाड़ और अभयारण्य लोगों को खूब पसंद आते हैं। गोवा, केरल, ऊँटी, माउंटआबू, जयपुर, अजंता-एलोरा की गुफाएँ, शिमला, मसूरी, हरिद्वार, नैनीताल, कौसानी, दार्जिलिंग, सिक्किम, जम्मू-कश्मीर तथा कर्नाटक आदि कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। इसके अलावा विभिन्न अभयारण्य, म्यूजियम, वन-उपवन आदि सरकार द्वारा विकसित किए गए हैं। मनोरंजन के लिए खेल सर्वोत्तम साधन है। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने जगह-जगह स्टेडियम और खेल-परिसरों का निर्माण करवाया है। इनमें समय-समय पर खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। ये स्टेडियम क्रिकेट और फुटबॉल के आयोजन के समय खचाखच भर जाते हैं। इनसे लोगों का स्वास्थ मनोरंजन होता है तथा जीवन उमंग एवं उत्साह से भर जाता है। इसके अलावा खेल-संबंधी अन्य प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें लोगों का मनोरंजन होता है।

शिक्षित वर्ग के मनोरंजन का अन्य साधन है-पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ना तथा उनसे आनंद प्राप्त करना। इसके अलावा कवि-सम्मेलन, नाट्यमंचन, मुशायरे का आयोजन भी लोगों के मनोरंजनार्थ किया जाता है। हास्य कवियों की कविताएँ इस दिशा में अत्यधिक लोकप्रिय हुई हैं। वर्तमान काल में विज्ञान की प्रगति के कारण मोबाइल फोन में ऐसी तकनीक आ गई है, जिससे गीत-संगीत सुनने, फ़िल्में देखने का काम अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है। इससे भी दो कदम आगे बढ़कर फोटो खींचने एवं सजीव रिकार्डिंग की सुविधा के कारण अब मनोरंजन की दुनिया सिमटकर मनुष्य की जेब में समा गई है। इस प्रकार आज अपनी आय के अनुसार व्यक्ति अपना मनोरंजन कर सकता है क्योंकि मनोरंजन की दुनिया बहुत विस्तृत हो चुकी है।

कार्यालयी पत्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने भावों-विचारों और सूचनाओं को दूसरे तक संप्रेषित करना चाहता है। इस कार्य के लिए पत्र सर्वाधिक उत्तम साधन है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने इच्छित व्यक्ति से अपने मन की बात आसानी से कह सकता है। इसके अतिरिक्त, आज का दैनिक जीवन बहुत-जटिल हो गया है। मनुष्य को सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं आदि से संबंध स्थापित करने पड़ते हैं। इस कार्य में पत्र बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ है।

पत्र के प्रकार

पत्र अनेक प्रकार के होते हैं। विषय, संदर्भ, व्यक्ति और स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के पत्रों को लिखने का तरीका भी अलग-अलग होता है। आम तौर पर पत्र दो प्रकार के होते हैं-

(क) अनौपचारिक-पत्र

(ख) औपचारिक-पत्र

(क) अनौपचारिक-पत्र

इस तरह के पत्र निकट संबंधियों तथा मित्रों को लिखे जाते हैं। इसमें पत्र पाने वाले तथा लिखने वाले के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिक तथा मित्रता का भी हो सकता है। ऐसे पत्रों को व्यक्तिगत-पत्र भी कहा जाता है। इन पत्रों की विषयवस्तु निजी व घरेलू होती है। इनका स्वरूप संबंधों के आधार पर निर्धारित होता है। इन पत्रों की भाषा-शैली में कोई औपचारिकता नहीं होती तथा इनमें आत्मीयता का भाव व्यक्त होता है।

(ख) औपचारिक-पत्र

इस तरह के पत्रों में एक निश्चित शैली का प्रयोग किया जाता है। सरकारी, गैर-सरकारी संदभों में औपचारिक स्तर पर भेजे जाने वाले पत्रों को औपचारिक-पत्र कहा जाता है। इनमें व्यावसायिक, कार्यालयी और सामान्य जीवन-व्यवहार के संदर्भ में लिखे जाने वाले पत्रों को शामिल किया जाता है।

औपचारिक-पत्रों के दो प्रकार के होते हैं-

1. **सरकारी, अर्धसरकारी और व्यावसायिक संवभाँ में लिखे जाने वाले पत्र**-इनकी विषयवस्तु प्रशासन, कार्यालय और कारोबार से संबंधित होती है। इनकी भाषा-शैली का स्वरूप निश्चित होता है। इनका प्रारूप भी प्राय: निश्चित होता है। सरकारी कार्यालयों, बैंकों और व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा किया जाने वाला पत्र-व्यवहार इस वर्ग के अंतर्गत आता है। विभिन्न पदों के लिए लिखे गए आवेदन-पत्र भी इसी वर्ग के हैं।
2. **सामान्य जीवन व्यवहार तथा अन्य विशिष्ट संदर्भों में लिखे जाने वाले पत्र**-ये पत्र परिचित एवं अपरिचित व्यक्तियों को तथा विविध क्षेत्रों से संबद्ध अधिकारियों को लिखे जाते हैं। इनका विषयवस्तु आम जीवन से संबद्ध होती है। इनका प्रारूप, स्थिति व संदर्भ के अनुसार परिवर्तन हो सकता है। इसके अंतर्गत शुभकामना-पत्र, बधाई-पत्र, निमंत्रण-पत्र, शोक संवेदना-पत्र, शिकायती-पत्र, समस्यामूलक-पत्र, संपादक के नाम पत्र आदि आते हैं।

पत्र के अंग

पत्र का वर्ग कोई भी हो, उसके चार अंग होते हैं-

1. पता और दिनांक

2. संबोधन व अभिवादन शब्दावली
3. पत्र की सामग्री या कलेवर
4. पत्र की समाप्ति या समापन भाग

1. पता व दिनांक

अनौपचारिक-पत्र के बाई ओर ऊपर कोने में पत्र लेखक अपना पता लिखता है और उसके नीचे तिथि दी जाती है औपचारिक-पत्र में प्रेषक के विभाग का नाम, पता व दिनांक दी जाती है। इसके बाद बाई ओर प्राप्तकर्ता का नाम, पद, विभाग आदि दिया जाता है।

2. संबोधन तथा अभिवादन

अनौपचारिक स्थिति में-

- पत्र जिसे लिखते हैं उसे संबोधित करते हैं; जैसे-आदरणीय पिता जी, आदरणीय दादा जी, पूजनीया माता जी, श्रद्धेय ताऊ जी, आदरणीय भैया, प्यारे भाई, प्रिय मित्र आदि।
- इसके नीचे सम्मानसूचक शब्द अवश्य लिखते हैं; जैसे-प्रणाम, सादर प्रणाम, आशीर्वाद, चरण-स्पर्श, प्रसन्न रहो अािद
- अभिवादन लिखने के बाद पूर्णविराम अवश्य लगाना चाहिए; जैसे

  पूज्य पिता जी,
  प्रणाम।

  औपचारिक स्थिति में–

- पत्र शुरू करने से पहले पत्र लिखने का कारण यानी कि विषय अवश्य लिखना चाहिए।
- विषय लिखने के बाद संबोधन लिखा जाता है; जैसे-श्रीमान, महोदय, मान्यवर आदि।

3. पत्र की सामग्री या कलेवर

अभिवादन के बाद पत्र की सामग्री लिखी जाती है। इसे हम कलेवर भी कह सकते हैं। इसमें हम अपनी बात कहते हैं। कलेवर के संबंध में निम्नलिखित सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए-

- कलेवर की भाषा सरल होनी चाहिए तथा वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए।
- लेखक का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए।
- कलेवर बहुत विस्तृत नहीं होना चाहिए।
- सरकारी-पत्र में यदि काटकर कुछ लिखा जाता है तो उस पर छोटे हस्ताक्षर कर देने चाहिए।
- पत्र में पुनरुक्ति नहीं होनी चाहिए।
- पत्र लिखते समय 'गागर में सागर' भरने की शैली को अपनाया जाना चाहिए।

4. पत्र की समाप्ति या समापन भाग

अनौपचारिक-पत्र के अंत में लिखने वाले और पाने वाले की आयु, अवस्था तथा गौरव-गरिमा के अनुरूप स्वनिर्देश बदल जाते हैं; जैसे-

तुम्हारा, आपका, स्नेही, शुभचिंतक, विनीत आदि।

औपचारिक-पत्रों का अंत प्राय: निर्धारित स्वनिर्देश द्वारा होता है; यथा-भवदीय, आपका, शुभेच्छु आदि। इसके बाद पत्र लेखक के हस्ताक्षर होते हैं। औपचारिक-पत्रों में हस्ताक्षर के नीचे प्राय: प्रेषक का पूरा नाम और पद का नाम लिखा जाता है।

विशेष– परीक्षा में प्रेषक के नाम के स्थान पर 'क, ख, ग, ' लिखना चाहिए। पते के स्थान पर 'परीक्षा भवन' तथा नगर के स्थान पर 'क, ख, ग,' लिख देना चाहिए। इससे उत्तर-पुस्तिका की गोपनीयता भंग नहीं होती।

I. आवेदन-पत्र

प्रश्न 1:

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली को विभिन्न विषयों के प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता है। इस पद के लिए शिक्षा निदेशक को एक आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
शिक्षा निदेशक
शिक्षा निदेशालय
दिल्ली।
विषय-प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की भर्ती हेतु आवेदन-पत्र।
महोदय
मुझे 05 फरवरी, 20xx को प्रकाशित दैनिक जागरण समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि शिक्षा निदेशालय को विभिन्न विषयों के प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता है। प्रार्थी भी स्वयं को एक उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

नाम – मनोज कुमार

पिता का नाम – श्री राम स्वरूप

जन्मतिथि-25 दिसंबर,1991

पता – सी/125 सागरपुर दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी॰बी॰एस॰ई॰	2006	70%
बारहवीं कक्षा	–	सी॰बी॰एस॰ई॰	2008	79%
बी. ए.	–	दिल्ली विश्वविद्यालय	2011	72%
एम. ए.	–	इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय	2013	76%

अनुभव– अभिनव पब्लिक स्कूल में अंग्रेजी शिक्षक पद पर एक साल अंशकालिक।

घोषणा– मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सेवा का अवसर मिलने पर पूरी निष्ठा एव ईमानदारी से कार्य करूँग

धन्यवाद

भवदीय

मनोज कुमार

हस्ताक्षर.............

दिनांक 07 फरवरी, 20XX

संलग्न–शैक्षणिक एवं अनुभव
प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति

प्रश्न 2:

भारतीय स्टेट बैंक मुंबई के महाप्रबंधक को लिपिक पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

महाप्रबंधक
भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
नारीमन प्वाइंट मुंबई।
विषय-लिपिक पद हेतु आवेदन-पत्र।

मान्यवर,

दिनांक 27 जनवरी, 20xx के महाराष्ट्र टाइम्स में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके कार्यालय में लिपिकों की आवश्यकता है। मैं स्वयं को इस पद के योग्य मानकर आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रही हूँ, मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-

नाम – सुमन शर्मा

पिता का नाम – श्री विजय कुमार

जन्मतिथि – 14 दिसंबर, 1987

पता – ए 4/75, गोकुलपुरी, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2002	65%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2004	72%
बी. ए.	–	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	2007	65%
एम. ए.	–	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	2009	62%
कंप्यूटर कोर्स	–	द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (एफटैक कंप्यूटर लर्निंग सेंटर)	2011	

अनुभव– सहारा कोआपरेटिव बैंक में क्लर्क पद पर तीन साल।

आशा है कि आप मेरी योग्यताओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचारकर सेवा का अवसर प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीया

सुमन शर्मा

हस्ताक्षर..............

दिनांक 02 फरवरी, 20xx

संलग्न–शैक्षणिक एवं अनुभव
प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति

प्रश्न 3:

सुविधा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रा० लिमिटेड जालंधर पंजाब को मार्केटिंग एक्जक्यूटिव पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

प्रबंधक
सुविधा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रा० लिमिटेड
जालधर पंजाब।
विषय-मार्केटिंग एक्जक्यूटिव पद के लिए आवेदन-पत्र।

महोदय,

चंडीगढ़ से प्रकाशित दिनांक 25 फरवरी, 20xx के पंजाब केसरी समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि सुविधा इलेक्ट्रॉनिक्स को कुछ मार्केटिंग एक्जक्यूटिव की आवश्यकता है स्वयं को इस पद के योग्य समझते हुए मैं अपना आवेदन-पत्र प्रेषित कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

नाम – सौरभ सैनी

पिता का नाम – श्री फूल सिंह सैनी

जन्मतिथि – 10 जुलाई, 1992

पता – बी/25, राजा गार्डन, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई०	2006	62%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई०	2008	73%
बी. बी. ए.	–	पंजाब टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2011	70%
एम. बी. ए.	–	पंजाब विश्वविद्यालय	2013	73%

अनुभव– फेना डिटर्जेंट कंपनी में एक वर्ष का अनुभव।

आशा है कि आप सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

सौरभ सैनी

हस्ताक्षर.............

दिनांक 28 फरवरी, 20XX

संलग्न–शैक्षणिक तथा प्रशिक्ष
संबंधी प्रपत्रों की छाया प्रति

प्रश्न 4:

खादी ग्रामोदयोग बोर्ड, किंग्सवे कैंप, दिल्ली के महाप्रबंधक को विक्रय प्रतिनिधि (सेल्स एक्जक्यूटिव) पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

महप्रबंधक
खादी ग्रामोद्योग
किंग्सवे कैंप, दिल्ली।

विषय-विक्रय प्रतिनिधि पद हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 15 सितंबर, 20xx के ‘पंजाब केसरी’ समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि गांधी जयंती के

अवसर पर खादी एवं हथकरघा की बनी वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने हेतु इस बोर्ड को विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। इस पद के लिए मैं भी आवेदन-पत्र भेज रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

नाम – आशीष सैनी

पिता का नाम – श्री फूल सिंह सैनी

जन्मतिथि – 15 दिसंबर, 1991

पता – wz15, मौर्या इंक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० बोर्ड	2006	72%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० बोर्ड	2008	80%
बी. बी. ए.	–	पंजाब टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2011	85%
एम. बी. ए.	–	पंजाब टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2013	83%

अनुभव– भारत हैंडलूम में अंशकालिक विक्रय प्रतिनिधि– दो साल।

घोषणा– उपर्युक्त विवरण पूर्णतया सत्य है। इसमें न कुछ झूठ है और न छिपाया गया है। मैं आपको आश्वस करता हूँ कि सेवा का मौका मिलने पर मैं आपको पूर्णतया संतुष्ट रखने का प्रयास करूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

आशीष सैनी

हस्ताक्षर.............

दिनांक 16 सितंबर, 20XX

संलग्न–समस्त प्रमाण पत्रों एवं अनुभव प्रमाणपत्र की छाया प्रति

प्रश्न 5:

दिल्ली नगर निगम सिविल लाइंस क्षेत्र, दिल्ली के आयुक्त को प्राथमिक अध्यापकों की आवश्यकता है। इस पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए। आप विकास कुमार ए 2/127, अभिनव इंक्लेव, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली के निवासी हैं।

उत्तर –

प्रति,

आयुक्त
दिल्ली नगर निगम
सिविल लाइस क्षेत्र
16, राजपुर रोड, दिल्ली।

विषय-प्राथमिक अध्यापक पद हेतु आवेदन-पत्र।

मान्यवर,

दिनांक 15 जनवरी, 20xx के 'जनसत्ता' दैनिक समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि सिविल लाइंस क्षेत्र में प्राथमिक कक्षा के बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापकों के कुछ पद रिक्त हैं। मैं भी इस पद के लिए अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है-

नाम – विकास कुमार

पिता का नाम – श्री राम रतन

जन्मतिथि – 10 अक्टूबर, 1992

पता – A2/127, अभिनव इंक्लेव, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	78%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2009	85%
जे. बी. टी.	–	डाइट केशवपुरम, दिल्ली	2011	68%
कंप्यूटर कोर्स	–	एकवर्षीय	2012	
सीटी. ई. टी	–	सी०बी०एस०ई०	2013	66%

अनुभव– नवोदय शिक्षा संस्थान में प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने का एक साल का अनुभव।

आशा है कि आप मेरी योग्यताओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए सेवा का अवसर प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

विकास कुमार

हस्ताक्षर.............

दिनांक 20 जनवरी, 20XX

संलग्न–शैक्षणिक प्रमाण-पत्रों एव
अनुभव प्रमाण-पत्र की छाया प्रति

प्रश्न 6:

स्वास्थ्य मंत्रालय, दिल्ली के निदेशक को कंप्यूटर टाइपिस्ट के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
निदेशक
स्वास्थ्य मंत्रालय
दिल्ली।
विषय-कप्यूटर टाइपिस्ट पद के लिए आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 14 फरवरी, 20xx के 'नवभारत टाइम्स' समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके विभाग में कंप्यूटर टाइपिस्ट के पद रिक्त हैं। प्रार्थी स्वयं को इस पद के योग्य मानते हुए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

नाम – पंकज सिंह

पिता का नाम – श्री राम सिंह

जन्मतिथि – 15 अप्रैल, 1991

पता – बी 4/126, रामा गार्डन, बुद्धविहार, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	73%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	78%
बी. सी. ए.	–	एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा, गौतमबुद्ध नगर	2010	72%
एम. सी. ए.	–	एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा, गौतमबुद्ध नगर	2012	72%
टंकण प्रशिक्षण	–	छह माह का पाठ्यक्रम	2013	

अनुभव– चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट दिल्ली में कंप्यूटर आपरेटर पद पर एक साल (अंशकालिक)।

घोषणा– मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरे ज्ञान से पूर्णतया सत्य हैं। इनमें न कुछ झूठ और न छिपाया गया है।

आशा है कि आप मेरी योग्यताओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए आप मुझे सेवा का अवसर प्रदान करेंगे

सधन्यवाद

प्रार्थी

पंकज सिंह

हस्ताक्षर.............

दिनांक 18 फरवरी, 20XX

संलग्न–प्रमाण-पत्रों एवं अनुभव प्रमाण–पत्र की छायांकित प्रति

प्रश्न 7:

किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में 'पत्रकार' पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक
दैनिक जागरण
सेक्टर 62,

गौतम बुद्ध नगर, नोएडा।

विषय-'पत्रकार' पद हेतु आवेदन-पत्र।

मान्यवर

दिनांक 30 जनवरी, 20xx को इस प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में छपे विज्ञापन संख्या 007/2013 से ज्ञात हुआ कि आपके प्रकाशन समूह को कुछ पत्रकारों की आवश्यकता है। इस पद के लिए मैं भी अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-

नाम – मयंक मौर्य

पिता का नाम – श्री प्रकाश चंद

जन्मतिथि – 15 जुलाई, 1990

पता – ए 4/120, महावीर इक्लेव, उत्तमनगर, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	80%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	75%
बी. ए.	–	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	2010	63%
पत्रकारिता डिप्लोमा	–	जे. एन. यू. दिल्ली	2012	प्रथम श्रेणी

कार्यानुभव– सांध्य टाइम्स (दिल्ली से प्रकाशित) में 20 नवंबर, 2012 से अब तक।

घोषणा– मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे सेवा का अवसर प्रदान किया जाता है तो मैं अप कार्य-व्यवहार से आपको संतुष्ट रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

धन्यवाद

प्रार्थी

मयंक मौर्य

हस्ताक्षर.............

दिनांक 02 फरवरी, 20XX

संलग्न–शैक्षणिक योग्यताओं एवं अनुभव प्रमाण-पत्र की छायांकित प्रति।

प्रश्न 8:

‘साथी’ नामक स्वयंसेवी संस्था ‘जो आलमबाग, लखनऊ, उ० प्र० में स्थित है’ को कुछ स्वयंसेवियों की जरूरत है, जिन्हें निकटवर्ती बस्तियों एवं गाँवों में लोगों के बीच एड्स के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस संस्था के प्रबंधक को एक आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

प्रबंधक महोदय

‘साथी’ स्वयंसेवी संस्था

आलमबाग, लखनऊ (उ० प्र०)।

विषय-स्वयंसेवी की भर्ती के संबंध में।

मान्यवर,

दिनांक 05 जनवरी, 20xx को लखनऊ से प्रकाशित ‘अमर उजाला’ समाचार-पत्र में छपे विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपकी संस्था को एड्स के बारे जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वयंसेवियों की जरूरत है। प्रार्थी भी इसी संबंध में अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-

नाम – अर्पित सिंह कुशवाहा

पिता का नाम – श्री गोपाल सिंह कुशवाहा

जन्मतिथि – 19 मार्च, 1991

पता – ग्राम-रामपुर, पो०-ऊँचहरा, जनपद-उन्नाव (उ० प्र०)।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	मा॰ शि॰ प॰ इलाहाबाद उ॰ प्र॰	2007	63%
बारहवीं कक्षा	–	मा॰ शि॰ प॰ इलाहाबाद उ॰ प्र॰	2009	73%
बी. ए.	–	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2012	65%
लोकसंपर्क में द्विवर्षीय डिप्लोमा	–	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2014	प्रथम श्रेणी

अनुभव– 'सहयोग' संस्था में एक वर्ष का कार्यानुभव।

आशा है कि आप सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।

सधन्यवाद

प्रार्थी

अर्पित सिंह कुशवाहा

हस्ताक्षर.............

दिनांक 10 जनवरी, 20XX

संलग्न–शैक्षणिक एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति

प्रश्न 9:

पंकज प्रकाशन प्रा॰ लि॰ दिल्ली को डी. टी. पी. आपरेटर की आवश्यकता है। इस पद हेतु अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए व्यवस्थापक को आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

व्यवस्थापक

पंकज प्रकाशन प्रा॰ लि॰

दिल्ली।

विषय-डी. टी. पी. आपरेटर हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 10 फरवरी, 20xx को प्रकाशित 'टाइम्स ऑफ इंडिया' अंग्रेजी दैनिक समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके प्रकाशन को डी. टी. पी. आपरेटर की आवश्यकता है। इस संबंध में मैं अपनी योग्यतओं का उल्लेख करते हुए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-

नाम – अनुराग कुमार

पिता का नाम – श्री राम प्रताप वर्मा

जन्मतिथि – 10 सितबर, 1990

पता – बी 323, इंद्रप्रस्थ कालोनी, आनंद विहार, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ –

दसवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	55%
बारहवीं कक्षा	–	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	58%
बी. ए.	–	पत्राचार संस्थान, दिल्ली	2010	56%

व्यावसायिक योग्यता –

(1) पुस्तक प्रकाशन में द्विवर्षीय डिप्लोमा वाई. एम. सी. ए. से 2012

(2) कंप्यूटर प्रशिक्षण एकवर्षीय डिप्लोमा एन. आई. आई. टी. से 2013

अनुभव– ओजस्वी प्रकाशन में कंप्यूटर आपरेटर मार्च 2013 से अब तक।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अपनी सेवाओं से मैं आपको संतुष्ट रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

सधन्यवाद

भवदीय

अनुराग कुमार

हस्ताक्षर..............

दिनांक 15 फरवरी, 20XX

संलग्न–समस्त शैक्षणिक, व्यावसायिक योग्यताओं एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति

II. शिकायत, समस्या/सुझाव एवं अन्य पत्र

प्रश्न 10:

आप प्रगति मैदान में आयोजित पुस्तक मेला देखने गए थे। वहाँ कुछ पुस्तकें खरीदते समय आपका ब्रीफकेस गायब हो गया। इस ब्रीफकेस और उसमें रखे सामान की जानकारी देते हुए आई पी. एक्सटेंशन के थानाध्यक्ष के नाम पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

थानाध्यक्ष महोदय
थाना आई पी. एक्सटेंशन
दिल्ली।
विषय-पुस्तक मेले में खोए ब्रीफकेस के संबंध में।
महोदय,
विनम्र निवेदन यह है कि प्रगति मैदान में पुस्तक मेले का आयोजन किया गया था। इस मेले में उच्चकोटि की गुणवत्ता वाली दुर्लभ पुस्तकें उचित मूल्य पर बेची जा रही थीं। कुछ पुस्तकें खरीदने के उद्देश्य से मैं भी मेले में आया था। एक प्रकाशन स्टाल पर कुछ पुस्तकें खरीदते समय मेरा ब्रीफकेस चोरी हो गया। इसमें पाँच हजार रुपये नकद, चेकबुक, परिचय-पत्र के अलावा अन्य महत्वपूर्ण कागजात थे। वी. आई पी. कंपनी के काले रंग के इस ब्रीफकेस को मैंने चाँदनी चौक से दो दिन पूर्व ही खरीदा था, जिसकी रसीद मेरे पास है। मैंने आसपास इसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की पर सारा प्रयास व्यर्थ गया।
आपसे निवेदन है कि इस सूचना को दर्ज कर इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें तथा मिलने पर निम्न पते पर सूचित करने का कष्ट करें।
धन्यवाद

प्रार्थी
उन्मुक्त सिंह
ग्राम व पोस्ट – रामपुर
जनपद – वाराणसी (उ० प्र०)।

प्रश्न 11:

आपके मोहल्ले में बिजली की आपूर्ति अनियमित एवं अनिश्चित है। प्राय: वोल्टेज कम या अधिक होती रहती है। इस संबंध में अपने जनपद मुख्य अभियंता को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
मुख्य अभियंता
उ० प्र० राज्य विद्युत निगम लि०
जनपद-लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

विषय-बिजली की अघोषित कटौती एवं बढ़ते संकट के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले 'निराला नगर' की विद्युत संबंधी समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। श्रीमान जी, उत्तर प्रदेश की राजधानी एवं महानगर जैसा विशिष्ट शहर होने के बाद भी यहाँ बिजली की भयंकर समस्या का सामना करना पड़ रहा है। मई-जून में यह समस्या अपने चरम पर पहुँच जाती है। यहाँ बिजली के आने और जाने का कोई समय निश्चित नहीं है। इसके अलावा बिजली का वोल्टेज कभी अचानक कम तो कभी अचानक अधिक हो जाता है। इससे हमारे घरों के बहुमूल्य उपकरण-रेफ्रीजरेटर, टेलीविजन, कंप्यूटर सेट खराब हो चुके हैं।
कई बार तो यह वोल्टेज इतना कम होता है कि सी. एफ. एल. जुगनू जैसे चमकते प्रतीत होते हैं। सवेरे जब बच्चों के स्कूल जाने तथा लोगों के काम पर जाने का समय होता है, तब बिजली का अचानक चले जाना कितना कष्टप्रद होता है, इसका आप सहज अनुमान लगा सकते हैं।
आपसे प्रार्थना है कि इस संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करने की कृपा करें ताकि विद्युत आपूर्ति सुचारु हो सके।
सधन्यवाद
भवदीय
रामकरन शर्मा
17/4 बी निराला नगर
लखनऊ, उ० प्र०।
दिनांक 10 मई, 20xx

प्रश्न 12:

आपका बिजली का बिल इस महीने कई गुना बढ़कर आ गया है, जबकि आपकी बिजली की खपत अन्य महीनों जैसी है। इस बढ़े बिल की शिकायत करते हुए एन. डी. पी. एल. के मुख्य अभियंता को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
मुख्य अभियंता
एन. डी. पी. एल.
शालीमार बाग, दिल्ली।

विषय-बढ़े हुए बिजली के बिल के संबंध में।

मान्यवर,
मैं आपका ध्यान अपने बिजली के अचानक बढ़े हुए बिल की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। मेरा मीटर क्रमांक 'के. 1686549' है जो घरेलू उपभोक्ता श्रेणी के अंतर्गत पंजीकृत है। पिछले कई महीनों से मेरा विद्युत बिल 2,400/- या 2,500/- रु. के आसपास रहा है। यहाँ तक कि अगस्त और सितंबर महीनों का बिल भी 3,000/- रु. से अधिक नहीं आया। इन दिनों में गर्मी चरम पर थी इसलिए खपत कुछ बढ़ गई थी। इस बार नवंबर महीने का मेरा बिल 10,573/- रु. आया है जो मेरे द्वारा खपत विद्युत के वास्तविक बिल से कई गुना अधिक है।
ऐसा लगता है कि रीडिंग लेने या बिलिंग विभाग से अवश्य कहीं गलती हो गई है। मुझ जैसे साधारण आय वाले व्यक्ति के लिए इतना बिल भर पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। अत: आपसे प्रार्थना है कि मेरे बढ़े बिल को निरस्त कर वास्तविक विद्युत खपत के अनुरूप बिल भेजने की कृपा करें तथा दोषी लिपिकों के विरुद्ध कार्यवाही करने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
कृष्ण कुमार
75/3 ए. एच. ब्लॉक
शालीमार बाग, दिल्ली।
दिनांक 10 दिसंबर, 20XX

प्रश्न 13:

आपकी 'पुरी, उड़ीसा' यात्रा के दौरान आरक्षित सीट की समस्या आ गई। टी. टी. ई से शिकायत करने । पर उसने आपसे दुर्व्यवहार किया। इसकी शिकायत करते हुए उत्तर रेलवे, नई दिल्ली के मुख्य प्रबंधक को पत्र लिखिए।

उत्तर –
मुख्य प्रबंधक
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस
नई दिल्ली।
विषय-टी. टी. ई. द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान नीलांचल एक्सप्रेस में टी. टी. ई. द्वारा किए दुर्व्यवहार की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। महोदय, 07/06/2012 को नीलांचल एक्सप्रेस से पुरी, उड़ीसा जाने के लिए एस-5 के सीट 45 का मेरा आरक्षण था। मैंने अलीगढ़ से ट्रेन पकड़ने के लिए आरक्षण कराया था, पर इस सीट पर कोई और व्यक्ति यात्रा कर रहा था। उससे सीट के बारे में पूछने पर उसने बताया कि इस

सीट पर वह नई दिल्ली से आ रहा है और इस पर उसे टी. टी. ई ने बिठाया है। मैंने कोच में टी. टी. ई. को तलाशा और उसे अपनी समस्या बताई। उस टी. टी. ई ने उल्टे मुझे ही अपशब्द कहे और उसी सीट पर दोनों को बैठने को कहा। मेरे मना करने पर उसने देख लेने की धमकी दी। मैंने कानपुर तक जिस विषम परिस्थिति में यात्रा की, उसे मैं वर्णित नहीं कर सकता। कानपुर में उस व्यक्ति के उतरने के बाद ही मैं अपनी सीट पा सका।
श्रीमान जी आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेते हुए हस्तक्षेप करें तथा दोषी टी. टी. ई. के विरुद्ध उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
संजय कुमार
107/बी अमन मौहल्ला
विश्वविद्यालय रोड, अलीगढ़, उ० प्र०
दिनांक 09 जून, 20xx

प्रश्न 14:

आप जिस कॉलोनी में रहते हैं, वहाँ से प्रात:काल एक मात्र बस चलती है। वहाँ से चलने वाली बसों की कमी की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए आई पी. डिपो के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
महाप्रबंधक
आई पी. बस डिपो
(दिल्ली नगर निगम) ।
आई पी. स्टेट, दिल्ली।

विषय-बसों की कमी की ओर ध्यानाकर्षण के संबंध में।

मान्यवर,
मैं आपका ध्यान अपनी कॉलोनी रामा गार्डन से चलने वाली बसों की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ।
यह कॉलोनी 1985 के आसपास बसाई गई थी जो दिल्ली और उत्तर प्रदेश की सीमा पर है। इसके निकट से गुजरती सड़क इसे दिल्ली के मुख्य स्थानों से जोड़ती है। काम-धंधे के सिलसिले में आस-पास की कॉलोनियों के लोग भी इसी मार्ग से दिल्ली आते-जाते हैं, जिससे यहाँ सुबह-शाम यातायात की समस्या उठ खड़ी होती है। यहाँ से एकमात्र बस प्रात: 8:00 बजे चलती है जो केंद्रीय सचिवालय जाती है। इस बस से बच्चे अपने विद्यालय विलंब से पहुँचते हैं। इतनी आबादी के लिए यह एकमात्र बस सेवा ऊँट के मुँह में जीरा के समान साबित होती है। इस बस के छूट जाने पर यहाँ के निवासियों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ऐसे में हमारी मजबूरियों का नाजायज फायदा आटोवाले, फटफट सेवावाले उठाते हैं। वे मनमर्जी किराया वसूल करते हैं और हम यात्रियों को जानवरों की तरह ठूँस-ठूँसकर बिठाते हैं। ऐसी यात्रा किसी यातना से कम नहीं होती है।
आपसे प्रार्थना है कि हम कॉलोनीवासियों की समस्या को देखते हुए आप इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करें तथा यहाँ से नई बसों के परिचालन की व्यवस्था करें! हम क्षेत्रवासी

आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद
भवदीय
संग्राम सिंह शाकय
अध्यक्ष आर. डब्ल्यू. ए.
रामा गार्डन, दिल्ली।

दिनांक 27 नवंबर, 20XX

प्रश्न 15:

बस में छूटे सामान की पहचान एवं विवरण बताते हुए महाराणा प्रताप अंतर्राज्यीय बस अड्डा, कश्मीरी गेट दिल्ली के मुख्य प्रबंधक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
मुख्य प्रबंधक
महाराणा प्रताप अंतरज्यीय बस अड्डा
कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

विषय-बस में छूटे सामान के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान दिल्ली परिवहन निगम की लखनऊ-दिल्ली के बीच चलने वाली बस में छूटे सामान की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। मान्यवर, 15 अक्टूबर, 20xx को मैंने लखनऊ से दिल्ली आने के लिए आलमबाग डिपो से बस पकड़ी। डी. एल. 1 पी. 4775 नंबर वाली यह बस शाम आठ बजे लखनऊ से रवाना हुई और प्रात: साढ़े सात बजे दिल्ली बस अड्डे पर पहुँच गई। यात्रा के दौरान मैंने अपने थैले से एक चादर निकाल कर थैले को सीट के ऊपर सामान रखने के लिए बने स्थान में रख दिया। बस अड्डे पर जल्दी में उतरने के चक्कर में मैं यह बैग बस में भूल गया। लाल रंग के इस बैग में आवश्यक कागज-पत्रों के अलावा मेरे कपड़े तथा अन्य सामान भी थे। इस बैग में बनी छोटी सी जेब में मेरा परिचय पता भी था।
आपसे प्रार्थना है कि इस संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर मेरी मदद करें तथा यदि 'खोया-पाया' काउंटर पर ऐसा कोई बैग जमा हुआ हो तो निम्नलिखित पते पर सूचना देने का कष्ट करें।
सधन्यवाद
भवदीय
राम सिंह यादव
सी 4/28, गोमती नगर,
लखनऊ उत्तर प्रदेश।
फोन न०-09876543201
दिनांक-17 अक्टूबर, 20XX

प्रश्न 16:

आपके मोहल्ले में एक धार्मिक स्थल पर ऊँचे स्वर में लाउडस्पीकर बजता रहता है, जिससे स्थानीय लोगों को परेशानी होती है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए नगर निगम के

प्रशासनिक अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
प्रशासनिक अधिकारी
(दिल्ली नगर निगम)
सिविल लाइंस क्षेत्र,
16 राजपुर रोड, दिल्ली।

विषय-धार्मिक स्थलों पर बजते लाउडस्पीकरों द्वारा फैलाए जा रहे ध्वनि प्रदूषण के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले गोपाल पार्क में स्थित एक धार्मिक स्थल पर लाउडस्पीकर द्वारा फैलाए जा रहे ध्वनि प्रदूषण की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस धार्मिक स्थल के बुर्ज पर लाउडस्पीकर बँधा है, जिससे सुबह हो या शाम, ऊँची आवाज में कभी भजन तो कभी आरतियाँ प्रसारित होती रहती हैं। इस देवालय में बैठे भगवान इसे कितना सुनते हैं और उन्हें कैसे लगता है, यह तो पता नहीं पर हम मोहल्ले वालों के कान जरूर पक गए हैं। ये भजन आज के अश्लील गानों की तर्ज पर आधारित होते हैं, जिन्हें सुनकर बच्चे इन गानों की तर्ज पर मटकते रहते हैं। बेचारे मरीजों और वृद्धजनों की हालत के बारे में क्या कहा जाए। उनका रहा-सहा चैन भी छिन गया है। बच्चों की परीक्षाएँ सिर पर हैं। इस शोर में उनकी परीक्षा संबंधी तैयारी बुरी तरह बाधित हो रही है। अब तक देवालय के पुजारी को हम सब कई बार अपनी समस्या से अवगत करा चुके हैं, पर वह भगवान का वास्ता देकर अपने मन की ही करता है। अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि इस संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करने की कृपा करें ताकि हमें ध्वनि प्रदूषण की इस समस्या से मुक्ति मिल सके।

सधन्यवाद
भवदीय
प्रशांत सिंह
ए–4/27, गोपाल पार्क,
आजादपुर, दिल्ली-33
दिनांक 15 फरवरी, 20xx

प्रश्न 17:

अपने इलाके के खादय संभरण अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें सरकारी राशन की दुकान पर कम राशन दिए जाने की शिकायत की गई हो।

उत्तर –

प्रति,
खाद्य संभरण अधिकारी
नागलोई, दिल्ली।

विषय-कम राशन मिलने के संबंध में।

महोदय, मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले के सरकारी राशन की उस दुकान की ओर आकर्षित कराना

चाहता हूँ, जहाँ उपभोक्ताओं को कम राशन दिया जाता है। सरकार ने देश में उचित खाद्यान्न वितरण प्रणाली लागू करने के उद्देश्य से जगह-जगह पर राशन की सरकारी दुकानें खोलीं ताकि गरीब तथा जनसाधारण को सस्ती दरों पर विभिन्न खाद्यान्न मिल सकें। अत्यंत खेद के साथ बताना पड़ रहा है कि हमारे मुहल्ले में स्थित सरकारी राशन की दुकान का दुकानदार हम उपभोक्तओं को निर्धारित मात्रा से कम राशन देता है तथा हर बार वह कम तौलता है। इसका पता हमें दूसरे मोहल्ले के उपभोक्ताओं को मिलने वाले अनाज की मात्रा से लगा। कई बार वह हमें चावल बिल्कुल भी नहीं देता है या उसके बदले गेहूँ लेने को बाध्य करता है। हम लोगों द्वारा कई बार मौखिक शिकायत करने का उस पर कोई असर नहीं हुआ, उल्टे हमारा राशन बंद करने की धमकी जरूर दे दी थी।

अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करें तथा दोषी दुकानदार के विरुद्ध कार्यवाही करें।

सधन्यवाद

भवदीय

करन सिंह

दिनांक 15 जुलाई, 20XX

प्रश्न 18:

आपका टेलीफोन एक माह से भी अधिक समय से खराब पड़ा है। शिकायत करने पर संबंधित कर्मचारी ध्यान नहीं देते हैं। इस संबंध में एम. टी. एन. एल. के महाप्रबंधक को शिकायती-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

महाप्रबंधक

एम. टी. एन. एल.

दूर संचार भवन, नई दिल्ली।

विषय-लंबे समय से खराब पड़े टेलीफोन के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने खराब पड़े उस टेलीफोन की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ जो पिछले एक महीने से भी अधिक समय से कार्य नहीं कर रहा है।मेरे टेलीफोन का न० 011 2 . है। इसे मैंने अन्य कंपनियों की संचार सेवाओं से बेहतर समझकर लगवाया था, परंतु मेरा ऐसा विश्वास अब मुझ पर भारी पड़ रहा है। हम पति-पत्नी के काम पर जाने के बाद घर में वृद्ध माता-पिता रह जाते हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा न होने के कारण प्राय: वे अपनी आकस्मिक जरूरतें फोन के माध्यम से हमें बता दिया करते थे, परंतु अब फोन खराब होने से उन्हें असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में स्थानीय कार्यालय में कई बार शिकायत की, परंतु स्थिति वही ढाक के तीन पात वाली ही बनी रही। आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे परिवार की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करें और संबंधित कर्मचारियों को फोन ठीक करने का आदेश देकर कृतार्थ करें।

सधन्यवाद

भवदीय

अंबुज वर्मा
ए–4/120, शास्त्री नगर
दिल्ली।
दिनांक 15 जनवरी, 20XX

प्रश्न 19:

आपके मोहल्ले की गलियों तथा वहाँ तक आने वाली मुख्य सड़क की लाइटें खराब पड़ी हैं, जिससे आए दिन छेड़छाड़ तथा छीना-झपटी की घटनाएँ होती रहती हैं। इस ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए नगर निगम के सहायक अभियंता को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

सहायक अभियंता,

दिल्ली नगर निगम 16,

राजपुर रोड,

दिल्ली।

विषय-गलियों एवं सड़क की खराब पड़ी लाइटों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र, सरूप विहार की सड़क तथा गलियों में लगी खराब लाइटों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ जिनके कारण आने-जाने वालों को परेशानी से दो-चार होना पड़ रहा है। इस क्षेत्र को जी० टी० करनाल रोड से स्वरूप नगर से होकर जाने वाली सड़क जोड़ती है। पिछले विधान सभा चुनाव के समय यहाँ तक आने वाली मुख्य सड़क पर तथा गलियों में लाइटें लगवाई गई थीं, परंतु इनकी मरम्मत की कोई व्यवस्था नहीं की गई। एक-एक करके खराब होती ये लाइटें अब पूरी तरह से निष्क्रय हो गई हैं, जिससे यहाँ तक आने वालों को शाम से ही परेशानी का सामना करना पड़ता है। कुछ असामाजिक तत्व इस अँधेरे का फायदा उठाकर छेड़छाड़ और सामान व रुपये छीनने जैसी घटनाओं को अंजाम देने लगे हैं। यदि ये लाइटें ठीक करा दी जाएँ तो ये घटनाएँ अपने-आप रुक जाएँगी।

आपसे प्रार्थना है कि इस संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें।

सधन्यवाद
भवदीय
सागर सैनी
ए-522 सरूप विहार
दिल्ली।
दिनांक 17 नवंबर, 20XX

प्रश्न 20:

आपके मोहल्ले के मुख्य पार्क पर कुछ लोगों तथा टेंट मालिकों ने अवैध रूप से कब्जा कर रखा है जिससे बच्चों को खेलने में असुविधा होती है। इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

थानाध्यक्ष महोदय

शालीमार बाग,

दिल्ली।

विषय-पार्क में अवैध कब्जे के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले बी॰ जे॰ ब्लाक, शालीमार बाग के पार्क में कुछ लोगों द्वारा किए कब्जे की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
कुछ साल पहले यह पार्क अत्यंत हरा-भरा तथा मनोरम स्थान हुआ करता था। इस पार्क के पास एक खाली प्लॉट था, जहाँ एक दूध वाला भैंसे बाँधता था। अब उसने पार्क की टूटी दीवार का फायदा उठाकर भैंसों को पार्क में बाँधना शुरू कर दिया है। उसे पार्क का अनुचित लाभ उठाता देख एक किनारे एक कबाड़ी ने अपने कबाड़ का ढेर लगा रखा है तथा पार्क की दीवार के किनारे ही अपनी दुकान खोल रखी है। मुख्य सड़क की ओर एक टेंट वाले ने दो साल से अपने टेंट का समान-पाइपें, पांडाल तथा मेजों का ढेर जमा कर रखा है। इससे पार्क अब सामान रखने की अवैध जगह बनकर रह गया है। अब कॉलोनी के बच्चे पार्क में न खेलकर सड़क पर खेलने को विवश हैं। एक-दो बार वे वाहनों से टकरा भी चुके हैं। वृद्धजनों ने तो पार्क में आना ही बंद कर दिया है। आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर पार्क से अवैध कब्जा हटवाने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
मनोहर त्यागी

बी-3/28 बी॰ जे॰ ब्लाक

शालीमार बाग दिल्ली

दिनांक 18 फरवरी, 20xx

प्रश्न 21:

आपके क्षेत्र में खाली पड़ी जमीन पर वन-महोत्सव के समय बहुत से पौधे लगाए गए, परंतु ये पौधे देख-रेख एवं सिंचाई की कमी के कारण सूखकर आधे हो गए हैं। उदयान विभाग के वरिष्ठ अधिकारी को पत्र लिखकर इनकी उचित देख-रेख हेतु पत्र लिखिए।

उत्तर –

वरिष्ठ अधिकारी
उद्यान विभाग
दिल्ली नगर निगम

लाजपत नगर, दिल्ली।

विषय-देख-रेख के अभाव में सूख रहे पौधों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान मालवीय नगर क्षेत्र में खाली पड़ी जमीन में लगाए गए सूखते पौधों की ओर आकर्षित कराना चाहता हू। जुलाई माह में दिल्ली सरकार ने अधिकाधिक वृक्ष लगाने के उद्देश्य से

वन-महोत्सव मनाने का फैसला किया था, जिसके अंतर्गत जगह-जगह पर नए पौधे लगाने की योजना थी। इसी क्रम में हमारे क्षेत्र की खाली पड़ी जमीन में एक हजार पौधों का रोपण किया गया और इन्हें विकसित करने की जोर-शोर से घोषणा की गई। सितंबर-अक्टूबर तक तो वहाँ कुछ कर्मचारी आते रहे, परंतु अब वहाँ कोई कर्मचारी नहीं आता है। कुछ पौधे उचित देख-रेख तथा सिंचाई के अभाव में सूख गए हैं। अब तो ये पौधे आधे भी नहीं बचे हैं। इससे पर्यावरण को हरा-भरा एवं शुद्ध बनाने का उद्देश्य पूर्ण होने में संदेह लगने लगा है।

आपसे प्रार्थना है कि आप संबंधित कर्मचारियों को भेजकर सिंचाई की उचित व्यवस्था कराएँ तथा सूखे पौधों की जगह नए पौधे लगवाने की कृपा करें ताकि वन-महोत्सव मनाने का सार्थक उद्देश्य पूर्ण हो सके।

सधन्यवाद

भवदीय

चंद्रभूषण सिंह

जी. 517, मालवीय नगर

दिल्ली

दिनांक 10 दिसंबर, 20XX

प्रश्न 22:

अपने क्षेत्र में खाली पड़ी जमीन पर पड़े कूड़े के ढेर को हटाकर पार्क विकसित करने के लिए जिला उदयान अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

जिला उद्यान अधिकारी

जनपद-गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

विषय-खाली पड़ी जमीन पर पार्क विकसित करने के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र लोनी में खाली पड़ी पार्क की उस जमीन की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जिसका उपयोग लोगों ने कूड़ेदान के रूप में करना शुरू कर दिया है। इस क्षेत्र में ग्राम समाज की खाली पड़ी जमीन पर पार्क विकसित करने की सरकारी योजना थी, परंतु कई चुनाव बीतने पर भी यह योजना अपना वास्तविक रूप न प्राप्त कर सकी। चुनाव निकट आते ही इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाया जाता है, परंतु चुनाव बीतते ही सब पहले जैसा हो जाता है।

अब उस जमीन का उपयोग कूड़ेदान के रूप में किया जाने लगा है। यह कूड़ा गर्मी में उड़कर चारों ओर फैलता है तथा वर्षा में इसका गंदा पानी रिसकर सड़कों पर आसपास के निचले क्षेत्रों में भरता है, जिससे चारों ओर दुर्गंध फैलती है और उधर से निकलना भी मुश्किल हो जाता है। वर्षा के अंत में इस बदबूदार पानी पर मच्छर पनपते हैं जो मलेरिया का कारण बनते हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कूड़े को उठवाकर इस जमीन को पार्क रूप में विकसित करने की कृपा करें, ताकि हम क्षेत्रवासियों को शुद्ध व स्वच्छ वातावरण में रहने का अवसर मिल सके।

सधन्यवाद

भवदीय

राम सिंह त्यागी

प्रधान, लोनी ग्राम सभा

गाजियाबाद, उ० प्र०।

दिनांक 27 नवंबर, 20XX

प्रश्न 23:

आपके क्षेत्र को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली सड़क जगह-जगह से टूट गई है, जिससे आवागमन में घोर असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में पी० डब्ल्यू डी० के मुख्य अभियंता को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
मुख्य अभियंता
पी० डब्ल्यू. डी.
राजौरी गार्डन, दिल्ली।

विषय-टूटी सड़क की मरम्मत के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र हस्तसाल की टूटी सड़क की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ। मुख्य सड़क से इस गाँव को जोड़ने वाली सड़क की पिछली बार मरम्मत तब की गई थी जब विधानसभा चुनाव निकट थे। उसके बाद से मरम्मत के अभाव में यह सड़क दयनीय दशा में पहुँच चुकी है। वर्षा ऋतु में इस पर बने गड्ढों में पानी भर जाता है, जिससे इस पर चलना और भी कठिन हो जाता है। जगह-जगह तारकोल उखड़ जाने से धूल ही धूल दिखती है और आते-जाते हुए हम धूल-धूसरित हो जाते हैं। सूर्यास्त के बाद तो इस पर चलना जोखिम उठाने जैसा होता है। इसके किनारे लगी लाइटें खराब हो चुकी हैं।
ऐसे में हर समय दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। गाँव के कई लोग इन गड्ढों के कारण गिरकर घायल हो चुके हैं। अब तो हम लोगों को पैदल चलने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया है। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करें और संबधित कर्मचारियों को अविलंब कार्यवाही का आदेश देने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
मनोहर सिंह
(प्रधान)

दिनांक 26 सितंबर, 20xx

प्रश्न 24:

आपके क्षेत्र में कुछ लघु उद्योग इकाइयाँ दूषित पानी का शोधन किए बिना नालियों में बहा रही हैं, जिससे जल प्रदूषण बढ़ रहा है। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए अपने जिले के प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी

जनपद हापुड़
उत्तर प्रदेश।

विषय-बढ़ते जल प्रदूषण के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र पिलखुआ में लगी लघु उद्योग इकाइयों द्वारा फैलाए जा रहे जल प्रदूषण की ओर आकृष्ट कराना चाहता हू। यह क्षेत्र सूती वस्त्र निर्माण के लिए जाना जाता है। यहाँ छोटी-छोटी अनेक औद्योगिक इकाइयाँ हैं। इन इकाइयों से निकला दूषित और उसमें मिले अपशिष्ट पदार्थ बहकर जल में मिल रहे हैं। इसमें उपस्थित रासायनिक पदार्थ, रंग, डिटर्जेंट आदि के कारण एक ओर जहाँ पानी का रंग बदल रहा है, वहीं दूसरी ओर यह विषैला भी होता जा रहा है। तालाबों के विभिन्न जलजीव असमय मौत के शिकार हो रहे हैं। तालाबों का पानी इतना प्रदूषित हो चुका है कि उसमें हाथ-पैर धोने से जलन होने लगती है और त्वचा रोग हो जाता है। यदि ये इकाइयाँ इस जल का शोधन करके बहाएँ तो बढ़ते जल प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है। आपसे विनम्र निवेदन है कि इन इकाइयों को जल शोधन हेतु निर्देश दें तथा ऐसा न करने वालों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
सतवीर सिंह सैनी
दिनांक 20 अक्टूबर, 20XX

प्रश्न 25:

आजकल मिलावट का धंधा जोरों पर है। व्यापारी अधिक मुनाफा बढ़ाने के लिए हर वस्तु में मिलावट करने लगे हैं। इसकी शिकायत करते हुए जिला खादय निरीक्षक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
जिला खाद्य निरीक्षक
उत्तर–पश्चिम जिला
दिल्ली।

विषय-बढ़ती मिलावट के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान दिनोंदिन बढ़ती मिलावट की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ जिससे हर व्यक्ति परेशान है। आजकल बाजार में शुद्ध वस्तुओं का मिलना उसी प्रकार दुष्कर हो गया है जैसे कलयुग में भगवान का। व्यापारी एवं दुकानदार अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लिए लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने से भी नहीं चूक रहे हैं। ये लालची व्यापारी गेहूँ, चावल में कंकड, पिसी धनिया, मिर्च में पिसी ईट का चूर्ण, काली मिर्च में पपीते का बीज, धनिया पाउडर में गोबर जैसी घिनौनी वस्तुएँ मिलाते हैं। आज नकली घी, नकली खोया, रासायनिक पदार्थों के मेल से बनी मिठाइयाँ, पेय पदार्थों में मिलावट आदि के सेवन का कुप्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर देखा जा सकता है। इससे एक तरफ व्यक्ति के स्वास्थ्य की क्षति होती है तो दूसरी ओर पैसों की हानि। इन व्यापारियों की साँठ-गाँठ छोटे-मोटे सरकारी कर्मचारियों से भी होती है, जिनके साथ मिलीभगत करके यह

घिनौना खेल खेला जा रहा है।
आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस मामले में हस्तक्षेप करें तथा आकस्मिक जाँच कर दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
तुषार सिंह
सी-45, महेंदू इंक्लेव
आजादपुर, दिल्ली।
दिनाक-25 जनवरी, 20XX

प्रश्न 26:

बड़े-बड़े दावे तथा घोषणाओं के बाद भी रेल यात्रा के दौरान यात्रियों को दी जाने वाली सामग्री की गुणवत्ता संतोषप्रद नहीं होती है। इसकी शिकायत करते हुए निरीक्षक, खानपान विभाग, रेल भवन, नई दिल्ली को शिकायती-पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
निरीक्षक महोदय
खान-पान विभाग, उ० रे०,
रेलभवन, नई दिल्ली।

विषय-रेल यात्रा के दौरान दी जाने खाद्य सामग्री की घटिया गुणवत्ता के संबंध में।

मान्यवर,
मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान रेल यात्रा के दौरान परोसी जाने वाली घटिया सामग्री की ओर आकर्षित कराना चाहता हू। मैंने कई बार रेल यात्रा की और रेलवे की खान-पान सेवा द्वारा दी जाने वाली खाद्य सामग्री से पेट पूजा की। अत्यंत खेद के साथ आपको बताना पड़ रहा है कि हर बार खाने की गुणवत्ता घटिया थी। जली रोटियाँ, दाल के नाम पर पीला पानी, चिपचिपा चावल, खट्टी दही, स्वादहीन सब्जियाँ खाने की घटिया गुणवत्ता स्वयमेव बताते हैं। इनका अधिक मूल्य 'एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा' की कहावत चरितार्थ करता है। कर्मचारियों का व्यवहार भी बहुत अच्छा नहीं होता है। इस संबंध में शिकायत पुस्तिका का उपयोग करने का भी कोई लाभ नहीं हुआ। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस मामले में अविलंब हस्तक्षेप करें तथा आवश्यक कदम उठाकर रेलवे की खान-पान की पहले जैसी गुणवत्ता वाली खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाएँ।
सधन्यवाद
भवदीय
रोशन वर्मा
ए-4/25, लाजपत नगर,
दिल्ली।
दिनांक 20 नवंबर, 20XX

प्रश्न 27:

दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की समीक्षा तथा उनकी गुणवत्ता बढ़ाने का निवेदन करते हुए अधीक्षक दिल्ली दूरदर्शन, संचार भवन, नई दिल्ली को पत्र लिखिए।

उत्तर –

अधीक्षक

दिल्ली दूरदर्श,

संचार भवन, नई दिल्ली।

विषय-दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की गुणवत्ता के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान दिल्ली दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की गुणवत्ता की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। दूरदर्शन को शिक्षा एवं मनोरंजन का सशक्त माध्यम माना जाता है। इस पर प्रसारित कार्यक्रमों को इस अपेक्षा के साथ देखा जाता है कि उनसे स्वस्थ मनोरंजन होगा एवं ज्ञानवर्धन भी होगा, परंतु खेदपूर्वक कहना पड़ रहा है कि इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता में दिनोंदिन गिरावट आती जा रही है। धारावाहिकों में वही रोना-धोना, छल-कपट, फरेब, हिंसा अश्लीलता का बोलबाला, समाचार प्रसारण का पुराना ढंग, फिल्मों एवं गीतों की घटिया स्तर की शब्दावलियाँ, हिंसा प्रधान फिल्में आदि ऐसी हैं, जिन्हें परिवार में एक साथ बैठकर देख पाना कठिन हो जाता है।

दूरदर्शन पर शैक्षिक एवं स्वस्थ हास्य-व्यंग्य प्रधान कार्यक्रमों की कमी है। एन. सी. ई. आर. टी.-विज्ञान, गणित, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि से संबंधित कार्यक्रमों के प्रसारण से दूरदर्शन अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है। आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में हस्तक्षेप कर कार्यक्रमों की गुणवत्ता बनाए रखने तथा शैक्षिक एवं स्वस्थ मनोरंजन वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

भवदीय

मयंक मौर्य

सेक्टर 15, नोएडा,

गौतम बुद्धनगर, (उ० प्र०)।

दिनांक 02 फरवरी, 20XX

प्रश्न 28:

आपने दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर लोकसभा एवं राज्यसभा की कार्यवाही देखी, जिसमें माननीय सांसदों का व्यवहार देख दुख होता है। उनके व्यवहार पर अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराने के लिए लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

लोकसभा अध्यक्ष

संसद भवन,

नई दिल्ली।

विषय-सांसदों के अशोभनीय व्यवहार पर प्रतिक्रिया।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान लोकसभा एवं राज्यसभा की कार्यवाही के दौरान सांसदों के अशोभनीय व्यवहार की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। पिछले दिनों लोकसभा की कार्यवाही का प्रसारण देखकर दुख हुआ कि जनता अपनी आवाज संसद तक पहुँचाने के लिए जिन सांसदों को चुनकर लोकसभा में भेजती है और उन्हें माननीथ, सम्माननीय जैसे विशेषणों से विभूषित करती है, उनमें से अधिकांश का व्यवहार तो आम आदमी से भी घटिया होता है। वे छोटी-छोटी बातों के लिए वाद-विवाद, हाथापाई, कपड़े फाड़ने, कुर्सी-माइक फेंकने जैसे अत्यंत ओछे काम करते हुए शोर मचाने लगते हैं। इससे संसद की कार्यवाही बाधित होती है और जनता का करोड़ों रुपया पानी की तरह बहकर बर्बाद होता है। लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही को बार-बार स्थगित किया जाता है। महत्वपूर्ण निर्णयों को बनाने में विलंब करक माहवर्णकन बाल बने हजता है सासयों क ऐसा व्याहारसक पिरमा क देता पहुचाता हो।

आपसे प्रार्थना है कि इस प्रकार का अशोभनीय व्यवहार करने वाले सांसदों से कड़ाई से निपटें तथा उनके संसद में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने की कृपा करें ताकि भारतीय संसद की गरिमा को ठेस न पहुँचे।

सधन्यवाद

भवदीय

संयोग सैनी

27 ए, रोहतक,

हरियाणा।

दिनांक 20 दिसंबर, 20xx

प्रश्न 29:

आपके क्षेत्र में आस-पास कोई अस्पताल नहीं है। ऐसे में लोगों को इलाज के लिए कठिनाई का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य निदेशक दिल्ली सरकार को पत्र लिखिए, जिसमें डिस्पेंसरी खोलने का अनुरोध किया गया हो।

उत्तर –

प्रति,

स्वास्थ्य निदेशक

दिल्ली सरकार,

दिल्ली।

विषय-डिस्पेंसरी खोलने के संबंध में।

मान्यवर, मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र विजवासन गाँव में अस्पताल की कमी से इलाज में होने वाली कठिनाइयों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस गाँव की गणना दिल्ली के प्राचीन गाँवों में की जाती है। यहाँ की जनसंख्या भी बीस हजार से अधिक है परंतु यहाँ पर अस्पताल नाम की कोई सुविधा नहीं है। लोगों को इलाज के लिए नजफगढ़, उत्तम नगर या सफदरजंग जाना पड़ता है। इसका फायदा यहाँ आस-पास दुकानें खोल बैठे झोलाझाप डॉक्टर उठाते हैं और मनमाना पैसा वसूलते हैं। महिलाओं और वृद्धों को इलाज के लिए दूरस्थ अस्पतालों में ले जाने पर बहुत परेशानी

होती है। अनेक पुस्तक पित-पितेद लोहचुके हैं ऐसा में या किसी थाि लेना बाहु होआवक हो जाता है।
आपसे प्रार्थना है कि व्यक्तिगत रुचि लेकर यहाँ डिस्पेंसरी खुलवाने की कृपा करें। हम क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद
भवदीय
राजपाल यादव
विजवासन, दिल्ली
दिनांक 20 फरवरी, 20xx

प्रश्न 30:

आपके क्षेत्र में बस स्टैंड पर शेड नहीं है, जिससे आने-जाने वालों को मौसम की मार झेलनी पड़ती है। स्टैंड पर शेड लगवाने हेतु परिवहन विभाग के अधीक्षक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
अधीक्षक
दिल्ली परिवहन निगम लि०
वजीरपुर डिपो,
दिल्ली।
विषय-बस स्टैंड पर शेड लगवाने के संबंध में।

मान्यवर,
मैं आपका ध्यान अपने गाँव कराला के सरकारी बस स्टैंड की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। कराला बस स्टैंड पर यात्रियों को खुले आसमान के नीचे खड़ा होना पड़ता है, क्योंकि यहाँ बस स्टैंड तो है, पर शेड नहीं है। गर्मी में हमें बस का इंतजार करते समय तपती लू तथा धूप का सामना करना पड़ता है तो, सर्दी में ठंड हवाओं और कोहरे की मार का और वर्षा ऋतु में भीगकर बरसात की मार झेलनी पड़ती है। प्रात: काल स्कूल जाने के लिए बच्चे काँपते हुए बस की राह देखते हैं तो वृद्ध ठंड हवा से खाँसते हुए मौसम की मार झेलने को विवश हैं। इस संबंध में परिवहन विभाग के कर्मचारियों से कई बार बात की गई पर कोई हल नहीं निकला।
आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर कार्यवाही करते हुए संबंधित कर्मचारियों को शेड लगाने का आदेश देने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
योगेंदर सिंह
27, कराला,
दिल्ली।
दिनांक 20 फरवरी, 20XX

प्रश्न 31:

आपकी विधानसभा से चुने गए विधायक जी ने चुनाव जीतने के बाद दर्शन नहीं दिए हैं। विकास के

लिए उन्होंने जो वायदे किए थे, वे सभी अधूरे हैं। उन्हें चुनावी वायदों की याद दिलाते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
माननीय विधायक महोदय
मंगोलपुरी विधानसभा क्षेत्र
दिल्ली।

विषय-चुनावी वायदे भूलने एवं विकास कार्य न होने के संबंध में।

मान्यवर,
मैं आपका ध्यान मंगोलपुरी विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए किए गए चुनावी वायदों की ओर आकर्षित कराना चाहता हू।
विगत चुनाव प्रचार के समय आपने इस विधानसभा में अनेक जनसभाएँ कीं और क्षेत्र के विकास हेतु अनेक योजनाओं का सपना हम क्षेत्रवासियों को दिखाते हुए अपनी जीत के लिए जनसमर्थन चाहा था। हम सभी ने आपकी बातों और वायदों पर भरोसा करके आपको जिताकर विधानसभा की राह दिखाई, परंतु जीतने के बाद आप इस क्षेत्र की राह भूल गए। क्षेत्र में नया अस्पताल खोलने, डाकघर खोलने, सामुदायिक भवन बनवाने, सड़क पक्की कराने, विधवा महिलाओं की कन्याओं के विवाह के खर्चे में भागीदारी करने, रोजगार के नए अवसर बढ़ाने जैसी अनेक यॉक्ताओं में से किसी की शुरुआत नहीं हुई है। आपने बिजली-पानी घर-घर पहुँचाने का वायदा किया था पर हुआ कुछ नहीं। अब तो संबंधित अधिकारी भी सीधे मुँह बात नहीं करते हैं।
आपसे विनम्र ‘अनुरोध है कि अपने वायदों को याद कर जनता को दर्शन दीजिए तथा जन समस्याएँ सुलझाने के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश देने का कष्ट करें।
सधन्यवाद
भवदीय
750, वाई ब्लाक, मंगोलपुरी,
दिल्ली।
दिनांक 21 फरवरी, 20XX

प्रश्न 32:

फरवरी महीने में पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के प्रवेश के लिए अभिभावकों को तरह-तरह से परेशान किया जाता है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए शिक्षा-निदेशक, दिल्ली सरकार को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
शिक्षा निदेशक
पुराना सचिवालय
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र,
दिल्ली।

विषय-पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश के संबंध में।

महोदय,
मैं आपका ध्यान दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त पब्लिक स्कूलों के मनमाने व्यवहार की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ। इन स्कूलों में फरवरी महीने में पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यहीं से उन अभिभावकों की परेशानी शुरू हो जाती है जो अपने बच्चों को प्रवेश दिलाना चाहते हैं। सबसे पहले उनके महँगे फार्म खरीदकर उनकी अनावश्यक शर्त पूरी करनी होती है, फिर वे दुर्बल आय वर्ग की सीटों पर प्रवेश देने के लिए सौ बहाने बनाते हैं, फिर कभी बच्चे के इंटरव्यू तो कभी माता-पिता के इंटरव्यू के नाम पर तरह-तरह से परेशान करते हैं। फीस, विकास शुल्क, अनिवार्य बस सेवा आदि के नाम पर एक मोटी रकम वसूल करते हैं। सीटें होने पर भी 'सीट नहीं' का बोर्ड टाँगकर पहुँच वालों के माध्यम से मोटी रकम का डोनेशन लेकर प्रवेश देते हैं।
आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेकर इन स्कूलों के खिलाफ कठोर कार्यवाही करने की कृपा करें तथा प्रवेश प्रक्रिया को पारदर्शी तथा सरल बनाने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
प्रतिमा सिंह शाक्या
सी-75/4, सेक्टर-15,
रोहिणी दिल्ली।
दिनांक 01 फरवरी, 20XX

प्रश्न 33:

आरक्षण केंद्रों पर दलालों और क्लकों की मिलीभगत के कारण जनसाधारण को आरक्षित टिकट पाने के लिए बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए उत्तर रेलवे, दिल्ली के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
महाप्रबंधक
उत्तर रेलवे, बडौदा हाउस
नई दिल्ली।

विषय-टिकट आरक्षण में दलालों से होने वाली समस्या के संबंध में।

मन्यवर,
मैं आपका ध्यान उत्तर रेलवे के विभिन्न आरक्षण केंद्रों पर टिकट आरक्षण में जनसाधारण को होने वाली समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
इन केंद्रों पर हर समय दलालों की उपस्थिति देखी जा सकती है। बुकिंग क्लकों की मिलीभगत के कारण वे उनके तीस-चालीस फार्मों को लेकर बुकिंग करना शुरू कर देते हैं। आम आदमी जो अपना काम-धाम छोड़कर रात्रि में चार-पाँच बजे से ही लाइन लगाकर खिड़की पर अपना क्रम आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं, वे खड़े-के-खड़े रह जाते हैं। कुछ कहने पर या इन दलालों को लाइन में लगने के लिए कहते ही वे लड़ना-झगड़ना शुरू कर देते हैं और मार-पीट पर उतर आते हैं। वहाँ पंक्ति में खड़ा आदमी स्वयं को ठगा-सा महसूस करता है।

आपसे प्रार्थना है कि आप इस समस्या में व्यक्तिगत रुचि लेकर हस्तक्षेप करने की कृपा करें तथा आरक्षण समय में दलालों का प्रवेश रोकने एवं क्लकों की संलिप्तता रोकने हेतु आवश्यक कदम उठाने की कृपा करें।
सधन्यवाद
भवदीय
रुचिर रावत
सी-527, लाजपत नगर,
दिल्ली।
दिनांक 03 मार्च, 20xox

III. संपादक के नाम पत्र

प्रश्न 34:
आपके क्षेत्र में सड़कों को चौड़ा करने तथा विकास के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटान करके हरियाली पर कुठाराघात किया जा रहा है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए दैनिक जागरण के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
संपादक महोदय
दैनिक जागरण
एफ-62, सेक्टर-62,
नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, उ०प्र०।

विषय-वृक्षों की कटाई के संबंध में।

महोदय,
मैं आपके सम्मानित एवं लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से वन विभाग के अधिकारियों का ध्यान वृक्षों की अनावश्यक कटाई की ओर आकर्षित कराना चाहाता हूँ। लोनी से ट्रानिका सिटी होकर बागपत जाने वाले मार्ग को चौड़ा करने की योजना के अनुसार इस मार्ग पर काम किया जा रहा था। इसी क्रम के अंतर्गत सड़क की परिधि में न आने वाले पेड़ों को भी काटा जा रहा है। इन पेड़ों की कटाई शाम होते ही जोर-शोर से शुरू होती है। ऐसा लगता है कि इसमें लकड़ी के कुछ माफिया भी शामिल हैं। इससे सड़क के दोनों किनारे समाप्त हो रहे हैं तथा पर्यावरण को अपूर्ण क्षति पहुँचाई जा रही है। इन पेडों की अधिकांश लकड़ी को रात्रि में अवैध रूप से अन्यत्र पहुँचा दिया जाता है।
आपसे अनुरोध है कि इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, जिससे अनावश्यक कटान पर अंकुश लग सके।
सधन्यवाद
भवदीय
रघुवीर त्यागी
ए 28, लोनी,
गाजियाबाद (उ० प्र०)।
दिनांक 04 अप्रैल, 20XX

प्रश्न 35:

आपका क्षेत्र भीषण बाढ़ की चपेट में है और प्रशासन कुंभकर्णी नींद में सोया है। राहत कार्यों तथा अन्य सरकारी मदद की प्राप्ति की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय,

अमर उजाला

पटना, बिहार।

विषय-भीषण बाढ़ से उत्पन्न कठिनाइयों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान बाढ़ पीड़ित क्षेत्र दानापुर में उत्पन्न कठिनाइयों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

इस क्षेत्र में पिछले सप्ताह हुई मुसलाधार बारिश के कारण चारों ओर पानी-ही-पानी नजर आ रहा है। गाँवों का संपर्क आस-पास के क्षेत्रों से कट गया है। फसलें पानी में डूब चुकी हैं। अनेक जानवर मरकर इधर-उधर बह रहे हैं। क्षेत्र से अब पानी उतरने लगा है किंतु कच्चे घरों के गिर जाने के कारण लोग ऊँचे टीलों पर रहने को विवश हैं। प्रशासन की ओर से हम विपदा में फैसे लोगों को कोई राहत सामग्री नहीं पहुँचाई गई है। पता नहीं प्रशासन कब तक सोया रहेगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि प्रशासन के लोगों का ध्यान इस ओर जाए और वे लोगों की मदद करने को आगे बढ़े।

सधन्यवाद

भवदीय

रवींद्र नारायण प्रसाद

दानापुर, बिहारा

दिनाक-20 अगस्त, 20xx

प्रश्न 36:

अपने शहर की टूटी-फूटी सड़कों की दयनीय दशा का उल्लेख करते हुए संबंधित अधिकारियों का ध्यानाकर्षित करते हुए नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

विषय-शहर की टूटी-फूटी सड़कों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान अपने शहर बाराबंकी की टूटी सड़कों की ओर आकृष्ट कराना चाहाता हूँ।

यहाँ पिछली बार सड़कों की मरम्मत विधान सभा चुनाव के ठीक पहले अत्यंत जल्दबाजी में कराई गई थी, जो एक भी बरसात न सह पाई। जगह-जगह से सड़कें टूट गई हैं। वर्षा के दिनों में इनमें पानी भर जाता है, जिससे आवागमन दुष्कर बन गया है। रात में प्राय: दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। इनकी मरम्मत के लिए प्रशासन को शायद किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार है।
आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित हो तथा वे इनकी मरम्मत हेतु आवश्यक कदम उठाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

निरंजन शर्मा

कलेक्ट्रेट रोड

बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।

दिनांक-02 फरवरी, 20XX

प्रश्न 37:

आपके क्षेत्र में कृषि योग्य क्षेत्र में कुछ भू-माफियों दवारा अनधिकृत कॉलोनियाँ बसाई जा रही हैं, किंतु स्थानीय प्रशासन मौन है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय

पंजाब केसरी

प्रिंटिंग प्रेस एरिया

वजीरपुर, दिल्ली।

विषय-कृषि योग्य भूमि में अवैध कॉलोनियाँ बसाने के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से उच्चाधिकारियों का ध्यान अपने क्षेत्र कंझावला में कृषि योग्य जमीन पर बसाई जा रही अवैध कालोनियों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
विधान सभा चुनाव निकट आते ही इस क्षेत्र में अवैध कॉलोनियाँ बसाई जाने लगती हैं। वह जमीन जिस पर इन्हें बसाया जा रहा है वह कृषि की जमीन है जिस पर कुछ समय पूर्व खेती लहलहाती थी। आस-पास हरे-भरे पेड़ हुआ करते थे, परंतु कॉलोनी बसाने के लिए रातोंरात पेड़ काटकर मलवा डाला गया और जमीन को छोटे-छोटे भूखंडों में बाँट दिया गया। लोग इनमें दीवार खड़ी कर झुग्गी-सी बनाने लगे हैं। स्थानीय प्रशासन भी आँखें बंद किए सब कुछ देख रहा है।
आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो और वे इसे रोकने हेतु आवश्यक कदम उठाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

करण सिंह तोमर

45, कझावला,

दिल्ली।
दिनांक-25 अप्रैल, 20XX

प्रश्न 38:

'हिंदुस्तान' दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर कार्यालयों में बढ़ते भ्रष्टाचार की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कराने का अनुरोध कीजिए।

उत्तर –

प्रति,
संपादक
हिंदुस्तान
कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली।
विषय-कार्यालयों में बढ़ते भ्रष्टाचार के विषय में।

महोदय,
मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान कार्यालयों में बढ़ते भ्रष्टाचार की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
आजकल सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बिना पैसा दिए या पहुँच के कोई भी काम कराना दुष्कर हो गया है। बिना पैसा दिए काम कराना मुश्किल ही नहीं असंभव बनता जा रहा है। सरकारी नौकरियों में पद के हिसाब से उनका रेट तय कर दिया जाता है। पुलिस, राजस्व. खाद्य आपूर्ति विभाग का कहना ही क्या? ये तो पैसे लेने के लिए बदनाम हो चुके हैं। पैसे लिए बिना कोई काम करने को राजी नहीं है। परिवहन विभाग के कार्यालयों में जिस काम के लिए महीने भर चक्कर लगवाया जाता है, उसे दलालों के माध्यम से एक या दो दिन में कराया जा सकता है। बढ़ते भ्रष्टाचार को अब लोग अपनी नियति मानकर सह रहे हैं।
आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि सरकार का ध्यान आकृष्ट हो और वह भ्रष्टाचार का सफाया करने के लिए कोई आवश्यक कदम उठाए।
सधन्यवाद
भवदीय
रमेश सक्सेना
26-सी, मालवीय नगर,
दिल्ली।
दिनांक-25 नवंबर, 20XX

प्रश्न 39:

आपके शहर में आवास की कमी के कारण एक वर्ग खाली स्थानों पर झुग्गियाँ खड़ी कर लेता है, जिससे दिल्ली के सौंदर्य को धब्बा लगता है। इसके प्रति चिंता व्यक्त करते हुए संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
संपादक महोदय

दैनिक जागरण

एफ-23, सेक्टर 62, नोएडा,

गौतम बुद्ध नगर, उ०प्र०।

विषय-शहर में बढ़ती झुग्गियों के संबंध में।

मान्यवर,

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान शहर में बढ़ती झुग्गियों की ओर आकर्षित कराना चाहाता हूँ।
दिल्ली विविध प्रकार की सुख-सुविधाओं वाला शहर है। इसे देश की राजधानी होने का सौभाग्य प्राप्त है। लोगों के मन में इस शहर के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक है। दुर्भाग्य से कुछ लोग यहाँ की खाली पड़ी जमीनों पर झुग्गियाँ खड़ी कर लेते हैं। उन्हें बेंचकर या सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर वे पुन: अन्यत्र झुग्गियाँ डाल देते हैं। इस काम को उन्होंने व्यवसाय का रूप प्रदान कर लिया है। इससे आसपास गंदगी फैलती है तथा दिल्ली के सौंदर्य में धब्बा लगता है जिससे विदेशी पर्यटकों के बीच इस शहर की छवि धूमिल होती है।
आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में स्थान दें ताकि संबंधित अधिकारी इन झुग्गियों के पनपने पर अंकुश लगा सकें।
सधन्यवाद
भवदीय
उमेश कुमार

56 कस्तूरबा नगर, दरियागंज,

नई दिल्ली।

दिनांक-15 मार्च, 20xx

प्रश्न 40:

महँगाई के कारण आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है। दिनों-दिन बढ़ती महँगाई के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय,

स्वतत्र भारत

लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

विषय-बढ़ती महँगाई के संबंध में।

मान्यवर,

आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से मैं राज्य एवं केंद्र सरकार का ध्यान दिन-प्रतिदिन बढ़ती महँगाई की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ, जिससे आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है।

आज जीवन के आवश्यक वस्तुओं का मूल्य इतना बढ़ता जा रहा है कि आम आदमी उन्हें पाने में स्वयं को असमर्थ महसूस करने लगा है। दालें, सब्जियाँ, कपड़े, दूध, फल, मकान का किराया, अन्य वस्तुएँ आदि की कीमतें आसमान छूती जा रही हैं। इसकी वृद्ध में कुछ स्वार्थी लोगों तथा जमाखोरों का हाथ रहता है। सरकार इसे नियंत्रित करने में असमर्थ हो रही है। वह कभी बाढ़ का, कभी सूखे

को दोष देकर कम पैदावार का बहाना बनाती है। लोगों की आय बढ़ने का नाम नहीं लेती है और न महँगाई रुकने का। आम आदमी को दो जून की रोटी जुटाने में कठिनाई हो रही है। इससे जनता में आक्रोश पनप रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर सरकार और संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करने का कष्ट करें।

सधन्यवाद

भवदीय

निखिल कुमार

25-बी, गोमती नगर,

लखनऊ (उ० प्र०)।

दिनांक 20 अप्रैल, 20XX

प्रश्न 41:

आज का युवावर्ग सिगरेट पीने या धूम्रपान करने को अपनी शान में वृदधि समझता है। किसी दैनिक अखबार के संपादक को पत्र लिखकर इस ओर सरकार तथा युवाओं का ध्यान आकर्षित कराते हुए सुझाव भरा पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय

दैनिक जनसत्ता

नई दिल्ली।

विषय-युवाओं में बढ़ती धूम्रपान की प्रवृत्ति के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय एवं सम्मानित पत्र के माध्यम से युवाओं तथा सरकार का ध्यान बढ़ती धूम्रपान की प्रवृत्ति की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। " आजकल विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रचारित विज्ञापनों में अभिनेताओं या सम्मानित लोगों द्वारा धूम्रपान का इस तरह प्रचार-प्रसार किया जाता है कि युवा-वर्ग उससे आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता है। ऐसे लोगों की उच्च जीवन शैली की शान बढ़ाने में धूम्रपान सहायक होता है, यह गलत धारणा उसके मन में बलवती होती जाती है। ऐसी ही जीवन-शैली की नकल करने के लिए वह भी चोरी-छिपे धूम्रपान करते-करते इसे अपनी आदत बना लेता है। क्रमश: सिगरेट, पान मसाला, गुटखा एवं बीयर का सेवन करते हुए अंततः शराब तक जा पहुँचता है और पतन की ओर कदम बढ़ा देता है। वह अपने स्वास्थ्य की क्षति करने लगता है जो उसे मौत की ओर धीरे-धीरे अग्रसर करती है। युवाओं को इस व्यसन से सदैव दूर रहना चाहिए।

आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने सम्मानित समाचार-पत्र में स्थान दें जिससे युवा-वर्ग और सरकार में जागरूकता उत्पन्न हो और वह कोई ठोस कदम उठाए जिससे युवा-वर्ग धूम्रपान के विरुद्ध जागृत हो।

सधन्यवाद

भवदीय

मनोज मौर्य

डब्ल्यू० जेड़०-23, मौर्या इंक्लेव,

पीतमपुरा, दिल्ली।

दिनांक-15 फरवरी, 20XX

प्रश्न 42:

दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों में अश्लीलता होती है। इसका समाज पर कुप्रभाव पड़ रहा है। इस ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,
संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली।
विषय-दूरदर्शन पर दिखाए जा रहे विज्ञापनों में बढ़ती अश्लीलता के संबंध में।
महोदय,
आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से मैं सरकार एवं जनता का ध्यान दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले अश्लील धारावाहिकों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
हम सभी इससे विज्ञ हैं कि दूरदर्शन पर जो कुछ प्रचारित और प्रसारित किया जाता है समाज पर उसका व्यापक असर पड़ता है। जनसंचार के इस सशक्त माध्यम का उपयोग विभिन्न कंपनियाँ अपना उत्पाद बेचने के साधन के रूप में करने लगी हैं। वे कार्यक्रमों के बीच अपने उत्पादों के विज्ञापन दिखाते हैं। इनमें से कुछ सामाजिकता की परिधि में होते हैं, परंतु कुछ विज्ञापनों की भाषा द्रविअर्थी तथा अश्लीलता युक्त होती है। इन्हें परिवार के साथ देखना मुश्किल हो जाता है। ये युवाओं तथा बच्चों की मानसिकता पर कुप्रभाव डालते हैं। लगभग हर विज्ञापन में नारी देह का अनावश्यक प्रयोग किया जाता है जिससे समाज में बलात्कार, छेड़छाड़, हिंसा आदि की घटनाएँ घट रही हैं। युवाओं को ऐसे विज्ञापन बुरे मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। सरकार को इन विज्ञापनों के प्रसारण पर रोक लगानी चाहिए तथा इनके निर्माताओं को आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए।
आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में जगह देने की कृपा करें ताकि सरकार और समाज में जागरूकता बढे।
सधन्यवाद
भवदीय
दीपक कुमार
के-829, लाजपत नगर-II,
दिल्ली।
दिनांक-20 जुलाई, 20XX

प्रश्न 43:

दैनिक जागरण के संपादक को पत्र लिखकर अपने क्षेत्र के पार्क की दुर्दशा के बारे में संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित कीजिए।

उत्तर –

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

एफ 23, सेक्टर-62

गौतम बुद्धनगर,

नोएडा (उ० प्र०)।

विषय-पार्क की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित करने के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके सम्मानित एवं लोकप्रिय पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान पार्क की दुर्दशा की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

रोहिणी के सेक्टर-15 में दिल्ली विकास प्राधिकरण ने एक बड़ा-सा पार्क बनवाया था। इसके उद्घाटन के समय इसे हरा-भरा बनाया गया और बड़े-बड़े वायदे किए गए, किंतु समय बीतने के साथ देख-रेख के अभाव में फूलों के पौधे सूखने लगे। छायादार वृक्ष कटाई-छटाई के अभाव में आकर्षण खो चुके हैं। फव्वारे में लगे लोहे के उपकरण चोर उखाड़कर ले जा चुके हैं। आजकल इस पार्क का उपयोग शादी-विवाह, सत्संग तथा अन्य आयोजनों के लिए होने लगा है। इन आयोजनों के बाद वहाँ पत्तल, गिलास आदि हफ्तों तक इधर-उधर बिखरते रहते हैं। पार्क की दीवार की रेलिंग उखाड़ी जा चुकी है। पार्क की देख-रेख में नियुक्त कर्मचारियों को घास पर बैठे, ताश खेलते देखा जा सकता है। पार्क की दीवार जहाँ टूटी है, वहाँ लोगों ने कूड़ा फेंकना शुरू कर दिया है। यदि इस पर ध्यान न दिया गया तो पार्क शीघ्र ही कूड़ेदान में बदलकर रह जाएगा।

आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान दें ताकि संबंधित कर्मचारियों और अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो और पार्क का पुनरुद्धार किया जा सके।

सधन्यवाद

भवदीय

राजेश कुमार सैनी

ए-3/73, सेक्टर-15,

रोहिणी, दिल्ली।

दिनांक-20 मई, 20xx

प्रश्न 44:

आपके क्षेत्र में सफाई की व्यवस्था अत्यंत दयनीय है। क्षेत्र में गंदगी फैली हुई है। इसके प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए किसी समाचार के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय,

वीर भूमि

संचार भवन, मार्य

नई दिल्ली।

विषय-सफाई की दुर्दशा के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान अपने क्षेत्र में सफाई की दुर्दशा की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
पूर्वी दिल्ली के सीमापुरी क्षेत्र में सफाई की दशा सोचनीय है। यहाँ जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं। नालियों का पानी सड़कर बदबू मार रहा है। गली के निचली जगहों पर गंदा पानी फैल गया है। जिससे आने-जाने में परेशानी होती है। सीवर के ढक्कन टूटे हुए हैं, जिसकी बदबू के कारण वहाँ से निकलना मुश्किल हो जाता है। साथ ही इसमें बच्चों के गिरने का खतरा उत्पन्न हो गया है। कॉलोनी के पास से गुजर रही रेलवे लाइन पर गंदगी-ही-गंदगी फैली है, क्योंकि लोग वही मल-मूत्र त्यागते हैं। सफाईकर्मी नियमित नहीं आते हैं, जिससे सफाई नहीं हो पाती है। वे कूड़े का ढेर इधर-उधर लगाकर छोड़ जाते हैं, जो उड़-उड़कर गलियों में फैलता रहता है। सफाई कर्मचारी कहने के बाद भी अपने तरीके नहीं बदल रहे हैं।
आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान दें ताकि संबधित कर्मचारियों और अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो।

सधन्यवाद

भवदीय

कौशल किशोर

ए–23 सीमापुरी,

दिल्ली।

दिनांक-15 अप्रैल, 20XX

प्रश्न 45:

आपके क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिससे जनजीवन को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कराते हुए संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय

पंजाब केसरी

प्रिंटिग प्रेस एरिया,

वजीरपुर, दिल्ली।

विषय-बढ़ते ध्वनि प्रदूषण के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके सम्मानित एवं लोकप्रिय पत्र के माध्यम से अपने शहर में बढ़ते ध्वनि प्रदूषण की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कुराना चाहता हूँ।
दिल्ली को भारत की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। यहाँ विकास कार्य भी द्रुतगति से हुए हैं। आवासीय क्षेत्रों के आसपास खाली पड़ी जमीन पर बड़े-बड़े कल-कारखाने स्थापित हुए हैं। इनमें लगी मशीनों और विद्युत मोटरों, जनरेटरों का शोर लोगों की शांति छीन रहा है। यहाँ अनेक कारणों से विभिन्न प्रकार के वाहन आते-जाते रहते हैं। इनकी ध्वनियाँ और हॉनों की कान फोर्ड आवाज सुनकर कान दर्द करने लगते हैं। लाउडस्पीकर पर बजते गाने, विज्ञापन और विक्रेताओं का

शोर दिन-प्रतिदिन शोर में वृद्ध करते हैं। यहाँ सुबह-शाम मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों पर लगे ध्वनि विस्तारक यंत्र ऊँची आवाज में चीखकर ईश्वर और इंसान दोनों का चैन हरते हैं।
जुलूसों में लगने वाले नारे, विभिन्न जगहों पर बजता कान फोड़ें संगीत, वायुयान और रेलगाड़ियों का आवागमन शोर प्रदूषण बढ़ाता है। इससे यहाँ के नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं तो मरीज और वृद्ध सो नहीं पाते हैं और जन सामान्य का दैनिक जीवन प्रभावित होता है।
आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करें ताकि इसे रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाया जाए।
सधन्यवाद
भवदीय
संतोष कुमार
वाई-27 मालवीय नगर,
दिल्ली।
दिनांक 20 फरवरी, 20XX

प्रश्न 46:

सरकार के विभिन्न प्रयासों के बावजूद कन्या भ्रूण-हत्या में कमी नहीं आ रही है। इस पर चिंता प्रकट करते हुए किसी संपादक को पत्र लिखते हुए अपने सुझाव भी दीजिए।

उत्तर –

प्रति,
संपादक महोदय
हिंदुस्तान
कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली।
विषय-बढ़ती कन्या भ्रूण-हत्या के संबंध में।

महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय एवं सम्मानिर्त पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान बढ़ती कन्या भ्रूण-हत्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।
समाज में बढ़ती दहेज प्रथा तथा अन्य समस्याओं के कारण आज समाज के हर दंपति में लड़के की चाहत बढ़ गई है। माँ के गर्भ में पलने वाली संतान लड़की है या लड़का, इसका पता वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से अत्यंत आसानी से लगाया जा सकता है। लोग इसका अनुचित लाभ उठाकर लिंग परीक्षण करवाते हैं और लड़की होने की बात जानकर भ्रूण-हत्या करवा देते हैं। भगवान की श्रेणी में आने वाले धन लोलुप डॉक्टर भी इस कृत्य में। शामिल होते हैं। सरकार ने लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण-हत्या को कानूनन अपराध घोषित कर रखा है, फिर भी लोग चोरी-छिपे ऐसा करते हैं।
समय-समय पर होने वाली जनगणना से इस बात का स्पष्ट प्रमाण मिल जाता है, क्योंकि देश में स्त्रियों की संख्या घट रही है। हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली में यह संख्या और सोचनीय है। सरकार को चाहिए कि वह भ्रूण परीक्षण कराने और करने वाले डॉक्टरों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करे।

आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर सरकार और युवाओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करें ताकि इस प्रवृत्ति पर अंकुश लग सके।

सधन्यवाद

भवदीय

प्रदीप शर्मा

सी-2, बी-125

जनकपुरी, दिल्ली।

दिनांक-25 जनवरी, 20XX

प्रश्न 47:

अधिकाधिक लाभ कमाने के उददेश्य से कुछ स्वार्थी लोग आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी कर कृत्रिम अभाव पैदा करते हैं और बाजार में संकट खड़ा करते हैं। इस प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर –

प्रति,

संपादक महोदय

स्वतंत्रर भारत।

विधान सभा मार्ग,

लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

विषय-जमाखोरी की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के संबंध में।

मान्यवर,

मैं आपके प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से जमाखोरी करने वालों के विरुद्ध सरकार का ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हू।

वर्तमान में बढ़ती महँगाई ने आम आदमी को सर्वाधिक प्रभावित किया है। इस महँगाई के मूल में कुछ लोगों की स्वार्थी प्रवृत्ति है जो जीवनोपयोगी वस्तुओं का संग्रह कर लेते हैं। इससे बाजार में जब इन सामानों की कमी हो जाती है। तब ऐसे लोभी जमाखोर उन वस्तुओं को बाजार में ऊँचे दाम पर बेचते हैं जिसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव गरीब तथा मध्यम वर्ग के लोगों पर पड़ता है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में व्यापारियों और दुकानदारों के गोदाम गेहूँ, चावल, दाल, चीनी, घी, तेल, मसाले जैसी खाद्य वस्तुओं से भरे पड़े हैं फिर भी बाजार में इनकी कीमतें आसमान छू रही हैं और आम आदमी को दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल हो रहा है। ऐसे दुकानदारों के गोदामों में छापे की कार्यवाही कर इन दैनिकोपयोगी वस्तुओं को उचित मूल्य पर बिक्री के लिए उपलब्ध कराना चाहिए।

आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि जमाखोरी की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर बढ़ती महँगाई पर काबू पाया जा सके।

सधन्यवाद

भवदीय

मनोहर शर्मा

ए-21, हजरतगञ्ज,

लखनऊ, उ०प्र०

दिनांक-27 मार्च, 20XX .

IV. कार्यालयी-पत्र

सरकार को चलाने के लिए विभिन्न विभाग होते हैं और उन विभागों का कार्य फाइलों के माध्यम से होता है। विभिन्न विभाग कई तरह के पत्रों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। इस प्रकार का पत्र-व्यवहार कार्यालयी पत्र-व्यवहार कहलाता है। सरकारी कार्यालयों की जरूरतों के अनुसार ये पत्र कई प्रकार के होते हैं; जैसे-कुछ पत्र सूचना प्राप्त करने या भेजने के लिए लिखे जाते हैं तो कुछ पत्रों के द्वारा मुख्यालय या बड़े अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्यालयों/कर्मचारियों को आदेश भेजते हैं। कुछ पत्र अखबारों को विभागीय गतिविधियों की जानकारी देने के लिए भेजे जाते हैं। हर श्रेणी के पत्र का विशिष्ट स्वरूप होता है।

1. सरकारी-पत्र

सरकारी पत्र-लेखन संबंधी ध्यातव्य बिंदु-

1. सरकारी-पत्र औपचारिक-पत्र की श्रेणी में आते हैं।
2. ये पत्र कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को लिखे जाते हैं।
3. पत्र के शीर्ष पर कार्यालय, विभाग या मंत्रालय का नाम व पता लिखा जाता है।
4. पत्र के बाई तरफ फाइल संख्या लिखी जाती है। इससे पत्र का विषय, विभाग का नाम तथा समय का पता चलता है।
5. प्रेषित का नाम, पता आदि बाई ओर लिखा जाता है।
6. ‘सेवा में’ का प्रयोग समाप्ति की ओर है।
7. ‘विषय’ शीर्षक के अंतर्गत संक्षेप में पत्र का प्रयोजन या संदर्भ लिखा जाता है।
8. विषय के बाद बाई तरफ ‘महोदय’ संबोधन लिखते हैं।
9. पत्र की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए। सटीक अर्थ के लिए प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।
10. पत्र के बाई और प्रेषक का पता व तारीख दी जाती है।
11. पत्र के अंत में ‘भवदीय’ शब्द का प्रयोग किया जाता है।
12. भवदीय के नीचे प्रेषक के हस्ताक्षर होते हैं। हस्ताक्षर के नीचे कोष्ठक में पत्र लेखक का नाम तथा पदनाम लिखा जाता है।

उदाहरण

प्रश्न 1:

भारत सरकार के गृह मंत्रालय की तरफ से पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव को नक्सलवादी घटनाओं के संबंध में चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर –

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

नई दिल्ली।
फा संख्या 45 (गृ पं.ब.)09/545

दिनांक: 20 अक्तूबर, 20xx

मुख्य सचिव
पश्चिम बंगाल सरकार,
कोलकाता।
विषय-राज्य में नक्सलवादी घटनाओं के संदर्भ में।

महोदय,
मुझे यह सूचना देने का निर्देश दिया गया है कि-

1. पश्चिमी बंगाल राज्य में नक्सलवादियों की गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। इन गतिविधियों के बढ़ने से कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ रही है। केंद्र सरकार इस समस्या से चिंतित है तथा कड़े कदम उठाने का निश्चय किया गया है। राज्य सरकार को भी कठोर कार्यवाही करनी चाहिए।
2. हाल ही में आदिवासियों द्वारा अपहृत राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन के घटनाक्रम की तमाम जानकारी शीघ्र भेजें।

भवदीय
हस्ताक्षर...............
(विनय कुमार)
सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली।

प्रश्न 2:

गृह मंत्रालय भारत सरकार की ओर से मुख्य सचिव दिल्ली को एक पत्र लिखिए, जिसमें लड़कियों के साथ छेड़छाड़ रोकने तथा उनकी की सुरक्षा करने का समुचित उपाय करने का निर्देश दिया गया हो।

उत्तर –

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
नई दिल्ली।
पत्र क्रमाक-फा. संख्या 12 (गृ. म.)/20xx /150

दिनांक : 25 जनवरी, 20xox

प्रति,
मुख्य सचिव
दिल्ली सरकार,
दिल्ली ।
विषय-लड़कियों की सुरक्षा के संबंध में।
महोदय, उपर्युक्त विषय एवं पत्र क्रमांक के संबंध में मुझे आपको सूचित करने का निर्देश हुआ है कि विगत कुछ समय से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में जिस तरह कुछ मनचले युवकों द्वारा लड़कियों

के साथ छेड़छाड़ की जा रही है, वह मंत्रालय के लिए चिंता का विषय है। स्कूल-कॉलेज, तथा कार्यालय आती-जाती लड़कियों के साथ छेड़छाड़, बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही हैं। दिसंबर 12 के उत्तरार्ध में घटी घटना ने समूची दिल्ली को आक्रोश से भर दिया है तथा महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर किए जा रहे उपायों पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए समुचित कदम उठाए जाएँ तथा इसका विवरण समय-समय पर मंत्रालय को भेजा जाए।

भवदीय

हस्ताक्षर..............

(अभिनव कुमार)

सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार,

नई दिल्ली।

2. अर्द्धसरकारी-पत्र

अद्र्धसरकारी-पत्र में अनौपचारिकता का भी समावेश होता है। इसमें मैत्रीभाव होता है। ये पत्र तब लिखे जाते हैं जब लिखने वाले अधिकारी के संबंधित अधिकारी से व्यक्तिगत जानकारी हो। यह पत्र उस समय लिखा जाता है जब किसी खास मसले पर संबंधित अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत रूप से आकर्षित कराना होता है या उसका व्यक्तिगत रूप से परामर्श लेना होता है।

अदर्ध-सरकारी पत्र-लेखन संबंधी ध्यातव्य बिंदु-

1. इस श्रेणी के पत्र में बाई ओर शीर्ष पर प्रेषक का नाम होता है तथा इसके नीचे उसका पदनाम होता है।
2. अद्र्धसरकारी-पत्र में सामान्यत: कार्यालय के 'लेटर हेड' का प्रयोग होता है।
3. पत्र के प्रारंभ में आम तौर पर 'प्रिय श्री ....' 'या' 'प्रियवरश्री.............' का संबोधन किया जाता है।
4. पत्र के अंत में अधोलेख के रूप में दाहिनी ओर ' भवदीय' के स्थान पर 'आपका' का प्रयोग हो सकता है।
5. पत्र के अंत में संबंधित अधिकारी का नाम, पदनाम और पूर्ण पता लिखा जाता है।

उदाहरण

प्रश्न 1:

सचिव, मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली की तरफ से रेल मंत्रालय के सचिव को, कर्मचारियों को हिंदी सिखाने के संदर्भ में एक अदर्थ सरकारी-पत्र लिखिए।

उत्तर –

भारत सरकार

मानव संसाधन मंत्रालय,

नई दिल्ली।

पत्र संख्या 4/3/20xx (अ. स.)

दिमांकः 14 सितंबर, 20XX

डॉ. नरेश

सचिव

प्रिय श्री विनोद,

आपके पत्र सं 15/5/20xx दिनांक 10 मार्च, 20XX के संदर्भ में मैं आपको कुछ सुझाव देना चाहता हूँ –

1. "हिंदी सीखने वाले गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों के कर्मचारियों के वर्तमान पाठ्यक्रम में नए परिवेश के अनुसार संशोधित करना चाहिए।
2. अच्छे अंक प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को पदोन्नति, वेतन वृद्ध तथा पुरस्कार आदि के जरिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

इस विषय पर विचार करने के लिए मेरे कार्यालय में कुछ विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया है। आप इसमें आने का कष्ट करें तथा अपने उपयोगी सुझावों से हमें लाभान्वित करें।

आपक

हस्ताक्षर.............

(डॉ. नरेश)

प्रति,

श्री विनोद

सचिव

रेल मंत्रालय

नई दिल्ली

प्रश्न 2:

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मुख्य सचिव की तरफ से संस्कृत अकादमी दिल्ली के उपसचिव को अदर्धसरकारी-पत्र लिखिए जिसमें अपेक्षित सूचनाएँ माँगी गई हों।

उत्तर –

भरत सरकार

नई दिल्ली।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय,

पत्र क्रमांक : 23/2/20xx (अ. स.)

दिनांक : 25 मार्च, 20XX

प्रिय श्री अनुराग सिंह,

इस कार्यालय के पत्रांक संख्या 10/12/20XX एवं 03/04/20XX के माध्यम से आपके कार्यालय से कुछ अति आवश्यक सुचनाएँ माँगी गई थीं। ये सूचनाएँ अभी तक प्राप्त नहीं हुई। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इस संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर अपेक्षित सूचनाएँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय

हस्ताक्षर.............

(मर्यंक मौर्य)

प्रति,

श्री अनुराग सिंह

उपसचिव संस्कृत अकादमी
दिल्ली।

3. परिपत्र

यह पत्र तभी जारी होता है जब किसी बैठक में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिया जाता है। यह पत्र एक साथ अनेक व्यक्तियों अथवा विभागों को बिना किसी संबोधन के भेजा जाता है। इसकी भाषा औपचारिक तथा आडबररहित होती है।

उदाहरण

प्रश्न 1:

दिल्ली शिक्षा विभाग की ओर से हड़ताली प्राध्यापकों की हड़ताल को गैर-कानूनी करार देने के संबंध में परिपत्र लिखिए।

उत्तर –

दिल्ली सरकार

दिल्ली विश्वविद्यालय,

दिल्ली।

पत्रांक : 15/13/ दि. वि./20xx

दिनांक : 20 अक्टूबर, 20XX

विषय-गैर-कानूनी हड़ताल संबधी परिपत्र। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पिछले दस दिन से हड़ताल पर हैं। उन्हें सूचित किया जाता है कि उनकी यह हड़ताल गैर-कानूनी घोषित कर दी गई है। इन प्राध्यापकों को राय दी जाती है कि वे दिनांक 30 सितंबर, 20XX तक कॉलेजों में कार्य शुरू करें। निर्धारित तिथि के बाद प्राध्यापकों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकती है।

हस्ताक्षर..............

(अजय प्रेम)

सचिव, शिक्षा प्रशासन

प्रति,

1. समस्त कार्यालयों को
2. समस्त प्राध्यापक यूनियन कार्यालयों को
3. समाचार-पत्रों में

प्रश्न 2:

विदेश व्यापार विभाग दवारा फोन पर होने वाले व्यय के लिए सीमा निर्धारित करने के संदर्भ में परिपत्र जारी कीजिए।

उत्तर –

विदेश व्यापार विभाग
नई दिल्ली।

पत्रांक 15/16/20xx

दिनांक : 20 अक्टूबर, 20xx

विषय-फोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा परिपत्र।

विदेश व्यापार विभाग ने कार्यालयों में फोन पर होने वाले व्यय पर विचार किया तथा निर्णय लिया कि फोन पर व्यय की सीमा तीन हजार प्रतिमाह होगी। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि महानगरों में फोन-व्यय की सीमा छह हजार रुपये प्रतिमाह होगी। यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

हस्ताक्षर.............

(सतीश कुमार)

4. अनुस्मारक

जब किसी पत्र, ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता तो याद दिलाने के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हें अनुस्मारक कहते हैं। इन्हें 'स्मरण-पत्र' भी कहते हैं।

ध्यातव्य बिंदु–

1. इनका प्रारूप सरकारी-पत्र की तरह होता है, परंतु इनका आकार छोटा होता है।
2. अनुस्मारक के शुरू में पूर्ण पत्र का हवाला दिया जाता है।
3. एक से अधिक अनुस्मारक भेजने पर उन्हें क्रमांक दिया जाता है; जैसे-अनुस्मारक-1, अनुस्मारक-2

उदाहरण

प्रश्न 1:

दिल्ली विश्वविदयालय, दिल्ली के कुलसचिव की तरफ से विश्वविदयालय अनुदान आयोग को छठे वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने के संदर्भ में अनुस्मारक लिखिए।

उत्तर –

दिल्ली विश्वविद्यालय,

नई दिल्ली।

पत्र क्रमांकः यू.जी.सी./5/20XX/570

दिनांक : 15/10/20xx

प्रति,

सचिव,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,

नई दिल्ली।

विषय-छठे वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने के संदर्भ में।

महोदय,

उपर्युक्त विषय पर हम आपका ध्यान अपने पत्र क्रमांक यूजी.सी./3/20xx/260 दिनांक 5/6/20xx के संदर्भ में आकर्षित करना चाहते हैं। कृपया इस संदर्भ में दिशा निर्देश शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें ताकि नए वेतनमान सही तरीके से लागू किए जा सकें।

भवदीय

हस्ताक्षर.............

(उज्वल वर्मा)
कुलसचिव

प्रश्न 2:

गृह मंत्रालय, पश्चिम बंगाल की ओर से उपायुक्त, चौबीस परगना को एक अनुस्मारक लिखिए जिसमें वहाँ बाहरी व्यक्तियों के बारे में वांछित सूचना शीघ्र भेजने का वर्णन हो।

उत्तर –

पश्चिम बंगाल सरकार,
गृह मंत्रालय
पत्र क्रमांकः गृ. म. /5/20xx/5407

दिनांक : 16 अगस्त, 20XX

प्रति,

उपायुक्त,
चौबीस परगना।

विषय-बाहरी व्यक्तियों की जानकारी के बारे में।

महोदय,

आपका ध्यान उपयुक्त विषय पर मंत्रालय के पत्र क्रमांक गृ. म./4/20xx/3025 दिनांक 15 अप्रेल, 20xx की ओर दिलाया जाता है। आपने अभी तक वांछित सूचना नहीं भेजी है। कृपया शीघ्र जानकारी भेजने का । कष्ट करें।

भवदीय
हस्ताक्षर..............
(आशुतोष कुमार)
सचिव

5. कार्यालय आदेश

कार्यालय आदेश का प्रयोग आतरिक प्रशासन के संदर्भ में होता है। इसमें कर्मचारियों का स्थानांतरण, अनुशासनात्मक कार्यवाही, काय के वितरण आदि की सूचना होती है।

ध्यातव्य बिंदु–

1. कार्यालय आदेश में संबोधन या आभार नहीं होता।
2. इसकी भाषा सहज, सरल, व औपचारिक होती है।
3. इसके प्रारंभ में पत्र संख्या, कार्यालय का नाम, पता, तिथि आदि का वर्णन होता है।
4. पत्र के अंत में प्रेषक अधिकारी के हस्ताक्षर तथा पद का नाम लिखा जाता है।
5. आदेश की प्रतिलिपि संबंधित व्यक्तियों तथा अनुभागों को भेजी जाती है।

उदाहरण

प्रश्न 1:

श्री संतोष कुमार सिंह का स्थानांतरण रेल मुख्यालय बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली से आरक्षण केंद्र, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कर दिया गया है। इस संबंध में स्थानांतरण संबधी कार्यालय आदेश

जारी कीजिए।

उत्तर –

रेल मुख्यालय

बड़ौदा हाउस,

नई दिल्ली।

पत्र क्रमांक (स्था०) 15-16/20XX

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

कार्यालय आदेश

विषय-श्री संतोष कुमार सिंह का स्थानांतरण।

श्री संतोष कुमार सिंह का स्थानांतरण रेल मुख्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली से आरक्षण केंद्र नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 18 अगस्त, 20xx को कर दिया गया है। श्री संतोष कुमार सिंह को 18 अगस्त, 20xx को नए स्थान पर कार्यभार ग्रहण की रिपोर्ट कार्यालय भेजनी होगी।

हस्ताक्षर...........

अधीक्षक

रेल मुख्यालय

प्रतिलिपि

1. उपाधीक्षक, रेल मुख्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।
2. उपाधीक्षक आरक्षण केंद्र नई दिल्ली।
3. श्री संतोष कुमार सिंह लिपिक, रेल मुख्यालय बड़ौदा हाउस

नई दिल्ली।

प्रश्न 2:

भारतीय खादय निगम नई दिल्ली की ओर से दो व्यक्तियों को कंप्यूटर आपरेटर पद पर नियुक्ति के संबंध में कार्यालय आदेश जारी करें।

उत्तर –

भारतीय खाद्य निगम

मायापुरी,

नई दिल्ली

पत्र क्रमांक : (नि०) 04/05/20XX

दिनांक: 12 मई, 20XX

कार्यालय आदेश

विषय-कप्यूटर आपरेटर पद पर नियुक्ति के संदर्भ में। निम्नलिखित व्यक्तियों को प्रशासन अनुभाग में कंप्यूटर पद पर निर्धारित वेतनमान रु 6550/- तथा स्वीकृत भत्तों पर अस्थायी रूप में नियुक्त किया जाता है। संबंधित व्यक्ति दिनांक 15 जून, 20XX तक अपना कार्यभार ग्रहण कर लें अन्यथा उनकी नियुक्ति रद्द समझी जाएगी।

1. अनुपम सिंह कुशवाहा s/o राम सिंह कुशवाहा

2. श्रीमती सुमन रानी w/o प्रमोद कुमार

हस्ताक्षर.............
मुख्य सचिव
भारतीय खाद्य निगम

प्रतिलिपि

1. श्री अनुपम सिह कुशवाहा
2. श्रीमती सुमन रानी
3. प्रशासन विभाग
4. लेखा विभाग

हस्ताक्षर.............
मुख्य सचिव
नई दिल्ली।

6. कार्यालय ज्ञापन

एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय के बीच जिन पत्रों का आदान-प्रदान किया जाता है, उन्हें कार्यालय ज्ञापन कहते हैं।

ध्यातव्य बिंदु-

1. कार्यालय ज्ञापन सदैव अन्य पुरुष में ही लिखे जाते हैं।
2. इनमें किसी प्रकार का संबोधन नहीं होता।
3. पत्र के अंत में प्रेषक के हस्ताक्षर व उसका भाम लिखा जाता है।

उदाहरण

प्रश्न 1:

भारत सरकार के डाक विभाग मुख्यालय की ओर से कर्मचारियों को कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना में शामिल होने के लिए ज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर –

डाक विभाग मुख्यालय

डाक भवन,

नई दिल्ली।

पत्र क्रमांक : (क० प्र० यो०)/05/157

दिनांक : 10 जनवरी, 20xx

विषय-कप्यूटर प्रशिक्षण योजना के संबंध में। अधोहस्ताक्षरी को यह सूचित करने का निर्देश प्राप्त हुआ है कि कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत इस विभाग द्वारा 15 फरवरी, 20XX से एक कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम एक पखवारा (15 दिन) तक चलेगा। प्रशिक्षण में भाग लेने के इच्छुक कर्मचारी अपना नाम अपने अनुभाग अधिकारी द्वारा अनुशासित कराकर प्रशिक्षण अनुभाग को 10 फरवरी, 20xx तक अवश्य भेज दें।

सौरभ कुमार
मुख्य सचिव
डाक विभाग मुख्यालय,
नई दिल्ली।

7. टिप्पण

किसी भी विचाराधीन पत्र अथवा प्रकरण को निपटने के लिए उस पर जो राय,मंतव्य अथवा आदेश, निर्देश दिया जाता है, वह 'टिप्पण' कहलाता है। इसका उद्देश्य मामले को नियमानुसार निपटाना है।

ध्यातव्य बिंदु–

1. टिप्पण लेखन से पूर्व सहायक का संबंधित विषय को समझना आवश्यक है अन्यथा उस पर उच्च अधिकारी को निर्णय लेने में कठिनाई होगी!
2. टिप्पण अपने आप में पूर्ण व स्पष्ट होना चाहिए।
3. यह सदैव अन्य पुरुष में लिखा जाता है।
4. टिप्पण संक्षिप्त, विषय-संगत और क्रमबद्ध होना चाहिए।

उदाहरण

प्रश्न 1:

बजट सत्र के कारण कार्यालय में काम अधिक हो गया है, उसे निपटाने के लिए दो सहायकों की तदर्थ नियुक्ति के लिए अधिकारी की ओर से टिप्पण लिखिए।

उत्तर –

वित्त विभाग
सचिवालय
बजट सत्र अनुभाग
उपसचिव (प्रशासन) को ज्ञात है कि बजट सत्र में वित्तीय मामलों के कारण कार्यभार अत्यधिक बढ़ जाता है। इस समय बजट सत्र की तैयारियाँ जोरों से चल रही हैं। वर्तमान स्टॉफ ओवरटाइम के बावजूद समय पर पूरा कार्य नहीं कर पा रहा है। इस संदर्भ में कार्य की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए दो सहायकों की तदर्थ नियुक्ति को वरीयता दी जाए ताकि बजट कार्य समय पर पूरा हो सके।
उपनिदेशक (ब. स.) आवश्यक कार्यवाई के लिए देखने की कृपा करें।
हस्ताक्षर
मनोज कुमार
सहायक वित्त अनुभाग

हस्ताक्षर
प्रकाश चंद्र
(उपसचिव ब. स.)

प्रश्न 2:

सहायक निदेशक श्री धर्मेश कुमार ने एक कार बुक कराई थी। कार कंपनी ने उन्हें एक माह में पूरी रकम जमा कराने को कहा है। श्री धर्मेश कुमार ने तीन लाख रुपये अग्रिम राशि के लिए आवेदन किया है। अनुभाग अधिकारी की ओर से टिप्पण लिखिए।

उत्तर –

क्रम सं० 10/20XX

आवती पृ. सं : 10

श्री धर्मेश कुमार ने कार खरीदने के लिए तीन लाख की अग्रिम राशि हेतु आवेदन किया है। कार कंपनी ने एक माह में भुगतान करने की शर्त लगाई है अन्यथा उनकी बुकिंग निरस्त कर दी जाएगी।

श्री धर्मेश कुमार वाहन ऋण प्राप्त करने के सर्वथा योग्य एवं वरीयता क्रम में आते हैं। उनके अग्रिम ऋण आवेदन पर विचार करते हुए अग्रिम ऋण आदेश नियमत: दिया जा सकता है।

हस्ताक्षर

विपिन कुमार

23 फरवरी, 20XX

अनुभाग अधिकारी

स्वयं करें

1. आपके क्षेत्र में कानून व्यवस्था की स्थिति बदतर होती जा रही है। पिछले कुछ दिनों में चोरी, लूटपाट और हत्या की घटनाएँ हो चुकी है। पुलिस गश्त बढ़ाने के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।
2. आपके मोहल्ले के पास पार्क की जमीन पर शाम होते ही असामाजिक तत्व जमा होने लगते हैं, जिससे छेड़छाड़, लूटपाट तथा झगड़े की आशंका बनी रहती है। अपने क्षेत्र के पुलिस उपायुक्त को पत्र लिखिए।
3. दिल्ली जलबोर्ड में कंप्यूटर आपरेटर के कुछ पद रिक्त हैं। अपनी योग्यताओं का उल्लेख करते हुए अधीक्षक को आवेदन-पत्र लिखिए।
4. जनसत्ता दैनिक के संपादक को पत्र लिखकर सरकार का ध्यान बढ़ती महँगाई की ओर आकृष्ट कराने का कीजिए।
5. चुनाव के दिनों में जगह-जगह पोस्टर चिपकाने से सार्वजनिक भवनों की दीवारें गंदी हो गई हैं। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।
6. नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखकर बताइए कि लोग अपने वातावरण को स्वच्छ रखने की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देते।
7. डाक विभाग में डाक सहायकों के पद रिक्त हैं। मुख्य डाकघर नई दिल्ली के डाक अधीक्षक को अपनी योग्यताओं का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।
8. अपने गाँव के विद्यालय की स्थिति से अवगत कराते हुए किसी प्रसिद्ध दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
9. उड़ीसा के नंदन-कानन में बाघों की मृत्यु पर अपने विचार पल्लवी वर्मा की ओर से 'नई दुनिया' दैनिक समाचार-पत्र के संपादक में नाम पत्र में लिखिए।
10. अपने परीक्षा केंद्र पर नकल रोकने के उपाय सुझाते हुए सी.बी.एस.ई. बोर्ड के परीक्षा निदेशक को पत्र लिखिए।
11. अपने क्षेत्र की सड़क पर टूटी-फूटी लाइटों की ओर ध्यानाकर्षित कराते हुए पी० डब्ल्यू डी० के सहायक अभियंता को पत्र लिखिए।

12. निदेशक-सैन्य निदेशालय, नई दिल्ली ने आपको किसी पद के साक्षात्कार के लिए बुलाया है। भयंकर बाढ़ के कारण आप निर्धारित तिथि पर पहुँचने में असमर्थ हैं। निदेशक को पत्र लिखकर किसी अन्य तिथि के निर्धारण के लिए अनुरोध कीजिए।
13. कुछ अभिभावक अपने अठारह वर्ष से कम उम्र के बच्चों को दुपहिया वाहन दिला देते हैं, जो उनके हित में नहीं है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
14. भारतीय स्टेट बैंक आफ इंडिया द्वारा क्लकों के पद विज्ञापित किए गए हैं। अपनी योग्यतओं का विवरण देते हुए महाप्रबंधक, स्टेट बैंक के प्रधान कार्यालय मुंबई को आवेदन-पत्र लिखिए।
15. आपके पड़ोस में एक आतंकवादी रह रहा है। आपने उस मकान में कुछ आतंकवादी गतिविधियाँ देखी हैं। आप अपने नगर के उच्च पुलिस अधिकारी को पत्र लिखकर इसकी पूर्ण जानकारी दीजिए ताकि किसी दुर्घटना से पूर्व ही उचित कार्यवाही हो सके।
16. अपने क्षेत्र में भीषण बाढ के कारण मची तबाही और राहत कार्यों की अपर्याप्तता की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर तुरंत कदम उठाने का अनुरोध कीजिए:
17. आपने जिस ट्रेन से दिल्ली से मुंबई की यात्रा की उसमें खान-पान की गुणवत्ता अत्यंत धटिया किस्म की थी। इसकी शिकायत करते हुए उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।
18. दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को नलिनी की ओर से एक पत्र लिखिए जिसमें कायालयों में बढ़त भ्रष्टाचार की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कराया गया हो।
19. आपके शहर में लगी औद्योगिक इकाइयों से प्रदूषित जल जल स्रोतों में मिलकर जल प्रदूषण बढ़ा रहा है। इस समस्या की ओर संबद्ध अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कराने के लिए अपने स्थानीय समाचार-पत्र के संपादक के नाभ पत्र लिखिए।
20. हरियाणा ट्रेडर्स, चंडीगढ़ के मुख्य कार्यालय में एक टेलीफोन ऑपरेटर की आवश्यकता है। उम्मीदवार ने विज्ञान विषय के साथ-साथ सीनियर सेकेंडरी या समकक्ष परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की हो तथा टेलीफोन ऑपरेटर का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया हो। इस विज्ञापन के संदर्भ में नियुक्ति हेतु आवेदन-पत्र प्रस्तुत कीजिए।
21. आध्र बैंक, हैदराबाद, परिवीक्षाधीन अधिकारी पद हेतु आवेदन-पत्र आमंत्रित करता है। उम्मीदवार ने किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की बी.कॉम, या उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो। अनुभवी उम्मीदकर को प्राथमिकता दी जाएगी। इस विज्ञापन के संदर्भ में आवेदन-पत्र प्रस्तुत कीजिए।
22. सरकारी विद्यालयों में गिरते शिक्षा स्तर की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए दैनिक जागरण के संपादक को पत्र लिखिए।
23. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली को कंप्यूटर का ज्ञान रखने वाले क्लकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए सचिव को पत्र लिखिए।
24. देश में स्त्री जनसंख्या दर में गिरावट आती जा रही है; इसका प्रमुख कारण कन्या भ्रूण-हत्या है। कन्या भ्रूण-हत्या रोकने तथा दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही करने का अनुरोध करते हुए स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली सरकार को पत्र लिखिए।

25. अंग्रेजी और भूगोल विषय का कोर्स पूरा न होने का कारण बताते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए जिसमें इन विषयों की अतिरिक्त कक्षाएँ लगवाने की प्रार्थना की गई हो।

26. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए, जिसमें वृक्षारोपण सप्ताह आयोजित करने का आरोध किया गया हो।

27. आपके विद्यालय-पत्रिका में बहुत सारी अशुद्धयाँ हैं। इस ओर ध्यान आकर्षित करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

28. मारुति उद्योग प्रा० लिमिटेड में कंप्यूटर ऑपरेटर पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

29. मानसून की पहली ही बारिश में आपके इलाके की सड़कें पानी में डूब गई, जिससे आवागमन में बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई। इस ओर ध्यान आकर्षित करते हुए केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता को पत्र लिखिए।

30. आपके घर पर लगा बिजली का मीटर तेज चलता है, जिससे आपको अधिक बिल देना पड़ रहा है। इसकी शिकायत करते हुए अपने जिले के विद्युत अभियंता को पत्र लिखिए।

31. आपका टेलीफोन पिछले डेढ़ महीने से खराब पड़ा है। इसकी शिकायत करते हुए एम० टी०एन०एल० के प्रबंधक को पत्र लिखिए।

32. आप अपने मुहल्ले के कुछ उत्साही युवको के साथ मिलकर पार्क की देखभाल की जिम्मेदारी उठाना चाहते हैं। बदहाल पड़े उद्यान की ओर ध्यान दिलाते हुए जिला उद्यान अधिकारी से इसकी अनुमति माँगते हुए पत्र लिखिए।

33. दिल्ली से प्रकाशित होने वाले नवभारत टाइम्स दैनिक समाचारपत्र में संवाददाताओं की आवश्यकता है। अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए प्रधान संपादक को आवेदनपत्र लिखिए।

34. शिक्षा निदेशालय दिल्ली में प्राथमिक शिक्षकों के पद रिक्त हैं। अपनी योग्यता का विवरण देते हुए शिक्षा निदेशक को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

35. सीमा सुरक्षा बल भर्ती कार्यालय झड़ौदा कैंप में कंप्यूटर ऑपरेटर के कुछ पद रिक्त हैं। अपना संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए भर्ती अधिकारी को पत्र लिखिए।

36. अपने इलाके की सड़कों की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए नगर-पालिका अध्यक्ष को प्रार्थना पत्र लिखिए।

37. आपने पंकज इलेक्ट्रॉनिक्स दरियागंज से 40 इंच का आधुनिक मॉडल का टी०वी० सेंट खरीदा। दो महीने बाद से ही उसकी आवाज और तस्वीर की गुणवत्ता में गिरावट आने लगी है। इस ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए टी०वी० संट बदलवाने का प्रबंधक से अनुरोध कीजिए।

38. आपके मोहल्ले के पार्क में कुछ लोगों ने अवैध निर्माण कर अवैध कब्जा कर रखा है, जिससे बच्चों को खेलने की जगह नहीं रह गई है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

39. दिल्ली के अस्पतालों में डॉक्टर और मरीज के परिजनों में प्राय: मारपीट की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। अस्पतालों में सुरक्षा-व्यवस्था बढ़ाने के लिए चिकित्सा निदेशक को पत्र लिखिए।

40. दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखिए, जिसमें कार्यक्रमों की गिरती गुणवत्ता सुधारने एवं एन०सी०ई०आर०टी० के शैक्षिक कार्यक्रम दिखाने का अनुरोध किया गया हो।

41. आजकल दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में विज्ञापनों की भरमार हो गई है। ऐसा लगता है कि हम फिल्म या सीरियल न देखकर विज्ञापनों का कार्यक्रम देख रहे हैं। विज्ञापनों का समय सुनिश्चित करने के लिए प्रसारण अधिकारी को पत्र लिखिए।

42. बस ड्राइवर और कंडक्टर के साहस की प्रशंसा करते हुए राज्य के परिवहन निदेशक को पत्र लिखिए, जिसमें उन्हें पुरस्कृत करने का अनुरोध किया गया हो।

43. आजकल राजनीति में अपराधी तत्वों का प्रवेश बढ़ता जा रहा है, जिससे लोकतंत्र को खतरा उत्पन्न हो गया है। इस पर चिंता प्रकट करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त हो पत्र लिखिए।

44. समाचार पत्र-पत्रिकाओं में बढ़ते अश्लील विज्ञापन की ओर ध्यान दिलाते हुए दैनिक जागरण के संपादक को पत्रलिखिए।

45. कुछ निजी चैनलों पर प्रसारित कार्यक्रमों में हिंसा एवं अश्लीलता की भरमार होती है। किशोर मन पर इनका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इन चैनलों पर अंकुश लगाने के लिए दूरदर्शन के महानिदेशक को पत्र लिखिए।

46. अपने क्षेत्र के परिवहन कार्यालय में भ्रष्टाचार एवं दलालों के दुर्व्यवहार की शिकायत करते हुए परिवहन मंत्री को पत्र लिखिए।

47. सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को प्रदान की जा रही रसोई गैस सब्सिडी कुछ लोगों के खातों में नहीं पहुँच पा रही है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए हिंदुस्तान दैनिक के संपादक को पत्र लिखिए।

48. महिलाओं में बढ़ती असुरक्षा की भावना और बढ़ती छेड़छाड़ की घटनाओं के प्रति चिंता प्रकट करते हुए अपने राज्य के कानून मंत्री को पत्र लिखिए।

49. नगरों में बढ़ते ध्वनि प्रदूषण की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए किसी प्रमुख समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

50. 'आशा फार्माक्यूटिकल कंपनी' को दवा विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। अपना संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए कंपनी के मार्केटिंग शाखा को आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

51. शैक्षिक सत्र आरंभ हो चुका है पर बाजार में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों की घोर कमी है, जिसका अनुचित फायदा कुछ प्रकाशक उठा रहे हैं। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए सन०सी०ई०आर०टी० के प्रकाशन विभाग को पत्र लिखिए जिसमें पुस्तकों की कमी दूर करने का अनुरोध किया गया हो।

जनसंचार माध्यम और लेखन – जनसंचार माध्यम

पाठ के इस खंड में हम पढ़ेंगे और जानेंगे

- **संचार**
  परिभाषा और महत्व
  संचार क्या है?
- **संचार के तत्त्व**
  स्रोत, एनकोडिंग, संदेश, माध्यम, प्राप्तकर्ता, फ़ीडबैक
  और शोर
- **संचार के प्रकार**
  सांकेतिक संचार
  मौखिक और अमौखिक संचार
  अंतःवैयक्ति संचार
  अंतरवैयक्ति संचार
  समूह संचार
  जनसंचार
- **जनसंचार की विशेषताएँ**
- **संचार के कार्य**
- **जनसंचार के कार्य**
  सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना
  एजेंडा तय करना
  निगरानी करना
  विचार-विमर्श के मंच
- **भारत के जनसंचार माध्यमों का विकास**
  समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ
  रेडियो
  टेलिविज़न
  सिनेमा
  इंटरनेट
- **जनसंचार माध्यमों का प्रभाव**

संचार एक परिचय

संचार के बिना जीवन संभव नहीं है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। इस तरह संचार एक प्रक्रिया है जिसमें कई तत्व शामिल हैं। संचार के कई प्रकार हैं जिनमें मौखिक और अमौखिक संचार के अलावा अंत:वैयक्तिक, अंतरवैयक्तिक, समूह संचार और जनसंचार प्रमुख हैं।

जनसंचार कई मामलों में संचार के अन्य रूपों से अलग है। जनसंचार सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के अलावा एजेंडा तय करने का काम भी करता है। भारत में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। जनसंचार माध्यमों का लोगों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों का सचेत होना बहुत जरूरी है।

संचार-परिभाषा और महत्व

हम अधिकांश समय अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने या अपनी भावनाओं और विचारपों कों प्रकट करने के लिए एक-दूसरे से या समूह में बातचीत या संचार करने में लगा देते हैं। कई बार हम अकेले में खुद से बातें करने लगते हैं। यदि समाज में रहना है और उसके विभिन्न क्रियाकलापों में हिस्सा लेना है तो यह बिना बातचीत या संचार के संभव नहीं है। संचार यानी संदेशों का आदान-प्रदान।

संचार और हमारा जीवन

हम अपने दैनिक जीवन में संचार किए बिना नहीं रह सकते। वास्तव में संचार जीवन की निशानी है। मनुष्य जब तक जीवित है, वह संचार करता रहता है। यहाँ तक कि एक बच्चा भी संचार के बिना नहीं रह सकता। वह रोकर या चिल्लाकर अपनी माँ का ध्यान अपनी ओर खींचता है। एक तरह से संचार ख़त्म होने का अर्थ है-मृत्यु। वैसे तो प्रकृति में सभी जीव संचार करते हैं लेकिन मनुष्य की संचार करने की क्षमता और कौशल सबसे बेहतर है।अकसर यह कहा जाता है किमनुष्य एक समाजिक प्राणी है और उसे सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में उसकी संचार क्षमता की सबसे बड़ी भूमिका रही है।

परिवार और समाज में एक व्यक्ति के रूप में हम अन्य लोगों सं संचार के जरिये ही संबंध स्थापित करते हैं और रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करते हैं। संचार ही हमें एक-दूसरे से जोड़ता है।

सभ्यता के विकास की कहानी संचार और उसके साधनों के विकास की कहानी है। मनुष्य ने चाहे भाषा का विकास किया हो या लिपि का या फिर छपाई का, इसके पीछे मूल इच्छा संदेशों के आदान-प्रदान की ही थी। दरअसल, संदेशों के आदान-प्रदान में लगने वाले समय और दूरी को पाटने के लिए ही मनुष्य ने संचार के माध्यमों की खोज की।

संचार और जनसंचार के विभिन्न माध्यमों-टेलीफ़ोन, इंटरनेट, फैक्स, समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा आदि के जरिये मनुष्य संदेशों के आदान-प्रदान में एक-दूसरे के बीच की दूरी और समय को लगातार कम से कम करने की कोशिश कर रहा है। यही कारण है कि आज संचार माध्यमों के विकास के साथ न सिर्फ भौगोलिक दूरियाँ कम हो रही हैं बल्कि सांस्कृतिक और मानसिक रूप से भी हम एक-दूसरे के करीब आ रहे हैं। शायद यही कारण है कि कुछ लोग मानते हैं कि आज दुनिया एक गाँव में बदल गई है।

जनसंचार माध्यम कितने उपयोगी

दुनिया के किसी भी कोने में कोई घटना हो, जनसंचार माध्यमों के जरिये कुछ ही मिनटों में हमें खबर मिल जाती है। अगर वहाँ किसी टेलीविजन समाचार चैनल का संवाददाता मौजूद हो तो हमें वहाँ की तसवीरें भी तुरंत देखने को मिल जाती हैं। इसी तरह आज टेलीविजन के परदे पर हम दुनियाभर के अलग-अलग क्षेत्रों में घट रही घटनाओं को सीधे प्रसारण के जरिये ठीक उसी समय देख सकते हैं। हम क्रिकेट मैच देखने स्टेडियम भले न जाएँ लेकिन घर बैठे उस मैच का सीधा प्रसारण (लाइव) देख सकते हैं।

आज संचार और जनसंचार के माध्यम हमारी अनिवार्य आवश्यकता बन गए हैं। हमारे रोजमर्रा के जीवन में उनकी बहुत अहम भूमिका हो गई है। उनके बिना हम आज आधुनिक जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। वे हमारे लिए न सिर्फ सूचना के माध्यम हैं बल्कि वे हमें जागरूक बनाने और हमारा मनोरंजन करने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

मैगी की बिक्री पर रोक

नई देल्ली, विशेष संवाददाता

सरकार ने शुक्रवार को नेस्ले कंपनी के ब्रांड मैगी की सभी नौ किस्मों की बिक्री पर पूरे देश में

पाबंदी लगा दी। भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने कहा, 'मैगी के नौ नूडल खाने के लिहाज से असुरक्षित और खतरनाक हैं। इसलिए कंपनी तुरंत इनकी बिक्री और उत्पादन पर रोक लगाए।'

कंपनी ने मैगी पर सफाई दी : नेस्ले के ग्लोबल सीईओ पॉल बुल्के ने दिल्ली में प्रेस कांफ्रेंस कर मैगी पर सफाई दी। उन्होंने कहा, 'मैगी पूरी तरह सुरक्षित है फिर भी हमने इसे भारतीय बाजार से हटाने का फैसला लिया है क्योंकि बेवजह भ्रम फैलने से ग्राहकों का भरोसा प्रभावित हो रहा है।' पॉल स्विट्जरलैंड से आए थे।

15 दिन में जवाब दें : खाद्य नियामक एफएसएसएआई ने नेस्ले को कारण बताओ नोटिस जारी करके पंद्रह दिन के अंदर जवाब मांगा है। नियामक का कहना है कि नेस्ले ने उत्पाद मंजूरी लिए बगैर और बिना जोखिम एवं सुरक्षा आकलन के मैगी ओट्स मसाला नूडल्स पेश किया है। इसलिए मैगी की सभी नौ किस्में तुरंत बाजार से वापस लेने का आदेश दिया हैं। एफएसएसएआई के मुख्य कार्यकारी वाईएम मलिक ने बताया, कंपनी को तीन दिन में बाजार से मैगी हटाने के आदेश पर रिपोर्ट देने को कहा गया है। साथ ही यह प्रक्रिया पूरी होने तक रोज प्रगति रिपोर्ट सौंपने का भी निर्देश दिया गया है। भारत की जांच पर सवाल! : नेस्ले के ग्लोबल सीईओ पॉल से जब यह पूछा गया कि क्या वह भारतीय लैब में हुई जांच पर सवाल उठा रहें हैं तो उन्होंने इस बात स इनकार किया। पॉल ने कहा, 'सबकी जांच का तरीका अलग-अलग हो सकता है। हम भारत का तरीका समझेंगे।'

उग्रवादियों की तलाशी का अभियान तेज

इंफाल एजेंसियों

सुरक्षाबलों ने गुरुवार को सेना के काफिले पर घात लगाकर हमला करने में शामिल उग्रवादियों को पकड़ने के लिए मणिपुर के चंदेल जिले में तलाशी अभियान तेज कर दिया है। इस हमले में डोगरा रेजीमेंट के 18 सैनिक शहीद हो गए थे। इस बीच, सेना प्रमुख दलबीर सिंह सुहाग ने स्वयं मणिपुर पहुँचकर स्थिति का जायजा लिया है। चंदेल के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस घटनास्थल से शहीदों के शवों को ला चुकी है। इनमें 17 शव छठी डोगरा रेजीमेंट के जवानों के हैं, जबकि एक शव उग्रवादी का है। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं कि उग्रवादी किस सगठन से संबंधित है। पुलिस ने बताया कि तलाशी अभियान सेना और असम राइफल्स मिलकर चला रहे हैं। लेकिन अब तक किसी की गिरफ्तारी नहीं की गई है। उन्होंने बताया कि घटनास्थल जंगल के काफी अंदर एवं दुर्गम है।

महज 20 किलोमीटर की दूरी पर म्यांमार सीमा है। इसलिए हमला कर उग्रवादी भागने में कामयाब रहे। सूत्रों ने बताया कि उग्रवादियों की धरपकड़ के लिए परालोंग, चरोंग, मोल्तुह और कुछ अन्य इलाकों में खोज अभियान चलाया जा रहा है। इस बीच, सुरक्षा का जायजा लेने पहुँचे सुहाग ने शुक्रवार को तीसरी कोर के कमांडर और शीर्ष पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने घटना और मौजूदा सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। सुहाग ने कहा कि उग्रवादियों के खिलाफ दीर्घकालिक और लक्षित अभियानों के लिए एक विस्तृत अभियान योजना पर काम किया जा रहा है।

संचार क्या है?

संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है-चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान

तक पहुँचना। संचार स हमारा तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। मशहूर संचारशास्त्री विल्बर श्रैम के अनुसार "संचार अनुभवों की साझेदारी है।' इस प्रकार सुचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरीये सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार है और इस प्रक्रिया को अंजाम देने में मदद करने वाले तरीके संचार माध्यम कहलाते हैं।

संचार के तत्व

संचार एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में कई तत्व शामिल हैं। इनमें से प्रमुख तत्व निम्नलिखित है-

1. **स्रोत या संचारक**-संचार-प्रक्रिया की शुरुआत 'स्रोत" या 'संचारक' से होती है। जब स्रोत या संचारक एक उद्देश्य के साथ अपने किसी विचार, संदेश या भावना को किसी और तक पहुँचाना चाहता है, तो संचार-प्रक्रिया की शुरुआत होती है। जैसे हमें किताब की जरूरत होने पर जैसे ही हम किताब माँगने की सोचते हैं, संचार की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। किताब माँगने के लिए हम अपने मित्र से बातचीत करेंगे या उसे लिखकर संदेश भेजेंगे। बातचीत या संदेश भेजने के लिए हम भाषा का सहारा लेते हैं।
2. **कूटीकृत या एनकोडिंग**-यह संचार की प्रक्रिया का दूसरा चरण है। सफल संचार के लिए जरूरी है कि आपका मित्र भी उस भाषा यानी कोड से परिचित हो जिसमें आप अपना संदेश भेज रहे हैं। इसके साथ ही संचारक का एनकोडिंग की प्रक्रिया पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि सफल संचार के संचारक का भाषा पर पूरा अधिकार होना चाहिए। साथ ही उसे अपने संदेश के मुताबिक बोलना या लिखना भी आना चाहिए।
3. **संदेश**-संचार-प्रक्रिया में संदेश का बहुत अधिक महत्व है। किसी भी संचारक का सबसे प्रमुख उद्देश्य अपने संदेश को उसी अर्थ के साथ प्राप्तकर्ता तक पहुँचाना है। इसलिए सफल संचार के लिए जरूरी है कि संचारक अपने संदेश को लेकर खुद पूरी तरह से स्पष्ट हो। संदेश जितना ही स्पष्ट और सीधा होगा, संदेश के प्राप्तकर्ता को उसे समझना उतना ही आसान होगा।
4. **माध्यम (चैनल)**-संदेश को किसी माध्यम (चैनल) के जरिये प्राप्तकर्ता तक पहुँचाना होता है। जैसे हमारे बोले हुए शब्द ध्वनि तरंगों के जरिये प्राप्तकर्ता तक पहुँचते हैं, जबकि दृश्य संदेश प्रकाश तरंगों के जरिये। इसी तरह वायु तरंगों के जरिये भी संदेश पहुँचते हैं। जैसे खाने की खुशबू हम तक वायु तरंगों के जरिये पहुँचती है। स्पर्श या छूना भी एक तरह का माध्यम है। इसी तरह टेलीफ़ोन, समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और फ़िल्म आदि विभिन्न माध्यमों के जरिये भी संदेश प्राप्तकर्ता तक पहुँचाया जाता है।
5. **प्राप्तकर्ता या रिसीवर**-यह प्राप्त संदेश का कूटवाचन यानी उसकी डीकोडिंग करता है। डीकोडिंग का अर्थ है प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एक तरह से एनकोडिंग की उलटी प्रक्रिया है। इसमें संदेश का प्राप्तकर्ता उन चिहनों और संकेतों के अर्थ निकालता है। जाहिर है कि संचारक और प्राप्तकर्ता दोनों का उस कोड से परिचित होना जरूरी है।
6. **फीडबैक**-संचार-प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता की इस प्रतिक्रिया को फीडबैक कहते हैं। संचार-प्रक्रिया की सफलता में फ़ीडबैक की अहम भूमिका होती है। फ़ीडबैक से ही पता चलता है कि संचार-प्रक्रिया में कहीं कोई बाधा तो नहीं आ रही है। इसके अलावा फ़ीडबैक से यह भी पता चलता है कि संचारक ने जिस अर्थ के साथ संदेश भेजा था वह उसी अर्थ में प्राप्तकर्ता को मिला है या

नहीं? इस फ़ीडबैक के अनुसार ही संचारक अपने संदेश में सुधार करता है और इस तरह संचार की प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

7. **शोर**-संचार प्रक्रिया में कई बाधाएँ भी आती हैं। इन बाधाओं को शोर (नॉयज) कहते हैं। संचार की प्रक्रिया को शोर से बाधा पहुँचती है। यह शोर किसी भी किस्म का हो सकता है। यह मानसिक से लेकर तकनीकी और भौतिक शोर तक हो सकता है। शोर के कारण संदेश अपने मूल रूप में प्राप्तकर्ता तक नहीं पहुँच पाता। सफल संचार के लिए संचार प्रक्रिया से शोर को हटाना या कम करना बहुत जरूरी है।

संचार के प्रकार

संचार विभिन्न प्रकार के होते हैं, पर वे परस्पर काफी मिले-जुले होते हैं। इन्हें अलग करके देखना कठिन होता है। संचार के निम्नलिखित रूप हैं-

1. **सांकेतिक संचार**-जब हम किसी व्यक्ति को संकेत या इशारे से बुलाते हैं तो इसे सांकेतिक संचार कहते हैं। अपने से बड़ों को प्रणाम करते हुए हाथ जोड़कर प्रणाम करना मौखिक संचार का उदाहरण है। मौखिक संचार के समय चेहरे और शरीर के विभिन्न अंगों की मुद्राओं की मदद ली जाती है। खुशी, प्रेम, डर आदि अमौखिक संचार द्वारा व्यक्त किया जाता है।
2. **अंत:वैयक्तिक (इंटरपर्सनल) संचार**-जब हम कुछ सोच रहे होते हैं, कुछ योजना बना रहे होते हैं या किसी को याद कर रहे होते हैं तो यह भी एक संचार है। इस संचार-प्रक्रिया में संचारक और प्राप्तकर्ता एक ही व्यक्ति होता है। यह संचार का सबसे बुनियादी रूप है। इसे अंत:वैयक्तिक (इंट्रपर्सनल) संचार कहते हैं। हम जब पूजा, इबादत या प्रार्थना करते वक्त ध्यान में होते हैं तो वह भी अंत:वैयक्तिक संचार का उदाहरण है। किसी भी संचार की शुरुआत यहीं से होती है।
3. **समूह संचार**-इस संचार में हम जो कुछ भी कहते हैं, वह किसी एक या दो व्यक्ति के लिए न होकर पूरे समूह के लिए होता है। समूह संचार का उपयोग समाज और देश के सामने उपस्थित समस्याओं को बातचीत और बहस-मुबाहिसे के जरिये हल करने के लिए होता है। संसद में जब विभिन्न मुद्दों पर चर्चा होती है तो यह भी समूह संचार का ही एक उदाहरण है।
4. **जनसंचार**-जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के जरिये समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करने की कोशिश करते हैं तो इसे जनसंचार कहते हैं। इसमें एक संदेश को यांत्रिक माध्यम के जरिये बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए हमें किसी उपकरण या माध्यम की मदद लेनी पड़ती है-मसलन अखबार, रेडियो, टी०वी०, सिनेमा या इंटरनेट। अखबार में प्रकाशित होने वाले समाचार वही होते हैं लेकिन प्रेस के जरिये उनकी हजारों-लाखों प्रतियाँ प्रकाशित करके विशाल पाठक वर्ग तक पहुँचाई जाती हैं।

जनसंचार की विशेषताएँ

जनसंचार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. जनसंचार माध्यमों के जरिये प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अंतरवैयक्तिक या समूह संचार की तुलना में जनसंचार के संदेश सबके लिए होते हैं।
2. जनसंचार का संचार के अन्य रूपों से एक फ़र्क यह भी है कि इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता है।

3. जनसंचार के लिए एक औपचारिक संगठन की भी जरूरत पड़ती है। औपचारिक संगठन के बिना जनसंचार माध्यमों को चलाना मुश्किल है। जैसे समाचारपत्र किसी न किसी संगठन से प्रकाशित होता है या रेडियो का प्रसारण किसी रेडियो संगठन की ओर से किया जाता है।
4. जनसंचार माध्यमों ढेर सारे द्वारपाल (गेटकीपर) काम करते हैं। द्वारपाल वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो जनसंचार माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

जनसंचार माध्यमों में द्वारपाल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह उनकी ही जिम्मेदारी है कि वे सार्वजानिक हित, पत्रकारिता के सिद्धांतों, मूल्यों और आचार संहिता के अनुसार सामग्री को संपादित करें और उसके बाद ही उनके प्रसारण या प्रकाशन की इजाजत दें।

जनसंचार के कार्य

जिस प्रकार संचार के कई कार्य हैं, उसी तरह जनसंचार माध्यमों के भी कई कार्य हैं। उनमें से कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं :

1. **सूचना देना**-जनसंचार माध्यमों का प्रमुख कार्य सूचना देना है। हमें उनके जरिये ही दुनियाभर से सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। हमारी जरूरतों का बड़ा हिस्सा जनसंचार माध्यमों के जरिये ही पूरा होता है।
2. **शिक्षित करना**-जनसंचार माध्यम सूचनाओं के जरिये हमें जागरूक बनाते हैं। लोकतंत्र में जनसंचार माध्यमों की एक महत्वपूर्ण भूमिका जनता को शिक्षित करने की है। यहाँ शिक्षित करने से आशय है-उन्हें देश-दुनिया के हाल से परिचित कराना और उसके प्रति सजग बनाना।
3. **मनोरंजन करना**-जनसंचार माध्यम मनोरंजन के भी प्रमुख साधन हैं। सिनेमा, टी०वी०, रेडियो, संगीत के टेप, वीडियो और किताबें आदि मनोरंजन के प्रमुख माध्यम हैं।
4. **एजेंडा तय करना**-जनसंचार माध्यम सूचनाओं और विचारों के जरिये किसी देश और समाज का एजेंडा भी तय करते हैं। जब समाचार-पत्र और समाचार चैनल किसी खास घटना या मुद्दे को प्रमुखता से उठाते हैं या उन्हें व्यापक कवरेज देते हैं, तो वे घटनाएँ या मुद्दे आम लोगों में चर्चा के विषय बन जाते हैं। किसी घटना या मुद्दे को चर्चा का विषय बनाकर जनसंचार माध्यम सरकार और समाज को उस पर अनुकूल प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य कर देते हैं।
5. **निगरानी करना**-किसी लोकतांत्रिक समाज में जनसंचार माध्यमों का एक और प्रमुख कार्य सरकार और संस्थाओं के कामकाज पर निगरानी रखना भी है। अगर सरकार कोई गलत कदम उठाती है या किसी संगठन/संस्था में कोई अनियमितता बरती जा रही है, तो उसे लोगों के सामने लाने की जिम्मेदारी जनसंचार माध्यमों पर है।
6. **विचार-विमर्श के मंच**-जनसंचार माध्यमों का एक कार्य यह भी है कि वे लोकतंत्र में विभिन्न विचारों को अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराते हैं। इसके जरिये विभिन्न विचार लोगों के सामने पहुँचते हैं। जैसे किसी समाचार-पत्र के 'संपादकीय' पृष्ठ पर किसी घटना या मुद्दे पर विभिन्न विचार रखने वाले लेखक अपनी राय व्यक्त करते हैं। इसी तरह 'संपादक के नाम चिट्ठी' स्तंभ में आम लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस तरह जनसंचार माध्यम विचार-विमर्श के मंच के रूप में भी काम करते हैं।

भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास

भारत में जनसंचार माध्यमों का इतिहास बहुत पुराना है। इसके बीज पौराणिक काल के मिथकीय पात्रों में मिल जाते हैं। देवर्षि नारद को भारत का पहला समाचार वाचक माना जाता है जो वीणा की मधुर झंकार के साथ धरती और देवलोक के बीच संवाद-सेतु थे। उन्हीं की तरह महाभारत काल में महाराज धृतराष्ट्र और रानी गांधारी को युद्ध की झलक दिखाने और उसका विवरण सुनाने के लिए जिस तरह संजय की परिकल्पना की गई है, वह एक अत्यंत समृद्ध संचार व्यवस्था की ओर इशारा करती है।

चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक जैसे सम्राटों के शासन-काल में स्थायी महत्व के संदेशों के लिए शिलालेखों और सामयिक या तात्कालिक संदेशों के लिए कच्ची स्याही या रंगों से संदेश लिखकर प्रदर्शित करने की व्यवस्था और मजबूत हुई। तब बाकायदा रोजनामचा लिखने के लिए कर्मचारी नियुक्त किए जाने लगे और जनता के बीच संदेश भेजने के लिए भी सही व्यवस्था की गई।

भीमबेटका के गुफाचित्र इसके प्रमाण हैं। यह समानांतर व्यवस्था बाद में कठपुतली और लोकनाटकों की विविध शैलियों के रूप में दिखाई पड़ती है। देश के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित विविध नाट्यरूपों-कथावाचन, बाउल, सांग, रागनी, तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा-गौरी, यक्षगान आदि का विशेष महत्व है। इन विधाओं के कलाकार मनोरंजन तो करते ही थे, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक संदेश पहुँचाने और जनमत निर्माण करने का काम भी करते थे।

लेकिन जनसंचार के आधुनिक माध्यमों के जो रूप आज हमारे यहाँ हैं, वे निश्चय ही हमें अंग्रेजों से मिले हैं। चाहे समाचारपत्र हों या रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट, सभी माध्यम पश्चिम से ही आए। हमने शुरुआत में उन्हें उसी रूप में अपनाया लेकिन धीरे-धीरे वे हमारी सांस्कृतिक विरासत के अंग बनते चले गए। चाहे फ़िल्में हों या टी०वी० सीरियल, एक समय के बाद वे भारतीय नाट्य परंपरा से परिचालित होने लगते हैं। इसलिए आज के जनसंचार माध्यमों का खाका भले ही पश्चिमी हो. लेकिन उनकी विषयवस्तु और रंगरूप भारतीय ही हैं।

जनसंचार माध्यमों के वर्तमान प्रचलित रूपों में प्रमुख हैं-समाचारपत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट। इन माध्यमों के जरिये जो भी सामग्री आज जनता तक पहुँच रही है, राष्ट्र के मानस का निर्माण करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

समाचारपत्र-पत्रिकाएँ

जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी पत्र-पत्रिकाएँ या प्रिंट मीडिया ही है। हालाँकि अपने विशाल दर्शक वर्ग और तीव्रता के कारण रेडियो और टेलीविजन की ताकत ज्यादा मानी जा सकती है लेकिन वाणी को शब्दों के रूप में रिकॉर्ड करने वाला आरंभिक माध्यम होने की वजह से प्रिंट मीडिया का महत्व हमेशा बना रहेगा। आज भले ही प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट, किसी भी माध्यम से खबरों के संचार को पत्रकारिता कहा जाता हो, लेकिन आरंभ में केवल प्रिंट माध्यमों के जरिये खबरों के आदान-प्रदान की ही पत्रकारिता कहा जाता था।

पत्रकारिता के सोपान

इसके निम्नलिखित तीन सोपान हैं-

1. समाचारों को संकलित करना।
2. उन्हें संपादित कर छापने लायक बनाना!
3. पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाठकों तक पहुँचाना।

यद्यपि ये तीनों काम परस्पर जुड़े हुए हैं पर पत्रकारिता के अंतर्गत पहले दो कामों को शामिल किया जाता है। जहाँ बाहर से खबरें लाने का काम संवाददाताओं का होता है, वहीं तमाम खबरों, लेखों, फ़ीचरों को व्यवस्थित तरीके से संपादित करने और सुरुचिपूर्ण ढंग से छापने का काम संपादकीय विभाग में काम करने वाले संपादकों का होता है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र भी बहुत व्यापक हो चला है। खबर का संबंध किसी एक या दो विषयों से नहीं होता। दुनिया के किसी भी कोने की घटना समाचार बन सकती है बशर्त कि उसमें पाठकों की दिलचस्पी हो या उसमें सार्वजानिक हित निहित हो।

भारत में अखबारी पत्रकारिता का आरंभ

भारत में अखबारी पत्रिका की शुरुआत सन् 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट' से हुई जो कलकत्ता (कोलकाता) से निकला था जबकि हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदत मार्तड' भी कलकत्ता से ही सन् 1826 में पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकला था। हिंदी भाषा के विकास में शुरुआती अखबारों और पत्रिकाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस लिहाज से भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाम हमेशा सम्मान के साथ लिया जाएगा जिन्होंने कई पत्रिकाएँ निकालीं। आजादी के आंदोलन में भारतीय पत्रों ने अहम भूमिका निभाई। महात्मा गांधी, लोकभान्य तिलक और मदनमोहन मालवीय जैसे नेताओं ने लोगों को जागरूक बनाने के लिए पत्रकार की भी भूमिका निभाई।

गांधी जी को हम समकालीन भारत का सबसे बड़ा पत्रकार कह सकते हैं, क्योंकि आजादी दिलाने में उनके पत्रों न महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के पहल के प्रमुख पत्रकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद दविवेदी, बाबुराव बिष्णुराव पराड़कर, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय. रामवृक्ष बेनीपुरी और बालमुकुंद गुप्त हैं। उस समय के महत्वपूर्ण अखबारों और पत्रिकाओं में 'केसरी', हिंदुस्तान' 'सरस्वती' 'हंस' 'कर्मवीर', ' आज',' प्रताप ','प्रदीप' और 'विशाल भारत' आदि प्रमुख हैं।

स्वतंत्र भारत के प्रमुख समाचार पत्र

आजादी के बाद के प्रमुख हिंदी अखबारों में 'नवभारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'नई दुनिया', 'राजस्थान पत्रिका', 'अमर उजाला' , 'दैनिक भास्कर', "दैनिक जागरण और पत्रिकाओं में 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', ' दिनमान' , 'रविवार' , 'इंडिया टुडे' और 'आउटलुक' का नाम लिया जा सकता है। इनमें से कई पत्रिकाएँ बंद हो चुकी हैं। आजादी के बाद के हिंदी के प्रमुख पत्रकारों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यानन 'अज्ञेय', रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, राजेन्द्र माथुर, प्रभाष जोशी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, सुरेन्द्र प्रताप सिंह का नाम लिया जात

सकता है।

रेडियो

पत्र-पत्रिकाओं के बाद जिस माध्यम ने दुनिया को सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह रेडियो है। सन् 1895 में जब इटली के इलेक्ट्रिकल इंजीनियर जी० माकनी ने वायरलेस के जरिये ध्वनियों और संकेतों को एक जगह से दूसरी जगह भेजने में कामयाबी हासिल की, तब रेडियो जैसा माध्यम अस्तित्व में आया। पहले विश्वयुद्ध तक यह सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण औजार बन चुका था। भारत में 1892 में रेडियो की शुरुआत हुई। 1921 में मुंबई में 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' ने डाक-तार विभाग के सहयोग से संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया। 1936 में विधिवत् ऑल इडिया रेडियो की स्थापना हुई और आजादी के समय तक देश में कुल में रेडियो स्टेशन खुल चुके थे- लखनऊ, दिल्ली, बंबई (मुंबई), कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) तिरुचिरापल्ली, ढाका, लाहौर और पेशावर। इनमें से तीन रेडियो स्टेशन विभाजन के साथ पाकिस्तान के हिस्से में चले गए।

आजादी के बाद भारत में रेडियो एक बेहद ताकतवर माध्यम के रूप में विकसित हुआ। आज आकाशवाणी देश की 24 भाषाओं और 146 बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। देश की 96 प्रतिशत आबादी तक इसकी पहुँच है। 1993 में एफएम (फ्रिक्वेंसी मॉडयूलेशन) की शुरुआत के बाद रेडियो के क्षेत्र में कई निजी कंपनियाँ भी आगे आई ह। लेकिन अभी उन्हें समाचार और सम-सामयिक कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुमति नहीं है।

रेडियो एक ध्वनि पाध्यम है। इसकी तात्कालिकता, घनिष्ठता और प्रभाव के कारण गांधी जी ने रेडियो को एक अद्‌भुत श न कहा था। ध्वनि-तरंगों के जरिये यह देश के कोने-कोने तक पहुँचता है। दूर-दराज के गाँवों में, जहाँ संचार और मनोरंजन के अन्य साधन नहीं होते, वहाँ रेडियो ही एकमात्र साधन है. बाहरी दुनिया से जुड़ने का। फिर अखबार और टेलीविजन की तुलना में यह बहु ' सस्: भी है।

इसलिए भारत के दूरदराज के हलाकों में लोगों ने रेडियो क्लब बना लिए हैं। आकाशवाणी के अलावा सैकड़ों निजी एफएम स्टेशनों और बीबीसी, वायस ऑफ अमेरिका, डोयचे वेले (रेडियों

जर्मनी), मास्को रेडियो, रेडियों पेइचिंग, रेडियो आस्ट्रेलिया जैसे कई विदेशी प्रसारण और हैम अमेच्योर रेडियो क्लबों (स्वतंत्र समूह द्वारा संचालित पंजीकृत रेडियो स्टेशन) का जाल बिछा हुआ है।

टेलीविजन

आज टेलीविज़न जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और ताकतवर माध्यम बन गया है। प्रिंट मीडिया के शब्द और रेडियो की ध्वनियों के साथ जब टेलीविज़न के दृश्य मिल जाते हैं, तो सूचना की विश्वसनीयता कई गुना बढ़ जाती है।

भारत में टेलीविजन की शुरुआत यूनेस्को की एक शैक्षिक परियोजना के अंतर्गत 15 सितंबर, 1959 को हुई थी। इसका मकसद टेलीविजन के जरिये शिक्षा और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना था। इसके तहत दिल्ली के आसपास के गाँवों में 2 टी०वी० सेट लगाए गए जिन्हें 200 लोगों ने देखा। यह हफ्ते में दो बार एक-एक घंटे के लिए दिखाया जाता था। लेकिन 1965 में स्वतंत्रता दिवस से भारत में विधिवत टी०वी० सेवा का आरंभ हुआ। तब रोज एक घंटे के लिए टी०वी० कार्यक्रम दिखाया जाने लगा। 1975 तक दिल्ली, मुंबई, श्रीनगर, अमृतसर, कोलकाता, मद्रास और लखनऊ में टी०वी० सेंटर खुल गए। लेकिन 1976 तक टी०वी० सेवा आकाशवाणी का हिस्सा थी। 1 अप्रैल, 1976 से इसे अलग कर दिया गया। इसे दूरदर्शन नाम दिया गया। 1984 में इसकी रजत जयंती मनाई गई।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को दूरदर्शन की ताकत का एकसास था। वे देशभर में टेलीविजन केंद्रों का जाल बिछाना चाहती थीं। 1980 में इंदिरा गांधी ने प्रोफेसर पी०सी० जोशी की अध्यक्षता में दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक समिति गठित की। जोशी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा, हमारे जैसे समाज में जहाँ पुराने मूल्य टूट रहे हों और नए न बन रहे हों, वहाँ दूरदर्शन बड़ी भूमिका निभाते हुए जनतंत्र को मजबूत बना सकता है।

दूरदर्शन कार्यक्रमों की गुणवत्ता के सुधार में प्रो० पी०सी० जोशी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई, जिसने अपनी रिपोर्ट में लिखा-'हमारे जैसे समाज में जहाँ पुराने मूल्य टूट रहे हों और नए न बन रहे हों, वहाँ दूरदर्शन बड़ी भूमिका निभाते हुए जनतंत्र को मजबूत बना सकता है।'

टेलीविजन के उद्देश्य

टेलीविजन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

- सामाजिक परिवर्तन
- राष्ट्रीय एकता
- वैज्ञानिक चेतना का विकास
- परिवार-कल्याण को प्रोत्साहन
- कृषि-विकास
- पर्यावरण-संरक्षण
- सामाजिक विकास
- खेल–संस्कृति का विकास
- सांस्कृतिक धरोहर को प्रोत्साहन

दूरदर्शन ने देश की सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की ज़रूरतों को पूरा करने की दिशा में उल्लेखनीय सेवा की है, लेकिन लंबे समय तक सरकारी नियंत्रण में रहने के कारण इसमें ताज़गी

का अभाव खटकने लगा और पत्रकारिता के निष्पक्ष माध्यम के तौर पर यह अपनी जगह नहीं बना पाया। अलबत्ता मनोरंजन के एक लोकप्रिय माध्यम के तौर पर इसने अपनी एक खास जगह बना ली है।

टेलीविजन का असली विस्तार तब हुआ, जब भारत में देशी निजी चैनलों की बाढ़ आने लगी। अक्टूबर, 1993 में जी टी०वी० और स्टार टी०वी० के बीच अनुबंध हुआ। इसके बाद समाचार के क्षेत्र में भी जी न्यूज और स्टार न्यूज नामक चैनल आए और सन् 2002 में आजतक के स्वतंत्र चैनरल के रूप में आने के बाद तो जैसे समाचार चैनलों की बाढ़ ही आ गई। जहाँ पहले हमारे सार्वजनिक प्रसारक दूरदर्शक का उद्देश्य राष्ट्र-निर्माण और सामाजिक उन्नयन था, वहीं इन निजी चैनलों का मकसद व्यावसायिक लाभ कमाना रह गया। इससे जहाँ टेलीविजन समाचार को निष्पक्षता की पहचान मिली, उसमें ताजगी आई और वह पेशेवर हुआ, वहीं एक अंधी होड़ के कारण अनेक बार पत्रकारिता के मूल्यों और उसकी नैतिकता का भी हनन हुआ। इसके बावजूद आज पूरे भारत में 200 से अधिक चैनल प्रसारित हो रहे हैं और रोज नए-नए चैनलों की बाढ़ आ रही है।

सिनेमा

जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम है-सिनेमा। हालाँकि यह जनसंचार के अन्य माध्यमों की तरह सीधे तौर पर सूचना देने के अन्य
नहीं करता, लेकिन परोक्ष रूप में सूचना, ज्ञान और संदेश देने का काम करता है। सिनेमा को मनोरंजन के एक सशक्त माध्यम के तौर पर देखा जाता रहा है। सिनेमा के आविष्कार का श्रेय थॉमस अल्वा एडिसन को जाता है और यह 1883 में मिनेटिस्कोप की खोज के साथ जुड़ा हुआ है। 1894 में फ्रांस में पहली फ़िल्म बनी 'द अराइवल ऑफ़ ट्रेन'। सिनेमा की तकनीक में नेजी से विकास हुआ और जल्दी ही यूरोप और अमेरिका में कई अच्छी फ़िल्में बनने लगीं।

पुरानी फ़िल्मों के कुछ चित्र

भारत में पहली मूक फ़िल्म बनाने का श्रेय दादा साहेब फ़ाल्के को जाता है। यह फ़िल्म थी 1913 में बनी-'राजा हरिश्चंद्र'। इसके बाद के दो दशकों में कई और मूक फ़िल्में बनीं। इनके कथानक धर्म, इतिहास और लोक-गाथाओं के इर्द-गिर्द बुने जाते रहे। 1931 में पहली बोलती फिल्म बनी-' आलम आरा'। इसके बाद कि बोलती फ़िल्मों का दौर शुरू हुआ। आज़ादी मिलने के बाद जहाँ एक तरफ़ भारतीय सिनेमा ने देश के सामाजिक यथार्थ को गहराई से पकड़कर आवाज़ देने की कोशिश की, वहीं लोकप्रिय सिनेमा ने व्यावसायिकता का रास्ता अपनाया। एक तरफ़ पृथ्वीराज कपूर, महबूब खान, सोहराब मोदी, गुरुदत्त जैसे फ़िल्मकार थे, तो दूसरी तरफ़ सत्यजित राय जैसे फ़िल्मकार। सिनेमा जनसंचार के एक बेहतरीन और सबसे ताकतवर माध्यमों में से एक है। इसके कई और आयाम भी हैं। यह मनोरंजन के साथ-साथ समाज को बदलने का, लोगों में नई सोच विकसित करने का और अत्याधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से लोगों को सपनों की दुनिया में ले जाने का माध्यम भी है।

मौजूदा समय में भारत हर साल लगभग 800 फ़िल्मों का निर्माण करता है और दुनिया का सबसे बड़ा फ़िल्म-निर्माता देश बन गया है। यहाँ हिंदी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और बालियों में भी फ़िल्में बनती हैं और खूब चलती हैं।

इंटरनेट

इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया, लेकिन तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है। एक ऐसा माध्यम, जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण

मौजूद हैं। उसकी पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है और उसकी रफ़्तार का कोई जवाब नहीं है। उसमें सारे माध्यमों का समागम है। इंटरनेट पर आप दुनिया के किसी भी कोने से छपनेवाले अखबार या पत्रिका में छपी सामग्री पढ़ सकते हैं। रेडियो सुन सकते हैं। सिनेमा देख सकते हैं। किताब पढ़ सकते हैं और विश्वव्यापी जाल के भीतर जमा करोड़ों पन्नों में से पलभर में अपने मतलब की सामग्री खोज सकते हैं।

यह एक अंतरक्रियात्मक माध्यम है यानी आप इसमें मूक दर्शक नहीं है। आप सवाल-जवाब, बहस-मुबाहिसों में भाग लेते हैं, आप चैट कर सकते हैं और मन हो तो अपना ब्लाग बनाकर पत्रकारिता की किसी बहस के सूत्रधार बन सकते हैं। इंटरनेट ने हमें मीडिया समागम यानी कंवर्जेस के युग में पहुँचा दिया है और संचार की नई संभावनाएँ जगा दी हैं।

हर माध्यम में कुछ गुण और कुछ अवगुण होते हैं। इंटरनेट ने जहाँ पढ़ने-लिखने वालों के लिए, शोधकर्ताओं के लिए संभावनाओं के नए कपाट खोले हैं, हमें विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है, वहीं इसमें कुछ खामियाँ भी हैं। पहली खामी तो यही है कि इसमें लाखों अश्लील पन्ने भर दिए गए हैं, जिसका बच्चों के कोमल मन पर बुरा असर पड़ सकता है। दूसरी खामी यह है कि इसका दुरुपयोग किया जा सकता है। हाल के वर्षों में इंटरनेट के दुरुपयोग की कई घटनाएँ सामने आई हैं।

जनसंचार माध्यमों का प्रभाव

आज के संचार प्रधान समाज में जनसंचार माध्यमों के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारी जीवन-शैली पर संचार माध्यमों का जबरदस्त असर है। अखबार पढ़े बिना हमारी सुबह नहीं होती। जो अखबार नहीं पढ़ते, वे रोजमर्रा की खबरों के लिए रेडियो या टी॰वी॰ पर निर्भर रहते हैं। हमारी महानगरीय युवा पीढ़ी समाचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए इंटरनेट का उपयोग करने लगी है। खरीद-फ़राख्त के हमारे फ़ैसलों तक पर विज्ञापनों का असर साफ़ देखा जा सकता है। यहाँ तक कि शादी-ब्याह के लिए भी लोगों की अखबार या इंटरनेट के मैट्रिमोनियल पर निर्भरता बढ़ने लगी है। टिकट बुक कराने और टेलीफ़ोन का बिल जमा कराने से लेकर सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल बढ़ा है। इसी तरह फुरसत के क्षणों में टी॰वी॰-सिनेमा पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों और फ़िल्मों के जरिये हम अपना मनोरंजन करते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यमों ने जहाँ एक ओर लोगों को सचेत और जागरूक बनाने में अहम भूमिका निभाई है, वहीं उसके नकारात्मक प्रभावों से भी इनकार नहीं किया जा सकता। यह भी स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यमों के बिना आज सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे में यह जरूरी है कि हम जनसंचार माध्यमों से प्रसारित और प्रकाशित सामग्री को निष्क्रिय तरीके से ग्रहण करने के बजाय उसे सक्रिय तरीके से सोच-विचार करके और आलोचनात्मक विश्लेषण के बाद ही स्वीकार करें। एक जागरूक पाठक, दर्शक और श्रोता के बतौर हमें अपनी आँखें, कान और दिमाग हमेशा खुले रखने चाहिए। V

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

प्रश्न 1:

इस पाठ में विभिन्न लोक-माध्यमों की चर्चा हुई है। आप पता लगाइए कि वे कौन-कौन से क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकनाट्य या लोकमाध्यम के किसी प्रसंग के बारे में जानकारी हासिल करके उसकी प्रस्तुति के खास अंदाज़ के बारे में भी लिखिए।

उत्तर –

इस पाठ में जिन लोकमाध्यमों की चर्चा हुई है, वे हैं-लोक-नृत्य, लोक-संगीत और लोक-नाट्य। ये

देश के विभिन्न भागों में विविध नाट्य रूपों-कथावाचन, बाउल, सांग, रागिनी तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा-गौरी, यक्ष-गान, कठपुतली लोक-नाटक आदि में प्रचलित हैं। इनमें स्वाँग उत्तरी भारत, नौटंकी उत्तर प्रदेश, बिहार, रागिनी हरियाणा तथा यक्ष-गान कर्नाटक क्षेत्रों से संबंधित हैं। हमारे क्षेत्र में नौटंकी का प्रयोग खूब होता है। यह ग्रामीण नाट्य-शैली का एक रूप है। इसमें प्राय: रात्रि के समय मंच पर किसी लोक-कथा या कहानी को नाट्य-शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें स्त्री-पात्रों की भूमिका भी प्राय: पुरुष-पात्र करते हैं। हारमोनियम, नगाड़ा, ढोलक आदि वाद्य-यंत्रों के साथ यह संगीतमय प्रस्तुति लोक-लुभावन होती है।

प्रश्न 2:

आजादी के बाद भी हमारे देश के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ हैं। आप समाचार-पत्रों को उनके प्रति किस हद तक संवेदनशील पाते हैं?

उत्तर –

आजादी के बाद भी हमारे देश में बहुत-सी चुनौतियाँ हैं। ये चुनौतियाँ हैं :

1. निर्धनता से निपटने की चुनौती।
2. बेरोजगारी से निपटने की चुनौती।
3. भ्रष्टाचार की चुनौती।
4. देश की एकता बनाए रखने की चुनौती।
5. आतंकवाद का मुकाबला करने की चुनौती।
6. सांप्रदायिकता से निपटने की चुनौती।

हम समाचार-पत्रों को इन चुनौतियों के प्रति काफी हद तक संवेदनशील पाते हैं। वे अपने दायित्व का निर्वहन, इनसे पीडित लोगों की आवाज सरकार तक पहुंचाकर कर रहे हैं, जिससे सरकार और अन्य स्वयंसेवी संस्थाएँ इनको हल करने के लिए आगे आती हैं। हाँ, छोटे समाचार-पत्र अपनी सीमा निश्चित होने के कारण कई बार दबाव में आकर उतने संवेदनशील नहीं हो पाते हैं।

प्रश्न 3:

टी०वी० के निजी चैनल अपनी व्यावसायिक सफलता के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाते हैं? टी०वी० के कार्यक्रमों से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर –

टी०वी० के निजी चैनल अपनी व्यावसायिक सफलता के लिए लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने वाले कार्यक्रम दिखाते हैं। लोग ऐसे कार्यक्रमों की ओर आकर्षित होते हैं। ये चैनल कई बार लोगों की आस्था को भी निशाना बनाने से नहीं चूकते। इन कार्यक्रमों को टुकड़ों में दिखाते हुए ऐसे मोड़ पर समाप्त करते हैं, जिससे लोगों की उत्सुकता अगले कार्यक्रम के लिए बनी रहे। गत दिनों जम्मू-कश्मीर में आई बाढ़ की खबरों तथा उनमें फँसे नागरिकों को बचाने संबंधी खबरों को कई दिनों तक टी०वी० पर दिखाया जाता रहा। इसी प्रकार अमेठी (उत्तर प्रदेश) के भूपति भवन पर अधिकार को लेकर संजय सिंह (राज्य सभा सांसद) और उनकी पहली पत्नी गरिमा सिंह, पुत्र अनंत विक्रम सिंह के मध्य हुए झगड़े एवं विवाद को कई बार दिखाया गया।

प्रश्न 4:

इंटरनेट पत्रकारिता ने दुनिया को किस प्रकार समेट लिया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

इंटरनेट पत्रकारिता के कारण अब दूरियाँ सिमटकर रह गई हैं; इंटरनेट की पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक हो गई है। इसकी रफ्तार बहुत तेज है। इसका असर पत्रकारिता पर भी हुआ है। इसकी मदद से स्टूडियो में बैठा संचालक किसी भी मुद्दे पर देश-विदेश में बैठे व्यक्ति से बातें कर लेता है और करा देता है। इसकी मदद से गोष्ठियाँ, वार्ताएँ आयोजित की जाती हैं। इससे विश्व की किसी भी घटना की जानकारी अब आसान हो गई है।

प्रश्न 5:

किन्हीं दो हिंदी पत्रिकाओं के समान अंकों को (समान अवधि के) पढ़िए और उनमें निम्न बिंदुओं के आधार पर तुलना कीजिए :

- आवरण पृष्ठ
- अंदर के पृष्ठों की साज-सज्जा
- सूचनाओं का क्रम
- भाषा–शैली

उत्तर –

हम 'सरिता' और 'इंडिया टुडे' पत्रिकाओं के समान अंकों को लेते हैं और तुलना करते हैं :

आवरण पृष्ठ-'सरिता' पत्रिका का आवरण पृष्ठ अधिक रंग-बिरंगा. चित्रमय, आकर्षक और सुंदर है, जबकि 'इंडिया टुडे' का आवरण पृष्ठ अच्छा है, पर उतना आकर्षक नहीं।

अंदर के पृष्ठों की साज-सज्जा-'सरिता' के पृष्ठों की साज-सज्जा पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि 'इंडिया टुडे' के पृष्ठों पर कम। 'सरिता' के पृष्ठों पर चित्र अधिक हैं, जबकि 'इंडिया टुडे' के पृष्ठों पर कम।

सूचनाओं का क्रम-'सरिता' में सूचनाएँ किसी क्षेत्र-विशेष से संबंधित न होकर विविध क्षेत्रों से संबंधित हैं, जबकि 'इंडिया टुडे" में मुख्यत: राजनीतिक खबरें एवं सूचनाएँ हैं।

भाषा-शैली– सरिता' की भाषा सरल तथा बोधगम्य है, जबकि 'इंडिया टुडे' की भाषा-शैली अधिक उच्च-स्तरीय है।

प्रश्न 6:

निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण होना चाहिए अथवा नहीं? पक्ष-विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर –

निजी चैनलों पर नियंत्रण होने से उनका काम करने का दायरा एवं ढंग प्रभावित होगा। इससे उनकी निष्पक्षता पर भी असर पड़ेगा। उन्हें सरकारी दबाव में काम करना होगा, अत: हमारे विचार में निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 7:

नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। उनके सामने ✓ या × का निशान लगाते हुए उसकी पुष्टि के लिए उदाहरण भी दीजिए :

(क) संचार माध्यम केवल मनोरंजन के साधन हैं। ×

(ख) केवल तकनीकी विकास के कारण संचार संभव हुआ, इससे पहले संचार संभव नहीं था। ×

(ग) समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इतने सशक्त संचार माध्यम हैं कि वे राष्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं। ✓

(घ) टेलीविजन सबसे प्रभावशाली एवं सशक्त संचार माध्यम है। ✓

(ड) इंटरनेट सभी संचार माध्यमों का मिला-जुला रूप या समागम है। ✓

(च) कई बार संचार माध्यमों का नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। ✓

उत्तर –

(क) उदाहरण-संचार माध्यमों से हमें तरह-तरह का ज्ञान प्राप्त होता है, अत: ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं।
(ख) उदाहरण-संचार दो व्यक्तियों के बीच यहाँ तक अकेले भी होता है। इसके लिए तकनीकी विकास की आवश्यकता अनिवार्य नहीं थी। तकनीकी विकास बाद में सहायक बने हैं।
(ग) उदाहरण-समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ घोटाले, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, सांप्रदायिकता आदि के विरुद्ध आवाज उठाकर राज्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं।
(घ) उदाहरण-टेलीविजन आवाज और चित्र का संगम होने के कारण अमीर-गरीब, शहरी-ग्रामीण, युवा-वृद्ध सभी की पसंद बन गया है।
(ड) उदाहरण-इंटरनेट पर समाचार-पठन, गीत-संगीत, फ़िल्म, बैठक, गोष्ठी आदि देखा-सुना जा सकता है।
(च) उदाहरण-इंटरनेट और टेलीविजन अपने कार्यक्रमों से समाज में अश्लीलता परोसने का काम कर रहे हैं।

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1:
संचार जीवन की निशानी है। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर –
मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण वह संचार करता है। दैनिक जीवन में संचार के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। मनुष्य जब तक जीवित है, वह संचार करता रहता है। संचार खत्म होने का मतलब है-मृत्यु। संचार ही मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़ता है। अत: कहा जा सकता है कि संचार जीवन की निशानी है।
प्रश्न 2:

संचार के साधन कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

टेलीफोन, इंटरनेट, समाचार-पत्र, फैक्स, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि।

प्रश्न 3:

दुनिया एक गाँव में बदल गई है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

आज संचार के अनेक साधन विकसित हो गए हैं जिसके कारण भौतिक दूरियाँ कम हो रही हैं। इन साधनों के कारण मनुष्य सांस्कृतिक व मानसिक रूप से भी एक-दूसरे के करीब आ रहा है।

जनसंचार के माध्यमों से कुछ ही क्षण में दुनिया के हर कोने की खबर मिल जाती है। इसी कारण आज दुनिया एक गाँव जैसी लगने लगी है।

प्रश्न 4:

संचार किसे कहते हैं?

उत्तर –

'संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है-चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचना। सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार है।

प्रश्न 5:

संचार की प्रक्रिया के तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

संचार की प्रक्रिया के तत्व निम्नलिखित हैं-

1. स्रोत
2. एनकोडिग
3. भाध्यम
4. प्राप्तकर्ता

प्रश्न 6:

सफल संचार के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर –

सफल संचार के लिए भाषा के कोड का ज्ञान होना जरूरी है।

प्रश्न 7:

डीकोडिंग का अर्थ बताइए।

उत्तर –

इसका अर्थ है-प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एनकोडिंग से उलटी प्रकिया है। इसमें संदेश प्राप्तकर्ता प्राप्त चिहनों व संकेतों के अर्थ निकालता है।

प्रश्न 8:

फीडबैक किसे कहते हैं?

उत्तर –

संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा दर्शाई गई प्रतिक्रिया को फीडबैक कहते हैं। यह सकारात्मक या नकारात्मक दोनों ही हो सकती है।

प्रश्न 9:

शोर क्या है?

उत्तर –

संचार प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को शोर कहते हैं। यह शोर मानसिक से लेकर तकनीकी और भौतिक हो सकता है। इसके कारण संदेश अपने मूल रूप में प्राप्तकर्ता तक नहीं पहुँच पाता।

प्रश्न 10:

संचार के प्रकार बताइए।

उत्तर –

संचार के अनेक प्रकार हैं-सांकेतिक संचार, मौखिक संचार. अमौखिक संचार, अंत: वैयक्तिक संचार, अंतर वैयक्तिक संचार, समूह संचार व जनसंचारा।

प्रश्न 11:

अंत: वैयक्तिक संचार किसे कहते हैं?

उत्तर –

वह संचार जिसमें संचारक और प्राप्तकर्ता एक हि व्यक्ति होता है, वह अंत: वैयक्तिक संचार कहलाता है। पूजा करना, ध्यान लगाना आदि इसके रूप है।

प्रश्न 12:

अंतर वैयक्तिक संचार का क्या महत्त्व है?

उत्तर –

जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे अंतर वैयक्तिक संचार कहते हैं। इसमें फीडबैक तत्काल मिलता है। इस तरीके से संबंध विकसित होते हैं। यह रूप पारिवारिक तथा सामाजिक रिश्तों की बुनियाद है। व्यक्तिगत जीवन में सफलता के लिए हमारा अंतर वैयक्तिक संचार का कौशल उन्नत और प्रभावी होना चाहिए।

प्रश्न 13:

समूह संचार का उपयोग कहाँ होता है?

उत्तर –

समूह संचार का उपयोग समाज और देश के सामने उपस्थित समस्याओं को बातचीत और बहस के जरिए हल करने के लिए होता है।

प्रश्न 14:

जनसंचार किसे कहते हैं?

उत्तर –

जब संचार किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के जरिए समाज के विशाल वर्ग से संवाद करने की कोशिश की जाती है तो उसे जनसंचार कहते हैं। इसमें एक संदेश की यांत्रिक माध्यम के जरिए बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके।

प्रश्न 15:

जनंसचार की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –

जनसंचार की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

1. जनसंचार माध्यमों के जरिए प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है।
2. इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता।

3. इस माध्यम में अनेक द्वारपाल होते हैं जो इन माध्यमों से प्रकाशित/प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित तथा निर्धरित करते हैं।

प्रश्न 16:

जनसंचार माध्यमों में दवारपालों की भूमिका क्या है?

उत्तर –

जनसंचार माध्यमों में द्वारपालों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह उनकी जिम्मेदारी है कि सार्वजनिक हित, पत्रकारिता के सिद्धांतों, मूल्यों और आचार संहिता के अनुसार सामग्री को संपादित करें तथा उसके बाद ही उनके प्रसारण या प्रकाशन की इजाजत दें।

प्रश्न 17:

संचार के कार्य बताइए।

उत्तर –

संचार के निम्नलिखित कार्य हैं-

1. संचार से कुछ हासिल किया जाता है।
2. यह किसी के व्यवहार को नियंत्रित करता है।
3. यह सूचना देने या लेने का कार्य करता है।
4. यह मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति एक खास तरह से प्रस्तुत करता है।
5. यह प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है।

प्रश्न 18:

जनसंचार के कौन-कौन से कार्य हैं? स्पष्ट करें।

उत्तर –

जनसंचार के निम्नलिखित कार्य हैं-

1. **सूचना देना**-जनसंचार माध्यमों का प्रमुख कार्य सूचना देना है। ये दुनिया भर में सूचनाएँ प्रसारित करते हैं।
2. **मनोरंजन**-जनसंचार माध्यम-सिनेमा, रेडियो, टी.वी. आदि मनोरंजन के भी प्रमुख साधन हैं।
3. **जागरूकता**-जनसंचार माध्यम लोगों को जागरूक बनाते हैं। वे जनता को शिक्षित करते हैं।”
4. **निगरानी**-जनसंचार माध्यम सरकार और संस्थाओं के कामकाज पर निगरानी रखते हैं।
5. **विचार**-विमर्श के मंच-ये माध्यम लोकतंत्र में विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराते हैं।
   इनके जरिए विभिन्न विचार लोगों के सामने पहुँचते हैं।

प्रश्न 19:

भारत का पहला समाचारवाचक किसे माना जाता है?

उत्तर –

देवर्षि नारद।

प्रश्न 20:

भारत में जनसंचार का इतिहास किस काल में मिल सकता है?

उत्तर –

पौराणिक काल में।

प्रश्न 21:

प्राचीन काल में संदेश किस तरह दिए जाते थे?

उत्तर –

शिलालेखों पर लेख अंकित करके।

प्रश्न 22:

भारतीय संचार के लोक माध्यम बताइए।

उत्तर –

भीमवेटका के गुफाचित्र, कठपुतली, लोकनाटक आदि।

प्रश्न 23:

लोकनाटकों के प्रकार बताइए।

उत्तर –

कथावाचन, बाउल, सांग, रागनी, तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा-गौरी, यक्षगान।

प्रश्न 24:

जनसंचार के आधुनिक माध्यम कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

रेडियो, टी.वी. समाचार-पत्र, सिनेमा इंटरनेट आदि।

समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ

प्रश्न 25:

जनसंचार में प्रिंट मीडिया का क्या महत्व है?

उत्तर –

जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी प्रिंट मीड़िया है। यह माध्यम वाणी को शब्दों के रूप में रिकार्ड करता है जो स्थायी होते हैं।

प्रश्न 26:

पत्रकारिता के पहलुओं के बारे में बताइए।

उत्तर –

पत्रकारिता के तीन पहलू हैं-पहला-समाचारों को संकलित करना, दूसरा उन्हें संपादित कर छपने लायक बनाना तथा तीसरा उसे पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाटक तक पहुँचाना।

प्रश्न 27:

भारत में छपने वाला पहला अखबार कौन-सा था?

उत्तर –

बगाल गजट (1780)।

प्रश्न 28:

हिदी का पहला साप्ताहिक-पत्र कौन-सा था?

उत्तर –

पं० जुगल किशोर शुक्ल द्वारा संपादित उदत मातंट्ट (1876-80);

प्रश्न 29:

हिंदी भाषा के प्रारंभिक दौर में किन विदवानों ने योगदान दिया।

उत्तर –

भारतेंदु हरिश्चंद्र, महात्मा गाँधी, तिलक. मदनमंहिन मारुवीय, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा बालमुकुंद गुप्त आदि।

प्रश्न 30:

स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान छपने वाले प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के नाम बताइए।

उत्तर –

केसरी, हिंदुस्तान, सरस्वती, हंस, कर्मवीर, आज, प्रताप, प्रदीप, विशाल भारत आदि।

प्रश्न 31:

भारत की आजादी से पूर्व प्:कारिता का क्या लक्ष्य था?

उत्तर –

स्वाधीनत्वा कीं प्राप्ति।

प्रश्न 32:

आजादी के बाद पत्रकारिता के चरित्र में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर –

पत्रकारिता विशुद्ध व्यवसाय बन गया।

प्रश्न 33:

आजादी के बाद के प्रमुख पत्रकारों के नाम बताइए।

उत्तर –

अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, राजेंद्र माथुर, प्रमाण जोशी, सुरेंद्र प्रताप सिंह आदि।

प्रश्न 34:

किन्ही दो प्रमुख हिंदी अखबारों के नाम बताइए।

उत्तर –

जनसत्ता, पंजाब केसरी!

रेडियो

प्रश्न 35:

रेडियो का आविष्कार कब हुआ?

उत्तर –

1895 में इटली के इंजीनियर जी. माकनी द्वारा।

प्रश्न 36:

विश्व का पहला रेडियो स्टेशन कब व कहाँ खुला?

उत्तर –

1892 में अमेरिकी शहर पिट्सबर्ग, न्यूयार्क व शिकागो में विश्व के शुरुआती रेडियो स्टेशन खुले।

प्रश्न 37:

ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई?

उत्तर –

1936 ई. में। 192 = हिंदी (केंद्रिक)-XI

प्रश्न 38:

रेडियो का माध्यम क्या है?

उत्तर – ध्वनि।

प्रश्न 39:

एफ. एम. रेडियो की शुरुआत कब हुई?

उत्तर –

1993 में।

प्रश्न 40:

रेडियो की पहुँच कितने प्रतिशत आबादी तक है?

उत्तर –

96 प्रतिशत।

प्रश्न 41:

गाँधी जी ने रेडियो को अदभुत शक्ति क्यों कहा था?

उत्तर –

रेडियो की तात्कालिकता, घनिष्ठता व प्रभाव के कारण गाँधी जी ने इसे अद्भुत शक्ति कहा था।

टेलीविजन

प्रश्न 42:

टेलीविजन में किन-किन माध्यमों का मिलन होता है?

उत्तर –

शब्द, ध्वनि व दृश्य।

प्रश्न 43:

विश्व में टेलीविजन कार्यक्रम कब शुरू हुए?

उत्तर –

1927 ई. में, अमेरिका।

प्रश्न 44:

भारत में टी. वी. की शुरूआत कब हुई तथा इसका उददेश्य क्या था?

उत्तर –

भारत में टी.वी. की शुरूआत 15 सितंबर, 1959 को हुई। इसका उद्देश्य शिक्षा और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना था।

प्रश्न 45:

दूरदर्शन आकाशवाणी से कब अलग हुआ?

उत्तर –

1 अप्रैल, 1976 से।

प्रश्न 46:

पी. सी. जोशी समिति ने दूरदर्शन के कौन-कौन से उददेश्य बताए?

उत्तर –

पी. सी. जोशी समिति का गठन 1980 में इंदिरा गाँधी ने दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए किया था। इस कमेटी ने दूरदर्शन के निम्नलिखित उद्देश्य बताए

1. सामाजिक परिवर्तन
2. राष्ट्रीय एकता
3. वैज्ञानिक चेतना का विकास
4. परिवार कल्याण
5. कृषि विकास
6. पर्यावरण संरक्षण
7. सामाजिक विकास

प्रश्न 47:

आधुनिक टी.वी. चैनलों के नाम बताइए।

उत्तर –

सी.एन.एन. बी.बी.सी., आज तक, जी न्यूज आदि।

प्रश्न 48:

अत्यधिक चैनलों के आने से क्या परिणाम हुआ?

उत्तर –

अत्यधिक चैनलों के आने से टेलीविजन समाचार को निष्पक्षता व ताजगी मिली, परंतु पत्रकारिता मूल्यों व नैतिकता का पतन हुआ।

सिनेमा

प्रश्न 49:

सिनेमा का आविष्कार किसने किया?

उत्तर –

सिनेमा का आविष्कार थॉमस अल्वा एडिसन ने 1883 में किथा।

प्रश्न 50:

विश्व की सबसे पहली फिल्म कौन-सी थी?

उत्तर –

द अराइवल ऑफ ट्रेन (1894, फ्रांस)।

प्रश्न 51:

भारत में पहली मूक फिल्म किसने बनाई?

उत्तर –

भारत में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' (1913) दादा साहब फाल्के ने बनाई।

प्रश्न 52:

भारत की पहली बोलती फिल्म कौन-सी थी?

उत्तर –

आलम आरा (1931)।

प्रश्न 53:

हिंदी के प्रसिदध फिल्मकार बताइए।

उत्तर –

पृथ्वीराज कपूर, महबूब खान, गुरुदत्त, सत्यजीत राय आदि।

प्रश्न 54:

सत्तर के दशक तक भारतीय सिनेमा की विचारधारा। कैसी थी?

उत्तर –

प्रेम, फंतासी व कभी न हारने वाले सुपर नैचुरल हीरो की परिकल्पना।

प्रश्न 55:

समानांतर सिनेमा वक्या था?

उत्तर –

आठवें दशक में लोगों में जागरूकता फैलाने व यथार्थपरक जीवन को व्यक्त करने वाले सिनेमा को समानांतर सिनेमा कहा जाता था।

प्रश्न 56:

समानांतर सिनेमा के प्रमुख फिल्मकार कौन-से थे?

उत्तर –

सत्यजित राय, श्याम बेनेगल, मृणाल सेन, एम. एस. संधू आदि।

प्रश्न 57:

नवें दशक से हिंदी फिल्मों में कैसा स्वरूप ग्रहण किया?

उत्तर –

नवें दशक से हिंदी फिल्मों का केंद्र रोमांस, हिंसा, सेक्स व एक्शन हो गया। मुनाफा कमाना फिल्मकार का मुख्य उद्देश्य बन गया है।

प्रश्न 58:

इंटरनेट क्या है?

उत्तर –

यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी.वी., सिनेमा आदि सभी के गुण विद्यमान हैं।

प्रश्न 59:

इंटरनेट से लाभ व हानियाँ बताइए।

उत्तर –

इंटरनेट से लाभ-

1. इससे विश्वग्राम की अवधारणा मजबूत हुई है।
2. इंटरनेट से संचार की नई संभावनाएँ जगी हैं।
3. इससे शोधकर्ताओं व पढ़ने वालों के लिए अपार संसाधन उपलब्ध हुए हैं।

इंटरनेट से हानियाँ-

1. इससे अश्लीलता को बढ़ावा मिला है।
2. इसका दुरुपयोग किया जा रहा है।
3. बच्चों व युवाओं में अकेलापन बढ़ता जा रहा है।

जनसंचार माध्यमों के प्रभाव

प्रश्न 60:

जनसंचार माध्यमों का आम जीवन पर क्या प्रभाव है?

उत्तर –

जनसंचार माध्यमों का आम जीवन पर बहुत प्रभाव है। इनसे सेहत, अध्यात्म, दैनिक जीवन की जरूरतें आदि पूरी होने लगी हैं। ये हमारी जीवन शैली को प्रभावित कर रहे हैं।

प्रश्न 61:

लोकतंत्र में जनसंचार माध्यमों का प्रभाव बताइए।

उत्तर –

लोकतंत्र में जनसंचार माध्यमों ने जीवन को गतिशील व पारदर्शी बनाया है। इनके माध्यम से सूचनाओं व जानकारियों का आदान-प्रदान किया जाता है। इसके माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर बहस या विचार-विमर्श होती है, जो सरकार की कार्य शैली पर कुछ हद तक अंकुश लगाने का काम करता है।

प्रश्न 62:

जनसंचार के दुष्प्रभाव बताइए।

उत्तर –

1. जनसंचार के माध्यम खासतौर पर टी.वी. व सिनेमा ने लोगों को काल्पनिक दुनिया’ की सैर कराई है। फलस्वरूप लोग आम जीवन से दूर हो जाते हैं तथा व्यसनी हो जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि जनसंचार के माध्यम पलायनवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं।
2. ये समाज में अश्लीलता व असामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं।
3. समाज के कमजोर वर्गों को कम महत्त्व दिया जाता है।
4. अनावश्यक मुद्दों को उछाला जाता है।

पाठ के इस खंड में हम पढ़ेंगे और जानेंगे

- **पत्रकारिता**
  पत्रकारिता क्या है?
- **समाचार**
  समाचार की कुछ परिभाषाएँ
  समाचार क्या है?
- **समाचार के तत्त्व**
- **संपादन**
  संपादनके सिद्धांत
- **पत्रकारिता के अन्य आयाम**
  संपादकीय
  फोटो पत्रकारिता
  कार्टून कोना
  रेखांकन और कार्टोग्राफ़ी
- **पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार**
  खोजपरक पत्रकारिता
  विशेषीकृत पत्रकारिता
  एडवोकेसी पत्रकारिता
  वैकल्पिक पत्रकारिता
- **समाचार माध्यमों के मौजूदा रुझान**

पत्रकारिता-एक परिचय

पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित करके आम पाठकों तक पहुँचाने से है। लेकिन हर सूचना समाचार नहीं है। पत्रकार कुछ ही घटनाओं, समस्याओं और विचारों को समाचार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। किसी घटना के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्वों का होना जरूरी है।

- पत्रकारिता समाचारों के संपादन संबंधी सिद्धांतों पर विश्वसनीयता अर्जित करती है।
- पत्रकारिता में संपादकीय, लेख, कार्टून और फोटो भी प्रकाशित होते हैं।
- पत्रकारिता कई प्रकार की होती है।

पत्रकारिता

अपने आसपास की चीजों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताजा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी, तो समाचार की भी जरूरत नहीं रहेगी। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ। वह आज भी इसी मूल सिद्धांत के आधार पर काम करती है।

पत्रकारिता क्या है?

हम अपने पास-पड़ोस, शहर, राज्य और देश-दुनिया के बारे में जानना चाहते हैं। ये सूचनाएँ हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। आज देश-दुनिया में जो कुछ हो रहा

है, उसकी अधिकांश जानकारी हमें समाचार माध्यमों से मिलती है। समाचार संगठनों में काम करने वाले पत्रकार देश-दुनिया में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुँचाते हैं। इसके लिए वे रोज सूचनाओं का संकलन करते हैं और उन्हें समाचार के प्रारूप में ढालकर प्रस्तुत करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को ही पत्रकारिता कहते हैं।

समाचार की कुछ परिभाषाएँ

- प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना समाचार है।
- समय पर दी जाने वाली हर सूचना समाचार का रूप धारण कर लेती है।
- किसी घटना की रिपोर्ट ही समाचार है।
- समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है?

समाचार क्या है?

समाचार माध्यम कुछ लोगों के लिए नहीं, बल्कि अपने हजारों-लाखों पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों के लिए काम करते हैं। स्वाभाविक है कि वे समाचार के रूप में उन्हीं घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं को चुनते हैं, जिन्हें जानने में अधिक-से-अधिक लोगों की रुचि होती है। यहाँ हमारा आशय उस तरह के समाचारों से है, जिनका किसी-न-किसी रूप में सार्वजनिक महत्व होता है। ऐसे समाचार अपने समय के विचार, घटना और समस्याओं के बारे में लिखे जाते हैं। ये समाचार ऐसी सम-सामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित होते हैं, जिन्हें जानने की अधिक-से-अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका अधिक-से-अधिक लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

इसके बावजूद ऐसा कोई फ़ार्मूला नहीं है, जिसके आधार पर यह कहा जाए कि यह घटना समाचार है और यह नहीं। पत्रकार और समाचार संगठन ही किसी भी समाचार के चयन, आकार और उसकी प्रस्तुति का निर्धारण करते हैं। यही कारण है कि समाचारपत्रों और समाचार चैनलों में समाचारों के चयन और प्रस्तुति में इतना फ़र्क दिखाई पड़ता है। एक समाचारपत्र में एक समाचार मुख्य समाचार (लीड स्टोरी) हो सकता है और किसी अन्य समाचारपत्र में वही समाचार भीतर के पृष्ठों पर कहीं एक कॉलम का समाचार हो सकता है।

किसी घटना, समस्या और विचार में कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जिनके होने पर उसके समाचार बनने की संभावना बढ़ जाती है। उन तत्वों को लेकर समाचार माध्यमों में एक आम सहमति है। इस चर्चा के उपरांत अब हम समाचार को इस तरह परिभाषित कर सकते हैं-

समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है, जिसमें अधिक से अधिक लोगों की मचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो। समाचार के तत्त्व सामान्य तौर पर किसी भी घटना, विचार और समस्या से जब समाज के बड़े तबके का सरोकार हो तो हम यह कह सकते हैं कि यह समाचार बनने के योग्य है। लेकिन किसी घटना, विचार और समस्या के समाचार बनने की संभावना तब बढ़ जाती है, जब उनमें निम्नलिखित में से कुछ, अधिकांश या सभी तत्व शामिल हों

1. नवीनता
2. निकटता
3. प्रभाव

4. जनरुचि
5. टकराव या संघर्ष
6. महत्त्वपूर्ण लोग
7. उपयोगी जानकारियाँ
8. अनोखापन
9. पाठकवर्ग
10. नीतिगत ढाँचा

1. नवीनता-किसी भी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह नया यानी ताजा हो। कहा भी जाता है, 'न्यू' है इसलिए 'न्यूज' है। घटना जितनी ताजा होगी, उसके समाचार बनने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है। इस प्रकार समाचार वही है, जो ताजा घटना के बारे में जानकारी देता है। एक घटना को एक समाचार के रूप में किसी समाचार संगठन में स्थान पाने के लिए, इसका सही समय पर सही स्थान यानी समाचार कक्ष में पहुँचना आवश्यक है। एक दैनिक समाचारपत्र के लिए आमतौर पर पिछले 24 घंटों की घटनाएँ समाचार होती हैं। एक चौबीस घंटे के टेलीविजन और रेडियो चैनल के लिए तो समाचार जिस तेजी से आते हैं, उसी तेजी से बासी भी होते चले जाते हैं। एक दैनिक समाचारपत्र के लिए वे घटनाएँ सामयिक हैं, जो कल घटित हुई हैं। आमतौर पर एक दैनिक समाचारपत्र की अपनी एक डेडलाइन (समय-सीमा) होती है जब तक के समाचारों को वह कवर कर पाता है। मसलन एक प्रात:कालीन दैनिक समाचारपत्र रात 12 बजे तक के समाचार कवर करता है तो अगले दिन के संस्करण के लिए 12 बजे रात से पहले के चौबीस घंटे के समाचार सामयिक होंगे। लेकिन अगर द्रवितीय विश्वयुद्ध या ऐसी किसी अन्य ऐतिहासिक घटना के बारे में आज भी कोई नई जानकारी मिलती है, जिसके बारे में हमारे पाठकों को पहले जानकारी नहीं थी तो निश्चय ही यह उनके लिए समाचार है।

2. निकटता-किसी भी समाचार संगठन में किसी समाचार के महत्व का मूल्यांकन अर्थात् उसे समाचारपत्र या बुलेटिन में शामिल किया जाएगा या नहीं, इसका निर्धारण इस आधार पर भी किया जाता है कि वह घटना उसके कवरेज क्षेत्र और पाठक/श्रोता/दर्शक समूह के कितने करीब हुई है? हर घटना का समाचारीय महत्व काफ़ी हद तक उसकी स्थानीयता से भी निर्धारित होता है।

3. प्रभाव-किसी घटना के प्रभाव से भी उसका समाचारीय महत्व निर्धारित होता है। किसी घटना की तीव्रता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि उससे कितने सारे लोग प्रभावित हो रहे हैं या कितने बड़े भू-भाग पर उसका असर हो रहा है। किसी घटना से जितने अधिक लोग प्रभावित होंगे, उसके समाचार बनने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है। जाहिर है जिन घटनाओं का पाठकों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ रहा हो, उसके बारे में जानने की उनमें स्वाभाविक इच्छा होती है। जैसे सरकार के किसी निर्णय से अगर सिर्फ़ सौ लोगों को लाभ हो रहा हो तो यह उतना बड़ा समाचार नहीं है जितना कि उससे लाभान्वित होने वाले लोगों की संख्या अगर एक लाख हो।

4. जनरुचि-किसी विचार, घटना और समस्या के समाचार बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि लोगों की उसमें दिलचस्पी हो। वे उसके बारे में जानना चाहते हों। कोई भी घटना समाचार तभी बन सकती है, जब पाठकों या दर्शकों का एक बड़ा तबका उसके बारे में जानने की रुचि रखता हो। हर समाचार संगठन का अपना एक लक्ष्य समूह (टार्गेट ऑडिएंस) होता है और वह समाचार

संगठन अपने पाठकों या श्रोताओं की रुचियों को ध्यान में रखकर समाचारों का चयन करता है। आज मीडिया लोगों की रुचियों में परिवर्तन लाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है।

5. टकराव या संघर्ष-किसी घटना में टकराव या संघर्ष का पहलू होने पर उसके समाचार के रूप में चयन की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि लोगों में टकराव या संघर्ष के बारे में जानने की स्वाभाविक दिलचस्पी होती है। इसकी वजह यह है कि टकराव या संघर्ष का उनके जीवन पर सीधा असर पड़ता है। वे उससे बचना चाहते हैं और इसलिए उसके बारे में जानना चाहते हैं। यही कारण है कि युद्ध और सैनिक टकराव के बारे में जानने की लोगों में सर्वाधिक रुचि होती है। लेकिन टकराव का अर्थ केवल खून-खराबा या खूनी संघर्ष ही नहीं है बल्कि खेलों में जब दो टीमें आपस में मुकाबला करती हैं या चुनावों में राजनीतिक दलों के बीच राजनीतिक संघर्ष होता है तो उसे भी जानने में लोगों की उतनी ही दिलचस्पी होती है।

6. महत्वपूर्ण लोग-मशहूर और जाने-माने लोगों के बारे में जानने की आम पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं में स्वाभाविक इच्छा होती है। कई बार किसी घटना से जुड़े लोगों के महत्वपूर्ण होने के कारण भी उसका समाचारीय महत्व बढ़ जाता है। लोग यह जानना चाहते हैं कि मशहूर लोग उस मुकाम तक कैसे पहुँचे, उनका जीवन कैसा होता है और विभिन्न मुद्दों पर उनके क्या विचार हैं। लेकिन कई बार समाचार माध्यम महत्वपूर्ण लोगों की खबर देने के लोभ में उनके निजी जीवन की सीमाएँ लाँघ जाते हैं। यही नहीं. महत्वपूर्ण लोगों के बारे में जानकारी देने के नाम पर कई बार समाचार माध्यम अफ़वाहें और कोरी गप प्रकाशित-प्रसारित करते दिखाई पड़ते हैं।

7. उपयोगी जानकारियाँ-अनेक ऐसी सूचनाएँ भी समाचार मानी जाती हैं, जिनका समाज के किसी विशेष तबके के लिए खास महत्व हो सकता है। ये लोगों की तात्कालिक उपयोग की सूचनाएँ भी हो सकती हैं। मसलन स्कूल कब खुलेंगे. किसी खास कॉलोनी में बिजली कब बंद रहेगी, पानी का दबाव कैसा रहेगा, वहाँ का मौसम कैसा रहेगा, आदि। ऐसी सूचनाओं का हमारे रोजमर्रा के जीवन में काफ़ी उपयोग होता है और इसलिए उन्हें जानने में आम लोगों की सहज दिलचस्पी होती है।

8. अनोखापन-निश्चय ही, अनहोनी घटनाएँ समाचार होती है। लोग इनके बारे में जानना चाहते हैं। लेकिन समाचार मीडिया को इस तरह की घटनाओं के संदर्भ में काफ़ी सजगता बरतनी चाहिए अन्यथा कई मौकों पर यह देखा गया है कि इस तरह के समाचारों ने लोगों में अवैज्ञानिक सोच और अंधविश्वास को जन्म दिया है।

9. पाठकवर्ग-समाचार संगठन समाचारों का चुनाव करते हुए अपने पाठकवर्ग की रुचियों और जरूरतों का विशेष ध्यान रखते हैं। किसी समाचारीय घटना का महत्व इससे भी तय होता है कि किसी खास समाचार का ऑडिएंस कौन है और उसका आकार कितना बड़ा है। इन दिनों अमीरों और मध्यम वर्ग में अधिक पढ़े जाने वाले समाचारों को ज्यादा महत्व मिल रहा है। इसकी वजह यह है कि विज्ञापनदाताओं की इन वर्गों में ज्यादा रुचि होती है। लेकिन इस वजह से समाचार माध्यमों में गरीब और कमजोर वर्ग के पाठकों और उनसे जुड़ी खबरों को नजरअंदाज करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

10. नीतिगत ढाँचा-विभिन्न समाचार संगठनों की समाचारों के चयन और प्रस्तुति को लेकर एक नीति होती है। इस नीति को 'संपादकीय नीति' भी कहते हैं। संपादकीय नीति का निर्धारण संपादक या समाचार संगठन के मालिक करते हैं। समाचार संगठन, समाचारों के चयन में अपनी संपादकीय नीति का भी ध्यान रखते हैं।

समाचार के उदाहरण

पहली बार खोपड़ी का प्रतिरोपण

ह्यूस्टन, एजेंसी

अंग प्रतिरोपण के क्षेत्र में अमेरिकी डॉक्टरों ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने पहली बार मानव खोपड़ी और सिर की त्वचा का प्रतिरोपण किया है। डॉक्टरों के मुताबिक, जेम्स बॉयसन नामक व्यक्ति का कैंसर के इलाज के दौरान खोपड़ी में गहरे जख्म बन गए थे, जिसके बाद उन्होंने उसकी खोपड़ी का प्रतिरोपण करने का फैसला किया। अमेरिका के एमडी एंडरसन कैंसर सेंटर और ह्यूस्टन मेथोडिस्ट अस्पताल ने गुरुवार को मीडिया को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अस्पताल में 22 मई को 55 वर्षीय जेम्स बॉयसन की खोपड़ी और सिर की त्वचा का प्रतिरोपण किया गया था। इस जटिल ऑपरेशन को दर्जनों डॉक्टरों ने 15 घंटे में अंजाम दिया। अस्पताल की ओर से जारी तस्वीर में बॉयसन के सिर के ऊपर टांके दिखाई दे रहे हैं। ये टांके उनके कानों से लगभग ढाई सेमी की ऊँचाई पर हैं, जहाँ खोपड़ी और त्वचा को जोड़ा गया है।

गिरगिट की तरह छिप सकेगाइंसान

वाशिंगटन एजेंसी

वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक तैयार की है, जो पूरी तरह शरीर का रंग बदल देगी। इस रंग की मदद से सैनिक खुद | को छिपाने वाला आवरण बदल सकते हैं।

सेंट्रल फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में भारतीय मूल के प्रोफेसर देवाशीष चंदा व उनकी टीम ने यह तकनीक तैयार की है। इस तकनीक का इस्तेमाल सामान्य कपड़ों को रंग बदलने लायक बनाने या कम बिजली से चलने वाले ई-रीडर स्क्रीन बनाने में भी हो सकता है।

लचीला है डिस्पले : तकनीक का डिसप्ले लचीला है। यह ऐसी लचीली सतह है, जो कुछ प्रकाश सोखती है व बाकी को परावर्तित कर देती है। यह लाल, हरे व नीले रंग के पूरे सम्मिश्रण वाले रंग पैदा करती है। इससे सैनिकों को दुश्मनों से छिपने में मदद मिल सकती है।

संपादन

संपादन का अर्थ है, किसी सामग्री से उसकी अशुद्धयों को दूर करके उसे पठनीय बनाना। एक उपसंपादक अपने रिपोर्टर की खबर को ध्यान से पढ़ता है और उसकी भाषा-शैली, व्याकरण, वर्तनी तथा तथ्य संबंधी अशुद्धयों को दूर करता है। वह उस खबर को महत्व के अनुसार काटता-छाँटता है और उसे कितनी और कहाँ जगह दी जाए, यह तय करता है। इसके लिए वह संपादन के कुछ सिद्धांतों का पालन करता है। संपादन के सिदधांत-संपादन के मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं-

- तथ्यों की शुद्धता (एक्युरेसी)
- वस्तुपरकता (ऑब्जेक्टीविटी)
- निष्पक्षता (फेयरनेस)
- संतुलन (बैलेंस)
- स्रोत । (सोर्सिंग-एट्रीब्यूशन)

1. तथ्यों की शुद्धता या तथ्यपरकता (एक्यूरेसी)-एक आदर्श रूप में मीडिया और पत्रकारिता यथार्थ या वास्तविकता का प्रतिबिंब है। इस तरह एक पत्रकार समाचार के रूप में यथार्थ को पेश करने की कोशिश करता है।

यथार्थ को उसकी संपूर्णता में प्रतिबिंबित करने के लिए आवश्यक है कि ऐसे तथ्यों का चयन किया

जाए, जो उसका संपूर्णता में प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन समाचार में हम किसी भी यथार्थ को अत्यंत सीमित चयनित सूचनाओं और तथ्यों के माध्यम से ही व्यक्त करते हैं। इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि किसी भी विषय के बारे में समाचार लिखते वक्त हम किन सूचनाओं और तथ्यों का चयन करते हैं और किन्हें छोड़ देते हैं। चुनौती यही है कि ये सूचनाएँ और तथ्य सबसे अहम हों और संपूर्ण घटना का प्रतिनिधित्व करते हों। तथ्य बिलकुल सटीक और सही होने चाहिए और उन्हें तोड़ा-मरोड़ा नहीं जाना चाहिए।

2. वस्तुपरकता (ऑब्जेक्टीविटी)-वस्तुपरकता को भी तथ्यपरकता से आँकना आवश्यक है। वस्तुपरकता और तथ्यपरकता में काफी समानता है, लेकिन दोनों के बीच के अंतर को समझना जरूरी है। एक जैसे होते हुए भी ये दोनों अलग विचार हैं। तथ्यपरकता का संबंध जहाँ अधिकाधिक तथ्यों से है वहीं वस्तुपरकता का संबंध इस बात से है कि कोई व्यक्ति तथ्यों को कैसे देखता है? किसी विषय या मुद्दे के बारे में हमारे मस्तिष्क में पहले से बनी हुई छवियाँ समाचार मूल्यांकन की हमारी क्षमता को प्रभावित करती हैं और हम इस यथार्थ को उन छवियों के अनुरूप देखने का प्रयास करते हैं।

3. निष्पक्षता (फेयरनेस)-एक पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना भी बहुत जरूरी है। उसकी निष्पक्षता से ही उसके समाचार संगठन की साख बनती है। यह साख तभी बनती है जब समाचार संगठन बिना किसी का पक्ष लिए सच्चाई | सामने लाते हैं। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। इसकी राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में अहम भूमिका है। लेकिन निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। इसलिए पत्रकारिता सही और गलत, अन्याय और न्याय जैसे मसलों के बीच तटस्थ नहीं हो सकती बल्कि वह निष्पक्ष होते हुए भी सही और न्याय के साथ होती है।

4. संतुलन (बैलेंस)-निष्पक्षता की अगली कड़ी संतुलन है। प्राय: मीडिया पर आरोप लगाया जाता है कि समाचार कवरेज संतुलित नहीं है यानी वह किसी एक पक्ष की ओर झुका है। आमतौर पर समाचार में संतुलन की आवश्यकता वहीं पड़ती है जहाँ किसी घटना में अनेक पक्ष शामिल हों और उनका आपस में किसी-न-किसी रूप में टकराव हो। उस स्थिति में संतुलन का तकाजा यही है कि सभी संबद्ध पक्षों की बात समाचार में अपने-अपने समाचारीय वजन के अनुसार स्थान पाए।

5. स्त्रोत-हर समाचार में शामिल की गई सूचना और जानकारी का कोई स्रोत होना आवश्यक है। किसी भी समाचार संगठन के स्रोत होते हैं और फिर उस समाचार संगठन का पत्रकार जब सूचनाएँ एकत्रित करता है, तो उसके अपने भी स्रोत होते हैं। इस तरह किसी भी दैनिक समाचारपत्र के लिए पीटीआई (भाषा), यूएनआई (यूनीवार्ता) जैसी समाचार एजेंसियाँ और स्वयं अपने ही संवाददाताओं और रिपोर्टरों का तंत्र समाचारों का स्रोत होता है। लेकिन चाहे समाचार एजेंसी हो या समाचारपत्र, इनमें काम करने वाले पत्रकारों के भी अपने समाचार-स्रोत होते हैं।

पत्रकारिता के विविध आयाम

समाचारपत्र पढ़ते समय पाठक हर समाचार से एक ही तरह की जानकारी की अपेक्षा नहीं रखता। कुछ घटनाओं के मामले में वह उसका विवरण विस्तार से पढ़ना चाहता है तो कुछ अन्य के संदर्भ में उसकी इच्छा यह जानने की होती है कि घटना के पीछे क्या है? उसकी पृष्ठभूमि क्या है? उस घटना का उसके भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा और इससे उसका जीवन तथा समाज किस तरह प्रभावित होगी? समय, विषय और घटना के अनुसार पत्रकारिता में लेखन के तरीके बदल जाते हैं। यही बदलाव पत्रकारिता में कई नए आयाम जोड़ता है। समाचार के अलावा विचार, टिप्पणी,

संपादकीय, फ़ोटो और कार्टून पत्रकारिता के अहम हिस्से हैं। समाचारपत्र में इनका विशेष स्थान और महत्व है। इनके बिना कोई समाचारपत्र स्वयं को संपूर्ण नहीं कह सकता।

संपादकीय

इस पृष्ठ को समाचारपत्र का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ माना गया है। इस पृष्ठ पर अखबार विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय रखता है। इसे 'संपादकीय' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ महत्वपूर्ण , मुद्दों पर अपने विचार लेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं। आमतौर पर संपादक के नाम पत्र भी इसी पृष्ठ पर प्रकाशित किए जाते हैं। वह घटनाओं पर आम लोगों की टिप्पणी होती है। समाचारपत्र उसे महत्वपूर्ण मानते हैं।

संपादकीय के उदाहरण

मणिपुर में आतंकी हमला

मणिपुर में जिस आतंकवादी हमले में 20 सैनिक मारे गए हैं, वह पिछले लंबे दौर में उत्तर-पूर्वी भारत का सबसे बड़ा आतंकवादी हमला है। कई आतंकी गुटों ने मिलकर यह हमला किया है और इस तरह के हमले का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि ये गुट और ज्यादा हमलों की योजना बना रहे हों। ऐसी आशंका के लिए स्थानीय स्तर पर राज्य सरकारों को और सेना को सचेत हो जाना चाहिए, क्योंकि ऐसे हमलों से न सिर्फ प्राणहानि होती है, बल्कि अस्थिरता और अशांति का जो माहौल बनता है, उससे आम जनता की स्थिति खराब होती है। इसके अलावा, सरकार की क्षमता में लोगों का इसका अर्थ यह कतई नहीं निकालना चाहिए कि ये आतंकवादी गुट मजबूत हो रहे हैं। इसका अर्थ शायद यह है कि वे ज्यादा कमजोर हो रहे हों और अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए ऐसी वारदात कर रहे हों। यह वादात ऐसे वक्त पर हुई है, जब प्रतिबंधित गुटों का भारत सरकार के साथ सैनिक कार्रवाई रोकने का समझौता चल रहा है। इनमें से कुछ गुट पड़ोस के म्यांमार के जंगलों में रहते हैं, जहाँ से भारत की सीमा में घुसकर वे वारदात करते हैं। जमीनी स्तर पर इन गुटों की स्थिति बहुत मजबूत नहीं है और वे अपना विचारधारात्मक आधार भी खो चुके हैं। अलगाववाद का नारा और उसके पीछे का विचार बहुत पहले ही व्यर्थ हो चुका है, मगर ज्यादातर गुट इन्हीं नारों के नाम पर सक्रिय हैं, इसलिए वे अपना कारोबार चलाए हुए हैं। सही अर्थों में ये गुट अपराधी गिरोहों में तबदील हो चुके हैं और तस्करी, अपहरण जैसे अपराधों से अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। ऐसे में, अपना आतंक बनाए रखने के लिए वे एक तरफ कबीलाई रिश्तों का दोहन करते हैं और दूसरी ओर इस तरह की वारदातें करते हैं। एक बड़ी समस्या यह है कि लंबे वक्त तक भारत सरकार का पूरा ध्यान अलगाववादी आंदोलनों से निपटने में लगा रहा. इसलिए उत्तर-पूर्वी राज्यों में प्रशासन को दुरुस्त करना कभी प्राथमिकता नहीं रही। ऐसे में, स्थानीय सरकारें भ्रष्टाचार और निकम्मेपन का शिकार रहीं। इससे आम जनता की मुश्किलें ।

बढ़ती रहीं और इन आतंकवादी गुटों का प्रभाव बना रहा। दूसरी ओर, भारत के इस हिस्से का बहुत बड़ा क्षेत्र सेना के अधीन रहा है, इसलिए स्थानीय सुरक्षा बल भी बहुत प्रभावशाली नहीं रहे। अगर स्थानीय स्तर पर प्रशासन को ज्यादा चुस्त और जवाबदेह बना दिया जाए, तो इन गुटों का बचा-खुचा प्रभाव भी खत्म हो जाएगा, जो वैसे भी तेजी से घट रहा है। ऐसी स्थिति में यह तो जरूरी ही है कि इन गुटों से सख्ती से निपटा जाए, लेकिन इससे भी ज्यादा जरूरी यह है कि स्थानीय प्रशासन को मजबूत बनाने की कोशिश की जाए। यह भी संभव है कि इन गुटों की कोशिश

शांति और समझौते की प्रक्रिया को भंग करने की रही हो, क्योंकि ये गुट बुरी तरह आपस में बंटे हुए हैं और इनके कई धड़े शाँत नहीं चाहते। एक और बड़ी कोशिश म्यांमार से उन्हें खदेड़ने की होनी चाहिए।
भारत सरकार यह कोशिश कर रही है कि म्यांमार के उन इलाकों तक पहुँच आसान हो, जिनका इस्तेमाल ये गुट करते हैं। एक बड़ी योजना म्यांमार के रास्ते उत्तर-पूर्व तक सड़क बनाने की भी है। अगर ये योजनाएँ पूरी हो गई, तो इन जंगलों में इन गुटों का शरण पाना मुश्किल हो जाएगा। मदद कर सकते हैं। उत्तर-पूर्व में अलगाववाद वैचारिक रूप से खत्म हो गया है, लेकिन उसका व्यर्थ हिंसक प्रभाव अभी तक बाकी है, अब उसे खत्म करना जरूरी है।

मैगी से मोहभंग

लोकप्रिय उत्पाद मैगी में मोनोसोडियम ग्लूटामेट (एमएसजी) और सीसे की अधिक मात्रा पाए जाने पर जितनी खलबली मची है, उसकी वजह मैगी की असाधारण लोकप्रियता है। मैगी में हानिकारक तत्वों के पाए जाने से समाज के बहुत बड़े हिस्से को सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक झटका लगा है। मैगी यूँ तो बाजार में पाए जाने वाले तमाम फास्ट फूड उत्पादों में से एक है, लेकिन उसकी स्थिति अलग इसलिए हैं कि उसने घर-घर की रसोई में अपनी जगह बना ली थी। देश में अनेक नौजवानों के लिए वह एक बड़ा सहारा थी, खासकर जो अकेले रहते हैं। कई दुर्गम पहाड़ी इलाकों में पर्यटकों के लिए सिर्फ मैगी मिलती है, क्योंकि इसका भंडारण करना और इसे पकाना बहुत आसान है। मैगी के विज्ञापनों का जोर ही 'सिर्फ दो मिनट' पर था, यानी इसमें सिर्फ उबलता हुआ पानी डालना है और दो मिनट में यह तैयार हो जाएगी। ज्यादातर भारतीयों को नूडल्स | खाना मैगी ने ही सिखाया. बहुत से लोग तो किसी भी किस्म के नूडल्स को मैगी ही कहते हैं।
यह भारत की कई प्रयोगशालाओं में पता चला है कि मैगी में एमएसजी और सीसे की अधिक मात्रा है और यह इसे बनाने वाली कंपनी की लापरवाही को दिखाता है। यह समझना थोड़ा मुश्किल है कि मैगी में सीसा कहाँ से आया? हो सकता है कि जो मसाले मैगी में मिलते हों, उनमें सीसा हो या जिस पानी का इस्तेमाल इसके उत्पादन में होता हो, उसका स्रोत प्रदूषित हो। हालाँकि कुछ हद तक सीसा कृषि उत्पादों में पाया जाता है, लेकिन उससे ज्यादा यह खतरनाक हो जाता है।
एमएसजी की स्थिति अलग है। एमएसजी या अजीनोमोटी के सुरक्षित होने पर विवाद है और यह अंतिम फैसला नहीं हो पाया है कि स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर होता है या नहीं! लेकिन सावधानी के चलते हर जगह यह कहा जाता है कि इसका एक सीमा से ज्यादा इस्तेमाल नहीं होनी चाहिए।
हम लोग आमतौर पर मानते हैं कि मीठा, कड़वा, खट्टा, कसैला, नमकीन और तीखा, ये छह स्वाद होते हैं। लेकिन अब माना जाता है कि एक सातवां स्वाद भी होता है, जिसे 'उमामी' कहते हैं। जिन खानों में स्वाभाविक रूप से यह स्वाद नहीं होता, उनमें इस स्वाद के लिए अजीनोमोटो डाला जाता है। भारतीय 'उमामी' के बारे में ज्यादा नहीं जानते, लेकिन यह स्वाद भारतीयों में बहुत लोकप्रिय है। इसीलिए हमारे खानों में टमाटर का बड़ा महत्व है। लैटिन अमेरिका से आया यह फल यूरोप में इतना लोकप्रिय नहीं हो पाया, उसका कैचअप बनाने के आगे यूरोपीय नहीं बढ़े. लेकिन भारतीयों ने दाल, सब्जी, चटनी हर चीज में टमाटर का खूब इस्तेमाल किया। भारत में कथित चीनी खानों की लोकप्रियता का राज भी यही स्वाद है।

देश में पाँच सितारा होटल से लेकर सड़क किनारे नूडल्स और बर्गर बेचने वाले ठेले तक में अजीनोमोटो उदारता से इस्तेमाल होता है। बेशक, बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने उत्पादों की गुणवत्ता पर सख्त नियंत्रण रखना चाहिए, लेकिन वास्तविकता यह है कि ज्यादातर कंपनियाँ जिस देश में जितनी कड़ाई हो, उतनी ही हद तक नियमों का पालन करती हैं। आमतौर पर हम अपने पर्यावरण या अपने खाने-पीने की चीजों की गुणवत्ता और शुद्धता के प्रति बहुत सतर्क नहीं हैं, तो किसी एक कंपनी के किसी एक उत्पाद की गुणवत्ता पर विवाद खड़ा करने से बहुत फर्क नहीं पड़ेगा। और क्यों मैगी में गड़बड़ी पाने के लिए बाराबंकी के किसी फूड इंस्पेक्टर की सतर्कता पर निर्भर रहना पड़े. ऐसे उत्पादों ों की केंद्रीय स्तर पर नियमित जाँच का इंतजाम भला क्यों नहीं होना चाहिए, ताकि उपभोक्ता आश्वस्त रह सकें?

फोटो पत्रकारिता

फ़ोटो पत्रकारिता ने छपाई की टेक्नॉलोजी विकसित होने के साथ ही समाचार-पत्रों में अहम स्थान बना लिया है। कहा जाता है कि जो बात हजार शब्दों में लिखकर नहीं कही जा सकती. वह एक तसवीर कह देती है। फ़ोटो टिप्पणियों का असर व्यापक और सीधा होता है। टेलीविजन की बढ़ती लोकप्रियता के बाद समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में तसवीरों के प्रकाशन पर जोर और बढ़ा है।

5,000 जवानों ने संभाली सुरक्षा

पीटीआई, नई दिल्ली

राजपथ पर योग दिवस समारोह में पीएम नरेंद्र मोदी और हजारों लोगों ने हिस्सा लिया और इसे लेकर दिल्ली में भारी है। सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। प्रधानमंत्री की सेफ्टी के लिए : खास इंतजाम किए गए थे। प्रोग्राम में योग करने वाले लोगों ! की ही तरह कपड़े पहने एसपीजी और दिल्ली पुलिस के कुछ जवान प्रधानमंत्री के आने से पहले भीड़ का हिस्सा | थे। जैसे ही प्रधानमंत्री भीड़ में घुसे, इन सुरक्षाकर्मियों ने उनके इर्द गिर्द एक घेरा बना लिया! 霧 64 साल के मोदी के साथ मंच पर योग गुरु रामदेव मौजूद | थे। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया और उपराज्यपाल नजीब जग ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया। पुलिस के मुताबिक लगभग पाँच हजार सुरक्षाकर्मी हथियारों के साथ कार्यक्रम में मौजूद लोगों की हिफाजत कर रहे थे। इसके लिए ट्रैफिक रूट भी डायवर्ट किए गए थे।

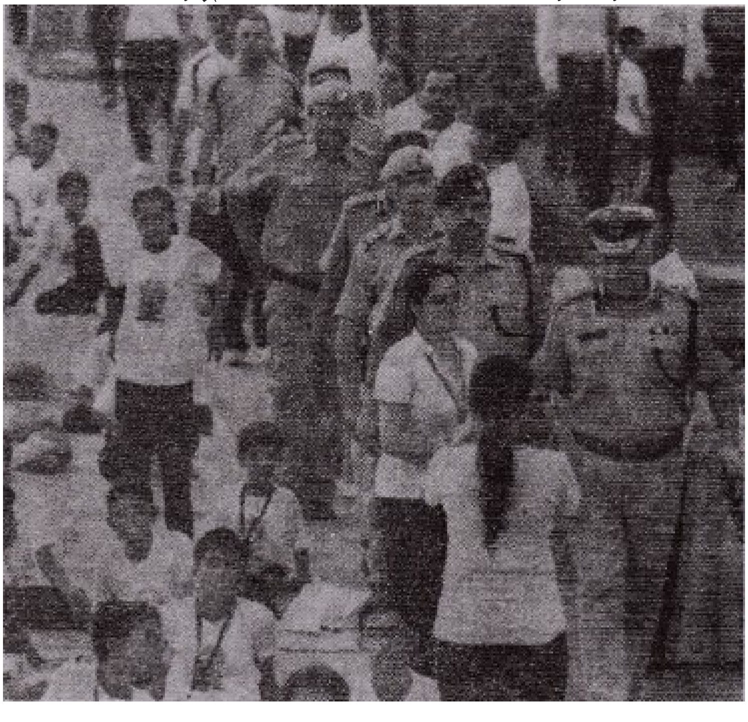

'अ◌ार-पार' रहे केजरीवाल और नजीब जंग

पीटीआई, नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उप-राज्यपाल नजीब जग राजपथ पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में शामिल हुए, मगर दोनों ने एक-दूसरे से दूरी बनाए रखी। दोनों ने राजपथ के अलग-अलग छोर पर बैठकर योग किया। केजरीवाल और जग के बीच हाल के दिनों में कई मुद्दों पर टकराव देखने को मिला है। राजपथ पर केजरीवाल उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के साथ मौजूद थे और उन्होंने जंग से दूरी बनाए रखी। हालिया टकराव को देखते हुए एक स्थान पर दोनों की मौजूदगी को लेकर खासी दिलचस्पी थी। इस साल फरवरी में मुख्यमंत्री बनने के बाद प्राकृतिक उपचार करा चुके केजरीवाल अपने सहयोगी सिसोदिया के साथ आसन करते देखे गए। जग सड़क की दूसरी ओर बैठे थे, हालाँकि इस दौरान उनकी केजरीवाल से मुलाकात या बातचीत नहीं हुई। केजरीवाल ने कहा, 'योग को लेकर राजनीति नहीं होनी चाहिए। यह शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक एकाग्रता के लिए है।' दिल्ली की आप सरकार ने योग दिवस के मौके पर किसी कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया। उसने कहा था कि जब दिल्ली में एक बड़ा आयोजन हो रहा है तो फिर दूसरे की कोई जरूरत नहीं है।

अपनी चटाई लेकर पहुँचे केजरीवाल

एजेंसियाँ, नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने रविवार को पीएम नरेंद्र मोदी के साथ राजपथ पर योग दिवस में हिस्सा लिया। हैअंतरराष्ट्रीय योग दिवस में हिस्सा लेने के ? लिए केजरीवाल अपने साथ चटाई लेकर पहुँचे। इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने के बाद केजरीवाल ने कहा कि योग अच्छी चीज है और इसे सभी को करना चाहिए। पीएम नरेंद्र मोदी की तरह केजरीवाल भी लंबे समय से योग कर रहे हैं। केजरीवाल का कहना था कि उन्हें योग से तनाव कम करने में मदद मिलती है। दिल्ली विधानसभा चुनावों में प्रचार के बाद केजरीवाल ने विपश्यना की शरण ली थी। सीएम बनने के बाद भी वह बेंगलुरु में नैचरोपैथी शिविर में हिस्सा लेने गए थे, वहाँ भी उन्होंने योग किया था।

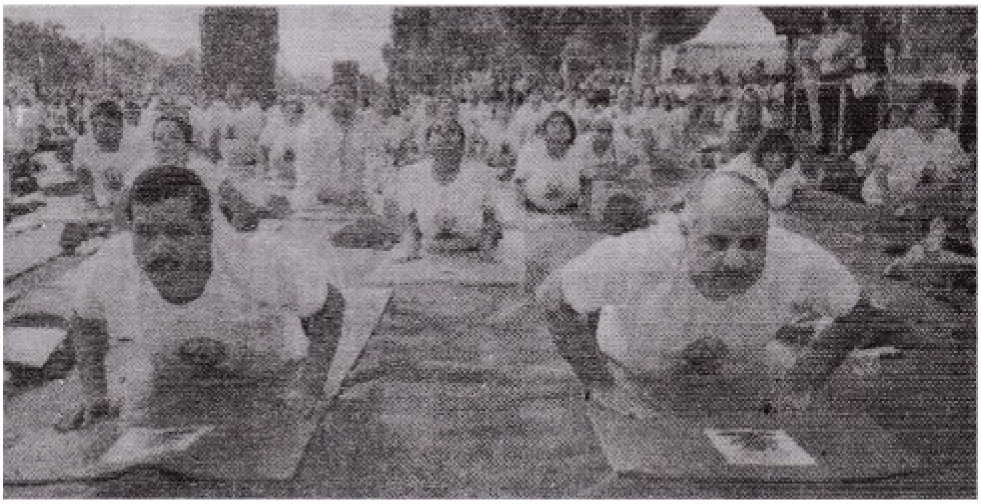

कार्टून कोना

कार्टून कोना लगभग हर समाचारपत्र में होता है और उनके माध्यम से की गई सटीक टिप्पणियाँ पाठक को छूती हैं। एक तरह से कार्टून पहले पन्ने पर प्रकाशित होने वाले कड़े और धारदार संपादकीय से भी अधिक प्रभावी होती हैं।

रेखांकन और कार्टोग्राफी

रेखांकन और काटोग्राफ़ समाचारों को न केवल रोचक बनाते हैं, बल्कि उन पर टिप्पणी भी करते हैं। क्रिकेट के स्कोर से लेकर सेंसेक्स के आँकड़ों तक-ग्राफ़ से पूरी बात एक नजर में सामने आ जाती है। कार्टोग्राफ़ का उपयोग समाचार-पत्रों के अलावा टेलीविजन में भी होता है।

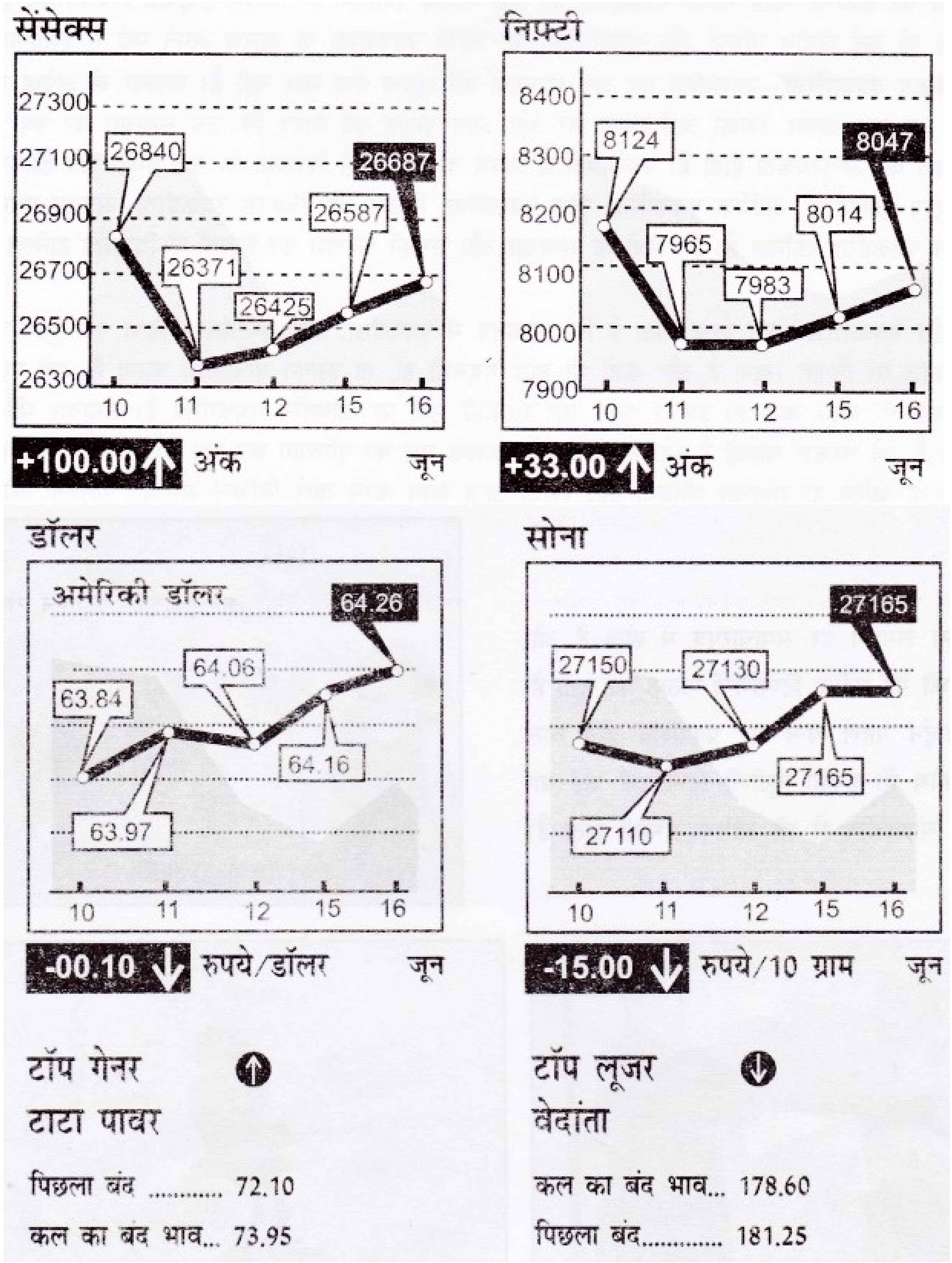

पत्रकारिता के कुछ प्रमुख प्रकार

पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं :

1. खोजपरक पत्रकारिता-खोजपरक पत्रकारिता का आशय ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें गहराई से छान-बीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश की जाती है जिन्हें दबाने या छिपाने का प्रयास किया जा रहा हो। आमतौर पर खोजी पत्रकारिता सार्वजनिक महत्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश करती है। खोजी पत्रकारिता का उपयोग उन्हीं स्थितियों में किया जाता है, जब यह लगने लगे कि सच्चाई को सामने लाने के लिए और कोई उपाय नहीं रह गया है। खोजी पत्रकारिता का ही एक नया रूप टेलीविजन

में स्टिंग ऑपरेशन के रूप में सामने आया है। अमेरिका का वाटरगेट कांड खोजी पत्रकारिता का एक नायाब उदाहरण है, जिसमें राष्ट्रपति निक्सन को इस्तीफ़ा देना पड़ा था। भारत में भी कई केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों को खोजी पत्रकारिता के कारण अपने पदों से इस्तीफ़ा देना पड़ा।

2. विशेषीकृत पत्रकारिता-पत्रकारिता का अर्थ घटनाओं की सूचना देना मात्र नहीं है। पत्रकार से अपेक्षा होती है कि वह घटनाओं की तह तक जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और आम पाठक को बताए कि उस समाचार का क्या महत्व है? इसके लिए विशेषता की आवश्यकता होती है। पत्रकारिता में विषय के हिसाब से विशेषता के सात प्रमुख क्षेत्र हैं। इनमें संसदीय पत्रकारिता, न्यायालय पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, विज्ञान और विकास पत्रकारिता, अपराध पत्रकारिता तथा फ़ैशन और फ़िल्म पत्रकारिता शामिल हैं। इन क्षेत्रों के समाचार और उनकी व्याख्या उन विषयों में विशेप्रता हासिल किए बिना देना कठिन होता है।

3. वॉचडॉग पत्रकारिता-यह माना जाता है कि लोकतंत्र में पत्रकारिता और समाचार मीडिया का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कहीं भी कोई गड़बड़ी हो, तो उसका परदाफ़ाश करना है। इसे परंपरागत रूप से 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहा जाता है। इसका दूसरा छोर सरकारी सूत्रों पर आधारित पत्रकारिता है। समाचार मीडिया केवल वही समाचार देता है, जो सरकार चाहती है और अपने आलोचनात्मक पक्ष का परित्याग कर देता है। आमतौर पर इन दो बिंदुओं के बीच तालमेल के जरिये ही समाचार मीडिया और इसके तहत काम करने वाले विभिन्न समाचार संगठनों की पत्रकारिता का निर्धारण होता है।

4. एडवोकेसी पत्रकारिता-ऐसे अनेक समाचार संगठन होते हैं, जो किसी विचारधारा या किसी खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर आगे बढ़ते हैं और उस विचारधारा या उद्देश्य या मुद्दे के पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार और जोर-शोर से अभियान चलाते हैं। इस तरह की पत्रकारिता को 'पक्षधर' या 'एडवोकेसी पत्रकारिता' कहा जाता है। आपने अकसर देखा होगा कि भारत में भी कुछ समाचारपत्र या टेलीविजन चैनल किसी खास मुद्दे पर जनमत बनाने और सरकार को उसके अनुकूल प्रतिक्रिया करने के लिए अभियान चलाते हैं। उदाहरण के लिए जेसिका लाल हत्याकांड में न्याय के लिए समाचार माध्यमों ने सक्रिय अभियान चलाया।

5. वैकल्पिक पत्रकारिता-व्यवस्था के साथ तालमेल बैठाकर चलन वाली मीडिया को 'मुख्यधारा का मीडिया' कहा जाता है। इस तरह की मीडिया आमतौर पर व्यवस्था के अनुकूल और आलोचना के एक निश्चित दायरे में ही काम करती है। इसके विपरीत जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करता है, उसे 'वैकल्पिक पत्रकारिता' कहा जाता है। आमतौर पर इस तरह के मीडिया को सरकार और बड़ी पूँजी का समर्थन हासिल नहीं होता है। उसे बड़ी कंपनियों के विज्ञापन भी नहीं मिलते हैं और वह अपने पाठकों के सहयोग पर निर्भर होता है।

समाचार माध्यमों में मौजूदा रुझान

देश में मध्यम वर्ग के तेजी से विस्तार के साथ ही मीडिया के दायरे में आने वाले लोगों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। साक्षरता और क्रय-शक्ति बढ़ने से भारत में अन्य वस्तुओं के अलावा मीडिया के बाजार का भी विस्तार हो रहा है। इस बाजार की जरूरतों को पूरा करने के लिए हर तरह के मीडिया का फैलाव हो रहा है-रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र, सेटेलाइट टेलीविजन और इंटरनेट सभी विस्तार के रास्ते पर हैं। लेकिन बाजार के इस विस्तार के साथ ही मीडिया का

व्यापारीकरण भी तेज हो गया है और मुनाफ़ा कमाने को ही मुख्य ध्येय समझने वाले पूँजीवादी वर्ग ने भी मीडिया के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर प्रवेश किया है।
इस कारण समाचार के नाम पर मनोरंजन बेचने के इस रुझान के कारण आज समाचारों में वास्तविक और सरोकारीय सूचनाओं और जानकारियों का अभाव होता जा रहा है।
वर्तमान में समाचार मिडिया का एक बड़ा हिस्सा लोगों को ‘ जानकार नागरिक ‘ बनाने में मदद नहीं कर रहा है बल्कि अधिकांश मौकों पर यही लगता है कि लोग ‘गुमराह उपभोक्ता’ अधिक बन रहे हैं। इसकी वजह यह है कि आज समाचार मीडिया का एक बड़ा हिस्सा एक ऐसा उद्योग बन गया है जिसका मकसद अधिकतम मुनाफ़ा कमाना है! समाचार उद्योग के लिए समाचार भी पेप्सी-कोक जैसा एक उत्पाद बन गया है जिसका उद्देश्य उपभोक्ताओं को गंभीर सूचनाओं के बजाय सतही मनोरंजन से बहलाना और अपनी ओर आकर्षित करना हो गया है।
इसमें कोई संदेह नहीं कि समाचार मीडिया में हमेशा से ही सनसनीखेज या पीत-पत्रकारिता और पेज-थ्री पत्रकारिता की धाराएँ मौजूद रही हैं। इनका हमेशा अपना स्वतंत्र अस्तित्व रहा है, जैसे ब्रिटेन का टेबलॉयड मीडिया और भारत में भी ‘ब्लिट्ज’ जैसे कुछ समाचारपत्र रहे हैं। पेज-थ्री भी मुख्यधारा की पत्रकारिता में मौजूद रहा है।
यह स्थिति हमारे लोकतंत्र के लिए एक गंभीर राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संकट पैदा कर रही है। आज हर समाचार संगठन सबसे अधिक बिकाऊ बनने की होड़ में एक ही तरह के समाचारों पर टूटता दिखाई पड़ रहा है। इससे विविधता खत्म हो रही है और ऐसी स्थिति पैदा हो रही है जिसमें अनेक अखबार हैं और सब एक जैसे ही हैं।
समाचार मीडिया के प्रबंधक बहुत समय तक इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकते क्योंकि साख और प्रभाव समाचार मीडिया की सबसे बड़ी ताकत होती है। आज समाचार मीडिया की साख मे तेजी से ह्रास हो रहा है और इसके साथ ही लोगों की सोच को प्रभावित करने की इसकी क्षमता भी कुंठित हो रही है। समाचारों को उनके न्यायोचित और स्वाभाविक स्थान पर बहाल करके ही समाचार मीडिया की साख और प्रभाव के ह्रास की प्रक्रिया को रोकना आवश्यक हो गया है।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

प्रश्न 1:

किसी भी दैनिक अखबार में राजनीतिक खबरें ज्यादा स्थान क्यों घेरती हैं? इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर –

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के प्रचार-प्रसार के कारण लोगों में राजनीति के प्रति रुझान बढ़ा है। राजनीति के प्रति वे जिज्ञासु हुए हैं। देश की राजनीति का संबंध आम लोगों के जीवन के इर्द-गिर्द घूमता है। वे सरकार के काम-काज के तौर-तरीकों तथा राजनीति में हो रही हलचल को जानना चाहते हैं। समाचार-पत्र लोगों की इस रुचि को ध्यान में रखकर इन खबरों को प्रमुखता से छापते हैं। ऐसे में राजनीतिक खबरों का दैनिक अखबारों में स्थान घेरना स्वाभाविक है।

प्रश्न 2:

किन्हीं तीन हिंदी समाचार-पत्रों (एक ही तारीख के) को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि एक आम आदमी की जिंदगी में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली खबरें समाचार-पत्रों में कहाँ और कितना स्थान पाती हैं?

उत्तर –

मैंने 19 सितंबर 2014 को तीन समाचार-पत्रों-'नवभारत टाइम्स', 'दैनिक जागरण' तथा 'पंजाब केसरी' पढ़े। इन अखबारों में एक आम आदमी की जिंदगी में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान पाने वाली खबरें पहले दो पृष्ठों के बाद-तीसरे, चौथे और पाँचवें पृष्ठों पर है। इनके स्थान के बारे में अंतर अवश्य है। दैनिक जागरण ने इन खबरों को अधिक स्थान दिया है।

प्रश्न 3:

निम्न में से किसे आप समाचार कहना पसंद नहीं करेंगे और क्यों?

(क) प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना

(ख) किसी घटना की रिपोर्ट

(ग) समय पर दी जाने वाली हर सूचना

(घ) सहकर्मियों का आपसी कुशलक्षेम या किसी मित्र की शादी

उत्तर –

प्रश्न में दी गई प्रथम तीन सूचनाओं को मैं समाचार कहना पसंद करूंगा, चौथी अर्थात् (घ) सूचना को समाचार नहीं कहूँगा, क्योंकि 'सहकर्मियों का आपसी कुशलक्षेम या मित्र की शादी' जैसी सूचना का संबंध दो-चार या थोड़े-से लोगों से नहीं है। यह एक निजी मामला है, जिनमें जन-साधारण की कोई रुचि नहीं होती।

प्रश्न 4:

आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि खबरों को बनाते समय जनता की रुचि का ध्यान रखा जाता है। इसके विपरीत, जनता की रुचि बनाने-बिगाड़ने में खबरों का क्या योगदान होता है? विचार करें।

उत्तर –

प्राय: समाचार-पत्र खबरों को बनाने एवं छापने में जनता की रुचि का ध्यान रखते हैं, पर इसके विपरीत यह भी सही है कि खबरें जनता की रुचि बनाने, बिगाड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। वास्तव में देखने की बात तो यह है कि खबरों को किस तरह और किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है। आज खेल और फ़िल्मी खबरों को इतना महत्व दिया जाने लगा है कि युवा वर्ग आम लोगों के जीवन से जुड़ी खबरों की उपेक्षा करने लगा है।

प्रश्न 5:

निम्न पंक्तियों की व्याख्या करें :

(क) इस दौर में समाचार मीडिया बाजार को हड़पने के लिए अधिकाधिक लोगों का मनोरंजन तो कर रहा है, लेकिन जनता के मूल सरोकार को दरकिनार करता जा रहा है।

(ख) समाचार मीडिया के प्रबंधक बहुत समय तक इस तथ्य की उपक्षा नहीं कर सकते कि साख और प्रभाव समाचार मीडिया की सबसे बड़ी ताकत होती हैं।

उत्तर –

(क) 'जनता के मूल सरोकार को दरकिनार करता जा रहा है'-अंतिम पंक्ति से ही स्पष्ट है कि मीडिया की कार्य-प्रणाली पर असंतोध प्रकट किया गया है। वर्तमान में मीडिया लाभ कमाने और बाजार को हड़पने के लिए अधिक चिंतित दिखाई दे रहा है। वह अमीरवर्ग और अधिक क्रय-शक्ति

वालों की खबरों को प्रमुखता से छापता है तथा सामान्य लोगों के हितों को बढ़ावा देने वाली और जन-साधारण के जन-जीवन की खबरों की उपेक्षा कर इस वर्ग के लोगों के हितों की परवाह नहीं करता।

(ख) समाचार मीडिया के प्रबंधकों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि वे मीडिया के प्रभाव और उसकी साख को गिरने न दें। मीडिया का लोगों पर प्रभाव और लोगों के बीच बनी साख ही उसकी ताकत है। साख और प्रभाव खो देने के बाद मीडिया का लोगों पर बना असर धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। ऐसे में मीडिया प्रबंधकों को मीडिया की साख और प्रभाव की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

पत्रकारिता

प्रश्न 1:

पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?

उत्तर –

पत्रकारिता का मूल तत्व जिज्ञासा है।

प्रश्न 2:

मनुष्य सूचनाएँ क्यों जानना चाहता है?

उत्तर –

मनुष्य सूचनाएँ इसलिए जानना चाहता है ताकि वह भविष्य को योजनाएँ बना सके। सूचनाएँ उसके दैनिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं।

प्रश्न 3:

समाचार प्राप्त करने के माध्यम कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

समाचार-पत्र, इंटरनेट, रेडियो, टेलीविजन आदि।

प्रश्न 4:

पत्रकारिता किसे कहते हैं?

उत्तर –

देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं।

प्रश्न 5:

समाचार क्या है?

उत्तर –

समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक-से-अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक-से-अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

प्रश्न 6:

आपसी कुशल-क्षेम को समाचार क्यों नहीं माना जाता?

उत्तर –

आपसी कुशल-क्षेम व्यक्तिगत मामला होता है। इसका समाज के लिए कोई विशेष महत्व नहीं होता है। समाचार का संबंध सार्वजनिक महत्व के विषयों से है। इसलिए आपसी कुशल-क्षेम को समाचार नहीं माना जाता।

प्रश्न 7:

समाचार का निर्धारण कौन करता है?

उत्तर –

समाचार का चयन, आकार और प्रस्तुति का निर्धारण पत्रकार और समाचार संगठन करते हैं।

प्रश्न 8:

आधुनिक युग में कैसे समाचारों का प्रचलन बढ़ा है?

उत्तर –

र आधुनिक युग में मजेदार और मनोरंजक समाचारों का प्रचलन बढ़ा है।

प्रश्न 9:

समाचार के तत्व बताइए।

उत्तर –

समाचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं-

1. नवीनता
2. निकटता
3. प्रभाव
4. जनरुचि
5. टकराव
6. महत्त्वपूर्ण लोग
7. उपयोगी जानकारियाँ
8. अनोखापन
9. पाठक वर्ग
10. नीतिगत ढाँचा

प्रश्न 10:

समाचार के लिए नवीनता का क्या महत्व है?

उत्तर –

किसी भी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता जरूरी है। समाचार वही है जो ताजा घटना के बारे में जानकारी देता है। घटना के ताजापन से अभिप्राय है कि वह उस समय के लिहाज से नई हो।

प्रश्न 11:

समाचार और निकटता का संबंध बताइए।

उत्तर –

हर घटना का समाचारीय महत्व उसकी स्थानीयता से निर्धारित होता है। मानव का स्वभाव है कि वह अपने निकट हुपित्ताओंकोजन के लएउसुकरता है। यहा किटता भागलक के साथ-साथ सामाकि साकृतिक भी होती है।

प्रश्न 12:

पत्रकारिता के मूल्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –

पत्रकारिता एक तरह से दैनिक इतिहास लेखन है। इसके निम्नलिखित मूल्य हैं

1. पत्रकार को ऐसा कोई समाचार नहीं लिखना चाहिए जिससे किसी की सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचता हो।
2. समाज में अराजकता नहीं फैलनी चाहिए।
3. बिना सबूत के कोई समाचार नहीं लिखना चाहिए।

प्रश्न 13:

पाठक वर्ग का समाचार-चयन में क्या महत्व है?

उत्तर –

पाठक वर्ग की जरूरतों व रुचियों के हिसाब से समाचारों का चयन किया जाता है। आजकल समाचारों के महत्व के आकलन में पाठक वर्ग का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। अतिरिक्त क्रय शक्ति वाले सामाजिक तबकों में पढ़े जाने वाले समाचारों को अधिक महत्व मिल रहा है तथा पीड़ित व कमजोर वर्ग उपक्षित होता जा रहा है।

संपादन

प्रश्न 14:

संपादन का अर्थ बताइए।

उत्तर –

संपादन का अर्थ है-किसी सामग्री से उसकी अशुद्धयों को दूर करके उसे पठनीय बनाना। उपसंपादक रिपोर्टर की खबर की भाषा-शैली, व्याकरण, वर्तनी तथा तथ्य संबंधी अशुद्धयों को दूर करता है।

प्रश्न 15:

संपादन के मुख्यबिंदु कौन-कौन से है?

उत्तर –

संपादन के निम्नलिखित मुख्यबिंदु होते हैं-

1. तथ्यों की शुद्धता या तथ्यपरकता
2. वस्तुपरकता
3. निष्पक्षता
4. संतुलन
5. स्त्रोत

प्रश्न 16:

समाचार में तथ्यपरकता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर –

समाचार में तथ्यपरकता का महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रकार को ऐसे तथ्यों को चयन करना चाहिए जो यथार्थ का संपूर्णता के साथ प्रतिनिधित्व करते हैं, परंतु समाचार में यथार्थ सीमित सूचनाओं व तथ्यों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। कड़वा सच खतरनाक होता है, क्योंकि मनुष्य यथार्थ की छवियों की दुनिया में रहता है।

प्रश्न 17:

वस्तुपरकता और तथ्यपरकता में क्या अंतर है?

उत्तर –

वस्तुपरकता का संबंध सामाजिक-सांस्कृतिक आर्थिक मूल्यों से होता है, जबकि तथ्यपरकता का संबंध अधिकाधिक तथ्यों से है। वस्तुपरकता तथ्य को देखने की दृष्टि है।

प्रश्न 18:

निष्पक्षता का पत्रकारिता के लिए क्या महत्व है?

उत्तर –

पत्रकारिता में निष्पक्षता का बहुत महत्व है। पत्रकार को हर विषय पर बिना किसी भेद-भाव के समाचार भेजने चाहिए. परंतु निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है।

प्रश्न 19:

समाचार की साख के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर –

किसी समाचार की साख के लिए आवश्यक है कि शामिल सूचना या जानकारी का कोई स्रोत हो और वह स्रोत इस तरह की सूचना या जानकारी देने का अधिकार रखता हो।

प्रश्न 20:

पत्रकारिता के अहम हिस्से कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

समाचार, विचार, टिप्पणी, संपादकीय, फ़ोटो, कार्टून, संपादकीय, पत्रकारिता आदि।

प्रश्न 21:

संपादकीय पृष्ठ पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर –

संपादकीय पृष्ठ को समाचार-पत्र का महत्वपूर्ण पृष्ठ भाना जाता है! इस पर विभिन्न घटनाओं व समाचारों पर पत्र भी इस पृष्ठ पर होते है जो लोगों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 22:

निम्न पर टिप्पणी कीजिए-

(क) फोटो पत्रकारिता

(ख) कार्टून कोना

(ग) रेखांकन और काटोग्राफ

उत्तर –

(क) फोटो पत्रकारिता-आजकल अखबारों में फोटो का प्रचलन बढ़ रहा है। फोटो टिप्पणियों का

असर व्यापक होता है। एक चित्र कई हजार बातें कह जाता है।
(ख) कार्टून कोना-यह आम आदमी की भावनाओं को व्यक्त करने का सीधा तरीका है। यह हर समाचार-पत्र में होता है। कार्टून पहले पन्न पर प्रकाशित होने वाले हस्ताक्षरित संपादकीय है।
(ग) रेखांकन और काटीग्राफ-रेखांकन समाचारों की रोचक बनाते हैं। काटीग्राफी का प्रयोग टेलीविजन में भी होता है। क्रिकेट के स्कोर से लेकर सेंसेक्स के आँकड़ों को ग्राफ से बताते हैं।

प्रश्न 23:

पत्रकारिता के प्रकार बताइए।

उत्तर –

पत्रकारिता के अनेक प्रकार हैं-खोजपरक पत्रकारिता. विशेषकृत पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता, एडवोकेसी पत्रकारिता, वैकल्पिक पत्रकारिता।

प्रश्न 24:

खोजपरक पत्रकारिता के विषय में बताइए।

उत्तर –

वह पत्रकारिता जो गहराई से छानबीन करके छिपी या देखी हुई खबरों को सामने लाती हैं, खोजपरक पत्रकारिता लाती है। आमतौर पर यह पत्रकारिता सार्वजनिक महत्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश करती है। इसका नवीनतम रूप 'स्टिंग ऑपरेशन' है। खोजपरक पत्रकारिता का नायाब उदाहरण अमेरिका का वाटरगेट कांड है।

प्रश्न 25:

विशेषीकृत पत्रकारिता का अर्थ बताइए।

उत्तर –

वह पत्रकारिता जो किसी विषय पर विशेष जानकारी प्रदान करती है, विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाती है। पत्रकारिता में विषय के हिसाब से विशेषता के सात प्रमुख क्षेत्र हैं-संसदीय पत्रकारिता, न्यायालय पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता और विकास पत्रकारिता, अपराध पत्रकारिता तथा फैशन और फिल्म पत्रकारिता।

प्रश्न 26:

वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है?

उत्तर –

वह पत्रकारिता जो सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और गड़बड़ियों का पर्दाफाश करती है, वॉचडॉग पत्रकारिता कहलाती है। ऐसी पत्रकारिता सरकारी समाचारों की आलोचना भी करती है।

प्रश्न 27:

एडवोकेसी पत्रकारिता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

ऐसी पत्रकारिता जो किसी विचाराधारा उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर जनमत तैयार करती है,

एडवोकेसी पत्रकारिता कहलाती है। जेसिका लाल हत्याकांड, रुचिका कांड में न्याय के लिए समाचार माध्यमों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

प्रश्न 28:

वैकल्पिक पत्रकारिता किसे कहते हैं?

उत्तर –

जो पत्रकारिता स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करता है, उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं। इस तरह की पत्रकारिता को सरकार और बड़ी पूँजी का समर्थन नहीं मिलता।

प्रश्न 29:

पीत पत्रकारिता के विषय में बताइए।

उत्तर –

यह पत्रकारिता सनसनी फैलाने का कार्य करती है। इस तरह की पत्रकारिता की शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तराद्र्ध में अमेरिका में हुई थी। उस समय वहाँ कुछ अखबारों के बीच पाठकों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष छिड़ गया था। एक-दूसरे को पीछे करने की होड़ में इन अखबारों ने पीत पत्रकारिता का सहारा लिया। पीत पत्रकारिता के तहत अखबार अफवाहों, व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोपों, प्रेम-संबंधों, भंडाफोड़ और फिल्मी गपशप को समाचार की तरह प्रकाशित करते हैं।

प्रश्न 30:

पेज श्री पत्रकारिता क्या है?

उत्तर –

इसका तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों, महफिलों और जाने-माने लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह आमतौर पर समाचार-पत्रों के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है। इसलिए इसे पेज श्री पत्रकारिता कहते हैं। आजकल इसकी पृष्ठ संख्या कोई भी हो सकती है, परंतु इनके विषय वही हैं।

प्रश्न 31:

डेडलाइन किसे कहते हैं?

उत्तर –

समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय-सीमा को डेडलाइन कहते हैं। डेडलाइन के बाद मिलने वाले समाचार के छपने की संभावना कम ही होती है।

प्रश्न 32:

न्यूजपेग का अर्थ बताइए।

उत्तर –

न्यूजपेग का अर्थ है-किसी मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख या फीचर में उस नवीनतम घटना का उल्लेख जिसके कारण वह मुद्दा चर्चा में आ गया है।

प्रश्न 33:

स्टिंग ऑपरेशन पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

जब किसी टेलीविजन चैनल का पत्रकार छिपे कैमरे के जरिए किसी गैर-कानूनी, अवैध और असामाजिक गतिविधियों को फिल्माता है और फिर उसे अपने चैनल पर दिखाता है तो इसे स्टिंग ऑपरेशन कहते हैं। कई बार चैनल ऐसे ऑपरेशनों को गोपनीय कोड दे देते हैं; जैसे-ऑपरेशन चक्रव्यूह।

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

प्रश्न 1:

जनसंचार माध्यम के प्रमुख प्रकार बताइए।

उत्तर –

जनसंचार माध्यम के कई प्रकार हैं-प्रिंट, टी.वी. रेडियो व इंटरनेट। प्रिंट माध्यम केवल पढ़ने के लिए है, रेडियो सुनने के लिए, टी.वी. देखने व सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने और देखने-तीनों के लिए है।

प्रश्न 2:

मुद्रण की शुरूआत कहाँ से हुई?

उत्तर –

चीन से।

प्रश्न 3:

आधुनिक छापेखाने का आविष्कार किसने किया?

उत्तर –

जर्मनी के गुटेनबर्ग ने।

प्रश्न 4:

भारत में पहला छापाखाना कब, कहाँ और किसने खोला?

उत्तर –

भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में पुर्तगालियों ने गोवा में धर्मप्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला।

प्रश्न 5:

प्रिंट रीडिया के प्रमुख माध्यम कौन-से हैं?

उत्तर –

अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि।

प्रश्न 6:

मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –

मुद्रित माध्यम की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. मुद्रित माध्यमों में छपे हुए शब्द स्थायी होते हैं। इन्हें कहीं भी, कभी भी, किसी भी अवस्था में पढ़ा जा सकता है। इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

2. मुद्रित माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है। लिखित भाषा में व्याकरण, वर्तनी व शब्दों के उपयुक्त इस्तेमाल का ध्यान रखना होता है। यह भाषा के अनुशासन की माँग करती है।
3. मुद्रित माध्यम चिंतन, विचार व विश्लेषण का माध्यम है। इसके जरिए हम गंभीर व गूढ़ बातें लिख सकते हैं, क्योंकि पाठक के पास विश्लेषण के लिए समय व योग्यता होती है।

प्रश्न 7:

मुद्रित माध्यम की कमियाँ बताइए।

उत्तर –

मुद्रित माध्यम की निम्नलिखित कमियाँ हैं-

1. यह माध्यम केवल साक्षर व्यक्तियों के लिए है तथा जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के जरिए एक विशेष स्तर की योग्यता हासिल की है।
2. समय-सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का पालन करना जरूरी है।
3. लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धयूं को ठीक करना जरूरी होता है।
4. लेखक में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना जरूरी है।
5. मुद्रित माध्यम के लेखकों को पाठक के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

रेडियो

प्रश्न 8:

रेडियो के विषय में बताइए।

उत्तर –

रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें ध्वनि, स्वर व शब्दों का मेल होता है। रेडियो पत्रकारों को श्रोताओं का ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि रेडियो का श्रोता अखबार की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकता। उसे बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतजार करना पड़ता है। रेडियो एकरेखीय माध्यम है और रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होता है।

प्रश्न 9:

रेडियो का मूल तत्व क्या है?

उत्तर –

शब्द और आवाज।

प्रश्न 10:

रेडियो समाचार की संरचना पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

रेडियो समाचार की संरचना उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है। इस शैली में सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तीन हिस्से होते हैं-इंट्रो, बॉडी व समापन। समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में मुखड़ा कहते हैं। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की

दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है, बॉडी में समाचार के प्रस्तुत ब्योरे को घटते हुए महत्त्व क्रम में लिखा जाता है। इस शैली में समापन अलग से नहीं होता।

प्रश्न 11:

रेडियो के लिए समाचार-लेखन में किन-किन बुनियादी बातों का ध्यान रखा जाता है?

उत्तर –

रेडियो के लिए समाचार-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. रेडियो समाचार की कॉपी टाइप्ड व साफ-सुथरी होनी चाहिए अन्यथा समाचार वाचक पढ़ते समय अटकेगा।
2. समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी को दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
3. एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।
4. पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए और पृष्ठ के आधार में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।
5. समाचार कॉपी में जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि नहीं लिखने चाहिए।
6. अंक को शब्दों में लिखना चाहिए: जैसे 199 को एक सौ निन्यानबे। इसी तरह % तथा $ आदि संकेत चिह्नों को क्रमश: प्रतिशत और डॉलर लिखना चाहिए। दशमलव को उसके नजदीकी पूर्णांक में लिखना चाहिए।
7. रेडियो समाचार में अत्यधिक आँकड़ों व संख्या का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
8. रेडियो में समाचार के समय संदर्भ का ध्यान रखना चाहिए। इस पर खबर का चौबीस घंटे प्रसारण होता है। श्रोता के लिए समय का फ्रेम हमेशा आज होता है। इसलिए समाचार में आज, आज सुबह, आज दोपहर आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

टी.वी.

प्रश्न 12:

टी.वी. में किसकी प्रमुखता होती है?

उत्तर –

दृश्य की।

प्रश्न 13:

टेलीविजन समाचार-लेखन के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है?

उत्तर –

टेलीविजन समाचार-लेखन के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होता है-

1. टेलीविजन में शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल होने चाहिए।
2. इसमें कम-से-कम शब्दों में ज्यादा-से-ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल होता है।

प्रश्न 14:

टेलीविजन पर खबर पेश करने के तरीके बताइए।

उत्तर –

टेलीविजन पर खबर दो तरीके से पेश की जाती है-

1. शुरूआती हिस्सा-इसमें मुख्य खबर होती है तथा न्यूजरीडर या एंकर बिना दृश्य के इसे पढ़ता है।
2. इसके दूसरे हिस्से में परदे पर एंकर की जगह खबर से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं।

प्रश्न 15:

टी.वी. खबर की प्रस्तुति के तरीके बताइए।

उत्तर –

टी.वी. खबर की प्रस्तुति के निम्नलिखित तरीके हैं-

1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज
2. ड्राई एंकर
3. फोन-इन
4. एंकर-विजुअल
5. एंकर बाइट
6. लाइव।
7. एंकर पैकेज

प्रश्न 16:

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज से क्या आशय है?

उत्तर –

कम-से-कम शब्दों में सिर्फ सूचना देने के लिए जो बड़ी खबर दर्शकों को पहुँचाई जाती है, उसे ब्रेकिंग न्यूज या फ्लैश कहा जाता है।

प्रश्न 17:

ड्राई एंकर से क्या तात्पर्य है?

उत्तर –

ड्राई एंकर वह है जो खबर को सीधे-सीधे दर्शकों को बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। इसमें दृश्य नहीं होते।

प्रश्न 18:

फोन-इन से क्या आशय है?

उत्तर –

फोन-इन के माध्यम से रिपोर्टर फोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। वह घटना वाली जगह पर मौजूद होता है।

प्रश्न 19:

एंकर-विजुअल से क्या आशय है?

उत्तर –

जब घटना के दृश्य मिल जाते हैं तो उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है जिसे एंकर पढ़ता

है। इस खबर की शुरूआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

प्रश्न 20:

एंकर-बाइट से क्या आशय है?

उत्तर –

बाइट का अर्थ है-कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रमाणिकता प्रदान की जाती है।

प्रश्न 21:

लाइव से क्या तात्पर्य है?

उत्तर –

किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण होने को लाइव कहा जाता है। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ.बी. वैन के जरिए घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

प्रश्न 22:

एंकर पैकेज से क्या आशय है?

उत्तर –

किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का माध्यम पैकेज है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफिक के जरिए जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

प्रश्न 23:

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर –

रेडियो और टेलीविजन आम आदमी के माध्यम हैं। अत: रेडियो व टेलीविजन समाचार की भाषा-शैली ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी को आसानी से समझ में आ सके, लेकिन साथ ही भाषा के स्तर और गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े। वाक्य छोटे-छोटे हों तथा एक वाक्य में एक ही बात कही जा सके। वाक्यों में तारतम्य ऐसा हो कि कुछ टूटता या छूटता हुआ न लगे। भाषा में तथा, एवं, अथवा, व, किंतु, परंतु आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। गैरजरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

इंटरनेट

प्रश्न 24:

इंटरनेट क्या है?

उत्तर –

इंटरनेट एक टूल है जिसे मानव सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए प्रयोग करता है।

प्रश्न 25:

इंटरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है?

उत्तर –

इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं। इसे ऑन लाइन पत्रकारिता, साइट पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता कहते हैं।

प्रश्न 26:

इंटरनेट पत्रकारिता की शुरूआत कब हुई?

उत्तर –

सन् 1983 में

प्रश्न 27:

इंटरनेट की मुख्य तकनीक के तत्व बताइए।

उत्तर –

एच. टी. एम. एल. इंटरनेट ई-मेल, इंटरनेट एक्सप्लोरर, नेटस्केप आदि।

प्रश्न 28:

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरूआत कब हुई?

उत्तर –

1993 ई. से।

प्रश्न 29:

भारत में कौन-कौन-से समाचार-पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध हैं?

उत्तर –

टाइम्स ऑफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, हिंदू, ट्रिब्यून आदि।

प्रश्न 30:

भारत की पेड-साइट (भुगतान साइट) कौन-सी है?

उत्तर –

इंडिया टुडे।

प्रश्न 31:

भारत की पहली वेब पत्रकारिता साइट कौन-सी है?

उत्तर –

रीडिफ।

प्रश्न 32:

वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता की शुरूआत किसने की?

उत्तर –

तहलका डॉटकॉम।

प्रश्न 33:

भारत में नियमित अपडेट होने वाली साइटें बताइए।

उत्तर –

हिंदू जी न्यूज, आज तक, एन डी टीवी, आउटलुक।

प्रश्न 34:

हिंदी का संपूर्ण पोर्टल कौन-सा है?

उत्तर –

नयी दुनिया (इंदौर)।

प्रश्न 35:

भारत का कौन-सा अखबार सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है?

उत्तर –

प्रभासाक्षी।

प्रश्न 36:

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट कौन-सी है?

उत्तर –

बी.बी.सी.।

प्रश्न 37:

हिंदी वेब जगत में कौन-कौन-सी साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं?

उत्तर –

अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय।

प्रश्न 38:

हिंदी वेब पत्रकारिता की समस्याएँ कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर –

हिंदी के फोंट, की-बोर्ड का मानकीकरण न होना, उपलब्ध न होना आदि समस्याएँ हैं।

पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

प्रश्न 1:

पत्रकारिता लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर –

वह लेखन जो अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाला पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करता है, पत्रकारिता लेखन कहा जाता है।

प्रश्न 2:

पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर –

पत्रकार तीन तरह के होते हैं-पूर्णकालिक, अंशकालिक तथा फ्रीलांसर।

(क) पूक्लिक पिश्कर-ये प्रकर की समाचरसंमान में कमकने वाले नाम बेनोग कर्मचारी होते हैं।

(ख) अंशकालिक पत्रकार-ये किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर कार्य करते हैं।

(ग) फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार-ये पत्रकार भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 3:

पत्रकारिता लेखन साहित्यिक सृजनात्मक लेखन से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर –

पत्रकारिता लेखन का संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से है। यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर रचा जाता है, जबकि साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

प्रश्न 4:

पत्रकारीय लेखक की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर –

पत्रकारीय लेखक की भाषा आम बोलचाल की भाषा होनी चाहिए। उसकी लेखन-शैली, भाषा और गूढ़-से-गूढ़ विषय की प्रस्तुति ऐसी सहज, सरल और रोचक होनी चाहिए कि वह सबकी समझ में आ जाए। वाक्य छोटे व सहज होने चाहिए तथा सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। पत्रकार को आलंकारिक भाषा से बचना चाहिए।

प्रश्न 5:

संवाददाता या रिपोर्टर किसे कहते हैं?

उत्तर –

अखबारों में स्थानिक घटनाओं का विवरण भेजने वाले व्यक्ति को संवाददाता कहते हैं।

प्रश्न 6:

उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग कब शुरू हुआ?

उत्तर –

इस शैली का प्रयोग 19 वीं सदी के मध्य से शुरू हुआ।

प्रश्न 7:

समाचार लेखन के छह ककार कौन-से हैं?

उत्तर –

समाचार लेखन के छह ककार निम्नलिखित हैं

1. क्या
2. किसके या कौन
3. कहाँ

4. कब
5. क्यों
6. कैसे

प्रश्न 8:

समाचार में छह ककारों का क्या महत्व है?

उत्तर –

समाचार लेखन में छह ककारों का प्रयोग किया जाता है। समाचार के मुखड़े में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं-क्या, कौन, कब, और कहाँ समाचार की बॉडी में कैसे और क्यों का जवाब दिया जाता है। पहले चार ककार-क्या, कौन, कब, और कहाँ-सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं, जबकि बाकी दो ककारों-कैसे और क्यों-में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

प्रश्न 9:

संपादकीय किसे कहते हैं?

उत्तर –

संपादकीय वह लेख है जिसके जरिए समाचार-पत्र किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। यह किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता।

प्रश्न 10:

संपादक किसे कहते हैं?

उत्तर –

वह व्यक्ति जो समाचार-पत्र के संपादकीय कार्य का निर्देशन, नियंत्रण व निरीक्षण करता है, उसे संपादक कहते हैं। यह समाचार-पत्र में प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी होता है। यह संपादकीय विभाग का प्रमुख प्रशासनिक एवं विधिक अधिकारी होता है।

प्रश्न 11:

स्तंभ-लेखन क्या है?

उत्तर –

स्तंभ-लेखन विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप है। खास शैली के कुछ लेखक अखबार में नियमित लेख देते हैं। इस लेख का विषय व विचार स्तंभ लेखक की मजी से होता है। स्तंभ लेख लेखक के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं।

प्रश्न 12:

‘संपादक के नाम पत्र’ पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

समाचार-पत्र के संपादकीय पृष्ठ पर पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं। इस स्तंभ के जरिए पाठक अपनी राय विभिन्न मुद्दों पर जाहिर करते हैं। वे जनसमस्याएँ भी उठाते हैं। यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है।

प्रश्न 13:

पत्रकारीय साक्षात्कार व सामान्य बातचीत में अंतर बताइए।

उत्तर –

साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी दूसरे व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय व भावनाएँ जानने के लिए प्रश्न पूछता है, जबकि सामान्य बातचीत में प्रश्नात्मक शैली नहीं होती।

प्रश्न 14:

सफल साक्षात्कार के लिए पत्रकार में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उत्तर –

पत्रकार में ज्ञान, संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

समाचार लेखन के उदाहरण

(1) सूचनाएँ

1. रुपये की पहचान के लिए चिहन की खोज।
2. आर. बी. आई ने बनाई समिति।
3. मार्च में रुपये का चिहन संभव।
4. विश्व की अन्य मुद्राओं के समान होगा रुपया।

मार्च में मिलेगी रुपये को पहचान

रिजर्व बैंक की विशेष समिति ने पाँच प्रतीक चिहनों को छाँटा, इन्हीं में से तय होगा प्रतीक मनोजित साहा और वृष्टि ब्रेनीवाल डॉलर और पाउंड की तर्ज पर अगर आपको रुपये के भी किसी प्रतीक चिहन का इंतजार है, तो बस मार्च तक और घड़ियाँ गिनिए। मार्च में रुपये का चिहन मिल जाएगा।

भारतीय रिजर्व बैंक की डिप्टी गवर्नर उषा थोराट की अध्यक्षता वाली एक समिति ने करीब 4000 प्रविष्टियों में से पाँच को रुपये का निशान बनाने के लिए छाँटा है। इनमें से किसी एक के डिजाइन पर ही अंतिम मुहर लगेगी और विजेता के नाम का ऐलान जनवरी में कर दिया जाएगा, लेकिन वित्त मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक मार्च से पहले तक प्रक्रिया पूरी नहीं हो पाएगी। वित्त मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है-‘आरबीआई ने अपनी सिफारिशें सौंप दी हैं, लेकिन अभी इस पर वित्त मंत्रालय के साथ-साथ कैबिनेट की मुहर लगना बाकी है। इस प्रक्रिया में दो से तीन महीने का वक्त लग सकता है।”

अधिकारी का यह भी कहना है कि आधिकारिक तौर से इसकी शुरूआत में और भी वक्त लग सकता है, क्योंकि नए चिहन के लिए सॉफ्टवेयर की भी जरूरत होगी। इसके अलावा इस पर फैसला लिया जाना है कि करेंसी नोट और सिक्कों पर भी इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए या नहीं।

जिन पाँच डिजाइनरों के डिजाइन को अंतिम पाँच में चुना गया है, कुछ दिनों पहले नई दिल्ली में उनका साक्षात्कार भी हो चुका है। इन सभी डिजाइनरों की पृष्ठभूमियाँ काफी अलग हैं। इनमें से दो तो पेशेवर डिजाइनर हैं, जबकि एक आई आई टी. बंबई में इंडस्ट्रियल डिजाइनर में पी-एच. डी. के छात्र हैं।

बाकी में एक एम. आई. टी. से प्रशिक्षण ले चुके आर्किटेक्ट तो दूसरे थैलासेरी के एक हाईस्कूल में कंप्यूटर अध्यापक हैं। इन सभी को 25,000 रुपये की राशि दी गई है और विजेता को 2.5 लाख रुपये दिए जाएँगे। इनमें से जितेश पद्मशाली, शाहरुख जे. ईरानी, डी उदय कुमार और नंदिता कोरिया मेहरोत्रा मुंबई से ताल्लुक रखते हैं, जबकि शिबिन के. के. केरल में अध्यापक हैं। यह प्रतियोगिता 15 अप्रैल को बंद हो गई थी, जिसमें सभी भारतीय नागरिकों को शामिल होने की छूट दी गई थी। डॉलर, पाउंड, येन और यूरो जैसी दुनिया के दूसरे देशों की मुद्राओं के पास अपना खास चिहन है और अभी तक रुपया इस मामले में पिछड़ा रहा है। भारतीय रुपये को वैश्विक बाजारों में अंग्रेजी में आर. एस. या फिर आई. एन. आर. (इंडियन नेशनल रुपीज) कहा जाता है, लेकिन चिन्ह मिलने पर उसे भी पहचान मिल जाएगी।

(2) सूचनाएँ

1. डी. जी. सी. ए. की रिपोर्ट।
2. नबंबर में विदेशी व घरेलू एयरलाइनों ने उड़ानें रद्द कीं।
3. जेट एयरवेज ने सर्वाधिक उड़ानें रद्द कीं।
4. समय पर वायुयान उड़ानों में पैरामाउंट व कैथे पेसिफिक सबसे आगे।

उड़ानें रदद करने में भी टॉप है जेट

नवंबर माह में घरेलू एयरलाइनों के साथ-साथ विदेशी एयरलाइनें भी विभिन्न कारणों से अपनी उड़ानें रद्द करने में आगे रही हैं। नागरिक उड्डयन महानिदेशालाय (डी०जी०सी०ए०) की ओर से जारी आँकड़ों से पता लगता है कि नवंबर माह में यात्रियों को ढोने में टॉप पर रही जेट एयरवेज उड़ानों को रद्द करने के मामले में भी टॉप पर रही है। नवंबर में औसतन रद्द उड़ानों की संख्या 1.6 फीसदी है। इसमें स्पाइस जेट 0.3 फीसदी, गो एयर 0.6 फीसदी, इंडिगो 0.6 फीसदी और पैरामाउंट विमान द्वारा उड़ाने कैंसल करने की दर 1.6 फीसदी है, लेकिन जेट एयरवेज की दर 2 फीसदी और जेट लाइट की दर 2.2 फीसदी रही है। इनमें 40 फीसदी उड़ानों को रद्द करने का तकनीकी कारण रहा है, जबकि मौसम के कारण 189 फीसदी उड़ानें रद्द हुई हैं। 41 फीसदी विमान अन्य व्यावसायिक कारणों से नहीं उड़ पाए हैं।

समय पर विमानों को उड़ानें के मामले में पैरामाउंट 85.9 फीसदी के साथ अव्वल रही है, जबकि किंगफिशर 82.5 फीसदी, स्पाइस जेट 80.3 फीसदी, इंडिगो 78.4 फीसदी और गो एयर ने 73.3 फीसदी विमानों को समय पर उड़ाया है। घरेलू के अलावा अंतर्राष्ट्रीय विमानों ने भी अपने परिचालन समय में काफी खामियाँ पेश की हैं। इसमें कैथ्रे पैसिफिक के 95 फीसदी, के. एल. एम. के 90 फीसदी, सिंगापुर एयरलाइंस के 872 फीसदी और सिल्कएयर के 94.1 फीसदी विमानों ने समय से उड़ान भरी हैं।

(3) सूचनाएँ

1. ग्रामीणों को चिकित्सा स्वास्थ्य के लिए एंबुलेंस स्कीम 102 शुरू
2. गर्भवती महिलाओं को मिलेगी मुफ्त वाहन सेवा।
3. स्वास्थ्य विभाग की पहल।

कारगर बनी 1o2 की हेल्पलाइन सेवा

गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य विभाग सुविधा उपलब्ध करा रहा है : मुफ्त वाहन सेवा, अस्पतालों व स्वास्थ्य केंद्रों से ए. एन. एम. दवारा गर्भवती महिलाओं को वाउचर प्रदान करना। अगर आप गर्भवती हैं और अस्पताल से दूर किसी गाँव में रहती हैं तो घबराएँ मत। स्वास्थ्य विभाग ने ऐसी महिलाओं को हेल्थ वाउचर देने का निर्णय लिया है, ताकि उनकी डिलीवरी सही ढंग से और समय पर हो सके। इसके लिए गर्भवती महिलाओं को मुफ्त वाहन सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। ग्रामीणों को शीघ्र चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए एंबुलेंस स्कीम 102 शुरू की गई है। इस स्कीम के तहत अस्पतालों व स्वास्थ्य केंद्रों पर तैनात ए. एन. एम. गाँव की गर्भवती महिलाओं को वाउचर देगी। इस वाउचर में गर्भवती महिला का पूरा ब्यौरा लिखा जाएगा। इसमें एक परफोर्मा ए. एन. एम. के पास रहेगा और दूसरा महिला के पास होगा।

गर्भवती महिला का डिलीवरी का समय नजदीक आएगा; वैसे ही ए. एन. एम. उसके संपर्क में रहेगी। इससे कर्मचारियों को इस बात की जानकारी रहेगी कि किस गाँव में डिलीवरी होनी है। इसके बाद ए. एन. एम. संबंधित एरिया की एंबुलेंस को इसकी सूचना देगी ताकि डिलीवरी कराने वाली महिला को समय से पूर्व अस्पताल में पहुँचाया जा सके। “स्वास्थ्य मंत्रालय ने गर्भवती महिलाओं को शीघ्र डिलीवरी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मुफ्त स्वास्थ्य वाहन सेवा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। इसका रिकॉर्ड ए. एन. एम. अपने पास रखेगी ताकि अस्पताल से दूर रहने वाली महिलाओं की समय पर डिलीवरी हो सके।”

(4) सूचनाएँ

1. गृह मंत्रालय द्वारा राज्यों को चेतावनी।
2. अवैध खनन पर शिकजा कसने के लिए दबाव।
3. अवैध खनन से हुए मुनाफे से अपराधों में बढ़ावा।
4. 17 राज्यों में अवैध खनन जारी।

‘मुफ्त’ की खनन पर उमेठे जाएँगे कान

अवैध खनन का जोर पकड़ता चलन कहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा न बन जाए। इस बात ने केंद्रीय गृह मंत्रालय के कान खड़े कर दिए हैं। मंत्रालय ने राज्यों को सख्त ताकीद किया है कि अवैध खनन पर अंकुश लगाया जाए। सरकारी एजेंसियों के मुताबिक कई राज्यों में अवैध खनन का धंधा बेहद तेजी से बढ़ रहा है और इससे हो रहे मुनाफे का इस्तेमाल राष्ट्रविरोधी हरकतों को अंजाम देने में किया जा सकता है।

राज्यों के साथ हालिया बैठक में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा है कि अवैध खनन से भारी मात्रा में पैसा बनाया जा रहा है और माफिया इसका इस्तेमाल आपराधिक तत्वों को बढ़ावा देने में कर रहे हैं। एक उच्चस्तरीय सरकारी सूत्र का कहना है कि भारतीय खनन ब्यूरो (आई.बी.एम.) ने करीब 17 राज्यों को चिहनित किया है जहाँ पर अवैध खनन का काम चल रहा है। इसमें कर्नाटक के बेल्लारहोस्यात, आंध्र प्रदेश के ओबुल्लापुरम, कुरनूल और कड़प्पा, उड़ीसा के बारबिल और झारखंड के पश्चिमी सिंहभूमि और गोड्डा जिलों के नाम प्रमुख रूप से शामिल हैं।

हालात दिन पर दिन बिगड़ते जा रहे हैं और केंद्र ने राज्यों को चेतावनी दी है कि अगर उन्होंने इस मामले में सख्त कदम नहीं उठाए तो फिर केंद्र को ही कुछ दखल देना होगा। राज्यों और केंद्र के बीच अब 26 दिसंबर को इस मसले पर बैठक होनी है और केंद्र उम्मीद कर रहा है कि इस बैठक में राज्य किसी कारगर फॉर्मूले के साथ आएँगे।

संपादकीय लेखन के उदाहरण

1. लोकसभा चुनाव में अनेक उम्मीदवार चुनाव खर्च की अधिकतम सीमा से कम खर्च दिखा रहे हैं, जबकि यथार्थ कुछ और है। संपादकीय लिखिए।

चुनाव में सीमा से भी बहुत कम खर्च

हमारे उम्मीदवार एक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में खर्च की अधिकतम सीमा 25 लाख रुपये से भी बहुत कम धनराशि खर्च कर रहे हैं।

पिछले लोकसभा चुनाव के बाद विभिन्न पार्टियों के उम्मीदवारों ने चुनाव में किए गए खर्चों का जो ब्यौरा दिया, उसका विश्लेषण नेशनल इलेक्शन वॉच नाम की एक स्वतंत्र संस्था ने किया है। उसके निष्कर्ष चौंकाने वाले हैं और हमारी चुनाव प्रणाली में फिर से जड़ें जमाती एक गंभीर बीमारी की ओर इशारा करते हैं। हमारे उम्मीदवार एक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में खर्च की अधिकतम सीमा 25 लाख रुपये से भी बहुत कम धनराशि खर्च कर रहे हैं, बल्कि यह कहना शायद ज्यादा सही होगा कि वे हकीकत से कम खर्च दिखा रहे हैं।

जिन लगभग साढ़े छह हजार लोकसभा उम्मीदवारों ने अब तक चुनाव आयोग के सामने खर्च के ब्यौरे पेश किए हैं, उन्होंने अपने चुनाव पर निर्धारित अधिकतम सीमा से आधे से भी कम खर्च दिखाया है। अगर इसमें कम महत्वपूर्ण और पराजित उम्मीदवारों को छोड़ दें, तो केवल जीतने वाले उम्मीदवारों के खर्च का ब्यौरा भी लगभग यही कहानी कहता है। विजेता उम्मीदवारों ने चुनाव पर औसत 13.9 लाख रुपये (कांग्रेस), 15.04 लाख रुपये (भाजपा), 14.32 लाख रुपये (बसपा) और 16.31 लाख रुपये (सपा) खर्च किए।

एक समय था जब राजनीतिज्ञों ने चुनाव खर्च की सीमा को बहुत कम बताते हुए इसे बढ़ाने की माँग की थी। तब चुनाव खर्च की सीमा बढ़ाते हुए ऐसी व्यवस्था की गई थी जिसमें ऑडीटर चुनाव के दौरान उनके खर्च पर निगाह रखेंगे। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन के समय में यह काम कड़ाई से होता था और उम्मीदवारों के खर्च से जुड़े इस जरूरी चुनाव सुधार का बहुत अच्छा प्रभाव देखने में आया था। चुनाव प्रचार में आज भी धन जिस तरह खर्च किया जाता है, उसका गवाह हरेक नागरिक और मतदाता है, लेकिन वह आधिकारिक रूप से प्रस्तुत खर्च के ब्यौरों में दिखाई नहीं दे रहा है।

इस तरह न सिर्फ एक जरूरी चुनाव सुधार निरर्थक हो रहा है, बल्कि धनवान और निर्धन उम्मीदवारों के बीच गैर-बराबर मुकाबले का खतरा फिर सिर उठा रहा है। उम्मीदवारों के बीच धन के मामले से मुकाबला एकसमान और बराबर रहे, इसलिए खर्च सीमा से जुड़ा यह सुधार किया गया था। इस नयी परिस्थिति पर राजनीतिक दलों को आत्मचिंतन करना चाहिए, लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के इस मामले में वे ऐसा करेंगे, इसमें संदेह है। इसलिए चुनाव आयोग को इस पर विचार करके और देश में बहस चलाकर जरूरी उपाय करने होंगे।

2. पाकिस्तान में घरेलू हालात खराब हैं। इसमें भारत की क्या भूमिका हो सकती है? इस पर संपादकीय लिखिए।

राजनीतिक संकट के मुहाने पर पाकिस्तान

दिक्कत यह है कि भारत पर पाकिस्तान की गतिविधियों का सीधा असर होता है, किंतु फिलहाल सिर्फ नजर रख सकता है, कुछ कर नहीं सकता।

आने वाले दिन पाकिस्तान के लिए मुश्किलों भरे हैं। सरकार संकट में है, राष्ट्रपति समेत बड़े नेताओं के खिलाफ मुकदमे चल रहे हैं। मध्यावधि चुनाव के डर से विपक्षी दल भी सरकार को गिराने के पक्ष में नहीं हैं। सेना सब कुछ देख रही है, पर उसका अगला कदम स्पष्ट नहीं है। उधर अमेरिका चाहता है कि पाक सेना उत्तरी वजीरिस्तान में और बलूचिस्तान में आतंकी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करे।

दक्षिणी वजीरिस्तान में ऑपरेशन खत्म माना गया है। पाकिस्तान तालिबान को बहुत नुकसान नहीं हुआ है, वे बस अभी शांत बैठ गए हैं। यह बात अमेरिका को भी मालूम है। ओबामा जल्दी में है। वे इस युद्ध को अपने पूरे कार्यकाल तक देखना नहीं चाहते, पर पाकिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता के दौरान अमेरिका की जल्दी एक खराब संयोग है। अभी कोई भी सैनिक कार्रवाई अस्थिरता को और बढ़ावा देगी। मगर आर्थिक संकट के कारण पाकिस्तान को अमेरिका से आर्थिक सहयोग की भी दरकार है, जो बिना सैनिक कार्रवाई के नहीं मिलेगा। आका अमेरिका की सुने या अपने नागरिकों की, यह न जरदारी को समझ आ रहा है न सेना की।

भारत में सरकार और ज्यादातर नागरिक मानते रहे हैं कि स्थिर और खुशहाल पाकिस्तान भारत के हित में है। वहीं कई चिंतकों का मानना है कि पाकिस्तान की स्थिरता कभी भारत के हित में नहीं रही और मजबूत पाकिस्तान भारत के लिए मुसीबत है। दोनों पक्षों के आधार हैं और इसमें इनकार नहीं किया जा सकता कि तालिबानियों के नियंत्रण में पाकिस्तान ज्यादा घातक होगा। लोकतांत्रिक सरकारें और यहाँ तक कि सैनिक तानाशाह भी एक सीमा के भीतर ही भारत का नुकसान करते हैं। कश्मीर में आतंक फैलाने का काम इस्लामाबाद में बैठी हर तरह की शक्ति करती आई है। भारत पर होने वाले आतंकवादी हमलों को उकसाने और समर्थन देने का काम भी सबने किया है।

लेकिन जब आतंकी ही सत्ता में बैठे हों तो फिर युद्ध की संभावना प्रबल हो जाएगी और परमाणु अस्त्रों का इस्तेमाल होने का दु:स्वप्न हकीकत बन सकता है। शायद इसीलिए पाकिस्तान का एक रहना और स्थिर रहना भारत के हित में गिनाया जाता है। यही खतरा है जिसके चलते जब भी पाकिस्तान अस्थिर होता है, दिल्ली में चिंता की लकीरें उभरने लगती हैं। दिक्कत यह है कि भारत जिस पर पाकिस्तान की गतिविधियों का सीधा असर होता है, सिर्फ नजर रख सकता है, कुछ कर नहीं सकता।

3. कोपेनहेगन में पर्यावरण संबंधी विश्व सम्मेलन हुआ। इसकी सफलता व असफलता के संबंध में संपादकीय लिखिए।

लक्ष्य में परिवर्तन

दो महीने पहले टाइम्स ऑफ इंडिया ने खबर दी थी कि पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश का सुझाव है कि भारत क्योटो समझौते से छुटकारा पाए. जी-77 से अपने आपको अलग करे और नए समझौते के तहत ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन में कटौती का वादा करे और वह भी वित्त व तकनीक की काउंटर गारंटी के बिना। अखबार के मुताबिक रमेश ने तर्क दिया था कि क्योटो समझौते के तहत उत्सर्जन में कटौती की जिम्मेदारी सिर्फ विकसित देशों की ही है। उन्होंने कहा कि अमेरिका से बेहतर तालमेल में भी इससे मदद मिलेगी। अखबार ने मंत्री को उद्धरित करते हुए लिखा-अमेरिका को केंद्र में लाने के लिए की जाने वाली पहल का हम निश्चित रूप से स्वागत करेंगे।

पिछले हफ्ते के आखिर में हुए कोपेनहेगन समझौते से संकेत मिलता है कि प्रधानमंत्री ने भारत के रुख में उस बदलाव को मोटे तौर पर स्वीकार कर लिया, जिसकी सिफारिश पर्यावरण मंत्री ने अक्टूबर में की थी। हालाँकि क्योटो समझौते को कबाड़ में नहीं डाला गया है, लेकिन निश्चित तौर पर इसे हल्का कर दिया गया है और हो सकता है कि मैक्सिको सिटी में होने वाली अगली सालाना बैठक में इससे छुटकारा पा लिया जाए। इसके साथ ही भारत जिसे एकपक्षीय उत्सर्जन कटौती कहता रहा है उस बाबत अब कोपेनहेगन सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय निगरानी पर सहमति जता दी है और जी-77 के सदस्य देशों को नाखुश कर दिया है। इस तरह से भारत ने अमेरिका को केंद्र में ला दिया है।

आप चाहे इसे मंजूर करते या नहीं यह मौलिक रूप से इस पर निर्भर करता है कि क्या इससे बेहतर नतीजे मुमकिन थे। आखिर किसके निर्देश पर लक्ष्य में बदलाव किया गया और यह विवाद से परे है कि भारत ने अमेरिका को और ज्यादा जमीन मुहैया कराई है।

दूसरी वास्तविकता यह है कि ऐसे समय में जब वैश्विक समस्या के लिए वैश्विक समाधान की जरूरत है तो फिर पराए व्यक्ति ने कार्रवाई का एजेंडा तय कर दिया। ज्यादा सहयोगी देश (मसलन यूरोपीय देश) भी शक्तिहीन मसलन अफ्रीकी देशों आदि के साथ खड़े हो गए। क्या किया जा सकता है और क्या नहीं उसने तय कर दिया जो चरम स्थिति अपना चुका है-मसलन अमेरिका और चीन। यह भविष्य में वैश्विक सहयोग की बाबत कमजोर संकेत है, यह कड़ा रुख अपनाने के लिए देशों को प्रोत्साहित करेगा। ऐसी चीजें दोहरे दौर की कारोबार वार्ता में नजर आएँगी।

4. रूस ने मृत्युदंड पर रोक लगा दी। विश्व के अन्य देशों को क्या करना चाहिए। इस पर संपादकीय लिखिए।

रूस ने की मृत्युदंड पर रोक की पहल

रूस ने ऐसा करके कई लोकतांत्रिक देशों की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशीलता दिखाई है। मृत्युदंड पर रोक के एक दशक पुराने आदेश को रूस की संविधान अदालत द्वारा विस्तार देना मौत की सजा को समाप्त करने के वैश्विक रुझान को अभिव्यक्त करता है। रूस की न्यायपालिका की यह पहल 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पारित उस प्रस्ताव के साथ दृढ़ता से खड़ा होना है, जिसमें उन देशों से मृत्युदंड को लबित करने का आहवान किया गया है। जहाँ कानून की किताबों में अब भी इस सजा का प्रावधान है। रूस के इस कदम से मानवाधिकार पर यूरोपीय सम्मेलन के प्रोटोकॉल 6 के अनुमोदन में मदद मिलनी चाहिए। यूरोप परिषद की सदस्यता पाने के लिए सदस्य देशों को मृत्युदंड के बर्बर प्रावधान का उन्मूलन करना अनिवार्य है।

इसके लिए आपराधिक संहिता में से मृत्युदंड के प्रावधान को पूरी तरह से हटाना होगा। हालाँकि हाल ही में चेचेन्या ने जिस अदालती प्रक्रिया को अपनाया है, उसके तहत किसी दोषी को मृत्युदंड दिया जा सकता है। इसके मद्देनजर आशंका है कि अन्य रूसी प्रांत भी इसका अनुसरण कर सकते हैं। रूसी संघ में अंतिम बार 1996 में मृत्युदंड की सूजा पर अमल किया गया था। हाल की घटना अच्छा शगुन है। ऐसा करके रूस ने उन लोकतांत्रिक देशों की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशीलता दिखाई है, जहाँ मृत्युदंड के प्रावधान को बनाए रखा गया है। अब वक्त आ गया है कि सभी सभ्य समाज अपनी कानून की किताबों को उदार मूल्यों के अनुरूप बनाएँ और मानवाधिकारों का सम्मान करें।

5. पत्रिका का संपादकीय

प्रिय पाठको,

भारतीय संस्कृति में षष्ठिपूर्ति का विशेष महत्व है। इस मौके पर विशेष आयोजन होते हैं और व्यक्ति की उपलब्धियों का लेखा-जोखा किया जाता है। आजादी की हीरक जयंती मनाते हुए लोग अपनी-अपनी तरह से 60 साल की उपलब्धियों का आकलन कर रहे हैं।

आशावादियों के चेहरे खिले हुए हैं। उनके पास आँकड़ों की चमक है। वे गर्व से बताते हैं कि हम ट्रिलियन क्लब के सदस्य बन चुके हैं, कि हमारी विकास दर लगभग 9 प्रतिशत तक पहुँच चुकी है, कि हमारा शेयर बाजार कुलाँचे ले रहा है और हमारे उद्योगपति विदेशी कंपनियों का धड़ाधड़ अधिग्रहण कर रहे हैं। हमारे आई. टी. विशेषज्ञों के दम पर सिलिकॉन वैली का करोबार चल रहा है। औसत आयु जो वर्ष 1951 में 33 थी, बढ़कर करीब 66 वर्ष हो गई है।

इसके बरक्स यथार्थवादी चिंतकों के पास भी दिखाने के लिए बहुत कुछ है। उनके पास आँकड़ों का अँधेरा है। इस अँधेरे में आत्महत्या करते किसान हैं, रिश्वत लेकर सवाल पूछते सांसद हैं, बंधुआ मजदूर हैं, माँ की कोख में मार दी जाती बेटियाँ हैं, दंगों में मरती मानवता है। वे ऐसे कोने दिखाते हैं जहाँ जातिवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद, फाँसीवाद जैसे कई वाद फल-फूल रहे हैं। दोनों पक्ष सही हैं, लेकिन कोई भी एक पक्ष भारत की पूरी तस्वीर पेश नहीं करता है। ऐसे में आजादी की हीरक जयंती पर राष्ट्र-चिंतन की दिशा क्या हो? इस सवाल पर विचार करते हुए हमें लगा कि बीते 60 साल की उपलब्धि यों-विफलताओं को आकलन करना ही काफी नहीं है।

इतिहास गर्व करने या शर्म करने के लिए ही नहीं होता, बल्कि सही मायने में यह सबक लेने के लिए होता है।

इतिहास से सबक लेकर वर्तमान की जमीन पर भविष्य की योजनाएँ तैयार की जाती हैं। ऐसे में राष्ट्र-चिंतन के 'कल, आज और कल' से बेहतर सूत्र-वाक्य क्या हो सकता है। भारत के भू-वर्तमान और भविष्य की एक मुकम्मल तस्वीर लोगों के सामने आ सके, इसके लिए हमने देश से ऐसे लोगों को चुना जो अपने-अपने क्षेत्र के महत्वपूर्ण लोग हैं और विषय का सटीक विश्लेषण कर सकते हैं। हैमारे आग्रह पर सबने जिस मनोयोन से भारत के 'कल, आज और कल' का आकलन किया है, उसे आप स्वयं महसूस करेंगे।

हमारी कोशिश यही है कि जीवन और समाज के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों का आकलन हो सके, पर आप जानते हैं कि भारत इतना विविधवर्णी है कि इसके एक-एक पहलू पर वृहद ग्रंथ रचे जा सकते हैं।

यह पत्रिका राष्ट्र के सम्मान में अर्पितु एक पुष्पगुच्छ है, जिसमें अतीत के रंग और वर्तमान के काँटों के बीच भविष्य की खुशबू है।

विशेष लेखन : स्वरूप और प्रकार

प्रश्न 1:

विशेष लेखन क्या है?

उत्तर –

वे लेखन जो किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया जाए, विशेष लेखन कहलाता है। हर जनसंचार माध्यम में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और पत्रकार भी अलग होते हैं।

प्रश्न 2:

बीट किसे कहते हैं?

उत्तर –

समाचार-पत्र या अन्य समाचार माध्यमों द्वारा संवाददाता को किसी क्षेत्र या विषय की दैनिक रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी बीट होती है। यह रिपोर्टर का कार्यक्षेत्र निश्चित करता है। बीट रिपोर्टिंग के लिए उस विषय की गहरी जानकारी, उससे संबंधित भाषा व शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

प्रश्न 3:

बीट रिपोटिंग व विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर बताइए।

उत्तर –

बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र व विषय की जानकारी होनी चाहिए। रिपोर्टर आमतौर पर बीट से जुड़ी सामान्य खबरें लिखता है, जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में रिपोर्टर को विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण किया जाता है।

प्रश्न 4:

विशेष लेखन की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –

विशेष लेखन का संबंध तकनीकी रूप से जटिल क्षेत्रों से होता है और इन क्षेत्रों से जुड़ी घटनाएँ समझना आम पाठक के लिए मुश्किल होता है। अत: आम पाठक के लिए विशेष लेखन की जरूरत होती है। इस लेखन में विषय विशेष की तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। इसकी कोई निश्चित शैली नहीं होती है। विशेष लेख किसी भी शैली में लिखा जाए, परंतु उसे आम लेख से अलग होना चाहिए।

प्रश्न 5:

विशेष लेखन के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर –

अर्थ व्यापार, खेल, कृषि, विदेश, रक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, अपराध, फिल्म–मनोरंजन, सामाजिक मुद्दे आदि।

प्रश्न 6:

पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ बताइए।

उत्तर –

इसका अर्थ है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं व मुद्दों की व्याख्या पाठक की समझ के अनुरूप की जा सके।

प्रश्न 7:

पत्रकारीय विशेषज्ञता कैसे हासिल की जा सकती है?

उत्तर –

पत्रकारीय विशेषज्ञता हासिल करने के तरीके निम्नलिखित हैं

1. इच्छित क्षेत्र में रुचि होनी चाहिए।
2. रुचि के विषय में संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।
3. विशेष लेखन के लिए खुद को अपडेट करना जरूरी है।
4. विषय क्षेत्र से संबंधित खबरें-घटनाएँ, लेख आदि का संग्रह उचित तरीके से करना चाहिए।
5. विषय क्षेत्र से जुड़े सरकारी संस्थान, लेखक, विशेषज्ञ आदि के पते व फोन नंबर रखने चाहिए।

प्रश्न 8:

आर्थिक पत्रकारिता का महत्व बढ़ने का क्या कारण है?

उत्तर –

देश की राजनीति व अर्थव्यवस्था का गहरा रिश्ता है। आर्थिक उदारीकरण और खुली अर्थव्यवस्था लागू होने से देश की राजनीति में भी बदलाव आया है। अर्थनीति भी राजनीति को प्रभावित करने लगी है। अत: आज के समय में आर्थिक पत्रकारिता का महत्व बढ़ रहा है।

प्रश्न 9:

खेल पत्रकारिता के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर –

खेल पत्रकारिता के लिए पत्रकार को खेल की तकनीक, उसके नियमों, बारीकियों व उससे जुड़ी तमाम बातों से भलीभाँति परिचित होना चाहिए। संबंधित खेल की जानकारी होनी चाहिए तथा खेल के कीर्तिमानों का ज्ञान होना चाहिए। खेल की रिपोर्टिंग में ऊर्जा, जोश, रोमांच व उत्साह दिखना चाहिए। खेल की खबर उल्टा पिरामिड शैली में शुरू होती है, परंतु दूसरे पैराग्राफ में वह घटनानुक्रम शैली में चली जाती है।

प्रश्न 10:

विशेष लेखन के लिए सूचनाओं के स्रोत कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर –

विशेष लेखन के लिए सूचनाओं के स्रोत निम्नलिखित होते हैं

1. मंत्रालय के सूत्र
2. प्रेस कांफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ
3. साक्षात्कार
4. सर्वे व जाँच समितियों की रिपोर्ट्स
5. उस क्षेत्र में सक्रिय संस्थाएँ और व्यक्ति
6. संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यक्ति
7. इंटरनेट और दूसरे संचार माध्यम
8. स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

अन्य लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

प्रिंट माध्यम से आप क्या समझते हैं?

उत्तर –

प्रिंट माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे प्राचीन हैं। इसमें पुस्तकें, पत्रिकाएँ समाचार-पत्र आदि होते हैं।

प्रश्न 2:

हिंदी में प्रकाशित होने वाले किन्हीं चार राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम लिखिए।

उत्तर –

दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, पंजाब केसरी, हरिभूमि।

प्रश्न 3:

अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है?

उत्तर –

वह संवाददाता जो किसी समाचार-पत्र में निश्चित मानदेय पर अल्पकाल के लिए कार्य करता है, उसे अंशकालिक संवाददाता कहा जाता है।

प्रश्न 4:

छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसको है?

उत्तर –

छापेखाने के आविष्कार का श्रेय गुटेनबर्ग को है।

प्रश्न 5:

मुद्रित माध्यमों की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –

मुद्रित माध्यमों की दो विशेषताएँ हैं-स्थायित्व तथा लिखित भाषा का विस्तार।

प्रश्न 6:

पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में अंतर बताइए।

उत्तर –

पत्रकारीय लेखन में पाठकों, दर्शकों व श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया जाता है, जबकि साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में चिंतन के द्वारा नई रचना का उद्भव होता है।

प्रश्न 7:

जनसंचार के मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

उत्तर –

मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता इसके स्थायित्व की है।

प्रश्न 8:

उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है?

उत्तर –

यह समाचार लिखने की वह शैली है, जिसमें पहले इंट्रो, मध्य में बॉडी तथा अंत में समाचार होता है। इसमें महत्वपूर्ण तथ्य इंट्रो में आ जाते हैं।

प्रश्न 9:

पत्रकार की लेखन-शैली की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –

पत्रकार की लेखन-शैली में तथ्य, भाषा की सहजता व सरलता होनी चाहिए।

प्रश्न 10:

मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत आने वाले किन्हीं दो माध्यमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –

समाचार-पत्र, पत्रिका, पुस्तकें।

प्रश्न 11:

समाचार-लेखन के 'छह ककार' कौन-से हैं?

उत्तर –

क्या, कौन, कहाँ, कब, कैसे और क्यों-छह ककार हैं।

प्रश्न 12:

फ्रीलांसर पत्रकार किसको कहते हैं?

उत्तर –

वे पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों में लिखते हैं, फ्रीलांसर पत्रकार कहलाते हैं।

प्रश्न 13:

स्तंभ लेखन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर –

महत्वपूर्ण लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को स्तंभ लेखन कहते हैं। इसमें लेखक के निजी विचार होते हैं।

प्रश्न 14:

संपादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं दिया जाता?

उत्तर –

संपादकीय किसी समाचार-पत्र की विचारधारा को व्यक्त करता है। यह व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण को व्यक्त नहीं करता। इसी कारण संपादकीय में लेखक का नाम नहीं दिया जाता।

प्रश्न 15:

संपादकीय लेखन क्या होता है?

उत्तर –

वह लेख जो किसी घटना, समस्या या मुद्दे पर अखबार की राय व्यक्त करता है, संपादकीय लेखन कहलाता है।

प्रश्न 16:

संसार में मुद्रण की शुरूआत कहाँ से हुई?

उत्तर –

चीन से।

प्रश्न 17:

खोजी पत्रकारिता का क्या आशय है?

उत्तर –

वह पत्रकारिता जो ऐसे तथ्यों की छानबीन करती है कि जिन्हें दबाने या छिपाने का प्रयास किया जाता है, खोजी पत्रकारिता कहलाती है।

प्रश्न 18:

हिंदी में प्रसारण करने वाले किन्हीं दो समाचार चैनलों के नाम लिखिए।

उत्तर –

आज तक, जी न्यूज, स्टार न्यूज।

प्रश्न 19:

विशेषीकृत रिपोर्टिंग की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर –

इस रिपोर्टिंग में विशेष क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों तथा समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके उसे पाठकों/दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 20:

संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी की एक विशेषता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –

संचार माध्यमों में आम बोल-चाल की हिंदी का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 21:

हिंदी में प्रकाशित होने वाले दो दैनिक समाचार-पत्रों तथा दो समाचार-केंद्रित पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर –

दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण—दैनिक समाचार–पत्र इंडिया टुडे, आउट लुक-समाचार पत्रिका।

प्रश्न 22:

जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम क्या है?

उत्तर –

प्रिंट माध्यम।

प्रश्न 23:

मुद्रित माध्यमों को स्थायी माध्यम क्यों कहा गया है?

उत्तर –

इस माध्यम में छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इस कारण इसे स्थायी माध्यम कहा गया है।

प्रश्न 24:

रिपोर्ट लेखन की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर –

सरल सहज व आम बोलचाल की भाषा।

प्रश्न 25:

भारत में पहला छापाखाना कहाँ और कब खुला?

उत्तर –

भारत में पहला छापाखाना गोवा में 1550 ई. में खुला।

प्रश्न 26:

'एंकर बाइट' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर –

इसका अर्थ है-किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाकर व सुनाकर खबर को प्रमाणिकता प्रदान करना।

प्रश्न 27:

पत्रकारिता में बीट किसे कहते हैं?

उत्तर –

समाचार – पत्र अपने अनेसंवादाताओं को उनकी दिलचस्पी व ज्ञान के अनुरूप काम का विभाजन करता है। इसे बीट कहते हैं।

प्रश्न 28:

विशेष लेखन के दो प्रकार बताइए।

उत्तर –

खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिपोर्ट।

प्रश्न 29:

समाचार और फीचर में क्या अंतर होता है?

उत्तर –

समाचार में पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम के बारे में जानकारी दी जाती है, परंतु फीचर में पाठक का मनोरंजन करते हुए उन्हें शिक्षित किया जाता है।

प्रश्न 30:

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम प्रिंट माध्यम की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय क्यों है?

उत्तर –

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दिन में 24 घंटे चित्र व ध्वनि के माध्यम से सूचना को रोचक ढंग से प्रसारित करते हैं, जबकि प्रिंट माध्यम के पास समय व स्थान का बंधन होता है। अत: इलेक्ट्रॉनिक माध्यम अधिक लोकप्रिय है।

प्रश्न 31:

पीत पत्रकारिता का क्या आशय है?

उत्तर –

पीत पत्रकारिता में सनसनी फैलाने के लिए अफवाहें, व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोपों, भंडाफोड़ आदि को प्रकाशित किया जाता है।

प्रश्न 32:

इंट्रो से आप क्या समझते हैं?

उत्तर –

यह समाचार का प्रारंभिक भाग है जिसमें खबर की मुख्य बातें दो-तीन पंक्तियों में बताई जाती हैं।

प्रश्न 33:

फ्लैश किसे कहते हैं?

उत्तर –

फ्लैश वह खबर है जो कम-से-कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल सिर्फ सूचना के रूप में दी जाती है।

फीचर, रिपोर्ट, आलेख लेखन

(अ) फीचर लेखन

फीचर का स्वरूप

समकालीन घटना या किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फीचर कहा जाता है। इसमें मनोरंजक ढंग से तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। इसके संवादों में गहराई होती है। यह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक व आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

फीचर में विस्तार की अपेक्षा होती है। इसकी अपनी एक अलग शैली होती है। एक विषय पर लिखा गया फीचर प्रस्तुति विविधता के कारण अलग अंदाज प्रस्तुत करता है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का समावेश हो सकता है। इसमें तथ्य, कथन व कल्पना का उपयोग किया जा सकता है। फीचर में आँकड़ें, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर व समाचार में अंतर

1. फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है, जबकि समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।
2. फीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है। इसकी शैली कथात्मक होती है।
3. फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।
4. फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 250 शब्दों से लेकर 500 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।
5. फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

फीचर के प्रकार

फीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. समाचार फीचर
2. घटनापरक फीचर
3. व्यक्तिपरक फीचर
4. लोकाभिरुचि फीचर
5. सांस्कृतिक फीचर
6. साहित्यिक फीचर
7. विश्लेषण फीचर
8. विज्ञान फीचर

फीचर संबंधी मुख्य बातें

1. फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी है।
2. फीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बतलाना चाहिए।

3. कहानी को बताने का अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करे कि वे खुद देख और सुन रहे हैं।
4. फीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।
5. फीचर शोध रिपोर्ट नहीं है।
6. इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
7. फीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द ही सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।
8. फीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।
9. फीचर लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फार्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात् प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।
10. फीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।
11. पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

उदाहरण

1. 'सफलता और आत्मसम्मान' विषय पर फीचर लिखिए।

सफलता के लिए जरूरी है आत्मसम्मान

उतार और चढ़ाव जीवन के हिस्से हैं और यह स्वाभाविक भी है। इनमें खुद को प्रभावित न होने दें। सिचुएशन चाहे जितनी नेगेटिव हो, अपने बारे में हमेशा हाई ओपनियन रखें। आप देखेंगे कि जो भी करेंगे, उसमें आपको निश्चित ही सफलता मिलेगी। जिन लोगों की सेल्फ इमेज पुअर होती है, उनमें लो सेल्फ इस्टीम (आत्मसम्मान) की भावना होती है और यह आमतौर पर बचपन से ही निर्मित हो जाती है। जो लोग बचपन से ही बुराई से घिरे होते हैं, स्कूल या खेल में जिनसे कुछ बन नहीं पाता है, वे आमतौर पर आलोचना के शिकार होते हैं। इससे उनमें पूअर सेल्फ इस्टीम की भावना घर कर जाती है।

कमजोर की बजाए ताकत पर दें ध्यान

सबसे पहले आपको बिना किसी शर्त के खुद से प्यार करना होगा। पिछली गतिविधियों को सोचकर अपने-आप को कोसने की बजाय माफ कर दीजिए या उसे भूल जाइए। अपनी कमजोरी की बजाए अपनी ताकत पर ध्यान दीजिए। याद रखें कि सभी में कुछ-न-कुछ कमजोरियाँ होती हैं। अपने-आप से अच्छी तरह से बातें करना आरंभ करें। आपकी उपलब्धियाँ चाहे जितनी छोटी क्यों न हों, उसे बड़ी मानें। प्रत्येक सफलता को सेलिब्रेट करें और अपनी एनर्जी का उपयोग करते हुए पॉजिटिवली सोचें।

नेगेटिव थिंकिग से दूर रहें

अपनी सेल्फ इस्टीम से पाई सफलता आपके पिछले निगेटिव एक्सपीरियंस को पीछे छोड़ देगी।'निगेटिव थिंकिंग का । आपकी जिंदगी में कोई काम नहीं है। अपने आपको पोषित करने का अभियान आरंभ करें। सबसे पहले हेल्थ से शुरूआत करें। अच्छी तरह से आराम करें, व्यायाम करें और इंपॉर्टेंट न्युट्रिएंट सप्लीमेंट लेना आरंभ कर दें। अपने बिजी लाइफ में एंज्वॉय और रिलेक्स करने के लिए समय निकालिए और कुछ अच्छी स्मृतियाँ बनाइए, जिसे याद करने पर आनंद का अहसास हो। डिफिकल्ट टास्क को हैंडल करने के लिए खुद को कॉम्प्लिमेंट दें, बजाए खुद को कोसने

के। अपने प्रति संवेदना दिखाएँ। अगर आप दूसरों को कुछ दे सकते हैं, तो फिर खुद को भी दे सकते हैं। आप इसके लिए डिजर्व करते हैं। सफलता के लिए अपनी केयर खुद करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सुने अपने अंदर की आवाज

खुद को संभावनाओं के संसार में उतारें। अपनी इच्छाओं के बारे में विचार करें। इसे भूल जाएँ कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं। अपनी इच्छाओं को पूरी करने के लिए कार्य करें। जब आप खुद को जज करने या क्रिटिसाइट करने के लिए अपने अंदर की आवाज को सुनना आरंभ करेंगे, तो अपने नेगेटिव थिंकिग को दूर कर पॉजिटिव एनर्जी लंकर सामने आएँगे।

अपनी क्षमताओं को पहचानें

ऐसे स्थान, जहाँ सफलता की संभावना अधिक हो, वहाँ खुद को रखने की कोशिश करें। यह कल्पना करें कि आप सीढ़ी-दर-सीढ़ी सक्सेस की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। और जब ऐसा करते हुए खुद एंज्वॉय करेंगे तो आपके लिए लिए सक्सेस का एक्सपीरियंस भी अच्छा रहेगा। अपने गुणों पर जोर देकर क्षमता को बढ़ाएँ और उस बात पर फोकस करें कि आप क्या हासिल कर सकते हैं। अपनी सीमाओं को एक्सेप्ट करना भी सीखें।

2. 'दक्षिण का कश्मीर-तिरुवनंतपुरम् विषय पर फीचर लिखिए।

दक्षिण का कश्मीर-तिरुवनंतपुरम्

दक्षिण भारत में तिरुवनंतपुरम् को प्राकृतिक सुंदरता के कारण दक्षिण का कश्मीर कहा जाता है। केरल की इस सुंदर राजधानी को इसकी प्राकृतिक सुंदरता, सुनहरे समुद्र तटों और हरे-भरे नारियल के पेड़ों के कारण जाना जाता है। आपको भी ले चलें इस बार तिरुवनंतपुरम् की सैर पर. भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित तिरुवनंतपुरम् (जिसे पहले त्रिवेंद्रम के नाम से जाना जाता था) को अरब सागर ने घेर रखा है। इसके बारे में कहा जाता है कि पौराणिक योद्धा भगवान परशुराम ने अपना फरसा फेंका था जो कि यहाँ आकर गिरा था। स्थानीय भाषा में त्रिवेंद्रम का अर्थ होता है, कभी न खत्म होने वाला साँप।

एक ओर जहाँ यह शहर अपनी प्रकृतिक सुंदरता और औपनिवेशिक पहचान को बनाए रखने के लिए जाना जाता है, वहीं दूसरी ओर इसे मंदिरों के कारण पहचाना जाता है। ये सारे मंदिर बहुत ही लोकप्रिय हैं। इन सबमें पद्मनाभस्वामी का मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। शाब्दिक अर्थ में पद्मनाभस्वामी का अर्थ है-कमल की सी नाभि वाले भगवान का मदिर। तिरुवनंतपुरम् के पास ही जनार्दन का भी मंदिर है। यहाँ से 25,730 किलोमीटर दूर शिवगिरि का मंदिर है जिसे एक महान समाज सुधारक नारायण गुरु ने स्थापित किया था। उन्हें एक धर्मनिरपेक्ष समाज सुधारक के तौर पर याद किया जाता है। शहर के बीचोंबीच एक पालयम स्थित है जहाँ एक मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर को एक साथ देखा जा सकता है।

शहर के महात्मा गाँधी मार्ग पर जाकर कोई भी देख सकता है कि आधुनिक तिरुवनंतपुरम् भी कितना पुराना है। इस इलाके में आज भी ब्रिटिश युग की छाप देखी जा सकती है। इस मार्ग पर दोनों ओर औपनिवेशिक युग की शानदार हमरतें मौजूद हैं पब्लिक लाइब्रेरी, कॉलेज आफ फ़ाईन आर्ट्स, विक्टोरिया जुबिली टाउनहाल और सचिवालय इसी मार्ग पर स्थित हैं।

इनके अलावा नेपियर म्यूजियम एक असाधारण इमारत है, जिसकी वास्तु-शैली में भारतीय और यूरोपीय तरीकों का मेल साफ दिखता है। यह म्यूजियम (संग्रहालय) काफी बड़े क्षेत्र में फैला है जिसमें श्रीचित्र गैलरी, चिड़ियाघर और वनस्पति उद्यान हैं। पर संग्रहालय में सबसे ज्यादा देखने

लायक बात राजा रवि वर्मा के चित्र हैं। राजा रवि वर्मा का मुख्य कार्यकाल वर्ष 1848-1909 के बीच का रहा है। उनके चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता हिंदू महाकाव्यों और धर्मग्रंथों पर बनाए गए चित्र हैं।

तिरुवनंतपुरम् कुछ वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थानों का भी केंद्र है, जिनमें विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, सेंटर फॉर अर्थसाइंस स्टडीज और एक ऐसा संग्रहालय है जो कि विज्ञान और प्रोद्योगिकी के सभी पहलुओं से साक्षात्कार कराता है। भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान के प्रारंभिक प्रयासों का केंद्र थुबा यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है।

शहर का पुराना बाजार क्षेत्र चाला बाजार अभी भी अपनी परंपरागत मोहकता के लिए जाना जाता है। वाणकोर रियासत के दौरान जेवरात, कपड़े की दुकानें, ताजा फलों और सब्जियों की दुकानें और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यहीं एक स्थान पर मिल जाया करती थीं।

तिरुवनंतपुरम् दक्षिण भारत का बड़ा पर्यटन केंद्र है और देश के अन्य किसी शहर में इतनी प्राकृतिक सुंदरता, इतने अधिक मंदिर और सुंदर भवनों का मिलना कठिन है। यहाँ पहुँचना भी मुश्किल नहीं है। केरल राज्य की यह राजधानी जल, थल और वायु मार्ग से देश के सभी क्षेत्रों से जुड़ी है।

3. 'बस्ते का बढ़ता बोझ' विषय पर फीचर लिखिए।

बस्ते का बढ़ता बोझ

आज जिस भी गली, मोहल्ले या चौराहे पर सुबह के समय देखिए, हर जगह छोटे-छोटे बच्चों के कंधों पर भारी बस्ते लदे हुए दिखाई देते हैं। कुछ बच्चों से बड़ा उनका बस्ता होता है। यह दृश्य देखकर आज की शिक्षा-व्यवस्था की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिहन लग जाता है। क्या शिक्षा नीति के सूत्रधार बच्चों को किताबों के बोझ से लाद देना चाहते हैं। वस्तुत: इस मामले पर खोजबीन की जाए तो इसके लिए समाज अधिक जिम्मेदार है। सरकारी स्तर पर छोटी कक्षाओं में बहुत कम पुस्तकें होती हैं, परंतु निजी स्तर के स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के नाम पर बच्चों व उनके माता-पिता का शोषण किया जाता है। हर स्कूल विभिन्न विषयों की पुस्तकें लगा देते हैं। ताकि वे अभिभावकों को यह बता सकें कि वे बच्चे को हर विषय में पारंगत कर रहे हैं और भविष्य में वह हर क्षेत्र में कमाल दिखा सकेगा। अभिभावक भी सुपरिणाम की चाह में यह बोझ झेल लेते हैं, परंतु इसके कारण बच्चे का बचपन समाप्त हो जाता है। वे हर समय पुस्तकों के ढेर में दबा रहता है। खेलने का समय उसे नहीं दिया जाता। अधिक बोझ के कारण उसका शारीरिक विकास भी कम होता है। छोटे-छोटे बच्चों के नाजुक कंधों पर लदे भारी-भारी बस्ते उनकी बेबसी को ही प्रकट करते हैं। इस अनचाहे बोझ का वजन विद्यार्थियों पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

4. 'महानगर की ओर पलायन की समस्या' विषय पर फीचर लिखिए।

महानगर की ओर पलायन की समस्या

महानगर सपनों की तरह है मनुष्य को ऐसा लगता है मानो स्वर्ग वही है। हर व्यक्ति ऐसे स्वर्ग की ओर खींचा चला आता है। चमक-दमक, आकाश छूती इमारतें, सब कुछ पा लेने की चाह, मनोरंजन आदि न जाने बहुत कुछ जिन्हें पाने के लिए गाँव का सुदामा'लालायित हो उठता है और चल पढ़ता है महानगर की ओर। आज महानगरों में भीड़ बढ़ रही है। हर ट्रेन, बस में आप यह देख सकते हैं। गाँव यहाँ तक कि कस्बे का व्यक्ति भी अपनी दरिद्रता को समाप्त करने के ख्वाब लिए महानगरों की तरफ चल पड़ता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार के अधिकांश अवसर महानगरों में ही मिलते

हैं। इस कारण गाँव व कस्बे से शिक्षित व्यक्ति शहरों की तरफ भाग रहा है। इस भाग-दौड़ में वह अपनों का साथ भी छोड़ने को तैयार हो जाता है। दूसरे, अच्छी चिकित्सा सुविधा, परिवहन के साधन, मनोरंजन के अनेक तरीके, बिजली-पानी की कमी न होना आदि अनेक आकर्षक महानगर की ओर पलायन को बढ़ा रहे हैं। महानगरों की व्यवस्था भी चरमराने लगी है। यहाँ के साधन भी भीड़ के सामने बौने हो जाते हैं। महानगरों का जीवन एक ओर आकर्षित करता है तो दूसरी ओर यह अभिशाप से कम नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह विकास कोंगों में भ करे इना क्षेत्र में शिया स्वास्य पिरहान रोग आद की सुवथा हनेस पालन कि सकता हैं।

5. 'फुटपाथ पर सोते लोग' विषय पर फीचर लिखिए।

फुटपाथ पर सोते लोग

महानगरों में सुबह सैर पर निकलिए, एक तरफ आप स्वास्थ्य लाभ करेंगे तो दूसरी तरफ आपको फुटपाथ पर सोते हुए लोग नजर आएँगे। महानगर जिसे विकास का आधार-स्तंभ माना जाता है, वहीं पर मानव-मानव के बीच इतना अंतर है। यहाँ पर दो तरह के लोग हैं- एक उच्च वर्ग जिसके पास उद्योग, सत्ता, धन है, जो हर सुख भोगता है, जिसके पास बड़े-बड़े भवन हैं तथा जो महानगर के जीवनचक्र पर प्रभावी है। दूसरा वर्ग वह है जो अमीर बनने की चाह में गाँव छोड़कर आता है तथा यहाँ आकर फुटपाथ पर सोने के लिए मजबूर हो जाता है। इसका कारण उसकी सीमित आर्थिक क्षमता है। महँगाई, गरीबी आदि के कारण इन लोगों को भोजन ही मुश्किल से नसीब होता है। घर इनके लिए एक सपना होता है। इस सपने को पूरा करने के लिए अकसर छला जाता है यह वर्ग। सरकारी नीतियाँ भी इस विषमता के लिए दोषी हैं। सरकार की तमाम योजनाएँ भ्रष्टाचार के मुँह में चली जाती है और गरीब सुविधाओं की बाट जोहता रहता है।

6. 'आतंकवाद की समस्या' या 'आतंकवाद का घिनौना चेहरा' विषय पर फीचर लिखिए।

आतंकवाद की समस्या या आतंकवाद का धिनौना चेहरा

सुबह अखबार खोलिए-कश्मीर में चार मरे, मुंबई में बम फटा, दो मरे, ट्रेन में विस्फोट। इन खबरों से भारत का आदमी सुबह-सुबह साक्षात्कार करता है। उसे लगता है कि देश में कहीं शांति नहीं है। न चाहते हुए भी व आतंक के फोबिया से ग्रस्त हो जाता है। आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या बन गया है। यह क्रूरतापूर्ण नरसंहार का एक रूप है। यह , 20 वीं सदी की देन है। आतंकवाद के उदय के अनेक कारण हैं। कहीं यह एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण का परिणाम है तो कहीं यह विदेशी राष्ट्रों की करतूत है। कुछ विकसित देश धर्म के नाम पर अविकसित देशों में लड़ाई करवाते हैं। आतंकवाद की जड़ में अशिक्षा, बेरोजगारी, पिछड़ापन है। सरकार का ध्यान ऐसे क्षेत्रों की तरफ तभी जाता है जब वहाँ हिंसक घटनाएँ शुरू हो जाती हैं। देश के कुछ राजनीतिक दल भी अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए आतंक के नाम पर दंगे करवाते रहते हैं। इस समस्या को सामूहिक प्रयासों से ही समाप्त किया जा सकता है। आतंकवादी भय का माहौल पैदा करके अपने उद्देश्यों में सफल होते हैं। जनता को चाहिए कि वह ऐसे तत्वों का डटकर मुकाबला करें। आतंक से संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए। सरकार के भी ऐसे क्षेत्रों में विकास योजनाएँ शुरू करनी चाहिए ताकि इन क्षेत्रों के युवक गरीबी के कारण गलत हाथों का खिलौना न बने।

7. 'चुनावी वायदे' विषय पर फीचर लिखिए।

चुनावी वायदे

'अगर हम जीते तो बेरोजगारी भत्ता दो हजार रुपये होगा।"

"किसानों को बिजली मुफ्त, पानी मुफ्त।"

"बूढ़ों की पेंशन डबल"

जब भी चुनाव आते हैं तो ऐसे नारों से दीवारें रंग दी जाती हैं। अखबार हो, टी०वी० हो, रेडियो हो या अन्य कोई साधन, हर जगह मतदाताओं को अपनी तरफ खींचने के लिए चुनावी वायदे किए जाते हैं। भारत एक लोकतांत्रिक देश है। यहाँ हर पाँच वर्ष बाद चुनाव होते हैं तथा सरकार चुनने का कार्य संपन्न किया जाता है। चुनावी बिगुल बजते ही हर राजनीतिक दल अपनी नीतियों की घोषणा करता है। वह जनता को अनेक लोकलुभावने नारे देता है। जगह-जगह रैलियाँ की जाती हैं। भाड़े की भीड़ से जनता को दिखाया जाता है कि उनके साथ जनसमर्थन बहुत ज्यादा है। उन्हें अपने-अपने क्षेत्र की समस्याओं का पता होता है। चुनाव-प्रचार के दौरान वे इन्हीं समस्याओं को मुद्दा बनाते हैं तथा सत्ता में आने के बाद इन्हें सुलझाने का वायदा करते हैं। चुनाव होने के बाद नेताओं को न जनता की याद आती है और न ही अपने वायदे की, फिर वे अपने कल्याण में जुट जाते हैं। वस्तुत: चुनावी वायदे कागज के फूलों के समान हैं जो कभी खुशबू नहीं देते। ये केवल चुनाव जीतने के लिए किए जाते हैं। इनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता। अत: जनता को नेताओं के वायदों पर यकीन नहीं करना चाहिए तथा विवेक तथा देशहित के मद्देनजर अपने मत का प्रयोग करना चाहिए।

8. 'सर्दी में पानी की जरूरत' विषय पर एक फीचर तैयार कीजिए।

बिना प्यास के भी पीएँ पानी

सर्दी के मौसम में वैसे तो सब कुछ हजम हो जाता है, इसलिए जो मर्जी खाएँ। इसके अलावा सर्दी के मौसम में पानी पीना शरीर के लिए बहुत जरूरी होता है। गर्मी के दिनों में तो बार-बार प्यास लगने पर व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में पानी पी लेता है, लेकिन सर्दी के मौसम में वह इस चीज को नजरअंदाज कर देता है। ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि मौसम चाहे सर्दी का हो या फिर गर्मी का, शरीर को पानी की जरूरत होती है। जब तक शरीर को पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलेगा. तब तक शरीर का विकास भी सही नहीं हो पाएगा। माना कि सर्दी में प्यास नहीं लगती, लेकिन हमें बिना प्यास के भी पानी पीना चाहिए। पानी पीने से एक तो शरीर की अंदर से सफाई होती रहती है। इसके अलावा पथरी की शिकायत भी अधिक पानी पीने से दूर हो जाती है। पानी पीने से शरीर की पाचन-शक्ति भी सही बनी रहती है तथा पाचन रसों का स्राव भी जरूरत के अनुसार होता रहता है। बिना पानी के शरीर अंदर से सूख जाता है, जिससे शारीरिक क्रियाओं में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है। विज्ञान में पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का मिश्रण माना गया है और ऑक्सीजन हमारे जीवन के लिए सबसे जरूरी गैस है। इसी वजह से पानी को भी शरीर के लिए जरूरी माना गया है, चाहे सर्दी हो या फिर गर्मी।

9. 'बच्चों को प्रोत्साहन' विषय पर एक फीचर लिखिए।

अच्छे काम पर बच्चों को करें एप्रिशिएट

हर कोई गलतियों से सबक लेता है, जब गलती ही अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करती है तो बच्चों को भी गलती करने पर दोबारा अच्छे कार्य के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। अच्छा काम करने पर बच्चों को एप्रिशिएट करना जरूरी है, जब हम बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे, तो वे आगे भी बेहतर करने को उत्सुक होंगे। लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल के चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. तनुज के

मुताबिक आम तौर पर दो वर्ष के बच्चे का 90 प्रतिशत दिमाग सीखने समझने के लिए तैयार हो जाता है और पाँच वर्ष तक वह पूर्ण रूप से सीखने, बोलने लायक हो जाता है। यही वह उम्र होती है, जब बच्चा तेजी से सीखता है। ऐसे में माहौल भी इस तरह का हो कि बच्चा अच्छा सीखे। गलती करने पर यदि प्यार से समझाया जाए तो वह उसे समझेगा। उसे गलत करने पर टोकना जरूरी हो जाता है। वरना वह गलती को दोहराता रहेगा। बच्चों को बेहतर करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। डॉ. तनुज कहते हैं कि बच्चों को यह नहीं पता होता है कि वे जो कर रहे हैं, वह सही या गलत। उसे बताया जाए कि जो उसने किया है, वह गलत है, क्योंकि जब तक बच्चों को बताया नहीं जाएगा, उन्हें गलती के बारे में पता नहीं चलेगा। यदि एक बार उसकी गलती के बाबत उसे बताते हैं तो वह दोबारा नहीं करेगा। दूसरे बच्चों के सामने व्यवहार वैसा ही हो, जैसा हम खुद के लिए अपेक्षा करते हैं। बच्चों को प्यार दुलार की ज्यादा जरूरत होती है।

(ब) रिपोर्ट लेखन

रिपोर्ट-किसी योजना, परियोजना या कार्य के नियोजन एवं कार्यन्वयन के नियोजन के पश्चात् उसके ब्यौरे के प्रस्तुतीकरण की रिपोर्ट कहते हैं।

रिपोर्ट किसी घटना अथवा समारोह की भी होती है। आजकल यह रेडियो, टीवी तथा अखबार की विशिष्ट विधा है।

रिपोर्ट के गुण

रिपोर्ट का आकार संक्षिप्त होना चाहिए। उसमें निष्पक्षता का भाव बेहद जरूरी है। उसमें पूर्णता व संतुलन होना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट

किसी विषय पर गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर बनने वाली रिपोर्टों को विशेष रिपोर्ट कहते हैं। इन्हें तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है। उससे संबंधित तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण से उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों का स्पष्ट किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार

ये कई प्रकार की होती हैं जो निम्नलिखित हैं-

1. खोजी रिपोर्ट-इसमें रिपोर्टर मौलिक शोध व छानबीन के जरिए ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले उपलब्ध नहीं थीं। उसका प्रयोग आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।
2. इन-डेप्थ रिपोर्ट-इसमें सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। छानबीन के आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।
3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट-इसमें किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर जोर दिया जाता है।
4. विवरणात्मक रिपोर्ट-इसमें किसी घटना या समस्या का विस्तृत और बारीक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट लेखन की शैली

सामान्यत: विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है, परंतु कई बार इन्हें फीचर शैली में भी लिखा जाता है। इस तरह की रिपोर्ट आमतौर पर समाचार से बड़ी होती है, इसलिए पाठक की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फीचर दोनों शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। यदि रिपोर्ट बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध करके कई दिन तक किस्तों में छापा जाता है।

उदाहरण

1. देश के महानगरों में पानी की गंभीर समस्या है। इसके कारणों के बारे में रिपोर्ट तैयार कीजिए।

...बिन पानी सब सुन

श्रीलता मेनन

नई दिल्ली, 20 दिसंबर

देश के सबसे अमीर स्थानीय निकाय बृहनमुबई नगर निगम (बीएमसी) को भी देश की आर्थिक राजधानी के बाशिंदों को पानी देने में हाथ तंग करना पड़ रहा है। बीएमसी पहले ही पानी की आपूर्ति में 15 फीसदी की कटौती कर चुका है और इस हफ्ते इस बात पर फैसला लेगा कि मुंबईवालों को हफ्ते के सभी दिन पानी दिया जाए या किसी एक दिन उससे महरूम रखा जाए। इस साल बारिश की बेरुखी से केवल मुंबई का हाल ही बेहाल नहीं है, बल्कि देश के लगभग सभी प्रमुख शहरों में इस दफे पानी का रोना रोया जा रहा है।

शहरों का आकार जैसे-जैसे बड़ा हो रहा है पानी की उनकी जरूरत भी बढ़ती जा रही है। शहरों के स्थानीय प्रशासनों को पानी की लगातार बढ़ती माँग से तालमेल बिठने के लिए खासी मशक्कत करनी पड़ रही है। दिल्ली, भोपाल, चंडीगढ़, कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और बंगलुरू में से केवल बंगलुरू में ही हालात कुछ बेहतर है। इसकी सीधी सी वजह है वर्षा जल-संरक्षण के मामले में देश की यह आईटी राजधानी दूसरे शहरों के लिए मिसाल है। वहीं दूसरे शहरों में खास तौर से दिल्ली में बैठे जिम्मेदार लोग 'बाहरी लोगों के दबाव' को बदइंतजामी की वजह बताते हुए ठीकरा उनके सर फोड़ते हैं।

चेन्नई में अभी तक मीटर नहीं है। बारिश के पानी का इस्तेमाल करने के लिए मुंबई को अभी बंदोबस्त करना बाकी है। इन शहरों की नीतियों में भी पारदर्शिता की कमी झलकती है। बड़े शहरों में केवल बंगलुरू में ही 90 फीसदी मीटर काम कर रहे हैं, जबकि राष्ट्रीय राजधानी में केवल आधी आबादी की आपूर्ति ही मीटर के जरिए होती है। बीएमसी के अधिकारी कहते हैं कि निगम पानी की बर्बादी रोकने के लिए कदम उठा रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर कुछ होता नहीं नजर आ रहा है। देश में बड़े पैमाने पर भूजल का दोहन हो रहा है, लेकिन इंदौर को छोड़कर किसी अन्य शहर में भूजल के बेजा इस्तेमाल पर जुर्माना नहीं है। मध्य प्रदेश के इस प्रमुख वाणिज्यिक शहर में इस साल पानी के मामले में आपातकाल जैसे हालात हैं। पूरब के महानगर कोलकाता में भी पानी देने वाली हुगली नदी को नजरअंदाज किया जा रहा है।

2. खेती योग्य जमीन खराब होती जा रही है। इस संदर्भ में रिपोर्ट तैयार कीजिए।

... सरकार कब लेगी माटी की सुध

पंकज कुमार पांडेय,

नई दिल्ली, 15 सितंबर

खेती योग्य जमीन के लगातार घटते रकबे से खाद्य सुरक्षा को लेकर नयी चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। साथ ही, केंद्र की तमाम योजनाओं की सुस्त रफ़्तार और लापरवाही के कारण बंजर भूमि विकसित करके उसे खेती योग्य बनाने की मुहिम परवान नहीं चढ़ पा रही है। ग्रामीण विकास मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि अगर देश में खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य हासिल करना है तो सूखाग्रस्त और खराब भूमि को विकसित करने का काम तेजी से करना होगा। समिति ने बीते 20 वर्षों में बड़ी-बड़ी योजनाओं के नाम पर हजारों करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद देश में करीब 5.53 करोड़ हेक्टेयर भूमि बंजर बने रहने पर नाखुशी का इजहार किया है। योजनाओं की बदहाली को बयान करते हुए रिपोर्ट में बताया गया है कि एकीकृत बंजर भूमि विकास कार्यक्रम, सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम, मरुभूमि विकास कार्यक्रम व अन्य योजनाओं के लिए केंद्र ने 2013-18 के लिए 17205 करोड़ रुपये का इंतजाम किया है। इस क्रम में 30 अक्टूबर, 2009 तक कुल आवंटित राशि का 30 प्रतिशत ही खर्च हो पाया है। पैसा कहाँ जा रहा है? समिति ने इस बात पर भी आपत्ति जताई कि देश में भूमि स्रोत के लिए सातवीं योजना से अब तक करीब 12,000 करोड़ रुपये खर्च होने के बावजूद इसका आकलन नहीं किया गया कि इस राशि से कृषि और रोजगार में कितना रिटर्न मिला। हालाँकि समिति को तमाम रिपोर्टों के हवाले से बताया गया है कि वाटरशेड प्रोग्राम जैसी योजनाओं के अध्ययन के मुताबिक ग्रामीण आय में 58 प्रतिशत और कृषि क्षेत्र में 35 प्रतिशत आय बढ़ी है।

3. मुंबई पर हमले के संबंध में सरकारी लापरवाही कितनी रही? इस संबंध में रिपोर्ट तैयार करें।

खुलासा मुबई पर हमले के सबंध में रियोट पेश

कमजोर थे हम

मुंबई आतंकी हमले की जाँच करने वाली प्रधान समिति ने मुंबई के तत्कालीन पुलिस कमिश्नर हसन गफूर के पक्ष से गंभीर चूक पाई है। समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि गफूर आतंकी हमले के दौरान शहर में फैली युद्ध जैसी स्थिति से निपटने में नाकाम रहे। रिपोर्ट में राज्य व शहर के आला अधिकारियों पर हमले के दौरान सामान्य कार्यप्रणाली (एसओपी) का पालन न करने का आरोप लगाया गया है। इसमें पुलिस फोर्स के तत्काल उन्नयन व लगातार समीक्षा के सुझाव भी दिए गए हैं। छह माह पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण की सौंपी जा चुकी इस रिपोर्ट का मराठी अनुवाद गृहमंत्री आरआर पाटील ने सोमवार को विधानसभा पटल पर रखा। इस रिपोर्ट में दिए गए तथ्यों की जानकारी स्वयं पाटील ने सदन को दी। इस रिपोर्ट को पूर्व गवर्नर आरडी प्रधान की अध्यक्षता में गठित दो सदस्यीय समिति ने तैयार किया था।

पाटील ने सदन को बताया कि मुख्यमंत्री को मिलाकर गठित 16 सदस्यीय दल इस रिपोर्ट के सभी पहलुओं का अध्ययन करेगा। साथ ही मीडिया में इसके लीक होने की भी जाँच की जाएगी। उन्होंने स्वीकार किया कि महाराष्ट्र सरकार को दी गई रिपोर्ट और लीक हुई रिपोर्ट एक जैसी थी। विधानसभा में विपक्ष के नेता एकाथखडसे ने रिपोर्ट के मीडिया में लीक होने की सीबीआई जाँच की माँग की। उन्होंने इस मामले में सरकार पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया। मुद्दे पर विपक्ष ने सदन से वाकआउट कर दिया। खडसे ने कहा है कि इस रिपोर्ट की जानकारी सिर्फ मुख्यमंत्री, गृहमंत्री, मुख्य सचिव व अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) को ही थी। उन्होंने कहा कि सरकार को डर है कि जाँच हुई तो उसमें इन्हीं में से कोई दोषी निकलेगा।

4. नेपाल में बड़ी संख्या में लोग तपेदिक के शिकार हैं। इस संदर्भ में रिपोर्ट तैयार करें।

नेपाल के 45 प्रतिशत लोग तपेदिक से संक्रमित

काठमांडू (एजेंसी)। एक अनुमान के अनुसार नेपाल की करीब 45 प्रतिशत आबादी तपेदिक से संक्रमित है। इनमें से 60 प्रतिशत संख्या उत्पादक आयु समूह की है। नेपाल के स्वास्थ्य और जनसंख्या विभाग ने शनिवार को 56 वें राष्ट्रीय तपेदिक दिवस पर जारी एक रिपोर्ट में कहा कि तपेदिक से हर वर्ष करीब 5,000 से 7000 लोगों की मौत होती है। स्थानीय अखबार हिमालयन टाइम्स के अनुसार नेपाल के तपेदिक विरोधी एसोसिएशन के अध्यक्ष देवेंद्र बहादुर प्रधान ने कहा कि सरकार को तपेदिक के प्रति अधिक चिंतित होनी चाहिए और इसकी रोकथाम के लिए प्रभावी कार्यक्रम शुरू करना चाहिए। राष्ट्रीय तपेदिक कार्यक्रम की निदेशक पुष्पामाला ने कहा कि तपेदिक के इलाज के लिए 'डायरेक्टली आब्जब्र्ड ट्रीटमेंट' (डॉट) की रणनीति अपनाई गई है। उन्होंने कहा कि डॉट कार्यक्रम को तपेदिक के इलाज और रोकथाम में काफी प्रभावी पाया गया है। नेपाल में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू०एच०ओ०) के सहयोग से वर्ष 1996 में डॉट कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से मानी जाती है?

उत्तर –

फ्रेंच भाषा से।

प्रश्न 2:

रिपोर्ताज की परिभाषा दीजिए।

उत्तर –

किसी घटना का अपने सत्य रूप में वर्णन जो पाठक के सम्मुख घटना का चित्र सजीव रूप में उपस्थित कर उसे प्रभावित कर सके, रिपोर्ताज कहलाता है।

प्रश्न 3:

रिपोर्ताज लेखन में क्या आवश्यक हैं?

उत्तर –

संबंधित घटनास्थल की यात्रा, साक्षात्कार, तथ्यों की जाँच।

प्रश्न 4:

रिपोर्ताज की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –

तथ्यता, कलात्मकता, रोचकता।

प्रश्न 5:

हिदी में रिपोर्ताज प्रकाशित करने का श्रेय किस पत्रिका को है?

उत्तर –

हंस।

प्रश्न 6:

रिपोर्ट की परिभाषा दीजिए।

उत्तर –

किसी योजना, परियोजना या कार्य के नियोजन एवं कार्यान्वयन के पश्चात् उसके ब्यौरे के प्रस्तुतीकरण को रिपोर्ट कहते हैं।

प्रश्न 7:

विशेष रिपोर्ट किसे कहते हैं?

उत्तर –

किसी विषय पर गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर बनने वाली रिपोर्टो को विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

प्रश्न 8:

विशेष रिपोर्ट के दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –

खोजी रिपोर्ट, इन-डेप्थ रिपोर्ट।

प्रश्न 9:

विशेष रिपोर्ट के लेखन में किन बातों पर अधिक बल दिया जाता है?

उत्तर –

विशेष रिपोर्ट के लेखन में घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है तथा महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा करके उनका विश्लेषण किया जाता है।

प्रश्न 10:

रिपोर्ट व रिपोर्ताज में अंतर स्पष्ट करो।

उत्तर –

रिपोर्ट में शुष्कता होती है, रिपोर्ताज में नहीं। रिपोर्ट का महत्व सामयिक होता है, जबकि रिपोर्ताज का शाश्वत।

प्रश्न 11:

खोजी रिपोर्ट का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

उत्तर –

इस रिपोर्ट का प्रयोग आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 12:

इन-डेप्थ रिपोर्ट क्या होती है?

उत्तर –

इस रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की छानबीन करके महत्वपूर्ण मुद्दों को बताया जाता है।

प्रश्न 13:

विशेषीकृत रिपोर्टिंग की एक प्रमुख विशेषता लिखिए।

उत्तर –

इसमें घटना या घटना के महत्व का स्पष्टीकरण किया जाता है।

प्रश्न 14:

रिपोर्ट लेखन की भाषा की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –

रिपोर्ट लेखन की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए। उसमें संक्षिप्तता का गुण भी होना चाहिए।

(स) आलेख लेखन

किसी एक विषय पर विचारप्रधान, गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को 'आलेख' कहा जाता है। यह एक प्रकार के लेख होते हैं जो अधिकतर संपादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित होते हैं। इनका संपादकीय से कोई संबंध नहीं होता। ये लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकता है; जैसे-खेल, समाज, राजनीति, अर्थ, फिल्म आदि। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य है।

आलेख के मुख्य अंग

आलेख के मुख्य अंग हैं–

भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष सर्वप्रथम शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लंबी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी चाहिए। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अंत में, विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख रचना के संबंध में प्रमुख बातें–

1. लेख लिखने से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।
2. विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।
3. लेख में श्रृंखलाबद्धता होना जरूरी है।
4. लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।
5. लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होनी जरूरी है।
6. विरोधाभास, दोहरापन, असंतुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

उदाहरण

1. असम में उल्फा

-ओ. पी. पाल (नई दिल्ली)

पूर्वोत्तर में शांति बहाली के लिए केंद्र सरकार या तो अलगाववादी संगठनों के साथ बातचीत करे या युद्ध स्तरीय कार्रवाई करे। सरकार का दोहरा रवैया आतंकियों के हौसले बुलंद कर रहा है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के सबसे बड़े एवं मजबूत अलगाववादी संगठन यूनाईटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम यानी उल्फा अभी कमजोर नहीं है, यही दिखाने के लिए उल्फा आतंकवादियों ने असम के नलबाड़ी जिले में धमाके किए हैं। उल्फा आतंकवादियों की इस आतंकी कार्यवाही में सरकार पर

यह दबाव बनाने का भी एक बड़ा संकेत है कि बांग्लादेश में गिरफ्तार दो कमांडों की रिहाई बिना शर्त की जाए। विशेषज्ञों का मानना है कि पूर्वोत्तर में शांति बहाल करने के लिए सरकार समग्र सोच के साथ अलगाववादी संगठनों से वार्ता करे या इन संगठनों के साथ युद्ध स्तरीय कार्यवाही करे।

पूर्वोत्तर राज्यों में भारत सरकार नक्सलवाद और अलगाववाद से निपटने के लिए जहाँ ठोस उपाय करने का दावा करती है, वहीं इन आतंकी संगठनों से वार्ता करने की भी पेशकश करती है। सरकार का यह दोहरा रवैया ही देश के अंदर पनपे इन आतंकवादी संगठनों के हौसले बुलंद कर रहे हैं। रविवार को असम के नलबाड़ी जिले में थाने के निकट बारी-बारी से किए दो धमाकों में फिर से निदोष लोगों को काल का ग्रास बनाया गया है, इससे पहले 13 जुलाई, 2009 को उल्फा आतंकियों द्वारा बालीपारा के जंगल में बिछाई बारूदी सुरंग की चपेट में आकर सेना के कमांडर एसएम थिरूमल व उनकी जीप का चालक मौत का शिकार हो गया था।

असम में ताजा बम विस्फोट ऐसे समय किया गया है जब भारत सरकार उल्फा नेताओं को सुरक्षा देने की तैयारी के लिए अपनी योजना बना रही है। सरकारी सूत्रों की मानें तो सरकार उल्फा से बातचीत के लिए तैयार है और सरकार का यह भी दावा है कि उन्होंने बांग्लादेश में मौजूद उल्फा के शीर्ष नेताओं परेश बरुआ और राजखोवा को भारत आने के लिए सुरक्षित मार्ग देने की पेशकश की है, लेकिन सरकार उल्फा से उसी शर्त पर वार्ता को तैयार है कि वह पूवोत्तर राज्यों में हिंसा को बंद कर दे।

उधर बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार द्वारा आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई की प्रतिबद्धता के साथ गत 5 नवंबर को पकड़े गए दो शीर्ष उल्फा कमांडरों शशधर चौधरी और चित्राबेन हजारिका को बी०एस०एफ० के जरिए भारत को सौंप दिया है। बताया जा रहा है कि शशधर चौधरी नलबाड़ी जिले का ही रहने वाला है। इसलिए माना जा रहा है कि यह बम धमाके इन दोनों उल्फा नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में हुए हैं। उल्फा आतंकवादी संगठन का चूँकि 27 नवंबर को स्थापना दिवस भी है उससे पहले इस बम धमाके को अंजाम देकर अलगाववादी संगठनों ने सरकार को चेता दिया है कि उनका संगठन अभी भी अपनी पूरी ताकत में है और उसे कमजोर न समझा जाए।

सरकार द्वारा उल्फा के खिलाफ जहाँ सेना की कार्रवाई की जा रही थी वहीं उनसे वार्ता की रणनीति भी बनाई जा रही थी, जिस पर गत 26 अक्टूबर को उल्फा के चेयरमैन अरविंद राजखोवा ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया था कि वह बातचीत करने में बाधक बनी हुई है, जबकि उल्फा सरकार से बातचीत करने को तैयार है, लेकिन हथियार डालकर नहीं। उनके निशाने पर नेशनल फ्रंट बोडोलैंड है जिसने अक्टूबर में ही गैर-बोडो समुदायों पर हमले भी किए थे।

2. कॉमनवेल्थ गेम्स

कॉमनवेल्थ गेम्स यानी वह खेल प्रतियोगिता, जिसमें केवल कॉमनवेल्थ देश की टीमें ही हिस्सा लेती हैं। कॉमनवेल्थ के सदस्य वे देश हैं, जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेश रहे थे। इस विशाल संगठन की सबसे खास बात है कि इसके सदस्य देश आपस में एक ऑफिशियल भाषा और कॉमन वैल्यूज से जुड़े होते हैं। अंग्रेजी इन सभी देशों की ऑफिशियल लैंग्वेज है। जाहिर है, एक भाषा के कारण सदस्य देशों की टीमों को घुलने-मिलने में ज्यादा सहूलियत होती है। निश्चित तौर पर इससे एकजुटता बढ़ती है और दुनिया में मित्रता का संदेश पहुँचता है।

कॉमनवेल्थ गेम्स का सबसे पहला प्रस्ताव दिया था, वर्ष 1891 में ब्रिटिश नागरिक एस्ले कूपर ने। उन्होंने ही एक स्थानीय समाचार-पत्र में इस खेल प्रतियोगिता का प्रारंभिक प्रारूप पेश किया था। इसके अनुसार, यदि कॉमनवेल्थ के सदस्य देश प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर इस तरह की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करें, जो उनकी गुडविल तो बढ़ाएगा ही, आपसी एकजुटता में भी खूब इजाफा होगा। फिर क्या था, ब्रिटिश साम्राज्य को कूपर का यह प्रस्ताव बेहद पसंद आया और उसके साथ ही शुरू हो गया खेलों का यह महोत्सव।

पहली बार कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजित करने की कोशिश हुई वर्ष 1911 में। यह अवसर था किंग जॉर्ज पंचम के राज्याभिषेक का। यह एक बड़ा उत्सव था, जिसमें अन्य सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा, इंटर एंपायर चैंपियनशिप भी संपन्न हुई। इसमें ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, साउथ अफ्रीका और यूके की टीमें शामिल हुई थीं। इसमें विजेता टीम थी कनाडा, जिसे दो फीट और छह इंच की सिल्वर ट्रॉफी से नवाजा गया था। काफी समय तक कॉमनवेल्थ गेम्स के शुरूआती प्रारूप में कोई बदलाव नहीं हुआ। वर्ष 1928 में जब एम्सटर्डम ओलपिक आयोजन हुआ, तो फिर ब्रिटिश साम्राज्य ने इसे शुरू करने का निर्णय लिया। हैमिल्टन, ओटेरिया कनाडा में शुरू हुए पहले कॉमनवेल्थ गेम्स। हालाँकि इसका नाम उस समय था ब्रिटिश एंपायर गेम्स। इसमें ग्यारह देशों ने हिस्सा लिया था। ब्रिटिश एंपायर गेम्स की सफलता कॉमनवेल्थ गेम्स को नियमित बनाने के लिहाज से एक बड़ी प्रेरणा थी। वर्ष 1930 से ही यह प्रत्येक चार वर्षों के अंतराल पर आयोजित होने लगा। वर्ष 1930-1950 तक यह ब्रिटिश एंपायर गेम्स के नाम से ही जाना जाता था, फिर वर्ष 1966 से 1974 तक इसे ब्रिटिश कॉमनवेल्थ गेम्स के रूप में जाना जाने लगा। इसके चार वर्ष बाद यानी वर्ष 1978 से यह कॉमनवेल्थ गेम्स बन गया।

3. बढ़ती आबादी-देश की बरबादी

आधुनिक भारत में जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। देश के विभाजन के समय यहाँ लगभग 42 करोड़ आबादी थी, परंतु आज यह एक अरब से अधिक है। हर वर्ष यहाँ एक आस्ट्रेलिया जुड़ रहा है। भारत के मामले में यह स्थिति अधिक भयावह है। यहाँ साधन सीमित है। जनसंख्या के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। देश में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। हर वर्ष लाखों पढ़े-लिखे लोग रोजगार की लाइन में बढ़ रहे हैं। खाद्य के मामले में उत्पादन बढ़ने के बावजूद देश का एक बड़ा हिस्सा भूखा सोता है। स्वास्थ्य सेवाएँ बुरी तरह चरमरा गई हैं। यातायात के साधन भी बोझ ढो रहे हैं। कितनी ही ट्रेनें चलाई जाए या बसों की संख्या बढ़ाई जाए, हर जगह भीड़-ही-भीड़ दिखाई देती है।

आवास की कमी हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने फुटपाथों व खाली जगह पर कब्जे कर लिए हैं। आने वाले समय में यह स्थिति और बिगड़ेगी जनसंख्या बढ़ने से देश में अपराध भी बढ़ रहे हैं, क्योंकि जीवन-निर्वाह में सफल न होने पर युवा अपराधियों के हाथों का खिलौना बन रहे हैं। देश के विकास के कितने ही दावे किए जाए, सच्चाई यह है कि आम आदमी का जीवन स्तर बेहद गिरा हुआ है। आबादी को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए। सरकार को भी सख्त कानून बनाने होंगे तथा आम व्यक्ति को भी इस दिशा में स्वयं पहल करनी होगी। यदि जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं किया गया हम कभी भी विकसित देशों की श्रेणी में नहीं खड़े हो पाएँगे।

4. बचपन की पढ़ाई शिखर की चढ़ाई

—अजीम प्रेमजी

एक बच्चा अपने शुरूआती वर्षों के दौरान जो अनुभव पाता है, जो क्षमताएँ विकसित करता है, उसी से दुनिया को लेकर उसकी समझ निर्धारित होती है और यह तय होता है कि वह आगे चलकर कैसा इनसान बनेगा। भारत में कई तरह के स्कूली विकल्प हैं। ऐसे में यह तय करना मुश्किल है कि आमतौर पर एक बच्चे के स्कूल के संबंध में क्या अनुभव रहते हैं, लेकिन मैं अलग-अलग तरह के स्कूलों से इतर भारत के स्कूल जाने वाले बच्चों के अनुभवों में एक खास तरह की समानता देखता हूँ। मैं स्कूली अनुभवों के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिलाना चाहूँगा, जिनसे यह निर्धारित होता है कि एक बच्चा बड़ा होकर किस तरह का इंसान बनेगा। पहली बात, एक इंसान के तौर पर बच्चे का अनुभव, दूसरी बात, पठन-पाठन की प्रक्रिया, तीसरा स्कूल के दुनिया के साथ जुड़ाव को बच्चा किस तौर पर लेता है। इस आधार पर हम यह देखने की कोशिश करते हैं कि हमारे ज्यादातर स्कूलों की वास्तविकता क्या है।

स्कूल का वातावरण

बच्चा दिन में एक नियत अवधि के दौरान ही स्कूल में रहता है। मोटे तौर पर देखा जाए तो स्कूल एक कंक्रीट की बनी इमारत होती हैं, जहाँ कमरों में डेस्क और बेंच एक के पीछे एक करीने से सजी होती है। हालाँकि कुछ कम सौभाग्यशाली बच्चे ऐसे स्कूलों में भी जाते हैं, जहाँ शायद उन्हें यह बुनियादी व्यवस्था न मिले, लेकिन जगह का आकार और इसका इस्तेमाल वहाँ भी इसी तरीके से होता है।

बच्चा दिन का जितना समय स्कूल में गुजारता है, उसे पीरियड्स में बाँट दिया जाता है। हर पीरियड किसी खास विषय के लिए निर्धारित होता है और हफ्ते में एक-दो पीरियड ऐसे भी हो सकते हैं, जिनमें बच्चा खेलकूद या दूसरी गतिविधियों में हिस्सा ले सकता है। उससे खास तरह के परिधान में स्कूल आने की उम्मीद की जाती है। हर समय उसे यह बताया जाता है वह कहाँ पहुँच सकता है, उससे क्या करने की उम्मीद है और वह इसे कैसे कर सकता है।

किसी कारणवश यदि वह कुछ अलग करने की सोचता है, चाहे वह पड़ोसी लड़के से बातचीत करना चाहता हो या क्लास से बाहर जाना चाहता हो, तो इसके लिए उसे इजाजत लेनी पड़ती है। अलग-अलग स्कूलों की प्रवृत्ति के अनुसार इन नियमों के उल्लंघन पर अध्यापकों द्वारा अलग-अलग सजा निर्धारित होती है। इसके लिए या तो उसको मार पड़ सकती है या जोरदार डाँट पिलाई जा सकती है अथवा और कुछ नहीं तो उसके माता-पिता को एक नोट भेजा जा सकता है। संक्षेप में कहें तो बच्चे के लिए स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ उसे कठोर अनुशासन व नियम-कायदों का पालन करना होता है। बच्चा दुनिया के बारे में शुरूआती पाठों में से एक यह सबक भी सीखता है कि दुनिया कुछ नियम-कायदों से नियंत्रित होती है। बच्चे से यह उम्मीद की जाती है कि वह बिना कोई सवाल किए इनका पालन करे। यदि वह इनमें से किसी नियम को तोड़े तो सजा के लिए तैयार रहे। आप सफल हैं यदि इन सभी नियमों को बिना किसी परेशानी से पालन कर सकते हैं।

पठन-पाठन प्रक्रिया

छात्र स्कूल प्रबंधन द्वारा तय की गई किताबों के खास सेट का इस्तेमाल करता है। किताबों में वे तथ्य और आँकड़े होते हैं, जिनके बारे में अध्यापक बच्चों को अवगत कराता है। जरूरी नहीं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में वे सवाल भी शामिल हों जो दिए गए तथ्यों से परे हों और ऐसे प्रश्न

भी उस विषय के दायरे में ही सीमित होते हैं, जिन पर चर्चा की जा रही है। बच्चा क्या सीखता है, इसकी परिभाषा उपकरणों व तकनीकों में महारत हासिल करने व तथ्यों और आँकड़ों को याद रखने तक ही सीमित है। यह अध्यापक और टाइमटेबल से तय होता है कि निर्धारित समय में बच्चा क्या सीखता है और अच्छा विद्यार्थी होने का मतलब है कि आप में ऐसी क्षमता हो जिससे आप ज्यादा-से-ज्यादा तथ्य और जानकारियाँ हासिल कर सकें।

यह दूसरी सीख है जो बच्चा स्कूल से पाता है-

अध्यापक और पाठ्यपुस्तकें हमेशा सही होते हैं। एक सफल विद्यार्थी होने का मतलब है कि आप ज्यादा-से-ज्यादा बातों को याद रखने के काबिल बन जाएँ और जब चाहें इन्हें फिर से दोहरा सकें।

शिक्षा का संदर्भ

आखिरकार, यह समूची शिक्षा कहाँ और कैसे इस्तेमाल होती है? बच्चा स्कूल में जो कुछ भी सीखता है, उसका इस्तेमाल स्कूल के भीतर ही होता है। या तो वह क्लास में पूछे गए सवालों के जवाब देता है या फिर सत्र के आखिर में परीक्षा में इसे दर्शाता है; उसके अनुसार असली दुनिया और किताबी ज्ञान से काफी अंतर होता है। बच्चा कभी यह नहीं सीख पाता कि स्कूल में अर्जित की गई शिक्षा को बाहरी जगत से किस तरह जोड़ना है। यह पढ़ाई-लिखाई मुख्यत: एक ही मकसद को पूरा करती है, और वह है एक्जामिनेशन में उत्तीर्ण होना जो उसकी अच्छी नौकरी पाने की योग्यता पर मोहर लगाता हैं।

यह तीसरा सबक है-

शिक्षा का मकसद अपने लिए एक डिग्री पाना है। इसके अलावा भी यदि वास्तविक जीवन में इसके कुछ मायने हैं. तो वे सीमित ही हैं। इससे लगता है कि हमने जो शैक्षणिक तंत्र बनाया है, उससे जो लोग तैयार होंगे वे अथोरिटी के भय के साथ बड़े होंगे। इनमें से ज्यादातर दुनिया के नियम-कायदों का बिना कोई सवाल किए अनुसरण करेंगे और वास्तविक जीवन की ज्यादातर परिस्थितियों में खुद के बारे में अनिश्चित रहेंगे।

शिक्षा से चाह

यह कहने की कोई जरूरत नहीं है कि यह एक धुंधली तसवीर की तरह लगता है। सोसायटी के तौर पर, शिक्षा से हमारो जरूरतें ऊपर दर्शाई गई बातों से काफी अलग हैं। इसे अच्छी तरह से समझने के लिए, हमें फिर यह तय करने की जरूरत है कि अच्छी शिक्षा से हमारा मतलब क्या है। मेरे ख्याल से शिक्षा के दो प्राथमिक उद्देश्य हैं। पहला, जिस विशाल दुनिया में हम रहते हैं, हमें उसे सीखने-समझने के काबिल बनाना व इससे जुड़ने की योग्यता देना। दूसरा, व्यक्ति विशेष को सशक्त बनाना, उसे इतना सक्षम बनाना जिससे वह दुनिया से सवाल कर सके, चुनौती दे सके और इसे बदलने में अपना योगदान दे सके।

एक समाज के तौर पर हमें अपने नागरिकों को आजाद ख्याल बनाने की जरूरत है, जिनमें नेतृत्व की क्षमता हो, जो समाज की जमीनी हकीकत के प्रति संवेदनशील हों और समुदाय के प्रति अपनी जिम्मेदारी महसूस करें। हर व्यक्ति खुद को इतना सशक्त महसूस करे कि वह सवाल पूछने में हिचके नहीं और स्वयं अपना योगदान दें। इस ताकत और आत्मविश्वास को एक व्यक्ति के भीतर खोजना, पल्लवित करना और मजबूत करना जरूरी है। बच्चा स्कूल के दौरान जिन अनुभवों से गुजरता है, वे इन शक्तियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एक अच्छा स्कूल

स्कूल ऐसी जगह होना चाहिए जहाँ सीखने के लिए उचित माहौल बन सके। स्कूल के बुनियादी ढाँचे के अलावा इसके वैल्यू सिस्टम समेत हमें इसके वातावरण पर फिर से गौर करना होगा। हमें बच्चों को दखलंदाजी से मुक्त और रोचक माहौल देने की आवश्यकता है। हमें ऐसे तत्वों को पहचान कर दूर करना होगा, जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में बाधक हैं।

अनुशासन के लिहाज से यही बेहतर है कि ऐसे नियम-कायदों को, जिन्हें बच्चे सजा की तरह समझे, जबरन लादने की बजाय नियमों को तय करने में उनकी भागीदारी भी हो। हमें उन्हें सशक्त बनाना होगा और स्कूली प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

क्लास रूम में लोकतांत्रिक व्यवस्था नजर आए, जहाँ बच्धों के साथ इंटरएक्शन संवादात्मक हो शिक्षात्मक नहीं। जहाँ सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाए। आपसी संपर्क, संवाद और अनुभव पर आधारित शिक्षा संबंधी प्रविधियाँ होंगी। अवधारणाओं को सिखाने पर ध्यान देना चाहिए। मेरे विचार से यह बेहद जरूरी है कि हम शिक्षा को व्यापक सामाजिक संदर्भों के हिसाब से देखें। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे अपने ज्ञान को बाहरी दुनिया के साथ जोड़ सकें। ज्ञान वास्तविक अनुभवों से आता है और यदि क्लास रूम के क्रियाकलापों को वास्तविकता से नहीं जोड़ा जाता तो शिक्षा हमारे बच्चों के लिए महज शब्दों और पाठों का खेल ही बनी रहेगी।

आज हम एक समाज के तौर पर बेहतर स्थिति में है और बदलाव के लिहाज से महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं। देश में कई स्कूल और संस्थान यह दर्शा रहे हैं कि वस्तुत: हम पुराने तौर-तरीकों से निजात पाकर बेहतर शिक्षा के लिए प्रयास कर सकते हैं। जयपुर का दिगंतर द्वारा संचालित बंध्याली स्कूल, बंगलुरू का सेंटर फॉर लर्निंग या बर्दवान में विक्रमशिला का विद्या स्कूल जैसे कुछ शिक्षालय ऐसी शिक्षा के लिए जाने जाते हैं, जैसी हम चाहते हैं। एकलव्य, दिगंतर और विद्या भवन जैसे सामाजिक संस्थान और आई डिस्कवरी तथा ईजेड विद्या जैसे कुछ सामाजिक उपक्रम पूरे देश में चलाए जा रहे इस सतत आंदोलन का एक हिस्सा हैं। इन सबके प्रभाव मुख्यधारा की स्कूलिंग पर नजर आने लगे हैं।

एक नागरिक के तौर पर हमें न सिर्फ इस बदलाव का स्वागत करने वरन खुद भी भागीदारी बनते हुए इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है। हमें यथा स्थिति को बदलना होगा और ऐसा तंत्र तैयार करना होगा, जो बेहतर इंसान पैदा कर सक।

5. भारतीय कृषि की चुनौती

ऐसे समय में जब खाद्य पदार्थों की कीमतें आसमान छू रही हैं और दुनिया में भुखमरी अपने पैर पसार रही है, जलवायु परिवर्तन से संबंधित विशेषज्ञ आगाह कर रहे हैं कि आने वाले वक्त में हमें और भी भयावह स्थिति का सामना करना पड़ेगा। दिनों-दिन बढ़ते वैश्विक तापमान की वजह से भारत की कृषि क्षमता में लगातार गिरावट आती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक इस क्षमता में 40 फीसदी तक की कमी हो सकती है। (ग्लोबल वार्मिंग एंड एग्रीकल्चर, विलियम क्लाइन)।

कृषि के लिए पानी और ऊर्जा या बिजली दोनों ही बहुत अहम तत्व हैं, लेकिन बढ़ते तापमान की वजह से दोनों की उपलब्धता मुश्किल होती जा रही है।

तापमान बढ़ने के साथ ही देश के एक बड़े हिस्से में सूखे और जल संकट की समस्या भी बद से बदतर होती जा रही है। एक तरफ वैश्विक तापमान से निपटने के लिए जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल पर ब्रेक लगाने की जरूरत महसूस की जा रही है। वहीं दूसरी ओर कृषि कार्य के लिए पानी की आपूर्ति के वास्ते बिजली की आवश्यकता भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

खाद्य सुरक्षा, पानी और बिजली के बीच यह संबंध जलवायु परिवर्तन की वजह से कहीं ज्यादा उभरकर सामने आया है। एक अनुमान के मुताबिक अगले दशक में भारतीय कृषि की बिजली की जरूरत बढ़कर दोगुनी हो जाने की संभावना है। यदि निकट भविष्य में भारत को कार्बन उत्सर्जन में कटौती के समझौते को स्वीकारने के लिए बाध्य होना पड़ता है तो सबसे बड़ा सवाल यही उठेगा कि फिर आखिर भारतीय कृषि की यह माँग कैसे पूरी की जा सकेगी।

इसका जवाब कोपेनहेगन में नहीं, बल्कि कृषि में पानी और बिजली के इस्तेमाल को युक्तिसंगत बनाने में निहित है। कृषि में बिजली का बढ़ता इस्तेमाल इस तथ्य से साफ है कि अब किसान पाँच हार्सपॉवर के पंपों के बजाय 15 से 20 हार्सपॉवर के सबमसिबल पंपों का इस्तेमाल करने लगे हैं। पाँच हार्सपॉवर के पंप 1970 के दशक में काफी प्रचलन में थे। इससे राज्य सरकारें अत्यधिक दबाव में हैं, क्योंकि कृषि क्षेत्र की बिजली संबंधी जरूरतों की पूर्ति उसे ही करनी होगी। जमीन के भीतर से पानी खींचने के लिए बिजली की अधिक जरूरत पड़ती है। पंजाब में बिजली की जितनी खपत होती है, उसका एक तिहाई हिस्सा अकेले पानी को पंप करने में ही खर्च हो जाता है। हरियाणा में यह आँकड़ा 41 और आंध्र प्रदेश में 36 फीसदी है। हालाँकि सरकार वृहद सिंचाई परियोजनाओं और नहरों पर करोड़ों रुपये खर्च कर रही है, लेकिन तथ्य यह है कि नहरों के पानी का महज 25 से 45 फीसदी ही इस्तेमाल हो पाता है, जबकि कुओं और नलकूपों का 70 से 80 फीसदी तक पानी इस्तेमाल कर लिया जाता है। भूजल से कृषि उत्पादकता नहरी सिंचाई से कृषि उत्पादकता की तुलना में डेढ़ से दो गुनी ज्यादा है। यही वजह है कि निजी क्षेत्र भूजल में ही निवेश को प्राथमिकता दे रहा है।

देश के सिंचाई साधनों में 60 फीसदी हिस्सा भूजल स्रोतों का है जिनके विकास पर निजी क्षेत्र 2.2 लाख करोड़ रुपये खर्च कर रहा है, लेकिन भूजल से सिंचाई तब तक टिकाऊ नहीं हैं, जब तक कि जल संरक्षण के लिए उतनी ही राशि खर्च नहीं की जाती जितनी कि भूमिगत जल स्रोतों के विकास पर खर्च की जा रही है। उन क्षेत्रों में जल प्रबंधन बहुत जरूरी है जो सिंचाई के लिए पूरी तरह से भूमिगत पानी पर निर्भर है, ताकि वहाँ भूजल के स्तर के साथ संतुलन बनाया जा सके, लेकिन हमारे नीति निर्माताओं ने अब तक इस पर ध्यान नहीं दिया है। अभी पूरा ध्यान नहरी सिंचाई पर ही दिया जा रहा है। भारत में भूमिगत जल का भौगोलिक बँटवारा असमान है और इसका इस्तेमाल भी बेहद गलत ढंग से किया जा रहा है। देश के 70 फीसदी प्रखंडों में भूजल का स्तर संतोषजनक है, लेकिन उन 30 फीसदी प्रखंडों में पानी का अधिकतम दोहन किया जा रहा है, जहाँ पहले से ही पानी का संकट है।

भूजल में कमी की प्रमुख वजह नलकूपों से सिंचाई है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण पंजाब है। वहाँ भूजल का स्तर 50 से 100 फीट तक नीचे गिर चुका है, लेकिन इसके बावजूद वह अनाज के रूप में 21 अरब क्यूबिक मीटर पानी का 'निर्यात' कर रहा है। वहाँ भूजल का दोहन 145 फीसदी तक हो रहा है। इसी तरह उत्तर प्रदेश भी अनाज के रूप में 21 अरब क्यूबिक मीटर पानी का निर्यात कर रहा है, लेकिन भूजल का दोहन 70 फीसदी तक सीमित है। हरियाणा 14 अरब क्यूबिक मीटर पानी का निर्यात कर रहा है और भूजल दोहन का आँकड़ा 109 फीसदी है। कुछ राज्यों ने जल प्रबंधन की दिशा में कई कदम उठाए हैं।

महाराष्ट्र ने 'वाटर आडिट' करने की व्यवस्था शुरू की है। पंजाब और हरियाणा अब चावल की रोपाई मशीन से करने लगे हैं, ताकि ग्रीष्मकाल में सबसे गर्म दिनों से बचा जा सके। जल-संरक्षण आज के समय की सबसे महती जरूरत है। भारत में करीब एक करोड़ कुएँ हैं, लेकिन उनमें से 35 फीसदी निष्क्रिय हैं। भूमिगत जलस्रोतों को रिचार्ज करके इन कुओं को आसानी से बहाल किया जा सकता है। देश के कई इलाकों में लोग ऐसा करके दिखा भी चुके हैं, लेकिन लगता है हमारे नौकरशाह अब भी इससे सहमत नहीं हैं।

हमारी खान-पान की आदतों में बदलाव भी जल संरक्षण में अहम भूमिका निभा सकता है। एक टन गोमांस के लिए 16726 क्यूबिक मीटर पानी की जरूरत होती है, जबकि एक टन मक्के के उत्पादन में महज 1020 क्यूबिक मीटर पानी ही चाहिए। एक टन आलू के उत्पादन में महज 133 क्यूबिक मीटर पानी की जरूरत होती है, जबकि इतने ही पनीर या चीज के उत्पादन में 40 गुना अधिक पानी की आवश्यकता होगी। खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट के भय को भुनाने का प्रयास करते हुए बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियाँ ऐसे बीजों के विकास का दावा कर रही हैं जिनसे सूखे में भी उत्पादन लिया जा सकेगा, लेकिन जेनेटिकली मॉडीफाइड बीजों को लेकर ऐसे दावे प्रमाणिकता से कोसों दूर हैं किसान अब फिर से बीजों की पारंपरिक किस्मों की ओर लौट रहे हैं जिन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ काफी प्रयासों के बावजूद मिटा नहीं सकी।

स्वयं करें

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में फीचर लिखिए

   1. किसानों पर कर्ज का बोझ
   2. महानगरों में बढ़ते अपराध
   3. बाल श्रमिक
   4. बँधुआ मजदूर
   5. जातीयता का विषय
   6. महँगी शिक्षा
   7. कृषकों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति
   8. शहरों का दमघोंटू वातावरण
   9. सचिन तेंदुलकर की उपलब्धियाँ
   10. मेरे विद्यालय का पुस्तकालय
   11. आज की तनावपूर्ण जीवन-शैली
   12. मोबाइल के सुख-दुख

2. निम्नलिखित विषयों पर रिपोर्ट तैयार कीजिए

   1. सूखाग्रस्त क्षेत्र
   2. विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमू

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए

   1. डॉक्टरों की हड़ताल।
   2. छात्र और बिजली संकट।
   3. फिल्मों में हिंसा।

4. सांप्रदायिक सद्भावना।
5. कर्ज में डूबा किसान।
6. भारतीय चंद्रयान एक बड़ी उपलब्धि।
7. दिन-प्रतिदिन बढ़ते अंधविश्वास।
8. पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतें।

मौखिक परीक्षा (श्रवण तथा वाचन)

श्रवण तथा वाचन

श्रवण (सुनना)-वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना। 5

वाचन (बोलना)-भाषण, सस्वर कविता–पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा–कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन। 5

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी-वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) के मूल्यांकन के लिए और 5 वाचन (बोलना) के मूल्यांकन के लिए होंगे।

श्रवण (सुनना) टिप्पणी का मूल्यांकन-

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद, तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक/अध्यापक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिए हुए श्रवण-बोध के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास रिक्तस्थानपूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सही-गलत का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं। आधे-आधे अंक के 10 परीक्षण-प्रश्न होंगे।

मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) का मूल्यांकन-

1. **चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन**-इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. **किसी चित्र का वर्णन**-चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं।
3. **किसी निर्धारित विषय पर बोलना**-जिससे विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सकें।
4. **कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।**

टिपणी-

परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को कुछ तैयारी के लिए समय दिया जाए।

- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव-जगत् के हों; जैसे-

कोई चुटकला या हास्य प्रसंग सुनाना।
हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे सिनेमा की कहानी सुनाना।
जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ कर दे तो परीक्षक कम-से-कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

(इस बात का निश्चय करना कि क्या विदयार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं।)

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
1. परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है, किंतु वह सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1. केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है, किंतु एक सुसंबद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता।
2. छोटे संबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2. परिचित संद्र्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है, अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है, जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।
4. दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किकता से संगठित कर धारा-प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है। वह ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रुकावट नहीं आती।
5. जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है। वह उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, ऐसा करते समय वह केवल मामूली गलतियाँ करता है।

भावों-विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है-भाषा। मनुष्य जितनी सरल और शुद्ध भाषा का प्रयोग करता है, उतने ही प्रभावपूर्ण ढंग से भावों-विचारों का संप्रेषण कर सकता है। अभिव्यक्ति कौशल मानव की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति दूसरे को प्रभावित कर सकता है। इसके विपरीत बहुत कुछ जानने वाला व्यक्ति अभिव्यक्ति में अकुशल होने पर प्रभावित नहीं कर पाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी सहपाठियों, अध्यापकों को प्रभावित कर पुरस्कृत होते हैं तो नेतागण इसी कौशल के दम पर जनता का विश्वास जीतकर विजयी बनते हैं। यद्यपि विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति सरल नहीं हैं तथापि लिखित अभिव्यक्ति की तुलना में इसे सरल नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि लिखित भाषा में त्रुटियों को सुधारने का समय और अवसर मिल जाता है पर मौखिक अभिव्यक्ति में नहीं। मौखिक अभिव्यक्ति में एक या अनेक व्यक्ति हमारे सामने हो सकते हैं पर लिखित अभिव्यक्ति हम अपने समय और सुविधा के अनुरूप कर सकते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति सफलता की पहली सीढ़ी है, इसलिए छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति दक्षता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने चाहिए-

- अपने भावों-विचारों को छोटे-छोटे वाक्यों में बाँध लेना चाहिए, जिससे अभिव्यक्ति आसान हो जाएगी।
- प्रयास यह होना चाहिए कि हम एक ही भाषा का प्रयोग करें, विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग एक ही वाक्य में करने से बचें।
- शुद्ध एवं सरल भाषा का प्रयोग करने के लिए अभ्यास करना चाहिए।

मौखिक अभिव्यक्ति के उधेश्य

- सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग करना, जिससे विचारों की अभिव्यक्ति बेहतर हो।
- किसी विषय पर तर्कसंगत संतुलित एवं भावपूर्ण विचार प्रस्तुत करना।

● आरोह, अवरोह, बलाघात आदि का प्रयोग करते हुए शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण कर अभिव्यक्ति दक्षता को बढ़ाना।

● भावानुकूल शब्दों के अर्थ समझकर वाक्य प्रयोग दक्षता को बढ़ाना।

● सरस एवं रुचिकर भाषा का प्रयोग करना ताकि सुनने वालों की रुचि हमारी अभिव्यक्ति में बनी रहे।

● भाषा सरल, सहज, बोधगम्य, रुचिकर हो पर उसका प्रयोग अवसर और भावों के अनुरूप ही करना चाहिए।

मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ

● अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के लिए उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है।

● अच्छी मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्ध भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है।

● वाक्य में पदक्रमों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। शिष्टाचार पूर्ण भाषा के प्रयोग से अभिव्यक्ति प्रभावी बनती है।

● अवसर के अनुरूप तथा अनुकूल भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

● बलाघात, अनुतान, यति-गति का यथास्थान प्रयोग किया जाना चाहिए।

● नि:संकोच बात करना, हिचकिचाहट न आने देने से भी भाव अभिव्यक्ति प्रभावी होती है।

मौखिक अभिव्यक्ति के विविध रूप

● गद्यांशों का वाचन

● काव्यांशीं का सस्वर वाचन

● काव्य-पाठ

● वार्तालाप

● चित्र देखकर घटनाओं का मौखिक वर्णन

● साक्षात् दृश्य का वर्णन

● कहानी सुनाना

● भाषण

● संवाद

● वाद-विवाद प्रतियोगिता

● समाचार वाचन

● आशुभाषण

● टेलीफोन वार्ता

मौखिक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप

श्रवण कौशल का मूल्यांकन

मनुष्य जो कुछ सुनता है उसी के अनुरूप अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। इसी प्रकार छात्र भी शिक्षक की बातें ध्यानपूर्वक सुनता है और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है। इसी कौशल पर पठन-पाठन की कुशलता निर्भर करती है। इसके लिए अध्यापक कक्षा में पढ़ाए गए किसी पाठ पर किसी काव्यांश या गद्यांश पर प्रश्न पूछकर या कविता अथवा गद्य पाठ का मूल भाव संबंधी प्रश्न पूछ सकता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि जो अंश छात्रों को सुनाया जा रहा है वह उनके ही स्तर का होना चाहिए और इनका विषय छात्रों के जीवन से जुड़ा होना चाहिए।

गद्यांस

गद्य के इस अंश को ध्यानपूर्वक सुनकर और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में देना होता है; जैसे-

तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है मेघालय-खासी पर्वत, गारो पर्वत और जयंतिया पर्वत। और इन्हीं तीन पर्वतीय अंचलों से जयंतिया पर्वत जिला। हर अंचल की अपनी अलग संस्कृति है, रीति-

रिवाज, पर्व-उत्सव हैं, लेकिन हर कहीं पारिवारिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक है-भूमि, धन, संपत्ति सब माँ से बेटी को मिलती है। "मातृसत्तात्मक व्यवस्था होने के कारण यहाँ नारी-शोषण की वैसी घटनाएँ नहीं होतीं, जैसी कि देश के अन्य भागों में देखने-सुनने को मिलती हैं।" संगमा कहते हैं। स्त्री का यहाँ वर्चस्व है, यह अहसास गुवाहाटी से मेघालय की सीमा में घुसने के साथ ही होने लगता है। तमाम दुकानों पर स्त्रियाँ सौदा बेचतीं और बेहिचक बतियाती दिखाई देती हैं। शायद कमोबेश यह स्थिति पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में भी है, भले ही वहाँ मातृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था न हो। कुछ साल पहले मणिपुर की राजधानी इंफाल में भी यही सब देखा था। स्त्रियों का एक पूरा-का-पूरा बाजार ही है वहाँ, जिसे 'माइती बाजार' कहते हैं-यानी माँ का बाजार। दिन-दोपहर हुई नहीं कि सिर पर सब्जी, कपड़ों या अन्य सामान के टोकरे रखे स्त्रियाँ इस बाजार में आ पहुँचती हैं। दिन-भर सामान की बिक्री कर शाम को अपने-अपने घर लौट पड़ती हैं। किसी प्रकार का वर्ग-भेद नहीं। यानी अमीर घरों की स्त्रियाँ भी इस 'माइती बाजार' में मिल जाएँगी और गरीब घरों की स्त्रियाँ भी। और यह बाजार केवल इंफाल में ही नहीं है, मणिपुर के हर नगर, कस्बे, गाँव में हैं-वहाँ की संस्कृति का एक अटूट सिलसिला।

परीक्षण प्रश्न

पूछे गए प्रश्न	अतिसंक्षिप्त उत्तर
1. मेघालय कितने पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है? उनके नाम क्या हैं?	तीन–खासी, गारो और जयंतिया पर्वत।
2. पर्वतीय अंचलों से कितने जिले बने हैं?	पाँच।
3. मातृसत्तात्मक व्यवस्था का क्या अर्थ है?	सत्ता में स्त्रियों की महत्त्वपूर्ण भागीदारी।
4. मातृसत्तात्मक व्यवस्था का मुख्य लाभ क्या है?	नारी-शोषण न होना।
5. मणिपुर की राजधानी कहाँ है?	इंफाल।
6. माइती बाज़ार क्या है?	माँ अर्थात् स्त्रियों का बाज़ार।
7. माइती बाज़ार में दुकानदार कौन होता है?	महिलाएँ।
8. इस बाज़ार में दुकानदार अपना सामान कैसे लाते हैं?	सिर पर रखकर।
9. बाज़ार में अमीर-गरीब घरों की स्त्रियों का एक साथ होना क्या दर्शाता है?	वर्ग-भेद न होना।
10. मणिपुर की संस्कृति का एक अटूट सिलसिला किसे कहा गया है?	माइती बाज़ार को।

• **गदय के इस अंश को ध्यानपूर्वक सुनिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखिए-**

जाकिर साहब से मिलने के लिए समय प्राप्त करने में देर नहीं लगती थी। एक बार मेरी एक सहेली ऑस्ट्रेलिया से भारत की यात्रा करने आई। अपने देश में वे भारतीयों की शिक्षा के लिए धन एकत्र किया करती थीं। एक भारतीय बच्चे को उन्होंने गोद भी ले लिया था। जाकिर साहब ने तुरंत उनसे मिलने के लिए समय दिया और देर तक बैठे। उनसे उनके कार्य, उनकी भारत यात्रा के बारे में सुनते रहे। हिंदी सीखने के बारे में एक बार जब उनसे प्रश्न किया तो उन्होंने कहा, "मेरे परिवार के एक बच्चे ने जब गाँधी जी से ऑटोग्राफ माँगा तो उन्होंने अपने हस्ताक्षर उर्दू में किए, उसी दिन से मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया कि हिंदी भाषियों को अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही दिया करूँगा। एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्र जी का तिलक करने के लिए कहा। जाकिर साहब खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने एतराज किया। जाकिर साहब ने

जवाब दिया, "इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ। किसी खास धर्म का नहीं।"

जाकिर साहब राष्ट्रपति भवन में सादगी और विनम्रता के साथ कला-प्रियता को भी ले आए थे। उनकी आँखों में ब्रिटेन के अभिमान के अवशेष शीशे के टुकड़ों के समान खटके। उन्होंने मुगल उद्यान को न केवल सुरक्षित रखा, अपितु अपने व्यक्तित्व के वैभव से उसकी वृद्ध भी की। उनके समय में राष्ट्रपति भवन के बगीचों में 400 किस्म के नए गुलाब लगाए गए, अनेक रंग-बिरंगे पशु-पक्षी, हिरन, मोर, सारस, कबूतर, राजहंस आदि भारत के कोने-कोने से मैंगवा कर रखे गए। जानवरों से उनका इतना घनिष्ठ प्रेम था कि राष्ट्रपति भवन में उनके साथ उनका प्रिय तोता, मैना और गाय भी आए थे।

परीक्षण प्रश्न

पूछे गए प्रश्न

निर्देश– अधिकतम एक वाक्य में उत्तर दें। **अतिसंक्षिप्त उत्तर**

1. लेखिका की सहेली कहाँ से आई थी? --
2. सहेली अपने देश में क्या काम करती थी? --
3. उर्दू में हस्ताक्षर किसने किए? --
4. ज़ाकिर हुसैन ने किसका तिलक किया? --
5. ज़ाकिर हुसैन ने किन्हें नादान कहा है? --
6. उर्दू अखबारों को किस बात का एतराज़ हुआ? --
7. ब्रिटेन के अभिमान किन्हें कहा गया है? --
8. राष्ट्रपति ने किस उद्यान को सुरक्षित रखा? --
9. उद्यान के लिए कौन-कौन से पशु-पक्षी मँगवाए गए? --
10. ज़ाकिर हुसैन के व्यक्तित्व की कोई दो विशेषताएँ लिखिए। --

वार्तालाप

वार्तालाप को बातचीत अथवा संवाद भी कहा जा सकता है। सामान्यतया यह दो व्यक्तियों के बीच होता है। वार्तालाप में पूरी स्वाभाविकता होती हैं, किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं।

विशेषताएँ-

- संवाद किसी भी विषय पर हो सकता है।
- संवाद क्रमबद्ध होते हैं।
- संवाद की भाषा शालीन एवं मर्यादित होती है।

फिल्मों में बढ़ती अश्लीलता पर दो सहेलियों की बातचीत।

सुमन – अरे पूनम! इस समय कहाँ से आ रही हो? कुछ परेशान सी लग रही हो?

पूनम – घर बैठे-बैठे बोर हो रही थी। सोचा, चलो फिल्म देख आते हैं।

सुमन – यह तो अच्छा किया, पर ये तो बताओ कि कौन-सी फिल्म देखी तुमने?

पूनम – जिस्म।

सुमन – जिस्म! यह कैसा नाम है? क्या किसी देवी-देवता द्वारा शरीर की महत्ता बताती कोई फिल्म है यह?

पूनम – क्या कहूँ, सुमन, सोचा था, फिल्म का विषय नया होगा, फिर पास के एकमात्र सिनेमाहाल में यही फिल्म लगी थी। सोचा दूर जाकर पैसे क्यों बरबाद करना, पर किराया बचाना अच्छा नहीं रहा।

सुमन – क्या मतलब, क्या कहानी और गीत अच्छे नहीं थे?

पूनम – अरे नहीं, कुछ देर तक कहानी तो ठीक-ठाक चली पर बाद में अश्लील दृश्य आने शुरू हो गए। कहानी और इन दृश्यों में कोई तालमेल नहीं था। अच्छा रहा कि बच्चों को साथ नहीं लाई। हाँ, कुछ गीत ठीक थे।

सुमन – ठीक कहती हो पूनम। आज हर फिल्म में अश्लीलता, फूहड़पन, हिंसा, बलात्कार जैसे दृश्यों का बोलबाला रहता है। पता नहीं सेंसर बोर्ड इन दृश्यों को कैसे पास कर देता है।

पूनम – अब तो दूरदर्शन पर फिल्मों के ट्रेलर भी अश्लीलता का स्पर्श करने लगे हैं।

सुमन – ठीक कहती हो पूनम। कल 'पाप' फिल्म का ट्रेलर आ रहा था। मेरा बेटा काव्य बोल उठा, "मम्मी चैनल बदल दो"। यह कहकर उठ गया और पति शरारत से मेरी ओर देखने लगे। ऐसा लगता है कि फिल्मों में नग्नता के सिवा अब कुछ बचा ही नहीं है। पर ऐसा क्यों है?

पूनम – फिल्मों के निर्माता ऐसे दृश्यों को कहानी की माँग बताकर फिल्माते हैं। अब तो उन्होंने इसे व्यवसाय बना लिया है।

सुमन – पर व्यवसाय तो मर्यादित तरीके से भी किया जा सकता है।

पूनम – आजकल व्यवसाय से अधिकाधिक कमाने के लिए लोग अनैतिक तरीके अपनाने से परहेज नहीं करते। अब देखो न प्रसारण मंत्रालय इन दृश्यों पर कैंची क्यों नहीं चलाता और फिल्में पास कर देता है।

सुमन – ऐसे फिल्म निर्माताओं पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। वे हमारी संस्कृति को खराब कर रहे हैं।

पूनम – देखो सुमन, वे तो केवल फिल्में बनाते हैं, पर हमारा समाज भी कम दोषी नहीं है। हम ऐसी फिल्में देखने ही क्यों जाते हैं। पर देखो न, आठ सप्ताह से यह फिल्म हाउसफुल जा रही है, जिसके दृश्य याद कर घृणा आती है।

सुमन – तो क्या इस समस्या का कोई हल नहीं है?

पूनम – समय आने पर सबका हल मिल जाएगा।

सुमन – मुझे तो लगता है कि हमारी युवा पीढ़ी को ही आगे आना चाहिए।

पूनम – तुम ठीक कहती हो सुमन, हमारी युवा पीढ़ी शीघ्र ही ऐसे दृश्यों से ऊब जाएगी और वह ऐसी फिल्में देखना पसंद ही नहीं करेगी।

सुमन – तब शायद एक बार फिर अच्छी फिल्मों का दौर आ जाए।

पूनम – तुम्हारी बातें जरूर सच होंगी सुमन। अच्छा मैं चलती हूँ।

सुमन – फिर मिलेंगे। अच्छा नमस्ते।

पूनम – नमस्ते।

परीक्षण प्रश्न

प्रश्न **अतिसंक्षिप्त उत्तर**

1. यह वार्तालाप किनके-किनके बीच हो रहा है? --
2. पूनम कहाँ से आ रही थी? --
3. पूनम का मन खिन्न क्यों था? --
4. सुमन की हैरानी का कारण क्या था? --
5. आज फिल्म निर्माताओं को उद्देश्य क्या रह गया है? --
6. वार्तालाप के अनुसार प्रसारण मंत्रालय को क्या करना चाहिए? --
7. सुमन को फिल्म का ट्रेलर कैसा लगा और क्यों? --
8. हिंसा और अश्लील दृश्यों वाली फिल्मों का हमारी संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? --
9. अश्लील फिल्मों को हमारा समाज किस प्रकार बढ़ावा देता है? --
10. सुमन की कौन-सी बातें भविष्य में सच होंगी?

वाद-विवाद

किसी भी विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में तर्कपूर्वक अपने विचार रखना ही वाद-विवाद कहलाता है। वाद-विवाद अनेक संस्थाओं द्वारा आयोजित कराया जाता है, जिसका उद्देश्य जन-जागरूकता फैलाना है, जिससे लोगों का ध्यान उस ओर आकृष्ट हो। वात् विवाद में दो पक्ष होते हैं- 1. समर्थन करने वाला (पक्ष) 2. विरोध करने वाला (विपक्ष)।

वाद-विवाद के समय

- वक्ता को स्पष्ट करना चाहिए कि वह पक्ष में बोल रहा है या विपक्ष में।
- वाद-विवाद में शालीन एवं मर्यादित भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- वाद-विवाद में तार्किक एवं प्रामाणिक बातें कहना चाहिए।
- अपनी बातों के समर्थन में आवश्यकतानुसार आक्रमता का हल्का पुट रखना चाहिए।
- वाद-विवाद के लिए चयनित विषय के सभी उप पक्षों पर विचार स्पष्ट करना चाहिए।
- अपनी बातों के विशेष तथ्य अध्यक्ष महोदय को संबोधित करते हुए कहना चाहिए।
- समय-समय पर विरोधी वक्ता के कथनों का आवश्यकतानुसार उद्धरण अवश्य देना चाहिए।

विषय – क्या आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में जवाब देना चाहिए?

प्रस्तोता – आज के इस कार्यक्रम के अध्यक्ष महोदय, निर्णायक मंडल के सदस्यगण, प्रधानाचार्य जी, आदरणीय गुरुजन एवं उपस्थित छात्र भाइयो! जैसा कि आप जानते हैं कि आज की वाद-विवाद प्रतियोगिता का चयनित विषय है'क्या आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में जवाब देना चाहिए?", जिस पर विद्यालय के दो छात्र मनोज और सुबोध अपने-अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। आप सभी इनके विचारों को सुनकर इनका उत्साहवर्धन करें। पहला अवसर मैं मनोज को देता हूँ जो विषय के पक्ष में अपने विचार रखेंगे। आइए, मनोज।

मनोज – (पक्ष में) – परमादरणीय अध्यक्ष महोदय! आज की वाद-विवाद प्रतियोगिता के विषय 'क्या आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में जवाब देना चाहिए'? के पक्ष में मैं अपने विचार रखना

चाहता हूँ। आशा है कि आप लोग मेरे विचारों को ध्यान से सुनेंगे और उचित विचारों की सराहना करेंगे।

अध्यक्ष महोदय! हमारे शास्त्रों में कहा गया है, 'शठे शाठयम् समाचरेत'। अर्थात् दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि स्वतंत्रतापूर्व पाकिस्तान भी हमारे देश का अंग हुआ करता था पर अंग्रेजों की घटिया नीति के कारण देश का विभाजन हो गया और पाकिस्तान जो कल तक हमारे देश का अंग था, आज हमारा कट्टर दुश्मन बन बैठा है। वह हर प्रकार से देश को कमजोर करने की कोशिशें करता रहता है। वह आतंकवादियों को प्रशिक्षण देकर हमारे देश में घुसपैठ कराता है जिससे जान-माल की अपार क्षति हो रही है और देशवासियों की शांति छिन रही है।

अध्यक्ष महोदय! भारत एक शांतिप्रिय देश रहा है, जिसे युद्धों से परहेज रहा है। इसने आक्रमणकारियों को भी सुधरने का भरपूर अवसर दिया, पर ये आतंकी सुधरने के बजाए बिगड़ते गए। आतंकवादियों के पकड़े जाने पर उन्हें मौत के घाट न उतारकर उन्हें अपना पक्ष रखने का भरपूर अवसर दिया गया जाता है। हमने अपनी सांस्कृतिक परंपरा के अनुसार 'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात' का अनुसरण किया और अनेक बार आतंकी तैयार करने वाले राष्ट्र को माफ किया।

अध्यक्ष महोदय! शायद आतंकवादियों ने हमारी इसी विनम्रता को दुर्बलता समझ लिया और उद्दंडता दिखाते हुए संसद हमला, लालकिला हमला, दिल्ली बम धमाके, हैदराबाद बम धमाके, मुंबई सिलसिलेवार बम विस्फोट जैसे घिनौने कृत्यों को अंजाम दिया, जिनमें सैकड़ों लोगों की जानें गई और हजारों लोग घायल हुए तथा न जाने कितनी संपत्ति का नुकसान हुआ।

मेरा मानना है कि आतंकवादियों ने हमारी सहनशक्ति का खूब फायदा उठाया है। अब वह समय आ गया है कि हम इन आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में जवाब दें, क्योंकि इसके अलावा उन्हें कोई और भाषा समझ में ही नहीं आती। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' की तर्ज पर हमें आतंक फैलाने वालों के साथ कठोर-से-कठोर व्यवहार करना चाहिए ताकि कोई आतंकी बनकर भारत की ओर कदम बढ़ाने से पहले सौ बार सोचे।

धन्यवाद।

सुभोध – (विपक्ष में) आदरणीय अध्यक्ष महोदय, निर्णायक मंडल के सदस्यगण, प्रधानाचार्य जी एवं उपस्थित छात्र बंधुओ! अभी मेरे साथी मनोज ने 'क्या आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में जवाब देना चाहिए?" के पक्ष में अपने विचार आप सभी के सामने रखे। अब मैं अत्यंत विनम्र शब्दों में अपने विचार इस विषय के विपक्ष में आप सभी के सामने रखना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय! अभी-अभी मेरे साथी मनोज ने कहा कि 'शठे शाठ्यम् समाचरेत', पर वे यह नहीं बता सके कि इतिहास में कितनी बार या शास्त्रों में ऐसा कितनी बार हुआ है। यदि ऐसा एकाधबार हुआ भी है तो इसे सार्वकालिक नियम माना या बनाया नहीं जा सकता है। एकाधबार की घटना को हमेशा अपवाद ही माना गया है। उनका यह कहना सत्य है कि पड़ोसी देश हमारे देश से दुश्मनी की भावना रखता है और आतंकी तैयार कर भारत की सीमा में घुसपैठ कराता है, पर क्या इसका अंतिम उपाय बस यही बचा है कि आंतकियों की गोली का जवाब गोली से दिया जाए। मैं जानना चाहता हूँ क्या इससे स्थायी शांति मिल सकती है। हो सकती है कि बाहरी शांति और समस्या का क्षणिक समाधान भले मिल जाए पर मानसिक शांति और स्थायी हल नहीं निकल

सकता है। इतिहास में मौर्य सम्राट अशोक ने क्या शांति प्राप्त कर ली थी? नहीं न। आखिर उसे शांति के लिए तथागत गौतम बुद्ध की शरण में जाना ही पड़ा था। महाभारत युद्ध में विजयी पांडव और युधिष्ठिर ने कौरवों को उन्हीं की भाषा में जवाब दिया पर वे स्वयं भी चैन से नहीं रह सके। अध्यक्ष महोदय, मेरे योग्य साथी ने कहा कि 'सुधरने का अवसर दिए जाने पर ये आतंकवादी और भी बिगड़े हैं" पर ऐसा नहीं है। आज भी अनेक उदाहरण ऐसे हैं जब आतंकियों को सुधरने का अवसर दिया गया तो वे अपना हथियार त्याग देश की मुख्य धारा में शामिल हुए और उन्होंने कोई असामाजिक कार्य नहीं किया। मैं तो कहूँगा कि यदि आतंकवाद को रोकना है, नए आतंकी को देश में आने से रोकना है तो सीमा की गहन चौकसी की जानी चाहिए। देश विरोधी कार्यों करने वाले की सूचना मिलते ही उसे प्राथमिक स्तर पर ही सुधारा जाना चाहिए। न्याय प्रणाली में सुधार होना चाहिए और असंतुष्टों के साथ मिल-बैठकर बातचीत की जानी चाहिए, क्योंकि हिसा का जवाब हिंसा न कभी हुआ है और न कभी होगा। अत: आतंकवादियों की गोली का जवाब गोली से न देकर सौहाद्रपूर्ण वातावरण में बातचीत के माध्यम से समझा-बुझाकर उन्हें मुख्यधारा में जोड़ने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिए।
धन्यवाद।

परीक्षण प्रश्न

निर्देश– उत्तर शब्द सीमा-एक या दो शब्द। **अतिसंक्षिप्त उत्तर**

1. इस वाद-विवाद का विषय क्या है? ------------------------------
2. इसके प्रतिभागी कौन-कौन हैं? ------------------------------
3. पक्ष में बोलने वाला व्यक्ति क्या कहना चाहता है? ------------------------------
4. विपक्ष के वक्ता की राय किस प्रकार अलग है? ------------------------------
5. आतंकी देश को किस तरह क्षति पहुँचाते हैं? ------------------------------
6. आतंकवाद का समर्थक देश कौन-सा है? ------------------------------
7. विपक्ष में बोलने वाले ने अपने समर्थन में किन-किन महापुरुषों का उदाहरण दिया? ------------------------------
8. विपक्ष का वक्ता आतंकवादियों को सुधरने का अवसर देने का समर्थन क्यों करता है? ------------------------------
9. कुछ बड़ी आतंकवादी घटनाओं के नाम बताइए। ------------------------------
10. इसमें संस्कृत की किस उक्ति का प्रयोग हुआ है? ------------------------------

कविता

1. नीचे दी जा रही कवि मैथिली शरण गुप्त की कविता का पठन कीजिए-

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

परीक्षण प्रश्न

निर्देश– अति संक्षेप में उत्तर लिखें।	**अतिसंक्षिप्त उत्तर**
1. मनुष्य कैसा प्राणी है?	मरणशील
2. असली मनुष्य कौन है?	जो दूसरों की भलाई करते हुए जीवन त्यागता है।
3. उदार व्यक्तियों की कीर्ति का बखान कौन करता है?	सरस्वती
4. रंतिदेव का नाम क्यों प्रसिद्धि है?	अपना भोजन भूखे को खिला देने के कारण।
5. कर्ण का नाम क्यों प्रसिद्धि हुआ?	अपने शरीर के अंग दान देने के कारण।
6. विरुद्धवाद कहाँ बह गया?	गौतम बुद्ध के दया प्रवाह में।
7. संसार में कोई भी अनाथ क्यों नहीं है?	क्योंकि ईश्वर सभी की मदद के लिए तैयार रहते हैं।
8. सबसे बड़ा अनर्थ क्या है?	भाई द्वारा भाई की मदद न करना।
9. कविता का मूल भाव क्या है?	परोपकार करने की प्रेरणा।
10. अभीष्ट लक्ष्य की ओर कैसे बढ़ना चाहिए?	मार्ग में आने वाली विपत्तियों पर विजय पाते हुए।

2. सुमित्रानंदन पंत की निम्नलिखित कविता का पठन कीजिए

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और, फूल-फल कर, मैं मोटा सेठ बनूँगा!

पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गए!
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर!
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था!

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से!
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूलीं, शरदें मुंसकाईं,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन!
औ' जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर,

मैंने कौतूहल वश, आँगन के कोने की
गीली तह को यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे!
भू के अंचल में मणि माणिक बाँध दिए हों!

मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को,
और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन!
किंतु, एक दिन, जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था, – तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!

देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटी-छोटी छाता ताने खड़े हुए हैं!
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी,
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिंब तोड़ कर निकले चिड़ियों के बच्चों-से!

निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता,
सहसा मुझे स्मरण हो आया,—कुछ दिन पहिले,
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हे नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है!

तब से उनको रहा देखता,—धीरे-धीरे
अनगिनती पत्तों से लद, भर गईं झाड़ियाँ,
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे।
बेलें फैल गईं बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को!
मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढ़ता है!

छोटे तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर

सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से!

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं!
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,
यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को!
बचपन में, छिः, स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ!
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की—जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ।
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे।

निर्देश– अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए। **अतिसंक्षिप्त उत्तर**

1. कवि ने किसके बीज बोए थे? ------------------------------
2. बीज अंकुरित क्यों नहीं हुए? ------------------------------
3. कवि ने पुन: कितने समय बाद बीज बोए? ------------------------------
4. हेमंत ऋतु का जनजीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? ------------------------------
5. मणि माणिक किसे कहा गया है? ------------------------------
6. नवागत पौधों की तुलना किनसे की गई है? ------------------------------
7. 'हरे-हरे सौ झरने फूटे' का भाव क्या है? ------------------------------
8. खिले फूल कैसे लगते थे? ------------------------------
9. रत्न प्रसविनी कौन है? ------------------------------
10. कवि ने किसकी/कौन-सी फसल उगाने का संदेश दिया है? ------------------------------

वाचन कौशल का मूल्यांकन

वाचन का अर्थ है-बोलना। इसका मूल्यांकन निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है-

भाषण

भाषण को मौखिक अभिव्यक्ति के वाचन पक्ष का उत्कृष्ट रूप कहा जाता है। छात्रों एवं लोगों को भाषण देने के विविध अवसर मिलते हैं। भाषण के माध्यम से ही नेता सत्ता के केंद्र तक पहुँच जाते हैं तथा विक्रय प्रतिनिधि लोगों को अपने वश में कर अपना उद्देश्य पूरा कर लेते हैं। भाषण देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. यथासंभव भाषण को कंठस्थ कर लेना चाहिए।
2. आईने के सामने खड़े होकर उचित भाव-भंगिमा के साथ भाषण का अभ्यास करना चाहिए।
3. सरल, सहज और बोधगम्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिसे सभी समझ सकें।
4. भाषण में शामिल कहावतें, लोकोक्तियाँ, मुहावरे और सूक्तियाँ इसे रोचक बनाती हैं।
5. भाषण से पूर्व उचित ढंग से उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों व अध्यक्ष महोदय को संबोधित करना चाहिए।
6. भाषा में आरोह-अवरोह का भी ध्यान रखना चाहिए।

1. भाषण के उदाहरण

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, अध्यापकगण एवं मेरे प्रिय साथियो! मैं आपके सम्मुख 'वर्तमान में नारी शिक्षा की आवश्यकता' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आशा है आप लोग इसे ध्यान से सुनेंगे।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। मनुष्य से हमारा तात्पर्य पुरुष एवं नारी से है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा है। पेट तो पशु भी भरते हैं, किंतु पुरुष अथवा नारी केवल पेट भरकर ही जीवन-यापन नहीं कर सकते। शिक्षित और अशिक्षित व्यक्ति के जीवन में बहुत अंतर है। **'बिना पढ़े नर पशु कहलावै'** अक्षरश: सत्य है। अच्छाई-बुराई का निर्णय शिक्षित ही ले पाता है। अशिक्षित को केवल पेट भरने का कार्य पता होता है, परंतु वह स्तरीय जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

नारी जगत् की अनदेखी प्रारंभ से ही की जा रही है। इसका कारण उनकी अशिक्षा रही है। इसे घर की चारदीवारी में बंद करके मात्र सेविका अथवा मनोरंजन का साधन समझा जाता रहा है।

आजादी के बाद भी गाँवों में लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल नहीं होते थे। दूर के स्कूलों में ग्रामीण अपनी लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने नहीं भेजते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि नारी हर क्षेत्र में पिछड़ गई।

नारी सबको जन्म देने वाली है। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, सबकी जन्मदात्री नारी है। उस पर सब तरह के प्रतिबंध लगाए जाते हैं। उनका कार्य बच्चे उत्पन्न करना, पालन-पोषण करना और परिवारजनों की सेवा करना मात्र है। प्रतिबंध लगाने वाले यह भूल जाते हैं कि बालक पर नारी के संस्कारों का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। नारी के गुणों का समावेश की नीरू में क्यों में होता है पिरवारक संर्ण किस नारीप वर्ष होता है। अतः नारी का शिक्षित होना अति आवश्यक हो।

नारी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार वैदिक काल में था। अनेक ग्रंथों में महिला रचनाकारों का नाम मिलता है। वेद व पुराणों में स्पष्ट कहा गया है कि नारी के बिना पुरुष कोई भी कार्य संपन्न नहीं कर सकता। इसी कारण महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। समय बदलने के साथ-साथ महिला की शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जाने लगा।

नारी मनुष्य को हर क्षेत्र में सहयोग करती है। महाभारत, रामायण आदि महाकाव्यों से पता चलता है नारी ने विजय प्राप्त कर ध म की स्थापना में सहयोग दिया है। आजादी के संघर्ष में भी नारियों ने पुरुषों का कंधे-से-कंधा मिलाकर साथ दिया। आज नारी जागृत हो चुकी है। नारी जाति की जागृति देखकर ही पुरुष को विवश होकर उसके लिए शिक्षा के द्वार खोलने पड़ रहे हैं। आज सरकार भी नारी-शिक्षा के लिए प्रयासरत है। सरकार अपने स्तर पर गाँव स्तर तक स्कूलों व कॉलेजों की स्थापना कर रही है तथा नारी-शिक्षा को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं को अनुदान देती है। तकनीकी शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को बड़े पैमाने पर नियमों में छूट दी जा रही है। आज तो मुक्त कंठ से कहा जा रहा है

'पढ़ी-लिखी लड़की, रोशनी घर की'

नारी-शिक्षा का ही परिणाम है कि आज प्रत्येक विभाग में नारी को स्थान मिल रहा है और वे उत्तम कार्य कर अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दे रही हैं। शिक्षित लड़कियाँ घर की जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रही हैं। इससे दहेज समस्या भी कम हुई है। इसके अलावा पर्दा प्रथा, शिशु हत्या आदि कुप्रथाओं में भारी कमी आई है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नारी-शिक्षा का विशेष महत्व है। समय की माँग है कि महिलाओं को साथ लिए बिना देश का पूर्ण विकास संभव नहीं। आज नारी शिक्षा के कारण स्वावलंबी बनती जा रही है परंतु यह समग्र रूप से पूरे देश में नहीं हो पा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों की तुलना में काफी पिछड़ापन है। अत: नगरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में नारियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

परम आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, गुरुजन एवं मेरे प्रिय सहपाठियो! मैं आपके सम्मुख परोपकार की महत्ता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आशा है कि आप सभी इसे ध्यान से सुनने का कष्ट करेंगे-

परोपकार के संबंध में हमारे ऋषि-मुनियों ने, हमारे धर्म-ग्रंथों में अनेक प्रकार से चर्चाएँ की हैं। केवल चर्चाएँ ही नहीं की अपितु उन्हें अमल भी किया है। जीवन की सार्थकता परोपकार में ही निहित है, इसके लिए उन्होंने जो सिद्धांत बनाए उसके अनुसार स्वयं उस पर चले।

इसी संदर्भ में श्री तुलसीदास जी ने कहा है-

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई'।।

परोपकार हेतु प्रकृति भी सदैव तत्पर रहती है। प्रकृति की परोपकार भावना से ही संपूर्ण विश्व चलायमान है। प्रकृति से प्रेरित होकर मनुष्य को परोपकार के लिए तत्पर रहना उचित है। प्रकृति के उपादानों के बारे में कहा जाता है कि वृक्ष दूसरों को फल देते हैं, छाया देते हैं, स्वयं धूप में खड़े रहते हैं। कोई भी उनसे निराश होकर नहीं जाता है। उनका सब कुछ परार्थ के लिए होता है। इसी प्रकार नदियाँ स्वयं दूसरों के लिए निरंतर निनाद करती हुई बहती रहती हैं। इस प्रकार संपूर्ण प्रकृति आचरण से लोगों को परोपकार का संदेश देती हुई दिखाई देती है।

भारतीय-संस्कृति में परोपकार के महत्व को सर्वोपरि माना गया है। भारत के मनीषियों ने जो उदाहरण प्रस्तुत किए, ऐसे उदाहरण धरती क्या संपूर्ण ब्रहमांड में भी नहीं सुने जाते हैं। यहाँ महर्षि दधीचि की परोपकार भावना से प्रेरित होकर देवता भी सहायता के लिए उनसे याचना करते हैं और महर्षि अपने जीवन की चिंता किए बिना सहर्ष उन्हें अपनी हड्डियाँ तक दे देते हैं। याचक के रूप में आए इंद्र को दानवीर कर्ण अपने जीवनरक्षक कवच और कुंडलों को अपने हाथ से उतारकर दे देते हैं। राजा रंतिदेव स्वयं भूखे रहकर आए हुए अतिथि को भोजन देते हैं। इन उदाहरणों के आधार पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यहाँ की संस्कृति में अतिथि को देवता समझते हैं।

मित्रो! परोपकार में स्वार्थ की भावना नहीं होती है। आज परोपकार में मनुष्य अपना स्वार्थ देखने लगा है। वणिक-बुद्ध से अपने हानि की गणना कर परोपकार की ओर प्रेरित होता है। इस भावना के प्रादुर्भाव से पारस्परिक वैमनस्यता बढ़ी है। लोगों में दूरियाँ बढ़ी हैं। आपद्-समय में भी हम सहायता करना भूलते जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति एकाकी जीवन जीने का आदी होता जा रहा है। सामूहिकता की भावना नष्ट होती जा रही है, क्योंकि आज हम परोपकार से दूर होते जा रहे हैं। लेकिन मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि जीवन में सुख की अनुभूति परोपकार से होती है। स्वयं प्रगति की ओर बढ़ते हुए दूसरों को अपने साथ ले चलना मनुष्य का ध्येय होगा तो सम्पूर्ण मानवता धन्य होगी। मात्र अपने स्वार्थ में डूबे रहना तो पशु प्रवृत्ति है। मनुष्यता से ही मनुष्य होता है। जिस दिन परोपकार की भावना पूर्णत: समाप्त हो जाएगी उस दिन धरती शस्य-स्यामला न रहेगी, माता का मातृत्व स्नेह समाप्त हो जाएगा।

सरस्वर वाचन और कविता-पाठ

कविता वाचन भी एक कला है। निरंतर अभ्यास द्वारा इस कला को विकसित और परिष्कृत किया जा सकता है। कविता वाचन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. कविता वाचन में उच्चारण शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए।
2. कविता पूरी तरह कंठस्थ होनी चाहिए ताकि बीच में रुकना न पड़े या कविता की प्रति न ढूँढना पड़े।
3. कविता की भाषा का स्तर श्रोताओं के ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप होना चाहिए।
4. कविता में भावों के स्पष्टीकरण यथा स्थान रुककर पठन करना चाहिए।
5. भावानुसार स्वर में उतार-चढ़ाव, गति-लय, अनुप्तान, बलाघात का ध्यान रखना चाहिए।
6. कविता के मूल संदेश या मूल भाव वाली पंक्तियों को दोहराना चाहिए। ये पाठकों पर विशेष प्रभाव छोड़ती हैं।
7. कविता पाठ करते समय स्वयं भावों में डूब जाना चाहिए।
8. जब श्रोता तालियाँ बजा रहें हो तब कविता-पाठ नहीं करना चाहिए।

पथ की पहचान

पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर दौड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी, पंथ का अनुमान कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
जब असंभव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनों के निलय,
किंतु जग के पंथ पर यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को, ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरतीं, एक दुनिया डूब जाती,
'आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों',
कंटकों की इस अनोखी सीख का सम्मान कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की!!
यहीं कहीं पर बिखर गई वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला-सी।।
सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिंता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।
बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी।।
इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।
बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।
यह समाधि, यह चिर समाधि–
है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला स्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

परिचर्चा

किसी समसामयिक विषय पर कुछ विशेषज्ञों द्वारा किया जाने वाला विचार-विमर्श परिचर्चा कहलाता है। उनकी परिचर्चा का आरंभ संचालक द्वारा विषय आरंभ कराने से होता है। इसके बाद विशेषज्ञ बारी-बारी से अपने-अपने विचार उनके बीच रखते हैं। संचालक उसमें अपने व्यक्तिगत

विचार उनके बीच नहीं रखता है पर जब किसी मुद्दे पर उत्तेजित हो कोई विशेषज्ञ विषय से हट कर बातें करने लगता है तो संचालक उन्हें वापस विषय पर लाता है। वह सदस्यों या विशेषज्ञों के बीच की कड़ी होता है। परिचर्चा के अंत में निष्कर्ष बताते हुए वह समापन की घोषणा करता है। विद्यालय में परिचर्चा के कुछ निम्नलिखित विषय हो सकते हैं-

- शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता
- विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता
- गिरिता शिक्षा स्तर
- पुस्तकालय कितना उपयोगी
- हरियाली कैसे बढ़ाएँ
- पानी कैसे बचाएँ
- स्वच्छता को आदत बनाएँ आदि।

समाचार वाचन

जनसंचार माध्यमों से मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया है। इन माध्यमों में समाचार-पत्र, टेलीविजन, रेडियो, पत्र-पत्रिकाएँ आदि प्रमुख हैं। समाचार-पत्र शिक्षित मनुष्य की आवश्यकता बन गए हैं। विद्यार्थियों में समाचार पठन की स्वस्थ आदत विकसित करने से उनके ज्ञान और जागरूकता में वृद्ध होगी तथा स्वस्थ मनोरंजन भी होगा। इसकी शुरूआत प्रार्थना-स्थल से की जा सकती है। प्रत्येक विद्यार्थी समाचार-पत्र से कुछ पंक्तियाँ पढ़कर आए और क्रमानुसार विद्यालय के प्रार्थना-स्थल पर सुनाए। इससे विद्यार्थियों की वाचन कला का विकास होगा और अन्य छात्रों का ज्ञानवर्धन होगा। समाचार-पत्र, दूरदर्शन और रेडियो जैसे स्रोतों से समाचार संकलन किया जा सकता है।

समाचार वाचन को प्रभावी बनाने के लिए-

- शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए।
- समाचार की प्रस्तुति संक्षेप में की जानी चाहिए।
- समाचारों की पुनरुक्ति नहीं होनी चाहिए।
- समाचारों की भाषा सरल तथा वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए।
- समाचार वाचन की गति न बहुत द्रुत हो और न अत्यंत सुस्त या धीमी। इसके लिए संतुलित गति अपनाना चाहिए।

उदाहरण

सीधे बुक होंगे कम्युनिटी हॉल

नई दिल्ली (प्र. सं.)। पूर्वी नगर निगम के सदन की बैठक में मंगलवार को कमिश्नर एसएस यादव ने जानकारी दी कि निगम के कम्युनिटी हॉल की बुकिंग कोई भी व्यक्ति निगम से संपर्क करके करा सकेगा। इसके लिए उपराज्यपाल ने आदेश दे दिए हैं।

निगम के कम्युनिटी हॉल बुक कराने के लिए काउंसलर के अनुमति पत्र की आवश्यकता होती है। यह पत्र पेश करने पर ही निगम का सामुदायिक सेवा विभाग कम्युनिटी सेंटर की बुकिंग करता है। काउंसलर अपने कार्यालय में एक रजिस्टर रखते हैं जिसमें उस व्यक्ति का नाम दर्ज किया जाता है जो कम्युनिटी सेंटर लेने के लिए संपर्क करता है। लोगों को यही रजिस्टर देखकर बताया जाता है कि जिस तिथि में सेंटर चाहिए, उस दिन बुकिंग है या नहीं, लेकिन उपराज्यपाल के आदेश के बाद अब सीधे निगम से संपर्क करके कम्युनिटी हॉल बुक कराया जा सकेगा।

यदि पहले से हॉल बुक नहीं होगा तो आप शुल्क जमा करके उसे बुक करा सकेंगे। इसका पार्षद विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि पार्षदों की भूमिका खत्म कर दी जाएगी तो वार्ड के बाहर रहने वाले लोग हॉल बुक करा लेंगे।

मुंबई। जेट एयरवेज ने हवाई यात्रा के टिकटों की महासेल लगाते हुए 50 फीसदी डिस्काउंट पर टिकट बुक कराने ऑफर दिया है।

जेट एयरवेज ने घरेलू नेटवर्क पर एक तरफ की यात्रा के लिए न्यूनतम 2250 रुपये के विशेष किराये की मंगलवार को पेशकश की है। कंपनी ने 57 गंतव्यों के लिए 20 लाख सस्ती सीटों की पेशकश की है। इसके तहत 23 फरवरी तक आप इस साल के 31 दिसंबर तक किसी भी तारीख के टिकट बुक करा सकते हैं।

ऑफर में 750 किलोमीटर तक के टिकट 2,250 रुपये में, 1400 किलोमीटर तक 3,300 रुपये और उससे ज्यादा दूरी के टिकट 3,800 रुपये में उपलब्ध है। (एजेंसी)

बिजली कंपनी की गलती से तीन परिवार अंधेरे में

नई दिल्ली। पंकज रोहिला। बीएसईएस की लापरवाही से एक बिल्डिंग में रह रहे तीन परिवारों को छह दिनों से बिना बिजली के रहना पड़ रहा है। ये परिवार मयूर विहार फेज-1 में रहते हैं। बिजली कंपनी ने करीब 3.60 लाख का बकाया बताकर इनके तीन घरेलू मीटर उखाड़ दिए हैं, जबकि जाँच में राशि बकाया नहीं होने की बात सामने आई है। बिजली कंपनी ने इसे कंप्यूटर से हुई गड़बड़ी बताई है और जल्द ही बिल्डिंग में मीटर लगाने का आश्वासन दिया है।

यह मामला मयूर विहार फेज-1 के पटपड़गंज इलाके स्थित बंसल भवन का है। इस परिसर में तीन परिवार रहते हैं। भवन के बिल नंबर 270220060011 पर तीन घरेलू मीटर लगे थे। 2006 से पहले इस मकान पर बीएसईएस की राशि बकाया थी और इसके बाद यह मामला कोर्ट में गया था। जहाँ उपभोक्ताओं और कंपनी के बीच समझौता हो गया था। भुगतान के बाद उपभोक्ताओं को क्लीनचिट मिल गई थी। इसके बाद कंपनी ने बकाया राशि न होने का प्रमाण-पत्र भी जारी कर दिया था। मामले के निपटारे के बाद बीएसईएस की तरफ से पाँच-सात बार टीमें आई और इन्हें कंपनी की ओर से जारी प्रमाण-पत्र दिखाया गया। इसके बाद 15 फरवरी को परिसर में पहुँची टीमों ने वहाँ रहने वाली महिला से मीटर जाँच का हवाला दिया था और मीटर ले गए। इसके बाद से ही यहाँ के परिवार बिना बिजली के रह रहे हैं। परिवार के लोगों को जल्द बिजली कनेक्शन जोड़ने का आश्वासन तो दिया गया है लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया है कि कब तक यह कार्य पूर्ण कर दिया जाएगा। कंपनी की लापरवाही का खामियाजा उपभोक्ताओं को झेलना पड़ रहा है। वहीं, बीएसईएस प्रवक्ता सी.पी. कामत का कहना है कि परिसर पर कोई राशि बकाया नहीं और कंप्यूटर रिपोर्ट में स्थिति स्पष्ट न होने की वजह से यह लापरवाही हुई है।

(तीनों समाचार 20 फरवरी, 2013 के हिंदुस्तान दैनिक से साभार)

कहानी सुनाना

कहानी शब्द का नाम आते ही मन उल्लसित हो जाता है। कहानी सुनना और सुनाना दोनों ही रोचक लगता है। यह मौखिक अभिव्यक्ति को सबसे रोचक, प्रभावपूर्ण एवं सशक्त माध्यम है। कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए-

- कहानी सुनाने के लिए रोचक, मनोरंजन ज्ञानवर्धक संक्षिप्त कहानी का चुनाव करना चाहिए।
- घटनाक्रम के अनुसार स्वर में आरोह-अवरोह आवश्यक है।
- कहानी पूर्णतया कंठस्थ होनी चाहिए जिससे बीच में अटकना न पड़े।
- कहानी सुनाते समय सरल भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए।
- पंचतंत्र, हितोपदेश तथा पुराणों की कहानियाँ सुनाने को प्राथमिकता देना चाहिए।
- कहानी के अंत में नैतिक बातों या उसमें निहित शिक्षा का उल्लेख करना चाहिए।

उदाहरण

1. आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, अध्यापकगण एवं मेरे सहपाठियो! आज मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ, जिसका शीर्षक है-

सच बालक।

यह कहानी उस समय की है जब यातायात के साधनों का विकास नहीं हुआ था। लोग पैदल, ऊँटों, घोड़ों तथा बैलगाड़ियों से यात्रा किया करते थे। रेगिस्तानी इलाकों में ऊँट ही आवागमन का एकमात्र साधन था। प्राय: लोग पैदल यात्रा किया करते थे। यह कहानी भी कुछ ऐसे ही इलाके से संबंधित है।

बगदाद में अब्दुल कादिर नामक एक बालक अपने परिवार के साथ रहता था। उसकी नानी का घर उसके घर से काफी दूर था। एक बार उसकी माँ ने उसे नानी से मिलने के लिए भेजा। दस वर्षीय अब्दुल कादिर को रेगिस्तानी इलाके में सुनसान रास्ते पर भेजना खतरे से खाली न था। ऐसे रास्तों पर सदैव डाकुओं का भय बना रहता था। डाकुओं से बचने के लिए यात्री समूह बनाकर यात्रा किया करते थे। कादिर की माँ को उसकी नानी के पास कुछ अशर्फियाँ भिजवानी थी। उसने कुछ उपाय सोचा और इन अशर्फियों को कादिर की सदरी के अस्तर में छिपाकर सिल दिया, जिससे किसी को इनका पता न चले। उसने इन्हें अपनी माँ को देने के लिए कादिर से कहा। अगले दिन प्रात: कादिर जब नानी के घर जाने के रवाना हुआ तो उसकी माँ ने कादिर से कहा, “बेटा! झूठ मत बोलना। झूठ बोलना पाप है।” उसने कादिर को व्यापारियों के काफिले के साथ कर दिया जो उसी रास्ते से जा रहा था। चलते-चलते दोपहरी हो गई। यात्री सुनसान इलाके से जा रहे थे कि तभी रेत के टीले के पीछे से डाकुओं के दल ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने अपनी-अपनी चमकती तलवारें निकालकर व्यापारियों से सामान तथा माल उनके हवाले करने के लिए कहा। डरे-सहमें व्यापारी अपना रुपया-पैसा और माल डाकुओं को देते गए। डरा-सहमा कादिर एक किनारे खड़ा यह सब देख रहा था। अचानक एक डाकू की नजर कादिर पर पड़ी। वह कादिर के पास जाकर बोला, “क्यों रे बालक! तेरे पास भी कुछ है क्या? जल्दी बोल” हकलाते हुए कादिर ने बताया, “मेरे पास दस अशर्फियाँ हैं।” डाकू ने बालक की तलाशी ली पर उसे एक भी न मिली। उसने बालक से कहा, “सच बता तेरे पास क्या है?” बालक कादिर ने फिर वही जवाब दिया- “दस अशर्फियाँ।” इतने छोटे से बालक के पास दस अशर्फियों की बात सुनकर उसे विस्मय हुआ। उसने बालक का हाथ पकड़ा और अपने सरदार के पास ले जाकर बोला, ‘सरदार, यह बालक अपने पास दस अशर्फियाँ बता रहा है।” डाकुओं के सरदार को आश्चर्य हुआ। उसने बालक की जेबें टटोली पर निराशा ही हाथ लगी। उसने कड़ककर बालक से पूछा, ‘ कहाँ हैं तेरी अशर्फियाँ? चल जल्दी निकाल”। इतना सुनते ही कादिर ने अपनी सदरी उतारी और उसका अस्तर फाड़ दिया। अस्तर के फटते ही अशर्फियाँ खन-खन करती

हुई रेत पर गिरने लगीं। डाकुओं के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। डाकुओं ने अपने सरदार से कहा कि हम इसकी अशर्फियाँ ढूँढ़ नहीं सकते थे। सरदार ने पूछा, 'तूने हमें अशर्फियों के बारे में क्यों बता दिया? हम तो इन्हें ढूँढ़ ही नहीं सकते थे।" बालक कादिर ने सरदार को बताया कि चलते समय मेरी माँ ने कहा था, "बेटा झूठ मत बोलना। झूठ बोलना पाप है।"

सरदार ने अपने डाकू साथियों को संबोधित करते हुए कहा, "यह छोटा बालक अपनी माँ का इतना कहना मानता है और हम बड़े होकर भी ईश्वर का कहना नहीं मानते हैं। आज से हम भी ईश्वर का कहना मानेंगे। अब हम लूट-मार, मार-काट नहीं करेंगे और मेहनत की रोटी खाएँगे। उन्होंने व्यापारियों से लूटा रुपया-पैसा और सारा माल वापस कर दिया। सरदार ने बालक की अशर्फियाँ उसी तरह सदरी में सुरक्षित रख दिया और चले गए। अपना लूटा माल वापस पाकर सभी व्यापारी बहुत खुश हुए। उन्होंने बालक कादिर को गले लगा लिया और अपने ऊँट पर बिठाकर उसकी नानी के घर छोड़ दिया।

कहा जाता है कि बड़ा होकर यह बालक एक बड़े पीर के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जिसने लोगों को सच्चाई के रास्ते पर चलने की आजीवन सीख दी।

शिक्षा-विपरीत परिस्थितियों में भी हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए।

2. आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, अध्यापकगण एवं मेरे सहपाठियो! आज मैं आपको एक कहानी सुनाने जा रहा हूँ। इसकी शीर्षक है-**हार की जीत**।

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान्। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते, और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। ऐसी लगन, ऐसे प्यार ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था, रुपया, माल, असबाब, जमीन; यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परंतु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असहय थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूंगा, उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वह उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसा चलता है, जैसे मोर घन-घटा को देखकर नाच रहा हो। गाँवों के लोग इस प्रेम को देखकर चकित थे; कभी-कभी कनखियों से इशारे भी करते थे; परंतु बाबा भारती को इसकी परवाह न थी। जब तक संध्या-समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आती।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा-"खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया-"आपकी दया है।"

'कहो, इधर कैसे आ गए?"

‘सुलतान की चाह खींच लाई।”

‘विचित्र जानवर है। देखोगे, तो प्रसन्न हो जाओगे।”

“मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।”

‘उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।”

“कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।”

‘क्या कहना। जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।”

‘बहुत दिनों से अभिलाषा थी; आज उपस्थित हो सका हूँ।” बाबा और खड्गसिंह, दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से। खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्त्रों घोड़े देखे थे; परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, ‘भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ?” कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल हाने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला-‘परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा?”

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए, और उसकी पीछ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गए। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लौट गया। वह डाकू था, और जो वस्तु उसे पसंद आ जाय, उस पर अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा-बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परंतु कई मास बीत गए, और वह न आया यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए और इस भय को स्वप्न के भय बी नाई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उसकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को, और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई-‘ओ बाबा, इस कंगले की भी बात सुनते जाना।”

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया। देखा एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले-‘क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?”

‘रामावाला यहाँ से तीन मील है; मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।”

‘वहाँ तुम्हारा कौन है?”

“दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ!”

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा, और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा, और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा

है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।
बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे, और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले-"जरा ठहर जाओ।" खड्गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा-"बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"
'परंतु एक बात सुनते जाओ।"
खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा-"यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"
"बाबा जी आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"
'अब घोड़े का नाम न लो, मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"
खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि मुझे इस घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के समाने प्रकट न करना। उससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा; परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं, और पूछा-"बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है?"
बाबा भारती ने उत्तर दिया-"लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।"
और यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न था। बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, "कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूंगा। इसकी रखवाली में वह कई रातें सोये नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दीख पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्योछावर कर दिया। ऐसा मनुष्य नहीं, देवता है।"
रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश पर तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंकते थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे; परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की तरफ से बेपरवाह कर दिया था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर

बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

अंधकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया, और चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा के पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वह वहीं रुक गए। घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। बाबा भारती दौड़ते हुए अंदर घुसे, और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, जैस बिछ्ड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिलकर रोता है। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते. बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते और कहते थे-'अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।'

थोड़ी देर के बाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे, ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था।

दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया।

घटना का वर्णन

कोई घटना जो हमारी आँखों के सामने घटी हो अथवा जिसमें हम शामिल रहे हों, का वर्णन करना मौखिक अभिव्यक्ति की वाचन दक्षता प्रदर्शित करता है। किसी घटना का वर्णन, संक्षिप्त रूप में सरल भाषा और रोचक शैली में प्रस्तुत करना चाहिए। इनके अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से बचना चाहिए। मेले का वर्णन, किसी खेल का आँखों देखा वर्णन, विद्यालय का वार्षिकोत्सव का वर्णन, शादी-विवाह में घटी कोई घटना इसका विषय बन सकती है।

उदाहरण

गत वर्ष मुझे अपनी ममेरी बहन के वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने दिल्ली से आगरा जाना था। मैं ताज एक्सप्रेस से आगरा गया और वहाँ से मामा के घर। अगले दिन उनके यहाँ वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न होना था। मैंने भी मामा-मामी से कुछ काम पूछकर हाथ बँटाना शुरू कर दिया। शाम तक आवश्यक कार्य निबटा लिए गए। अगले दिन मुझे अपने मित्र शिवम को लेने आगरा स्टेशन पर जाना था। वह मेरे साथ दिल्ली से आगरा नहीं आ सका था। उसे उसके कार्यालय से छुट्टी नहीं मिली थी।

मैं और शिवम साथ-साथ पढ़ा करते थे। उसकी माता ने ही उसकी पढ़ाई-लिखाई पूरी कराई। हाँ, आवश्यकता होने पर पिता जी शिवम की आर्थिक सहायता कर दिया करते थे, जिसे वह कृतज्ञता के भाव से ले लेता था। हम दोनों ने साथ-साथ पी. सी. एस. परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह नायब तहसीलदार और मैं खंड विकास अधिकारी के पद पर कार्य कर रहा था। मेरी ममेरी बहन किसी कार्यालय में एकाउटेंट लगी थी, जिसकी शादी थी। जिस लड़के से शादी तय थी, वह चार्टेड एकाउटेंट था। खैर तय समय पर ट्रेन आ गई और मैं उसे लेकर घर आ गया। तय समय पर बारात आ गई पर फेरों से पहले ही लड़के के पिता गुस्से में बोले जा रहे थे कि उन्हें चार लाख की कार की जगह कम-से-कम दस लाख की लक्जरी गाड़ी चाहिए थी। उन्होंने वर को वरमाला की रस्म और शादी तब तक टालने की बात कही जब तक उनकी माँग पूरी करने के लिए कम-से-कम पाँच लाख रुपये नहीं मिल जाते। इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम की व्यवस्था करना हँसी का खेल न था।

दुर्भाग्य से लड़के ने भी अपने पिता की बात मानकर मंडप से बाहर आ गया। मेरी ममेरी बहन वरमाला लिए खड़ी रह गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। सब उसे समझा-बुझाकर घर में ले गए। इधर बारातियों ने आपस में कुछ विचार-विमर्श किया और लड़के के पिता को समझाने लगे, क्योंकि कन्या पक्ष के कुछ लोगों ने पुलिस बुलाने की बात कह दी थी। खैर लड़का और उसके पिता जी इस शर्त पर शादी के लिए राजी हुए कि पाँच लाख रुपये विवाह के 15 दिनों के अंदर भिजवा दिए जाए। मामा-मामी एवं अन्य रिश्तेदार इस बात पर अभी विचार कर ही रहे थे कि मेरी ममेरी बहन नूतन ने उस लड़के से विवाह करने से मना कर दिया और कहा कि उन लोगों को बारात लेकर लौटने को कह दिया जाए। इस अप्रत्याशित बात से मामा-मामी और भी परेशान हो उठे। उन्होंने अपनी बेटी को इज्जत की दुहाई देते हुए विवाह करने का अनुनय-विनय करने लगे। उन्होंने यह भी कहा कि इस घटना के बाद तुझसे कौन शादी करेगा, पर वह टस-से-मस नहीं हो रही थी। आखिरकार बारात बैरंग वापस लौट गई। अब मेरे मामा-मामी अपनी बेटी पर क्रोध उतारने ९ागे और उसे दोषी ठहराने लगे। इधर लड़की विवाह-मंडप को बार-बार देख रोए जा रही थी। अचानक मेरा मित्र मुझे एक ओर ले गया और कहा “नूतन से पूछकर देख ले। यदि वह चाहे तो मैं उससे इसी मंडप में विवाह करने को तैयार हूँ।” मैंने सारे रिश्तेदारों से कहा कि वे नूतन को अकेला छोड़ दें। मैं अपने दोस्त को लेकर उसके कमरे में गया और सारी बात कह सुनाई। नूतन ने मेरे मित्र से दहेज की बात पूछी तो उसने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए, क्योंकि वह आज जो कुछ भी है अंकल (मेरे पिता जी) के कारण है। नूतन की स्वीकृति मिलते ही मैंने यह बात अपने मामा-मामी को बताई। उन्हें इस बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। आनन-फानन में गमगीन माहौल खुशी में बदल गया और सवेरे तक वैवाहिक रस्में पूरी हो गई। आज वे दोनों सुखमय जीवन बिता रहे हैं। वह घटना आज भी मेरी आँखों के सामने घूम जाती है। सोचता हूँ, चलो जो हुआ अच्छा ही हुआ।

टेलीफ़ोन वार्ता

किसी काल में कल्पना की वस्तु माने जाने वाले टेलीफोन ने मानव जीवन को अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है। आज यह हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। टेलीफोन का ही परिष्कृत एवं आधुनिक रूप मोबाइल फोन है। आज मोबाइल फोन सर्वसुलभ और सस्ते होने के कारण हर व्यक्ति की जरूरत बनते जा रहे हैं। कार्यालय, उद्योग, व्यवसाय, स्थान विशेष तक सीमित रहने वाला टेलीफोन आज मोबाइल फोन के रूप में आम आदमी तक की जेब में पहुँच चुका है। अब तो यह विद्यार्थियों की जेब में भी दिखाई देने लगा है।

फोन पर बातचीत करना भी एक कला है। यह वाचन का माध्यम है। निरंतर अभ्यास द्वारा इस कला को निखारा जा सकता है। फोन पर बातें करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना चाहिए जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- वार्ता का प्रारंभ अपना परिचय देकर फोन करने का कारण बताते हुए करना चाहिए।
- फोन उठाने वाले के साथ उचित अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए।
- हमेशा शिष्ट, शालीन और मर्यादित भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- फोन पर कभी गुस्सा करते हुए ऊँची आवाज में बात नहीं करनी चाहिए।
- किसी को असमय फोन नहीं करना चाहिए। e यथासंभव अपनी बातें संक्षेप में ही कहना चाहिए।

● यदि गलती से गलत नंबर मिल जाए तो खेद व्यक्त करना चाहिए।

● यदि कोई आपके पास फोन करता है तो बिना पूरी बात सुने फोन नहीं काटना चाहिए।

फोन पर बातचीत का एक उदाहरण

साक्षी – हैलो! मैं साक्षी बोल रही हूँ। क्या मैं विभा से बातचीत कर सकती हूँ?

ममता – मैं विभा की माँ ममता बोल रही हूँ। तुम कौन?

साक्षी – नमस्ते आटी, मैं विभा की सहेली साक्षी बोल रही हूँ। विभा इस समय क्या कर रही है?

ममता – नमस्ते बेटा। विभा ऊपर के कमरे में पढ़ाई कर रही है। मैं उसे अभी फोन देती हूँ।

साक्षी – धन्यवाद आटी। विभा – अरे साक्षी कैसी है तू? क्या कर रही है इस समय?

साक्षी – पढ़ रही थी। बस कल स्कूल नहीं आ सकी थी। गणित का होमवर्क जानना था। और क्या कल यूनिट टेस्ट के नंबर बताए गए थे?

विभा – कल गणित की अध्यापिका नहीं आई थीं इसलिए न होमवर्क मिला और न यूनिट टेस्ट के नंबर बताए गए।

साक्षी – धन्यवाद विभा। कल स्कूल में मिलते हैं। बाइ।

विभा – बाइ।

कार्यक्रम प्रस्तुति

किसी प्रकार का कार्यक्रम प्रस्तुत करना स्वयं में एक कला है, जिसके लिए कुशलता की आवश्यकता होती है। बिना भरपूर अभ्यास के इसे हर कोई नहीं कर सकता है। कार्यक्रम प्रस्तुति देने वाले को प्रस्तोता, मंच संचालक, उद्घोषक या कार्यक्रम संचालक कहा जाता है। कार्यक्रम की सफलता में मंच संचालक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बाल सभा, सदन की बैठक तथा विद्यालय में होने वाले अनेक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को मंच संचालन का अवसर मिलता है। मंच संचालन करते समय विद्यार्थी को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

● मंच संचालन से पूर्व कार्यक्रमों की एक सूची तैयार कर अपने पास रख लेनी चाहिए।

● मंच संचालन के समय अत्यंत फैशन वाली वेषभूषा के प्रयोग से बचना चाहिए। इस अवसर पर शालीन वेषभूषा ही अच्छी मानी जाती है।

● उद्घोषक को संयमी तथा साहसी होना चाहिए।

● कार्यक्रम से दर्शकों को जोड़े रखने के लिए चुटकुले, सूक्तियाँ, कहावतें तथा ज्ञानवर्धक बातों का कोश होना चाहिए।

● दो कार्यक्रमों के बीच रिक्त समय को भरने की कला में पारंगत होना चाहिए।

● कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसे आम श्रोता भी आसानी से समझ सकें।

कार्यक्रम प्रस्तुति का उदाहरण-

[अरावली पब्लिक स्कूल, गौतम नगर, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर दी गई कार्यक्रम की रूपरेखा के आधार पर कार्यक्रम की सफल प्रस्तुति करना।]

मुख्य अतिथि का आगमन	–	प्रात: 10 बजे स्थानीय विधायक श्री ---------------- ।
मुख्य अतिथि का स्वागत	--	प्रधानाचार्या द्वारा। कक्षा सात की दो लड़कियों द्वारा तिलक लगाकर।
मुख्य अतिथि का परिचय	--	विद्यालय प्रबंधन के सचिव द्वारा।
कार्यक्रम का आरंभ	–	मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन करके। (इसमें प्रधानाचार्या, स्टॉफ सचिव तथा दो अन्य शिक्षकों द्वारा सहयोग किया जाएगा)
सरस्वती वंदना	–	संचिता, निहारिका, दीपिका, गौतमी तथा आरुषी द्वारा। (वीणा वादिनी! वर दे)
देश-भक्ति गीत	–	कक्षा दस के छात्रों द्वारा– (दूर हटो ये दुनिया वालों! हिंदुस्तान हमारा है)
समूह नृत्य	–	कक्षा सात की छात्राओं द्वारा राजस्थानी गीत की धुन पर।

img src="https://farm5.staticflickr.com/4539/25109504758_3779bc8a22_o.png" width="661" height="272" alt="NCERT Solutions for Class 11 Hindi Core – मौखिक परीक्षा-12-2">

उपर्युक्त सूची के आधार पर कार्यक्रम की प्रस्तुति इस प्रकार की जा सकती है-

[कार्यक्रम के लिए सजा हुआ पंडाल, मंच, अतिथियों के लिए एक ओर मंच के सामने रखी गई कुर्सियाँ तथा सामने पंक्तिबद्ध बैठे हुए बच्चे तथा देशभक्ति पूर्ण गीत बजता जा रहा है।]

मंच संचालक-सभी उपस्थित व्यक्तियों को मेरा नमस्कार! अरावली पब्लिक स्कूल, गौतम नगर के वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर आप सभी का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इंतजार की घड़ियाँ खत्म हुई। दस बजनेवाले हैं। मुख्य अतिथि महोदय आप सभी के बीच इस पंडाल में पहुँचनेवाले हैं। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि पंडाल में पहुँचने पर मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करतल ध्वनि से करें। धन्यवाद!

और ये हुई इंतजार की घड़ियाँ खत्म। मुख्य अतिथि महोदय हमारे-आपके बीच पधार चुके हैं। मैं विद्यालय तथा प्रबंध कमेटी की ओर से विनम्र निवेदन करता हूँ कि माननीय मुख्य अतिथि महोदय, जो स्थानीय विधायक भी हैं, मंच पर सुशोभित हों। मैं विद्यालय प्रबंधक श्री ——————— से अनुरोध करता हूँ कि वे भी मुख्य अतिथि महोदय के साथ मंच पर उचित स्थान ग्रहण करने की कृपा करें।

अब मैं विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती नलिनी सिंह से अनुरोध करता हूँ कि वे पुष्प-गुच्छ (बुके) द्वारा मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करें।

इसी क्रम में भारतीय परंपरानुसार कक्षा सात की दो छात्राएँ सुमन और सौम्या, मुख्य अतिथि को तिलक लगाकर उनका स्वागत करेंगी।

अब मैं विद्यालय प्रबंध समिति के सचिव श्री राजकुमार जी से अनुरोध करता हूँ कि वे मुख्य अतिथि महोदय का परिचय आप सभी से कराएँ।

अब मैं माननीय मुख्य अतिथि महोदय से अनुरोध करता हूँ कि वे विद्या की देवी, माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करें, जिससे कार्यक्रम का शुभारंभ किया जा सके। प्रधानाचार्या महोदया, स्टॉफ सचिव तथा विद्यालय के दो शिक्षकों द्वारा मुख्य अतिथि महोदय का सहयोग किया जाएगा।

अब सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू होनेवाला है। मंच पर आसीन सभी महानुभावों से मेरा अनुरोध है कि वे पंडाल की अग्रिम पंक्ति में रखी कुर्सियों पर अपना स्थान ग्रहण करने का कष्ट करें और कार्यक्रम का आनंद लें। प्रधानाचार्या तथा व्यायाम शिक्षिका से अनुरोध है कि वे इसमें मुख्य अतिथि महोदय का सहयोग करें।

धन्यवाद!

सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानदायिनी विद्या की देवी माँ सरस्वती की वंदना द्वारा किया जा रहा है। इसके बोल हैं- 'हे वीणावादिनी! वर दे' तथा इसे प्रस्तुत कर रहीं हैं- विद्यालय की छात्राएँ सविता, दीपिका, निहारिका, गौतमी तथा आरुषी।

वाह! कितनी सुंदर प्रस्तुति थी। छात्राओं ने इस वंदना को जीवंत बना दिया। यह आप सभी महसूस कर रहे होंगे। हम सब अपनी मातृभूमि और देश को अपनी जान से भी ज्यादा चाहते हैं। इसकी रक्षा करते हुए अगणित वीरों ने अपनी जान की बाजी लगा दी। इस पर हम किसी की कुदृष्टि भी नहीं सहन कर सकते। यही संदेश गीत के माध्यम से दे रहे हैं दसवीं के छात्र। गीत के बोल हैं-'दूर हटो ऐ दुनियावालो! हिंदुस्तान हमारा है।' आप सभी इसका आनंद उठाएँ।

वास्तव में यह गीत देश-प्रेम तथा देश-भक्ति की भावना हमारे दिलों में जगाने एवं प्रगाढ़ करने में सफल रहा है। तालियों के लिए खूब सारा धन्यवाद!

आइए, अब कार्यक्रम की दिशा मोड़कर गाँवों की ओर चलते हैं जहाँ भारत का दिल बसता है। कक्षा सात की छात्राओं द्वारा राजस्थानी गीत की धुन पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें वर्षा ऋतु में घिरे बादलों को देख कर मोरनी की खुशी समाहित है।

वाह-वाह! अत्यंत सुंदर नृत्य। कितना सुंदर प्रयास था इन छात्राओं का! आप सभी को यह नृत्य अच्छा लगा, यह आपकी तालियों की गड़गड़ाहट से प्रकट हो रहा है। तालियों के लिए धन्यवाद!

गाँवों के परिवेश से निकलकर अब हम आपको ले चलते हैं-देश-प्रेम के रंग में सराबोर करने। कक्षा नौ के छात्र आपके सामने एक नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं-बलिदान। आप इसे देखें और आनंदित हों।

वाह! सचमुच हमें देशभक्तों और शहीदों के त्याग और बलिदान पर गर्व होने लगा है। निश्चित रूप से आप भी ऐसा महसूस कर रहे होंगे। तालियों द्वारा उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद!

अब सांस्कृतिक कार्यक्रमों को विराम देते हुए मैं विद्यालय की प्रधानाचार्या से अनुरोध करता हूँ कि वे विद्यालय की रिपोर्ट पढ़कर विद्यालय की प्रगति संबंधी जानकारी का विवरण प्रस्तुत करने का कष्ट करें।

(विद्यालय की प्रधानाचार्या द्वारा रिपोर्ट पढ़ी जाती है।)

अब बारी है पुरस्कार-वितरण की। बच्चों और अध्यापकों के साल भर के परिश्रम के परिणाम की। इसके लिए मैं मुख्य अतिथि महोदय से अनुरोध करता हूँ कि वे मंच पर आकर अपने कर-कमलों से पुरस्कार प्रदान करें। इस कार्य में खेल शिक्षिका एवं दो अध्यापक उनका सहयोग करेंगे तथा पुरस्कार पानेवालों के नामों की घोषणा उप-प्रधानाचार्या श्रीमती कपिला शर्मा करेंगी।

आप सभी ने देखा कि इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने शिक्षा, खेल एवं अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए सराहनीय प्रदर्शन किया। इसमें विद्यालय के प्रधानाचार्या का कुशल

निर्देशन, अध्यापकों के परिश्रम आदि का योगदान रहा है। आशा है कि अगले वर्ष इससे भी अधिक विद्यार्थी पुरस्कार पाने की होड़ में शामिल होंगे।

अब मैं मुख्य अतिथि महोदय से विनम्र निवेदन करूंगा कि वे उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दें जिससे विद्यार्थियों तथा विद्यालय परिवार के सदस्यों को परिश्रमपूर्वक कार्य करने का उत्साह मिले।

मुख्य अतिथि महोदय का बहुत-बहुत धन्यवाद! आपके ये वचन हम सभी के लिए प्रेरणा-स्रोत बनेंगे।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में कक्षा नौ के छात्र-छात्राओं द्वारा एक हास्य प्रहसन प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि आपको हास्य रस से सराबोर करने में सक्षम साबित होगा। इसका शीर्षक है-'गधे की पढ़ाई'।

आपकी हँसी इस बात का प्रमाण है कि आपने इस हास्य प्रहसन का आनंद उठाया। तालियों द्वारा उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद!

यह कार्यक्रम अब समाप्ति की ओर अग्रसर है। विद्यालय के प्रधानाचार्या जी से मेरा निवेदन है कि वे मंच पर आएँ और मुख्य अतिथि तथा आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन करें।

अब सभी उपस्थित जनों तथा विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे अपने स्थान पर सावधान मुद्रा में खड़े हों तथा राष्ट्रगान के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करें।

लगातार ढाई घंटे से भी अधिक समय तक इतने धैर्य के साथ सहयोग देने तथा विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने हेतु हम आपका अत्यंत आभार प्रकट करते हैं। इस सुंदर कार्यक्रम में उपस्थित होकर इसकी सफलता में वृद्ध करने के लिए मैं एक बार पुन: आप सभी को धन्यवाद देता हूँ और कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा करता हूँ। जय हिद! जय भारत!